पुष्टिमार्ग के आराध्य

श्रीमहाप्रभुजी - श्रीनाथजी - श्रीयमुनाजी

॥ श्री कृष्णाय नमः ॥

॥ श्री गोवर्धननाथो विजयते ॥

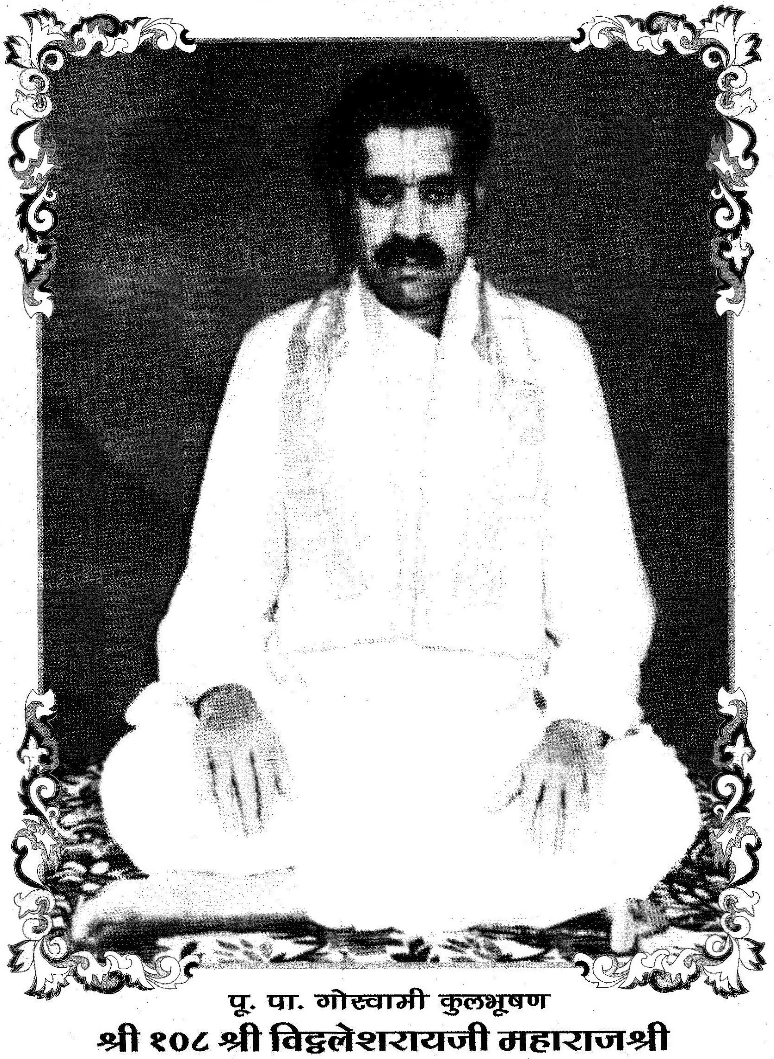

पू. पा. गोस्वामी कुलभूषण

श्री १०८ श्री विठ्ठलेशरायजी महाराजश्री

प्राकट्य - श्रावण कृष्ण एकादशी वि. सं. २००५ ❋ नि.ली.गो.पू.पा. २०५९

|| श्री गोवर्धननाथो विजयते ||

शुभाशीर्वाद

अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता का पुनः प्रकाशन वैष्णव मित्र मंडल सार्वजनिक न्यास द्वारा किया जा रहा है। पुष्टिमार्गीय जनों के लिये वार्ताजी का महत्व दैनिक सत्संग के रूप में सर्वोपरि रहा है। नित्य प्रति मन्दिर तथा घरों में शिक्षा पत्र, चौरासी एवं दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता, षोडश ग्रंथ, मूल पुरुष वल्लभाख्यान इत्यादि का पठन पाठन होता आ रहा है।

पिछले चालीस वर्षों से दो सौ बावन वैष्णवन की तीन जन्म की भावना सहित वार्ता ग्रंथ की प्रतियाँ उपलब्ध होना अलभ्य हो गया था। अन्त में पू.पा. गोस्वामी नि.ली. श्री ब्रजभूषणलालजी महाराजश्री (कांकरोली) के सफल सम्पादकत्व में प्रकाशित हुई। तत्पश्चात् कांकरोली वाले महाराजश्री से आज्ञा लेकर इसका प्रकाशन किया।

''प्रकट ह्वै मारग रीति दिखाई'' ऐसा गोस्वामी श्रीगुसांईजी के विषय में कहा जाता है। श्री ठाकुरजी के राग, भोग, श्रृंगार की रीति को श्री गुसांईजी ने बढ़ाया तथा उनके दो सौ बावन वैष्णवन ने आपके आशीर्वाद से उसे ग्रहण करके तदनुसार सेवा की और ठाकुरजी के स्वानुभव का भी लाभ उन्हें प्राप्त हुआ। यही सब उनके अनुभव इन वार्ताजी में कहे गए हैं अतः इन ग्रंथों का नित्य घरों में सत्संग होते रहने से पुष्टिमार्ग के सिद्धान्तों को वार्ताजी के माध्यम से ही वैष्णव ज्ञात कर लेते हैं, उन्हें संस्कृत के सैद्धान्तिक ग्रंथों को पढ़ने की तथा समझने की आवश्यकता नहीं होती है।

ऐसे अलभ्य ग्रंथ को वैष्णवों ने बहुत मानपूर्वक खरीदकर घरों में पधराया तथा उससे लाभान्वित हुए और ग्रंथ तो समाप्त हो गया, परन्तु वैष्णवों के ह्रदय की लालसा समाप्त नहीं हुई, यह उन पर श्री ठाकुरजी की कृपा है तथा श्रीगुसांईजी के आशीर्वाद है। इसीलिये यह ग्रथ पुनः प्रकाशित किया जा रहा है। अतः वैष्णव मित्र मंडल सार्वजनिक न्यास के सदस्यों को, इस कार्य में जुड़े हुए अन्य सभी कार्यकर्ताओं को हम ह्रदय से आशीर्वाद देते हैं।

ग्रंथ के संग्रहकर्ता एवं ग्रंथ के सत्संग करने वाले सभी वैष्णव वृन्द को भी हार्दिक शुभाशीर्वाद प्रदान करते हैं।

गुरूपूर्णिमा २१ जुलाई २००९ गो. रुक्मणिबहुजी

कुछ अपना

कुछ वर्ष हुए जब मैं प्राचीन ग्रंथों की शोध में ब्रज में गया था तब मुझे अन्य अलभ्य अश्रुत प्राचीनतम संस्कृत एवं ब्रजभाषा के ग्रंथों के साथ प्रस्तुत ग्रंथ का भी पता चला था। इन अलभ्य एवं अश्रुत ग्रंथों में गो. श्री द्वारकेशजी (१८५२) के हस्ताक्षरों से अंकित 'मधुराष्टक' की सप्तमपुत्र गो. श्रीघनश्यामजी रचित संस्कृत टीका एवं श्रीनंददास रचित ब्रजभाषा की द्वितीय अप्रसिद्ध 'रास-पंचाध्याई' विशेष उल्लेखनीय हैं। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि वार्ता का प्रस्तुत ग्रंथ 'महम्मद' नामक एक साहित्य-प्रिय यवन व्यक्ति के पास है। कामवन से कुछ दूरि पर एक नगरा में यह व्यक्ति रहता था। मैं उसे मिला। उसने बड़े आदर के साथ मुझे यह ग्रंथ दिखलाया। यह ग्रंथ यावनी लिपि में था। अतः हम दोनों ने मिलकर यथाबुद्धि उसे पढ़ा। इस ग्रंथ के साथ ही उसने मुझे 'सूरसागर' की एक हस्तप्रति और दिखलाई। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। यह व्यक्ति मुझ से सूरदास के विषय में कई बातें जानना चाहता था। क्योंकि वह सूरदास के ऊपर एक निबंध लिख रहा था। मैंने उससे कहा यदि आप मुझे इस वार्ता की पुस्तक मूल्य से देने का स्वीकार करें तो मैं सूरदास विषयक बीस वर्ष का मेरा सारा अन्वेषण आप को दे सकता हूं। तदुपरांत एक सहस्त्र मुद्रा और देऊंगा। किन्तु उसने बड़े सौजन्य से क्षमा मांगते हुए कहा कि इसको देने के लिए मैं असमर्थ हूँ। ये हमारे पूर्वजों की धरोहर हैं। हमारे पूर्वज वैष्णव धर्म के अनुयायी थे। किन्तु कई कार्य कारणों से पीछे से उन्हें यवन होना पड़ा था। फिर भी एक-दो पीढ़ीं तक हमारे पूर्वजों ने आंतर-आचार रूप से अपनी वैष्णवता की सुरक्षा की थी। उस समय जब बंटवारा हुआ था तब हमारे एक पूर्वज ने ये दोनों ग्रंथों को जातीय भय से यावनी लिपि में लिखकर अपने पास रखा था। उस समय वे इन ग्रंथों को 'कुरान' के नाम से कहा करते थे। इस बात को सुनकर मुझे इन ग्रंथों की मूल प्रतियाँ का पता पाने की बड़ी इच्छा हुई। मैंने शीघ्र उस से पूछा कि क्या आप इन दोनों ग्रंथों की मूल प्रतियों का दर्शन करायेंगे ? या उन का पता देंगे कि वे किस जगह हैं ? तब वह यह कह कर रो दिया कि वे प्रतियाँ जातीय द्वेष के कारण हमारे अपढ़ कुटुंबी जनों ने जला दी हैं। यह सुन कर मुझे बड़ा आघात हुआ, किन्तु लाचार होकर चुप रहना पड़ा। तब मैंने उससे प्रार्थना की कि यदि आप इन प्रतियों को मुझें दे नहीं सकते तो कम से कम मुझे वार्ता की प्रतिलिपि तो अवश्य करने ही देंगे। आप जैसे सज्जन से इस प्रकार की आशा की जानी अनुचित नहीं है। उन्होंने इस बात को स्वीकार किया। तब से मैंने समय समय पर उसके यहाँ जाकर इस ग्रन्थ की

प्रतिलिपि की, जिसमें करीब दो एक वर्ष लगे होंगे। उसके पश्चात् कुछ समय के अनन्तर में पुनः उसके घर गया। उस समय मेरी इच्छा यह थी कि मैं इन प्रतियों का फोटु ले कर उन का ब्लोक तैयार करा लूंगा। किन्तु उस समय देश में जातीय उथलपुथल हो रही थी। अतः वह अपने घरबार को छोड़कर अन्यत्र चला गया था। इस बात को सुन कर मुझे बड़ा दुःख हुआ।

यह सामान्य नियम है, कि सच्चे हृदय से जो कार्य किया जाता है उसमें ईश्वर अवश्य सहायभूत होता है। मुझे भी इस कार्य में इसी प्रकार की सहायता प्राप्त हो गयी। मुझे अनायास ही इस ग्रंथ की चार प्रतियाँ और देखने को मिली। उसमें एक आन्योर की, एक कपडवणज की, एक कानपुर की और एक रेवारी गाम की थी। मैंने इन सब के अमुक अमुक अंश मिला कर देखे। मुझे उतना अवसर प्राप्त न हो सका कि मैंने इन प्रतियों को एक-दूसरे से संपूर्ण मिलान कर सकूं। अतः मैंने इसी से संतोष मान लिया। जो अंश मिलान किये थे उसमें भाषा-भेद कहीं कहीं दिखाई दिया। जिसका कारण उन प्रतियों के लेखन काल की विभिन्नता एवं विविध स्थानों के लेखक हैं। इस प्रकार का भेद प्रायः सभी ग्रंथों में मिलता ही है। उस से अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता है। हां ! उससे व्याकरण एवं शब्द के रूपों में कहीं कहीं कुछ विभिन्नता अवश्य आ जाती है। फिर भी भाषा, शैली, शब्द, भावना एवं सिद्धांत आदि से इसकी प्रामाणिकता परिपुष्ट है। इसका बृहद रूप से अध्ययन 'शुद्धाद्वैत एकेडमी' की सम्पादन-समिति द्वारा आगे किया जाएगा। मैं चाहता हूँ कि प्राप्त प्रतियाँ के फोटू अवश्य लिये जाय और उन्हें तृतीय खण्ड में दिया जाय। किन्तु यह कार्य की सफलता उन प्रतियों के मालिकों की इच्छा पर ही निर्भर है।

यह कहते हुए दुःख होता है कि सम्प्रदाय के प्राचीन ग्रंथों के छिपाने का रोग आज भी व्यापक रूप से फैला हुआ है। किसी पर भी इस विषय में लेश मात्र भी विश्वास नहीं किया जाता है। प्राचीन ग्रंथों का अनेक प्रकार से नष्ट हो जाना स्वीकार किया जाता है, किन्तु उन्हें मुद्रित कराना नींदनीय समझा जाता है। इस प्रकार की मनोदशा केवल वैष्णवों की ही नहीं, किन्तु आचार्य-बालकों की भी है। इसी से श्रीनाथद्वारा, कोटा, गोकुल, अहमदाबाद, जूनागढ़, चांपासेनी, मांडवी, कृष्णगढ़, बडौदा आदि अनेक प्रमुख साहित्य भंडारों के भी प्राचीन ग्रंथ आज तक अज्ञात अवस्था में पड़े हुए हैं। यदि इन भंडारों में उपलब्ध साहित्य को कांकरौली सरस्वती भंडार की व्यवस्था के अनुरूप सुरक्षित किया जाय तो कई ग्रन्थ अब भी नष्ट होने से बच जायेंगे और सम्प्रदाय की अमूल्यनिधि रूप अलभ्य साहित्य प्रकाश में आ सकेगा। जिस से सम्प्रदाय के साहित्य-वैभव की कीर्ति सर्वोपरि शिखर पर पहुंच सकती है। अस्तु.

जब इस ग्रंथ के मुद्रण का निश्चय हुआ तब मैंने परम वंदनीय गो. श्रीब्रजभूषणलालजी महाराज कांकरौली से इसके संपादन के विषय में प्रार्थना की। महाराजश्री ब्रजभाषा के अच्छे ज्ञाता हैं इसलिये उनके द्वारा यह ग्रंथ संपादित हो तो अच्छा होगा। यह मेरी हार्दिक इच्छा थी।

महाराजश्री ने इस बात को सहर्ष स्वीकार किया। किन्तु इधर वैष्णव जनता एवं द्रव्य सहायकों की ग्रंथ के तात्कालिक मुद्रण एवं प्रकाशन की अत्यधिक मांग होने से महाराजश्री द्वारा प्रेस कापी का शीघ्र संपादन करना कठिन हुआ। आप 'गोविंद स्वामी' 'परमानंद सागर' आदि के अनेक महत्वपूर्ण संपादन कार्यों में व्यस्त होने से वार्ता का संपादन उतनी शीघ्रता से नहीं कर सकते थे। तब यह निश्चय किया गया कि तीसरे खण्ड को प्रकाशित करने के पूर्व समग्र सामग्री का संपादन - कार्य सावकाश आप करते रहेंगे। साथ में एक संपादन-समिति और बना दी गई है। जो वार्ता के विविध विषयों पर विचार करेगी। मुद्रण का सर्व कार्य मेरे पर छोड़ दिया गया। महत्वपूर्ण सामग्री के संपादन-कार्य की सूची प्रस्तुत ग्रंथ के 'आमुख' में दी गई है। इससे ग्रंथ के संपादन की महत्ता जानी जा सकती है। इधर मैंने आज्ञानुसार बडौदा आकर मुद्रण कार्य शुरू करवाया। एक ही व्यक्ति के द्वारा सिर्फ तीन मास में ही इतना बृहद् ग्रन्थ छपाने में अशुद्धियां रह जानी स्वाभाविक है। अतः इसमें कहीं कहीं अशुद्धियाँ पाठकों को दिखेगी। जिसके लिये आवश्यक शुद्धिपत्रक दिया गया है।

छपाई के कार्य में जिन विद्वान, एवं सज्जनों ने यथाशक्ति विविध प्रकारों से मदद की है उनका स्मरण करना भी यहां आवश्यक है। उन के नाम ये हैं - प्रो. गोविंदलाल भट्ट, एम.ए. बडौदा, श्रीकण्ठमणि शास्त्री कांकरोली, श्री ईश्वरभाई सेठ बडौदा, डॉ. हीरालाल मनसुखराम एम.बी.बी.एस बडौदा, जमनादास माणेकलाल डभोई, रतनलाल चुनीलाल परीख। अंत में, बडौदा अशोक प्रेस के मालिक श्री रमणभाई ने इस पुस्तक को शीघ्रतापूर्वक सुंदर रूप से छापा, जिसके लिये उनका भी आभार मानना आवश्यक है।

बडौदा
कार्तिक कृष्ण - १३ **- द्वारकादास परीख**
वि.सं. २००९

नोट : पू. पा. तृ. शु. पीठाधीश गोस्वामी श्री १०८ श्रीब्रजेशकुमारजी महाराजश्री की आज्ञानुसार ही इस वार्ता खण्ड प्रथम के नूतन प्रकाशन में 'कुछ अपना' तथा 'आमुख' वाला भाग प्रकाशित करने में मुझे हर्षका अनुभव हो रहा है ताकि वर्तमान में पाठकों को उस समय की स्थिति का भी आभास मिल जाये। मैं गो. वा. प. भ. श्री द्वारकादासजी परीख एवं पो, श्रीकंठमणिजी का हृदय से अनुगृहीत हूँ।

- सम्पादक घनश्यामदास मुखिया

पितृ प्रवर्तित पथ प्रचारक सुविचारक

श्रीमद् प्रभुचरण गोस्वामी परमदयाल श्रीगुसांईजी महाराज श्री विट्ठलनाथजी

प्राकट्य ✱ वि.सं. १५७२ ✱ वि. पौष कृष्ण ९ तिरोधान ✱ सं. १६४२ वि. माघ कृष्ण ७

आमुख

राष्ट्रभाषा हिन्दी साहित्य के निर्माण में श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभु द्वारा प्रवर्तित एवं गोस्वामि श्रीविट्ठलेशप्रभुचरण द्वारा परिपुष्ट शुद्धाद्वैत पुष्टिमार्ग सम्प्रदाय एक विशिष्ट स्थान रखता है। पद्य निर्माण की परम्परा में जहां अष्टछाप के महानुभाव समर्थ कवियों का नव्य दिव्य गौरवपूर्ण प्रतिष्ठान प्राप्त है, वहां गद्य निर्माण की परम्परा में भी वार्ताएँ अपना अनिर्वचनीय अक्षुण्ण अधिकार बनाये हुए हैं। साहित्यिक अन्वेषक, समालोचक और सुधीवर विद्वान इस वस्तुस्थिति को स्वकीय दृष्टिकोण से न तो ओझल कर ही पाये हैं, न कर सकते हैं।

हिन्दी जगत् के वार्ता–साहित्य में चौरासी वैष्णव और दोसौ बावन वैष्णवों की वार्ताएँ अपनी विशेष महत्ता के कारण अध्ययन, अन्वेषण और निर्णय में उदात्त उपयोगिता का परिदर्शन कराती हुई एक ऐसी दिशा का सूचन कराती हैं, जो उदयान्मुखी एवं विविध विज्ञानों की गम्भीर निधि हैं। प्रस्तुत अक्षय निधि के संचय एवं परिदर्शन का श्रेय जहां श्रीगोकुलनाथजी को दिया जा सकता है, वहां उसके वर्गीकरण और सज्जीकरण का श्रेय श्रीहरिरायजी महानुभाव को समधिगत होता है। ये दोनों ही हिन्दी गद्य साहित्य के उदात्त उत्तमर्ण हैं।

यद्यपि साहित्य–प्रकाशन में इन वार्ताओं के मुद्रण की पूर्ति आज से लगभग ६०–७० वर्ष पूर्व ही की जा चुकी थी, परन्तु इस में मौलिकता के दृष्टिकोण को न्यून और व्यावसायिक दृष्टिकोण को विशेष प्रश्रय दिया गया था। वार्ता के इस प्रकाशन ने साहित्य–संसार के समक्ष अपकारोपकार की कुछ ऐसी उलझन उपस्थित कर दी, जिसका विवेचन यहां अस्थाने है। फिर भी 'अकरणान्मन्दकरणं श्रेयः' के अनुसार यह तो स्पष्ट ही है कि एक बार अप्रकाशित साहित्य मुद्रण द्वारा प्रकाशन में आया। अब उसके द्वारा तथ्यातथ्य निर्णय और वास्तविक स्वरूप परिदर्शन की उत्कण्ठा का समाधान किया जा सकता है।

उक्त उभयविध वार्ताओं के रचनाकार, रचनाकाल एवं रचनाशैली के सम्बन्ध में साहित्य–जगत् में समय समय पर अनेक व्यक्तिगत अभिप्रायों का प्रस्फोट हुआ है; जिनमें कितने ही उपादेय अनुपादेय, खण्डनीय और स्वीकरणीय हैं। इन सब में कांकरोलीस्थ वर्ग के कुछ मोटे मोटे निर्धारण एक विशिष्ट गम्भीरता को लेकर आगे बढ़े हैं। जो हिन्दीसाहित्य जगत् की एक विशेष जिज्ञासापूर्ति के साधन हैं प्रस्तुत वर्ग में विद्याविभाग कांकरोली के अध्यक्ष, प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक और वार्ता साहित्य के विशेषज्ञ परीख द्वारकादासजी एवं

अन्य सहयोगियों का समावेश होता है। विद्याविभाग कांकरोली द्वारा और परीखजी द्वारा स्वतंत्र रुप से प्रकाशित वार्ता–साहित्य के ग्रन्थों, स्फुट लेखों एवं भूमिकाओं से प्रस्तुत प्रसंग में विशेष प्रकाश डाला जा चुका है। और तदर्थ विशेष प्रयत्न किया जा रहा है। ऐसा होने पर भी इदमित्थतया ठोस निर्णय अभी अवशिष्ट है, जो सम्पूर्ण वार्ता–साहित्य के प्रकाशनन्तर ही सम्भूय पद्धति से किया जा सकता है।

आज से कुछ समय पूर्व चौरासी वैष्णव और दोसौ बावन वैष्णवों की वार्ताएँ अपने मूल रुप में ही प्रचलित थीं। उन पर भावप्रकाश जैसी किसी विशेष टीका टिप्पण की सम्भावना ही अनुभव से परे थी। तद्विषयक यदि कुछ अनुभव हुआ भी था तो वह मूल रूप में ऐसा घुलमिला था, जो स्वतंत्र रूप में पहिचाना नहीं जा सकता था। अन्वेषण और विश्लेषण की दृष्टि से अध्ययन करने पर प्रस्तुत परिज्ञान ने मूर्तिरुप धारण किया, जो परीख द्वारकादासजी के द्वारा सम्पादित होकर आठ आठ वार्ताओं के रूप में 'प्राचीनवार्तारहस्य' नाम से तीन खण्डों में प्रकाशित किया गया। इस दिशा में मूल प्राचीन हस्तलिखित वार्ता, प्रचलित मुद्रित वार्ता और भावप्रकाश वाली वार्ता का सम्वाद* करते हुए अष्टछाप की प्रथम चार वार्ताँए और गोविंदस्वामी के पदसंग्रह के साथ गोविंदस्वामी की वार्ता विद्याविभाग द्वारा प्रकाशित हो रही हैं, । जो वार्ता के अध्ययन सम्बन्ध में एक मौलिक प्रयोग है।

वार्तासाहित्य का प्रथम अंश समग्र चौरासी वैष्णवों की वार्ता भावप्रकाश के साथ अर्थ–साहाय्य और सुविधा की सम्प्राप्ति पर द्वारकादासजी पारिख द्वारा सम्पादित होकर उन के ही विशेष प्रयत्न से अग्रवाल प्रेस मथुरा द्वारा प्रकाशित की जा चुकी है, । जिससे वार्ताओं के सम्बन्ध में विशेष नवीन प्रकाश पड़ा, जिज्ञासाओं की पूर्ति हुई, और शंकाओं का समाधान हुआ। एक दृष्टि से चौरासी वैष्णवों की वार्ताओं का अधिकांश अप्रकाशित साहित्य प्रकाश में लाया जा चुका है। वार्तासाहित्य के द्वितीय अंश दोसौ बावन वैष्णव की वार्ता अपने अपेक्षित साहित्य के साथ अप्रकाशित अवस्था में पडी हुई थी, जिसका अभाव अतिशय खटक रहा था। वार्ता के उक्त दोनों विभागों की रूपरेखा मूलतः स्वकीय साहित्य के साथ सम्मुख आजाने पर ही किसी निर्णय पर पहुंचा जा सकता है।

---

* (i) सं. १६९७ को गोकुल में लिखित श्रीगोकुलनाथजी के समकाल की सब से प्राचीन प्रति विद्याविभाग में उपलब्ध है।

(ii) सं. १७५२ की भावप्रकाश सहित वार्ता की प्रति परीख द्वारकादासजी के पास है।

अतएव यह अनिवार्य आवश्यक समझा गया कि यह कार्य यथासंभव शीघ्र पूर्ण होना ही चाहिये। द्वारकादासजी परीख के अध्यवसाय, लगन और तत्परता ने प्रस्तुत उपादेयता को मूर्त रुप दिया, जो अभिनंदनीय और संस्मरणीय है। प्रथम खण्ड के रूप में जिस में प्रारम्भिक चौरासी वैष्णवों की वार्ताएँ साहित्यजगत् के सम्मुख उपस्थित की जा रही हैं, इस अन्तर की पूर्ति का द्योतक है। आगे द्वितीय–तृतीय खण्ड के रूप में शेष वार्ताएँ चौरासी–चौरासी के विभाजन द्वारा प्रकाशित की जांयगी। ऐसा केवल कार्य की विपुलता और अर्थ–सौकर्य्य के कारण ही किया गया है।

वार्ता जैसे गम्भीर सिद्धांत प्रतिपादक, ऐतिहासिक तत्त्व, सम्मिश्रित, सेवाशृंगार भावना–परिपुष्ट ग्रंथ का सम्पादन तद्विषयक मर्मज्ञ अधिकारी के बिना असंभव प्राय है, जिसका प्रत्यक्ष निदर्शन प्रसारित वार्ता संस्करणों के द्वारा सहज ही हो सकता है। यह सोच कर प्रधान सम्पादक गोस्वामी श्रीव्रजभूषणलालजी महाराज (शु. सं. तृ. गृहाधीश्वर कांकरोली) के तत्वावधान में सम्पादक–समिति के द्वारा सम्पादित होकर प्रस्तुत ग्रन्थ सन्मुख लाया जा रहा है। उक्त तीन खण्डों में मूल वार्ताँए श्रीहरिरायजी कृत भावप्रकाश सहित प्रकाशित की जायगी। जैसा कि आगे कहा जायगा, तृतीय खण्ड में उसकी विशिष्टताओं का भी उल्लेख किया जायगा।

उक्त उभयविध वार्ताओं के अन्वेषण विश्लेषण और प्रकाशन के सम्बन्ध में कुछ ऐसी अनुपम महत्वपूर्ण सामग्री की उपलब्धि हुई है, जिससे प्रचलित निर्मूल भ्रान्त धारणाओं का खंडन, आवश्यक जिज्ञासाओं का समाधान, गभ्भीर तत्वों का दिग्दर्शन और मौलिक वस्तुस्थिति का विहंगावलोकन किया जा सकेगा। सम्पूर्ण वार्ता साहित्य के प्रकाशित होने पर ही इसका विवेचन करेंगे, वे निम्नलिखित हैं–

१. **सम्पादकीय**–

- क. वार्ता के रचयिता, रचनाकाल, रचनाशैली, स्वरुप निर्धारण और संस्करण
- ख. प्रचलित उपलब्ध समस्त वार्ताओं की मूल प्रतियाँ का सात्विक पर्य्यालोचन और परिचय
- ग. विविध संस्करणों की एकवाक्यता और उत्थापित शंकाओं का समाधान

२. **ऐतिहासिक**–

व्यक्ति, नगर, तीर्थ, संस्थान आदि का परिचय।

३. **साहित्यिक**–

ग्रन्थ, कवि, विद्वान्, सिद्धान्त, पंद–प्रतीक और उध्धरणों का परिचय, । भाषाविज्ञान, ब्रजभाषा का स्वरूप

४. **धार्मिक**–

भगवत्स्वरूप, सेवापद्धति, श्रृंगारप्रणाली, उत्सव परिचय और वैष्णवों के आधिदैविक स्वरुप का दिग्‌दर्शन।

५. अन्य प्रकीर्ण आवश्यक वक्तव्य।

समग्र सामग्री के सम्मुख न आ सकने के कारण, प्रस्तुत प्रकाशन में निर्दिष्ट सम्पादन प्रणाली का निर्वाह नहीं किया जा सका है, जिस के कारण कुछ असमंजसताएँ प्रकट हो सकती हैं, किन्तु उन सबका संशोधन, समाधान और निराकरण तृतीय खण्ड के परिशिष्ट भाग में ही दिया जा सकेगा।

ग्रन्थ के प्रकाशन के सम्बन्ध में जिन उदार चेता महानुभावों ने अर्थ साहाय्य किंवा सौकर्य्य प्रदान किया है, उनका उपकार–स्मरण करते हुए नीचे लिखी तालिका दी जा रही हैं–

सं.	नाम
१	प.भ.सेठश्री साकरलाल बालाभाई, अहमदाबाद
२	प.भ. सेठश्री रतिलाल नाथालाल, अहमदाबाद
३	प.भ. सेठश्री टोडरमल चिमनलाल, बडौदा...

करुणामय श्रीद्वारकेश प्रभु की अनुग्रह सम्पातित प्रेरणा से वार्तासाहित्य की यह शृंखला यथावस्थित सम्पन्न होकर साहित्य–संसार के सम्मुख उपस्थित होगी, इस सदाशा को लेकर सर्वविध सहयोगियों के उपकार–स्मरण पूर्वक सम्प्रति प्रस्तुत वक्तव्य का संवरण किया जा रहा है। शम्

विधेय–

अन्नकूटोत्सव

पो.कण्ठमणि शास्त्री

सम्पादक

२००८ वि.

विद्याविभाग कांकरोली

तृ.पी.नि.ली.पू.पा. गोस्वामी श्री १०८ श्रीव्रजभूषणलालजी महाराजश्री कांकरौली

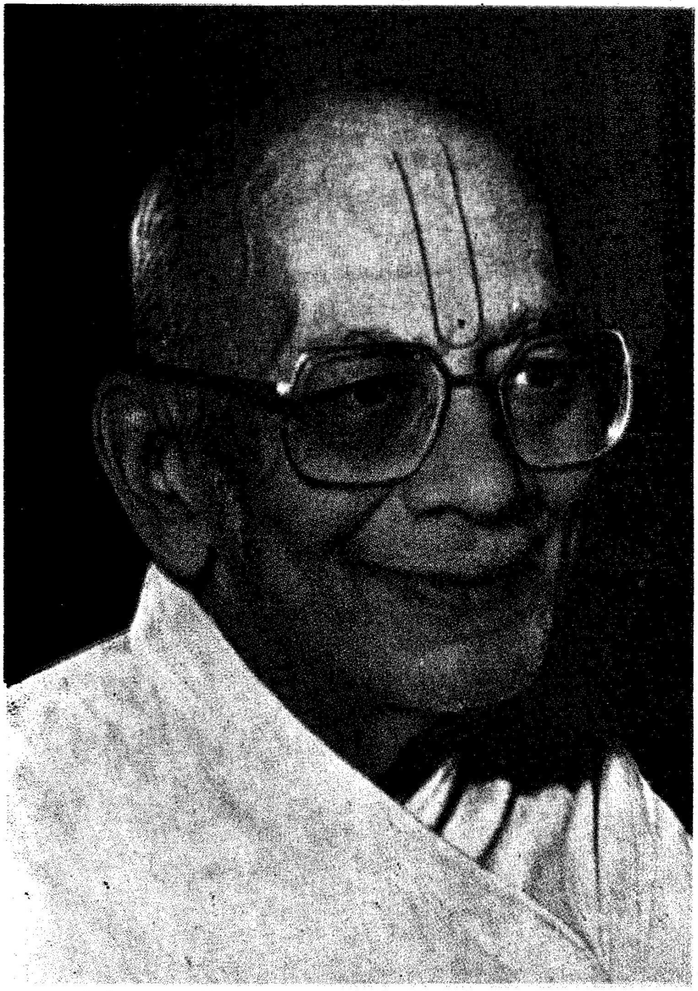

प्राकट्य ✽ वि.सं. १५६८ ✽ फाल्गुन कृष्ण-२ नि.ली. प्रवेश ✽ वि.सं. २०३६ ✽ पौष शुक्ल १५

तृ. पी.पू.पा.गो. श्री व्रजेशकुमारजी महाराजश्री कांकरौली - बड़ोदा

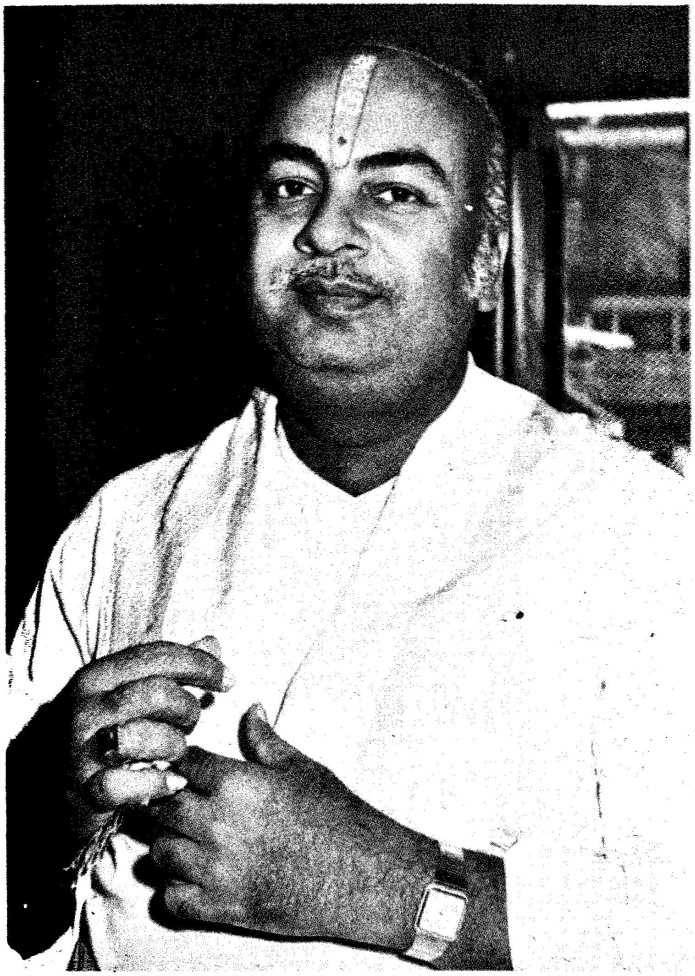

प्राकट्य * वि.सं. १९९६ * पौष शुक्ल १०

॥ श्री द्वारकेशो जयति ॥

श्रीव्रजेशकुमारजी महाराज
श.तृ. गृहाधिपति
कांकरोली

वड़ोदरा

शुभाशीर्वाद

वैष्णव मित्र मण्डल सार्वजनिक न्यास, इन्दौर

परम कृपालू श्रीमद् आचार्य चरणों के अनुग्रह एवं प्रेरणा से वैष्णव मित्र मण्डल सार्वजनिक न्यास हमारे विद्याविभाग कांकरोली द्वारा प्रकाशित २५२ वैष्णव की वार्ता (तीन जन्म भाव-सहित) पुस्तक मूल पुनः प्रकाशित करने का जो सद्विचार किया है यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

आज के युग प्रभाव तथा समाज की परिस्थिति को देखते हुए वैष्णव मित्र मण्डल सार्वजनिक न्यास, इन्दौर का यह सतत् प्रयास अनुकरणीय और प्रशंसनीय है। संप्रदाय के साहित्य को पुनः प्रकाशित करने से जो हमारे अलौकिक ग्रंथ अब अप्राप्य होते जा रहे हैं, वह पुनः पुष्टि-सृष्टि के वैष्णवों को प्राप्त होंगे यह संप्रदाय के लिये सुनहरा कार्य होगा।

वैष्णव मित्र मण्डल सार्वजनिक न्यास उनके कार्यकाल में इस प्रकार के कार्य संपादन करने में सक्षम बने और उत्तरोत्तर प्रगति साधे इसी अभिलाषा के साथ हमारे शुभाशीर्वाद हैं।

भवदीय

हस्ताक्षर
गो. व्रजेशकुमार

॥ श्री हरिः ॥

नम्र निवेदन

पुष्टि प्रवर्तक जगद्‌गुरु श्रीमद् वल्लभाचार्यजी के परम पावन सिद्धांतों को अपने सदाचार से साकार रूप प्रदान करने वाले चौरासी कृपापात्र भगवदीय जनों की तथा पितृ प्रवर्तित पथ प्रचारक सुविचारक परम दयाल श्रीमद् प्रभुचरण श्रीगुसांईजी श्री विट्ठलनाथजी के परम कृपापात्र भगवदीय दो सौ बावन वैष्णवों की वाताएँ पुष्टि-सृष्टि के लिए नित्य सत्संग मंडली हेतु परमोपयोगी सिद्ध हुई है। इन वार्ताओं के द्वारा पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणाली के साथ-साथ अत्यंत गूढ रहस्यों की, सिद्धान्त-भावनाओं का विशद विवेचन भी वैष्णव समाज को सहज रूप से प्राप्त होता है।

इधर पिछले लगभग ४० वर्षों से ब्रजभाषा और नागरीलिपि में दो सौ बावन वैष्णवों की तीन जन्म की भावना वाली वार्ता का मिलना सहज नहीं हो रहा था। अतः तृतीय पीठस्थ पू.पा.गो. श्री १०८ श्री ब्रजेशकुमारजी महाराजश्री बड़ौदा की आज्ञा प्राप्त कर, न्यास ने इसका प्रकाशन कार्य अपने हाथ में लिया है। इसको प्रकाशित कर न्यास हर्ष और संतोष का अनुभव कर रहा है।

वैष्णव समाज में पुष्टिमार्ग का प्रचार, सेवा का प्रचार तथा संगठन की भावना को दृढ करना न्यास का मूल उद्देश्य है और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये हम सतत् प्रयत्नशील हैं।

संस्करण समाप्ति पर उन्हीं ग्रन्थों के पुनर्प्रकाशन भी न्यास कर रहा है। वैष्णव मित्र मण्डल सार्वजनिक न्यास ने एक अभिनव योजना प्रस्तुत की है जिसमें आजीवन सदस्य केवल रुपये १५०१/- जमा करके प्रति वर्ष भेंट स्वरूप एक विशिष्ट ग्रंथ प्राप्त कर सकते हैं।

पू.पा. द्वि. पीठाधीश श्री १०८ श्री कल्याणरायजी महाराज श्री के उपाध्यक्षता में न्यास को आपश्री के आशीर्वाद के साथ पूर्ण मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। इसी प्रकार पू.पा.गो. १०८ श्री गोकुलोत्सवजी महाराजश्री एवं पू.पा.गो. १०८ श्री देवकीनंदनजी

महाराजश्री के महदनुग्रह के साथ-साथ ग्रंथ प्रकाशन पर आपश्री का समुचित मार्गदर्शन भी न्यास को सदैव प्राप्त होता रहता है।

इस वार्ता ग्रंथ को साकार रूप देकर सम्पादन करने के महत्त्वपूर्ण कार्य में श्री घनश्यामदासजी मुखिया का नाम विस्मरित नहीं कर पाता हूं जिन्होंने न्यास के अनेक ग्रंथों को सुव्यवस्थित संपादित करके उत्तरदायित्व का निर्वाह नाम सेवा रूप में किया है।

मुद्रण कार्य को कुशलतापूर्वक करने का श्रेय अप्सरा फाईन आर्ट प्रिंटर्स के प्रबंधक श्रीमान् मुरलीधर माहेश्वरी को है जिन्होंने शीघ्रता से वार्ता के तीनों खण्डों को मुद्रित करने में सहयोग किया है। मैं सभी न्यासियों एवं अन्य सहयोगियों का भी आभारी हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य में सहयोग दिया है।

मुद्रण कार्य में कुछ त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है। एतदर्थ क्षमाप्रार्थी हूँ और आगामी आवृत्ति हेतु आपके सुझावों को सादर आमंत्रित करता हूँ।

इन्दौर
गुरुवार ता. १४.७.२००५

श्री वल्लभ चरणानुरागी
दासानुदास
बालकिशन गब्बड़
का सादर जयश्रीकृष्ण
सचिव वै.मि.मंडल सा. न्यास

ग्रंथ में प्राप्त पुष्टि - भक्ति के अनुकरणीय और मननीय

सूत्रों की सूची

प्रथम खण्ड

सं.	सूत्र	वार्ता पृष्ठ
१	'वैष्णवन के अपराध तें सदा डरपत रहनो।'	१
२	'श्रीठाकुरजी अरु भगवदीयन में कछु तारतम्य नाहीं।'	१
३	'भगवदीय वैष्णवन की अनेक प्रकार की क्रिया दीसे तोहू ओर बात सर्वथा विचारनी नाहीं।	२
४	'तामस भक्त कों श्रीठाकुरजी के प्रगट स्वरूप प्रति आसक्ति बोहोत रहत हैं।	३
५	'गृहस्थ कों दूसरे को द्रव्य नहीं लेनो।'	५
६	'वैष्णवन को द्रव्य प्रभुन को है सो लौकिक में नहीं खर्चनो।	५
७	'स्वप्न की आज्ञा कों सत्य माननी।'	६
८	'सखड़ी है सो पूरन स्नेह को स्वरूप है।'	७
९	'घर आए वैष्णवन कों सखडी प्रसाद लिए बिना सखडी प्रसाद लेनो नाहीं।	८
१०	'आसक्तिवारेन कों गृह में अरुचि होत है।'	९
११	'दुःख में धीरज छोडनो नही।'	१०
१२	'भगवद्धर्म में लोक लज्जा करनी नही।'	१०
१३	'अलौकिक द्रव्य लौकिक में खर्चे तो बहिर्मुख होंई।'	११
१४	'विवाहादिक में सेवा कौ संबंध बिचारि कै आवश्यक खर्च प्रभुन सों बिनती करि कै करनो। प्रतिष्ठार्थ न करे।'	११
१५	'जो भक्त अनन्य व्है के प्रभुन की सेवा करत हैं उनकौ सब कार्य श्रीठाकुरजी आप करत हैं।'	११
१६	'प्रभु उत्तम बस्तु के भोक्ता हैं। तातें जहां कछु उत्तम पदार्थ देखिए तहां तें खरीदिए प्रभुन को अंगीकार कराइए। सामर्थ्य न होय तो मानसी करिए।	१२
१७	'उत्तम वस्तु प्रभुन कों अंगीकार कराए बिना अपने उपयोग में न लेनी।'	१३
१८	'श्रीठाकुरजी की बस्तु अपने हाथ में ले, अपनी बस्तु सों स्पर्श न करनो' (वल्लभकुल को आचार)	१३
१९	'तीर्थ आदि में माहात्म्य सों जाय तो अन्याश्रय होइ। श्रीआचार्यजी को संबंध बिचार के तीर्थ आदि करनो।'	१६

सं.	सूत्र	वार्ता पृष्ठ
२०	'श्रीरणछोड़जी (द्वारका के) श्रीआचार्यजी के माने हैं। (स्थापित हैं) तातें वहां अवश्य जानो।'	१७
२१	'विप्रयोग में सब इंद्रियन के स्वाद कौ त्याग है।'	१८
२२	'वैष्णव कों गुरु प्रति सेवक बुद्धि राखनी है। श्रीठाकुरजी के दास श्रीमहाप्रभु, उनको (उनके वंश को) दासत्व वैष्णवन कों आवश्यक है।'	१९
२३	'श्रीगुसांईजी की कृपा बिना श्रीनाथजी के स्वरूप कौ अनुभव नहीं होई।'	२०
२४	'भाववंत कों आस्वादित हैं, ताते भाववंत व्है श्रीनाथजी की सेवा करनी।'	२१
२५	'श्रीवल्लभाचार्यजी के मार्ग विषे श्रीठाकुरजी को प्रागट्य है सोई फल है, तामें अव्यभिचारी (अनन्य) भक्ति हेतु (कारण) है।'	२२
२६	'श्रीआचार्यजी के मार्ग में दसधा प्रेमलक्षणा भक्ति अधिक है।'	२३
२७	'सुंदराक्षी ऐसे जो व्रजभक्त हैं तिनके भवन में लास्य नृत्य रासादि प्रभु क्रीडा करत हैं। सो उनके भावन की नित्य भावना करनी। तामें सर्व फलानुभव होई।'	२३
२८	'श्रीगोवर्द्धन रत्न खचित धातुमय है, गोविंदकुंड दूध सों भर्‌यो है।'	२७
२९	'वैष्णव की कृपा तें गुरु की कृपा होत है। गुरु प्रसन्न होइ तब काहू बस्तू की न्यूनता रहत नाहीं। तातें वैष्णव कों अहर्निश संग करनो।'	२८
३०	'श्रीठाकुरजी आप ही तें चरन स्पर्स करावे वह फल रूप है।'	२९
३१	'भाव दृढ़ भए पाछें क्रिया की अपेक्षा रहत नाहीं।	३०
३२	'अलौकिक स्त्री भाव बिना पुरुष देह तें व्रजभक्तन सहित लीला के दरसन न होई।'	३१
३३	'स्त्रीभाव को दान श्रीस्वामिनीजी के हाथ है।'	३१
३४	'श्रीठाकुरजी के दरसन करो सो हृदय में राखियो।'	३३
३५	'श्रीगोकुल में रहत हैं तिन के दोष हृदय में नाहीं लावने।'	३३
३६	'प्रनालिका प्रमान सेवा करे तो श्रीठाकुरजी, श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजीकी कानि ते माने।'	३४
३७	'अनायस वैष्णव घर आवे तिनको सक्ति प्रमान समाधान करे।	३४
३८	'स्वरुपमें आनंद उपजे, महाप्रसादमें स्वाद आवे, घटे नाहीं, तब सेवा मानी जानिए।'	३४
३९	'श्रीस्वामिनीजी की कृपा सों श्रीठाकुरजी प्रसन्न होई।'	३४
४०	'श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी, श्रीनाथजी, श्रीस्वामिनीजी, और वैष्णवन में दृढ़ विश्वास अनन्यता एकसो भाव होई तब श्रीस्वामिनीजी प्रसन्न भए जानिए।'	३५
४१	'जे सर्वदा भगवदीय श्रीठाकुरजी कों अनुभव जानत होंई ताके आगे यह जीव दीनता करे, तब प्रभु प्रसन्न होंई।'	३६
४२	'दूतीरूप भगवदीय जानने, सो वे जब प्रसन्न होइ तब प्रभुन कों मिलाई दे।'	३७
४३	'तदीय भगवदीय है, तामें विशेष करि कै भगवद्भाव कौ स्थापन करनो।'	३७
४४	'गुरु के कार्यार्थ श्रीठाकुरजी की आज्ञा न बनि आवे तो बाधक नाहीं। गुरु की प्रसन्नता सों ठाकुरजी आप हू तें प्रसन्न होत हैं।	३९

सं.	सूत्र	वार्ता पृष्ठ
४५	'श्रीठाकुरजी की आज्ञा प्रमान चलनो यही सेवक को धर्म है।'	४१
४६	'गाढी प्रीति में आज्ञा कौ उल्लंघन बाधक नाहीं।'	४१
४७	'पुष्टिमार्ग में भावना तें स्वरुप पधारे। मर्यादा मार्ग में वेदमंत्र के आवाहन तें।'	४७
४८	'श्रीआचार्यजीने सेवा में सास्त्रन की मर्यादा हू राखी है। तातें उच्छव आदि आछे सुद्ध दिन, घटी, नक्षत्र देखि कै करने।'	४९
४९	'श्रीआचार्यजी कौ संबंध है तहां प्रभु दौरि कै जात है।'	४९
५०	'स्नेहसहित जो सेवा करत है ताकी सेवा निश्चय करि कै श्रीनाथजी आप अंगीकार करत हैं।'	४९
५१	'श्रीगुसांईजी उद्दीपन भावरूप है।'	५३
५२	'जो-वैष्णव जहां एकांत मैं बैठि कै भगवद् वार्ता करत है तहां श्रीनाथजी आप निश्चय पधारत हैं।'	५५
५३	'श्रीगोवर्द्धननाथजी आप वैष्णवन की वार्ता सुनिवे के बडे ब्यसनी हैं।'	५५
५४	'श्रीठाकुरजीकी सेवा करत ब्राह्मनन के वेदोक्त कर्म रहि जात है सो उनके पलटे तिनके ऋषिश्वर करत हैं।'	५६
५५	'श्रीगुसांईजी जितने वेदोक्त कर्म करत है वे सब अपने सेवकन के लिए ही करत हैं। तातें भगवत्सेवा सर्वोपरि हैं, वासों अवकास मिले तब वेदोक्त कर्म करने। यह मार्ग की रीति है।	५६
५६	'भगवत्सेवा आगें लौकिक वैदिक सब तुच्छ हैं।'	५७
५७	'भगवद् वार्ता.... तें देहाध्यास छूटि जात है।'	५८
५८	'भगवद्वार्ता भगवदीयन के साथ मिलि कै नित्य करनी।'	५८
५९	'अपने सनेही कौ रंच हूं संबंध दीसे तहां दोरि कै जाइ।'	६३
६०	'वैष्णव बिना काहू की बस्तु-सत्ता श्रीठाकुरजी अंगीकार न करें।	६६
६१	'जा पर लौकिक जीवन की सत्ता है सो अन्य संबंध रूप हैं तातें वस्तुमोल देके लेनी वेसे लिए तें बुद्धि भ्रष्ट होंई। लीला प्राप्ति में अंतराय परे।'	७१
६२	'वैष्णव कों मसूर की दारि, गाजर, मूरी, गूलर, गंधमूल (तरबूज) न खानो।'	७१
६३	'गुरु बिना दृढ शरणागति नाहीं।'	७९
६४	'भगवदीयन कौ एक क्षन कौ संग हूं संसार कों मिटावन हारो है।'	८१
६५	'सो मुग्ध बालक की तरह श्रीठाकुरजी कों जानि सेवा करनी।'	८३
६६	'प्रभु भक्त कों प्रेरना करि उनकी इच्छानुसार आप कार्य करते हैं।'	८९
६७	'स्थायी भाव तें लियो नाम, सेवा आदि सब तत्काल फले।'	९२
६८	'भक्तोद्धारक स्वरूप कों अपरस की अपेक्षा नाहीं।	९८
६९	'उत्थापन भोग में मेवा अवश्य चहिए।'	९८
७०	'वैष्णव बिना और को आगे अपनो धर्म प्रकास करे नाहीं, करे तो धर्म जाइ'	९९
७१	'प्रभु (गुरु) पधारे तब साम्हे जाई पधराई लावने उत्साहपूर्वक।'	१०५

सं.	सूत्र	वार्ता पृष्ठ
७२	'आमला स्वरूप विस्मृति करावनहारी है।'	११५
७३	'चरनोदक लिये तें सितल भक्ति होत है।'	११५
७४	'रोजद्रव्य अनर्थ करनहारो है।'	११५
७५	'ईश्वर के घर कौ खर्च चलायवे की जीव की सामर्थ्य नाहीं तातें सेवक कों सदा सावधान रहनो।'	१३०
७६	'वैष्णव ता दिखाइ कै अपनो कारज करे तो धर्म जाई।'	१३३
७७	'वैष्णव कों जीव मात्र पर दया राखि चाहिए।'	१३३
७८	'गुरुन के कार्य में लौकिक बुद्धि सर्वथा न करनी।'	१४८
७९	'प्रभु अपने जन कों निष्कंचन करते हैं।'	१५०
८०	'छोटे पात्र होंइ तो द्रव्य पाय बहिर्मुख व्है जाय।'	१५०
८१	लोक में जा भांति स्वामी - सेवक को व्यवहार होत है	१५०
	ता प्रकार यहां हू (पुष्टिमार्ग में) है।'	१६२
८२	'लौकिक बुद्धि वारे कों अलौकिक बात सर्वथा कहनी नाहीं, नांतर कलेश होइ।'	१६५
८३	'अपनो होइ ताही सों रिस करी जांइ।'	१७४
८४	'भट्ट और भीतरिया श्रीगुसांईजी के घर कौ संकल्प्यो द्रव्य लेत हैं तातें उनके घर की सत्ता ले तो वैष्णव कों सर्वथा बाधक होंइ।	१८१
८५	'धनमद, राजमद बाधक हैं ऐसेई विद्या को मद हू बाधक है।'	१८५
८६	'अहंकार धर्म को नास करत है।'	१८५
८७	'गायन की सेवा आछी भांति करे तो श्रीनाथजी आपही तें वा पर प्रसन्न होंई।'	२०६
८८	'प्रभु सन्मुख, गुरु सन्मुख कब हू रीते हाथ न जानो।'	२१९
८९	'वैष्णव कों उत्सव कौ दिन भूलनो नाहीं।	२२३
९०	'या मार्ग में सेवा तूल्य और साधन नाहीं।'	२२७
९१	'श्रीठाकुरजी अपने अनन्य भक्तनकौ दुःख सहि सकत नाहीं, तातें जीव कों एक अनन्य व्रत राखनो।'	२३१
९२	'जा गाम में एक वैष्णव होइ तो काहू समे वा गाम कौ उद्धार निश्चै होंइ तामें संदेह नाहीं।	२४६
९३	'आर्ति बढे बिना बस्तू फलेगी नाहीं'	२५३
९४	'पुष्टिमार्ग वैष्णव द्वारा ही फलित होत है।'	२५७
९५	'संकट परे तब दूध सों श्रीगोवर्द्धन कों न्हवाई सामग्री धरी प्रार्थना करनी ठाकुरजी सों प्रार्थना करनी नाहीं।'	२७०
९६	'दूध है सो उज्ज्वल भक्तिरस को स्वरुप है। सो श्रीगोवर्द्धन आप हरिदासवर्य है। तातें ये भक्तिरस सों सदैव स्नान करत हैं।'	२७०
९७	'प्रथम कुंआ के जल सों न्हाई पाछें श्रीयमुनाजी में स्नान करनो।'	२७३
९८	'भगवदीय जन्म जन्म के प्रारब्ध क्षण में मिटाई देत हैं।	२७७

सं.	सूत्र	वार्ता पृष्ठ
९९	'वैष्णव घर आवे ताकौ समाधान आछी भांति सों स्नेह पूर्वक करनो। द्रव्य कौ सोकर्य न होइ तो उधार लाय कै करनो।'	२७९
१००	'श्रीगुसांईजी की दृष्टि परें तें साक्षात् स्वरूप सिद्ध होय हैं।'	२८५
१०१	'पुष्टिमार्ग में प्रभु अपने जीवन कों प्रमेय बल तें उद्धार करत हैं।'	२८८
१०२	'आर्ति न होइ तब तांई प्रभु अनुभव न जतावे।'	२९०
१०३	'वृंदावन के वृक्ष-वृक्ष वेणुधारी और पत्र चतुर्भुज है तातें वैष्णव तों ब्रज की वृक्षावली सर्वथा तोरनी नाहीं। श्रीठाकुरजी के अर्थ तोरे तो कछु बाधा नाहीं।'	२९४
१०४	'श्रीठाकुरजी श्रीगुसांईजी के संबंध बिना पुष्टि रीति सों बंधे नाहीं।'	२९९
१०५	'जीव ठाकुर में अनन्य न होंई, इन्द्रियन कौ अन्य विनियोग होंइ, तहां तांई वह सब इन्द्रियन करि के व्यभिचारी ही है।'	३०६
१०६	'शरणस्थ जीवन कौ प्रभु निश्चे उद्धार करत हैं।'	३०७
१०७	'पुष्टिमार्ग में जीव की योग्यता कौ बिचार नाहीं (शरण मुख्य है)।'	३०७
१०८	'भगवदीय काहू पे अहसान करे सो सर्वथा कहे नाहीं।'	३१०
१०९	'अपने श्रीठाकुरजी के दरसन अन्य मार्गीय कों नाहीं करवाने।'	३१०
११०	'अन्य संबंध कौ गंध हू कंधरा कौ बाध करन हारो है।'	३१२
१११	'पुष्टिमार्ग में (जीव को) त्याग सर्वथा न होंई।'	३१५
११२	'जब लों लौकिक वारेन को आसक्ति रहे तब लों वा जीव की नित्य लीला में स्थिति संभवे नाहीं।'	३१९
११३	'पुष्टिमार्ग में श्रीआचार्यजी आप विरह रूप तें (जीव के) हृदय में प्रवेस करि जीव के सगरे पापन कों छिन में नाश करत हैं।'	३२२
११४	'श्रीठाकुरजी कों अपने कार्यार्थ श्रम नाहीं करवानो और वैष्णव मात्र कों काहू प्रकार सों कुढावनो नाहीं।'	३२३
११५	'वैष्णव कों जीव हिंसा सर्वथा करनी नाहीं। अन्य मार्गीय कौ संग करनो नाहीं। भगवन्नाम अहर्निश लेनो तातें काल बाधा न करें।'	३२५
११६	'भगवत्सेवा स्वरुपात्मक है, सो जो कोऊ भाव बिचारि कै सेवा करें वाकों अनुभव होंई।'	३४८
११७	'सरल भाव करि श्रीठाकुरजी की सेवा करे ताकों श्रीठाकुरजी वेगि अनुभव करावे।'	३४८
११८	'पुरुषोत्तम क्षेत्र में वैष्णवन के हाथ सों श्रीजगन्नाथराइजी कौ सखड़ी महाप्रसाद लैन की मर्यादा श्रीआचार्यजी आप राखी हैं (अपने बालकन के लिए)।'	३५५
११९	'वैष्णव होंई सो तो गुरु द्रव्य लै नाहीं।'	३५६
१२०	'जो कोऊ सत्कर्म करत है ताकी सहायता प्रभु आप करत हैं।'	३६३
१२१	'वैष्णव कों निर्दोष बस्तून में दोषारोपन सर्वथा न करनो।'	३६३

सं.	सूत्र	वार्ता पृष्ठ
१२२	'वैष्णव तों भगवत्सेवा ब्रज भक्त के भाव सों करनी।'	३६७
१२३	'निरंतर अपनो दोष विचारनो तातें दीनता सिद्ध होई। दूसरे के दोष हृदय में लावे तो अपनी गांठि हू कौ जाई दीनता सिद्ध न होई महा अपराधी होई।'	३७१
१२४	'जब लों ज्ञान न होंई तब लों कछु दोष नाहीं, जाने पाछें अपरस छुई नाई।'	३७२
१२५	'वैष्णव के संग बिना मार्ग हृदयारुढ न होंई।'	३७५
१२६	'स्नेह बिना कृति होत नाहीं।'	३८३
१२७	'सख्यता बिना सिंगार होत समे काहू कों दरसन न होंई यह मार्ग मर्यादा है।'	३८७
१२८	'चरनोदक लिये तें स्वास्थ्यता प्राप्त होत हैं।'	३८७
१२९	'गुरु हू वैष्णव के अपराध कों क्षमा करत नाहीं।'	३९१
१३०	'परोपकार जैसो कोई पदार्थ नाहीं।'	३९५
१३१	'(प्रभुन के) वस्त्र हू अलौकिक भक्तन के भाव कौ स्वरुप है।'	४०८
१३२	'अन्याश्रय समान और कोऊ अपराध नाहीं।'	४११
१३३	'(पुष्टिमार्ग की) सायुज्य मुक्ति मर्यादा तें विलक्षन हैं।'	४१३
१३४	'(पुष्टिमार्ग में) भाव ही मुख्य पदार्थ है।'	४२७
१३५	'भगवदीय वैष्णव कों निष्कपट भाव सों मिलनो भेंटनो। जा तें हृदय सुद्ध होंई भगवद भाव कौ संबंध होंइ।'	४२८
१३६	'भक्ति मार्ग में कामबाधक है, विषय सें आक्रांत जीवन के देह में प्रभुन कौ आवेस सर्वथा होत नाहीं।'	४३५
१३७	'हरिजन में यह सामर्थ्य है जो विधाता हू उनके पाँय परत है। उन तें डरपति है।'	४५६
१३८	'जो कोऊ द्रृढ़ आश्रय करि द्वार पै रहत है ताकी सुधि प्रभु आप लेत हैं और वाकी थोरीसी सेवा को हू आप बोहोत करि मानत है।'	४६९
१३९	'पुष्टिमार्ग में प्रभुन कौ अनुग्रह ही नियामक है।'	४९१
१४०	'कदाचित् प्रेम में विह्वल व्है अपरस भूलि जाई तो हू सुधि आइवे पे अपरस निकासे।'	४९७
१४१	'गुरु की आज्ञा प्रमान सेवा करनी कल्पित प्रकार सों नाहीं करनी।'	४९७
१४२	'वैष्णवन कों गाइन की सेवा भाव पूर्वक करनी तातें श्रीजी बेगि प्रसन्न होंई।'	५०९
१४३	'भावना मात्र तें वैष्णव छुई जात है तातें धर्म की सूक्ष्मगति हैं।'	५१७
१४४	'जो सामग्री कों श्रीठाकुरजी के श्रीहस्तु कौ परस होई सो तो सर्वथा घटे नाहीं।'	५२३
१४५	'काहू के द्वारा विसेस आज्ञा होंई तो परम अनुग्रह जाननो।'	५२७
१४६	'वैष्णव कों सदा सर्वकाल अलौकिक बुद्धि राखनी।'	५३२
१४७	'जब भूतल पे पूरनपुरषोत्तम कौ आविर्भाव होय है तब देवीदेवता आदि सर्व में उनके आधिदैविक स्वरूप कौ प्रवेस होत हैं।'	५४१
१४८	'कोई इंद्रिय कौ अन्य विनियोग नाहीं होय ऐसो मन द्रृढ़ राखनो।'	५४२
१४९	'उत्तम वस्तू पाइ पाछे नीचेकों नाहीं देखनो।'	५४२

– २५२ वैष्णवों के आधिदैविक स्वरूपों की सूची –
(प्रथम खण्ड)

वा.सं.	नाम	स्वरुप	कौन कौ	कौन सो भाव	निर्गुणवैष्णव	८४ वा.सं.
१	नागजी	पद्मावती	ललिताजी कौ	तामस भाव	दामोदरदास हरसानी	१
	(१) डोकरी	बहुला (श्रीचंद्रावलीजी की सखी)				
	(२) भट्यानी	कंदुकी (श्रीयमुनाजी के यूथ की)				
२	कृष्णभट्ट	रसबिलासिनी	ललिताजी कौ	सात्विक भाव	दामोदरदास हरसानी	१
	(१) भट्यानी	वसुधा (महीनंद की स्त्री)				
३	चाचाहरिवंसजी	चंद्रकला	ललिताजी कौ	राजस भाव	दामोदरदास हरसानी	१
	(१) माधौदास	कोकिलकंठी (चंद्रकला की सखी) वार्ता सं.२५१)				
	(२) सहजपालदोसी	चंद्रभान गोप				
	(३) जीऊ पारिख	महीभान गोप				
	(४) भीलनी	संझ्यावली (पुलिंदिनी के यूथ की) शबरी (रामावतार)				
	(५) रजपूतानी	नवीना(चंद्रकला की सखी)				
४	मुरारीदास	मंदाकिनी	विसाखाजी कौ	सात्विक भाव	कृष्णदास मेघन	२
५	नारायनदास	प्रेमलता	विसाखाजी कौ	राजस भाव	कृष्णदास मेघन	२
	(१) वीरां	गौरांगिनी (प्रेमलता की सखी)				
६	विट्ठलदास	वल्लवी	विसाखाजी कौ	तामस भाव	कृष्णदास मेघन	२
७	रूपमुरारीदास	चित्रांकिनी	चित्रा कौ	राजस भाव	दामोदरदास संभरवाले	३
८	माधौदास	मकरंदिनी	चित्रा कौ	तामस भाव	दामोदरदास संभरवाले	३
९	हरजी	सुंरगी	चित्रा कौ	सात्विकभाव	दामोदरदास संभरवाले	३
	(१) जैता कोठारी	ब्रजभाभा (श्री चंद्रावलीजी की सखी)				
१०	भाइला कोठारी	कौमोदिनी	चंपकलता कौ	राजसभाव	पद्मनाभदास	४
११	गोपालदास	सारंगी	चंपकलता कौ	सात्विकभाव	पद्मनाभदास	४
	(१) गोमती	गोमती (सारंगी की सखी)				
१२	मानिकचंद	रागिनी	चंपकलता कौ	तामस भाव	पद्मनाभदास	४
	(१) स्त्री	अनुरागिनी(रागिनी की सखी)				
१३	एक ब्राहान	आनंदी	रतिकला कौ	तामस भाव	रजोक्षत्राणी	५
१४	गनेश व्यास	प्रमोदिनी	रतिकला कौ	सात्विक भाव	रजोक्षत्राणी	५
१५	हरिदास	सरला	रतिकला कौ	राजस भाव	रजोक्षत्राणी	५
१६	मधुसूदनदास	बंदिनी	इन्दुलेखा कौ	तामस भाव	सेठ पुरुषोत्तमदास	६
१७	रूपचंदनंदा	सोनजूही	इंन्दुलेखा कौ	राजस भाव	सेठ पुरुषोत्तमदास	६
	(१) हरिचंदा	सुगंधिनी (सोनजूही की सखी)				

वा.सं.	नाम	स्वरूप	कौन कौ	कौन सो भाव	निर्गुणवैष्णव	८४ वा.सं.
१८	माधौदास	सारसिनी	इन्दुलेखा कौ	सात्विक भाव	सेठ पुरुषोत्तमदास	६
	(१) पिता	गेंदुवा (श्री यमुनाजी के यूथ को माली)				
	(२) माता	सूरजमूखी (श्री यमुनाजी के यूथ की मालिनी)				
१९	बाप–बेटा कायस्थ	ब्रजांगना	प्रेममंजरी कौ	तामस भाव	रामदास	७
	(१) बेटा	ब्रजवल्लभा (ब्रजांगना की सखी)				
२०	दोइभाई पटेल	मुग्धा	प्रेममंजरी कौ	सात्विक भाव	रामदास	७
	(१) बड़ोभाई	तरंगिनी (श्री यमुनाजी के यूथ की)				
२१	एक पटेल	मालिनी	प्रेममंजरी कौ	राजस भाव	रामदास	७
२२	एक विरक्त	रसिका	कलकंठी कौ	सात्विक भाव	गदाधरदास	८
२३	एक और विरक्त	सुदेवी	कलकंठी कौ	तामस भाव	गदाधरदास	८
२४	कृष्णदास	नीलवर्णी	कलकंठी कौ	राजस भाव	गदाधरदास	८
२५	जनार्दनदास	विमला	रत्नप्रभा कौ	राजस भाव	माधौदास	९
	(१) गोपालदास निर्मला (रत्नप्रभा की सखी)					
२६	हरिदास	प्रवालिका	रत्नप्रभा कौ	तामस भाव	माधौदास	९
	(१) स्त्री	सीतला (प्रवालिका की सखी)				
	(२) जेंवल की बहिन प्रेममंजरी (प्रवालिका की सहचरी)					
	(३) जेंवल	किसोरी(प्रेममंजरी की सखी)				
२७	मानिकचंद	सुमति	रत्नप्रभा कौ	सात्विक भाव	माधौदास	९
	(१) स्त्री	उजियारी(प्रवालिका की सखी)				
	(२) माता	कल्यानी (श्रीयमुनाजी की सखी)				
	(३) एक नागर	वैष्णवी (श्रीयमुनाजी की सखी)				
२८	एक नागर वडनगरा	दिव्यरत्ना	गतिउत्तालिका कौ	तामस भाव	हरिवंश पाठक	१०
२९	सनाढ्य ब्राह्मन	प्रमदा	गतिउत्तालिका कौ	सात्विक भाव	हरिवंश पाठक	१०
३०	एक राजपूत	रसालिका	गतिउत्तालिका कौ	राजस भाव	हरिवंश पाठक	१०
३१	सेठ की बेटी	राइन	मनसुखा गोप कौ	राजस भाव	गोविंददास भल्ला	११
३२	एक कुम्हार	परमानंद	मनसुखा गोप कौ	सात्विक भाव	गोविंददास भल्ला	११
३३	गोविंददास	नृत्यकला	मनसुखा गोप कौ	तामस भाव	गोविंददास भल्ला	११
३४	एक ब्राह्मन	गोपदेवी	रोहिनीजी कौ	राजस भाव	अम्मा क्षत्राणी	१२
३५	एक सनोढिया	तमसा देवी	रोहिनीजी कौ	तामस भाव	अम्मा क्षत्राणी	१२
३६	मा बेटा बहू	स्यामसनेहिनी	रोहिनीजी कौ	सात्विक भाव	अम्मा क्षत्राणी	१२
	(१) मा	स्यामा (विसाखाजी की सखी)				
	(२) बेटा	रामदे (स्याम की सखी)				

वा.सं.	नाम	स्वरूप	कौन कौ	कौन सो भाव	निर्गुणवैष्णव	८४ वा.सं.
३७	पीरजादी	सलौनी	सुभ आनना कौ	तामस भाव	गज्जन धावन	१३
	(१) अलीखान रसरंगिनी (श्री यमुनाजी के यूथ की)					
३८	एक ब्राह्मनी	चंदमुखी	सुभ आनना कौ	राजस भाव	गज्जन धावन	१३
३९	मथुरादास	प्रेमवल्लरी	सुभ आनना कौ	सात्विक भाव	गज्जन धावन	१३
४०	वैष्णव कौ लरिका	गोपदेवी	मधुरेक्षना कौ	सात्विक भाव	नारायनदास	१४
४१	एक अदना गरीब	रूपदेवी	मधुरेक्षना कौ	राजस भाव	नारायनदास	१४
	(१) वेश्यावारो वैष्णव श्रीदेवी (रूपदेवी की सहचारिनी) (वार्ता सं.२११)					
४२	गोरवा क्षत्री	दुर्गा	मधुरेक्षना कौ	तामस भाव	नारायनदास	१४
४३	एक साहूकार की बहू कामा		भद्रा कौ	राजस भाव	एक क्षत्राणी	१५
	(१) म्लेच्छ	कामआतुरी (श्रीचंदावलीजी के यूथ की)				
४४	स्यामदास	प्रेमकली	भद्रा कौ	सात्विक भाव	एक क्षत्राणी	१५
४५	छज्जो	कलहांतरिता	भद्रा कौ	तामस भाव	एक क्षत्राणी	१५
४६	बेनीदास	कृष्णरंगा	स्यामा कौ	सात्विक भाव	जीयदास	१६
४७	एक क्षत्राणी	सुखदा	स्यामा कौ	राजस भाव	जीयदास	१६
४८	दुर्गादास	कल्यानी	स्यामा कौ	तामस भाव	जीयदास	१६
४९	पुरुषोत्तमदास	त्रिवेनी	प्रवीना कौ	सात्विक भाव	देवाकपुर	१७
५०	लक्ष्मीदास दोषी	वनराजी	प्रवीना कौ	राजस भाव	देवाकपुर	१७
५१	ध्यानदास	मनसा देवी	प्रवीना कौ	तामस भाव	देवाकपुर	१७
	(१) जगन्नाथदास कीरति (श्रीयमुनाजी के यूथ की)					
५२	एक सेठ	पयोनिधि	मनआतुरी कौ	राजस भाव	दिनकर सेठ	१८
	(१) ब्राह्मन	मृदुभाषिनी (श्रुतिरूपा के यूथ की) (वार्ता सं.१४८)				
	(२) स्त्री	कोमलांगी (श्रुतिरूपा के यूथ की)				
	(३–६) चारों वैष्णव	हंसगामिनी (मृदुभाषिनी की सहचरी)				
		ब्रह्मानंदिनी (मृदुभाषिनी की सहचरी)				
		कोकिला	(कोमलांगी की सहचरी)			
		कलावती	(कोमलांगी की सहचरी)			
५३	एक रजपूत	केलिनी	मन आतुरी कौ	तामस भाव	दिनकर सेठ	१८
	(१) स्त्री	रामा(केलिनी की सखी)				
५४	एक पटेल	अंगुरी	मन आतुरी कौ	सात्विकभाव	दिनकर सेठ	१८
५५	निहालचंद	मकरंदिनी	ध्रुवनंद कौ	सात्विक भाव	मुकुन्ददास	१९
५६	ज्ञानचंद	अनंगिनी	ध्रुवनंद कौ	राजस भाव	मुकुन्ददास	१९
५७	जदुनाथदास	रूप–रसिका	ध्रुवनंद कौ	तामस भाव	मुकुन्ददास	१९
	(१) स्त्री	गजगामिनी(श्रुतिरूपा के यूथ की)				

वा.सं.	नाम	स्वरुप	कौन कौ	कौन सो भाव	निर्गुणवैष्णव	८४ वा.सं.
५८	पाथो	चपला	मन्मथमोदा कौ	सात्विक भाव	प्रभुदास जलोटा	२०
	(१–२) पुत्र दो	नरुवा गोप				
	पुत्र दो	गरुवा गोप				
५९	एक धोबी	श्रीदेवी	मन्मथनोदा कौ	तामस भाव	प्रभुदास जलोटा	२०
६०	धोबी राजा	रतिधामा	मन्मथनोदा कौ	राजस भाव	प्रभुदास जलोटा	२०
६१	पटेल कौ बेटा	कामकला	कलहंसी कौ	सात्विकभाव	प्रभुदास भाट	२१
	(१) पटवारी की बेटी	रति (श्री चंद्रावलीजी की सखी)				
६२	एक राजा	रास–रसिका	कलहंसी कौ	राजस भाव	प्रभुदास भाट	२१
६३	दया भवैया	बहूरुपिनी	कलहंसी कौ	तामस भाव	प्रभुदास भाट	२१
६४	एक पटेल	उजियारी	माधवी कौ	सात्विक भाव	पुरुषोत्तमदास	२२
	(१) मा	चंदन (उजियारी की सखी)				
	(२) बेटा	चनौठी (उजियारी की सखी)				
६५	गंगाबाई	भृंगिनी	माधवी कौ	तामस भाव	पुरुषोत्तमदास	२२
	(१) मा	अंतगृहगता				
६६	राजा जोतसिंघ	कालिंदी	माधवी कौ	राजस भाव	पुरुषोत्तमदास	२२
६७	प्रोहित	सौभाग्यसुंदरी	हरनी कौ	राजसभाव	त्रिपुरदास	२३
	(१) राजा कौ बड़ो पुत्र	लीला (सौभाग्यसुंदरी की सखी)				
	(२) राजा कौ छोटो पुत्र	बीना (सौभाग्यसुंदरी की सखी)				
	(३) राजा की बेटी	प्रवीना (सौभाग्यसुंदरी की सखी)				
६८	विरक्त तादृशी	कुंजादेवी	हरनी कौ	सात्विक भाव	त्रिपुरदास	२३
	(१) साधारन	गुंजादेवी				
६९	कुंजरी	सोहिनी	हरनी कौ	तामसभाव	त्रिपुरदास	२३
७०	हतित	नरो	चित्रलेखा कौ	तामसभाव	पूरनमल	२४
	(१) पतित	वरो				
७१	दोऊ विरक्त कृपापात्र	मंगला	चित्रलेखा कौ	सात्विक भाव	पूरनमल	२४
	(१) साधारन	वामा (मंगला की सहचरी)				
७२	साठोदरा नागर ब्राह्मण	व्रजनागरी	चित्रलेखा कौ	राजसभाव	पूरनमल	२४
	(१) स्त्री	भामिनी (चित्रलेखा की सहचरी)				
	(२) पुरुष	व्रजदेवी (व्रजनागरी की सहचरी)				
७३	वेस्याकी छोरी	नृत्यनिपुना	मदोंन्मत्ता कौ	तामसभाव	गोविंददास भल्ला	२५
७४	वाघाजी	चारुमती	मदोन्मत्ता कौ	राजसभाव	गोविंददास भल्ला	२५
	(१) स्त्री	चारुमुखी (चारुमति की सहचरी)				
	(२) वैष्णव	भक्तिनी (चारुमति की सहचरी)		वा.सं. नाम	स्वरुप	कौन

कौ	कौन सो भाव	निर्गुणवैष्णव	८४ वा.सं.		
	(३) स्त्री	आनंदिनी (चारुमति की सखी)			
७५	बीरबल की बेटी	रसिकप्रिया	मदोन्मत्ता कौ	सात्विकभाव	गोविंददास भल्ला
७६	एक कुनबी गुजरात कौ	बादामी	सुवा कौ	तामसभाव	गुसांईदास
७७	दूसरोकुनबी गुजरातकौ	चारूगोप	सुवा कौ	सात्विकभाव	गुसांईदास
७८	एक ब्राह्मन	बिछिया	सुवा कौ	राजसभाव	गुसांईदास
	(१) स्त्री	रामकटोरी(बिछीया की सखी)			
७९	गोपीनाथदास	गोवर्द्धनग्वाल	रत्ना कौ	तामसभाव	माधवदास
८०	दोई कुनबी	प्रतिमा	रत्ना कौ	सात्विकभाव	माधव भट्ट
	(१) छोटोभाई	मनोहारिनी			
८१	परम वैष्णव	भावोदबोधिका	रत्ना कौ	राजसभाव	माधव भट्ट
	(१) वृक्ष	पेंचुग्वाल			
८२	एक गोडिया	मोरसिरी	रसप्रकासिका कौ	सात्विक भाव	गोपालदास
८३	एक क्षत्राणी	अंगना	रसप्रकासिका कौ	राजस भाव	गोपालदास
८४	वैष्णव विरक्त	रमनी	रसप्रकासिका कौ	तामस भाव	गोपालदास

प्रथम खण्ड की सूचि सम्पूर्ण

२५२ वैष्णवों की वार्ताओं सूची

वार्ता सं.	नाम	ज्ञाति	पृष्ठ सं.	प्रसंग सं.
१	नागजी भट्ट	(साठोदरा नागर ब्राह्मण)	१	६
२	कृष्ण भट्ट	(साँचोरा ब्राह्मण)	२५	१६
३	चाचा हरिवंशजी	(क्षत्री)	६०	१४
४	मुरारीदास	(सूर्यद्विज बाह्मण)	९४	१
५	नारायणदास दीवान	(कायस्थ)	१०३	९
६	विट्ठलदास	(कायस्थ)	१३१	१
७	रूपमुरारीदास	(क्षत्री)	१३६	२
८	माधौदास काबुल के	(क्षत्री)	१३९	१
९	हरजी कोठारी	(वैश्य)	१४४	१
१०	भाइला कोठारी	(वैश्य)	१४६	३
११	गोपालदास रूपपुरा के	(वैश्य)	१५२	२
१२	माणिकचंद आगरा के	(क्षत्री)	१५५	२
१३	एक ब्राह्मण बंगाले को	(ब्राह्मण)	१६३	१
१४	गणेश व्यास	(श्रीमाली ब्राह्मण)	१७२	२
१५	हरिदास खवास	(सनाढय ब्राह्मण)	१७५	३
१६	मधुसूदनदास गौडिया	(ब्राह्मण)	१७९	१
१७	रूपचंदनंदा	(क्षत्री)	१८२	३
१८	माधौदास सहारनपुर के	(कायस्थ)	१९९	१
१९	बाप–बेटा हिंसार के	(कायस्थ)	१९३	१
२०	दोइ भाई पटेल काकाजीवाले	(पटेल)	२०२	४
२१	एक पटेल मालावालो	(पटेल)	२१७	१
२२	एक विरक्त, जाने हथेली में डोल झुलायो	(क्षत्री)	२२२	१
२३	एक विरक्त, परिक्रमा वालो	(ब्राह्मण)	२२५	१
२४	कृष्णदास	(कायस्थ)	२२८	२
२५	जनार्दनदास गोपालदास	(कायस्थ, क्षत्री)	२३२	२
२६	हरिदास बनिया	(वैश्य)	२३६	२
२७	माणिकचंद हरिदास के जमाई	(वैश्य)	२४७	२
२८	एक नागर ब्राह्मण वडनगरा	(ब्राह्मण)	२६८	१
२९	सनाढ्य ब्राह्मण, श्रीयमुनाजी में पांव नहीं धरतो	(ब्राह्मण)	२७१	१
३०	एक रजपूत, द्वारिका के मार्ग में रहतो	(रजपूत)	२७३	१
३१	एक सेठ की बेटी लाहौर में रहती	(वैश्य)	२७५	१
३२	एक कुम्हार	(कुम्हार)	२७८	२
३३	गोविंददास खवास	(ब्राह्मण)	२८०	१

३४	एक ब्राह्मण गुजरात कौ	(ब्राह्मण)	२८२	१
३५	एक सनोढ़िया ब्राह्मण, स्यॉंप हुआ	(ब्राह्मण)	२८६	१
३६	मा, बेटा, बहू	(ब्राह्मण)	२८८	१
३७	पीरजादी, अलीखान पठाण की बेटी	(पठाण)	२९१	४
३८	एक ब्राह्मणी उज्जैन के पास रहती	(ब्राह्मण)	३०५	३
३९	मथुरादास क्षत्री, गोपालपुर के	(क्षत्री)	३१२	१
४०	एक वैष्णव कौ लरिका दक्षिण कों		३१५	१
४१	एक अदना गरीब ब्राह्मण	(ब्राह्मन)	३२०	१
४२	एक वैष्णव गौरवा क्षत्री, जाने सर्प मारयो	(क्षत्री)	३२४	१
४३	एक साहूकार के बेटा की बहू, गुजरात की	(वैश्य)	३२६	१
४४	स्यामदास आंजणा कुणवी	(कुणबी)	३३७	१
४५	छज्जो ब्राह्मणी	(ब्राह्मण)	३४२	१
४६	बेनीदास छीपा	(छीपा)	३४४	१
४७	एक क्षत्राणी गुजरात की	(क्षत्री)	३४९	१
४८	दुर्गादास ब्राह्मण, गंगापुत्र	(ब्राह्मण)	३५१	१
४९	पुरुषोत्तमदास पुष्करणा ब्राह्मन	(ब्राह्मण)	३५४	२
५०	लक्ष्मीदास दोषी	(वैश्य)	३५८	२
५१	ध्यानदास, जगन्नाथदास	(क्षत्री, २)	३६१	१
५२	एक सेठ राजनगर कौ बासी	(वैश्य)	३६३	२
५३	एक रजपूत गरासीया महीकांठा कौ	(रजपूत)	३७८	२
५४	एक पटेल कुणवी जिस के लिये गाड़ी पठाई	(कुणबी)	३८४	१
५५	निहालचंद भाई जलोटा क्षत्री	(क्षत्री)	३९१	१
५६	ज्ञानचंद सेठ आगरा के	(वैश्य)	३९५	१
५७	जदुनाथदास क्षत्री जोनपुर के	(क्षत्री)	३९८	१
५८	पाथो गुजरी	(गुजर)	४०३	२
५९	एक धोबी, श्रीनाथजी कौ ...	(धोबी)	४०७	२
६०	एक धोबी–राजा मारवाड ...	(क्षत्री)	४१३	१
६१	एक पटेल कौ बेटा, पटवारी कै बेटी	(पटेल, वैश्य)	४७७	१
६२	एक राजा, भवैयावाला ...	(रजपूत)	४२१	१
६३	दया भवैया ...	(भवैया)	४२८	१
६४	एक पटेल कुणबी, जिनकी धोवती के छींटा सों कोढ गयो ...	(कुणबी)	४३१	१
६५	गंगाबाई क्षत्राणी, महावन की ...	(क्षत्री)	४३४	२
६६	राजा जोतसिंघ ...	(रजपूत)	४३९	१
६७	एक प्रोहित, राजा जोतसिंघ कौ	(ब्राह्मण)	४४६	१
६८	एक विरक्त एक तादृशी ...	(ब्राह्मण)	४५७	१
६९	एक कुंजरी मथुरा की ...	(कुंजरी)	४६३	१

७०	हतित पतित राक्षस ...	(श्रीमाली ब्राह्मण)	४६९	१
७१	दोऊ वैष्णव विरक्त जिननें कीड़ा देखे	(ब्राह्मण)	४७५	१
७२	एक नागर साठोदरा ब्राह्मण ...	(ब्राह्मण)	४८१	१
७३	एक वेस्या की छोरी ...	(वेश्या)	४८७	१
७४	वाधाजी रजपूत ...	(रजपूत)	४९१	१
७५	बीरबल की बेटी ...	(ब्राह्मण ?)	५००	१
७६	एक कुणबी शंखाहुली की मालावाली ...	(कुणबी)	५०५	१
७७	एक कुणबी, जाने गोपाल घास में नाचत देखे ...	(कुणबी)	५०७	२
७८	एक ब्राह्मण, गंगाजी के तीर पर रहतो	(ब्राह्मण)	५११	२
७९	गोपीनाथदास ग्वाल ...	(सनाढ्य ब्राह्मण)	५२१	३
८०	दो कुणबी, जिननें माला–तिलक छुपाए...	(कुणबी)	५२७	१
८१	एक परम वैष्णव, जो वृक्ष के साथ भगवद्वार्ता करतो ...	(ब्राह्मण)	५३१	१
८२	एक गोडिया ब्राह्मण ...	(ब्राह्मण)	५३४	१
८३	एक स्त्री, क्षत्राणी ...	(क्षत्राणी)	५३६	१
८४	एक वैष्णव विरक्त ...	(ब्राह्मण)	५४०	१

प्रथम खण्ड
वार्ता
।। सम्पूर्ण ।।

माला तिलक वाले पुष्टिमार्ग के संरक्षक चतुर्थलालजी वार्ताकार श्री गोकुलनाथजी महाराजश्री

प्राकट्य मार्गशीर्ष शुक्ल ७ वि.सं. १६०८ तिरोधान–फाल्गुन कृष्ण ९ वि.सं. १६९७

शिक्षा सागर वार्ता भावप्रकाश श्रीहरिरायजी महाप्रभु

प्राकट्य आश्विन कृष्ण पंचमी वि.सं. १६४७ ✶ तिरोधान - वि.सं. १७७२

॥ श्रीहरिः ॥

* श्रीकृष्णाय नमः * श्री गोपीजनवल्लभाय नमः *

दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता

अब दोसौ बावन वैष्णवन की वार्ता श्रीगोकुलनाथजी प्रगट किये ताकौ भाव श्रीहरिरायजी कहत हैं सो लिख्यते –

भावप्रकाश –

चौरासी वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के अंग–रूप 'निर्गुण पक्ष' के मुखिया हैं। तिनकौ भाव चौरासी वैष्णवन की वार्ता में कहि आए हैं। उनके तीन–तीन धर्म–रूप चौरासी वैष्णव राजसी, चौरासी वैष्णव तामसी (और) चौरासी वैष्णव सात्विकी इह हैं। सो ये तीनों जूथ मिलि कै दोइसौ बावन श्रीगुसांईजी के अंग–संबंधी जाननें। ये श्रीगुसांईजी के अंग–रूप अलौकिक सर्व–सामर्थ्य रूप हैं।

सो एक समै श्रीगुसांईजी अति प्रसन्नता में श्रीरुक्मिनी बहूजी सों बातें करत हते, जो–ये सगरे वैष्णव मेरे हैं, सो सगरे अंग कौ स्वरूप हैं। तब रुक्मिनी बहूजी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–चाचा हरिवंसजी तुम्हारो कौनसो अंग हैं ? तब श्रीगुसांईजी ने श्री रुक्मिनी बहूजी सों कह्यो, जो–ये चाचा हरिवंसजी मेरे नेत्रन की स्याम पूतरीन कौ स्वरूप है।

ता पाछें एक दिन चाचा हरिवंसजी कों ठोकर लगी। सो दुःखी भए। ताही समै श्रीगुसांईजी के नेत्र दुखि आए। तब श्रीरुक्मिनी बहूजी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–तुम्हारे नेत्र क्यों दुखत हैं ? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–चाचा हरिवंसजी कों ठोकर लगी है सो दुःखी है, तातें हमारे नेत्र दुखत हैं। पाछें जब चाचा हरिवंसजी आछें भए तब श्रीगुसांईजी के नेत्र हूँ आछें व्है गए।

सो या भांति श्रीगुसांईजी आपु श्रीरुक्मिनी बहूजी कों भगवदीय वैष्णवन कौ स्वरूप जताए। तातें वैष्णवन के अपराध तें सदा डरपत रहनो। क्यों ? जो – श्रीठाकुरजी अरु भगवदीयन में कछू तारतम्य नाहीं है। सो 'पुष्टिप्रवाहमर्यादा' ग्रन्थ में श्रीआचार्यजी महाप्रभु भगवदीय कौ स्वरूप लिखे हैं। सो श्लोक –

तस्माज्जीवाः पुष्टिमार्गे भिन्ना एव न संशयः।
भगवद्रूपसेवार्थं तत्सृष्टिर्नान्यथा भवेत्॥
स्वरूपेणावतारेण लिंगेन च गुणेन च।
तारतम्यं न स्वरूपे देहे वा तत्क्रियासु वा॥

सो पुष्टिमार्गीय जीव इह संसार के जीवन तें भिन्न हैं। यामें संसय नाहीं। भगवान कौ रूप ही हैं। भगवान की सेवा ही के अर्थ जगत में पुष्टि धर्म प्रगट करिवे के लिये प्रगटे हैं। भगवान के स्वरूप में, भगवान के अवतार में भगवान के जैसें गुन हैं, भगवान के जैसी क्रिया हैं, तैसें ही भगवदीय में लच्छन हैं। तातें भगवान में अरु भगवदीय में तारतम्य नाहीं है।

सो श्रीगुसांईजी आपु पूरन पुरुषोत्तम हैं। तातें ये भगवदीय हू उनके अंग रूप जाननें।

सो या प्रकार श्रीगुसांईजी वैष्णवन कौ स्वरूप श्रीरुक्मिनी बहूजी कों प्रत्यच्छ दिखायो। जो–आगें के जीवन कों विस्वास दृढ करिवे के तांई। तातें भगवदीय वैष्णवन की अनेक प्रकार की क्रिया दीसे तोहू और बात सर्वथा बिचारनी नाहीं।

अब श्रीगुसांईजी के सेवक दोसौ बावन वैष्णवन की वार्तान में गूढ़ आसय श्रीगोकुलनाथजी कहे हैं, तहां श्रीहरिरायजी कछूक भाव प्रगट करत हैं, पुष्टिमार्गीय वैष्णवन के जनाइवे के अर्थ।

अब प्रथम सेवक सो श्रीगुसांईजी के नागजीभट, जिनको श्रीगुसांईजी आपु 'नागिया' कहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत है –

भावप्रकाश – सो श्रीगुसांईजी नागजी भट कों 'नागिया' कहते। सो यातें, जो– नागिया सो नाग। सो जेसें सेस नाग के हृदय पै विष्णु हैं, सयन करत हैं, तैसें श्रीगुसांईजी नागजी भट के हृदय में सदा सर्वदा स्थिति करत हैं। तहां यह संदेह होइ, जो – श्रीगुसांईजी आपु भक्तवत्सल हैं। सो तो सब ही भक्तन के हृदय में बिराजत हैं, तातें नागजी भट कों (ही) नाग क्यों कहे ? तहां कहत हैं, जो श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी दसम स्कंध की सुबोधिनीजी में मंगलाचरन की प्रथम कारिका क्रिये हैं। सो कारिका –

"नमामि हृदये शेषे लीलाक्षीराब्धिशायिनम्।
लक्ष्मीसहस्रलीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम्॥"

सो यामें श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी कहत हैं, जो–सहस्र लच्छमी करि लीलान तें सेवित अरु कलान के निधि ऐसे जो श्रीपुरुषोत्तम हैं, सो लीलारूप छीरसमुद्र में मेरे हृदय–रूप सेस पर बिराजित हैं। सो ता भांति श्रीगुसांईजी पूरन पुरुषोत्तम हैं, सो सकल लीला सहित नागजी भट के हृदय में सदा स्थिति करत हैं। या भाव तें श्रीगुसांईजी नागजी भट कों 'नागिया' कहते।

दूसरो यहू अभिप्राय है, जो–नाग (जा भांति) तामस हैं, तैसें नागजी भट हू तामस भक्त हैं।

सो तामस भक्त कों श्रीठाकुरजी के प्रगट स्वरूप प्रति आसक्ति बोहोत रहत है। तैसे ही नागजी भट कों हू श्रीगुसांईजी के प्रगट स्वरूप में अधिक प्रीति है। सो क्यों जानिए ? जो–एक समै नागजी भट श्रीगोवर्द्धनधर की सेवा में रहे। तोहू नागजी भट कों श्रीगुसांईजी के प्रगट स्वरूप के दरसन की इच्छा रही आवै। तातें नागजी भट ने श्रीगुसांईजी कों एक श्लोक अडेल लिखि पठायो। सो श्लोक –

"सरसि कुशेशयमप्यास्वादितुमागच्छतोऽलिनो मार्गे।

यदि कनक–कमलपाने नासीत्तोषः किमन्येन।"

इह श्लोक में नागजी भट ने श्रीगुसांईजी कों जल–कमल कहे हैं। अरु श्रीगोवर्द्धनधर कों कनक–कमल कहे हैं। यातें यों जानिए, जो–नागजी भट की श्रीगुसांईजी के प्रगट स्वरूप में अधिक प्रीति है।

और नागजी भट कौ अलौकिक स्वरूप हैं, सो 'पद्मावती' कौ प्रागट्य है। ये ललिताजी तें प्रगटी हैं। सो उनके तामस भाव कौ स्वरूप हैं। सो ललिता पद्मावती–स्वरूप सों श्रीचंद्रावलीजी की सेवा में सदा तत्पर रहत हैं। सो यातें, जो– ललिताजी कौ प्रागट्य श्रीचंद्रावलीजी तें है। तातें ललिता श्रीस्वामिनीजी और श्रीचन्द्रावलीजी दोऊन की आज्ञाकारिनी सखी हैं। दोऊन की सेवा में सदा तत्पर रहत हैं। क्यों ? जो–ये दोऊ मुख्य स्वामिनी हैं। श्रीस्वामिनीजू आलंबन भाव –रूप हैं, अरु श्रीचन्द्रावली जू उद्दीपन भाव कौ स्वरूप हैं। सो या प्रकार दोनों स्वामिनी ठाकुर के दोनों ओर बिराजती हैं। सो जहां दो स्वामिनी होंइ तहां यह भाव जाननो। सो श्रीस्वामिनीजी सदा श्रीठाकुरजी के वाम भाग बिराजति हैं अरु श्रीचन्द्रावलीजी श्रीठाकुरजी के सदा दच्छिन ओर विराजति हैं। यातें ये दोऊ मुख्य स्वामिनी हैं। उनमें भेद नाहीं।

सो पद्मावती श्रीचन्द्रावलीजी की अंतरंग सखी है। सो उहां लीला में श्रीचन्द्रावलीजी कों सुंदर सामग्री अंगीकार करावति हैं। तैसें ही यहां नागजी भट श्रीगुसांईजी कों उत्तम सामग्री अंगीकार करायवे में सदा तत्पर रहत हैं। सो बात आंबान के प्रसंगन में प्रसिद्ध है अरु चीर के प्रसंग में हू है।

या प्रकार नागजी भट श्रीगुसांईजी के स्वरूप में सदा मगन रहत हैं। तातें न्यारी श्रीठाकुरजी की सेवा नाहीं पधराई। श्रीगुसांईजी पूरन पुरुषोत्तम हैं। यह 'मानसी सा परा मता' मानसी सेवा के अधिकारी हैं। सो लीला–रस में सदा मगन रहत हैं।

ये नागजी भट गोधरा में एक साठोदरा ब्राह्मन के (यहां) प्रगटे। सो ये चार भाई हे। तामें नागजी सबतें छोटे हैं। सो ये पढे बहोत। पाछें जब पिता मर्‍यो तब ये चारौं भाई न्यारे न्यारे व्है

गए। सो पिता गाम कौ देसाई हतो। सो वाके पास द्रव्य बोहोत हुतो। सो उन चारौंन नें बांटि लियो। ता पाछें नागजी कौ ब्याह भयो। सो स्त्री दैवी मिली। पाछें कछूक दिन में नागजी भट कों एक बेटी भई। वाके थोरे दिन पाछें गाम में रोग फेल्यो। सो नागजी भट के तीनों भाई मरे। पाछें राज कौ उपद्रव भयो, सो नागजी भट कौ सब द्रव्य हू गयो। तब नागजी भट कों बहोत दुःख भयो। सो वा गाम में श्रीआचार्यजी के सेवक राना व्यास रहत हुते। सो नागजी भट राना व्यास के पास आइ अपनो सब दुःख कह्यो। पाछें बोहोत विलाप करन लागे। तब राना व्यास ने कह्यो, जो–तुम अडेल में आचार्यजी बिराजत हैं, उनकी सरन जाउ। वे ईश्वर हैं। सो उनके सरन जायवे तें तुमकों बोहोत सुख होइगो। इह लोक परलोक दोनों में सुख पाओगे। मैं हू श्री आचार्यजी कौ सेवक भयो हूं। सो सुनि कै नागजी भट गोधरा तें अडेल कों चले। सो कछूक दिन में अडेल आइ पहुंचे।

वार्ता प्रसंग – १

सो वे नागजी भट प्रथम श्रीआचार्यजी के पास नाम पाइवे कों आए। तब श्रीआचार्यजी नागजी भट सों यह आज्ञा किये, जो–नागजी ! तुम लरिका पास जाइ कै नाम पाओ।

भावप्रकाश – सो काहेतें ? जो–ये श्रीगुसांईजी के अंग संबंधी हैं। सो श्रीगुसांईजी में इनकी अधिक प्रीति होइगी। तातें श्रीआचार्यजी आज्ञा किये, "तुम लरिका पास जाइ कै नाम पाओ।" और दूसरो अभिप्राय यहू है, जो–अब श्रीआचार्यजी कों सन्यास ग्रहन करनो है, और अपुने बंस द्वारा आगें मार्ग (हू) चलावनो है। ताही तें श्रीठाकुरजी ने ब्याह करिवे की आज्ञा दीनी है। यों बिचारि कै श्रीआचार्यजी ने नागजी भट कों श्रीगुसांईजी के पास पठाए। तहां यह संदेह होइ, जो–श्रीआचार्यजी के बडे पुत्र तो श्रीगोपीनाथजी हैं। सो उनके पास नागजी भट कों क्यों नांय पठाए ? तहां कहत हैं, जो– श्रीगोपीनाथजी मर्यादा बलदेवजी कौ अवतार हैं। सो इनकी रुचि हू साधन करिवे में बोहोत है। और आगें पुष्टिमार्ग कौ उपदेस श्रीगुसांईजी करेंगे। सो पुष्टिमार्ग के विस्तार करनहारे आप ही हैं। याही तें श्रीआचार्यजी ने पुष्टिमार्ग के जीव श्रीगुसांईजी कों सौंपे हैं। सो पुष्टिमार्ग के सिद्धांत के मुख्य पात्र नागजी भट हैं। तातें श्रीआचार्यजी ने नागजी भट कों श्रीगुसांईजी के पास पठाए। सो नागजी भट श्रीगुसांईजी के प्रथम सेवक भए। जैसें श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के प्रथम सेवक दामोदरदास हरसानी, तैसें ही श्रीगुसांईजी के प्रथम सेवक नागजी भट हैं।

सो नागजी भट श्रीगुसांईजी के पास आइ कै बिनती कियो

तब श्रीगुसांईजी कृपा करि कै नागजी कों नाम सुनाए। पाछें ब्रह्मसंबंध कराए। सो वे नागजी भट श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय भए। पाछें नागजी श्रीगुसांईजी के पास कछूक दिन रहि कै अपुने घर आए। ता पाछें केतेक दिन कों नागजी की बेटी कौ विवाह आयो। सो खंभाइच कै वैष्णवन सुन्यो। सो वे वैष्णवन श्री गुसांईजी के सेवक हुते। तिन(ने) आपुस में कछू द्रव्य भेलौ करि ताकी हुंडी कराइ, एक पत्र में बीडि, एक कासिद नागजी पास उन वैष्णवन(ने) खंभाइच तें गोधरा पठायो। ता पत्र में वैष्णवन (ने) नागजी कों लिख्यो, जो – यह द्रव्य तुम्हारी बेटी के विवाह कों पठायो है। सो तुम आछी भांति विवाह करियो। सो वह कासिद पत्र लै कै नागजी के घर गोधरा में आयो। सो वह पत्र नागजी कों कासिद ने दीनो। सो पत्र बांचि कै नागजी ने अपने मन में यह बिचार कीनो, जो–यह वैष्णवन को द्रव्य विवाह में खरचनो आछौ नाहीं। यह अपनो धर्म न होइ। सो बेटी तो काहू रंक ब्राह्मण कों देउंगो। और यह द्रव्य तो श्रीगुसांईजी कौ है। सौ श्रीगुसांईजी कों पहोंचे तो आछी बात है।

भावप्रकाश – काहेतें, जो–नागजी गृहस्थ हैं। सो दूसरे कौ द्रव्य कैसे लेई ? और वैष्णवन कौ द्रव्य तो प्रभुन कौ है। सो नागजी लौकिक कारज में कैसें खरचे ?

पाछें वा कासिद कों तो हुंडी की पहोंच लिखि कै, पाछें वाकों खंभाइच कों बिदा कर्‌यो। और नागजी वा हुंडी की मोहौर सराफ की दुकान तैं खरीदि कै अपने घर आए। पाछें एक बांस की लाठी पोली लै कै तामें मोहौर सब भरी। और नागजी आपु

कापड़ी कौ भेख करि वह लाठी हाथमें लै कै श्रीगुसांईजी के पास श्रीगोकुल कों गोधरा सों श्रीगुसांईजी के दर्सनार्थ चले। तब श्रीगुसांईजी ने जान्यो, जो–नागजी अपने घर तें मेरे दरसन कों आवत है। सो मारग में एक वैष्णव डोकरी एक गाम में रहति हती। सो वह डोकरी श्रीगुसांईजी की सेवकिनी हती। तासों श्रीगुसांईजी स्वप्न में जनाए, जो–मेरो अनन्य सेवक नागजी भट कापड़ी के रूप सों आवत है। तिन कों तीन दिन अपने घर पाहुने राखियो। और नागजी कों सखडी महाप्रसाद लिवाइयो। और वा दिन रात्रि कों श्रीगुसांईजी नागजी कों हू स्वप्न में कहे, जो – तू काल्हि अमूक गाम में अमूकी बाई के घर तीनि दिन रहियो। सखड़ी महाप्रसाद लीजियो। सो यह डोकरी सवारे उठि सेवा करि रसोई करि कै श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो। पाछें समै भयो तब भोग सराइ अनोसर करि महाप्रसाद ढांकि कै आपु बाहिर आइ कै ठाड़ी रही। पाछें नागजी भट मध्याह्न के समै वा गाम के बाहिर आइ कै मार्ग में (ठाढ़े भए)। सो नागजी कों चिंता भई। जो बिनु बुलाए बिनु जानें कौन के घर जइए ? और वह बाई मारग में ठाढ़ी ठाढ़ी चिंता करे, जो–अज हू वे वैष्णव आए नाहीं ? या प्रकार दोउन कों चिंता भई। इतने में वह डोकरी ने नागजी कों दूरि तें आवत देखे। सो वह डोकरी भक्तिभाव सों प्रेमसंयुक्त नागजी भट के साम्हें गई। बोहोत स्नेह सों नागजी सों श्रीकृष्ण–स्मरन या डोकरी ने कर्‌यो। पाछें नागजी भट सों रात्रि के सब समाचार कहे। जो–ऐसी आज्ञा श्रीगुसांईजी की है। तातें तुम कृपा करि

कै मेरे घर में चलो। ऐसे बोहोत आदर सों न्यौति, अपने घर वह डोकरी नागजी कों पधराय लाई। तब नागजी अपने मन में बिचारी, जो–श्रीगुसांईजी आप की आज्ञा प्रसाद लेवे की भई है, सो तो डोकरी यही है। परंतु याके हाथ की सखड़ी कैसें लेवे में आवे ?

भावप्रकाश – काहेतें, ये गौड ब्राह्मन है। सो ज्ञाति ब्यौहार मनमें आयो। परि ये लीलामें श्रीचंद्रावलीजीकी सखी हैं। 'बहूला' इन कौ नाम है। इन कौ सुभाव सरल बोहोत है। तातें श्रीचंद्रावलीजी कों अति प्रिय हैं। सो नागजी कों अज हू या डोकरी के स्वरूप कौ ज्ञान नाहीं है। सो इनके हृदय के भाव की (हू) खबरि नाहीं। तातें संदेह कियो।

तब इतने ही में वह डोकरी ने नागजी भट सों कह्यो, जो उठो स्नान करो। तब नागजी ने वा डोकरी सों कह्यो, जो – सखडी महाप्रसाद तो मैं नाहीं लेहूंगो। तब डोकरी ने कही, जो– तुम्हारी इच्छा होइ सो लीजो। बैगि न्हाओ तो सही। तब नागजी न्हाय कै आय बैठे। तब वा डोकरी ने नागजी कों बालभोग कौ महाप्रसाद अनसखड़ी तथा दूधकी (सामग्री) आगें धरी। सो महाप्रसाद नागजी ने लियो। तब नागजी ने कही, जो अब हम जाइंगे। तब डोकरी ने कही, आज्ञा तीन दिन की है। तब नागजी तहां तीन दिन लों महाप्रसाद अनसखड़ी लियो। पाछें नागजी वा बाई सों बिदा होइ कै श्रीगुसांईजी के दरसन कों श्रीगोकुल चले।

भावप्रकाश – यहां यह संदेह होइ, जो– तीन दिनकी आज्ञा क्यों भई ? तहां कहत हैं, जो–नागजी भट कों अभी वैष्णव के स्वरूप कौ आछी भांति ज्ञान भयो नाहीं है। सो वा डोकरी के संग करि नागजी कों वैष्णवन के हृदय कौ अगाध भाव जतावनो है। तातें श्रीगुसांईजी नागजी भट कों तीन दिन वा डोकरी के उहां रहिवे की आज्ञा कीनी।

और सखडी महाप्रसाद लैन कों कह्यो, ताकौ कारन यह, जो–, सखड़ी है सो पूरन सनेह कौ स्वरूप है। सो जाकों पूरन सनेह वैष्णव पर होंइ सो वैष्णव कों सखडी महाप्रसाद लिवावे।

सो वा डोकरी कौ पूरन सनेह वैष्णव पर है। तासों वा डोकरी द्वारा नागजी कों यह दान श्रीगुसांईजी आपु (कों) करनो है। तातें सखडी महाप्रसाद लैन कों कह्यो। और तीन दिन महाप्रसाद लै तो दृढ होंइ, यह हू अभिप्राय है।

और दूसरो कारन यह है, जो–वा डोकरी के भाव सों श्रीगुसांईजी नागजी भट कों तीन दिन उहां सखडी महाप्रसाद लैन कों कह्यो। तामें वा डोकरी के भाव कौ हू पोषन श्रीगुसांईजी आपु किये। परि नागजी कों या बात कौ ज्ञान अज हू भयो नाहीं है। तातें तीनो दिन अनसखड़ी महाप्रसाद लियो।

सो जा दिन नागजी श्रीगोकुल कों आइ पहोंचत हुते, तासों घरी चारि पहिले श्रीगुसांईजी आप स्नान करत समै सब वैष्णवन सों कहे, जो–मेरो नाग आज आयो चहिए। पाछें श्रीगुसांईजी स्नान करि धोती उपरेना पहरि अपरस की गादी पर बिराजि कै संखचक्र धरत हते। ताही समै नागजी भट आइ कै श्रीगुसांईजी को दंडवत् कियो। तब श्रीगुसांईजी ने पूछ्यो, जो–नागिया! तू कब आयो? तब नागजी नेश्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–राज! अब ही आयो। तब फेरि नागजी सों श्रीगुसांईजी ने पूछ्यो, जो–नागिया! तू मारग में कौन कौन वैष्णव के घर रह्यो? (और) कहा कहा प्रसाद लियो? तब नागजी ने कही, महाराज! फलानी डोकरी के घर तीन दिन लों रह्यो। और अनसखड़ी महाप्रसाद लियो। यह सुनत ही श्रीगुसांईजी कहे, जो–मेरी अंतरंगिनी सेवकिनी के घर सखड़ी महाप्रसाद क्यों नाही लियो? ऐसें कहि श्रीगुसांईजी पीठि दै बैठें।

भावप्रकाश–सो यातें, जो–दृढ भाव कौ दान करिवे के लिये (तो) तोकों वा डोकरी के उहां तीन दिन लों सखड़ी महाप्रसाद लैन की आज्ञा कीनी। तोहू (तैनें) संदेह कियो? और वा डोकरीने (हू) अजहू सखड़ी महाप्रसाद लियो नाहीं है। सोउ अपराध भयो। सो श्रीगुसांईजी

आप अप्रसन्न भए। तातें पीठि दे बैठें।

तब नागजी भट तत्काल ही वह मोहौरन की लाठी भंडार में धरि कै आपु वा डोकरी के घर जाइ पहोंचे। सो डोकरी ने अनसखड़ी महाप्रसाद धर्‌यो। तब नागजी ने कह्यो, जो–मैं सखड़ी महाप्रसाद लैन आयो हूं, सो सखड़ी धरो। तब वह डोकरी बोहोत प्रसन्न होइ कै सखड़ी महाप्रसाद धर्‌यो। सो तीन दिन लों नागजी सखड़ी महाप्रसाद लै, वा डोकरी सौं बिदा होंइ पाछें फेरि श्रीगोकुल चले। सो कछूक दिन में आय कै श्रीगुसांईजी कों दंडवत् किये। तब नागजी सों श्रीगुसांईजीने पूछ्‌यो, जो–तोकों हम इतने दिन बीचमें देख्यो नाहीं सो कहां गयो हो ? तब नागजी ने बिनती करी, जो–महाराज ! वा डोकरी के घर सखड़ी महाप्रसाद लैन गयो हो। सो तीन दिन सखड़ी महाप्रसाद लैकै अबही आवत हों। ये नागजी के बचन सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए।

भावप्रकाश – सो काहेतें, जो–अब नागजी ने वैष्णव कौ स्वरूप जान्यो। तातें श्रीगुसांईजी आप प्रसन्न भए।

पाछें नागजी महिना तीन श्रीगुसांईजी के पास रहे। (और) यह मन में बिचारे, जो बेटी के विवाह की लगन जब बीति चुकेगी तब जाउंगो। अब ही जाऊं तो मोकों बेटी कौ ब्याह करनो परे। यह बिचारि कै रहे।

भावप्रकाश – सो यातें, जो–नागजी की प्रभुन में आसक्ति है। सो आसक्तिवारेन कों गृह में अरुचि होत है। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी 'भक्तिवर्द्धिनी' ग्रन्थ में लिखे हैं। सो श्लोक –

'स्नेहाद्रागविनाशः स्यादासक्त्या स्याद्‌गृहारुचिः।"

यातें नागजी भट घर गए नाहीं। जातें तो लौकिक करनो परतो।

पाछें कछूक दिन में वा भंडारी ने वह लाठी उठाई। तब भारी बोहोत ही देखी। सो लाठी लैकै श्रीगुसांईजी के पास आइ बिनती करी, जो–महाराज ! यह लाठी भारी बोहोत है। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–या लाठी कों फारि कै दोइ टूक करो। तब भंडारी ने लाठी कों फारी। सो मोहोर निकसी। तब श्रीगुसांईजी यह आज्ञा किये, जो– यह मेरे नाग कौ काम है। सो वे नागजी भट श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते।

और नागजी भट गोधरा के देसाई हते। सो नागजी की बेटी के विवाह कौ दिन बोहोत निकट आयो। तब भट्यानी ने कही, जो–मेरे कछू द्रव्य नाहीं है। तातें एक चूडा और पानेतर, रोरी, लै, मैं विवाह बेटी कौ करि देउंगी।

भावप्रकाश–सो भट्यानी हू अड़ेल जाई श्रीगुसांईजी की सेवकिनी भई है। तातें उन में भगवद् धर्म दृढ है। सो दुःख में धीरज छोर्‍यो नाहीं (अरु) लोकलज्जा हू कीनी नाहीं।

और भट्यानी लीला में 'कंदुकी' सखी है, श्रीयमुनाजी के यूथ की। सो इन कौ 'पद्मावती' सों बोहोत मिलाप रहत है। तातें यहां हू नागजी भट कौ संबंध दृढ है। सो दोऊन कौ एक रस रूप भाव है। तातें भट्यानी नागजी के अभिप्राय कों जानि या प्रकार बेटी के विवाह कौ निश्चय कियो।

सो यह बात वैष्णवन ने सुनी। सो मिलि कै सब वैष्णव गाम के हाकिम कै पास जाइ कै सब समाचार कहे। जो नागजी भट तो घर नाहीं हैं। भट्यानी एक चूडा, हरदी, रोरी, पानेतर सों विवाह बेटी कौ करत है। यह सुनि कै गाम के हाकिम ने कही, जो – नागजी भट की बेटी कौ ब्याह ऐसें क्यों होई ? पाछें वह गाम के हाकिम ने जो कछू विवाह को सामान हतो सो सिद्ध करि कै नागजी के घर भट्यानी पास पठाइ दियो। तब नागजी की

स्त्री ने भली भांति सों भले गृहस्थ के घर अपनी बेटी कौ विवाह कियो। द्रव्य विवाह में बोहोत लगायो। पठावनी, पहरावनी, ब्राह्मन-भोजन सब भली भांति सों कियो। पाछें केतेक दिन पाछें नागजी भट श्रीगुसांईजी के पास तें बिदा होइ कै अपने घर आए। तब यह समाचार बेटी के ब्याह कौ प्रकार नागजी की स्त्री ने नागजी सों कह्यो। सो सुनि कै नागजी कहे, भगवद् इच्छा, भई सो आछौ। लौकिक द्रव्य लौकिक में लग्यो। वैष्णव कौ अलौकिक द्रव्य हतो। तातें मैं बेटी के ब्याह में कैसें लगाऊं? पाछें यह सब समाचार खंभाइच के वैष्णव सुनि कै नागजी की सराहना करन लागे। सो वे नागजी भट श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते।

भावप्रकाश–या वार्ता में यहां सिद्धांत भयो, जो–वैष्णव कों अलौकिक द्रव्य लौकिक में सर्वथा खरचनो नाहीं। जो–खेरचे तो बहिर्मुख होंइ। तहां यह संदेह होंई, जो– गृहस्थ कों विवाहादिक कार्य में द्रव्य खरचे बिना कैसें चले? तहां कहत हैं, जो– विवाहादिक में सेवा कौ संबंध बिचारि कै आवस्यक खर्च प्रभुन सों बिनती करि कै करनो। प्रतिष्ठार्थ न करें। कदाचित लोक निर्वाहार्थ खर्च करनो परे तोऊ सेवा में चित्त विक्षिप्त न होंइ यों समझ कै करें। सोऊ प्रभुन की आज्ञा मांगि कै। दूसरो यहू जतायो, जो भक्त अनन्य व्है कै प्रभुन की सेवा करत है, उन कौ सब कार्य श्रीठाकुरजी आप करत हैं। सो नवम अध्याय में भगवग्दीता में श्रीठाकुरजी के बचन हैं। सो श्लोक –

'अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषांनित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।"

तातें वैष्णव कों अनन्य व्है भगवदसेवा में मन लगावनो। यह उत्तम पक्ष है।

वार्ता प्रसंग – २

और नागजी भट गोधरा के देसाई हते। सो हाकिम ने नागजी कों बुलाइ कै कह्यो, जो–तुम राजनगर जाओ। देसाधिपति के

पास जाइ कै मेरी जागीर कौ पट्टा बढाइ ल्याओ। पाछें हाकिम ने दोइसैं रुपैया दिये, जो–कामदारन कों उठे सौ दीजो । तब नागजी दोइसैं रुपैया लै कै एक मनुष्य संग लै कै गोधरा सों चले। सो राजनगर में आए, कपड़ा पहरि घोडा पै असवार होइ राजनगर के बजार में निकसे। सो तिरपोलिया के पास जब आए तहां चीर एक भारी मोल कौ बिकाऊ आयो । सो देखि कै नागजी बिचारे, जो–यह चीर बोहोत सुंदर है । श्रीगुसांईजी के पास पहुँचे तो आछौ है । पाछें नागजी ने वा चीर कौ मोल कियो। सो वह चीरवारो दोइसैं रुपैया मांग्यौ। तब नागजी ने दोइसैं रुपैया वाकों दै कै वह चीर लियो। पाछें फिरि कै अपने डेरा आए।

भावप्रकाश – यामें यह सिद्धांत जतायो, जो–प्रभु उत्तम वस्तू के भोक्ता हैं। तातें जहां कछू उत्तम पदार्थ देखिए तहांते खरीदिए। (अरु) प्रभुन कों अंगीकार कराइए। और कदाचित् अपनी सामर्थ्य (वा वस्तू कों खरीदवे की) न होंइ तो (ऊ) मानसी करिए। सो मानसी में श्रीप्रभुजी कों धराइए।

जैसें कुंभनदासजी ने आंबान कों मानसी में धराए। यह सनेह कौ लच्छन है।

पाछें वा चीर कौं बांस की भोंगली में धरि कै आपु वैरागी रूप धरि चाकर कों डेरा में राखि कै वासों कहै। जो–जहां तांई मैं नाही आऊं तहां तांई तू निकसियो मति, घर में रहियो। ऐसें कहि नागजी राजनगर तें श्रीगोकुल कों चले। सो रात्रि दिन चले। सो कछूक दिन में श्रीगोकुल आइ पहोंचे ताही समै प्रथम श्रीगुसांईजी वैष्णवन सों कहे, जो– आजु मेरो नाग आयो चहिए। इतनो श्रीमुख सों श्रीगुसांईजी कहे। ताही समै नागजी आइ कै श्रीगुसांइजी कों दंडवत् कियो। तब श्रीगुसांईजी पूछे,

नागिया ! तू कैसें आयो ? तब नागजी ने बिनती करी, जो- महाराज ! आप के दरसन कों बोहोत दिन भए हते, सो दर्सनार्थ आयो हूँ। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा करें, जो-स्नान करि कै झारी लै कै भीतर जाइ महाप्रसाद लेऊ। तब नागजी स्नान करि कै झारी लै कै भीतर चीर लिये ही गए। तब नागजी के मन में यह मनोरथ भयो, जो- माताजी श्रीरुक्मिनी बहूजी यह चीर पहरि कै श्रीगुसांईजी पास पधारें, तब में जुगल स्वरूप के दरसन करि कै ताही समै राजनगर कों उठि जाऊं। ऐसो मनोरथ नागजी अपने मन में करि कै भीतर महाप्रसाद लैन गए। तब श्रीरुक्मिनी बहूजी महाप्रसाद की पातरि अपने श्रीहस्त में लै कै नागजी कों धरन कों आई। तब नागजी ने दंडवत् करि कै बिनती करी, जो-महाराज ! यह चीर पहरि आपु प्रभु पास सिज्या पर पधारो। सो मैं दरसन पाऊं। तब श्रीरुक्मिनि बहूजी ने नागजी सों कही, जो-यह चीर पहिरे देखि कै प्रभु मोसों खीझेंगे। जो-ऐसो परम सुंदर चीर तुम क्यों पहिर्‌यो ?

भावप्रकाश – सो काहेतें, जो-यह उत्तम चीर सो तो श्रीस्वामिनीजी के अंगीकार योग्य है। सो श्रीस्वामिनीजी कै बिनु धराए कैसें पहिरयो।

तब नागजीने माताजी कौ हठ जानि कै श्रीरुक्मिनी बहूजी कों श्रीगुसांईजी की सोंह दिवाई। और बोहोत बिनती करि कै नागजी कहे, जो-यह चीर (तो) पहिरयो चहिए। तब नागजी के आग्रह तें वह चीर खवासिनी कों सोंपाए।

भावप्रकाश – काहेतैं, यह मर्यादा है। जो ठाकुरजी की वस्तू होंइ सो अपने हाथ में लै। (और यह तो) अपने पहिरवे की है तातें श्रीरुक्मिनी बहूजी खवासिनी कों आज्ञा किये।

तब खवासिनी वह चीर उठाइ पास राख्यो। पाछें नागजी महाप्रसाद लैन बैठे। सो महाप्रसाद लै कै नागजी श्रीगुसांईजी के पास आइ बैठे। तब श्रीगुसांईजी नागजी सों पूछे, जो–तेरो आवनो कैसें भयो ? तब नागजी ने बिनती कीनी, जो–महाराज ! आप के दरसन किये बोहोत दिन भए हते, सो आपु की कृपा तें पाए। अब मैं रात्रि कों जाऊंगो। जब आपु पोढ़िवे कों पधारोगे तब मैं उठि जाऊंगो। पाछें श्रीगुसांईजी सब वैष्णवन कों बिदा करि आपु सिज्या पर पोढिवे कों पधारे। तब नागजी ने श्रीरुक्मिनी बहूजी पास आइ कै बिनति करी, जो–महाराज ! आप उह चीर कों अंगीकार करो। तब नागजी के हठ तें श्रीरुक्मिनी बहूजी वा चीर कों पहिरे। पाछें श्रीरुक्मिनीजी श्रीगुसांईजी के पास सिज्या पर पधारे। तब नागजी कों श्रीगुसांईजी जुगल स्वरूप के दरसन दिये। सो नागजी या प्रकार दरसन करि कै दंडवत् प्रभुन कों करि ता ठौर तें आपु ही बिदा होइ कै राजनगर कों उठि चले। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीरुक्मिनी बहूजी सों पूछे, जो–यह चीर कौन लायो है ? तब श्रीरुक्मिनी बहूजी श्रीगुसांईजी आगें कह्यो, जो–यह चीर नागजी लै आयो है। तब श्री गुसांईजी श्रीरुक्मिनी बहूजी सों कहे, जो–यह चीर तो स्वामिनीजी के लाइक हतो। सो तुमने ऐसो सुंदर चीर क्यों पहिर्‍यो ? तब श्रीरुक्मिनीजी डरपि कै श्रीगुसांईजी सों कहे, जो–यह चीर तो मैं नाहीं पहिरत हती। परंतु नागजी ने तुम्हारी सपत दिवाई। तब मैं यह चीर कों पहिर्‍यो है। यह सुनि कैं श्रीगुसांईजी प्रसन्न होइ कै चुप होइ रहे। पाछें आपु

श्रीमुख तें यह बचन कहे, जो–मेरो नागजी ऐसोई है। परंतु अब रह्यो न होइगो । दरसन करि कै गयो होइगो । सो नागजी अर्द्धरात्रि के समै श्रीगुसांईजी के द्वार कों दंडवत् करि कै तहां तें चले। सो कछूक दिन में राजनगर आए। पाछें देसाधिपति सों मिलि कै गोधरा के हाकिम कौ पट्टा बढाइ कै गोधरा में आए। सो बिनु पैसा खर्चे ही पट्टा बढाइ ल्याये। पाछें वह गोधरा के हाकिम कों वह जागीर कौ पट्टा नागजी ने दीनो। तब वह हाकिम नागजी के उपर बोहोत ही प्रसन्न भयो। पाछें एक सिरोपाव आछौ वा हाकिम ने नागजी कों दीनो। सो सिरोपाव पहरि कै नागजी अपने घर आए। वे नागजी श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता प्रसंग–३

और एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिका कौं पधारे । तब तहां श्रीरनछोरजी के दरसन करि कै बिदा होइ कै द्वारिका के बाहिर आए। श्रीरामजी कौ श्रीलछमनजी कौ मंदिर हतो ता ठौर आपु ठाढे रहे। इतने में नागजी आम लै कै तहां आए। सो एक टोकरा में दोइसैं आम श्रीगुसांईजी के आगें धरि भेंट करि दंडवत् किये। तब श्रीगुसांईजी आम बोहोत सुंदर देखि कै आज्ञा किये, जो–ये आम श्रीरनछोरजी कों समर्पि आऊ । और तू दरसन हू श्रीरनछोरजी के नाहीं किये है सो करत आइयो । और क्षौर करवाइ कै गोमती स्नान करि कै मेरे पास आइयो। तब नागजी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–राज ! मेरे द्वारिका सों कहा काज है ? मोकों तो आप के दरसन भए इतने सर्व मनोरथ पूरन

भए। यह सुनि कै श्रीगुसांईजी फेरि नागजी सों कहे, जो – ऐसें न करिए । तू आम श्रीरनछोरजी के यहां दै कै दरसन करि आऊ। जब तांई तू दरसन करि कै न आवेगो तब तांई हम तिहारे लिये इहां बैठैं हैं। तू आवेगो तब हम यहां तें चलेंगे। यह सुनि कै श्रीगुसांईजी की आज्ञा मानि कै नागजी श्रीरनछोरजी के दरसन कों गए। तहां श्रीरनछोरजी के दरसन करि नागजी आम समर्पि, आप क्षौर करवाइ, गोमती में स्नान करि, श्रीरनछोरजी पास बिदा हौन गए। सो नागजी मंदिर में आइ कै दैखें तो श्रीगुसांईजी श्रीरनछोरजी कों बीरी आरोगावत हैं। और श्रीरनछोरजी श्रीगुसांईजी कों आरोगावत हैं। सो दरसन करि कै नागजी अपने मन में बोहोत प्रसन्न भए। पाछें श्रीरनछोरजी सों बिदा होइ कै चले। सो श्रीरामलछमनजी के मंदिर में जाइ कै नागजी ने श्रीगुसांईजी को दंडवत् करि यह बिनती करी, जो–महाराज ! मैं आप की आज्ञा तें श्रीरनछोरजी कै दरसन कों गयो। सो मोकों सब सुख की प्राप्ति भई। वा ठौर श्रीरनछोरजी के दरसन भए। और आप के दरसन हू भए। सो मोकों बहोत सुख भयो। तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न होइ कै यह बचन श्रीमुख तें कहे, जो–ये श्रीरनछोरजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के माने हैं। तातें या ठौर मेरो संबंध है।

भावप्रकाश– याकौ अभिप्राय यह है, जो–वैष्णव कों तीर्थ आदि में जानो सो श्रीआचार्यजी कौ संबंध बिचारि कै जानो। माहात्म्य सों नहीं जानो। माहात्म्य सो जांइ तो अन्याश्रय होंइ। श्रीआचार्यजी ने तीन बैर पृथ्वि परिक्रमा करि सब तीर्थन कों सनाथ किये हैं। तातें वैष्णव कों श्रीआचार्यजी कौ संबंध बिचारि कै तीर्थ आदि करनो। या भाव तें नागजी कों श्रीगुसांईजी क्षौर करवाइ कै गोमती – स्नान की आज्ञा किये। और श्रीरनछोरजी तो

श्रीआचार्यजी के माने हैं, तातें वहां अवस्य जानो। याही भाव सों श्रीगुसांईजी हू बेर बेर द्वारिका पधारते। सो श्रीआचार्यजी कौ संबंध बिचारि कै।

पाछें नागजी कों संग लै कै श्रीगुसांईजी वा ठौर तें चले। सो 'गागासादी' गाँव है, तहां आइ कै डेरा किये। पाछें श्रीगुसांईजी तो आपु स्नान करि कै रसोइ में पधारे। ता पाछें नागजी थूवर कै बन में गए। ता बन में प्रथम आम छिपाइ गए हते। सो चारसैं आम लाइ कै श्रीगुसांईजी के आगें नागजी ने धरे। तब श्रीगुसांईजी नागजी सों कहे, जो–ये आम हम कैसें लैइ ? तू सब आम वहां श्रीरनछोरजी के यहां क्यों न लायो ? हम सों दुराव क्यों कियो ? तब नागजी ने श्रीगुसांईजी सो बिनती करी, जो–महाराज ! हम तो आप के हाथ बिकाने हैं। हम कों तो श्रीरनछोरजी आप बताए हो। तब हम श्रीरनछोरजी कों जाने हैं। और हम सब छोरि कै आप कै चरन लागे हैं। तातें कृपा करि कै ये आम अंगिकार करिए। यह नागजी की बिनती सुनि के श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए। तब आमन कों श्रीहस्त में लै कै दैखें। सो आम बोहोत ही सुंदर हैं। तब श्रीगुसांईजी नागजी सों कहे, जो–ये आम हम कैसें लैइ ? यह सामग्री श्रीनाथजी लाइक है। सो श्रीनाथजीद्वार पहोंचे, श्रीनाथजी अंगीकार करें तब हम लैइ।

भावप्रकाश–सो काहेतें, जो–उत्तम बस्तू कों प्रीतम कों अंगीकार कराए बिना कैसें लीनी जांइ ? यह मारग की रीति है। तातें श्रीनाथजी कों अंगीकार कराए बिना श्रीगुसांईजी आपु सर्वथा न लै। यह सनेह कौ स्वरूप जतायो।

यह सुनत ही तत्काल नागजी एक सांढ़नी लै आम दोइसैं एक ओर, दोइसैं दूसरी ओर धरि कै तहां तें श्रीजीद्वार कों चले। सो

रात्रि दिन चले । सो चौथे दिन श्रीजीद्वार में आइ रामदास मुखिया भीतरिया कों दोइसैं आम दिये । और नागजीने कही, जो–पहोंच बेगि लिखि देऊ । तब रामदास ने कही, अब ही तो तुम आए हो सो कछू दिन रहो । तब नागजीने कही, मोकों अब ही जरूर जानो है । तातें याही घरी पहोंच लिखि देऊ । तब रामदासजी दोइसैं आमन की पहोंच लिखि दिये । तब नागजी बिचारें, जो–अब गोकुल में श्रीनवनीतप्रियजी कों हू दियो चहिए । मति कहूं फेरि श्रीगुसांईजी मोकों पठावें । यह बिचारि कै नागजी श्रीगोकुल आइ दोइसैं आम श्रीगिरिधरजी के आगें धरि दंडवत् करि बिनती कियो, जो–महाराज ! पहोंच अब ही लिख दीजिए । तब श्रीगिरिधरजी कहे, नागजी ! तुम कछूक दिन इहां रहो । अब ही आए अब ही चलत हो ? ताकौ कारन कहा ? तब नागजी ने कही, जो–मोकों श्रीगुसांईजी के पास जरूर जानो है । तातें अब ही कृपा करि कै बैगि पहोंच लिखि देऊ । तब श्रीगिरिधरजी दोइसैं आमन की पहोंच लिखि दिये । तब नागजी श्रीगिरिधरजी कों दंडवत् करि कै तहां तें उतावले चले । सो रात्रि दिन चलि कै तीसरे दिन श्रीगुसांईजी के पास आइ पहोंचे । सो एक सांढ़नी पै आम सातसैं भरि कै ल्याये । सो आम श्रीगुसांईजी सों छिपाई राखे । सो श्रीगुसांईजी जब स्नान करि कै रसोई करन को पधारे, तब नागजी परचारगी करे । सो नागजी दोइसैं आम बोहोत सुंदर सँवारि कै लै आए । तामें कछू अमरस काढ़ि कै कटोरा चारि भर्‌यो । और एक सौ आम सँवारि कै श्रीगुसांईजी पास आए । तब श्रीगुसांईजी आम देखि

कै कहै, जो–नागजी ! मैं तोसों पहेले ही कह्यो हतो, ये आम श्रीनाथजी श्रीनवनीतप्रियजी के लाइक हैं। मैं पहेले कैसें लैऊं ? यह सुनि कै नागजी ने दोऊ पत्र श्रीगिरिधरजी कौ, रामदास कौ, लैकै श्रीगुसांईजी के श्रीहस्त में दिये। सो दोऊ पत्र श्रीगुसांईजी बांचि कै बोहोत ही प्रसन्न भए। पाछें नागजी सों कहे, जो – श्रीनाथजी आरोगे और श्रीनवनीतप्रियजी आरोगे तहां मैं हू आरोग्यो। तू सगरे आम उहांई क्यों नांही दै आयो ? हमारे पास क्यों लायो ?

भावप्रकाश – यह कहे ताकौ अभिप्राय यह है, जो–श्री गुसांईजी आपु श्रीनवनीतप्रियजी, श्रीनाथजी सौं बिदा व्है परदेस पधारते। सो ता दिन तें श्रीगुसांईजी आपु विप्रयोग कौ अनुभव करते। सो विप्रयोग में सब ईंद्रियन के स्वाद कौ त्याग है। देह निर्वाहार्थ कछूक भोजन करते। तातें ऐसें कह्यो।

यह सुनि कै श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै नागजी ने बिनती करी, जो–महाराज ! हमकों श्रीनाथजी हू आप बताए और श्रीनवनीतप्रियजी हू आप बताए। तासों हमारे तो सर्वस्व आपु हो। जब आप आरोगो तब हम कों सुख होंइ। तातें आम कृपा करि कै आप अंगीकार करिए। हम तो एक आप के चरन कमल के दास हैं।

भावप्रकाश – सो यामें स्वामी–सेवक भाव प्रगट दिखाए। क्यों, जो नागजी अपन कों श्रीठाकुरजी के दास कहें, तो श्रीगुसांईजी की बराबरि होंइ। तातें कहे, जो 'हम तो एक आप के चरन कमल के दास हैं। सो जब आपु आरोगो तब ही हम कों सुख होंइ।' या प्रकार सेवक–भाव प्रगट दिखायो।

यह नागजी की बिनती सुनि कै श्रीगुसांईजी अमरस कौ कटोरा और आम रसोई में लै गए। सो भोग धरें। पाछें समै भए

भोग सराए। अनोसर करि आम कछूक आरोगे।

भावप्रकाश – सो काहेतें, जो– श्रीगुसांईजी भक्तेच्छापूरक हैं। सो नागजी के मनोरथ सों आम आरोगे।

वार्ता प्रसंग – ४

और एक समै नागजी गोधरा तें श्रीगुसांईजी के दरसन कों अडेल आवत हुते। सो श्रीजीद्वार आए। श्रीनाथजी के दरसन किये। रामदासजी आदि सेवक टहलुवान सों भगवद् स्मरन किये। तब रामदासजी भीतरिया ने नागजी सों कही, जो–इहां सगरे भीतरियान कों ज्वर आवत है, सो सेवा में संकोच है। तासों तुम कछू दिन श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा करो। तब नागजी न्हाइ कै श्रीनाथजी की सेवा में रहे। तब नागजी ने श्रीजीद्वार तें श्रीगुसांईजी कों बिनती पत्र लिख्यो। तामें एक श्लोक लिखि कै श्रीगुसांईजी कों पत्र पठायो। सो श्लोक–

सरसि–कुशेशयमप्यास्वादितुमागच्छतोऽलिनो मार्गे।
यदि कनक–कमलपाने नासीत्तोषः किमन्येन ॥

भावप्रकाश – याकौ अभिप्राय यह है, जो–जलकमल कौ आस्वाद लैवे कों मैं भँवर रूप व्है आवत हतो। सो मार्ग में कनककमल मिल्यो तामें अरूझ्यो हूं। परंतु जलकमल कौ आस्वाद नाहीं आवत है। सो यामें नागजी भट ने श्रीगुसांईजी कों जलकमल कहे हैं। सो जैसें जलकमल में सुगंध रहति है तैसें श्रीगुसांईजी के भीतर ही सकल लीला रूप मकरंद है। सो नागजी भट कों श्रीगुसांईजी आप अनुभव करावत हैं। तातें नागजी श्रीगुसांईजी को जलकमल कहे। और श्रीनाथजी को कनककमल कहे है, सो–यद्यपि श्रीनाथजी हू सकल लीलासंयुक्त रसात्मक हैं। तोऊ श्रीगुसांईजी की कृपा बिना अनुभव नाहीं। तातें कनककमल कहे।

सो यह श्लोक पत्र में लिखे। सो पत्र श्रीगुसांईजी के पास

गयो सो श्रीगुसांईजी वा पत्र कों बांचे । सो ता पत्र कौ उत्तर श्रीगुसांईजी लिखि पठाए। तामें दोइ श्लोक श्रीगुसांईजी लिखे। सो श्लोक –

नात्र कुशेशयमानसमर्थयसे यत्प्रियो मधुपः ।
तस्मिंस्तुष्टे तोषःदुःस्थे दौःस्थ्यं हि निरुपमस्नेहात् ॥ १॥
यद्यालिरपिनिरुपधिभावः स्वभावतः समागच्छेत् ।
निरवधितोषोऽस्यात्रापि भवेदेवेति किं वाच्यम् ॥ २ ॥

भावप्रकाश – यामें यह कह्यो, जो–सब मूलत्व कनक कमल हैं । परंतु भाववंत कों आस्वादित है । तातें तुम भाववंत व्है श्रीनाथजी की सेवा करियो, ता करि कै तुम कों सर्व रस आस्वादित होइगो । एक अर्थ यह है । अब दूसरो अर्थ कहत हैं, जो–हे प्रिय मधुप ! तू कनक कमल में अरूझ्यो है । सो तोकों तो जल कमल के ढिंग बोहोत रस मिलेगो ।

या प्रकार दोइ श्लोक श्रीगुसांईजी पत्र में लिखि कै श्रीजीद्वार नागजी पास पठाए । सो पत्र आइ कै कासिद ने नागजी कों दियो । सो पत्र नागजी बांचि कै श्रीगुसांईजी के दरसन की नागजी कों बोहोत आतुरता भई । इतने में दोइ तीन भीतरियान कों ज्वर उतरि गयो । सो सेवा में न्हाए । तब नागजी ने रामदासजी सों कही, जो–मैं अब श्रीगुसांईजी के दरसन कों जाउंगो । श्रीगुसांईजी के दरसन किये बोहोत दिन भए हैं । तब रामदासजी ने कही, तुम्हारी इच्छा । इहां रहो तो श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा करो । उहां जाओगे तो श्रीगुसांईजी की सेवा करोगे । तुम को दोऊ ठौर बराबरि सुख है । यह सुनि कै नागजी श्रीगोवर्द्धननाथजी सों बिदा होइ कै रामदासजी आदि सेवक टहलुवान सों बिदा होइ कै अड़ेल आए । तहां

श्रीगुसांईजी के दरसन किये। तब श्रीगुसांईजी नागजी कों देखि कै बोहोत प्रसन्न भए। सो वे नागजी श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता प्रसंग – ५

और एक समै श्रीगुसांईजी कों नागजी ने विनती पत्र लिख्यो। तामें यह लिखे, जो–महाराज ! श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के ग्रंथ श्रीसुबोधिनीजी, निबंध, और आपकी टिप्पनी और रहस्य ग्रंथ बोहोत हैं, और मेरी बुद्धि थोरी है। सो आपु कृपा करि कै थोरे ही में मारग कौ रहस्य लिखि पठावो तो आपकी कृपा तें कछूक स्फुरे। यह नागजी ने विनतीपत्र लिखिकै श्रीगुसांईजी के पास पठवायो। सो पत्र श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी पास आयो। तब वह पत्र श्रीगुसांईजी ने बांच्यो। ताके प्रतिउत्तर (में) श्रीगुसांईजी दोइ श्लोक लिखि पठाए। तिन श्लोकन में श्रीआचार्यजी कौ प्रागट्य मार्ग कौ फल और मार्ग कौ रहस्य, इन दोइ श्लोकन में सब लिखि पठायो। सो स्लोक –

श्रीवल्लभाचार्यमते फलं तत्प्राकट्यमत्राव्यभिचारिहेतुः
तत्रोपयुक्ता नवधोक्तभक्तिस्तत्रोपयोगोऽखिलसाधनानाम् ॥१॥
यः कुर्यात्सुन्दराक्षीणां भवने लास्यनर्तने।
तासां भावनया नित्यं स हि सर्वफलानुभाक् ॥ २ ॥

ये दोइ श्लोक श्रीगुसांईजी नागजी भट कों रहस्य–फल के लिखि पठाए।

ताकौ अभिप्राय यह है, जो–श्रीवल्लभाचार्यजी के मार्ग विषे

श्रीठाकुरजी कौ प्रागट्य है सोई फल है । तामें अव्यभिचारी भक्ति हेतु है । सो जाकों अनन्यता होंइ ताकों नवधा भक्ति हैं । और पहिले नवधा भक्ति हैं, सो तिन एक एक भक्ति कों नौ जनेंन करी हैं । ताकौ सास्त्र निरूपन करत हैं । तातें विलक्षन जो आचार्यजी महाप्रभुन कौ मार्ग दसधा प्रेमलक्षना अधिक, श्रीआचार्यजी महाप्रभु प्रगट करे । सो ताकौ हेतु श्रीगुसांईजी लिखे हैं । और नवधा हैं सो महामाया कौ संयुक्त है । और इहां यह दसधा हैं सो सब कार्य में प्रेम संयुक्त है । तातें यह दसधा भक्ति श्रेष्ठ हैं । सो प्रेमलक्षना भक्ति कौ आसय नागजी कों श्रीगुसांईजी लिखि पठाए । तामें लिख्यो, जो–सुंदराक्षी ऐसें जो व्रजभक्त हैं तिन के भवन में लास्यनृत्य रासादि प्रभु क्रीडा करत हैं । सो उन के भावन की नित्य भावना करनी । तातें सर्व फलानुभव होंइ ।

सो या पत्र कों नागजी बांचि कै बोहोत प्रसन्न भए ।

भावप्रकाश – सो जैसें श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी ने दामोदरदास के हृदय में गोप्य वार्ता करि, मार्ग कौ रहस्य थाप्यो, तैसें ही श्रीगुसांईजी ने या पत्र द्वारा नागजी के हृदय में मार्ग कौ रहस्य–फल थाप्यो । सो यह श्लोक ऐसें गूढ भाव–रूप हैं । तातें विस्तार नाहीं कियो ।

वार्ता प्रसंग – ६

और एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिका कों पधारे । तब नागजी साँढ़ भरि कै आम लैकै श्रीगुसांईजी के पास गए । तब आम देखि कै श्रीगुसांईजी नागजी सों यह कहे, जो–नागजी ! ये आम मो पै लीने न जांइ । ऐसें नागजी श्रीमुख के बचन सुनि कै वे तो आम नागजीने उहांई छोरे । और आप वाही समै नागजी गोधरा

कों आए। तहां तें साँढ़ दोइ में आम भरि कै सातमें दिन श्रीनाथजीद्वार आए। साँढ़ एक आम रामदासजी भीतरिया कों सोंपि कै, पहोंच कौ पत्र रामदासजी पास तें लिखाइ लै कै, तहां तें श्रीगोकुल आइ साँढ़ एक आम श्रीगिरिधरजी कों सोंपि, दंडवत् करि, पहोंच के पत्र लै कै आप तत्काल चले। सो फेरि गोधरा आइ कै तहां तें साँढ़ में आम भरि लै कै गोधरा तें द्वारिका कों चले। सो श्रीगुसांईजी द्वारिका तें श्रीगोकुल कों पधारत हते। तहां नागजी मार्ग में आम लै कै प्रभुन के साम्हें जाइ, दंडवत् करि, आम नागजीने श्रीगुसांईजी के आगें राखे। और दोउ पत्र प्रभुन के श्रीहस्त में दिये। सो वे दोऊ पत्र बांचि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए। पाछें श्रीगुसांईजी रसोई करि उन आमन कौ भोग समर्पे। ता पाछें प्रभु आरोगे तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें बोहोत ही सराहना करे। तब नागजी अपने मन में बोहोत ही प्रसन्न भए। वे नागजी ऐसें भाव अनुरक्त श्रीगुसांईजी के चरनारविंद विषे रहते। सो वे नागजी श्रीगुसांईजी पास नाम पाए, तब तें एकसो मन नागजी कौ सदा श्रीगुसांईजी की कृपा तें रह्यो। और श्रीगुसांईजी नागजी आगें छह बेर द्वारिका कों पधारे। सो छहो बेर श्रीगुसांईजी नागजी के घर उतरे।

भावप्रकाश – सो श्रीगुसांईजी की बेठक गोधरा में नागजी के घर में हती। सो एक समै श्रीगोकुलनाथजी द्वारिका पधारे। तब गोधरा गाम मार्ग में आयो। तब आपु श्री गोकुलनाथजी नागजी कौ घर वा गाम के लोगन सों पूछें, जो–हम कों नागजी कौ घर दिखावो। सो नागजी के बंस कौ तो वहां कोऊ हतो नाहीं। और घर हू गिर्‌यो पर्‌यो ढीहा होइ रह्यो हतो। सो सब ठौर गाम के लोगन श्रीगोकुलनाथजी कों बताई। तोऊ तहां सब सुद्ध करि कै कनात दै कै

श्रीगोकुलनाथजी भोग समर्पे। पाछें जब श्रीघनस्यामजी द्वारिका कों पधारे तब नागजी कौ घर और श्रीगुसांईजी की बैठक समराइ कै भोग समर्प्यो।

सो वे नागजी श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। उन की वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए। वार्ता ॥१॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक पद्मारावल के बेटा कृष्ण भट साँचोरा ब्राह्मन, उज्जैनि के बासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश – सो कृष्ण भट सात्विक भक्त हैं। लीला मैं इन कौ नाम 'रसबिलासिनी' है। ये ललिताजी तें प्रगटी हैं, तातें इन के भाव रूप हैं। सो 'रसविलासिनी' श्रीचंद्रावलीजू की अंतरंग सखी हैं। तातें श्रीचंद्रावलीजी आपुनी रहस्य एकांत वार्ता इन तें कहति हैं। ता रस कौ ये बिलास करति हैं। और निज सखी–सहचरीन कों हू (वाकौ) अनुभव करावति हैं। या प्रकार ये रस कौ प्रकास हू करति हैं।

सो कृष्ण भट उज्जैनि में पद्मारावल साँचोरा ब्राह्मन के घर प्रगटे। सो पद्मारावल श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक हे। उनकी वार्ता कौ भाव आगें कहि आए हैं। सो पद्मारावल कै चारि बेटा हे। तामें सबन तें बडे कृष्ण भट हे। सो ये पढे बोहोत। पाछें इन कौ ब्याह भयो। स्त्री सुपात्र मिली, दैवी। सो उन के दोइ बेटा भए। गोकुल भट अरु गोविंद भट। सो हू दैवी हैं, लीला संबंधी। उन कौ अलौकिक स्वरूप आगें कहेंगे।

सो एक समै श्रीगुसांईजी उज्जैनि पधारे। तब कृष्ण भट कुटुंब सहित सेवक भए। पाछें कृष्ण भट श्रीगुसांईजी सों बिनती किये, जो–महाराज! अब कहा आज्ञा है? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो– भगवत्सेवा करो। सो श्रीगुसांईजी ने कृष्ण भट कों एक लालजी कौ स्वरूप पधराइ दियो। तब कृष्ण भट बिनती किये, महाराज! मोकों तो राज की सेवा की इच्छा है। तब श्रीगुसांईजी अपनी पादुका इन कों (और) पधराइ दिये। ता पाछें थौरे से दिन में श्रीगुसांईजी उज्जैनि तें बिजय किये। सो कृष्ण भट कों श्रीगुसांईजी कौ विरह बोहोत ब्याप्यो। सो देह की दसा कछू और व्है गई। तब श्रीगुसांईजी चाचा हरिवंसजी सों आज्ञा किये, जो–इन की अभी कच्ची दसा है। सो कछूक दिन तुम इन पास रहो। ता पाछें चाचा हरिवंसजी कों वहां (ई) राखि आप तो अडेल पधारे। सो कृष्ण भट कों चाचाजी के संग तें मार्ग में दृढता भई। अरु मार्ग की प्रनालिका आदि सब जानें। पाछें कृष्ण भट के संग तें बोहोत जीव श्रीगुसांईजी के सरनि आए।

सो कृष्ण भट की वैष्णवन पर हू प्रीति बोहोत हती। पास दस–पांच हजार रुपैया हू हतो।

सो जो कोऊ वैष्णव उज्जैनि में आवें, ताकौ ये अपने घर लै जांइ। और बोहोत प्रीति पूर्वक प्रसाद लिवावें। दो चार दिन आग्रह करि राखें। ता पाछें जब वैष्णव जाइवे की कहे तब कृष्ण भट रात्रि कों उन की गांठि खडिया खौलि खरची बांधि दैते। सो या प्रकार करते, जो–वैष्णव कों खबरि परे नाहीं। पाछें वैष्णव मजलि पर पहोंचि गांठि खोलते, तब वामें तें द्रव्य निकसतो। जब जानतें, जो–ये कृष्ण भट के काम हैं। सो या प्रकार कृष्ण भट कौ वैष्णवन पर भरभाव हतो।

और कृष्ण भट रात्रि दिन श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी के ग्रंथ देख्यो करे। आए गए वैष्णवन कों हू सुनावें। ऐसी मार्ग प्रति निष्ठा। सो सदा भगवद् भाव में मगन रहते।

और कृष्ण भट प्रतिवर्ष उज्जैनि तें श्रीगुसांईजी के दरसन कों आवते। सो महिना दोइ तीन लों श्रीगुसांईजी की सेवा में तत्पर रहते।

वार्ता प्रसंग – १

सो एक समै कृष्ण भट श्रीगुसांईजी की सेवा में तत्पर रहे। सो उन कृष्ण भट की सेवा देखि कै श्रीगुसांईजी उन पर बोहोत प्रसन्न भए। सो एक दिन उन के उपर कृपा करि कै संपूरन श्रीसुबोधिनीजी की पोथी कृष्ण भट कों दिये। सो कृष्ण भट कों कछू समझ न परे। तातें श्रीगुसांईजी आप दया बिचारि कै श्रीसुबोधिनीजी के गूढार्थ रूप टिप्पनीजी प्रगट किये। सो कृष्ण भट कों श्रीगुसांईजी दिये।

भावप्रकाश – सो टिप्पनीजी द्वारा श्रीगुसांईजी आप कृष्ण भट के हृदय में पुष्टिमार्ग कौ रहस्य, भावना आदि सब स्थापन किये।

सो तत्काल पोथी देखत मात्र कृष्ण भट कों भाव स्फुर्द भयो। जो–श्रीआचार्यजी महाप्रभु अपने गूढ भाव टीका में गुप्त राख्यो हतो, सो श्रीगुसांईजी टिप्पनीजी करि तामें प्रगट किये, सो सब कृष्ण भट के हृदय में स्थापन कियो। सो ऐसी कृपा श्रीगुसांईजी आपु कृष्ण भट के उपर करी।

भावप्रकाश – सो जा भांति श्रीआचार्यजी आपु पद्मारावल कों चंदन, चरनामृत दियो

(हतो), सो लैत ही तत्काल श्रीआचार्यजी के मार्ग कौ सिद्धांत स्फुर्द भयो। ताही भांति कृष्ण भट कों हू पोथी देखत सब स्फुर्द भयो, या प्रकार जाननो।

सो ता दिन तें कृष्ण भट अपने घर आइ नित्य नेम पूर्वक श्रीसुबोधिनीजी कौ पाठ, कथा, कहते। सो ता समै उन के मुख तें सब वैष्णव सुनते। सो मुख्य श्रोता तो निहालचंद भाई रहें। और हू देसी परदेसी वैष्णव कथा सुनिवे कों आवते।

सो केतेक दिन पाछें कृष्ण भट श्रीगोकुल आए। सो कृष्ण भट के साथ और हू एक कुनबी वैष्णव आयो। सो कृष्ण भट के पाछें पाछें कुनबी वैष्णव हतो। सो एक दिन श्रीनाथजीद्वार में श्रीगुसांईजी स्नान करि कै श्रीगोवर्द्धन पर्वत पर पधारत हुते। सो आगें श्रीगुसांईजी और पाछें कृष्ण भट हे। ता पाछें वह कुनबी वैष्णव हुतो। सो ता समै वह कुनबी वैष्णव कृष्ण भट सों पूछन लाग्यो, जो–भटजी! तुम (ने) एक दिन कथा में यों कह्यो हतो, जो–श्रीगोवर्द्धन रत्नखचित धातुमय हैं। और गोविंद कुंड दूध सो भर्‌यो है। सो तो मैं कछू देखत नाहीं। या भांति वा कुनबी वैष्णव ने कृष्ण भट सों पूछी। सो यह बात श्रीगुसांईजी ने सुनी। तब श्रीगुसांईजी आपु कृष्ण भट सों फिरि कै कहे, जो–यह वैष्णव कहा कहत है? तब वा कुनबी वैष्णव ने हाथ जोरि कै श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो–महाराज! एक दिन कृष्ण भट ने कथा में ऐसें कही हती, जो श्रीगोवर्द्धन रत्नखचित धातुमय हैं। और गोविंद कुंड दूध सों भर्‌यो है। सो राज! मैं कछू देखत नाहीं। तब ता समै श्रीगुसांईजी आप बोले नाहीं।

भावप्रकाश – काहेतें, जो–आप सेवा में पधारत हते। सो ठाकुर कों अवेर होंइ। तातें श्रीगुसांईजी आप बोले नाहीं।

सो श्रीगुसांईजी तो श्रीनाथजी के मंदिर में सेवा करन कों पधारे। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कों सिंगार करि कै राजभोग आर्ति पाछें श्रीगुसांईजी निज मंदिर तें बाहिर पधारे। तब ता समै श्रीगुसांईजी पूछे, जो–वह कुनबी वैष्णव कहां है ? तब वह वैष्णव बोल्यो, जो–महाराज ! एक तो कुनबी मैं हूं। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो–अब तू देखि तो सही। तब वह कुनबी वैष्णव देखे तो श्रीगोवर्द्धन रत्नखचित धातुमय हैं। और देखे तो गोविंद कुंड हू दूध सों भर्यो है। सो ता समै श्रीगुसांईजी ने वा कुनबी वैष्णव कों ब्रज कौ ऐसो दरसन करवायो। तब वा कुनबी वैष्णव ने श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् करि कै कह्यो, जो–महाराज ! आप बिना मो सारिखे तुच्छ जीव उपर इतनी कृपा कौन करे ? पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धन तें नीचे पधारे। तब वह कुनबी वैष्णव गोविंद कुंड उपर जाय कै एक लोटी भरि लायो। पाछें वाने कृष्ण भट कों दिखाई। और वा कुनबी वैष्णव ने कृष्ण भट सों कह्यो, जो–तुम्हारी कृपा तें मोकों श्रीगुसांईजी ने अलौकिक दरसन करवायो। सो यह कृपा श्रीगुसांईजी ने मो पर करी है। सो तुम्हारी कृपा तें भई है। सो कृष्ण भट श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते।

भावप्रकाश – यामें यह जतायो, जो–यह मारग वैष्णव द्वारा फलित होत है। सो वैष्णव कौ संग अहर्निस करनो। तातें सब फल की प्राप्ति होंइ। सो वैष्णव की कृपा तें गुरु की कृपा होत हैं। जब गुरु प्रसन्न होंइ तब काहू वस्तू की न्यूनता रहत नाहीं। तातें वैष्णव कौ संग है सोई सर्वोपरि है।

वार्ता प्रसंग – २

और एक समै कृष्ण भट श्रीगोवर्द्धननाथजी के भीतरिया भए

हते। सो कृष्ण भट श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ सेवा–सिंगार करत हतै। परि अपने मन में यह मनोर्थ करि कै एक हू दिन चरनारविंद कौ स्पर्स न कर्यो, जो–मैं इनके चरनस्पर्स करों।

भावप्रकाश – ताकौ हेतु यह, जो–कृष्ण भट अपने मन में कहे, जो– चरनारविंद छूए तें कहा हौत है ? जो–श्रीगोवर्द्धननाथजी आप ही तें मोकों चरनारविंद कौ स्पर्स करावेंगें तब जानिए, जो–श्रीनाथजी मो पर कृपा करी। और यों तो श्रीनाथजी के चरनस्पर्स मांखी हू करत है। परंतु उन कों ज्ञान तो नाहीं है। सो जब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु कृपा करि कै श्रीगुसांईजी की कानि तें आप ही अपने चरनारविंद दोऊ मेरे मस्तक पर धरेंगे तब हों जानूंगो जो–श्रीगोवर्द्धननाथजी चरनारविंद कौ स्पर्स कराए।

सो या प्रकार सेवा करत कृष्ण भट कों बोहोत दिन भए। सो यह मनोर्थ कृष्ण भट के मन कौ श्रीनाथजी ने जान्यो। तब एक दिन श्रीनाथजी कौ सिंगार श्रीगुसांईजी करत हते। तब श्रीगुसांईजी सों श्रीनाथजी ने कह्यो, जो–देखो ! कृष्ण भट कों एते दिन सेवा करत भए। परि इन कबहू अपने मन सों चरनारविंद कौ स्पर्स नाहीं कियो। तब कृष्ण भट वा समै पास ठाढ़े पंखा करत हते। तब श्रीगुसांईजी कृष्ण भट की ओर देखि कै आप पूछें, जो–कृष्ण भट श्रीगोवर्द्धननाथजी कहा कहत हैं ? तब कृष्ण भट ने साष्टांग दंडवत् करि कै श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराजाधिराज ! श्रीगोवर्द्धननाथजी आप सत्य कहत हैं। परि एक बिनती मेरी हू श्रीगोवर्द्धननाथजी सों पूछें, जो–कृष्ण भट कों तुम्हारे चरनारविंद की योग्यता भई है ? सो आप कृष्ण भट कों स्पर्स करवावोगे ? जब आज्ञा देऊ तब मैं चरनारविंद कौ स्पर्स करों। तब श्रीगुसांईजी आपु कृष्ण भट के बचन सुनि बोहोत प्रसन्न भए।

भावप्रकाश–सो यातें, जो–कृष्ण भट ने दीनता प्रगट करि अपने हृदय कौ अभिप्राय जतायो।

पाछें श्रीगुसांईजी ने श्रीनाथजी सों बिनती करी, जो–बावा ! कृष्ण भट के बचन सुनें ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगुसांईजी के बचन सुनि कै कृष्ण भट सों कृपा करि कै कहे, जो–कृष्ण भट आगें आऊ। और श्रीनाथजी मुसिकाइ कै अपनो दक्षिन चरनारविंद चौकी तें ऊंचो कियो। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–कृष्ण भट ! तुमारे बड़े भाग्य हैं। जो–अब तुम चरनारविंद कौ स्पर्स करो। तब कृष्ण भट श्रीगुसांईजी के बचन सुनि कै उत्कंठा सों मुग्ध भाव होइ गए। सो वा समै कछू बानी स्फूर्द न भई। तब श्रीगुसांईजी कृष्ण भट की यह दसा देखि कै अपने श्रीहस्त सों कृष्ण भट के हाथ पकरि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के चरनारविंद कौ स्पर्स करवायो। तब कृष्ण भट कों बानी स्फुर्द भई। सो प्रथम तो श्रीगुसांईजी आप कों कृष्ण भट ने साष्टांग दंडवत् करि के ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी को साष्टांग दंडवत् चरनस्पर्स करि कै हाथ अपने नेत्र हृदय सों स्पर्स करवायो। ता पाछें कृष्ण भट ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! आप के चरन प्रताप तें ये चरनारविंद मेरे हृदयारूढ होऊ। तब श्रीगुसांईजी कृष्ण भट कौ सुद्ध भाव जानि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के सन्मुख आसीर्वाद दिये, जो–तथास्तु। सो कृष्ण भट श्रीगोवर्द्धननाथजी के चरनस्पर्स श्रीगुसांईजी के सानिध्य करे सो करे। फेरि ता दिन पाछें कृष्ण भट ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के चरनस्पर्स करे नाहीं।

भावप्रकाश–सो काहेतें, जो–भाव दृढ भए पाछें क्रियाकी अपेक्षा रहत नाहीं।

वार्ता प्रसंग–३

और एक समै कृष्ण भट ने श्रीनाथजी सो बिनती कीनी, जो–महाराज ! मोकों ब्रजभक्तन सहित आपकी लीला के दरसन देऊ । तब श्रीनाथजी ने कृष्ण भट सों यह कही, जो–कृष्ण भट ! वे दरसन तो सहज ही में अलौकिक देह सों होत है, या देह सों तो कबहू न होंई । सो उन कृष्ण भट कों श्रीनाथजी दरसन दैते, बातें करते, और या प्रकार चरनस्पर्स कराए, परि ब्रजभक्तन सहित लीला के दरसन की तो नाहीं करे।

भावप्रकाश–सो काहेतें, जो–अलौकिक स्त्रीभाव बिना पुरुष देह तें ब्रजभक्तन सहित लीला के दरसन न होंइ । सो स्त्रीभाव कौ दान तो श्रीस्वामिनीजी के हाथ है । तातें वे कृपा करें तब ही होंइ। यातें श्रीनाथजी नाहीं करे ।

ता पाछें कृष्ण भट (ने) श्रीगुसांईजी कों ब्रजभक्तन सहित लीला के दरसन की बिनती करी । और कह्यो, जो–महाराज ! श्रीनाथजी तो नाहीं करे । कहैं, जो–या देह सों नाहीं होत । सो आप कृपा करि कै दरसन करवाओ तब होंइ । तब श्रीगुसांईजी कृष्ण भट कों कहे, जो–श्रीनाथजी तो बालक हैं, यहां देखि तो सही । सो कृष्ण भट देखे तो कोटानकोटि जूथ ब्रजभक्तन के, श्रीनाथजी के सिज्या मंदिर में सेवा करत हैं । कोऊ सिज्या सम्हारत हैं । कोउ आभरन सम्हारत हैं, कोऊ पीकदान, कोऊ झारी, कोऊ बंटा, कोऊ चादर लिये ठाड़े हैं । ऐसें असंख्य ब्रजभक्तन के दरसन श्रीगुसांईजी कृष्ण भट को करवाए । सो दरसन होत ही कृष्ण भट थकित व्है रहै । सो देहानुसंधान न रह्यो । पाछें श्रीगुसांईजी ने लीला कौ आच्छादन कियो । तब

कृष्ण भट कहे, महाराज ! यह क्यों ? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–कृष्ण भट ! अभी तोकों यहां सेवा करनी है ।

भावप्रकाश–यामें यह जताए, जो –श्रीगुसांईजी श्रीचंद्रावलीजी है, तातें स्वामिनी रूप हैं । सो उन की कृपा तें कृष्ण भट कों अलौकिक स्त्रीभाव की प्राप्ति भई । तब लीला के दरसन भए । सो श्रीगुसांईजी कर्तुं, अकर्तुं, अन्यथा कर्तुम् सर्व–सामर्थ्य युक्त हैं । जो कार्य श्रीनाथजी (हू) न किये, सो आप कियो, ऐसे परमदयाल हैं । तातें जीव कों श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी कौ आश्रय दृढ राखनो । ता करि सब फलन की प्राप्ति होंइ । सो श्रीगुसांईजी श्रीसर्वोतम में श्रीआचार्यजी कौ नाम "अदेयदान दक्षश्च" कहे है । ताहि भांति आप हू हैं, यह प्रगट दिखाए ।

वार्ता प्रसंग – ४

और कृष्ण भट अपने घर उज्जैनि में रहते । सो वैष्णव तापीपुर के, गुजरात के, तथा दक्षिन के श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी के दरसन कों आवत हते । सो उज्जैनि में कृष्ण भट के घर उतरते । तिन वैष्णवन कौ कृष्ण भट बोहोत भांति समाधान करते । उन वैष्णवन कों कृष्ण भट दिन पांच सात अपने घर पाहूने राखते ।

भावप्रकाश – सो काहेतें, जो–कृष्ण भट जानते, जो–ये वैष्णव मेरे घर बोहोत दिन के श्रमित आए हैं । सो ऐसें जानि कै कृष्ण भट उन कों पांच सात दिन पाहुने राखते । तातें उन कौ श्रम निवृत्त होंइ ।

पाछें जब कृष्ण भट सों बिदा हौते तब रात्रि में उन वैष्णवन की गांठि खडिया आप कृष्ण भट खोलि कै देखते । सो जा वैष्णव की गांठि में थोरी खरची देखते ताकी गांठि में रुपैया १००) एक सौ बांधि दैते । और प्रसाद की गांठि छोटी बांधि कै धरते । सो वे गांठिनवारे धनी न जानते । सो वे वैष्णव जब निद्रा कै बस हौते तब ता समै बांधि देते । सो या भांति सों करते । सो वे वैष्णव कोऊ जानते नाहीं । सो वैष्णव मजलि पर जाइ कै अपनी गांठि खोलते, तब वे जानते जो यह काम कृष्ण भट के

हैं। या प्रकार सगरे आपुस में चर्चा करते। या प्रकार सगरे वैष्णवन की सेवा कृष्ण भट करते।

भावप्रकाश – सो या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो–कृष्ण भट वैष्णवन की सेवा अपनी बडाई के अर्थ नाहीं करते। गुप्त रीति सों करते। सो काहू कों जानि नाहीं परे। तातें बडाई के अर्थ सेवा करनी नाहीं, स्नेह भाव सों करनी। तामें बड़ाई माहात्म्य की अपेक्षा रहत नाहीं। या प्रकार दीनता सों स्नेहपूर्वक सेवा करनी, यह सिद्धांत भयो।

और जब वैष्णव कृष्ण भट सों बिदा हौते तब कृष्ण भट उन वैष्णवन सों कहते, जो–तुम सब श्रीगोकुल जाइ कै कछूक कमाइ आइयो। ऐसो जाइ कै मति करियो जामें कछू गांठि कौ खोइ आओ।

भावप्रकाश – ताकौ अभिप्राय यह, जो– श्रीठाकुरजी के दरसन करो सो हृदय में राखियो। और जो – कोऊ श्रीगोकुल में रहत हैं, तिन कौ दोष हृदय में मति धरियो। यह कमाइवे खोइवे कौ कहे।

सो कृष्ण भट की शिक्षा वे वैष्णव मानते तिनकौ कल्यान हौतो। यह उपदेस करि कृष्ण भट वैष्णवन की बिदा करते.

वार्ता प्रसंग – ५

और एक समै उज्जैनि के सगरे वैष्णव मिलि कै बिचार करन लागे, जो–भाई ! श्रीठाकुरजी कौन भांति प्रसन्न होंई ? तब उनमें एक वैष्णव ने कह्यो, जो – भाई ! अमूके बड़े भगवदीय वैष्णव हैं, तिन पास चलिए। तब वे सब वैष्णव वा वैष्णव के घर आए। तिन सों श्रीकृष्ण–स्मरन करि यह पूछें, जो–भाई ! श्रीठाकुरजी कौन भांति प्रसन्न होंइ ? तब उन वैष्णवन तें वा वैष्णव ने कही, जो–भाई ! श्रीठाकुरजी तो या प्रकार प्रसन्न। होंइ जो–रीतानुसार सुद्धभाव सों श्रीठाकुरजी की सेवा करे।

और समै समै के भोग सामग्री श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की, श्रीगुसांईजी की आज्ञा प्रनालिका लिखी है ता प्रनालिका प्रमान सेवा करे । तो श्रीठाकुरजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की श्रीगुसांईजी की कानि तें मानें । तब जानिए, जो – श्रीठाकुरजी याकी सेवा मानें । तब उन वैष्णवन वा वैष्णव सों पूछ्यो, जो–सेवा मानी क्यों जानिए ? तब वा वैष्णव ने उन वैष्णवन सों कही, जो–ताके चारि अनुभव हैं । प्रथम तो अनायास वैष्णव घर आवे । ताकौ अपनी सक्ति प्रमान समाधान करे । और दूसरे, स्वरूप में याके मन में आनंद उपजे । जो–देखो, साक्षात् श्रीनंदरायकुमार श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की कानि तें मेरे हाथ की रसोई तथा जल की लोटी अंगीकार करत हैं । तीसरे, जा भाव सों यह श्रीठाकुरजी कौ सिंगार धरावे ताही भाव सों श्रीठाकुरजी याकों दरसन देई । चोथें, श्रीठाकुरजी आगें यह श्रीआचार्यजी की कानि तें भोग समर्पे तामें श्रीठाकुरजी के आरोगे पाछें नाना भांति कै स्वाद आवें । और थार कौ प्रसाद निघटे नाहीं । ए चार लक्षन प्रभुन की सेवा–प्रसन्नता के हों तों जानत हूं । तब वे वैष्णव वाहू वैष्णव कों साथ लै कै एक वैष्णव के घर पांच वैष्णव आए । ता वैष्णव कों ये पांचों वैष्णव श्रीकृष्ण–स्मरन करि यह बिनती करे, जो–भाई ! श्रीठाकुरजी कौन भांति प्रसन्न होंई । तब वा वैष्णव ने इन पांचो वैष्णवन सों यह कह्यो, जो–भाई ! तब हों तो यह जानत हों, जो–श्रीठाकुरजी तब प्रसन्न होंइ, जब स्वामिनीजी कृपा करि प्रसन्न होंइ । तब स्वामिनीजी याके उपर कृपा करि ठाकुरजी सों

कहे। तब जानिए, जो–श्रीठाकुरजी याके उपर प्रसन्न भए। तब इन पांचों वैष्णवन या वैष्णवन सों पूछ्यो, जो–श्रीस्वामिनीजी प्रसन्न भए क्यों जानिए ? तब वा वैष्णव ने पांचों वैष्णवन सों यह कह्यो, जो–श्रीस्वामिनीजी तो प्रसन्न भए तब जानिए जब याकौ दृढ विश्वास होंइ। अनन्यता एकसी इतनी ठौर आवें। श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी, श्रीनाथजी, श्रीस्वामिनीजी, और वैष्णवन में एकसो भाव होंइ। तब जानिए, जो–या जीव उपर श्रीस्वामिनीजी कृपा करे है। तातें यह मार्ग है सो केवल स्वामिनीजी की कृपा कौहे। तातें यह मार्ग श्रीस्वामिनीजी कौ हे। तातें श्रीस्वामिनीजी प्रसन्न होंइ तो श्रीठाकुरजी या जीव कों अनुभव जनावे। तब जानिए जो श्रीठाकुरजी प्रसन्न भए। ता पाछें तहां तें सब वैष्णव मिलि कै यह बिचार करे, जो–भाई ! आपुन सगरे कृष्ण भट पास चलिए। ये बड़े भगवदीय हैं। उन हू सों यह बात पूछिए। तब देखिए, जो–वे कृष्ण भट कहा कहें ? सो सगरे वैष्णव कृष्ण भट पास आए। ता समै कृष्ण भट तो आप श्रीठाकुरजी की सेवा में हते। सो सेवा सों पहोंचि राजभोग धरि कृष्ण भट मंदिर में तें बाहिर आए, तब श्रीकृष्ण–स्मरन करि कृष्ण भट पासे बैठे। पाछें पूछ्यो, जो–आज तुम सब मिलि कै कैसें पधारे हो ? पाछें इन वैष्णवन कृष्ण भट सों बिनती करी, जो–भटजी ! श्रीठाकुरजी कौन भांति सों प्रसन्न होंइ। तब कृष्ण भट ने उन वैष्णवन सों पूछी, जो–तुम दौइ ठौर पूछन गए हते, तिन तुम सों कहा कह्यो ? तब उन वैष्णवन कृष्ण भट सों कह्यो, जो–एक ठौर तो यह कही,

जो–श्रीठाकुरजी की भक्ति करिए मार्गोक्त प्रकार सों, तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होंइ । और दूसरी ठौर यह कही, जो – श्रीस्वामिनीजी कृपा करें तो श्रीठाकुरजी प्रसन्न होंइ अनुभव जनावें । तब कृष्ण भट ने उन वैष्णवन सों कह्यो जो – ये दोइ बात तो ग्रंथोक्त हैं । परि श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी अपने आनंद में हैं । तातें वा ठौर दूसरे की तो स्फूरना नाहीं । क्यों जो–वे दोऊ लीला परवस हैं । अपने स्वरूप में मगन हैं । तातें उन की एक अंतरंग सखी है, सो वही सखी निरंतर दोउन के निकट ही रहति है । जब वह सखी प्रसन्न होंइ तब वह सखी उन की स्तुति करे । तब श्रीठाकुरजी, स्वामिनीजी बोहोत ही प्रसन्न होंइ और उन भक्तन के मनोरथ सिद्ध होंइ । परि ताकी एक और सखी है । सो वह सखी बाहिर कौ सब कामकाज करति है । और वह सखी कुंजादिक सँवारति है । और वह सखी सिज्या आभरन सँवारति है । और वह सखी कुंज के द्वार मधुरे स्वर सों गान करति है । दोउन कौ विविध गुनगान करति है । सो सखी कों या जीव की बिनती करनी । सो जब वह बाहिर की सखी कों यह जीव बिनती करे । तब वह बाहिर की सखी अपनी निज स्वामिनी–सखी सों समै पाइ बिनती करे । तब वह निकट की सखी तिनके मनमें भाव धरि, जा समै श्रीठाकुरजी, श्रीस्वामिनीजी प्रसन्न मन उत्साह में बिराजे होंइ, तब वह सखी वा भक्त की बात सुधि करि कै प्रभुन आगें सब बिनती करे । तो श्रीठाकुरजी वा भक्त उपर प्रसन्न होंई । तहां कृष्ण भट ने श्रीगुसांईजी की विज्ञप्ति की सर्व बात कही । सो श्लोक –

सखि बहुधापि निरुक्तश्चरणस्पृष्टोऽपि जीविताधीशः ।
नो मनुते निज संगममहह कथं तत्र किं कुर्मः ॥

यह श्लोक कहे । तातें जे सर्वदा भगवदीय श्रीठाकुरजी कौ अनुभव जानत होंइ ताकै आगें यह जीव दीनता करे । और हम कों तो श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी के सेवक प्रसन्न होंइ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु, श्रीगुसांईजी प्रसन्न होंइ । सो याही भांति सों उन वैष्णवन के आगें कृष्ण भट ने अपने मार्ग की सब परिपाटी कही । तब उन वैष्णवन के मन कौ संदेह मिट्यो । सो वैष्णव सुनि के बोहोत प्रसन्न भए । तब इतने में कृष्ण भट ने श्रीठाकुरजी कौ राजभोग सरायो, तब उन वैष्णवन सों कह्यो, जो–तुम दरसन करो । तब उन वैष्णवन ने श्रीठाकुरजी के दरसन किये । पाछें कृष्ण भट के आग्रह सों उहांई महाप्रसाद लियो । ता पाछें वे सगरे वैष्णव कृष्ण भट सों श्रीकृष्ण–स्मरन करि कृष्ण भट के घर तें अपने घर आए । सो वे कृष्ण भट श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे ।

भावप्रकाश–यामें यह जताए जो– दूती द्वारा जैसें कामी स्त्री–पुरुषन के कार्य होत हैं, तैसेंइ यहां दूती रूप भगवदीय जानने । सो वे जब प्रसन्न होंइ तब प्रभुन कों मिलाइ दै । तातें 'शिक्षापत्र' में कह्यो है –

'तदीयेषु च तद्बुद्ध्या भरः स्थाप्यो विशेषतः ।
यथा दूतीषु भवति विषयीणां मति स्तथा ॥"

यातें तदीय जो भगवदीय हैं, उन में विसेस करि कै भगवद्भाव कौ स्थापन करनो । सो कैसें ? जैसें विषयी स्त्री–पुरुष दूती में राखे हैं । सो याकौ भाव या कीर्तन में है –

सखीयों ! याद दिवावति रहियों ।
समै पाइ कै दसा हमारी कबहू जुगल सों कहियों ।

करि मनुहारि जोरि कर दोऊ मेरी ब्यथा उल्हैयों।
जो कछू क्रोध करें ता उपर बिनती करि करि सहियों।
केलि काज अरु कोप समै त्यजि सुख में रूख लहियों।
कहियो कबहूक धाइ कै बांह 'हरिदास' की गहियों।

वार्ता प्रसंग – ६

और एक समै श्रीगुसांईजी ने श्रीगोकुल तें आपु कृष्ण भट की उपर कृपा करि कै एक पत्र लिखि कै भेज्यो। जो–कृष्ण भट एक बार यहां आइयो। सो बेगि ही आइयो। सो श्रीगुसांईजी कौ एक ब्रजबासी कृष्ण भट के पास उज्जैनि में आइ कै कृष्ण भट कों वह पत्र दियो। सौ कृष्ण भट ने प्रभुन कौ पत्र माथें चढाइ कै बांच्यो। पाछें कृष्ण भट ने वा ब्रजवासी कौ भली भांति सों समाधान कर्‌यो। सो पत्र बांचत ही कृष्ण भट श्रीगोकुल कों चलै। सो अपने घर तें कृष्ण भट वा प्रभुन के ब्रजबासी कों साथ लै उज्जैनि तें एक मजलि आए। सो रात्रि कों कृष्ण भट सोए तब कृष्ण भट के सेव्य श्रीठाकुरजी ने यह जनायो, जो–कृष्ण भट ! तो बिना मोकों तो यहां सुहात नाहीं। या प्रकार श्रीठाकुरजी ने कृष्ण भट सों जनाई। तब कृष्ण भट के साथ एक वैष्णव हतो। ताकों ता ठौर तें कृष्ण भट ने अपनी स्त्री कों कहाई, जो–जो बात में श्रीठाकुरजी सुखारे रहें, ताही प्रकार सों तुम श्रीठाकुरजी की सेवा करियो। मैं श्रीगुसांईजी के दरसन करि कै बेगि ही आवत हूं। सो वह वैष्णव घर आइ कै भट्‌यानी सों कृष्ण भट के समाचार कहे। पाछें दूसरि मजलि पै फेरि श्रीठाकुरजी कृष्ण भट कों जनाए। जो–मोकों तो बिना सुहात नाहीं। तब एक वैष्णव फेरि भट्‌यानी के पास पठ्‌ायो। तासों

कृष्ण भट समाचार कहे। जो–जामें श्रीठाकुरजी प्रसन्न रहे, सो प्रकार तू सेवा करियो। सो वह वैष्णव भट्यानी पास आइ कै ये समाचार कहे। पाछें तीसरी मजलि पर फेरि श्रीठाकुरजी ने कृष्ण भट सों जनाई, जो–तो बिना मोकों सुहात नाहीं। तब श्रीठाकुरजी तें कृष्ण भट ने कह्यो, जो–महाराज ! मोकों तो श्रीगुसांईजी ने बुलायो है तहीं जात हूं, हों तो। और तुम कों तो मोकों श्रीगुसांईजी ने दिखाए है। तातें मेरे माथे तुम बिराजत हो। तिन प्रभुन पास आप सों न जाइए तोहू वे कृपा करि बुलाइ पठावें तब निठुराई करें क्यों बनि आवें ? तातें बाबा ! मैं श्रीगोकुल जाइ श्रीगुसांईजी के दरसन करि कै बेगि ही आवत हूं। तब कृष्ण भट के ए वचन सुनि कै श्रीठाकुरजी बोहोत प्रसन्न होंइ आज्ञा दीनी, जो–तू जा। पाछें कृष्ण भट ठाकुरजी कौ समाधान करि अपने घर पठाइ कै आपु श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुल आए।

भावप्रकाश – यामें यह जताए, जो–गुरु के कार्यार्थ श्रीठाकुरजी की आज्ञा न बनि आवें तो बाधक नाहीं। क्यों ? जो–गुरु की प्रसन्नता सों ठाकुर आप हू तें प्रसन्न होत हैं। और ठाकुर तीन बेर जताए, सो कृष्ण भट की परीक्षार्थ। जो–दैखैं, कृष्ण भट की श्रीगुसांईजी में कैसी प्रीति है ? सो कृष्ण भट को तो श्रीगुसांईजी में एकरस प्रीति है। तातें श्रीठाकुरजी की आज्ञा न मानी। तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होंइ आज्ञा करे, जो – 'तू जा।'

सो ता समै श्रीगुसांईजी श्रीयमुनाजी स्नान कों पधारे हते। तहां आइ कै कृष्ण भट ने श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करी। तब श्रीगुसांईजी कृष्ण भट कों यह कहे; जो– कृष्ण भट ! तू आयो ? तब कृष्ण भट अति उत्कंठा सों प्रभुन आगें दंडवत् करि यह बिनती करे, जो–महाराज ! आप ने अपुनो जानि सुधि करि कै

बुलायो, तब क्यों न आऊं ? तब श्रीगुसांईजी कृष्ण भट के ये बचन सुनि कै अति प्रसन्न होंइ यह आज्ञा प्रभु केरि कृष्ण भट सों करे, जो–कृष्ण भट स्नान करो। तब कृष्ण भट श्रीगुसांईजी के साथ श्रीयमुनाजी में स्नान करे। पाछें प्रभुन के साथ श्रीनवनीतप्रियजी के मंदिर में आए। तब श्रीगुसांईजी तो श्रीनवनीतप्रियजी कौ राजभोग सरावन भीतर पधारे। ता समै कृष्ण भट पास ठाढ़े रहे। पाछें भोग सर्‌यो तब कितनीक सेवा श्रीनाथजी के संबंध ते श्रीगुसांईजी की कृपा तें कृष्ण भट करे। पाछें समै भयो तब किवाड़ खोलि राजभोग आर्ति करि अनोसर श्रीनवनीतप्रियजी कों कराइ श्रीगुसांईजी आप बाहिर पधारि कै अपनी बैठक में बिराजे। ता समै कृष्ण भट श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि पास बैठे। तब श्रीगुसांईजी तो सर्व बात जानत हते। परि तो हू श्रीगुसांईजी कृष्ण भट सों पूछे, जो–कृष्ण भट ! तेरे श्रीठाकुरजी आछी भांति बिराजत हैं ? तब कृष्ण भट ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज की कृपा तें श्रीठाकुरजी तो आछी भांति बिराजत हैं। परि मोकों आप के पास आवत समै या प्रकार श्रीठाकुरजी हठ करि रहे। तब श्रीगुसांईजी सुनि कै चुप करि रहे। पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करिवे कों पधारे। तब कृष्ण भट कों अपने साथ भोजन कों प्रभु भीतर लै पधारे। तब कृष्ण भट सों श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–कृष्ण भट ! तूं घर क्यों नाहीं गयो ? तब कृष्ण भट ने कह्यो, जो–महाराज कौ पत्र आयो हतो। तामें राज लिखी हती, जो–कृष्ण भट ! तू बेगि आइयो। सो महाराज की आज्ञा मैं कैसें

लोपूं ? श्रीठाकुरजी तो मैं आप के बताए जाने हैं। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी प्रसन्न व्है कहे, जो–ऐसें न करिए। श्रीठाकुरजी कहे सो करिए।

भावप्रकाश – क्यों ? जो–श्रीआचार्यजी महाप्रभु 'विवेकधैर्याश्रय' ग्रन्थ में आज्ञा करे हैं। सो श्लोक –

अभिमानश्च सन्त्याज्यः स्वाम्यधीनत्वभावनात्।
विशेषतश्चेदाज्ञा स्यादन्तः करणगोचरः॥
तदा विशेषगत्यादि भाव्यं भिन्नं तु दैहिकात्।

तातें ठाकुर की आज्ञा प्रमान चलनो। यही सेवक कौ धर्म है। परि कृष्ण भट तो श्रीगुसांईजी के सेवक हैं। तातें श्रीगुसांईजी की आज्ञा प्रमान चले। तब श्रीठाकुरजी हू प्रसन्न भए। और गाढी प्रीति में आज्ञा कौ उल्लंघन बाधक नाहीं, यहू जतायो।

वार्ता प्रसंग – ७

और एक समै कृष्ण भट घर न हते। तब नागजी भट गोधरा के आए। सो कृष्ण भट के घर आए। तब नागजी भट ने कृष्ण भट के श्रीठाकुरजी के दरसन किये। पाछें नागजी उन भट्यानी सों कहे, जो–तुम मोकों भीतर श्रीठाकुरजी के सिज्या मंदिर में श्रीपादुकाजी बिराजत हैं, तिन के कृपा करि दरसन करावो। तब उन भट्यानी ने नागजी भट कों भीतर लै जाइ कै श्रीपादुकाजी के दरसन कराए। तब नागजी श्रीपादुकाजी के दरसन करि दंडवत् करि बोहोत प्रसन्न भए। ता पाछें कृष्ण भट के घर नागजी महाप्रसाद लै कै चलन लागे। तब नागजी ने भट्यानी सों चलती बार श्रीकृष्ण–स्मरन करि यह वचन कह्यो, जो–कृष्ण भट जब घर आवें तब उन सों मेरो श्रीकृष्ण–स्मरन कहियो। और यह कहियो, जो–नागजी वैरागी आयो हतो। सो दरसन करि प्रसाद लै श्रीगोकुल कों गयो। सो नागजी के चले

पाछें कृष्ण भट घरी आधक में बाहिर तें घर आए । तब भटयानी ने कृष्ण भट सों ए समाचार कहे । जो–नागजी वैरागी दरसन करि प्रसाद लै या प्रकार श्रीगोकुल कों गए । तब कृष्ण भट अपने मन में सोच करन लगे, जो–नागजी वैरागी तो कोऊ मेरी पहिचान कौ वैष्णव नाहीं । तातें नागजी भट गोधरा के ही आए दीसत हैं । उन नागजी बिनु भीतर के दरसन कौ भेद कौन पावै ? जो–आपु ही कहि कै श्रीपादुकाजी के दरसन करे । तब कृष्ण भट ने अपनी स्त्री सों पूछी, जो–उन कों चले कितनीक बार भई है ? तब स्त्रीने कृष्ण भट सों कही, जो–घरी आधक भई है । सो सुनि कै कृष्ण भट घर तें नागजी भट कों मिलिबे कों चले । और नागजी कृष्ण भट के घर तें निकसे । सो मारग में जात बराबर पाछें कों देखत जांइ । जो–अब कृष्ण भट आवत होंइगे । सो जब कृष्ण भट घर तें निकसे तब नागजी भट की दृष्टि दूर तें कृष्ण को आवत देखे । सो नागजी भट पहिचान कै वाही ठौर ढाढ़े होंइ रहे । पाछें जब कृष्ण भट ने नागजी भट कों देखे तब दोऊ जन परस्पर चलि कै मिलि भेटें । सो दोऊन के मन में अति आनंद भयो । तब कृष्ण भट ने नागजी सों कही, जो–तुम कों यों न चहिए । जो–मोसों मिले बिना आए । तब नागजी ने कृष्ण भट सों कही, जो–मोकों श्रीगोकुल उतावल ही जानो है । ताते तुम ते मिले बिना तिहारे घर तें निकस्यो । तब कृष्ण भट बोहोत हठ करि नागजी भट कों उहां तें पाछें फेरि अपने घर लिवाइ ल्याये । तब राजभोग के दरसन दोऊ जनेंन ने करे ।

भावप्रकाश – सो सनेह की यह रीति है, जो–सनेही अपने घर आवें तो मिले बिना रह्यो नांय जांइ। सो कृष्ण भट (और) नागजी भट कौ आपुस में बोहोत सनेह है। तातें कृष्ण भट नागजी कों बुलाइवे कों गए। सो पाछें घर बुलाइ ल्याये।

ता पाछें मंदिर सों कृष्ण भट पहोंचि कै बाहिर आए। तब नागजी सों कृष्ण भट ने कह्यो, जो–नागजी भाई ! उठो प्रसाद लेहु। तब नागजी ने कह्यो, जो–मैं अब ही तो तुम्हारे घर तें बालभोग कौ प्रसाद लै कै निकस्यो हूं। तातें अब ही तो मोकों प्रसाद लेवेकी इच्छा नाहीं। तब कृष्ण भट ने नागजी सों बोहोत मनुहारि करि कै कही, जो थोरीसी सखड़ी लीजिये। तब नागजी कों लेवे की रुचि तो हती नाहीं तोहू कृष्ण भट के बोहोत आग्रह तें सखडी प्रसाद लीनो। पाछें प्रसाद लै दोऊ जन एक ठौर में एकांत जाई बैठे। सो वा कोटडी के किवाड़ दै दोऊ जनें वार्ता करन लागे। सो जब दूसरे दिन भट्यानी ने राजभोग समर्प्यो तब इन पास भट्यानी [illegible] श्रीठाकुरजी कों राजभोग आयो है। तातें उठो स्नान करो। तब ए दोऊ जन बाहिर आए। ऐसी दसा इन की भगवद् वार्ता करत होइ गई। जो–कछू देहानुसंधान न रह्यो। और देहाध्यास इन कों ब्याप्यो नाहीं। पाछें दोऊ जन दांतिन करि स्नान करि मंदिर में कृष्ण भट जाइ श्रीठाकुरजी कौ भोग सराये। पाछें सैन भये। त नागजी श्रीठाकुरजी के दरसन करि श्रीपादुकाजी के दरसन क अति प्रसन्न भए। पाछें दोऊ जनें प्रसाद लै कै फेरि वाही ठौं बैठि भगवद् वार्ता करन लागे। सो वा दिन किवाड़ भीतर

दीनें हते। सो वार्ता करत तीसरे दिन उठे। भगवद् रस में ऐसे मत्त भए, जो–कछू देहानुसंधान न रह्यो। इनकों कछू देहाध्यास ब्याप्यो नाहीं। सो फेरि स्नान करि श्रीठाकुरजी की सेवा करि प्रसाद लै वाई ठौर जाइ दोऊ जनें फेरि वार्ता करन लागे। सो वार्ता करत सातवें दिन उठे। सो ऐसी भांति भगवद् रस सों दोऊ जन छके रहे। सो एक बाई कौ प्रसंग कहत हतै। सो वाही रस में छके दोऊ जन उठि ठाढ़े भेए। तब नागजीभाई ने कृष्ण भट सों कही, जो–चलिए, जो–वा बाई के घरकों चलिए। सो ताके प्रथम दिन वा बाई सों श्रीठाकुरजी जनाए, जो–सवारे तेरे घर कृष्ण भट आदि छह वैष्णव आवेगें। तासों तू सब सामग्री सँवारि राखियो। सो वह बाई वा दिन सगरी सामग्री सँवारि रसोई में सिद्ध करि रसोई करि श्रीठाकुरजी की सेवा सों पहोंचि राजभोग समर्पि कै घर कै द्वार उपर आइ बैठी। सो कृष्ण भट कौ मार्ग देखन लागी। इतने ही कृष्ण भट आपु अकेले आए। पाछें वा बाई ने श्रीकृष्ण–स्मरन कियो। तब कृष्ण भट सों वा बाई ने पूछ्यो, जो–और पांच वैष्णव कहां हैं ? तब कृष्ण भट जान्यो, जो–याकों श्रीठाकुरजी प्रथम ही जनाए हैं। जो–तेरे घर छह वैष्णव आए हैं। तब कृष्ण भट उन पास आइ नागजी आदि सगरे वैष्णवन कों लिवाइ आए। तब वह बाई सगरे वैष्णवन सों श्रीकृष्ण–स्मरन करि अति आनंद पाइ उन वैष्णवन कों अपने घर पधराए पाछें समै भए श्रीठाकुरजी कौ राजभोग सराइ कै किवाड खोले। सो सगरे वैष्णव श्रीठाकुरजी

के दरसन करि बोहोत प्रसन्न भए । पाछें वह बाई अनोसर करवाइ कै इन सब वैष्णवन कों प्रसाद भली भांति सों लिवायो। ता पाछें ए सब वैष्णव वा बाई के घर वार्ता करन लागे । ऐसें वा बाई के घर चालीस दिन रहे । परि वार्ता के रस में छके रहे । पाछें नागजी भाई उहां सों कृष्ण भट पास तें बिदा होइ श्रीगोकुल कों चले । तब कृष्ण भट अपने घर आए ।

सो नागजी भट केतेक दिन में श्रीनाथजीद्वार आइ श्रीनाथजी के दरसन करि तहां तें श्रीगोकुल में आइ श्रीगुसांईजी के दरसन करि दंडवत् करे । पाछें नागजी सों श्रीगुसांईजी यह पूछे, जो–नागिया ! तोकों मार्ग में दिन बोहोत भए ? तब नागजी ने श्रीगुसांईजी सों दंडवत् करि कृष्ण भट के सब समाचार कहे । तब श्रीगुसांईजी नागजी के बचन सुनि कै चुप करि रहे । पाछें फेरि श्रीगुसांईजी नागजीभाई सों कृष्ण भट के कुसल समाचार पूछे । सो सर्व समाचार पूछे । सो सर्व समाचार कृष्ण भट के नागजीभाई ने श्रीगुसांईजी के आगें कहे । तब श्रीगुसांईजी कृष्ण भट के कुसल समाचार पूछि कै श्रीठाकुरजी की सेवा के समाचार पूछे । सो सर्व समाचार नागजी के मुख तें सुनि कै श्रीगुसांईजी कृष्णभट के उपर बोहोत प्रसन्न भए । ता पाछें एक दिना कृष्ण भट श्रीगोकुल आइ कै श्रीगुसांईजी कों दंडवत् किए ।

वार्ता प्रसंग – ८

और एक समै उज्जैनि के सगरे वैष्णव मिलि कै कृष्णभट

के घर आए। तब कृष्णभट अति आनंद सों उन वष्णवन सों श्रीकृष्ण–स्मरन करि कै बैठारे। तब उन वैष्णवन ने कृष्ण भट सों रास की बिनती करी। तब उन वैष्णवन सों कृष्णभट कहे, जौ–रास कौ उत्सव तो ब्रज कौ है। तातें तुम ब्रज में जाइ रास देखि आवो। और ठौर रास बने नाहीं। तब उन वैष्णवन फेरि कृष्ण भट सों बिनती करी, जो–हमारो मनोरथ तो अब है, और ब्रज तो हम सों दूरि है। तासों हम कों आज्ञा होंई तो हम सब सामान रास कौ सिद्ध करि लावें। तब उन वैष्णवन कौ बोहोत आग्रह कृष्ण भट ने जान्यो। तब कृष्ण भट उन वैष्णवन सों कहे, जो पूरनमासी के दिन रास तुम्हारे आग्रह तें करेंगे। सो जब पूरनमासी आई, सो ता दिन समस्त वैष्णव समाज लै कै आए। सो कृष्ण भट ने तब रास करवायो। सो सांझ कों कृष्ण भट ने सब स्वरूपन कों सिंगार करवायो। पाछें श्रीठाकुरजी के स्वरूप कौ सिंगार करि उनके माथे मुकुट धरायो। तब सगरे स्वरूप सिद्ध भए। तब पास एक वैष्णव की लरिकिनी बैठी ही। तासों कृष्ण भट कहे, जो–तू इन सब स्वरूपन को अंजन सँवारि कै दै। सो वह वैष्णव की लरिकिनी बोहोत ही विचित्र सुघर हती। तानें सव स्वरूपन कों अंजन आछी भांति सँवारि दीनो। पाछे सर्व स्वरूपन को मंडल में पधराइ कृष्णभट आछी भाँति दरसन करि कै उन स्वरूपन कों पृथक्–पृथक् दंडवत् करे। तब उन स्वरूपन में साक्षात् पुरूषोत्तम (कौ) आवेस भयो। तब सगरे वैष्णव दंडवत् करे।

भावप्रकाश – सो पुष्टिमार्ग की यह रीति है, जो–भावना तें स्वरूप पधारें । जैसें मर्यादामार्ग में वेद मंत्रन तें आवाहन होत हैं, तैसेंइ पुष्टिमार्ग में भगवदीयन के भाव करि स्वरूप कौ आविर्भाव होत है । सो श्रीआचार्यजी 'संन्यासनिर्णय' ग्रंथ में कहे हैं । सो श्लोक ।

"भावो भावनया सिद्धः साधनं नान्यदिष्यते । "

सो भाव की सिद्धि भावना तें ही होत है । तातें या मार्ग में भावना करि सब फल की सिद्धि है । सो कृष्ण भट के हृदय में लीला सहित भावात्मक कृष्ण की स्थिति हैं । तातें उनकी भावना तें लीला संयुक्त पुरुषोत्तम कौ आविर्भाव भयो । ऐसें जाननो ।

ता पाछें वे सगरे स्वरूप नृत्य कौ आरंभ करन लागे । सो वा समै अलौकिक नृत्य भयो । सो बाजेंइ बाजे, सो अलौकिक । सो वा समै अलौकिक दरसन भयो । सो सब वैष्णव अपने अपने मन में बोहोत प्रसन्न भए । ऐसो अलौकिक सुख वा समै भयो । परि एक कृष्ण भट के हृदय में बोहोत खेद भयो । जो, हाइ ! मैं श्रीठाकुरजी कों बोहोत श्रम करायो । ऐसो बोहोत ताप कृष्ण भट ने अपने मन में कर्‍यो । सो नेत्रन तें जल कौ प्रवाह चल्यो । सो श्रीठाकुरजी तो परम दयाल हैं । सो वा समै कृष्ण भट की बिनती मानी । सो सगरे वैष्णवन (कों) अलौकिक सुख दियो । ऐसें प्रभु भक्तवत्सल हैं । और जो लरिका मुख्य स्वरूप बन्यो हतो ताकों तीन दिन तांई अपने स्वरूप की खबरि रही नाहीं । पाछें वह लरिका चौथे दिन सावधान भयो । पाछें दूसरे वर्ष फेरि वेही रासधारी आए । तब कृष्ण भट सों उन वैष्णवन ने कह्यो, जो वे रासधारी आए हैं । तातें तुम रास करवाओ तो आछी है । तब कृष्ण भट ने नाहीं करी । पाछें उन वैष्णवन मिलि कै रास करायो । परि वह सुख, सो न भयो । तब सब वैष्णव अपने मन में जानें, जो–यह कृष्ण भट बिना सोभा की रास और कौन

दिखाइवे योग्य हैं ? यह निर्धार उन वैष्णवन अपने मन में कर्‌यो। सो वे कृष्ण भट ऐसें भगवदीय हते।

वार्ता प्रसंग – ९

और एक समै वसंत–पंचमी के दिन थौरी सी चतुर्थी हती। सो कृष्ण भट ने जानी नाहीं। सो उज्जैनी में वा दिन इन कृष्ण भट ने अपने घर श्रीठाकुरजी कों वसंत–पंचमी कौ मंडान कर्‌यो। सो वा समै राजभोग सराइ अपने श्रीठाकुरजी कों कृष्ण भट वसंत खिलावत हते। तब श्रीनाथजीद्वार में श्रीगोवर्द्धन पर्वत उपर वा समै श्रीनाथजी कौ राजभोग सराइ कै श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी कों बीरा आरोगावत हते। तब तहां श्रीनाथजी ने रामदासजी भीतरिया कों वसंत खेल के दरसन दिए। तब रामदासजी भीतरिया ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! आज श्रीनाथजी वसंत कौन के घर खेले हैं ? तब श्रीगुसांईजी ने रामदासजी भीतरिया सों कही, जो–आज वसंत श्रीनाथजी उज्जैनी में कृष्ण भट के घर खेले हैं। ता पाछें केतेक दिन कों कृष्ण भट उज्जैनि तें श्रीगोकुल आइ श्रीगुसांईजी के दरसन करि दंडवत् करि आगें बैठे। श्रीगुसांईजी कृष्ण भट सों पूछे,–जो कृष्ण भट अब तुम वसंत–पंचमी कौनसे वार करी हती ? तब कृष्ण भट ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! अमूके वार के दिन वसंत–पंचमी करी हती। तब श्रीगुसांईजी ने कृष्ण भट सों कही, जो–वा दिन तो उदियात् थौरी चतुर्थी हती। ता दिन तुम अपने घर वसंत श्रीठाकुरजी कों खिलाए। सो तुम्हारे घर श्रीनाथजी पधारि कै वसंत खेले। सो

ह्यां राजभोग सरावत में मोकों श्रीनाथजी जनाए और रामदास भीतरिया कों दरसन दीने। तब रामदासजी आगें तुम्हारो नाम बताए। सो समाचार आज मिलै। तासों तुम तिथि बिचारि कै उत्सव कर्‌यो करो।

भावप्रकाश – क्यों ? जो–श्रीआचार्यजी ने सेवा में साम्रन की मर्यादा हू राखी है। सो श्रीप्रभुन के उच्छव आदि आछै सुद्ध दिन घरी नक्षत्र देखि कै करने। काहेतें, जो–श्री गोवर्द्धननाथजी आपु उत्तम वस्तू के भोक्ता हैं।

और वसंत खेल में श्रीप्रभुन सों रह्यो जात नाहीं। तातें श्रीआचार्यजी कौ संबंध है तहां दोरि कै जात हैं। सो श्रीगुसांईजी यह दिखाए, जो–वा दिन श्रीनाथजी कों उज्जैनि पर्यंत पधारनो पर्‌यो। तासों प्रभुन कों श्रम भयो।

और यहू जताए, जो–स्नेह सहित जो सेवा करत हैं, ताकि सेवा निश्चय करि कै श्रीनाथजी आप अंगीकार करत हैं।

तब कृष्ण भट ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो–महाराज ! अब के तो मैं बिना जाने कियो। अब या प्रकार न करूंगो। तासों अब तें तिथि बिचारि कै कर्‌यो करूंगो। ता पाछें श्रीगुसांईजी प्रति वर्ष तिथि–पत्र में सों उत्सव लिखि कै कृष्ण भट के घर पठावते। ता प्रमान कृष्णभट अपने घर उज्जैनि में उत्सव करते।

पाछें केतेक दिन कृष्ण भट श्रीगुसांईजी पास रहि कै ता पाछें श्रीगुसांईजी सो बिदा होइ कै अपने घर उज्जैनि कें आए। उन कृष्ण भट उपर श्रीगुसांईजी या प्रकार कृपा करते। सो या प्रकार श्रीगुसांईजी समझाइ कै कृष्णभट कों उपदेस करते।

सो कृष्ण भट जहांलों

। सो

'वादके' तलाव उपर जाइ कै देह कृत्य करि राजभोग समै श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुल में आवते । या प्रकार कृष्ण भट श्रीगुसांइजी के दरसन कों श्रीगोकुल में आवते । या प्रकार कृष्ण भट श्रीगुसांईजी के दरसन कों श्रीगोकुल में रहते तहांलों ऐसें नित्य करते ।

वार्ता प्रसंग–१०

और एक समै कृष्ण भट और निहालचंदभाई दोऊ जन उज्जैनि सों श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी के दरसन को आए । सो श्रीगुसांईजी के दरसन करि बोहोत प्रसन्न भए । पाछें एक दिन कृष्ण भट और निहालचंदभाई दोऊ जन श्रीगोकुल तें महावन की ओर जात हते । सो एक गुफा एकांत सी इन दोउन की दृष्टि परी । ता ठौर ए दोऊ जन जाइ बैठें । सो स्थल आछौ देखि उहां भगवद् वार्ता करन लागे । सो तीन दिवस होइ गए । वार्ता के रस में कछू देहानुसंधान रह्यो नाहीं । तब चौथे दिन राजभोग आर्ति करि श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में बिराजे । तब सगरे वैष्णव प्रभुन आगें दंडवत् करन आए । तब उन वैष्णवन सों श्रीगुसांईजी पूछे,–जो आज तीन दिन तें कृष्ण भट और निहालचंदभाई हू दोऊ जन दीसत नाहीं । तब उन वैष्णवन श्रीगुसांईजी सो बिनती करी, जो–महाराज ! हम हूं को आज तीन दिन तें ए दोऊ जर्न दीसत नाहीं । तब श्रीगुसांईजी उन वैष्णवन सों कहे, जो–तुम महावन की ओर एक टीला पर चढि कै देखो । सो वे कहूँ तिहारी दृष्टि परे तो उन को इहां लिवाइ ल्याओ । सो वे वैष्णव श्रीगुसांईजी की आज्ञा तें महावन

की ओर उन कों देखिवें कों निकसे। सो एका टीला पर चढि कै देखे तो एक गुफा है। ताके आगें दोऊ जन बैंठे हैं। तब ए वैष्णव इन दोउन पास जाइ कहें, जो–तुम कों श्रीगुसांइजी बुलावत हैं । आज चौथे दिन तुम्हारी दोउन की सुरत प्रभुन करी। सो उन वैष्णवन के बचन सुनत ही कृष्ण भट और निहालचंदभाई दोऊ जन ताही समै श्रीगुसांईजी पास उन वैष्णवन साथ आइ प्रभुन कों दंडवत् करे। ता समै श्रीगुसांईज़ी भोजन करि बीड़ा आरोगत हते। इतनेइ ये आइ दोऊ जन प्रभुन कों दंडवत् करे। तब श्रीगुसांईजी इन सों पूछे, जो–तुम आए ? तब इन प्रभुन सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! आप सुरत करें तब हम क्यों न आवे ? पाछें ए दोऊ जन श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि अपुने डेरा आए। सो इन कौ भाव श्रीगुसांईजी जानि इन सों कछू पूछे नाहीं । सो श्रीगुसांईजी तो प्रभु हैं,अंतर्यामी हैं। तातें ढूंढिवे कों उन वैष्णवन कों महावन की ओर पठाए। पाछें वे निहालचंदभाई और कृष्ण भट श्रीगुसांइजी पास तें बिदा होइ कै उज्जैनि कों आए। वे दोऊ प्रभुन के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता प्रसंग – ११

और श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल में श्रीसुबोधिनी जी की कथा कहते। सो सर्व वैष्णव श्रीमुख की कथा सुनते। तामें दोइ वैष्णव हते। सो उन वैष्णवन कों एक दिन संदेह उपज्यो। तब उन वैष्णवन नें श्रीगुसांईजी सों पूछ्यो, जो–महाराज ! हम आप के श्रीमुख तें कथा सुनी। परि कछु समझ परी नाहीं। सो कहा

कारन हैं ? जो–हमारो संदेह निवृत्त होइ ? या ठौर यह कैसें है ? तब उन वैष्णवन सो श्रीगुसांईजी ने कह्यो, समझायो, उत्तर हू कर्‌यो। परि तोहू उन वैष्णवन कौ संदेह निवृत्त न भयो। तब उन वैष्णवन कों श्रीगुसांईजी आज्ञा करे, जो–तुम कृष्ण भट पास दोऊ जन जाऊ। वे तिहारो संदेह निवृत्त करेंगे। तब दोऊ वैष्णव श्रीगुसांईजी की आज्ञा माँगि कै कृष्ण भट पास उज्जैनि कों चले। सौ जाइ पहोंचे। सो जा समै ये दोऊ वैष्णव कृष्ण भट के घर गए ता समै कृष्ण भट अपने श्रीठाकुरजी कों राजभोग धरि तिवारी में बैठे पाठ करत हते। तहांसों कृष्ण भट उठि कै भेटे। और कृष्णभट इन दोऊ वैष्णवन कों प्रभुन के पठाए जानि कै अपने मन में बोहोत प्रसन्न भए। पाछें इन सों कृष्ण भट श्रीकृष्ण–स्मरन करि कै इन कों बैठारे। तब कृष्ण भट ने अकस्मात् एक श्लोक श्रीभागवत कौ कह्यो। सो ता श्लोक कौ व्याख्यान आपही तें उन दोऊ वैष्णवन कों देखि कै कह्यो। ताकौ भाव कह्यो। सो सुनत ही उन वैष्णवन कौ संदेह निवृत्त भयो।

भावप्रकाश – या वार्ता में यह संदेह है, जो–श्रीगुसांईजी के समझाए तें उन वैष्णवन कौ संदेह न गयो। और कृष्ण भट के कहेतें संदेह निवृत्त भयो, ताकौ कारन कहा ? तहां कहत हें, जो–वह कथा श्रीभागवत दसमस्कंध 'वेणुगीत' के प्रसंग की ही। ताकौ श्लोक –

'बर्हापीडं नटवरवपुः कर्णयोः कर्णिकारं।

बिभ्रद्वासः कनककपिशं वैजयन्तिं च मालाम्॥'

सो या श्लोक कौ श्रीगुसांईजी आप व्यारव्यान किये। सो भगवत्स्वरूप परक किये। परि उन वैष्णवन की तो श्रीगुसांईजी के स्वरूप में आसक्ति है। तातें संतोष नाहीं भयो। सो संदेह रह्यो। तब श्रीगुसांईजी उन वैष्णवन कों कृष्ण भट पास भेजें। सो कृष्ण भट अकस्मात् या श्लोक कों श्रीगुसांईजी परक किये। सो कैसें ? जो – या श्लोक में उदभुद्ध सिंगार कौ

वरनन है। सो उद्दीपन रूप है। सो कृष्ण भट ने उद्दीपन भाव सों श्रीगुसांईजी के स्वरूप कौ नीकी भांति वरनन कियो। सो कृष्ण भट के हृदय में श्रीगुसांईजी आप विराजत हैं। तातें इन द्वारा श्रीगुसांईजी आप उन वैष्णवन कों अपनो अलौकिक स्वरूप जतायो। तब उन वैष्णवन कौ संदेह निवृत्त भयो।

तब दोऊ वैष्णव सुनि कै अपने मन में बोहोत प्रसन्न भए। पाछें कृष्ण भट भोग सरावन मंदिर में गए। सो भोग सराइ बीरा आरोगाई किवाड़ खोले। तब वे वैष्णव दरसन करि बोहोत प्रसन्न भए। पाछें कृष्ण भट आर्ति करि श्रीठाकुरजी कों अनोसर कराइ कै इन वैष्णवन को प्रसाद लिवाए। तब दोऊ वैष्णव कृष्ण भट सों बिनती करे, जो–कृष्ण भटजी ! हम तो श्रीगोकुल कों जांइगे। तब उन वैष्णवन सों कृष्ण भट ने कह्यो, जो–वैष्णव तुम आज ही आए और आज ही चलिवे कौ बिचार करत हो ? तब उन वैष्णवन कृष्ण भट सों कही, जो–हम जा कारन आए हते सो कारन तो हमारो पूरन भयो। तब कृष्ण भट ने उन वैष्णवन सों कह्यो, जो–वह बात तुम हम सों कहो। तब उन वैष्णवन कृष्ण भट आगें सर्व अपने समाचार विस्तार पूर्वक सों कहे। पाछें कृष्ण भट उन सों बिनती करि दिन चारि उन वैष्णवन कों अपने पास राखे। सो उन वैष्णवन सों मिलि कै कृष्ण भट वार्ता प्रसंग करते। तब वे वैष्णव बोहोत प्रसन्न अपने मन में होते। पाछें वे वैष्णव कृष्ण भट सों बिदा माँगि कै श्रीगोकुल आइ कछू दिन में श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करे। तब श्रीगुसांईजी उन पर प्रसन्न होइ कै यह बचन श्रीमुख तें प्रभु वा समै कहे, जो–तुम्हारो संदेह निवृत्त भयो ? पाछें वे दोऊ वैष्णवन ने साष्टांग दंडवत् करि कै कह्यो, जो–महाराज !

आपकी कृपा तें निवृत्त भयो। पाछें दोऊ वैष्णव एकाग्र मन सों श्रीगुसांईजी की कथा सुनिवे आवते। ता पाछें अपने कोटड़ी में दोऊ जनें आई आपुस में वरनन वा कथा कौ करते।

सो वे कृष्ण भट श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता प्रसंग–१२

और एक समै परदेसी वैष्णव दसबीस मिलि कै कृष्ण भट के घर आए हते। तहां परदेस में उन वैष्णवन सुनी हती, जो–कृष्ण भट के घर श्रीठाकुरजी माँगि माँगि कै आरोगत हैं। तातें वे सब वैष्णव मिलि के कृष्ण भट के घर उज्जैनि में आए। तब सब वैष्णव कृष्ण भट सों श्रीकृष्णस्मरन करि कै बैठे। सो इतनेइ में श्रीठाकुरजी कौ राजभोग सर्यो। तब उन सब वैष्णवन श्रीठाकुरजी के दरसन किये। ता पाछें कृष्णभट श्रीठाकुरजी की राजभोग आर्ति करि कै आपु बाहिर आए। तब कृष्णभट ने उन सब वैष्णवन सों कह्यो, जो–तुम सब उठो, महाप्रसाद लेऊ। तब सब वैष्णव उठि कै स्नान किये। पाछें वे सब वैष्णव स्नान करि कै प्रसाद लैन कों बैठे। ता समै कोऊ वैष्णव तो कछू माँगे और कोऊ वैष्णव कहे, जो–अमूकी वस्तु तो बोहोत आछी भई है। और प्रसाद लैत ही जांई।

और वैष्णवन यह बात परदेस में सुनी हती, जो–कृष्ण भट के इहां श्रीठाकुरजी माँगि माँगि कै आरोगत हैं। सो एक वैष्णव ने कृष्ण भट सों पूछी, जो–हमने सुनी हैं, जो–तिहारे इहां श्रीठाकुरजी माँगि माँगि कै आरोगत हैं। तब कृष्ण भट ने कह्यो, जो–ये सब वैष्णव माँगि माँगि कै लेत हैं सो कहा तुम देखत

नाहीं ? इन वैष्णवन के हृदय में श्रीठाकुरजी आपु बैठे हैं। सो वे ही माँगि माँगि के लैत हैं। तातें या प्रकार सों श्रीठाकुरजी को माँगनो जाननो।

भावप्रकाश– सो जाकौ अंतःकरन कोमल होईगो, और सुद्ध होईगो, अरु जाकों श्रीपूरनपुरुषोत्तम की कृपा होइगी, सोई यह बात जानेगो। तातें यह भाव, बिना कृपा जान्यो न जांई। यह तो महा कठिन बात है। और कृष्ण भट के सेव्य श्रीठाकुरजी हैं। सो तो इन कृष्ण भट सों माँगि माँगि कै लैत हैं। अरु बातैं करत है। सो तो कृष्ण भट जाने, और जा उपर श्रीगुसांईजी की कृपा होइगी सोई जानेगो।

सो कृष्ण भट श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता प्रसंग–१३

बहौरि एक समै चाचा हरिवंसजी और कृष्ण भट रात्रि कों एकांत में बैठि कै भगवद् वार्ता करत हते। ता समै कृष्ण भट ने चाचा हरिवंसजी सों कही, जो–कहूं सोंधा की सुवास आवत है। तब चाचा हरिवंसजी ने कही, जो–यहां कहूं वह छेल चिकनिया आयो होइगो। यह सुगंध तो उन ही की है।

भावप्रकाश–सो या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो–वैष्णव (जब) जहां एकांत में बैठि कै भगवद् वार्ता करत हैं, तहां श्रीनाथजी आप निश्चय पधारत हैं। क्यों ? जो–श्रीगोवर्द्धननाथजी आप वैष्णवन की वार्ता सुनिवे कै बड़े व्यसनी हैं।

वार्ता प्रसंग–१४

बहौरि एक समै श्रीगुसांईजी उज्जैनि पधारे। सो उज्जैनि में कृष्ण भट के घर पधारे। सो ता समै कृष्ण भट के घर दस पंद्रह ब्राह्मन जुरि कै आए हते। सो वे वेदोक्त कर्म करत हते। सो उन ब्राह्मनन श्रीगुसांईजी सों पूछ्यो, जो–महाराज ! कृष्ण भट वेदोक्त कर्म नाहीं करत हैं, और हम ब्राह्मन होई कै इन के पात्र छूवैं तब वे पात्र काढ़ि डारत हैं। और महाराज ! ये हू गृहस्थ हैं

और हम हू गृहस्थ हैं। जैसें हमार संतति, संसार व्यवहार सब होत हैं, सो ऐसें इनके हू सब होत हैं। सो महाराज ! कृष्ण भट भेले क्यों नाहीं भए ? सो याही भांति सों उन ब्राह्मनन श्रीगुसांईजी सों पूछे। तब श्रीगुसांईजी उन ब्राह्मनन कों इतनो उत्तर दियो, जो–श्रीठाकुरजी की सेवा करत इन ब्राह्मनन कौ वेदोक्त कर्म रहि जात हैं सो उन के पलटे तिन के ऋषिश्वर जो हैं, वे कर्म करत हैं। तहां एसो बचन है–

"तस्य कर्मये कूर्वन्ति तस्य कोटि महेश्वराः।"

यह वाक्य तें (जो) वैष्णव–ब्राह्मन भगवद् सेवा करत है, तिन के सर्व कर्म ऋषिश्वर करत हैं। और हम कर्म करत हैं, सो कौन के लिये करत हैं ? तहां दृष्टांत–

जो कोई कौ लरिका है। और वाकों यज्ञोपवित दियो है। अरु वाकों संध्या सिखाई है। ता पाछें वाकों संध्या के समै संध्या कराए। तहां लिखे हैं, जो–यह लरिका सात दिन ताँई संध्यावंदन नाहीं करे तो वाकों सूद्रवत् जाननो। तहां ऋषिश्वरन कौ वाक्य (यहू) है, जो–यह लरिका सूद्र नहीं होंइ। क्यों, जो–यह लरिका कौ यज्ञोपवित दीनो है। ताकौ देवेवारो तो संध्यावंदन करत है। तातें वह लरिका सूद्रवत् नाहीं होंइ।

भावप्रकाश–याकौ आसय यह है, जो–श्रीगुसांईजी जितने वेदोक्त कर्म करत हैं वे सब अपने सेवकन के लिये ही करत हैं। क्यों, जो वैष्णव सेवा में रात्रि दिन तत्पर रहत हैं। तातें उन तें वेदोक्त कर्म नाहीं बनि आवे हैं। सो उनके (लिये) श्रीगुसांईजी आपु करत हैं। सो श्रीगुसांईजी सर्वोत्तम में श्रीआचार्यजी कौ नाम कहे हैं, जो–"स्वदासार्थकृताशेषसाधनः"। सो यह भाव जाननो। तातें ब्राह्मन–वैष्णव कों भगवत्सेवा के समै वेदोक्त कर्म न बनि परें तो कछू बाधक नाहीं है। तातें भगवत्सेवा सर्वोपरि है। वासों अवकास मिले तब वेदोक्त कर्म करने। यह मार्ग की रीति है।

और उन ब्राह्मनन कों उत्तर दीनो, जो "भोर भए जानिए" सो ता समै श्रीगुसांईजी इतनो ही कहे। तब उन ब्राह्मनन अपने मन में बिचार कियो, जो–भोर भए जानिए सो कहा ? पाछें कृष्ण भट ने श्रीगुसांईजी सों पूछ्यो, जो–महाराज ! भोर भए जानिए सो कहा ? तब श्रीगुसांईजीने कृष्ण भट सों कह्यो, जो–एक बडो घर है, और रात्रि अँधियारी है। सो ता घर में केतेक मनुष्यन कों दीसत है। और केतेक मनुष्य तो रात्रि के अंध हैं। सो जब सूर्य उदय होइगो तब देखेंगे। सो तैसे ही यह संसार है। तातें याकों तो भगवदीय होइगो सो देखेगो। और जाके भगवद् संबंध है सो तो संसार छोरि कै जाइगो। और जाके भगवद् संबध नाहीं है सो तो संसार में रहेगो। सो इतनो कहि कै श्रीगुसांईजी आपु पोढ़ें।

भावप्रकाश–यामें यह जतायो, जो–जाकों ज्ञान नाहीं सो तो अंध है। उन कों निकट की वस्तू हू दीसत नाहीं। और जो ज्ञानी है उन कों सब ज्ञान है। वे सास्त्रन के भीतर हू के भेदकों समुझत हैं। सो "भोर भए जानिए" ताकौ अर्थ यह, जो–ज्ञान व्हे तब हृदय में प्रकास होंइ। जब सब बात आप ही तें स्फुर्द होइगी। तातें भगवत्सेवा ऐसो पदार्थ है। जिनके आगे लौकिक वैदिक सब तुच्छ हैं। सो भगवत्सेवा कौ ऐसो माहात्म्य श्रीगुसांईजी आप कृष्ण भट कों समुझाए।

वार्ता प्रसंग–१५

और जब कृष्ण भट और चाचा हरिवंसजी मिलते तब भगवद् वार्ता कौ प्रसंग करते। सो प्रसंग में दीन दोइ तीन बीति जाते। परि वे जानत नाहीं। और उन दोऊ जनेंन कों देहानुसंधान कछू न रहतो। तब ता समै कृष्ण भट की स्री श्रीठाकुरजी की सेवा संबंधी कार्य करती। और जब कोऊ वैष्णव ऊहां आवतो,

तब वेई वैष्णव कृष्ण भट तथा चाचा हरिवंसजी कों सावधान करते। तब दोऊ जनें सावधान होइ कै भगवद् वार्ता के आवेस में तें उठते।

भावप्रकाश–यामें यह जतायो, जो भगवद् वार्ता ऐसो पदार्थ है। जातें देहाध्यास हू छूटि जात है। तातें भगवद् वार्ता भगवदीय के साथ मिलि कै नित्य करनी।

सो या भांति सों उन दोऊ जनैन के उपर श्रीगुसांईजी आप बोहोत ही प्रसन्न रहते। तातें वे कृष्ण भट श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे।

वार्ता प्रसंग–१६

और एक समै उज्जैनि में कृष्ण भट के सरीर कों कष्ट बोहोत भयो। तब तहां वैष्णव दोइ चारि कृष्ण भट के देखिवे कों आए। तिन वैष्णवन सों कृष्ण भट ने कह्यो, जो–भाई ! तुम मोकों श्रीगोकुल लै चलो। मैं श्रीगुसांईजी के बालकन के तथा श्रीनाथजी के दरसन करूंगो। तब मेरो मन प्रसन्न होइगो। तब कृष्ण भट के बेटा गोकुल भट एक डोली करि ल्याये। तामें कृष्ण भट कों बैठारि श्रीगोकुल कों चले। सो उज्जैनि तें मजलि चार कृष्ण भट कों ले आए। तहां एक 'लहरज' गाम हतो। तहां कृष्ण भट की देह छुटी। तब कृष्ण भट तो लीला में प्राप्त भए। सो गोकुल भट अपने मन में बोहोत खेद करन लागे। और अपने मन में कहे, जो–कृष्ण भट सारिखे वैष्णव कौ यों क्यों होई ? जो–ये श्रीगोकुल पहोंचते तो आछौ हतो। नाँतर अपने श्रीठाकुरजी के सन्निधान ही रहते। या प्रकार गोकुल भट पश्चाताप करन लागे।

सो दुःख बोहोत ही भयो। पाछें गोकुल भट कृष्ण भट कौ संस्कार करि कै तहां सो अपने घर उज्जैनि कों फिरि चले, सो घर आए। पाछें इन की क्रिया सब गोकुल भट ने आछी भांति करी।

भावप्रकाश–और जा दिन कृष्ण भट की देह छुटी ता दिन श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ सिंगार श्रीगोकुलनाथजी करत हते। सो ताही समै कृष्ण भट की देह छुटी। सो सिंगार करत समै ही कृष्ण भट दरसन कों आए। सो कृष्ण भट श्रीनाथजी कों दंडवत् करी। तब श्रीगोकुलनाथजी ने कृष्ण भट सों पूछी, जो–कृष्ण भट तुम कब आए? तब कृष्ण भट ने श्रीगोकुलनाथजी कों दंडवत् करि बिनती कीनी, जो–महाराज! हों अब ही आयो हूं। तब श्रीगोकुलनाथजी श्रीनाथजी कों सिंगार करि आरसी दिखाई। पाछें गोपीवल्लभ भोग धरि कै रसोई की दिस बाहिर आए। तब रामदासजी भीतरिया सों श्रीगोकुलनाथजी पूछे, जो–रामदासजी! कृष्णभट आए हैं सो कहां है? तब रामदासजी ने श्रीगोकुलनाथजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज! कृष्णभट कों श्रीनाथजी के मंदिर में जात तो देखे, परि मंदिर के बाहिर निकसत तो उन कों न देखे। तब श्रीनाथजी के मंदिर सों पहोंचि कै आपु श्रीगोकुलनाथजी भोजन करि उज्जैनि कों गोकुल भट्ट के नाम कौ पत्र लिखि कै अपनो घरू एक ब्रजवासी पठायो। ता पत्र में श्रीगोकुलनाथजी ने यह लिख्यो, जो अमूक दिन कृष्ण भट या समै श्रीनाथजी के मंदिर में आए हे। सो मंदिर में जात तो देखे और फेरि देखे नाहीं। सो कहा समाचार है? सो वह पत्र लैकै ब्रजवासी उज्जैनि में जाइ पहोंच्यो। तब ब्रजवासी ने वह पत्र गोकुल भट के घर जाइ गोकुल भट के हाथ में दियो। सो पत्र गोकुल भट माथे चढाइ दंडवत् करि कै बांचे। तब गोकुल भट अपने मन में बोहोत प्रसन्न भए। और वह संदेह गोकुल भट कौ निवृत्त भयो। पाछें वा ब्रजवासी कौ गोकुल भट ने बोहोत सन्मान कर्यो। ता पाछें गोकुल भट श्रीगोकुलनाथजी कों वा पत्र कौ प्रतिउत्तर लिख्यो। ता पत्र में गोकुल भट ने बोहोत बिनती लिखि पठाई। और कछूक भेंट पठाई।

और जा दिन गोकुल भट ने यह पत्र प्रभुन कौ बांच्यो। ता दिन बड़ो उत्सव गोकुल भट ने अपने घर कर्यो। और बोहोत वैष्णव वा दिन प्रसाद लेवे कों अपने घर बुलाए। उन वैष्णवन (हू) बोहोत उत्सव कर्यो। पाछें सगरे वैष्णवन भेंट करी। तब गोकुल भट हू भेंट करि कै सब भेंट की हुंडी कराइ कै वा ब्रजवासी कों दै कै वा ब्रजवासी हू कौ गोकुल भट ने आछी भांति समाधान कियो। सो कछूक दिन में वा ब्रजवासी ने श्रीगोकुल में आई श्रीगोकुलनाथजी कों वह पत्र दियो। सो पत्र बांचि कै श्रीगोकुलनाथजी बोहोत प्रसन्न भए। पाछें फिरि वा पत्र

कौ प्रतिउत्तर श्रीगोकुलनाथजी ने गोकुल भट, गोविंदभट के नाम कौ लिखि पठायो।

सो कृष्ण भट के दोइ बेटा गोकुल भट, गोविंद भट हे। सो बडे भगवदीय हे। सो गोकुल भट अहर्निस श्रीसुबोधिनी देखते। और गोविंद भट श्रीआचार्यजी कृत कारिका श्रीसुबोधिनी (की) अहर्निस देखते। और कृष्ण भट की स्त्री भट्यानी रसोई कर्यो करती। सो श्रीठाकुरजी की सेवा में अहर्निस मगन रहती। सो वह ऐसी भगवदीय हती, जो–श्रीठाकुरजी वासों बोहोत सानुभावता जतावते।

भावप्रकाश–काहेतें ? ये भट्यानी लीला में 'महीनंद' हैं, तिनकी स्त्री हैं। 'वसुधा' इनकौ नाम है। सो इन कौ श्रीठाकुरजी में बालभाव है। तातें यहां हू बालभाव सों श्रीठाकुरजी की सेवा करति हैं।

सो जैसें लौकिक लरिका खांइ खेलें और भुख लगे तब रोटी माँगे, और प्यास लगे तब पानी माँगे, तैसें ही श्रीठाकुरजी इन तें माँगते। ऐसी कृपा श्रीठाकुरजी भट्यानी उपर करते।

और जा भांति श्रीआचार्यजी महाप्रभु पद्मारावल के उपर कृपा करते, ऐसी कृपा अब श्रीगुसांईजी कृष्ण भट उपर करे। सो वे कृष्ण भट श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता अनिर्वचनीय है। सो कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥ २ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक चाचा हरिवंसजी क्षत्री पूरव के, पटना के पास कोस दोइ पर एक गाम है, तहां रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत है।

भावप्रकाश–ये चाचा हरिवंसजी राजस भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'चंद्रकला' है। सो चंद्रकला ललिताजी तें प्रगटी हैं तातें इन के भाव रूप हैं। इन पर श्रीचंद्रावलीजी की बोहोत प्रीति हैं। काहेंतें ? ये अंतरंग सखी हैं, दूति कार्य में बोहोत प्रवीन हैं। चंद्र की कला जैसो इनकौ प्रकास है। तातें इनको देखिकै सब भक्त अरु ठाकुर आप हू मोहित होत हैं। सो

चंद्रकला श्रीठाकुरजी अरु भक्तन कौ मिलाप करावति हैं, रति कौ हू बढावति हैं। सो ये रतिपथ कौ विस्तार करनहारी हैं। तातें यहां हू चाचा हरिवंसजी द्वारा मार्ग कौ विस्तार भयो है। सो क्यों जानिए ? जो– चाचा हरिवंसजी की बिनती सों श्रीगुसांईजी आप 'शृंगाररसमंडन' आदि मार्ग के प्रकास के ग्रंथ किये। और चाचा हरिवंसजी की आचार–क्रिया देखि कै बोहोत से दैवी जीव मोहित व्है व्है सरनि आए। सो इन कौ ऐसो प्रभाव, जो–ये जा मार्ग व्है निकसते तहां के अनेक जीव सरनि आवते।

और श्रीगुसांईजीने चाचा हरिवंसजी कों नाम सुनाइवे की आज्ञा दीनी है। तातें इनने बोहोत वैष्णव किये हैं। सो या प्रकार इन द्वारा मार्ग कौ विस्तार भयो जानिए।

ये पूरब में पटना के पास कोस दोइ पर एक क्षत्री के घर जन्मे। सो वा क्षत्री के चारि बेटा हे। तामें चाचाजी सब तें छोटे हें। सो ये बरस पांच के भए तब इन के माता पिता मरे। सो ये बोहोत पढे नाहीं। इन कौ ब्याह हू भयो नाहीं। सो जनम ही सों बाल ब्रह्मचारी, गृहस्थाश्रम कछू जानत नाहीं। सो जहां कथा वार्ता होई तहां जाइ। ऐसें करत चाचा हरिवंसजी बड़े भए। तब अकेले तीरथ कों चले। सो कासीजी में आए। तहां बोहोत दिनलों साधु–सन्यासीन कौ संग कियो। परि चित्त में व्यग्रता रहे। कछू चैन परे नाहीं। रात्रि–दिन भगवान की प्राप्ति की चिंता लगी रहे।

ऐसें करत कछूक दिन में श्रीगुसांईजी कासीजी पधारे। तहां एक दिन श्रीगुसांईजी आप 'मनिकर्निका' घाट पर स्नान करन पधारे। ता समै तहां सन्यासीन तें सास्त्रार्थ भयो। सो बात आगें (?) कहि आए हैं। सो ता समै चाचाजी श्रीगुसांईजी के दरसन पाए। सो वा सास्त्रार्थ में सन्यासी निरुत्तर भए। सो देखी कै चाचाजी श्रीगुसांईजी के निकट आए। पाछें चाचाजी श्रीगुसांईजी कौ तेज–प्रताप देखि बिनती किये, जो–महाराज ! कृपा करि मोकों भक्तिमार्ग में अंगीकार करिए। हों बोहोत दिनलों भटक्यो। बोहोत साधु पुरुषन कौ संग हू कियो। परि चित्त में चैन अबलों नही पायो। आज आप के दरसन करत ही चित्त प्रसन्न होत है। आप के वचनामृत सुनि कै अलौकिक आनंद होत है। तातें आप अनुग्रह करि मोकों अंगीकार करिए। तब श्रीगुसांईजी चाचा हरिवंसजी कों आज्ञा किए, जो–चाचाजी ! हम तो तुम्हारे लिए ही यहां लों आए हैं। तुम काहू बात की चिंता मति करो। गंगाजी में स्नान करो। हम तुम कों जल ही में सरनि लेइंगे। पाछें चाचाजी कों गंगाजी में स्नान कराइ, श्रीगुसांईजी आप चाचाजी कों जल ही में नामनिवेदन कराए। तब चाचाजी कों श्रीगुसांईजी के स्वरूप कौ ज्ञान भयो। पाछें श्रीगुसांईजी उन कों अपने संग राखे। सो श्रीगुसांईजी की कृपा तें चाचाजी पुष्टिमार्ग के आचारक्रिया आदि सब सीखे। सो पुष्टिमार्ग कौ धर्म, सिद्धांत आदि सब हृदयारूढ भयो। सो ऐसी कृपा श्रीगुसांईजी आप चाचाजी उपर किये। पाछें श्रीगुसांईजी चाचाजी सों नित्य

एकांत में भगवद् वार्ता करते। सो श्रीगुसांईजी के अनुग्रह तें चाचाजी में भगवद् रस को आवेस निरंतर रहतो। तामें ये अहर्निस छके रहते। सो इन न्यारी श्रीठाकुरजी की सेवा पधराई नाहीं। सो श्रीगुसांईजी की आज्ञा सों परदेस जाते, श्रीनाथजी की भेंट लावते। ओर वैष्णवन कों मार्ग कौ स्वरूप, रहस्य आदि सब कहते।

और जैसें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने श्रीगोपीनाथजी श्रीगुसांईजी कों मार्ग की सिक्षा देवे कों अपनी पाछें दामोदरदास हरसानी कों राखे हे, ता प्रकार श्रीगुसांईजीने सात बालकन कों मार्ग कौ रहस्य समझाइवे के तांई चाचाजी कों भूतल पर राखे। सो चाचाजी श्रीगुसांईजी के तिरोधान पाछें बालकन तें कथा सुनिवे के मिष तें उन कों मार्ग की रहस्यवार्ता कहते। सो सातों बालक और श्रीगुसांईजी के सगरे परिवार के चाचाजी की बोहोत कानि राखते। सो चाचाजी बोहोत बरसलों भूतल उपर रहे।

वार्ता प्रसंग–१

सो वे चाचा हरिवंसजी बोहोत वृद्ध हते। तातें उनसों सब कोऊ चाचा कहते। सो एक समै चाचा हरिवंसजी कों श्रीगुसांईजी ने अड़ेल तें गुजरात कों पठाए। तब ता समै श्रीगुसांईजी अड़ेल में रहत हते, तहां तें पठाए। तब चाचा हरिवंसजी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज! मैं राज के चरन–कमल छोरि कै कहां जाऊं? मैं राज के बिना कहां रहूंगो? तब श्रीगुसांईजी ने चाचा हरिवंसजी सों कह्यो, जो–तुम गुजरात में राजनगर 'असारुवा' में नित्य भाइला कोठारि सों मिलत रहियो। मैं तुम कों ऊहां नित्य दरसन देऊंगो।

भावप्रकाश–काहेतें? जो–भाइला कोठारी की आसक्ति श्रीगुसांईजी में दृढ़ है। तातें उन के भाव तें श्रीगुसांइजी आप ऊहां नित्य बिराजत हैं। और दूसरो यहू अभिप्राय है, जो–चाचाजी के संग सों भाइला कोठारी के भाव कौ पोषन हू होइगो। तांतें श्रीगुसांईजी आप चाचाजी कों ऊहां पठाए।

तब चाचा हरिवंसजी श्रीगुसांईजी के बचन सुनि कै श्रीगुसांईजी सो बिदा होइ कै गुजरात कों चले। सो राजनगर

आए। सो माला प्रसाद चरनोदक सब वैष्णवन कों दिये। तहां तें 'असारुवा' में आए। सो भाइला कोठारी के घर उतरे। तहां के सब वैष्णव चाचाजी कों मिलिवे कों आए। सो चाचाजी कों देखि कै बोहोत प्रसन्न भए।

भावप्रकाश–काहेतें ? जो–चाचाजी में श्रीनाथजी श्रीगुसांईजी की अंगीकृति कौ संबंध दृढ़ हैं। तातें उन कों देखि कै वैष्णवन कों श्रीनाथजी श्रीगुसांईजी की सुधि आई। सो बोहोत प्रसन्न भए। तातें प्रीति कौ यही लक्षन है, जो–अपने सनेही कौ रंच हू संबंध दीसे तहां दौरि कै जांइ।

पाछें चाचा हरिवंसजी ने तहां के सगरे वैष्णवन कों प्रसाद दिये। कछूक दिन 'असारुवा' में चाचाजी रहे। सो भाइला कोठारी के घर नित्य श्रीगुसांईजी चाचा हरिवंसजी को दरसन देते। पाछें वा ठौर के सब वैष्णवन भेंट कौ द्रव्य भेलो करि चाचा हरिवंसजी कों सोंप्यो। तब भाइला कोठारी सों चाचाजी पूछे, जो–उत्तम वस्तू बरास, चोवा, अगर, आछी ये सामग्री कहां पाइए ? और तहां उत्तम वस्तू होंइ तो श्रीठाकुरजी के लिये लै जाइए। तब कोठारी ने चाचाजी सों कह्यो, बोहोत उत्तम और सब बस्तू तो खंभाइच में पाइए ! सो चाचाजी पास द्रव्य भेंट कौ हतो ताकी हुंडी कराइ चाचाजी खंभाइच कों चले। सो खंभाइच जाइ पहोंचे। सो खंभाइच तें थोरी सी दूरि 'नारायनसर' तलाव है। तहां चाचा हरिवंसजी आए। सो 'नारायनसर' तलाव पर उतरे। चारि वैष्णव चाचा हरिवंसजी के साथ हते। तहाँ रसोई करि भोग समर्पि कै महाप्रसाद लियो। रात्रि समै सोइ रहे। प्रातःकाल देह कृत्य, न्हाइ, तिलक करि नगर में आए। सो सब नगर में फिरे परि वैष्णव कोऊ चाचाजी कों न मिल्यो। सो वहां

के लोगन सों चाचाजी पूछन लागे, जो–यहां भलो मनुष्य इतबारी साँच बोलतो कौनसो है ? यह माधौदास सों चाचाजी पूछे। तब माधौदास दलाली करते। सो माधौदास ने चाचाजी सों कह्यो जो–जैसो तुम पूछत हो तैसो तो एक बजाज है। तातें तुम मेरे साथ आओ तो मैं तुमको वाकी हाट बताऊं। सो माधोदास चाचाजी कों सहजपाल दोसी की हाट पर लै गए। तहां चाचाजी आइ बैठे। सो चाचाजी कों जो–जो ऊंची वस्तू चहियत हती सो सब सहजपाल दोसी ने चाचाजी कों दिखाई। तामें जो–कछू चाचाजी कों रुची सो लीनी। पाछें चाचाजी सहजपाल दोसी कों हुंडी रुपैया चारि हजार की दीनी। और सहजपाल कों चाचाजी कहे, जो–तुम्हारी बस्तू के रुपैया होंइ सो लीजियो। और हमारो द्रव्य बढ़े सो हम कों फेरि दीजियो। ऐसें कहि कै चाचाजी वाकी हाट सों उठन लागे। तब सहजपाल दोसी ने बतासे इलाचीदाने चाचाजी के आगें राखे। तब चाचा हरिवंशजी ने सहजपाल दोसी सों कह्यो, जो–यह तो हमारे काम न आवे। तब सहजपाल दोसी ने चाचा हरिवंशजी सों कह्यो, जो–ये तुम्हारे साथ मनुष्य हैं तिनकों देऊ। तब फेरि चाचाजी सहजपाल सों कहे, जो–ये बस्तू हमारे कोई के काम न आवे। पाछें चाचाजी सहजपाल सों कहे, जो–तुम्हारे मनुष्य कों हू कछू देनो। सो यह हमारी ओर तें तुम अपने मनुष्यन कों बांटि देऊ। पाछें उन सों बिदा होइ कै 'नारायनसर' तलाब पर आए। तब चाचाजी के साथ माधौदास दलाल इन कौ ठिकानो देखन कों आए। सो मार्ग मध्य चाचाजी सों माधौदास ने पूछ्यो,

जो–तुम्हारो सम्प्रदाय कहा है ? तब चाचाजी ने माधौदास सों कह्यो, जो–हमारो सम्प्रदाय बल्लभी है। सो श्रीबल्लभाचार्यजी प्रगट भए तिन मायावाद खंडन कियो। भक्तिमार्ग दृढ़ स्थाप्यो। सोश्रीवल्लभीमार्ग प्रगट कियो। तिन श्रीआचार्यजी के पुत्र श्रीविट्ठलनाथजी हैं। सो अड़ेल मध्य बिराजत हैं। जिन विष्णुस्वामि–मार्ग दृढ़ करि वा मार्ग मध्य सेवा प्रकार उन कौ सार है, सो आपु लैकै वल्लभी मार्ग प्रकास्यो। सो हम श्रीविट्ठलनाथजी श्रीगुसांईजी के सेवक हैं। यह बात चाचाजी के मुख की सुनि कै माधौदास इनकौ डेरा देखि कै, आइ कै, माधौदास ने ये सब बात चाचाजी की सहजपाल दोसी आगें कही। तब यह बात माधौदास की सुनि कै सहजपाल दोसी विस्मित भए। पाछें सहजपाल दोसी, माधौदास दलाल, जीऊ पारिख ये तीनों जनें आपुस में मित्र हते। सो यह बात सहजपाल दोसी ने जीऊ पारिख सों कही। सो ये तीनों जनें एकत्र होइ कै तीसरे प्रहर चाचा हरिवंसजी के डेरा पर गए। ता समै चाचाजी और वे चारि वैष्णव प्रसाद लैकै कीर्तन करत हते। सो ये तीनों जनें आइ कै घरी दोइ बैठें। तब कीर्तन होइ चूके पाछें चाचाजी ने एक थेली महाप्रसाद की खोली। अपने संग वैष्णव हते तिनकों थोरो थोरो प्रसाद दियो। और तिनोंन कों हू थोरो थोरो प्रसाद दियो। पाछें और थोरो इन तीनोंन कों घर लै जाइवे कों प्रसाद दियो। सो इन तीनों जनेंन कौ प्रसाद लेत ही मन फिर्यो। जो–आपुन हू या मार्ग के वैष्णव हूजिये। इन कौ यह मार्ग सर्वोपर है। यह धर्म आगें सब धर्म तुच्छ हैं। ऐसी इन तीनोंन के

मन में आई। सो वे आपुस में बिचार करि रात्रि कों तो आप अपने घर आए। पाछें प्रातःकाल फेरि तीनों जन एकइ संग 'नारायनसर' तलाव पर आए। पाछें ये तीनों जन चाचा हरिवंसजी पास आइ कै बिनती करी, जो–चाचाजी! तुम हम कों नाम देऊ। हम हू कों वैष्णव करो। तब चाचाजी उन सों कहे, जो–हमारे धनी श्रीविट्ठलनाथजी अड़ेल में बिराजत हैं। तिन पास जाइ कै तुम नाम निवेदन करो। उन के पास जाइ कै तुम सेवक होऊ। तब फेरि उन तीनोंन ने चाचाजी सों बिनती करी, जो–अब तो तुम एक बेर हम कों नाम सुनाओ। पाछें हम श्रीगुसांईजी के दरसन कों अड़ेल जांइगे। यों बोहोत ही उनने चाचाजी सों बिनती करी। तब चाचाजी अति हठ जानि कै नाम तीनों जनेंन कों सुनाए। पाछें सहजपाल दोसी ने चाचाजी सों बिनती करी, जो–अब तुम कृपा करि कै हमारे घर पधारो। सो चाचाजी कों संग लै कै सहजपाल दोसी घर आए। तहां घर के सगरेन कों चाचाजी पास नाम दिवायो। पाछें सहजपाल दोसी ने चाचाजी सों भक्तिभाव (संपन्न) होंइ कै पूछ्यो जो–चाचाजी! अब कछू हमारी बस्तू श्रीगुसांईजी कों अंगीकार होइगी ? तब चाचाजी सहजपाल दोसी सों कहे, जो–अब तुम भगवद् भक्त भए। अब जो कछू तुम सामग्री बस्तू पठाओगे सो सब श्रीठाकुरजी श्रीगुसांईजी द्वारा अंगीकार करेंगे।

भावप्रकाश–काहेतें ? जो–आचार्यजी के मार्ग की यह रीति है जो–वैष्णव बिना काहू की बस्तू (सत्ता) श्रीठाकुरजी अंगीकार न करें। वैष्णव सनेह पूर्वक जो बस्तू देइ, वेइ श्रीठाकुरजी अंगीकार करत हैं।

तब सहजपाल दोसी अपने मन में बोहोत प्रसन्न होइ कै यथासक्ति भेट श्रीगुसांईजी कों पठाए। और वह सर्व सामग्री सहजपाल दोसी भेंट करे। हुंडी सब चाचाजी कों फेरि दीनी। पाछें जीऊ पारिखने चाचाजी कों अपने घर पधराए। तब उंचो मखमल और जरी ताफ़ता और भीमसेनी कपूर बड़ी बड़ी डेली और हू सामग्री बोहोत श्रीगुसांईजी कों भेंट जीऊ पारिख पठवाए। पाछें माधौदास दलाली करते सो अपनी यथासक्ति श्रीगुसांईजी कों भेंट पठवाए। पाछें चाचाजी कों सहजपाल दोसी ने थोरे से दिन अपने घर राखे। पाछें आचार्यजी के मार्गकी सर्व प्रनालिका चाचाजी सों पूछे। यह मार्ग की प्रनालिका चाचाजी सों तीनों जनेंन पूछि कै सब सीखी। पाछें चाचाजी उनसों बिदा होंई कै सर्व वस्तु लै कै राजनगर आए। पाछें राजनगर कौ सर्व काम करि कै तहां तें अड़ेल कों चले, सो आइ पहोंचे। तहां श्रीगुसांईजी के दरसन करी चाचाजी दंडवत् करि वह सर्व सामग्री श्रीगुसांईजी के आगें धरी। सो सर्व वस्तू देखि कै श्रीगुसांईजी चाचाजी के उपर बोहोत प्रसन्न भए। तब चाचाजी परदेस के सब समाचार श्रीगुसांईजी आगें कहे। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए।

पाछें चाचाजी खंभाइच सों चले तो पाछें थोरेसे दिनन में सहजपाल दोसी, जीऊ पारिख माधौदास दलाल ये तीनों जनें अपने देस तें कासीयात्रा कौ नाम करि कै घर की सृंखला तोरि कै श्रीगुसांईजी के चरनारविंद कौ ध्यान करि अड़ेल कों केवल दर्सनार्थ ही चले। सो थोरेसे दिनन में अड़ेल आइ पहुंचे। पाछें

ए तीनों जन श्रीगुसांईजी कौ दरसन चाचाजी सों मिलि कै करे। तब अपने मन में ये वैष्णव बोहोत ही प्रसन्न भए। पाछें तीनों जनेंन कौ नाम चाचाजी श्रीगुसांईजी आगें समझाई कै कहे। पाछें प्रभुन सों आज्ञा माँगि कै चाचाजी इन तीनों जनेंन कों श्रीगुसांईजी पास समर्पन करवायो। तब इन कौ मन समर्पन करत अत्यंत प्रसन्न भयो। पाछें इन तीनों जनेंन (ने) श्रीगुसांईजी सों या मार्ग कौ सिद्धांत सब पूछ्यो। सो श्रीगुसांईजी इन सों सब समझाइ कै आछी भांति कहे। सो सुनि कै बोहोत प्रसन्न भए। ऐसी कृपा श्रीगुसांइजी इन उपर करी। पाछें ए तीनों जन कछू दिन श्रीगुसांईजी पास रहे। तब माधौदास कछु कीर्तन नए आप करते। सो एक दिन माधौदास सों चाचाजी कहे, जो–माधौदास तुम कीर्तन करत हो, सो श्रीगुसांईजी कों सुनाओ। तो तुम्हारी बानी अचल होंइ। तब वाही समै माधौदास ने यह कीर्तन चाचाजी के आगें श्रीगुसांईजी कों सुनायो। ता पद की कारिका–

"धन्य कालिंदी धन्य वृंदाबन धन्य श्रीगोकुल बास।
माधौदास के धनी श्रीविट्ठल पूरी हमारी आस।"

यह पद सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न होइ कै श्रीमुख तें चाचाजी सों कहे, जो–चाचाजी ! हम कों श्रीगोकुल बास अवस्य करनो। यह बचन आप वा समै श्रीमुख सों कहे। पाछें ये वैष्णव थोरे दिन श्रीगुसांईजी पास रहि कै खंभाइच तीनों जनें आए।

भावप्रकाश–सो माधौदास लीला में 'चंद्रकला' की सखी हैं। 'कोकिलकंठी' इन कौ नाम

है। सो इन कौ कंठ कोकिला सारिखो है। तातें इन की बानी श्रीठाकुरजी कों बोहोत प्रिय है। और सहजपाल दोसी लीला में 'चंद्रभान' गोप हैं। और जीऊ परिख 'महीमान' हैं। तातें इन को श्रीचंद्रावलीजी पर वात्सल्य भाव है। सो यहां हू श्रीगुसांईजी में इन की एकसी प्रीति रही।

वार्ता प्रसंग–२

और एक समै श्रीगुसांईजी चाचाजी कों गुजरात पठाए। सो चाचा हरिवंसजी प्रभुन की आज्ञा पाइ कै गुजरात जात हते। तहां मार्ग मध्य एक ठौर चाचाजी भूले परे। सो महा अरन्य में चाचाजी जाइ परे। सो तीन दिनलों जंगल ही में रहे। पाछें चलत चलत चौथे दिन एक बगुला उड़त देख्यो। तब चाचाजी ने जान्यो, यहां कोऊ जल कौ स्थल है। यों बिचार करत जांई। सो थोरीसी दूरि पर देखे तौ एक गाम छोटो सो हतो, सो आयो। तहां एक कुआँ हतो। ता कुआँ उपर चाचाजी जांइ ठाढ़े रहे। सो एक स्त्री जल भरत हती। और चाचाजी के संग तीन वैष्णव और हते। सो इन चारों जनेंन कों कुआँ पर ठाढ़ै देखि कै वह स्त्री आप जल भरत तें लेज कुआँ पर छोरि कै आप दूरि न्यारी जांइ कै ठाढ़ी रही। तब वैष्णवन कसेंडी, डोरी, काढ़ि कै जल कुआँ में तें काढ़्यो। पाछें देह कृत्य करि दांतिन करि स्नान करि तिलक करि जप पाठ करि कै नित्य नेम सों पहोंचि कै चलन लागे। सो जब लगि इन ने अपनो नित्य नेम कियो तब लगि वह स्त्री कुआँ के पास ठाढ़ी रही। और कोई गाम के मनुष्य जल भरन को आवे तिन कों वह स्त्री दूरि ही तें पाछें फेरि देइ। पाछें चाचाजी वा ठौर तें चलन लागे। तब वह स्त्री चाचाजी कों दूरि तें पांवन परि बिनती करि, अपने घर इन चारों कों सेन दैकै पधराई लै गई। पांछें वाकी बात तो कछू समुझी परे नाहीं। सो वह सेनन में हाथ

सों बात समुझावें । पाछें अपने घर के पास गाइन कौ खरिक हतो । ता ठौर इन चार्यों जनेंन कों बैठारि कै आपु गाम में गई । तहांसों और एक स्त्री बोली में समुझत हती ताकों साथ लै कै बन में जांई आछें आछें फल एक टोकरा में भरि कै लाइ कै चाचाजी के आगें धरे । तब चाचाजी वा स्त्री सों कहे, जो– इन कौ तू मोल लेइ तो ये फल हमारे काम आवे । तब दुसरी स्त्री ने वासों हरिवंसजी के बचन समुझाइ कै कहे । वह तो कछू यह बोलि समुझत नाहीं हती । सो स्त्री के बचन सुनि कै वा स्त्री ने वा स्त्री सों कही, जो–हों तो मोल तो लेत नाहीं । और तू इन सों पूछि, जो–ये फल तुम्हारे काम क्यों न आवे ? सो मोसों तुम समुझाइ कै कहो । तब वा दुसरी स्त्री ने हरिवंसजी सों कही, जो – यह तो मोल तो लेत नाहीं । और तुम ये फल क्यों नाहीं लेत ? सो ताकौ हेतु आप मोसों कहो । तब वा स्त्री सों हरिवंसजी कहे, जो–यह मोल लेइ तो टोकरी के फल हमारे काम आवें । नाहीं तों हम वैष्णव बिना काहू की कछू बस्तू लेत नाहीं । तब वा स्त्री ने चाचाजी के वचन वासों सर्व समुझाइ कै कहे । तब स्त्री ने वा स्त्री सों अपनी भाषा में समुझाइ कै कही, जो–तू इन सों कहि, जो ये मोकों वैष्णव करे । पाछें ये इन फलन कों अंगीकार करे । तब वा दूसरी स्त्री ने वाके बचन सब हरिवंसजी सो समुझाइ कै कहे । पाछें वाकौ अति आग्रह जानि कै वा दूसरी स्त्री सों यह चाचा हरिवंसजी कहे, जो–तू यासों कहि, जो–वैष्णवन कों तो अभक्ष्य कछू न खानो । तब फेरि वासों हरिवंसजी के बचन वा दूसरी स्त्री ने कहे । तब फेरि वा स्त्री ने अपनी बोली में वा स्त्री

सों कही, जो–तू इन सों पूछि देखि, जो–वैष्णव भये पाछें कहा वस्तू खानी और कहा वस्तू न खानी ? तब वा स्त्री ने हरिवंसजी सों वाके बचन समुझाइ कै कहे, जो–यह खाइवे कौ प्रकार पूछति है। तब चाचाजी वासों कहे, जो अन्न वैष्णव कों खानो। और फल फलादिक खाने। सो अन्न में तो मसूर न खानी। और फलन में गाजर, मूरी, गूलर, और गंधमूल, (तरबूज) ये चारों बस्तू न खानी। सो ये बस्तू छोरे तो हम वैष्णव करें। और ये फल लेंई। नाँतर यासों हमारो कछू प्रयोजन नाहीं।

भावप्रकाश–यामें यह जतायो, जो–वैष्णव कों खाइवे पीवे कौ बोहोत बिचार राखनो। अवैष्णव की बस्तू सर्वथा ग्रहन न करनी। मोल दैकै लेनी। काहेतें ? जो–वा पर लौकिक जीवन की सत्ता है। सो अन्य संबंध रूप है। तातें वाकों ठाकुर पुष्टिमार्ग की रीति सों अंगीकार करत नाहीं। सो वाके लिये तें बुद्धि भ्रष्ट होंइ। बहिर्मुखता प्राप्त होंइ। यहां यह संदेह होंइ, जो–या स्त्री ने तो चाचाजी कों भक्तिभाव पूर्वक बन में तें फल तोरि कै दिये हैं। सो उन फलन पर तो काहू जीव की सत्ता है नाहीं। सो क्यों नाँय लिये ? तहां कहत हैं, जो–यह स्त्री अपनी साथ कि स्त्री कों बन में लै जाई कै उन फलन कों तोरि लाई। तब उन फलन पर याकी सत्ता भई। और जद्यपि या स्त्रीने वे फल चाचाजी कों भक्तिभाव पूर्वक समर्पे तोऊ याकों मार्ग की रीत तें भगवद् सबंध तो भयो है नाहीं। तातें याकी सत्ता के फल चाचाजी लिये नाहीं। काहेतें ? ये अन्य सबंध रूप है। तातें वैष्णव कों, श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी के मार्ग की रीति सों जाकों भगवद् सबंध न भयो होंई ताकी कोई वस्तु लेनी नाहीं।

और वैष्णव कों मसूर, गाजर, मूरी आदि कौ निषेध कियो है। सो यातें, जो–वे सब तामसी हैं। उनके लिये तें बुद्धि भ्रष्ट होंई, लीला प्राप्ति में अंतराय परे। काहेतें ? तामसी बस्तु प्रभु अंगीकार करत नाहीं। सो वाके लिये तें प्रतिबंध होइ। यह सिद्धांत जतायो।

तब वह दूसरी स्त्री सर्व हरिवंसजी के बचन वा स्त्री सों समुझाइ कै कहे। तब वह स्त्री अपने मन में हरिवंसजी के बचन सुनि कै बोहोत प्रसन्न भई। पाछें वाने दूसरी स्त्री सों कही, जो–इनने तो मोकों दुस्तर संसार तें छुड़ाई। तासों तू इन सों इन सों कहि, जो–तुम कही सो बोहोत उत्तम वार्ता है। यातें ये मो पर

कृपा करि कै मोकों बेगि वैष्णव करे। सो वाके बचन वा दूसरी स्त्री ने सब हरिवंसजी सों कहे। तब हरिवंसजी वाकी बोहोत आर्ति जानि कै वा दूसरी स्त्री सों कहे, जो–यह स्नान करि दूसरे नये कपड़ा पहरि कै काहू कों छूवे नाही। या प्रकार आवे तब हम याकों वैष्णव करें। पाछें हरिवंसजी के बचन वा बाई ने वासों समुझाइ कै कहे। तब वह बाई स्नान करि वाही प्रकार अपरस ही में हरिवंसजी पास आई। तब हरिवंसजी वाकों नाम सुनाइ। और वाकों समझाइ कै हरिवंसजी कहे, जो–यह नाम नित्य तू स्नान करि अपरस वस्त्र पहरि कै लीजियो। तब फेरि वानें हरिवंसजी सों बिनती करी, जो–अब आप इन फलन कों अंगीकार करो। तब हरिवंसजी जल मँगाइ कै फल सब धोइ, भोग धरि कै तीनों वैष्णव वह बाई सहित चौथे दिन फल लिये। पाछें फेरि वा बाई ने हरिवंसजी कों यह मार्ग की सब रीति पूछी, जो अब मैं कौन भांति रहूं ? तब हरिवंसजी वासों कहे, जो–तेरे घर में सब बासन है सो काढ़ि डारि। और नए बासन मँगाई। सो कोरे बासन न्यारे राखियो। पाछें घर में तें सर्व काढ़ि कै एक नयो बासन भरि कै वासों सब घर पोति सुद्ध करि कै नए बासन में जल भरियो। पाछें वा स्त्रीने घर की सब बस्तू अपनी बड़ी सोत के घर पठाइ दीनी। और चाँवर,सीधो,नए बासन में बूरा, तुअर आदि सर्व सामान घर में हतो सो हरिवंसजी कों सर्व वस्तू दिखाई। जो वस्तू हरिवंसजी ने कही, जो–यह काम आवें सो घर में राखी। और जाकों नाहीं हरिवंसजी करें सो वा सौत के घर पठाइ दीनी। पाछें वाने हरिवंसजी सों बिनती करी, जो–यामे तें

कछू तुम अंगीकार करोगे ? तब हरिवंसजी वासों कहें, जो–अब तेरो सब हमारे काम आवेगो।

भावप्रकाश–काहेतें ? जो–अब भगवत्संबंध भयो। तातें इन की सब बस्तू कों हू भगवत्संबंध भयो जानिए।

तब माल के चाँवर काढ़े, तूअर की दारि काढी। बाजरी कौ नयो चुन करवायो। कछू बन में तें साक बीनि कै मँगायो। सर्व सामग्री भेली करि कै हरिवंसजी सों कही, जो–अब तुम रसोई करो। तब हरिवंसजी ने रसोई करि कै श्रीनाथजी कों भोग धर्‌यो। पाछें समै भयो तब भोग सरायो। उन वैष्णवन की पातरि करी। पाछें सर्व पांचों जनें एक ही साथ प्रसाद लियो। पाछें रसोई करिवे की रीति सब वा बाई कों हरिवंसजी ने दिखाई। पाछें हरिवंसजी उहां तें चलन लागे। तब वा बाई ने हरिवंसजी सों कही, जो–अब ही तो तुम कों हों चलन न देहुंगी। यह गाम सब भीलन कौ है। सौ भील सब आवेंगे। तब हों तुम्हारे संग भीलन कों करि देउंगी। सो तुम कों बस्ती में पहुंचाई आवेंगे। और हम यह गाम के भीलन के सरदार हैं। और इहां तें आगें बड़ो जंगल है। तहां जनावर बोहोत रहत हैं। तासों तुम रहो, मार्ग तुम्हारो जान्यो नाहीं। तुम आगें जाइ कै भटकोगे, खेद पाओगे। तासों भीलन कों आवन देहु। वे तुम कों सरे दगरे लों पहोंचाई आवेंगे। तब चाचाजी वाके बचन सत्य मानि कै वाकौ सुद्ध भाव जानि कै वाके घर तीन दिनलों रसोई करी। सो तीन दिना में वा बाई कों सब अपने मार्ग की रीति बताई। त्यों (ही) वह बाई आपु अपनी रुचि बढ़ाई कै

हरिवंसजी की बात प्रमान करन लागी। तब तीसरे दिन गाम में सब भील आए। तिन के साथ उह बाई कौ धनी आयो । सो वह बाई धनी की खबरि सुनि कै घर कौ द्वार रोकि कै बैठी। पाछें वाकौ धनी वाके घर के द्वार आई कै ठाढ़ौ रह्यो। तब वा बाई ने अपने धनी सों कही, जो–तुम अब अपनी दूसरी स्त्री के घर जाऊ। हों तो वैष्णव भई हों। अब मेरो तुम सों कछू संबंध रह्यो नाही। ऐसें ऐसें कठिन बचन कहि वाने धनी कों अपने घर में पेंठन न दीनो। सो वह वा दिन तो वाके द्वार के आगें खाट डारि कै परि रह्यो। पाछें वाकें और देह संबंधी हते तिन ने वाकों पहिली स्त्री के घर जेंवन पठायो। सो वह जें आइ कै वाही के द्वारें खाट डारि कै सोयो। तब रात्रि कों हरिवंसजी और वैष्णव सब कीर्तन करत हते। सो वह द्वार पर्‌यो पर्‌यो सुनि कै बोहोत आनंद पायो। तब वह अपनी स्त्री सों कह्यो, जो–तू इन सों कहि कै मोंहू कों वैष्णव करवाइ। ये तो कोऊ बड़े महापुरुष दीसत हैं। तासों तू इन सों हमारी बिनती करि। तब धनी के बचन सुनि कै स्त्रीने धनी सों कह्यो जो–ये कहेंगे सो तुम करोगे ? तब वानें स्त्री सों कहीं, जो–ये कहेंगे सोई हों करुंगो। परि तू इन सों इतनो पूछियो। तब स्त्री ने धनी की उत्कंठा जानि कै ये सब समाचार हरिवंसजी आगें प्रसन्न मन सों कहें। जो–मेरो धनी बिनती करत है, जो–मोहू कों वैष्णव करो। आप कहोगे सो मैं करुंगो। तब वाके बचन सुनि कै हरिवंसजी वासों कहें, जो–खेती करो। और जो कोई तुम सो लरन आवे तासों तुम हू लरो। परि तुम काहू और के गाम पर चढी कै लरन मति जैयो। सों ये

हरिवंसजी के बचन सुनि कै स्त्रीने धनी सो जाइ कै कहे। तब वह सर्व रात्रि आनंद में चिंतन करत ही रह्यो। पाछें सवारो भयो। तब हरिवंसजी दंतधावन कों वैष्णवन कों संग लैकै चले। तब वह लाठी लैकै हरिवंसजी के आगें चल्यो। सो जब हरिवंसजी दांतिन करन लागे तब वाने चाचाजी सों बिनती करी, जो–अब मो उपर कृपा करि नाम सुनाओ। पाछें आप पधारो। तब चाचाजी ऊहांई स्नान किये। और वासों हरिवंसजी कहे, जो–तू दंतधावन करि, अपनो प्रथम कर्म सब छोरि कै स्नान करि, नइ धोवती पहरि, नइ चादरि ओढ़ि कै अपरस ही में हम पास आऊ। तब हम तोकों वैष्णव करें। तब वह भील हरिवंसजी की आज्ञा प्रमान घर जाई सुद्ध होइ कै हरिवंसजी पास आइ कै दंडवत् करी। तब वाकी आर्ति देखि कै चाचाजी वाकों नाम सुनाए। पाछें वाकों सेवक भयो जानि कै वा गाम के सगरे भील स्त्री पुत्रादि सहित हरिवंसजी के सेवक वैष्णव भये। ता पाछें सबही मिलि कै हरिवंसजी कों और तीन दिनलों राखे। सबन हरिवंसजी सों मार्ग की रीति भांति पूछी। सो हरिवंसजी प्रथम वा बाई कों कहि आए हते। ता रीत सों ए सब भीलन कों बताए। पाछें वे सबही भील हरिवंसजी के कहे प्रमान सब गाम में एकसो आचरन करन लागे। ता पाछें सगरे भीलन हरिवंसजी कों सोनो तथा कपड़ा भेंट अपनी अपनी सक्ति प्रमान करत भए। सो बड़ी बड़ी तीन गांठि भई। पांछें चौथे दिन हरिवंसजी सों रसोई करवाई। प्रसाद चाचाजी वैष्णव सहित लिये। ता पाछें भील वे गांठि लैकै हरिवंसजी कों 'इडलपुर' (इडर) पर्यंत

पहोचाइ गए। सो जब हरिवंसजी सहर में उतरे तब वह भील हरिवंसजी कौ पत्र लैकै आज्ञा माँगि कै बिदा होइ कै हरिवंसजी कों दंडवत करि कै सब भील अपने घर आए। पांछें सबन अपनो कर्म छोरि कै वे भील वैष्णव–आचरन करि खेती करन लागे। और जो–कछू खांइ सो श्रीनाथजी कों भोग धरि कै खाँते। सो हरिवंसजी ने वा बाई के ऊहां श्रीनाथजी के प्रसादी वस्त्र पधराइ दिये हते। उनकों वे भोग धरते। पाछें हरिवंसजी इडलपुर तें राजनगर आए। तहां सों खंभाइच होइ कै हरिवंसजी श्रीनाथजी की श्रीगुसांईजी की बोहोत भेंट लैकै चले।

ता पाछें एक दिन श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार सेवा कों पधारे तब श्रीनाथजी एक दिन श्रीगुसांईजी सों जनाए, जो–हरिवंसजी भीलन कों सेवक करे हैं, तामें एक भील के घर सेवा पधराई है। सो वह भील नित्य जूंठन करि कै मोकों भोग धरतु है।

भावप्रकाश–यामें यह जतायों, जो–वैष्णव स्नेहपूर्वक कैसी ही वस्तू सामग्री श्रीनाथजी कों धरें, ताकों प्रभु आप श्रीगुसांईजी की कानि मानि कै निश्चय अंगीकार करत हैं।

सो बात श्रीनाथजी के श्रीमुख की सुनि कै श्रीगुसांईजी ने अपने मन में राखी। पाछें कछूक दिन में हरिवंसजी श्रीनाथजीद्वार आइ श्रीगुसांईजी के श्रीनाथजी के दरसन करि अति प्रसन्न भए। तब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी की सेवा सों पहोंचि कै तरहटी होइ कै अपनी बैठक में प्रभु आइ बिराजे। तब हरिवंसजी ऊहा दंडवत् करि परदेस के सर्व समाचार कहे। तामें जब हरिवंसजी वा भील को प्रसंग कहे तब श्रीगुसांईजी हरिवंसजी सों श्रीनाथजी के श्रीमुख के बचन कहे। तब

हरिवंसजी श्रीनाथजी के श्रीमुख के बचन श्रीगुसांईजी के श्रीमुख तें सुनि श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि, वाही समै एक वैष्णव कों साथ लैकै हरिवंसजी भीलन के गाम कों चले। सो कछूक दिनन में वा बाई के घर हरिवंसजी जाई पहोंचे। तब वा गाम के भीलन बोहोत ही आनंद पायो। पाछें उन भीलन सों हरिवंसजी रसोई कौ प्रकार भोग धरिवे कौ प्रकार सब पूछे। तब हरिवंसजी आगें उन सब समाचार कहे। पाछें भीलन कही, जो–लोंनकी वस्तू धरत हैं सो तो प्रथम चाखि कै धरत हैं। जो लोंन की ठीक परें। सो यह बात सुनि कै हरिवंसजी बरजे। वा बाई सों कहे, जो–चाखी सामग्री तो सब जूंठन भई। सो अपनी जूंठन श्रीठाकुरजी कों क्यों धरिए ? यह तुम सेवा करत अनर्थ, अपराध करत हो। तब वा बाई ने हरिवंसजी सों कही, जो–यह भेद हम कहा जाने ? अब तुम आज्ञा करोगे सो हम करेंगे। यह वा बाई कौ भोरो भाव जानि हरिवंसजी वा गाम में वा बाई के घर तीन महीना लों रहे। पाछें हरिवंसजी ने वाकों सर्व सेवा कौ प्रकार बतायो और वह अपरस उनकी कढ़ाइ नई अपरस सबन के घर हरिवंसजी करवाए। पाछें उन कों सेवा रसोई भोग धरिवे कौ सब प्रकार बतायो। और श्रीनाथजी के श्रीमुख के बचन सब वा बाई के आगें हरिवंसजी कहे। तब वह बाई अपने मन में बोहोत प्रसन्न भई। सो उन भीलन कों हरिवंसजी की कानि तें या प्रकार अंगीकार किये। पाछें वह भीलनी बड़ी भगवदीय भई।

भावप्रकाश–सो यह भीलनी रामावतार में 'शबरी' ही। सो वाने श्रीरामचंद्रजी कों प्रेम सों

जूंठे बेर आरोगाए हे । सो यातें, जो–मति कहूं विषैला कीरा कौ खायो कोऊ होंइ । क्यों, जो–श्रीरामचंद्रजी परम सुकुमार हैं । तातें उनको दुःख न होऊ । या प्रकार सनेह सों श्रीरामचंद्रजी कों जूठे बेर आरोगाए । सो सनेह है सो पुष्टि कौ स्वरूप है । तातें वा भीलनी कौ या जन्म में अंगीकार भयो । सो यहां हू (इन) श्रीनाथजी कों प्रथम जूंठो आरोगायो ।

और लीला में ये 'पुलिंदिनी' के यूथ में है । इन कौ नाम 'संझ्यावली' है । सो जैसें संझ्या फूलत है । ता भांति इन कौ मन सदा प्रफुल्लित रहत है ।

पाछें भीलनी ने श्रीठाकुरजी के पात्र न्यारे, और जलघरा न्यारो, अपने पात्र सब न्यारे, या भांति चाचाजी के कहे प्रमान कियो । पाछें सखड़ी जूंठन सब समझन लागी । सो वा बाई की संगति तें सगरे मिलि, और एक सौ मन करि, वा बाई सों पूछि कै भील सर्व काम करते । पाछें हरिवंसजी वा बाई पास तें श्रीगुसांईजी पास चले । तब उन मिलि कै भीलन यथासक्ति श्रीगुसांईजी कों भेंट पठाई । पाछें वे भील हरिवंसजी के संग तें भले कृपापात्र भए ।

भावप्रकाश–या वार्ता में यह जतायो, जो–वैष्णव कौ संग होंइ तो या जीव कौ जैसो मन होंइ तैसो फल प्राप्त होंइ । जद्यपि फलकी प्राप्ति तो प्रभुन की ईच्छा होंइ (तब होइ) तोउ यह जीव अपनी ओर तें तो उत्तम संगही करे । तो कब हू याकौ मन न फिरे । तासों यह मन एक ठौर लगावनो ।

वार्ता प्रसंग – ३

और एक समै चाचाजी गुजरात कों जात हते । सो ये अपने मार्ग चले जात हते । सो मार्ग में एक रजपूत अपुनी बेटी कों सुसरारि तें अपने घर कों लै जात हतो । सो मार्ग में चले जात चाचाजी कों उन दोउन सों भेंट भई । तब मजलि कौ गाम आयो । तब एक बाग में जाइ कै सब उतरे । पाछें वह रजपूत गाम में सीधा लेन कों गयो । और हरिवंसजी के हू संग के

वैष्णव गाम में सीधा लैन गए। पाछें चाचाजी ने वा रजपूत की बेटी सों पूछ्यो, जो–तुम्हारे कुल में कोऊ वैष्णव भयो है ? तब वा रजपूतानी ने हरिवंसजी सों कह्यो, जो–तुम कृपा करोगे तो वैष्णव होंइगे। पाछें हरिवंसजी अपने मन में बिचार करे, जो–सामग्री अति उत्तम यह भगवद् भोग योग्य है। परंतु वैष्णव बिनु, यह सामग्री श्रीनाथजी कौन भांति अंगीकार करे ? यह सोच करत भए।

भावप्रकाश–यहां यह संदेह होंइ, जो–अलीखान की बेटी कों श्रीनाथजी ने पहिले ही अंगीकार करी। तो पाछें वह श्रीगुसांईजी की सरनि आई। तातें यहां चाचाजी ऐसें क्यो बिचारे ? तहां कहत है, जो–सरनि भए बिनु श्रीआचार्यजी के मार्ग की रीति सों दृढ अंगीकार नाहीं। तातें पुष्टि रसकी प्राप्ति होत नाहीं। याही तें अलीखान की बेटी कों श्रीनाथजी ने अंगीकार करी, तोऊ श्रीनाथजी वासों श्रीगुसांईजी के सरनि जांइ वैष्णव होइवे की कहे। नाँतर रसानुभव भए पाछें सरनि कौ कहा प्रयोजन ? सो पुष्टिमार्ग की रीति सों वैष्णव होंइ तो जीव कों स्वतंत्र भक्ति–रस कौ दान व्है। तातें वल्लभाख्यान में गोपालदासजी कहे हैं, जो–

"भक्तिमार्गी जीव स्वतंतर, केवल भक्त न थाय।"

सो भक्तिमार्गीय जीव स्वतंत्र भक्ति–रस के अधिकारी है। परि आप ही तें उन कों वा रस की प्राप्ति नाहीं। यासों पुष्टिमार्ग में सरनि की अपेक्षा है। गुरु बिना दृढ़ सरनागति नाहीं। तातें चाचाजी सोच करत भए। सो भगवदीय परम उदार होत हैं। तातें या प्रकार याकों स्वतंत्र भक्ति–रस के दान कौ बिचार कियो।

तब फेरि हरिवंसजी सों वा रजपूत की बेटी ने बिनती कीनी, जो–तुम मोकों वैष्णव करोगे ? यह आर्ति बोहोत चाचाजी ने वा स्त्री के मन की जानी। तब हरिवंसजी वासों कहे, जो–तू अपने पिता सों कहियो। पाछें हम तोकों वैष्णव करेंगे। पाछें वाकौ पिता सीधा लैकै आयो। तब बेटी ने अपने पिता सों कही, जो–आपुन वैष्णव होंइ तो आछी बात है। तब वा रजपूत ने

बेटी सों कही, जो– मेरे हू मन में यह बात हती। सो इहां कौन आपुन कों वैष्णव करेगो ? तब वाने पिता सों कही, जो–अपने संग ये जो हैं, सो बड़े भगवदीय हैं। तासों तुम इन सों बिनती करोगे तो आपुन कों ये वैष्णव करेंगे। तब बेटी के बचन सुनि कै वह रजपूत बोहोत प्रसन्न भयो। पाछें वह रजपूत आप ही सों हरिवंसजी सों बिनती कर्‍यो, जो–तुम हम कों नाम सुनाओ। यह कृपा करो। तब हरिवंसजी प्रसन्न होइ कै वा रजपूत सों कहे, जो–तुम वैष्णव होउगे ? तब वे दोऊ जनें हरिवंसजी सों बिनती बोहोत करे। तब हरिवंसजी उनकी उत्कंठा देखि कै वाही समै उन दोउन कों श्रीगुसांईजी को स्मरन करि ध्यान करि, नाम सुनाइ माला दै वैष्णव करे। पाछें रसोई करि भोग धरि हरिवंसजी प्रसाद लिये। पाछें वाइ बाग में संध्या पर्यंत भगवद् वार्ता करे। पाछें रात्रि कों गाम में जाइ कै सोइ रहे। पाछें सवारे उठि चले। सो मजलि वार्ता करत कछू जानी न परी। या भांति मजलि जाइ पहोंचे। तब वा रजपूत सों बेटी ने कही, जो–आज इन कों अपने घर पधराइ लै चलिए। तब बेटी सों पिता ने कही जो–यह तो तैंने आछी बात कही। तब वह रजपूत हरिवंसजी सों बिनती करि कै श्रद्धापूर्वक अपने घर पधराइ कै लै गयो। पाछें एक सुंदर ठौर हती ता ठौर हरिवंसजी कों उतारें। पाछें रसोइ कौ सर्व सामान सिद्ध करि घर में ते हरिवंसजी सों भली भांति रसोई करवाई। सो हरिवंसजी रसोई करि श्रीनाथजी कों भोग धरि प्रसाद लियो। पाछें रात्रि कों कीर्तन करि कै श्रीनाथजी कों हरिवंसजी यह बिनती करे, जो–बाबा ! यह

अभुक्त सामग्री है, अति उत्तम है। तासें आपु इहां पधारि कै यह सामग्री कों अंगीकार करिए। सो हरिवंसजी की बिनती तें श्रीनाथजी वा ठौर पधारे। पाछें श्रीनाथजी वाकों अंगीकार कर्‌यो। पाछें सवारे हरिवंसजी श्रीनाथजी कों मंदिर पठाइ कै आप आगें कों चले। ता पाछें प्रातःकाल वा रजपूतानी कों ज्वर आयो। सो उत्थापन के समै वह रजपूतानी भगवल्लीला में प्राप्त भई।

भावप्रकाश–क्यों ? जो–श्रीनाथजी के परस तें इन कौ देह अलौकिक भयो। सो अलौकिक बस्तू लौकिकवारेन के पास कैसें रहे ? तातें ये ततछिन लीला में प्राप्त भई। सो जैसें कृष्णदास अधिकारी ने बेस्या की छोरी कों लीला की प्राप्ति कराई तैसैइ यहां चाचाजी द्वारा या रजपूत की बेटी कौ लीला की प्राप्ति भई। यह भाव जाननो। सो श्रीनाथजी नें याकों या प्रकार अंगीकार करी।

और लीला में ये रजपूत की बेटी 'चंद्रकला' की सखी है। वाकौ नाम 'नवीना' है। सो 'नवीना' में छिन छिन प्रति नूतनता प्रगट होत है। ऐसी वह रस–रूप है। तातें श्रीठाकुरजी वाके पाछें पाछें डोलत हैं। सो यहां हू चाचाजी द्वारा श्रीनाथजी या प्रकार याके घर पधारि कै याकों अंगीकार किये। सो यह देह छोरि लीला में प्राप्त भई। तातें भगवदीयन कौ एक क्षन कौ संग हू संसार कों मिटावनहारो है।

और जा रात्रि कों श्रीनाथजी पधारे हते। ताके प्रातःकाल श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी के उहां आपु स्नान करि संखनाद कराइ कै मंदिर में श्रीनाथजी के दरसन करि कै श्रीगुंसाईजी ने पूछ्यो, जो बावा ! आज रसमसे रगमगे क्यों हो ? और आज कछू और ही भांति चितवत हो ! सो यह कारन कहा है ? तब श्रीगुसांईजी सों श्रीनाथजी ने यह कही, जो–हम कों आज रात्रि हरिवंसजी ने एक नई वस्तू समर्पी हती। तहां रात्रि कों हम गए हते। पाछें मंगल भोग धरि वह दिन श्रीगुसांईजी ने लिख राख्यो। ता पाछें

भोग सराइ आर्ति करि सिंगार करि श्रीनाथजी कों राजभोग समर्प्यो। पाछें समै भयो तब भोग सराइ राजभोग आर्ति करि बेगि ही श्रीनाथजी कों अनोसर करवाए। पाछें उत्थापन वा दिन कछूक अवारो श्रीगुसांईजी करवायो । पाछें श्रीनाथजी कों श्रमित जानि कै श्रीगुसांईजी बेगि ही सेन आर्ति करि श्रीनाथजी कों पोढ़ाए।

भावप्रकाश–यामें यह जतायो, जो–जा दिन प्रभुन कों श्रम होंइ ता दिन बेगि सेवा सों पहोंचि अनोसर कराइए।

पाछें केतेक दिन में हरिवंसजी श्रीगोकुल आइ श्रीगुसांईजी कौ दरसन करि साम्हे दंडवत् करी । तब श्रीगुसीईजी ने हरिवंसजी सों कह्यो, जो–तुम परदेस में जाइ कै ऐसें काम करत हो ? सो श्रीमुख के बचन सुनि कै हरिवंसजी अपने मन में डरपि कै श्रीगुसांईजी सों यह बिनती करी, जो–राज ! कछू अनुचित बनि आइ होइगी तो आप प्रभु हो जीव को दोष क्षमा करोइगे। तब श्रीगुसांईजी वह दिन निकासि हरिवंसजी सों कही, जो–श्रीनाथजी कों तो उहां लों पधारिवे कौ श्रम करनो पर्यो। तब हरिवंसजी श्रीगुंसाईजी के बचन सुनि कै कहे, जो–राज ! बस्तू परम सुंदर देखि कै मन में यह आइ तो खरी। जो–यह बस्तू कों श्रीनाथजी अंगीकार करें तो भली बात है । तब श्रीगुसांईजी ने हरिवंसजी सों कही, जो–सेवक कौ तो यही धर्म है। परि प्रभुन कों तो श्रम होंइ। तासों जो कार्य करनो सो बिचार कै करनो । जामें श्रीनाथजी कों श्रम न होंइ। और अपनो धर्म रहे। सो कार्य श्रीठाकुरजी कौ सेवक कों करनो। और वह तो

भगवद् लीला कों तुम द्वारा श्रीनाथजी की कृपा तें प्राप्त भई। वाकों तो अलौकिक सिद्धि भई। परि ये तो बालक अज्ञान हैं। मिश्री के लालच ज्यों बालक सर्प ग्रहन (कों) जाइ, परि वाकों सर्प कौ तो ज्ञान नाहीं। तासों जो श्रम होइ तो बालक की सेवा माता पिता कों करनी परे। जैसें श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक रामदासजी आप अपरसता छोरि कै सिपाइगीरी की चाकरी करी। परि श्रीठाकुरजी कों श्रम तो न करवायो। तब रामदासजी कों देखि कै श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीमुख तें रामदासजी कों धन्य धन्य कहे। तातें वैष्णव कों तो श्रीनाथजी के विषे एसो रामदासजी कौ सो स्नेह राखनो। तब हरिवंसजी श्रीगुसांईजी के बचन सुनि कै चुप करि रहे। हरिवंसजी श्रीगुसांईजी कों प्रतिउत्तर न दिये।

भावप्रकाश–या वार्ता में यह सिद्धांत भयो, जो–पुष्टिमार्ग में बालभाव सों सेवा हैं। सो मुग्ध बालक की तरह श्रीठाकुरजी कों जानि सेवा करनी। सो (जैसें) मुग्ध बालक की चिंता उनके मा बाप कों रहत है, ता भाँति श्रीनाथजी की चिंता श्रीगुसांईजी कों सदासर्वदा रहति है। तातें श्रीगुसांईजी चाचाजी सों या प्रकार कहे। परि चाचाजी तो प्रौढ भाव में मगन रहत हैं। तातें उन कों तो यही उचित हतो। सो उन कों कछू बाधक नाहीं। और स्वामी के आगें सेवक कों विसेस बोलनो हू उचित नाहीं। तातें वे चुप करि रहे। सो अपनो भाव प्रगट न कियो।

वार्ता प्रसंग–४

और एक समै श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे। सो एक गाम में जाइ डेरा किये। तब अपने साथ के एक ब्रजबासी कों श्रीगुसांईजी ने सीधो लैन पठायो। सो वह ब्रजवासी श्रीगुसांईजी की आज्ञा प्रमान सीधो सामग्री सब गाम में सों लायो। तब वा ब्रजवासी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! या गाम

में एक हू वैष्णव नाहीं तब वा ब्रजवासी सों श्रीगुसांईजी वा समै श्रीमुख तें यह बचन कहे, जो–या मार्ग हरिवंसजी कब हू आए न होइंगे। जो–हरिवंसजी या मार्ग कबहू आवते तो कोई एक तो वैष्णव होतो। वे चाचा हरिवंसजी ऐसें भगवदीय हते। जो–जा मार्ग होइ कै परदेस जाते तहां गाम गाम प्रति वैष्णव करत जाते। सो श्रीगुसांईजी या भांति हरिवंसजी की सराहना अपने श्रीमुख सों करत हते।

वार्ता प्रसंग–५

बहौरि एक समै हरिवंसजी और कृष्ण भट उज्जैनि कों जात हुते। सो मार्ग में एक क्षत्री श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक गाम में रहत हतो। सो वा वैष्णव ने अपनी दुकान ऊपर तें हरिवंसजी कों पहिचाने। सो वह दुकान तें उतरि कै वाने हरिवंसजी कों दंडवत् करी। पाछें वह क्षत्री हरिवंसजी कों अपनी हाट ऊपर लै गयो। तब हरिवंसजी कों बैठारि कै बिनती करी, जो–हरिवंसजी ! जल लेहुगे ? तब हरिवंसजी ने अपनी कसेंडी दीनी। सो वा क्षत्री ने हरिवंसजी की कसेंडी तो रहन दीनी और वह अपनी कसेंडी भरि लायो। ताही कसेंडी सों हरिवंसजी ने जल लियो। पाछें हरिवंसजी जल लै के उठि चले। तब वा क्षत्री ने हरिवंसजी सों बिनती करी, जो–अब कै इत सों जब पाछें फिरो तब मेरे घर पधारियो। तब हरिवंसजी वा क्षत्री सों कहे, जो–या मार्ग आवेंगे तो तेरे घर आवेंगे। यह वा क्षत्री सों कहि कै हरिवंसजी आगे कों चले ! तब मार्ग में कृष्ण भट ने हरिवंसजी सों कही, जो–हरिवंसजी ! या क्षत्री कौ कछू आचार तो दीसत

नाहीं । तातें तुम याकी कसेंडी सों जल क्यों लियो ? तब हरिवंसजी कृष्ण भट सों कहें, जो–मोकों तो या क्षत्री के आचरन की तो सुधि नाहीं, परि यह क्षत्री श्रीगुसांईजी के पास नाम सुनिवे बैठ्यो हतो तब हों हू वा समै श्रीगुसांईजी के पास बैठ्यो हतो। सो समै मोकों सुधि आइ गयो । तासों हों वाकी दुकान पर बैठि कै वाकी कसेंडी सों जल पियो । सो हरिवंसजी कों वैष्णवन में या प्रकार सर्वात्मभाव सिद्ध भयो है । तातें उन कौ वैष्णवन में सरल भाव है। सो कृष्ण भट यह बात समुझे तातें चुप करि रहे।

पाछें केतेक दिन पाछें हरिवंसजी उज्जैनि सों फिरे । तब वा गाम में आए। पाछें हरिवंसजी वा क्षत्री की दुकान ऊपर गए। तब वह क्षत्री बोहोत आदर करि हरिवंसजी कों अति आनंद सौं अपने घर पधराइ आछी भांति सीधा देइ हरिवंसजी सों रसोइ करवाई । सो हरिवंसजी वाके घर रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग समर्पि समयानुसार भोग सराइ कै हरिवंसजी प्रसाद लियो। पाछें रात्रि भई तब वा क्षत्री ने रूपैया हजार तीन कौ वित्त सो घर में सोनो, रूपो, गहनो, रे कड़ि सब मिलाइ कै हरिवंसजी कों सोंप दियो। जो–यह तो श्री·ुसांईजी पास ले जैयो। मेरे तो इहां थोरे ही में चल्यो जात हैं। यातें धनी की बस्तू धनी के पास पहोंचे तो भली बात है । सो हरिवंसजी वह बस्तू लै श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुल आए। सो सर्व मँगाइ श्रीगुसांईजी आगें वा क्षत्री की दंडवत् करि प्रभुन की दृष्टि–पथ करवाइ कै हरिवंसजीने वह सर्व वस्तू भंडारी कों सोंपी । सो वह क्षत्री वैष्णव एसो सर्वात्म भाववंत हतो।

वार्ता प्रसंग–६

और एक समै श्रीगुसांईजी रात्रि कों लघुबाधा करिवे कों चौक में आए। तहां हरिवंसजी चौक में ठाड़े हते। सो श्रीगुसांईजी हरिवंसजी सों वार्ता करन लागे। सो वार्ता करत दोऊ जन देहानुसंधान भूले। एसी अनिर्वचनीय वार्ता चली, जो–कछू देह की स्फुर्ति न रही। ता समै श्रीगुसांईजी के श्रीहस्त में बड़ी झारी हती। ताकौ उ भार श्रीगुसांईजी ने न जान्यौ। और हरिवंसजी कों हू स्फुर्ति इतनी न रही, जो–प्रभुन के श्रीहस्त में तें झारी तो लैहु। ऐसें वार्ता करत रसावेस दोऊ जनें भए, जो–देहानुसंधान भूले। और रात्रि दिन गरमी के हते। पाछें खवास ने आइ कै श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज! उठिवे कौ समै भयो है। तब श्रीगुसांईजी तो वहां तें उठे। पाछें देह कृत्य करि तेल लगाइ स्नान करि कै श्रीगुसांईजी तो मंदिर में पधारे। सो सब कार्य वार्ता के आवेस में ही प्रभु निकासे। और हरिवंसजी कों तो वार्ता के आवेस में तीन दिन पर्यंत देहानुसंधान न रह्यो।

वार्ता प्रसंग–७

और एक दिन हरिवंसजी स्नान करि श्रीगिरिराज ऊपर मंदिर में जाइ मंदिर आगें ठाढ़े रहे। तब हरिवंसजी देखे तो श्रीनाथजी भर निद्रा में पोंढ़े हैं। तब संखनाद कौ समै हतो। परि हरिवंसजी संखनाद करिवे न दीने। सो भीतरिया सर्व ठाढ़े रहे। इतने ही श्रीगुसांईजी स्नान करि कैं पर्वत ऊपर मंदिर में पधारे। तब श्रीगुसांईजी ने भीतरियात सों पूछी, जो–संखनाद काहे न किये? तब भीतरियान श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज! हम

तो संखनाद करावत हते। परि हम कों हरिवंसजी बरजे। तातें हम सगरे ठाढे होंइ रहे हैं। तब श्रीगुसांईजी पूछे, जो–हरिवंसजी! अब लों संखनाद क्यों न करन दीनो। तब चाचाजी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज! श्रीनाथजी भर निद्रा में पोंढे हते। तासों हों इन कों संखनाद करत बरज्यो हूं। तब श्रीगुसांईजी हरिवंसजी के बचन सुनि कै चुप करि रहे। पाछें श्रीगुसांईजी आपु संखनाद करवाइ मंगल भोग समर्पि कै बाहिर आइ बिराजे। तब भीतरियान सों श्रीगुसांईजी यह कहे, जो–श्रीठाकुरजी कौ समै बीतीत न होंन दीजे। समै होंइ तब मंदिर आगें तारी बजाइ संखनाद करवाइ कै श्रीठाकुरजी कों जगाइये। यह श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी के सेवकन सों समुझाइ कै श्रीमुख तें कहे। ता दिन तें भीतरिया सेवा श्रीनाथजी की श्रीगुसांईजी की आज्ञा प्रमान करन लागे।

भावप्रकाश–या वार्ता में यह जतायो, जो–श्रीआचार्यजी महाप्रभुन ने सेवा में बालभाव राख्यो है। सो बालक कों सूर्योदय पहिले जगावने चहिए। नाँतरु बालक की बुद्धि मंद होवें। यह बात की सिक्षा श्रीगोपीनाथजी कों श्रीआचार्यजी आप दीनी है। सो बात आगें कहि आए हैं। तातें श्रीगुसांईजी ने श्रीनाथजी के सेवकन कों या प्रकार समझाइ कै कह्यो।

वार्ता प्रसंग–८

और एक बार श्रीगुसांईजी भोग के समै सिज्या मंदिर में पधारत हते। सो श्रीनाथजी श्रीगुसांईजी के सन्मुख देखि रहे। तब चाचाजी बाहर सों श्रीनाथजी के दरसन करत हते। सो श्रीनाथजी की दृष्टि श्रीगुसांईजी की ओर देखि कै चाचाजी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज! आप कहां पधारत हो? श्रीनाथजी तो आपकी ओर देखत हैं। तब श्रीगुसांईजी

चाचाजी सों कहे, जो–कहा करिए ? यह काम तो कर्‌यो चहिए। पाछें जब लों श्रीगुसांईजी सिज्या मंदिर में पहोंचि आए तब लगि श्रीनाथजी की दृष्टि श्रीगुसांईजी की ओर ही रही। या भांति श्रीगुसांईजी की कृपा तें चाचाजी कों श्रीनाथजी सरलता सों दरसन कौ अनुभव करावते।

वार्ता प्रसंग–९

और एक समै श्रीगुसांईजी पास हरिवंसजी बैठे हते। सो काहू बात में श्रीगुसांईजी कों चाचाजी ऊपर रिस आई। सो पास पीढा पर्‌यो हतो। सो चाचाजी कों मार्‌यो। तब दिन दोइ विप्रयोग में रहे।

भावप्रकाश–काहेते ? जो–चाचाजी पर श्रीगुसांईजी आप कौ बोहोत सनेह हतो। तातें चाचाजी कों कष्ट भयो जानि आप दिन दोइ विप्रयोग में रहे।

वार्ता प्रसंग–१०

और एक दिन श्रीगुसांईजी अति प्रसन्नता में श्रीरुक्मिनी बहूजी सों बातें करत हुते। जो–ये सगरे वैष्णव मेरे हैं। सो सगरे मेरे अंगन को स्वरूप हैं। तब श्रीरुक्मिनी बहूजीने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–हरिवंसजी तुम्हारो कौनसो अंग है ? तब श्रीगुसांईजी ने श्रीरुक्मिनी बहूजी सों कह्यो, जो–ये हरिवंसजी मेरे नेत्रनकी स्याम पूतरी हैं। पाछें एक दिन चाचाजी कों ठोकर लगी सो कष्ट भयो। तब श्रीगुसांईजी के हू नेत्र दुखि आए। तब श्रीरुक्मिनी बहुजी ने पुछी जो–तुम्हारे नेत्र क्यों दुःखत है ? तब प्रभुननें कही, जो–हरिवंसजी कों ठोकर लगी हैं ताकौ कष्ट है। तातें हमारे हू नेत्र दुःखत हैं। पाछें (जब) चाचाजी आछें भए

तब आप के नेत्र हू आछें व्है गए। या प्रकार श्रीगुसांईजी अपने वैष्णवन कौ स्वरूप श्रीरुक्मिनी बहूजी कों प्रत्यच्छ दिखायो।

वार्ता प्रसंग–११

और एक बेर चाचाजी ने श्रीगुसांईजी सों बीनती करी, जो–महाराज! आप निरंतर श्रीगोकुल में बिराजिए। और परदेस मैं ही जाऊंगो। यह बात हरिवंसजी की श्रीगुसांईजी सुनि कै हरिवंसजी सों श्रीगुसांईजी आप कहे, जो–तोकों यही काम सों पास ना राख्यो हतो। यह कहि कै प्रभु चुप करि रहे। वा समै श्रीगुसांईजी कौ स्वरूप हरिवंसजी के मन में तें विस्मरन व्है गयो। पाछें हरिवंसजी कों गुजरात पठाए। यहां श्रीगुसांईजी आसुरव्यामोह लीला दिखाए। सो हरिवंसजी ने श्रीगुसांईजी कौ स्वरूप जान्यो नाहीं। ऐसें प्रभुन अपुनो स्वरूप आपही आच्छादन कर लियो। यही प्रभुन की लीला है। नाँतरु हरिवंसजी के मन में जब लौकिक बात क्यों आवे? श्रीगुसांईजी ने वार्ता प्रसंग के लिये हरिवंसजी कों अपने पास राखे हते। सो चाचाजी के मन में लौकिक आई तब यह सब कों विस्मरन भयो। सो बुद्धि प्रेरक तो प्रभु आप ही हैं।

भावप्रकाश–सो जैसें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने श्रीइल्लमागारुजी सों "निकसो" "निकसो" कहवायो, पाछें गृह कौ त्याग कियो। याही भाँति श्रीगुसांईजी ने चाचाजी सों निरंतर श्रीगोकुल में बिराजवेकी कहवाई। सो प्रभु भक्त कों प्रेरना करि उन की इच्छानुसार आप कार्य करत हैं। सो कैसें? जैसें माधवदास कौ मनोरथ गोकुल बास कौ भयो तब आपने श्रीगोकुल में बसिवे कौ उपाय कियो। याही प्रकार चाचाजी सों श्रीगोकुल में निरंतर बिराजवेकी कहवाइ कै श्रीगुसांईजी आप लोक रीति सों अंतर्धान भए। और चाचाजी कों वा समै गुजरात, यातें पठाए, जो–चाचाजी कौ श्रीगुसांईजी में सनेह अधिक है। तातें चाचाजी कों श्रीगुसांईजी की आसुरव्यामोह लीला देखि कै अत्यंत कष्ट होतो। यासों श्रीगुसांईजी ने चाचाजी कों गुजरात

भेज कै पाछें तें आप अंतर्धान लीला किये। यह सनेह की रीति है।

वार्ता प्रसंग–१२

और एक समै हरिवंसजी श्रीनाथजी के लिये सामग्री लै कै श्रीगोकुल तें चले। सो यमुनाजी के घाट पर आए जब सांझ होंइ। सो नाव कोऊ मिलि नाहीं। तब चाचाजी अपने मन में बिचारें, जो–कल उत्सव है, सो सवारे छह घरी रात रहेगी तब ये सामग्री चहियेगी। तातें ये सामग्री रात्रि कों सिद्ध भई चहिए। और श्रीनाथजीद्वार तो कोस दस दूरि पर है। सो कैसें पहोंचेंगे ? तब साथ के वैष्णव सों कही, जो–मैं जा ठौर पांऊ धरों ता ठौर तू पांऊ धरत जैयो। पाछें चाचाजी आगें आगें भगवत् नाम लेते जांइ और श्रीयमुनाजी में पांऊ धरत जांइ। सो वह वैष्णव हू चाचाजी के पांऊ के ऊपर पांऊ धरत चले। तब कछूक दूरि तो गये, पाछें वा वैष्णव नें अपने मन में बिचारी, जो–चाचा हरिवंसजी के पांऊ पर पांऊ क्यो धरों। मैं हूँ अपने मुख तें भगवत् नाम लैत चल्यो जाउगों। पाछें वह वैष्णव तो अपने मुख तें भगवत् नाम लेत पांऊ न्यारो धर्‌यो। तब वैष्णव तो श्रीयमुनाजी में डुबन लाग्यो। तब वानें पुकार्‌यो। तब चाचा हरिवंसजी नें वा वैष्णव सों कह्यो, जो–मैं तोसों कही हती, जो–जा ठौर मै पांऊ धरों ता ठोर तू धरियो। सो न्यारो क्यों धर्‌यो ? तब वा वैष्णव ने अपने मन की बात चाचाजी सों कही। जो–चाचाजी ! मैं नें तो अपने मन में बिचार्‌यो, जो–हों हूँ भगवत् नाम लेत चलों। न्यारो पांऊ धरों। तब चाचाजी ने कह्यो, जो मैंने भगवत् नाम लियो, सो तो श्रीठाकुरजीने सुन्यो

है। और तेरो अजहू नाहीं सुन्यो। ता पाछें हरिवंसजी वा वैष्णव की बांह पकरि कै वाकों पार लैकै चलें। सो वा वैष्णव कों ऐसो माहात्म्य बताए।

ता पाछें हरिवंसजी श्रीनाथजीद्वार आए। तहां श्रीगुसांईजी को साष्टांग दंडवत् किये। पाछें सामग्री भंडार में सोंपि आप घर जाइ के सोए। पाछें वा वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों अपने सर्व समाचार कहे। और पूछे, जो–महाराज ! चाचाजी ने कह्यो, जो–मैंने भगवत् नाम लियो सो तो श्रीठाकुरजी सुन्यो है। और तेरो अजहू सुन्यो नाहीं ! सो कहा ? तब श्रीगुंसाईजी आप आज्ञा किये, जो जब तांई प्रभु जीव कौ कियो सुमरिन–सेवा अंगीकार करे नाहीं तबलों वह दृढ़ होंइ नाहीं। ओर दृढ़ भए बिनु फल की सिद्धि नाहीं। सो चाचाजी कों भगवत् नाम दृढ़ भयो है। तातें उन में अष्टाक्षर (कौ माहात्मय) प्रगट रूप तें बिराजत है। और तुम्हारे अभी दृढ़ नाहीं। तातें भगवदीय के संग की अपेक्षा है। तब वा वैष्णवने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! चाचाजी–में अष्टाक्षर (कौ माहात्म्य) प्रगट रूप में बिराजत है सो कैंसे दीसे ? तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णव को आज्ञा किये, जो–तुम चाचाजी के घर जाऊ। तहाँ तुमको वह प्रगट दिखेगो। तब वह वैष्णव चाचाजी के घर गयो। सो उहां देखे तो हरिवंसजी सोए हैं और उन के रोम रोम में तें अष्टाक्षर की ध्वनि निकसत है। सो यह देखि कै वा वैष्णव कौ संदेह निवृत्त भयो।

भावप्रकाश – या वार्ता में यह संदेह होंइ, जो–पुष्टिमार्ग में प्रभु जीव कौ बरन करत हैं, तब जीव सरनि आवत है। सो सरनि आए जीव कौ सेवा–सुमिरन प्रभु आप अंगीकार करत ही हैं। तब यहां यह क्यों कहे, जो–प्रभु अंगीकार करें तब दृढ़ होंई ? तहां कहत हैं, जो–प्रभु

कृपा करि कै जीव कों अपनी ओर तें सरनि लैत हैं। परि जीव कौ भाव जब लों स्थायी न होंइ तब लों वाकौ कियो साधन फले नाहीं। तातें जीव कौ प्रभुन के सरनि की भावना, अष्टाक्षर आदि निरंतर करत रहनो। भगवदीय कौ संग करनो। भगवद् सेवा में तत्पर रहनो। जब वाकौ भाव स्थिर होंइ। तब स्थायी भाव तें लियो नाम, सेवा आदि सब तत्काल फलै। यह सिद्धांत दिखायो।

वार्ता प्रसंग – १३ *

और एक बेर गुजरात के वैष्णवन ने चाचाजी सों बिनती करी, जो–हमारे तो लौकिकउ प्रबल है। तातें हम श्रीगोकुल जांइ सकत नाहीं। तासों हम को श्रीगोकुलनाथजी के दरसन कैसें होंई। ऐसी उन वैष्णवन बिनती करी। तब चाचाजी राजनगर जाइं कै श्रीगोकुलनाथजी कों यह बिनती पत्र लिखि, मनुष्य घर कौ पठायो। जो–राज ! आप श्रीद्वारिकाजी न पधारोगे तो श्रीवल्लभकुल कोऊ श्रीद्वारिकाजी न पधारेंगे। तातें एक बेर तो आप अवस्य करि श्रीद्वारिकाजी कों पधारिए। सो वह चाचा हरिवंसजी कौ बिनती पत्र मनुष्य लैकै चल्यो। सो कछूक दिन में श्रीगोकुल में आइ कै श्रीगोकुलनाथजी कों दियो। सो चांपाभाई भंडारीने श्रीगोकुलनाथजी के आगें वह पत्र बांचि सुनायो। पाछें श्रीगोकुलनाथजी ने चांपाभाई सों कह्यो, जो–हम कों तो श्रीद्वारिकाजी अवस्य जानो है। सो श्रीगोकुलनाथजी ने प्रथम ही प्रथम संकल्प कर्‌यो हतो, जो–मेरे द्रव्य निमित्त परदेस न जानो। परि श्रीद्वारिकाजी कौ माहात्म्य बिचार्‌यो। और चाचा हरिवंसजी ने लिख्यो। तासों आपु श्रीगोकुलनाथजी श्रीद्वारिकाजी कों पधारे। सो प्रथम राजनगर पधारे। तहां थोरेसे दिन रहि कै श्रीगोकुलनाथजी श्रीद्वारिकाजी पधारे। सो दिन तेरह श्रीद्वारिकाजी में रहे। पाछें फिर श्रीगोकुलनाथजी राजनगर पधारे। तब चाचा हरिवंसजी श्रीगोकुलनाथजी के साथ हुते। पाछें श्रीगोकुलनाथजी श्रीगोकुल पधारे।

सो चाचाजी कों श्रीगोकुलनाथजी परदेस ही में छोरि आए हते। सो केतेक दिन में चाचाजी परदेस तें श्रीगोकुल आइ कै द्रव्य श्रीगिरिधरजी कों सोंपी आपु श्रीनाथजी के दरसन कों चाचाजी आए। सो तहां पर्वत ऊपर चाचा हरिवंसजी श्रीनाथजी के दसरन करि कै रामदासजी भीतरिया सों चाचाजी पूछे, जो–रामदासजी ! अब कहा समाचार है ? तब रामदासजी चाचा हरिवंसजी सों कहे, जो–चाचाजी ! समाचार तो तब कहिवे में आवे जो कछू बाकी छोरि पधारे होंई। परि अब तो एक बेटा श्रीगोकुलनाथजी हैं। यह इतनो बचन रामदासजी चाचा हरिवंसजी सों कह्यो। पाछें चाचाजी सों रामदासजी ने पूछ्‌यो, जो–तुम्हारे कहा समाचार है ? तब चाचाजी रामदासजी सों कहे, जो रामदासजी ! अब तो पंचाध्याई सगरी पाठ करियत है।

ताकौ हेतु यह है, जो–तब एक श्लोक कहते ताकौ आपु श्रीगुसांईजी अर्थ करते। ताके

* ये चिन्ह वाले प्रसंग श्रीहरिरायजी के स्वतंत्र है।

आवेस में कितनेक दिन पर्यंत छके रहते। सो अब पाठ हू करे होत नाहीं, ऐसो समै आयो है। सो वह समै तो प्रभुन के साथ ही गयो।

वार्ता प्रसंग–१४

और एक समै श्रीगोकुलनाथजी और श्रीघनस्यामजी ए दोऊ भाई बैठे आपुस में वार्ता करत होते। ताही समै चाचा हरिवंसजी श्रीगोकुलनाथजी के दरसन कों बैठक में आए। तब चाचाजी दंडवत् करि कै श्रीगोकुलनाथजी सों श्रीघनस्यामजी सों कहे, जो–बावा! और वार्ता कहा कहत हो ? अब अपनी पोथी सम्हारो। सो ए दोऊ भाई चाचा हरिवंसजी के बचन उपदेस करि मानत भए। सो दूसरे दिन तें श्रीगोकुलनाथजी और श्रीघनस्यामजी श्रीभागवत की टीका श्रीसुबोधिनीजी श्रीगुसांईजी कृत टिप्पनी यह अहर्निस बांचते। और हरिवंसजी पास बैठे सुनते। ऐसे अहर्निस रसावेस में रहते। और ताही के भाव कौ बिचार करते। यों करत जहां कहूं न समझि परे तो श्रीघनस्यामजी श्रीगिरिधरजी पास जाइ कै पूछते। तब प्रथम श्रीघनस्यामजी सों श्रीगिरिधरजी ने पूछ्यो, जो–बाबा! अब यह देखत हो! यह कहि रहे। और वा समै श्रीगिरिधरजी कों अश्रुपात होइ आए। प्रभुन कौ स्मरन हृदयावेस भयो। सो एक मुहूर्त लों कछू देहानुसंधान न रह्यो। पाछें श्रीघनस्यामजी कों उत्संग में बैठारि मुख चूमि कै कह्यो, जो–तुम देखत हते ? तब श्रीघनस्यामजी श्रीगिरिधरजी सों कहें, जो–श्रीवल्लभ दादा देखत हैं। यह बचन सुनि कै श्रीगिरिधरजी श्रीघनस्यामजी ऊपर बोहोत प्रस्न्न भए। पाछें जो कछू श्रीघनस्यामजी पूछन आवते ताकौ अभिप्राय आछी भांति समुझाइ कै श्रीगिरिधरजी श्रीघनस्यामजी सों कहते। और आज्ञा करते, जो–यह श्रीवल्लभ बिना कौन देखे ? यह श्रीगोकुलनाथजी एकांत बैठे चाचा हरिवंसजी आगे कहें।

सो एक समै श्रीगिरिधरजी के वचन श्रीबालकृष्णजी ने सुने। तब एक दिन श्रीगोकुलनाथजी के पास श्रीबालकृष्णजी कथा होत समै आए। तब श्रीबालकृष्णजी श्रीगोकुलनाथजी सों कहे, जो–श्रीवल्लभ ! तुम मोकों श्रीसुबोधिनी सुनाओ। तब श्रीगोकुलनाथजी ने श्रीबालकृष्णजी सों कही, जो–दादा! आप बड़े हो। सो तुम बड़े आगे मैं कैसे कहूं ? तब श्रीबालकृष्णजी ने श्रीगोकुलनाथजी सो कह्यो, जो–यामें तुम कों कछू बाधा नाहीं। तासों तुम मोकों कथा अवस्य सुनाओ। पाछें सोभा बेटी मुख्य श्रोता और श्रीबालकृष्णजी, श्रीघनस्यामजी इतने जनें एकांत बैठी कै कथा श्रीगोकुलनाथजी के श्रीमुख ते सुनते। ता ठौर दोई वैष्णव जान पावते। सो एक तो चाचा हरिवंसजी और एक निहालचंदभाई। इतनेंन आगें श्रीगोकुलनाथजी कथा अपनी बेठक में बैठि कै कहते। सो निहालचंदभाई या कारन सों कथा में जान पाते, जो–निहालचंदने कृष्ण भट पास बोहोत बार कथा सुनी है। और कृष्ण भट, चाचा हरिवंसजी और निहालचंदभाई इन तीनों जनेंन

श्रीगुसांईजी के श्रीमुख तें कथा सुनि कै पाछें आपुस में बैठि कै श्रीसुबोधिनीजी कौ बिचार करते। वाही के रस में छके रहते तासों निहालचंदभाई श्रीगोकुलनाथजी की कथा में चाचा हरिवंसजी की आज्ञा तें जान पावते। तातें श्रीगोकुलनाथजी इन आगें कृपा करि कै कथा कहते।

और श्रीगुसांईजी के पाछें हरिवंसजी सर्व छोरि कै श्रीगोकुल बास कर्‍यो। सो श्रीगोकुलनाथजी के श्रीमुख सों श्रीसुबोधिनी सुनते। ताके रस में अहर्निस मगन रहते।

सो वे हरिवंसजी प्रभुन के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए। ॥ वार्ता ॥३॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्री गुसांईजी के सेवक मुरारीदास सूर्यद्विज ब्राह्मन, पूरव में रहते तीनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं।

भावप्रकाश – सो मुरारीदास सात्त्विक भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'मंदाकिनी' है। ये विसाखाजी तें प्रगटी हैं। तातें इन के भावरूप हैं। इनकी बाललीला में आसक्ति है। सो मंदाकिनी नंदालय की सेवा में सदा तत्पर रहति हैं। तातें श्रीठाकुरजी, इन पर प्रसन्न हैं। श्रीचंद्रावलीजी कों सगरे खेल के मिलाप कौ भेद ये बतावति हैं। तातें श्रीचंद्रावलीजी कों बोहोत प्रिय हैं।

ये मुरारिदास पूरव में एक सूर्यद्विज ब्राह्मन के जन्मे। सो बरस छह के भए। तब इन के माता पिता मरे। पाछे यें अपने काका के यहां रहे। सो काका ने इनको पढ़ाए। सो कछूक पढ़े। ता पाछें ये बरस पंद्रह के भए तब इन को एक एक सन्यासी कौ संग भयौ। सो मुरारीदास वा सन्यासी के साथ कासीजी आइ रहे। घर में काहू सों, कह्यो नाहीं। सो इन के काका आदि सगरे मुरारीदास कों ढूंढे। परि पाए नाहीं। तब सब हार मानि कै बैठी रहे।

सो ता समै श्रीगुसांईजी कासीजी बिराजत हे। तहां श्रीगुसांईजी आप मनिकर्निका पै स्नान करत हे। ताही समै मुरारीदास हू स्नान करन कों तहां आए। सो श्रीगुसांईजी के दरसन करत ही मगन व्है गए। (सो) घरी एक ठाढ़े होइ रहे। पाछें श्रीगुसांईजी मुरारीदास कों दैवी जीव जानी बुलाए। जो–मुरारीदास ! आयो ? तब मुरारीदास दंडवत् करि बिनती कियो, जो–महाराज ! हों आपकी कृपा भई तो आयो, बोहोत दिन भटक्यो। सो अब आप कृपा करि सरनि लीजिए। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा कीनी, जो–गंगाजी में स्नान करि लै। हम तोकों सरनि लेइंगे। पाछें मुरारीदास स्नान किये। तब श्रीगुसांईजी आप मुरारीदास कों नाम निवेदन

करायो। पाछें मुरारीदास की कच्ची दसा जानि श्रीगुसांईजी कछूक दिन इन कों अपनी पास राखे। सो मुरारीदास कों श्रीगुसांईजी की कृपा ते मार्ग कौ स्वरूप स्फुर्यो। तब इन कह्यो, जो–महाराज ! मोकों श्रीठाकुरजी पधराइ देऊ। मेरो मनोरथ सेवा करन कौ है। तब श्रीगुसांईजी इन कों लालजी कौ स्वरूप पधराई दियो। और आज्ञा किये, जो–इनकी बालभाव सों सेवा करियो। तोकों ये सब अनुभव करावेंगे। तब मुरारीदास श्रीगुसांईजी को दंडवत् करि श्रीठाकुरजी को संपुट में पधराई अपने घर आए। सो घर खासा करि भगवत्सेवा करन लागे। परि वहां कछू व्यावृत्ति नाहीं। तातें मुरारीदास अपने गाम तें व्यावृत्ति के अर्थ पटना आए। एक कायस्थ के चाकर रहे। सो तहाँ लिखिवे कौ काम करे। रुपैया पांच महिना पावे। पाछें कछूक दिन में वह कायस्थ मर्यो। तब मुरारीदास तहां तें उठि चले। सो गौड़देस आए।

वार्ता प्रसंग – १

वे मुरारीदास गौड़ देस में जाइ नारायनदास पास चाकर रहे। सो वे नारायनदास 'दाऊद' पात्साह के चाकर कुल्लकुल्लां दीवान हते। सो वाके उहां जो कछू नारायनदास करे सो वाके सगरे राज भर में होइ। सो मुरारीदास जाइ कै नारायनदास के पास चाकर रहे। परि मुरारीदास कबहू नारायनदास कों माला तिलक न दिखाए। और मुरारीदास अपनी वैष्णवता न जनाए। तहां नारायनदास सिरकार में मुरारीदास कौ बारह रुपया कौ महिना करन लागे। तब मुरारीदास ने नारायनदास सों कही, जो–हों तो रुपैया आठ कौ महीना लेहुंगो। परि हों पहर दिन चढे तुम्हारे पास आयो करोंगो। और जब घरी दोइ दिन पाछिलो रहेगो तब हों जायो करोंगो। यह करार ते तुम्हारे मन में आवे तो चाकर मोकों राखो। नाँतरु नाहीं करो। सो यह बात मुरारीदास के मुख तें सुनि कै सगरी सभा आश्चर्यवंत होइ रही। जो–भाई ! याने यह कहा माँग्यो ?

भावप्रकाश – क्यों ? जो–और मनुष्य तो चाकरी कौ द्रव्य जादा माँगे और ये तो हम कहत हैं वासों हू थारो कहत है ? सो नारायनदास और सगरी सभा वा भेद कौ समुझे नाहीं।

तातें चक्रत व्है रहे।

पाछें मुरारीदासने कह्यो सो नारायनदास माने। सो मुरारीदास के कहे प्रमान नारायनदास ने मुरारीदास कों चाकर राखे। सो मुरारीदास जब दरबार में जाते तब इन के तेज के आगें नारायनदास चाकर से लगते। और कोई लिखिवे कौ काम चार पहर दिन में करे, सो मुरारीदास उन सों सरल चारि घरी में लिखे। सो मुरारीदास कों देखी कै नारायनदास और सब कोई बिस्मित होइ रहे। परि मुरारीदास कौ भेद नारायनदास हू न जाने।

और मुरारीदास के माथे श्रीगुसांईजी के पधराए श्रीबालकृष्णजी की सेवा बिराजति हैं। सो ठाकुरजी मुरारीदास सों बोहोत ही सानुभावता जनावते। श्रीठाकुरजी प्रत्यच्छ मुरारीदास सों वार्ता करते। जो प्रभुन कों चहियत सो मुरारीदास पास माँगि लेते। और जो वा समै मुरारीदास प्रभुन कों वह बस्तू न देते तब श्रीबालकृष्णजी प्राकृत बालक की नाँइ झगरो मुरारीदास सों करते। तब मुरारीदास प्रभु जानि कै जो कछू श्रीठाकुरजी माँगते सोई बस्तू तत्काल श्रीबालकृष्णजी के श्रीहस्त में देते। या भांति मुरारीदास अलौकिक लीला कौ अनुभव आस्वादन करते। सो वे मुरारीदास रात्रि प्रहर एक पाछली सों उठि देह कृत्य करि स्नान करि मंदिर में जाइ रसोई कछूक करि श्रीठाकुरजी कों जगाई बालभोग धरते। फेरि रसोई में जाइ समै भए भोग सराइ श्रीठाकुरजी की मंगला आर्ति करि, सिंगार करि, सिंगारभोग धरते। पाछें रसोई में जाइ सर्व सेवा सों

पहोंची भोग सराइ आर्ति करते। ता पाछें रीति अनुसार सामग्री ठलाइ प्रभुन कों पलना झुलाइ, राजभोग समर्पि सिज्या की सेवा करि जप करि, समयानुसार भोग सराइ आर्ति करि अनोसर करते। सो मुरारीदास श्रीठाकुरजी कों अनोसर की झारी भरि कै कछु सामग्री चवेना आगें धरते। पाछें मुरारीदास प्रसाद लैकै कपड़ा पहरि कै जब दरबार कों जान लगते तब श्रीठाकुरजी मुरारीदास के पाछें पाछें लागे डोलते। तब नाना भांति के खिलोना मुरारीदास श्रीठाकुरजी के श्रीहस्त में दैकै कहते, जो–आज हों तिहारे काजे यह आछी बस्तू लै आउंगो। तब श्रीठाकुरजी मुरारीदास कौ अंचल छोरते। तब घर के द्वार कौ तारो दे बाहिर जाते। तब श्रीठाकुरजी नीचे उतरि भीतर तें घर की सांकरि दैकै खेलते। सो जब संध्या समै मुरारीदास द्वार पै जाइ कै पुकारते, जो–सांकरि खोलो। तब श्रीठाकुरजी द्वार पास आइ कै पूछते, जो–तू आज हमारे काजे कहा सामग्री लायो है ? तब मुरारीदास कछू फल फलादिक ल्याये होते तिन सबन कौ नाम लैते। तब श्रीठाकुरजी भीतर की सांकरि खोलते। और कोई दिन मुरारीदास सामग्री तो बजार तें लावते, परि श्रीठाकुरजी के हास्यावलोकन कों सामग्री दुराइ राखते। और प्रभु जब किवाड़ खोलन पधारते तब श्रीठाकुरजी वाइ प्रकार सों पूछते। तब मुरारीदास कहतें, लाला ! आजु तो कछु सामग्री पाइ नाहीं। तब श्रीठाकुरजी कहते, जो–हम हू आज सांकरि न खोलेंगे। तब मुरारीदास बाहिर तें बोहोत मनुहार करते। तब सब सामग्री कौ नाम लैते तब श्रीठाकुरजी सांकरि खोलते।

पाछें मुरारीदास द्वार भीतर की सांकरि दै कै जब चौक में जाते तब ही मुरारीदास सों श्रीठाकुरजी झगरो करत ऊपर चढते। सो सामग्री जब मुरारीदास सँवारि धोई कै प्रभुन आगें धरते तब श्रीठाकुरजी आरोगते।

भावप्रकाश – तहां यह संदेह होंइ, जो–मुरारीदास स्नान करे बिना श्रीठाकुरजी कों मेवा भोग कैसें धरते ? यह तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के मार्ग की रीति नाहीं है ? और श्रीठाकुरजी हू मुरारीदास को न्हाये बिना स्पर्स कैसे करें ? तहां कहत हैं, जो–भगवत्स्वरूप में दोइ प्रकार के स्वरूप हैं। एक सर्वोद्धारक (और) दूसरो भक्तोद्धारक। सो आगें कहि आए हैं। सो यहाँ भक्तोद्धारक स्वरूप सों श्रीठाकुरजी मुरारीदास को सर्व सुख देत हैं। क्यों ? जो भक्तोद्वाराक स्वरूप कों अपरस की अपेक्षा नाहीं। ये तो प्रेम के चाहक हैं। सो मुरारीदास कौ प्रेम देखि कै निज स्वरूप में सों प्रगट होंइ मुरारीदास के पास पधारते। सो बालक की नांई सर्व सुख कौ अनुभव मुरारीदास कों करावते।

तब मुरारीदास स्नान करि रसोई करते। पाछें सेन भोग धरि श्रीठाकुरजी की रसोई पोति, भोग सराइ, आर्ति करि, पाछें, श्रीठाकुरजी कों पोढाइ बाहिर की टहल सों पहोंची प्रसाद लै दूसरे दिन कौ सीधो सामग्री बीनि रसोई में धरि कै, मुरारीदास सोवते। या प्रकार मुरारीदास चाकरी करन जाते। पाछें जब सांझ को दरबार तें घर आवते तब नौतन नौतन फलादिक साग जो कछू बजार में देखते सो थोरो थोरो सब लै आवते। परि कछू सामग्री लिये बिना घर न आवते। सो जा दिन कछू उत्थापन कों फलफलादि ना मिलते ता दिन कछू सूको मेवा पसारी की हाट तें लै घर आवते।

भावप्रकाश–क्यों ? जो–उत्थापन भोग में मेंवा अवस्य चहिए। ये पुलिंदिनी के भाव सों (सेवा) है। सो श्रीगोवर्द्धन की कंदारन में श्री ठाकुरजी जागे हैं तब पुलिंदिनी फल फूल मेंवा भोग धरत हैं।

या प्रकार भावसों मुरारीदास श्रीबालकृष्णजी कों लाड़ लड़ावते। परि यह भेद कोऊ न जानतो।

पाछें केतेक दिन में नारायनदास ने मुरारीदास के पाछें जासुस लगायो। सो वह जासुस सों नारायनदास ने कही, जो–तू ऐसी भांति इन के साथ रहियो, जो–ये जाने नाहीं। सो मुरारीदास जब दरबार तें उठते तब वह जासुस इन के पाछें पाछें जातो। सो सर्व क्रिया इन की देखतो। पाछें जब ये मुरारीदास क़िवाड़ खुलाई कै भीतर जाते, तब वह जासुस नारायनदास पास आइ सब समाचार जो इहां आइ देखतो सो सब कहतो। परि भीतर की बात कौ भेद न पावतो। सो नारायनदास के मन में आतुरता बोहोत भई। तब नारायनदास मुरारीदास सों पूछ, परि मुरारीदास नारायनदास कों अपने मन की बात न केहे।

भावप्रकाश–काहेतें ? जो–नारायनदास अभी वैष्णव है नाहीं। सो वैष्णव बिना उन के आगें अपनो धर्म कैसें प्रकास करे ? करे तो धर्म जांई। तातें मुरारीदास अपनो भेद न कहेते।

सो एक दिन मुरारीदास सांझे के समै दरबार सों घर कों चले। तब नारायनदास मुरारीदास के पाछें पाछें इन के घर लों आए। सो ये तो अपने नित्य की रीति सों घर कों आए। सो जाइ कै घर के किंवाड़ दैन लागे। तब फिरि कै मुरारीदास देखे तो नारायनदास ठाड़े हैं ! सो मुरारीदास सों नारायनदास ने कही, जो–मुरारीदास ! हम आजु तिहारो घर देखन आए हैं। तब मुरारीदास ने नारायनदास सों कही, जो–अब तो मैं तुम्हारो चाकर नाहीं। मेरे तुम्हारे बचन है सो सांझ तांई तुम्हारे काम में रह्यो। फेर सवारे प्रहर दिन चढे तिहारे चाकरी में आऊंगो। तुम

मेरे पाछें पाछें क्यों आए ? यह कहि कै मुरारीदास ने किवाड़ दै लिये। परि नारायनदास कों अपने घर में आवन न दीने।

भावप्रकाश–काहेतें ? जो–मुरारीदास कों एक श्रीठाकुरजी कौ आश्रय है। तातें उन नारायनदास कौ भय नाहीं कियो। और मुरारीदास जाने, जो–नारायनदास की साँची आतुरता होइगी तो दीनता सों फेरि हू आवेगो। तातें एक बेर आवन नाहीं दियो।

तब नारायनदास अपने घर फिरि आए। परि नारायनदास ने मुरारीदास की बात देखि कै मन में जान्यो, जो–ये कोई महापुरुष हैं। अपनो स्वरूप कोई कों दिखावत नाहीं है। पाछें जब दूसरे दिन राजद्वार तें सांझ समै घर को चले तब नारायनदास वाही प्रकार मुरारीदास के घर आए। सो जब ही मुरारीदास किवाड़ दैन लागे तब नारायनदास मुरारीदास के पांवन परि बोहोत बिनती करे। तब नारायनदास की बिनती जानि कै नारायनदास कों मुरारीदास ने अपने घर में आवन दिये।

भावप्रकाश–सो यातें, जो–जाने, दैवी जीव विना ऐसी दीनता और में न होंई। और लीला में नारायनदास 'प्रेमलता' हैं। सो 'प्रमलता' 'मंदाकिनी' की सखी हैं। तातें यहां हू मुरारीदास द्वारा इन कौ अंगीकार है। यासों नारायनदास की दीनता देखि मुरारीदास ने उन कों घर में आवन दीने।

पाछें नारायनदास मुरारीदास सों बोहोत बिनती करि पूछत भए, जो–मुरारीदास तुम्हारी कौन संप्रदाय है ? और तुम्हारे घर में दूसरो तो कोई सहायता कों दीसत नाहीं। तातें तुम घर में आई कहा करत हो ? तब मुरारीदास नारायनदास की बोहोत दीनता जानि, मुरारीदास नारायनदास सों कहें, जो–हमारो श्रीवल्लभी संप्रदाय है। हमारे गुरु प्रभु श्रीगुसांईजी हैं। तिन के हम सेवक

हैं । तब तो नारायनदास मुरारीदास के पांवन पर्‌यो । और मुरारीदास सों नारायनदास ने बिनती करी, जो–मुरारीदास ! तुम मोकों अपनो सेवक करो । तब मुरारीदासने नारायनदास सों कह्यो, जो–सेवक कौ तो श्रीगुसांईजी इहां पधारे तब ही जोग बने । के तुम अड़ेल जाऊ तो यह जोग बने । के तुम इहा सों प्रभुन पास मनुष्य पठाओ तब जो उत्तर आवे सो हम करें । तब नारायनदास नें मुरारीदास सों कही, जो–मुरारीदास ! हम कों तो श्रीगुसांईजी आप कछू जानत नाहीं । तातें तुम कृपा करि बिनती पत्र लिखि कै सिरकार सों मनुष्य कासिद पठाओ । पाछें मुरारीदास श्रीठाकुरजी की सेवा करन गए तहां लगि नारायनदास मुरारीदास के घर बैठे रहे । पाछें जब मुरारीदास श्रीठाकुरजी की सेवा सों पहोंचि चुके तब नारायनदासने फेरि मुरारीदास सों बिनती करी, जो–अब आप पत्र श्रीगुसांईजी कों लिखि देऊ, तो हों कचहरी में जाइ कै कासद जोड़ी चलती करों । ऐसें मुरारीदास सों कहि कै मुरारीदास पास दोइ पत्र नारायनदास ने लिखवाइ लिये । पाछें नारायनदास अपनी कचहरी आइ जोड़ी दोई कासिदन की वे पत्र दै अड़ेल कों पठाई । तिन कासिदन सों नारायनदास ने कही, जो–मेरे पास इन पत्रन कौ उत्तर बेगि लाओगे तिन कों हों इनाम देऊंगो । सो वे कासिद नारायनदास के, बेग ही श्रीगुसांईजी पास आइ पहोंचे । सो मुरारीदास के पत्र कोई वैष्णवने बांचि कै श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–राज ! इन पत्रन कौ उत्तर मुरारीदास कों कहा लिखिवे में आवे ? तब श्रीगुसांईजी अपने श्रीहस्त सों अष्टाक्षर

लिखि दिये। और श्रीमुख तें कहे, जो–मुरारीदास कों लिखि देऊ यह, जो–अपने श्रीठाकुरजी आगें नारायनदास कों तुम नाम सुनाइयो। और हम हूँ कछूक दिन में आवत हैं। सो श्रीगुसांईजी की आज्ञा प्रमान मुरारीदास कों लिखि पठाए। तब श्रीगुसांईजी के इहां तें वह उत्तर कौ पत्र लै कै वे कासिद च्यारों चले। सो थोरेइ दिन में नारायनदास पास आए। तब नारायनदास उन कासिदन के उपर बोहोत प्रसन्न भए। सो एक एक मोहौर और एक एक पाग दै उन कों बिदा करे। पाछें नारायनदास आपु ही मुरारीदास के घर आइ वह पत्र मुरारीदास के हाथ में नारायनदास ने दियो। सो पत्र मुरारीदास ने बांचि कै नारायनदास सों कह्यो, जो–अब तुम स्नान करो। तब नारायनदास उहांई स्नान करे। पाछें मुरारीदास श्रीठाकुरजी कौ राजभोग सराई कै नारायनदास कों श्रीगुसांईजी के पत्र द्वारा उपदेस कर्‌यो। पाछें नारायनदास कों मुरारीदास ने श्रीकृष्ण–स्मरन करे। तब नारायनदास ने मुरारीदास सों बिनती करी, जो–अब तुम यह अनुचित क्यों करत हो? जो हम कों तुम प्रनाम करे? तब मुरारीदास ने नारायनदास सों कहीं, जो–अब तो हमारे तुम्हारे श्रीकृष्ण–स्मरन कौ व्यवहार भयो है। तातें तुम और भाव मन में मति लाओ। पाछें नारायनदास कों मुरारीदास ने श्रीबालकृष्णजी के दरसन कराए। सो दरसन करि नारायनदास बोहोत प्रसन्न भए। पाछें नारायनदास, मुरारीदास घर प्रसाद लै दरबार आए। ता दिन तें नारायनदास नित्य मुरारीदास के घर श्रीठाकुरजी के दरसन कों आवते। और काहू

दिन जब दरसन न पावते तब ता दिन नारायनदास मुरारीदास के साथ सांझ कों आइ दरसन करि कै प्रसाद लैते । पाछें श्रीगुसांईजी पास पांचमें दिन नारायनदास कासिद पठावते । तामें यह लिखते, जो–राज ! बेगि पधारिए । यों जब श्रीगुसांईजी नारायनदास की बोहोत ही आर्ति जाने, और मुरारीदास ने हू जानी, जो–नारायनदास के मन में श्रीगुसांईजी के दरसन की बड़ी अभिलाषा है । तब मुरारीदास ने श्रीगुसांईजी कों बिनती पत्र लिखि पठायो । तब प्रभु अड़ेल तें पुरुषोत्तमपुरी पधारिवे कौ बिचार किये । और जब ही नारायनदास सों मुरारीदास नें यह कही, जो–अब श्रीगुसांईजी थोरेइ दिन में इहां पधारत हैं । तब नारायनदास अपने मन में बोहोत ही प्रसन्न भए । और जा दिन तें नारायनदास मुरारीदास पास नाम पाए ता दिन तें नारायनदास मुरारीदास की बोहोत कानि करते । और नारायनदास अपने मन में मुरारीदास कों या प्रकार जानते, जो मेरे सर्वस्व हैं सो मुरारीदास हैं । सो नारायनदास मुरारीदास की संगति तें ऐसें भगवदीय भए । तातें संग करनो तो भगवदीय कौ करनो ।

सो वे मुरारीदास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे । तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं । सो कहां तांई कहिए ।

वार्ता ॥४॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक नारायनदास कायस्थ, दीवान, गौड़ देस के बासी, तिनकी वार्ता कौ भावा कहत हैं –

भावप्रकाश–नारायनदास राजस भक्त हैं । लीला में इन कौ नाम 'प्रेमलता' है । ये बिसाखाजी तें प्रगटी हैं, तातें इनके भाव रूप हैं । सो 'प्रेमलता' नारायनदास कौ प्रागट्य और

'प्रेमलता' की एक अंतरंग सखी है 'गौरांगिनी'। सो इनकी स्त्री वीरां कौ प्रागट्य।

सो प्रेमलता की आसक्ति बाललीला में बोहोत है। तातें ये नंदालय में अष्ट प्रहर रहति हैं। तहां 'मंदाकिनी' सों इन कौ सदा मिलाप रहत है। ये दोऊ सखी हैं। सो दोनो श्रीचंद्रावलीजी की परम सहायक हैं। श्रीठाकुरजी श्रीचंद्रावलीजी के मनोरथ की सब सामग्री 'प्रेमलता' सिद्ध करि देति हैं। तातें ये श्रीचंद्रावलीजी को प्रिय हैं। और 'गौरांगिनी' निकुंज लीला में प्रवीन है। ये श्रीचंद्रावलीजी की निकुंज लीला में सदा तत्पर रहति हैं। इन कौ अंग बोहोत सुंदर गौर वरन है, श्रीस्वामिनीजी सदृश। तातें इनकों देखि कै श्रीठाकुरजी कों श्रीस्वामिनीजी की सूधि आवति हैं। तासों ये श्रीठाकुरजी कों हू बोहोत प्रिय हैं।

सो एक दिन श्रीचंद्रावलीजी नंदालय में श्रीठाकुरजी सों मिलन कों आई। तहां प्रेमलता मिली। उन सों श्रीचंद्रावलीजी कह्यो, जो–प्रेमलता! देखि तो श्रीजसोदाजी कहा करति है? तब प्रेमलता जाइ कै देखें तो श्रीजसोदाजी दहीं विलोवति है। सो प्रेमलता आइ कै श्रीचंद्रावलीजी सों कह्यो, जो–श्रीजसोदाजी तो, दहीं बिलोवति हैं। तब श्रीचंद्रावलीजी श्रीठाकुरजी कों मिलन कों आंगन के द्वार व्है पधारी। पाछें वाही समै बिसाखाजी तहां आइ। सो बिसाखाजी कों प्रेमलता मिली। सो उन पूछ्यो जो–प्रेमलता! श्रीठाकुरजी कहां हैं? तब प्रेमलता कह्यो, जो श्रीठाकुरजी तो आंगन के पाछें बिराजत हैं। तब बिसाखाजी उहां गई। सो दूरि ही तें श्रीचंद्रावलीजी और श्रीठाकुरजी कों देखे, तब श्रीठाकुरजी हू इन देखी। सो संकोच कियो। तब श्रीचंद्रावलीजी पाछें फिरि कै देखे तो बिसाखाजा दूरि ठाड़ी हैं। सो श्रीठाकुरजी तो तत्काल वहां तें पधारे। तब श्रीचंद्रावलीजी ने बिसखाजी सों कह्यो, जो–बिसाखा! तैनें यह कहा कियो? सो बिसाखाजी तो कांपन लागी। तापाछें बिनती करि कै अपराध क्षमा करवायो। और प्रेमलता की सब बात बिसाखाजी ने श्रीचंद्रावलीजी सों कही। जो–प्रेमलता नें श्रीठाकुरजी यहां बताए तब मैं आई हों। तब श्रीचंद्रावलीजी बिसाखाजी कों साथ लै प्रेमलता के पास आई। सो प्रेमलता सों श्रीचंद्रावलीजी कह्यो, जो–प्रेमलता! तैनें बिसाखाजी सों मेरे आइवे की क्यों नाहीं कही? तब प्रेमलता चुप करि रही। तब श्रीचंद्रावलीजी कह्यो, जो–तैनें श्रीठाकुरजी के मिलन में अंतराइ कियो। तासों तोकों हू अंतराइ होइगो। सो ता अपराध सों प्रेमलता भूतल पै आई।

सो प्रेमलता गौड़ देस में एक कायस्थ के जन्मी। सो नारायनदास भए। और इनकी अंतरंगिनी सखी 'गौरांगिनी' वाही गाम में दूसरे कायस्थ के घर प्रगटी। सो वीरां भई। सो ये दोऊ नौ–दस बरस के भए तब दोउन के माता पिता ने दोउन कौ ब्याह कियो। सो नारायनदास कौ पिता राज्य कौ दीवान हतो। सो पात्साह की उन पर बोहोत निघा रहती। राज्य

में वह करतो सोई होतो। सो नारायनदास कौ पिता नारायनदास कों अपनी पास राखे। राजद्वार में जांइ तहां हू नारायनदास कों साथ लै जांइ। सो नारायनदास राजद्वार के काम में बड़े प्रवीन भए। पाछें नारायनदास बरस पच्चीस के भए तब नारायनदास कौ पिता मर्‌यो। तब पात्साहने नारायनदास कों दीवानगीरी सोंपी। सो नारायनदास राजकाज ऐसो करे, जो–पात्साह इन के बस व्है गयो। अरु सब लोग (हू) नारायनदास की बोहोत सराहना करन लागे। पाछें नारायनदास कों मुरारीदास कौ संग भयो। सो प्रकार मुरारीदास की वार्ता में उपर कहि आए हैं। सो मुरारीदास के संग तें जा प्रकार नारायनदास श्रीगुसांईजी के सेवक भए सो अब कहत हैं।

वार्ता प्रसंग–१

सो वे नारायनदास कों श्रीगुसांईजी के दरसन की आर्ति बोहोत भई। तब मुरारीदास सों नारायनदास ने कही, जो–मुरारीदास बिनती पत्र लिखि कै मनुष्य अड़ेल कों बिदा करो। तब पहिलें ही नारायनदास के पास श्रीगुसांईजी कौ बधैया आयो। सो वा बधैयाने नारायनदास सों कह्यो, जो–प्रभु कोस साठि उपर नाव में पधारे आवत हैं। सो काल्हि सांझ समै इहां पधारेंगे। तब नारायनदास वाही समै मुरारीदास कों साथ लैके चले। सो नाव में पांच सात मनुष्य और वह बधैया, नारायनदास, मुरारीदास एई बैठे। तब तत्काल नाव दोराई।

भावप्रकाश–सो यह सनेह की रीति है, जो–प्रभु पधारे तब साम्हे जांइ पधराइ लावने, उत्साह पूर्वक।

और वा बधैया ने मुरारीदास सों कहीं, जो–मोसों श्रीगुसांईजी ने कही है, जो नारायनदास कों नाव में सावधानता सों राखियो। हमारी नाव जब नारायनदास की नाववारेन कों दीसेगी तब नारयनदास सों नाववारे हमारी नाव के समाचार कहेंगे। तब नारायनदास हमारी नाव कों देखि कै देहानुसंधान भूलि जाइगो। तासों उठि दोरेगो। सो वाकों गंगाजी की खबरि न रहेगी। तातें

तुम सावधान रहियो । जब नाव सों नाव बांधी जाइ तब नारायनदास कों छोरियो, यों कही ।

भावप्रकाश–काहेतें ? श्रीगुसांईजी आप अंतरजामी हैं । तातें लीला कौ सब प्रकार जानत है । तासों पहिले ही सों सावधान किये ।

सो जब ही नाव चली तब ही नारायनदास ने मलाहन सों कही, जो–तुम मोकों काल्हि दुपहर कों श्रीगुसांईजी की नाव के दरसन करावो तो हों तुमकों माला एक सोने की पहिराऊँ । तब मलाहन नाव बोहोत उतावली चलाई । सो नारायनदास के कहे प्रमान ही श्रीगुसांइजी की नाव कौ प्रथम मलाहन कौ दरसन भयो । तब मलाहन नारायनदास सों सलाम करि कै कह्यो, जो–साहिब ! श्रीगुसांईजी की नाव के वे दरसन होत है । सो मलाह दूरि सों श्रीगुसांईजी की नाव कौ नारायनदास कों दिखाई । तब तो नारायनदास प्रेम में विवस होइ तत्काल उठि कै अपनी नाव में सों श्रीगुसांईजी की नाव के सन्मुख चलत ही भए । तब मुरारीदास आदि नारायनदास कों पकरि राखे । पाछें मुरारीदास श्रीगुसांईजी की और और वार्ता करि कै नारायनदास कों आप्यायन (?) कराइ बैठारे । तब मुरारीदास सों चर्चा में नारायनदास लागे । परि मन तो नारायनदास कौ श्रीगुसांईजी की नाव विषे हतो । सो जब ही श्रीगुसांईजी की नाव निकट आई तब ही मलाहन तत्काल नाव सों नाव बांधी । पाछें मुरारीदास ने नारायनदास कों छोरे । सो नारायनदास श्रीगुसांईजी के चरनारविंद ऊपर प्रनाम करते ही अचेत होइ गए । मानो प्रान निकसि गए ।

भावप्रकाश–काहेतें ? जो–प्रभुन या भांति अलौकिक रूप सों नारायनदास कों दरसन दिये। सो दरसन होत ही नारायनदास वा स्वरूप में मगन व्है गए। सो लोगन कों अचेत से दीसे।

सो मुरारीदास के अतिरिक्त सब कोऊ रोवन लागे। तब श्रीगुसांईजी मुसिकाइ मुरारीदास की ओर देखि कै कहे, जो–तुम सब यहां तें दूरि होइ जाउ। तब वे सगरे सरकि गए। तब श्रीगुसांईजी ओट कराइ कै नारायनदास के मस्तक ऊप श्रीहस्त फेर्‌यो। और नारायनदास के कान में आप 'श्रीकृष्ण शरणं मम' यह मंत्र सुनाए। तब तो नारायनदास जागि वे सावचेत होइ, ठाढ़े होइ, श्रीगुसांईजी कौ मुखारविंद अवलोक करि, दरसन करत भए। तब श्रीगुसांईजी नारायनदास सों पूछे जो–नारायनदास ! अब तांई तुम कहां हते ? तब नारायनदार बिनती करि कहे, जो–महाराज ! हों तुम्हारे चरनारविंद नीचे आछी भांति पर्‌यो हो। आप यह कहा कियो ! तब श्रीगुसांईजं नारायनदास तें कहे, जो–अबही तुम कों सेवा करनी हैं। पाछे नारायनदास बोहोत भक्ति–भाव सों श्रीगुसांईजी कों अपुने घ पधराए। पाछें आप और घर के समर्पन लिए। पाछें श्रीगुसांईजं अपने पादुकाजी की सेवा नारायनदास के माथे पधराए। त पाछें नारायनदास की दसा देखि कै श्रीगुसांईजी चलिवे की कि न सके। तब एक समै नारायनदास सों गोविंद भट ने कही जो–नारायनदास ! अब तुम श्रीगुसांईजी की बिदा करो। तब नारायनदास गोविंद भट के बचन सुनि 'हां जी' करि रहे। पा कोई दिन पधारिवे की चर्चा न करे। यों करत केतेक दिन बीत तब एक समै श्रीगुसांईजी के साथ में दोई ब्रजबासीन कों पानं

कौ उपद्रव भयो। तब तो नारायनदास अपने मन में डरपि कै श्रीगुसांईजी सों बिनती करि कहे, जो–राज ! इहां को पानी आछौ नाहीं। तातें राज ! अब आप पधारिए। पाछें नारायनदास श्रीगुसांईजी कों बिदा किये। सो श्रीगुसांईजी पुरुषोत्तमपुरी होंइ आए। पाछें दिन दोइ चार बाग ही में श्रीगुसांइजी नारायनदास के आग्रह सों बिराजे। ता पाछें श्रीगुसांईजी अड़ेल पधारे। सो जहां लों श्रीगुसांईजी नारायनदास के घर बिराजे तहां लों नारायनदास नित्य नौतन सामग्री धोती, उपरेना, बागा, सिज्या, वस्त्र, चरन–वस्त्र पर्यंत सब नए नएई करते। या भांति नारायनदास श्रीगुसांईजी की सेवा करते। तातें श्रीगुसांईजी अड़ेल तें प्रति वर्ष नारायनदास कों प्रसादी गद्दल पठावते। ऐसी कृपा श्रीगुसांईजी नारायनदास ऊपर करते।

वार्ता प्रसंग – २

और एक समै श्रीगुसांइजी श्रीरुक्मिनी बहूजी, सोभा बेटीजी और श्रीगिरिधरजी या प्रकार सब कुटुंब सहित श्रीजगन्नाथराइजी के दरसन कों पुरुषोत्तम क्षेत्र पधारे। सो प्रभु श्रीजगन्नाथजी में महीना एक लों पुरुषोत्तमपुरी में बिराजे। सो जा समै श्रीगुसांईजी श्रीजगन्नाथराइजी सों बिदा भए तब जो कछू अपने साथ सामान हतो सामग्री, डेरा, पात्र, घोड़ा, बरध, ऊंट, यह सब श्रीगुसांईजी श्रीजगन्नाथराइजी की भेंट करि कै पुरी सों बिदा भए। जो–जो अंग ऊपर अंग–वस्त्र पहिरे हते सो तो रहे। और सर्व भेंट करि पधारे।

भावप्रकाश – यहां यह बड़ो संदेह हैं, जो – श्रीगुसांईजी आप पुष्टिमार्ग के चलावनहारे हैं। सो पुष्टिमार्ग में तो श्रीगोवर्द्धननाथजी ही मुख्य हैं, सर्वस्व हैं। सो श्रीजगन्नाथराइजी कों

सर्व भेंट क्यों किये ? तहां कहत हैं, जो–श्रीजगन्नाथराइजी में श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कौ संबंध हैं। या भाव सों श्रीगुसांईजी आप श्रीजगन्नाथराइजी के दरसन कों बेर बेर पधारत हैं। और भेंट हू करत हैं। तातें श्रीआचार्यजी कौ संबंध जानि श्रीजगन्नाथराइजी के दरसन आदि करने। यह सिद्धांत भयो। दूसरो अभिप्राय यहू है, जो–श्रीगुसांईजी भक्तिमार्ग के आचार्य हैं। तातें जहां कहूँ भक्तिमार्ग की रीति सों भगवत्स्वरूप बिराजत होंइ वहां आचार्यन कों अवस्य जानो चाहिए। तातें श्रीगुसांईजी हू श्रीजगन्नाथराइजी के दरसन को जात हैं, भेंट करत हैं। या प्रकार श्रीगुसांईजी आप भक्तिमार्ग की मर्यादा के रक्षक हैं। यह गौन भाव है।

सो पांवन ही चारों स्वरूप पुरी में सों पधारे। यह प्रभुन की इच्छा सो नारायनदास ने प्रथम ही अपने घर बैठे जानी। तातें नारायनदास इतनो सामान प्रथम ही अपने ह्यां तें श्रीगुसांईजी के सन्मुख चलाए हते। तिन के साथ के मनुष्यन तें नारायनदास ने यह कहि दियो हतो, जो–यह सब सामान तुम पुरी के बाहिर रहि कोस एक के ऊपर राखियो। और, जो–तुम पुरी के भीतर लै जाहुगे तो यह सर्व श्रीगुसांईजी श्रीजगन्नाथराइजी की भेंट करि देंइगे। तिन वस्तून के नाम–सुखपाल॥३॥ घोड़ा ॥२॥ ऊंट ॥१॥ बरद–वानी, डेरा, कनात, पात्र, सामग्री, आभूषन, वस्त्र, दोऊ भांति के, सिज्या और जो – कछू बस्तू चहिए ये सब पठवाए। सो नारायनदास के मनुष्य श्रीगुसांईजी के आइवे को पेंड़ो देखि कै जहां नारायनदास बैठिवे की कहे हते ताही ठौर वे मनुष्य बैठे हते। तब जब ही श्रीगुसांईजी पुरी में तें पांवन पधारे इतने ही उन वह सब सामग्री श्रीगुसांईजी की भेंट करि नारायनदास की दंडवत् करि कै बिनती करी। जो–महाराज ! यह सब नारायनदास आप को भेंट पठाए हैं। आप अंगीकार करिए। तब श्रीगुसांईजी उन मनुष्यन सों पूछे, जो–तुम यह सब बस्तू पुरी के भीतर काहे न लाए ? तब उन मनुष्यन श्रीगुसांईजी सों

बिनती करी, जो–महाराज ! हम को नारायनदास की यही परवानगी ही। तासों हम उहां न लाए। तब श्रीगुसांईजी अपने मन में नारायनदास ऊपर बोहोत प्रसन्न भए। पाछें एक सुखपाल में तो श्रीगुसांईजी आपु बिराजे। और एक सुखपाल में श्रीरुक्मिनी बहूजी बिराजे। और एक सुखपाल में श्रीसोभा बेटीजी बिराजे। और श्रीगिरिधरजी घोड़ा ऊपर असवार भए। पाछें ता ठौर तें बीस कोस कों कूंच कर्यो। सो 'कोकुवा' गाम में पधारे। तहां नारायनदास प्रभुन के साम्हें आइ कै श्रीगुसांईजी कों बोहोत ही भक्ति भाव सों अपने घर पधराइ ल्याये। सो सत्ताईस दिन श्रीगुसांईजी उहां बिराजे। सो नारायनदास नित्य नौतम सामग्री नित्य नए वस्त्र करावते प्रभुन के। परि नारायनदास कौ मन में तो यह मनोरथ रह्यो, जो–याही भांति प्रभु एक बरस इहां बिराजे तो हों भली भांति सों सेवा करों। परंतु कहा करें ? श्रीरुक्मिनी बहूजी कों गर्भाधान है। तासों नारायनदास प्रभुन कों बेगि ही बिदा करे। तब इतनो सामान और हू चलते समै नारायनदास भेंट किये। श्रीरुक्मिनी बहूजी कों तो पदिक सुध्धां माला पांच अति उत्तम मुक्ताफलन की भेंट करें। और श्रीसोभाबेटीजी और श्रीगिरिधरजी कों बोहोत आभुषन भेंट किये। पाछें श्रीगुसांईजी आगें बोहोत द्रव्य भेंट करि कै नारायनदास बिनती करे, जो महाराज ! एक बार याही प्रकार हों बिनतीपत्र लिखि पठाऊं तब आपु कृपा करि कै पधारोगे। तब श्रीगुसांईजी नारायनदास की आर्ति देखि अति प्रसन्न होंइ कै कहैं, जो नारायनदास ! तेरो मनोरथ सिद्ध होइगो।

और एक स्वरूप नारायनदास कों प्राप्त भयो हतो। तिन कों श्रीगुसांईजी वा समै नारायनदास के घर पाट बैठारे हते। तिनकी सेवा नारायनदास श्रीगुसांईजी की आज्ञा प्रमान करते। पाछें श्रीगुसांईजी नारायनदास के देस तें अड़ेल पधारे। तब बालक सब साम्हे प्रभुन कों पधरावन कों पधारे। तामें और सब भाई तो प्रथम श्रीगुसांईजी पास पधारे। और श्री रघुनाथजी तो प्रथम श्रीरुक्मिनीजी पास गए। सो सुखपाल में माताजी के पास जाइ बैठे। तब श्रीरुक्मिनीजी वह हार अपने श्रीकंठ तें उतारि कै श्रीरघुनाथजी कों पहराइ दिये। सो श्रीरघुनाथजी वह माला श्रीकंठ में पहरि कै श्रीगुसांईजी कों मिले। पाछें श्रीरघुनाथजी श्रीगुसांईजी पास बिराजे तब और बालकन श्रीरघुनाथजी सों पूछी, जो–यह पदिक कौन पास तें तुम पहरि आए। तब श्रीरघुनाथजी ने कही, जो–हम कों तो माताजी ने यह पदिक दियो है। तब वे तीनों भाई श्रीरुक्मिनीजी पास आइ दंडवत् करि कहे, जो–माताजी! जैसो पदिक श्रीरघुनाथजी कों दियो है तैसो पदिक हमहू कों देउ। तब श्रीरुक्मिनीजी पदिक तीन उन तीनों भाईन कों दिये। सो अति आनंद सों पदिक पहरि माताजी पास तें तीनो भाई फिरे। सो श्रीगुसांईजी पास आइ बिराजे। तिन के नाम श्रीगोविंदराइजी॥ श्रीबालकृष्णजी॥ श्रीगोकुलनाथजी॥ ए तीनों भाई पदिक ऐक ही से पाइ अति प्रसन्न भए। *

पाछें श्रीगुसांईजी आपु घर पधारे। और नारायनदास और नारायनदास की स्त्री ये दोऊ जन श्रीठाकुरजी की सेवा भली भांति सों करन लागे। सो नारायनदास तो श्रीठाकुरजी कों जगाइ

* यह पदक वाला प्रसंग कृष्ण भट की पोथी का है।

मंगला भोग धरि जप करि समै भए भोग सराइ मंगलार्ति करते। पाछें श्रीठाकुरजी कों स्नान कराइ सिंगार करि सिंगार–भोग धरि नारायनदास दरबार कों जाते। सो नारायनदास आपु इतनी सेवा करते। और वीरां रसोई करि श्रीठाकुरजी कों राजभोग धरि सब रसोई पोति भोग सराइ राजभोग आर्ति करि श्रीठाकुरजी कों अनोसर करि वह प्रसाद ठलाइ ढांकि राखती। पाछें जब दरबार तें नारायनदास घर आवते तब वह सीरो महाप्रसाद नारायनदास स्त्री पुरुष दोऊ जन अति आनंद सों लेते। और नारायनदास ने अपने घर के आगें दोऊ ओर वैष्णवन के उतरिवे कों न्यारी न्यारी कोटड़ी करि राखी हती। और वैष्णवन के लिये सीधा सामान वीरां या प्रकार फटकि बीनि कै सिद्ध करि राखती। जैसें श्रीठाकुरजी के लिये सब सामग्री सँवारती तैसें ही वह वैष्णव के लिये सब सामग्री सँवारि कै सिद्ध करि राखति। सो वे दोऊ जन नारायनदास और उनकी स्त्री वीरां श्रीठाकुरजी में और वैष्णवन में भाव एकसो राखते।

और नारायनदास तो दिन में राजद्वार में रहते। और इहां घर, जो–जैसो वैष्णव आवतो ताकौ तैसो ई सन्मान वीरां करती। पाछें नारायनदास जब दरबार सों आवते तब उन वैष्णवन सों मिलते। सो उन सों नारायनदास खबर, वार्ता श्रीगुसांईजी की पूछते। पाछें सवारे जब दरबार कों जाते तब नारायनदास वैष्णव कों श्रीकृष्ण–स्मरन करत जाते। तब वैष्णवन कों देखि कै नारायनदास अपने मन में अति प्रसन्न होते। पाछें उन वैष्णवन कों यथाशक्ति खरच देते। सो वे वैष्णव अपनी इच्छा सों जाते तब तो जाते, परि आप तें नारायनदास कबहू वैष्णवन

कों बिदा न करते। और वीरां नित्य उन कों सीधो पहोंचावती। और वीरां वैष्णवन सों परदा कबहू न राखती। ऐसो जाकों वैष्णवन सों सरल भाव होंइ, ताकों श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी क्यों न कृपा करें ?

वार्ता प्रसंग-३

और एक समै नारायनदास ने श्रीगुसांईजी कों बिनतीपत्र लिख्यो। तामें यह बिनती प्रभुन कों लिखि पठाई, जो-महाराज! इहां मेरे पास कोई वैष्णव नाहीं ऐसो, जासों चर्चा वार्ता करिए जासों मन बिगरे नाहीं। चर्चा वार्ता बिना मन ठिकाने रहत नाहीं। तासों आप कृपा करि कै काहू वैष्णव कों मेरे पास पठाओगे। सो या भांति पत्र लिखि कै पठायो। वाके साथ श्रीगुसांईजी कों भेंट हुंडी बोहोत पठाई। सो वह मनुष्य अड़ेल आयो। तहां श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि यह नारायनदास कौ पत्र और हुंडी सोंपि दीनी। सो श्रीगुसांईजी आप ही वह पत्र बांचे। और चाचा हरिवंसजी प्रभुन पास बैठे हते तिन कों वह पत्र बँचायो। पाछें श्रीगुसांईजी चाचा हरिवंसजी कों यह आज्ञा दिये, जो-चाचाजी! तुम नारायनदास पास जाहु। तब चाचा हरिवंसजी श्रीगुसांईजी आगें बिनती करी, जो-महाराज! आपु की आज्ञा तें आपु के चरनारविंद छोरि कै गौड़ देस में जाउंगो, सो मेरी कहा गति होइगी ? तब श्रीगुसांईजी चाचाजी सों कहे, जो-तुम जहां होहुगे तहां हों तुम कों नित्य दरसन देहुंगो। तब चाचा हरिवंसजी अड़ेल तें श्रीगुसांईजी पास तें बिदा होइ कें नारायनदास के पास गौड़ देस कों चले, सो चाचाजी केतेक दिन

में नारायनदास पास जाइ पहोंचे। सो नारायनदास जब राजद्वार सों आए तब चाचा हरिवंसजी ने नारायनदास सों श्रीकृष्ण–स्मरन कर्‌यो। तब नारायनदास अति आनंद सों घोड़ा तें उतरि चाचाजी कों मिले। पाछें नारायनदास चाचाजी कौ हाथ पकरि अपने घर पधराइ प्रसाद लिवाए। पाछें चाचाजी और नारायनदास बैठे दिन रात्रि भगवद्वार्ता कर्‌यो करें। तब नारायनदास कौ दरबार जानो छूटि गयो। पाछें केतेक दिन कों नारायनदास वार्ता के रस में विवस भए। सो प्रसाद लेनो, सेवा सब छूटी। मानो विकल भए होंइ यह विवस्था नारायनदास की भई। तब राजद्वार में तो नारायनदास कौ काम, सो नारायनदास बिना सब बंद भयो। तब राजद्वार कौ मनुष्य नारायनदास के घर आइ कै काहू मनुष्य तें पूछ्‌यो। तब काहू एक ने ऐसें राजद्वार के मनुष्य सों कही, जो–एक बैरागी मथुरा सों आयो है। तिन नारायनदास कों बावरो करि डार्‌यो है। सो ये समाचार सुनि कै वा राजद्वार के मनुष्य ने पात्साह के आगें जाइ कहे। जो–साहिब! नारायनदास के तो ये, समाचार हैं। तब पात्साह ने वाही समै यह हुकम कर्‌यो, जो–वा वैरागी कों मो पास अब ही लै आओ। नाँतरु नारायनदास कों आछौ करि दरबार पठावे। यह बात कहि वा पात्साह ने नारायनदास के घर चाचाजी कों बुलावन मनुष्य बिदा करे। पाछें यह खबरि काहू वैष्णव ने चाचा हरिवंसजी के आगें आइ कही। तब चाचाजी ने अपने मन में बिचार कियो, जो–नारायनदास कों अब ही आछौ कियो चहिए। सो चाचा हरिवंसजी स्नान करि नारायनदास के

श्रीठाकुरजी कों अभ्यंग–स्नान कराइ वह चरनोदक नारायनदास के ऊपर छिरक्यो और कछूक प्यायो। तब तत्काल ही नारायनदास की बिकलता मिटि कै नारायनदास आछें भए। मन ठिकाने आयो।

भावप्रकाश–काहेतें ? जो–अभ्यंग में आमला रहत है। सो आमला स्वरूप–विस्मृति करावनहारो है। तातें नारायनदास की विकलता मिटी। और दूसरो अभिप्राय यह है, जो चरनोदक लिये तें सीतल भक्ति होत हैं। तातें नारायनदास कों चरनोंदक तें विकलता मिटी, सीतलता भई। सो स्वस्थ भए।

पाछें नारायनदास ने चाचाजी सों कह्यौ, जो–चाचाजी ! वा अवस्था में तो मोकों बोहोत सुख हतो। तुम यह कहा करे ? जो–मेरो मन वा ठौर तें निकार्यो। अब फेरि यह अवस्था क्यों भई ? तब चाचा हरिवंसजी ने नारायनदास सों कह्यो, जो–अबही तुम कों योंही चहिए। सो चाचा हरिवंसजी अपने मन में यह बिचारे, जो–अब ही इन कों या भाव की योग्यता नाहीं। पाछें नारायनदास कों चाचाजी सावधान करे। जो–तुम अब ही राजकाज करो। ता करि के तुम सों सेवा प्रभुन की बनि आवे सो करो। परि मन श्रीगुसांईजी के चरनारविंद में राखियो। इतने तुम कों राजद्रव्य बाधा न करेगो।

भावप्रकाश–काहेतें ? जो–राजद्रव्य अनर्थ करनहारो है। सो श्रीगुसांईजी के स्मरन चिंतन सों वह बाधा करेगो नाहीं। ऐसो प्रभुन कौ प्रताप है।

पाछें नारायनदास कपड़ा पहरि दरबार गए। फेरि कामकाज ब्यौहार प्रथम करत हुते ताही प्रमान करन लागे। पाछें कछूक दिन चाचाजी नारायनदास पास रहि कै प्रसन्नता सों नारायनदास सों सीख मांगि कै गौड़ दैस तें चाचा हरिवंसजी चले। सो

कछूक दिन में श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुलजी में आए। तहां श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि चाचा हरिवंसजी ने ये सब समाचार नारायनदास के विस्तार पूर्वक प्रभुन आगें कहे। तब श्रीगुसांईजी आप सुनि कै चुप करि रहे।

पाछें जा दिन नारायनदास राजद्वार में गए ता दिन वा पात्साह ने बोहोत द्रव्य खरच्यो। सो नारायनदास उपर वह पात्साह ने ऐसो प्रसन्न रहतो। और नारायनदास की स्त्री वीरां ऐसी रूपवान हती जो नित्य सिंगार करि स्नान करि श्रीठाकुरजी के मंदिर में जाइ। तब वाकौ कोऊ मनुष्य न जाने। मानों अप्सरा जात हैं। ऐसी वाकी दिव्य देह हती। सो वह वीरां नित्य अपने हाथ सों श्रीठाकुरजी की सेवा टहेल करती। परि और काहू बाई कों सेवा की टहल न देती। और वह वीरां ऐसी सुकुमारि हती, जो–पान खाँइ सो पीक वाके गरे में उतरे, सो सब बाहिर तें ज्यों की त्यों दीसे। जो पास बैठ्यो होंइ सो जाने, जो–याने पान खाए हैं। परि वह श्रीठाकुरजी की सेवा और वैष्णवन की सेवा तो अपने हाथ ही करती। तातें वा वीरां की सराहना श्रीगुसांईजी आप बारबार श्रीमुख तें करते। और वा वीरां सों श्रीठाकुरजी बोहोते सानुभावता जनावन लागे। वह वीरां श्रीगुसांईजी, श्रीठाकुरजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती।

वार्ताप्रसंग–४

और एक समै श्रीगुसांईजी फेरि नारायनदास ऊपर कृपा करि नारायनदास कों दरसन देवे कों गौड़ देस पधारे। सो नारायनदास के घर दिन पांच सात रहे। पाछें जल के उपद्रव तें

कोस पांच सात ऊपर एक गाम हतो। ता ठौर जल आछौ हतो। वहां कौ जल विकार न करतो। तासों श्रीगुसांईजी वा गाम में जाँइ रहे। सो नारायनदास दाई बार श्रीगुसांईजी के पास दरसन करिवे कों नित्य जाते। और फिर अपने गाम आवते। पाछें राजद्वार कौ सर्व काम करते। या प्रकार नारायनदास नित्यप्रति करते। सो एक दिन पात्साह आगें काहूने नारायनदास की चुगली करी, जो–हजरत ! नारायनदास के गुरु अमूके गाम में इहां सों सात कोस ऊपर उतरे हैं। तिन पास नारायनदास दोऊ बार जात हैं। और ता ठौर तें फिरि आवत हैं। तब एक दिन वा पात्साह ने नारायनदास सों पूछयो, जो–तू वा गाम में नित्य दोइ बार क्यों जात है ? तब नारायनदास ने पात्साह सौं कह्यो, जो मेरे गुरु वा गाम में जाँइ उतरे हैं तासों उहां मैं जात हों। तब पात्साह ने नारायनदास सों कही, जो–तू उहां दोइ बार जात है और फिरि आइ कै इहां हूँ कौ काम सब करत है। तब नारायनदास ने पात्साह सों वही, जो–वहां हू जायो चहिए और इहां हूँ कौ कामकाज सब कर्यो चहिए। तब पात्साह नारायनदास कौ मन गुरु में अनुरक्त जानि कै नारायनदास कों यह परवानगी दीनी, जो–नारायनदास ! जहां तांई तेरे गुरु वा गाम में रहें तहां तांई तू उहांइ तें हमारो कामकाज करियो। और तू उहांइ रहियो। तब नारायनदास अपने मन में बोहोत प्रसन्न भए। पाछें पांचमें सातमें दिन नारायनदास दरबार करि जाते। सो एक दिन वा पात्साह ने नारायनदास सों कही, जो–तू अपने गुरु कों पूछि देखियो, जो–हम कों उन के देखन की बड़ी इच्छा है। तब

नारायनदास ने पात्साह सों कह्यो, जो–वे तो तिहारी जाति कौ मुख देखत नाहीं। तब पात्साह ने नारायनदास सों फेरि कह्यो, जो–उन सों तू एक बार पूछियो तो सही। ताकौ वे तोसों कहा उत्तर करे हैं ? सो समाचार तू हमसों कहियो। ऐसें जब बोहोत बार पात्साह ने कही, तब एक बार नारायनदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! या पात्साह कों तिहारे दरसन की बोहोत अभिलाषा है। तासों हों जब दरबार जात हों तब वह मोसों कहत हैं, जो–क्यों रे, नारायनदास ! तू पूछ्यो है के नाहीं ? तातें अब आप आज्ञा करो सो हों वासों जाइ कहों। तब श्रीगुसांईजी ने नारायनदास पास यह कहवाइ, जो–तू तो कछू कहे मति। और वह जब आपु सों पूछे तब तू नाहीं हू मति करे।

भावप्रकाश–याकौ अभिप्राय यह है, जो–पात्साह दैवी जीव है। क्यों ? जो–दैवी बिना ऐसी आर्ति नाहीं होवे। तातें उनकौ मनोरथ पूरन करनो है। परि पहिलें आप ही कहवावें तो इन के बुलाइवे की अपेक्षा यह मन में आवे, तो नारायनदास कौ बिगार होंइ। जासों श्रीगुसांईजी आप ऐसे नारायनदास कों कहे।

सो जब नारायनदास दरबार आवत भए तब वा पात्साह ने नारायनदास सों प्रथम ही यह पूछी, जो–क्यो रे नरिया ! तू पूछ्यो हतो ? तब नारायनदास ने कही, जो–आछी बात है, एक बार तुम कों दरसन होइंगे। तब वह पात्साह अपने मन में बोहोत आनंद पाइ अति ही प्रसन्न होंइ कै नारायनदास सों कह्यो, जो–हों तो आज तें तीसरे दिन आऊंगो, तू आगें जा। तब नारायनदास ने ये सब समाचार श्रीगुसांईजी के आगें आइ कै कहे। तब प्रभु सुनि कै चुप करि रहे। पाछें नारायनदास ने वा दिन बिछायत करि राखी। सो वह पात्साह उत्थापन के समै

आइ श्रीगुसांईजी कौ दरसन कर्‌यो। पाछें दंडवत् करि कै ठाढ़ो रह्यो। तब श्रीगुसांईजी वाकों बैठिवे की आज्ञा किये। तब वह पात्साह प्रभुन की आज्ञा पाइ दंडवत् करि कै बैठ्‌यो। पाछें वा पात्साह ने पुरुषोत्तम जानि प्रभुन कों हाथ जोरे। ता पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती कर्‌यो, जो–महाराज ! तुम कछू मनुष्य नाहीं, जो–कन्हैया आज तांई हमने सुने हैं सो आजु अपनी नजर सों देखे। तातें आपु कोई अवतारी पुरुष दीसत हो। और यह नारायनदास धन्य है। सो केतेक दिन सों आप की टहल करत है। ऐसें बोहोत सराहना करि वा पात्साह ने कह्यो, जो–धन्य मेरो यह देस है, जहां आप पधारे हो। और हों हूँ धन्य हों, जो–आपु को दरसन पायो। इतनो कहि कै पात्साह ने पाछें नारायनदास सों कह्यो, जो–तेरी कृपा तें हों इनके दरसन पायो। जो–तू मेरे इहां रहत हतो, और अरज कर्‌यो तो मैंने इन कौ दरसन पायो। मेरे बड़े भाग्य हैं। जासों तुम से प्रधान मेरे पास है। तब ऐसें पात्साह ने बोहोत बड़ाई करी। और श्रीगुसांईजी की बोहोत सराहना करी। तब श्रीगुसांईजी खासा कौ थान रुपैया नव कौ नारायनदास हाथ पात्साह की नजरि करायो। तब पात्साह ने दंडवत् करि फेरि श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! ऐसें तो आपु की कृपा तें मेरे हू इहां बोहोत हैं। परि एक कछू आप के श्रीअंग कौ प्रसादी वस्त्र पाऊं। तब श्रीगुसांईजी आपु वा समै उपरेना ओढें हते सो कृपा करि कै नारायनदास हाथ दिवायो। सो वा पात्साह ने माथें चढाइ दंडवत् करि कै अपनी पाग ऊपर वा उपरेना कों बांध्यो। पाछें वह पात्साह श्रीगुसांईजी सों बिदा माँगि कै अपने

घर गयो। ता दिन तें वह पात्साह नारायनदास की बोहोत कानि राखतो।

पाछें थोरे से दिन गए तब नारायनदास ने श्रीगुसांईजी कों अपने घर पधराए। तब वह पात्साह फेरि श्रीगुसांईजी पास दरसन कों आयो। पाछें श्रीगुसांईजी नारायनदास कौ मनोरथ पूरन करि कै आपु अड़ेल पधारिवे कौ बिचार प्रभुन कियो। तब नारायनदास पहोंचावन चले। और पहिले जब श्रीगुसांईजी चलिवे कौ बिचार करे, तब नारायनदास की और ही विवस्था होइ जांइ। तब श्रीगुसांईजी चाचा हरिवंसजी कों कहे, जो–चाचाजी! कछू ऐसो उपाइ करिये, जो–हमारे चलत नारायनदास कों कष्ट न होंइ। पाछें चाचा हरिवंसजी ने नारायनदास के सेव्य श्रीठाकुरजी कों अभ्यंग–स्नान कराइ कै वह चरनोदक नारायनदास के ऊपर छिरक्यो। अरु कछू मुख में मेल्यो। तब नारायनदास कौ मन फिर्‌यो। तब नारायनदास भली भांति प्रसन्न होइ कै श्रीगुसांईजी कों बिदा करे। सो नारायनदास थोरीसी दूरिलों प्रभुनकों पहुंचावन आए। तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न होंइ कै नारायनदास कों बिदा करे। पाछें नारायनदास ने चाचा हरिवंसजी की बोहोत मनुहार करी। ता पाछें नारायनदास अपने घर आए।

वार्ता प्रसंग–५

और एक समै श्रीसत्याजी, श्रीगोपीनाथजी की बेटीजी श्रीजगन्नाथराइजी के दरसन कों पधारे। तब मार्ग में नारायनदास कौ गाम आयो। सो यह खबरि नारायनदास ने

सुनी। तब अपनें मनुष्य मार्ग में रखवारी कों नारायनदास ने पठवाए। सो जब थोरी सी दूरि नारायनदास कौ गाम रह्यो तब मनुष्य नारायनदास कों खबरि करी। जो–साहिब! अमूकी ठौर बेटीजी पधारे हैं। तब नारायनदास साम्हें जाँइ कै श्रीसत्या बेटीजी कों अपने घर पधराइ ल्याये। सो नारायनदास के घर तें थोरी सी दूरि बंदीखाने कौ घर हतो। सो एक संग सगरे बंदीवान पुकारन लागे। तब श्रीसत्या बेटीजी ने वीरां सों पूछी, जो–वीरां यह सोर कैसो होत है? तब वीरांने बिनती करि कै श्रीसत्याजी सों कही, जो–महाराज! ये राजद्वार के बंदुवा हैं। तिन कों राजा ने बंदीखाने दिये हैं। सो ये सगरे पुकारत हैं। तब श्रीसत्याजी कहे, जो–इन कों इकठोरे क्यों मूंदि राखे हैं। तब वीरां ने श्रीसत्याजी सों फेरि बिनती करी, जो–ये कोई राजा कौ काम बिगारे, वा गाम में चोरी करे। सो वा पास राजा दाम माँगत है। सो वे देत नाहीं। तासों एक बड़ो घर इनके मूंदवे कौ करि राखे हैं। तामें ये सगरे परे रहत हैं। तब श्रीसत्याजी ने वा वीरां सों फेरि पूछी, जो–ये बापड़े खात कहा होइंगे? तब वीरां ने सत्याजी सों फेरि बिनती करी, जो–महाराज! इनकों राजद्वार में तें आध आध पाव काचे चना मनुष्य पाछें सांझ कों मिलत है। सो वे चना खाइ कै ये बापड़े परे रहत हैं। तब श्रीसत्याजी वा समै यह कहै, जो–अरे दैया! ये बापड़े सब भूखे रहत हैं? इतनी कही। ता पाछें थोरीसी बार भई तब वीरां ने सत्याजी सों कही, जो–महाराज! उठो स्नान करि कै रसोई करो। तब श्रीसत्याजी ने वीरां सों कही, जो–हम तो जब या गाम के बाहिर जाइंगे तब

रसोई करेंगे। तब वीरां ने श्रीसत्याजी सों कही, जो–महाराज ! यह कहा ? तब श्रीसत्याजी वीरां सों कहे, जो–जा गाम में नित्य इतने मनुष्य भूखे रहत हैं ता गाम में जल पान कैसें लियो जाँइ ? तासों हों तो या गाम के बाहिर जाँइ स्नान करि कै रसोई तहां करोंगी। तब श्रीसत्याजी के ये बचन सुनि कै वीरां ने एक मनुष्य नारायनदास पास पठायो। ता मनुष्य सों वीरां ने समुझाइ के कह्यो, जो–उन तें कहियो, जो–घर बोहोत ही जरूर कौ काम है। तातें तू उन कों अपने साथ ही लिवाइ लाइयो। सो वा मनुष्य ने नारायनदास सों ये समाचार जाँइ कहे। तब नारायनदास सुनि कै तत्काल ही अपने घर आए। तब नारायनदास सों वीरां ने श्रीसत्या बेटीजी के सर्व समाचार कहे। तब नारायनदास ने फेरि तत्काल पात्साह पास जाँइ कै अरज करी, जो–साहिब ! उन बंदीवानन कों दिन बोहोत भए हैं। जो–तुम कहो तो उन कों जो कछू द्रव्य थोरो बोहोत (ये) देइ, सो लिखाइ पटाइ कै फेरि इन कों काम की बहाली सोंपिए। तो फेरि अपने घर में ये द्रव्य बोहोत देइंगे। तब वा पात्साह ने नारायानदास सों कह्यो, जो–आछी बात है। सो नारायनदास बंदीखाने के पास आइ निकसे। तब वे बंदीवान इन नारायनदास कों देखि कै बोहोत ही सोर करि उठे। तब नारायनदास दरवाजो खुलाइ कै उन सगरेन कों बाहिर निकसवाइ लिए। तब उनन कही, साहिब ! हम कों खलास करो। तब नारायनदास उन सों कहे, जो–तुम दाम क्यों नहीं भरत हो ? तब उन नारायनदास सों कही, जो–हमतो इहां रुके हैं ! तातें दाम कौन भरे ? तब नारायनदास ने नवीसिंदा

बुलाए। पाछें एक कौ एक आपुस में जामिन लै दंड चुकाइ नारायनदास (ने) सगरे बंदुवा छोरि दिये। पाछें उनके माथे दंड कर्‍यो हतो सो फरद पात्साह कों बांचि सुनाई। और उन के सर्व समाचार कहे। तब पात्साह नारायनदास ऊपर बोहोत प्रसन्न भयो। पाछें नारायनदास दरबार तें अपने घर आइ श्रीसत्याजी कों दंडवत् करि बिनती करी, जो–राज ! आप की कृपा तें सब बंदीवान कों छुडाइ आयो हूं। सो वे सगरे अपने अपने घर कों गए। तब श्रीसत्याजी नारायनदास ऊपर अति प्रसन्न होंइ, उठि कै स्नान करि कै रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग समर्पि, समयानुसार भोग सराइ, आपु भोजन करि कै नारायनदास कों और वीरा कों पातरि धरे। सो नारायनदास प्रसाद लै दरबार गए। इतने ही यह बात काहू नें पात्साह आगें नारायनदास की चुगली करी। जो–हजरत ! नारायनदास के गुरु की बेटी नारायनदास के घर उतरी है। तिन कछू कही है। तासों नारायनदास ने सगरे बंदूवा छोरि दिए हैं। तब नारायनदास सों पात्साह ने पूछी, जो–आज तैनें सगरे बंदूवा एक ही बेर छोरि दिए, सो यह कहा काम कर्‍यो ? तब नारायनदास ने पात्साह सों कही, जो–हजरत ! नित्य पचास रुपैया तो उन कौ खरच दरबार सों लगतो। और आमदनी कछू हती नाहीं। तासों एक कौ जामिन एक करि कै छोरि दिए हैं। और अपने घर के श्रीबेटीजी के सर्व समाचार पात्साह आगें नारायनदास ने कहे। तातें एक ही बार सब बंदूवा छोरे हैं। तब नारायनदास की गुरुभक्ति देखि कै पात्साह नारायनदास ऊपर बोहोत प्रसन्न भयो। पाछें उन बंदीवानन के

तें थोरो थोरो द्रव्य आवन लाग्यो। तब नारायनदास ने पात्साह सों फेरि अरज करी, जो–देखो हजरत ! काल्हि तो उन बंदीवानन कों छोरे हैं। और आज ही इतनो द्रव्य आइ पहोंच्यो है। और जो वे बंधेइ रहते तो आज द्रव्य कहां सों आवतो ? और ये भाजि तो सकत नाहीं। काहेतें, जो–आपुस में एक कौ एक जामिन है। तातें अपनें तो पैसान सों काम है, कछू इन कों बंदीखाने में देवे सों काम नाहीं। पाछें यह बात नारायनदास की सुनि कै पात्साह नारायनदास ऊपर बोहोत प्रसन्न भयो। और एक सिरोपाव दै नारायनदास कों घर पठायो। सो सिरोपाव पहरि नारायनदास तत्काल ही अपने घर आइ कै श्रीसत्या बेटीजी कों दंडवत् करे। पाछें केतेक दिन श्रीसत्याजी आप नारायनदास के घर बिराजे। ता पाछें पुरुषोत्तमपुरी श्रीजगन्नाथराइजी के दरसन कों श्रीसत्या बेटीजी पधारे। सो तहां श्रीजगन्नाथराइजी के दरसन करि कछू दिन रहि पाछें फिरे। सो श्रीसत्याजी फेरि कछूक दिन नारायनदास के घर बिराजे, आइ कै। पाछें जब श्रीबेटीजी अड़ेल कों बिदा माँगे तब नारायनदास ने श्रीसत्या बेटीजी कों बोहोत आभरन, पहरावनी, रोकड़ि भेंट करी। और कितनो सामान नारायनदास श्रीगुसांईजी कों भेंट पठाए। पाछें मार्ग में अपनो रसालो, असवार दै श्रीसत्याजी कों श्रीगुसांईजी के पास पहोंचते करे। सो मनुष्य नारायनदास के श्रीसत्या बेटीजी कों पहोंचाइ कै श्रीगुसांईजी कौ पत्र लिखाइ कै वे नारायनदास पास आए। तब नारायनदास कों वह श्रीगुसांईजी कौ पत्र दै कै वे मनुष्य सीख माँगि कै अपने घर

गए। पाछें वा पत्र कों माथे चढाइ कै नारायनदास ने बांच्यो। सो बांचि कै बोहोत आनंद पायो । उन नारायनदास ऊपर श्रीगुसांईजी ऐसी कृपा करते। सो श्रीसत्या बेटीजी श्रीगुसांईजी पास आइ कै नारायनदास की बोहोत बड़ाई करि सराहना करी। तब श्रीगुसांईजी सत्या बेटीजी सों कहे, जो–वह मेरो नारायनदास ऐसोइ है।

वार्ता प्रसंग–६

और एक समै काहू ने नारायनदास की चुगली पात्साह आगें करी। जो–हजरत ! नारायनदास आप की सिरकार तें उत्तम वस्त्र बुने जात हैं तिन कारीगर के घर ही सों लालच दै कै आप लैत हैं। सो इहां कोइ कारीगर उत्तम वस्त्र लाइ सकत नाहीं। यह वाकी बात सुनि कै पात्साह चुप करि रह्यो। पाछें एक दिन पात्साह ने नारायनदास कों एकांत बुलाइ कै पूछ्यो । जो–नारायनदास ! मेरे कपड़ा कारीगर बुनत हैं तामें सों तू क्यों बीनि लेत है ? तब नारायनदास ने पात्साह सों कह्यो, जो–हजरत ! वस्त्र तो लेत हूं। और तो सब सिरकार में लिये जात हैं। तब पात्साह ने नारायनदास तें पूछ्यो, जो–तिन कों तू कहा करत है ? तब नारायनदास ने पात्साह सों कही, जो–हजरत ! हों उन वस्त्र कों अपने गुरु के घर पठावत हूं। तब पात्साह ने नारायनदास सों पूछ्यो, जो–तू उन वस्त्र कौ दाम कहां सों देत है ? तब नारायनदास ने पात्साह सों कही, जो–हजरत ! उन वस्त्रन के दाम हों अपने पास तें देत हूं। तब पात्साहने नारायनदास सों कही, जो उन वस्त्रन के दाम तू मति

देइ। हमारी सिरकार सों दियो करि। तब नारायनदास ने पात्साह सों कह्यो, जो–हजरत ! आप तो जानत ही हो, जो–हों आपकी सिरकार सों दाम दै कै वस्त्र पठाऊं तो वे तो प्रभु हैं, अंगीकार न करें। और यह तुम्हारी ही ओर तें जानोगे। जो–मेरे ऊपर आपकी रयाइत न होंइ तो ये ऐसें अलौकिक वस्त्र मेरे हाथ कैसें आवते ? तब वह पात्साह नारायनदास के वचन सुनि कै नारायनदास ऊपर बोहोत ही प्रसन्न भयो। ता दिन तें वा पात्साह ने नारायनदास कौ सवायो महीना करि दियो। और पात्साहने कही, जो–नारायनदास ! जो तेरे घर खरच चहिए सो दरबार की ओर सों लियो करि। और या महीनानकी तो वस्त्र सामग्री तू अपने गुरुन के उहां पठायो करि।

भावप्रकाश–तातें सत्संग ऐसो पदार्थ है। जो नारायनदास जैसें भगवद्भक्त की संगति तें या म्लेच्छ हू की बुद्धि ऐसी भई।

पाछें वा चुगली करनवारे कौ महोड़ो स्याम होइ गयो।

भावप्रकाश–यामें यह जतायो, जो–कोऊ वैष्णव कौ अपराध करे तो वाकौ कियो अपराध वाही कों बाधा करे। वैष्णव कौ कछू बिगार न होंइ।

वार्ता प्रसंग–७

और वे नारायनदास, जो वस्त्र अति उत्तम श्रीगुसांईजी पास पठावते सो श्रीनाथजी और घर के ठाकुरजी, और श्रीगुसांईजी, और सात हू बालकन के श्रीअंग में वे वस्त्र अंगीकार होते। और हू बचि रहते। तामें पाग तो ऐसी उत्तम नारायनदास पठावते, जो वा पर पानी छिरकते तब वाके तारन दीसते। ऐसें पचतोलिया पाग नारायनदास प्रतिवर्ष श्रीगुसांईजी कों पठावते। जो–भिंजोइ कै बांधे तो बांधत में सूकि जांइ। और जो–भिंजोइ

के सुकाइवे कों भूमि में डारे तो उठावती बार दीसती नाहीं। सो वा ठौर पानी छिरकते तब पाग दीसती। ऐसें सूक्ष्म वस्त्र पठावते।

वार्ता प्रसंग–८

और एक समै भंडार में कछू द्रव्य चहियत हतो। तब आठ हजार की हुंडी नारायनदास ऊपर करी। सो हुंडी लिखि नारायनदास पास कासिद पठायो। ता कासिद कों चले तिन दिन भए। इतने ही नारायनदास की पठाइ हुंडी श्रीगुसांईजी के पास आइ पहोंची। तब चांपाभाई भंडारी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो राज! आपु तो हुंडी नारायनदास ऊपर करी। और नारायनदास की पठाइ हुंडी आजु इहां आइ पहोंची है, तासों अब कहा आज्ञा है? तब श्रीगुसांईजी चांपाभाई भंडारी सों कहे, जो–कोई मनुष्य पठाइ कै वह हुंडी पाछी फेरि मँगाइ लेहु। तब चांपाभाई भंडारी ने फेरि श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज! वह तो कासिद दूरि जाइ पहोंच्यो। वाकों अब कौ चल्यो मनुष्य कहां भेटेगो? जो–वाकों पाछो फिरावे? तब श्रीगुसांईजी चांपाभाई सों कहे, जो–अब तो भई सो भई। सो श्रीगुसांईजी की लिखि हुंडी जा दिन नारायनदास पास पहुंची ता दिन नारायनदास अपने घर बड़ो उत्सव करत भए। बोहोत भेंट काढ़ि धरे। और वीरां सों नारायनदास कहे, जो आजु मो ऊपर श्रीगुसांईजी बड़ी कृपा करे। सो मोकों अपनो जानि कै मेरे ऊपर हुंडी करी है। ता दिन नारायनदास बोहोत प्रसन्न भए। पाछें वा हुंडी के दाम तत्काल पठाइ और वा दिन की हुंडी कराइ

श्रीगुसांईजी कों बिनतीपत्र लिखि कै वा मनुष्य कों महाप्रसाद लिवाइ कै नारायनदासने बिदा कियो। ता पत्र में नारायनदास यह लिखे, जो–राज ! इतने दिनन में मेरे ऊपर आज अति कृपा करी हैं। और हों तो पतित दासानुदास हों। ऐसें नारायनदास श्रीगुसांईजी कों बोहोत बिनतीपत्र लिखि पठाए। सो वही मनुष्य फेरि श्रीगुसांईजी पास आयो। और नारायनदास कौ पत्र वा मनुष्य नें श्रीगुसांईजी आगें दियो। सो चांपाभाई ने बांचि सुनायो। और वा पत्र के भीतर जो हुंडी हती सो श्रीगुसांईजी आगें धरि, चांपाभाई ने नारायनदास की दंडवत् करी। तब नारायनदास कौ पत्र सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए। सो वे नारायनदास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे।

वार्ता प्रसंग–९

बहौरि एक समै नारायनदास ने चाचा हरिवंसजी कों पत्र लिख्यो। तामें नारायनदास ने यह लिख्यो, जो–श्रीगुसांईजी कों प्रतिवर्ष कितनो खरच बैठे हैं ? सो जो–तुम मोकों लिखि पठावो तो मैं इहां तें तितनो द्रव्य पठायो करों। यह पत्र घरू मनुष्य हाथ नारायनदास ने चाचा हरिवंसजी के पास पठायो। सो वह पत्र वा मनुष्य ने चाचाजी कों दियो। ता पत्र कों बांचि कै चाचाजी बोहोत प्रसन्न भए। सो नारायनदास कौ पत्र चाचा हरिवंसजी ने श्रीगुसांईजी के श्रीहस्त में दियो। ता पत्र कों बांचि कै आप प्रभु वा समै श्रीमुख तें यह बचन कह्यो, जो–यह वैष्णव तो भलो हतो। परि अब तो काम सों गयो। हमारे घर कौ खरच कहा जीव चलावेगो ? हमारो खरच तो चलावनहारो

चलावत ही है। ता पत्र कौ प्रतिउत्तर चाचाजी कछू लिखे नाहीं। यह लिखि पठाए, जो–या पत्र कौ प्रतिउत्तर पाछें तें लिखि पठावेंगे। पाछें थोरे से दिन में नारायनदास की देह में रोग उत्पन्न भयो। तब नारायनदास के घर पात्साह नारायनदास कों देखन आयो। तब पात्साह ने वैद्यन सों कही, जो–कोई नारायनदास कों नीको करे तो वह माँगे सो मैं वाकों देहुंगो। परि परमेस्वर आगें काहू कौ चारो नाहीं। पाछें नारायनदास की स्त्री वीरां कौ पात्साह ने बोहोत समाधान कर्‌यो। और वीरां सों पात्साह ने कह्यो, जो–अब नारायनदास कों देत हूं सोई तोकों तेरे जीवन पर्यंत देहुंगो, तू अपने मन में कछू और मति बिचारियो। तू मेरी धर्म की बेटी है। सो जैसें मैं अपनी बेटी की प्रतिपालना करत हूं तैसे ही तेरी प्रतिपालना करोंगो। तू अपने मन में काहू बात की चिंता मति करियो। ऐसें कहि कै वह पात्साह अपने घर गयो। ता पाछें नारायनदास ने अपनी स्त्री सों भली भांति समुझाई। जो–तू श्रीठाकुरजी की सेवा भली भांति सों करियो। तब वीरां ने नारायनदास सों कही, जो–मैं तो जा वेष सों सेवा करी है ताही वेष सों जो प्रभु सेवा मोसों करावेंगे सो तो सेवा करोंगी।

भावप्रकाश–यामें यह जतायो, जो–मैनें आज तांई श्रीठाकुरजी की सेवा पतिभाव सों सोरह हू सिंगार करि कै करी है। सो तुम्हारे पाछें ये सिंगार नहीं होंइ। काहेतें ? जो–लोक विरुद्ध दीसे। तातें मैं तुम्हारे संग ही लीला में आऊंगी। या भाव सों वीरां ने ऐसें कह्यो।

तब नारायनदास कों महा चिंता उपजी। सो दिन तीन लों नारायनदास भूमि–सिज्या रहे। पाछें चौथे दिन जब वीरां स्नान करि कै श्रीठाकुरजी के मंदिर में गई तब सिज्यामंदिर में जाइ कै

देखें तो एक श्रीठाकुरजी तो सिज्या पर नहीं है। और सगरी सामग्री यथास्थित हैं। सो श्रीठाकुरजी अंतर्धान भए। ऐसे वा समै वीरां कौ भासमान् भयो। पाछें वीरां मंदिर सों बाहिर आइ कै ये समाचार नारायनदास सों कहे। सो नारायनदास ने यह सुनत ही देह छोरी। तब वीरां घर ही में चिता करि कै नारायनदास के संग ही जरति भई। उन दोऊ जनन की संग ही क्रिया भई।

पाछें केतेक दिन बीते तब यह समाचार श्रीगुसांईजी पास आए। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत दुःख पाए। तब वा समै प्रभु आप श्रीमुख तें यह कहे, जो–नारायनदास भलो वैष्णव हतो। परि याके मन में हमारे घर के खरच चलाइवे की आई तासों गयो।

भावप्रकाश–यामें यह जतायो, जो–सेवक कों सदा सावधानी सों रहनो। ये तो ईस्वर के घर हैं। इन कौ खरच चलावन योग्य कौन है ? ये अपनो खरच आपु ही चलावत हैं। जीव की कहा सामर्थ्य है, जो–इन कौ खरच चलावे ? सो नारायनदास के मन में यह आइ, सो भली करत बुरी भई। तासों भगवदीयन कों दीनता राखनी।

सो नारायनदास ने श्रीगुसांईजी की और श्रीनाथजी की तनुजा वित्तजा सेवा भली भांति सों करि कै प्रभुन कों प्रसन्न करे। सो प्रथम जब चाचा हरिवंसजी नारायनदास के घर गए हे तब ...री हती। जो–चाचाजी ! नारायनदास ने चाचाजी सों बिनती ... ...ठाकुरजी कों भोजन करत मो ऊपर ऐसी कृपा करो, जो–श्री... ... कों नारायनदासने भोग देखिए। पाछें अपने श्रीठाकुरजी ... कै चाचा हरिवंसजी ने समर्प्यो। ता पाछें छिन एक रहि... ...स ! अब तुम देखो। तब नारायनदास सों कह्यो, जो–नारायनद...

नारायनदास देखे। परि श्रीठाकुरजी तो तेजःपुंज हैं। तासों नारायनदास कों धारना न भई। तहां तांई प्रभुन की कृपा भई। परि छिन एक में जीवबुद्धि सों बिगरि गई। तातें भगवदीयन कों सावधान रहि कै दीनता सों काम करनो।

सो वे नारायनदास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं। सो कहां तांई कहिए।

॥ वार्ता ॥५॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्री गुसांईजी के सेवक विट्ठलदास कायस्थ, दिल्ली तें परे कोस दोइ पर एक गाम है, तहां रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहते हैं–

भावप्रकाश–ये तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'वल्लवी' है। ये विसारवाजी तें प्रगटी हैं, तातें इन के भावरूप हैं। सो वल्लवी में गूढ़ भाव कौ प्रकार बोहोत है। ये नंदालय में गूढ़ रीति सों श्रीठाकुरजी तें सदा मिलति हैं। सो या प्रकार, जो–कोऊ जानें नाहीं। सो एक समै प्रेमलता नंदालय में श्रीठाकुरजी कों खिलावति हुती। तब इन छल करि श्रीठाकुरजी कों अपनी गोदि में लिये। पाछें कोइ एक कुंज में जांइ इन श्रीठाकुरजी सों प्रार्थना करी, जो–महाराज ! मो पर कृपा करि मेरो मनोरथ पूरन कीजिए। तब श्रीठाकुरजी हँसि कै आज्ञा किये, जो–ये बात प्रेमलता जानेगी तो श्रीयसोदाजी सों कहि कै तोकों नंदालय में आवन न देगी। तो तू कहा करेगी ? तातें मोकों बेगि नंदालय में लै चलि। तब वल्लवी ने और हू बिनती कीनी, जो–महाराज ! यह समो मुकरिवे कौ नाहीं है, तातें बेगि कृपा कीजिए। पाछें श्रीठाकुरजी वल्लवी की बोहोत आर्ति जानि इन कौ मनोरथ पूरन कियो। सो बात एक सखी ने जानी। सो वा सखी ने प्रेमलता सों जांइ कही। तब प्रेमलता खीझि कै वल्लवी सों कहे, जो–क्योंरी ? तू मोतें छल कियो ? या प्रकार प्रेमलता बोहोत ही अप्रसन्न भई। ता अपराध करि वल्लवी भूतल पर आई।

सो ये दिल्ली तें परे कोस दोइ पर एक गाम है, तहां एक कायस्थ के जन्मे। सो वह कायस्थ राजद्वार में चाकर हो। सो वाके पास द्रव्य बोहोत हतो। सो उन विट्ठलदास कों पढ़ाए। राजकाज में हू प्रवीन किये। पाछें विट्ठलदास बरस पच्चीस के भए तब वह कायस्थ मर्‌यो। तब विट्ठलदास जात्रा कों चले। सो मथुरा आए। तहां विश्रांत न्हाइ, ब्राह्मनन कों दान दक्षिना

दै श्रीगोकुल आए। ता समै श्रीगुसांईजी ठाकुरानी घाट पर संध्यावंदन करन कों पधारे हे। सो विट्ठलदास कों दरसन भए। सो दरसन होत ही विट्ठलदास कौ मन श्रीगुसांईजी के स्वरूप में लग गयो। तब इन श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज! कृपा करि मोकों अपनो जानि सरनि लीजिए। तब श्रीगुसांईजी विट्ठलदास कों दैवी जीव जानि आप कृपा करि कहे, जो–श्रीयमुनाजी में स्नान करि अपरस ही में मंदिर में आइयो। तहां हम तोकों सेवक करेंगे। पाछें श्रीगुसांईजी आप तो मंदिर में पधारे। सो भोग सराइ श्रीनवनीतप्रियजी की राजभोग आर्ति किये। इतने में विट्ठलदास स्नान करि अपरस ही में मंदिर में आए। तहां श्रीगुसांईजी आप विट्ठलदास कों नाम निवेदन कराए। पाछें श्रीनवनीतप्रियजी कों अनोसर कराइ, श्रीगुसांईजी आप अपनी बैठक में पधारे। सो विट्ठलदास हू बैठक में आइ बैठे। पाछें विट्ठलदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज! अब मोकों कहा आज्ञा है? तब श्रीगुसांईजी आप विट्ठलदास सों कहे, जो–तुम तें और कछू बनेगो नाहीं, तातें 'विवेकधैर्याश्रय' कौ नित्य पाठ करियो। ता करि भगवद्धर्म सिद्ध होइगो। तब विट्ठलदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज! 'विवेकधैर्याश्रय' कौ स्वरूप कृपा करि समझाइए। तब श्रीगुसांईजी विट्ठलदास कों 'विवेकधैर्याश्रय' कौ स्वरूप अर्थ सहित विस्तार पूर्वक समझाए। सो सब विट्ठलदास अपने हृदय में धारन किये। सो अहर्निस वाके भाव में छके रहते। ऐसे करत कछूक दिन बीते। तब विट्ठलदास श्रीगुसांईजी की आज्ञा माँगि अपने घर आए। पाछें वासन–पात्र सब बदले। और वैष्णवन की रीति सों रहन लागे।

सो विट्ठलदास प्रतिवर्ष श्रीगुसांईजी के दरसन कों श्रीगोकुल आवते। सो उत्तम उत्तम सामग्री जो मिलती सो सब लावते। सो सब श्रीगुसांईजी कों भेंट करते। सो श्रीगुसांईजी इन पर सदा प्रसन्न रहते। ऐसें करत कछूक दिन में विट्ठलदास कौ द्रव्य सब निघट्यो। तब ये चाकरी करन कों बिचार किये। सो गौड़ देस आए।

वार्ता प्रसंग–१

सो विट्ठलदास कायस्थ आइ नारायनदास के पात्साह पास चाकर रहे। परि अपनी वैष्णवता नारायनदास कों न जनाई। दरबार की चाकरी करते। कब हूँ कोई विट्ठलदास सों पूछे, जो–तुम्हारो मार्ग कहा है? तब वासों विट्ठलदास कहते, जो–हमारो मार्ग तो वैष्णव है। सो नारायनदास न जानते। पाछें केतेक दिन कों नारायनदास ने पात्साह सों कहि कै विट्ठलदास

कों परगने पै पठायो। तब परगने कों कमाइ कै विट्ठलदास नारायनदास पास आए। सो नारायनदास कों वा परगने कौ हिसाब विट्ठलदास ने सब समझाइ दियो। तामें कछू दाम विट्ठलदास के पास बाकी रहे। तब नारायनदासने विट्ठलदास सों कह्यो, जो–ये दाम तुम पै सिरकार के बाकी रहे हैं सो भरि दिये चहिए। तब विट्ठलदासने नारायनदास सों कह्यो, जो–अब तो दाम मो पास है नाहीं। जो दूसरे परगने पर पठाओगे तामें भरि देऊंगो। तब नारायनदास ने विट्ठलदास कों बंदीखाने दियो। सो तीसरे दिन विट्ठलदास कों नारायनदास निकारि कै एक सौ एक कोरड़ा मरावते। सो मार खाँत खाँत विट्ठलदास की देह सड़ि गई। परि भगवद् संबंध नारायनदास कों विट्ठलदास न जनाए।

भावप्रकाश–काहेतें ? जो–वैष्णवता दिखाइ कै अपनो कारज करें तो धर्म जाँइ। तातें इन अपनी वैष्णवता न जताई।

पाछें जब विट्ठलदास बोहोत ही बेहाल भए तब नारायनदास ने विट्ठलदास कों छोरि दियो। पाछें विट्ठलदास कौ सरीर आछौ भयो तब नारायनदास ने मारनो तो छोरि दियो। और विट्ठलदास कों नारायनदास ने बंदीखाने में केद राखे। पाछें केतेक दिन में श्रीगुसांईजी श्रीजगन्नाथराइजी कों पधारे। तब बधैया ने नारायनदास पास आइ कै खबरि करी, जो–श्रीगुसांईजी इहां तें निकट आइ पहोंचे हैं। सो सुनि कै नारायनदास बोहोत प्रसन्न होंइ कै श्रीगुसांईजी के सन्मुख जान लागे। तब विट्ठलदास ने नारायनदास सों कही, जो–तुम

श्रीगुसांईजी के दरसन कों जात हो। तातें तुम मोसों आज्ञा करो तो मैं हूँ तुम्हारे संग श्रीगुंसाईजी के दरसन कों चलों। तब नारायनदास विट्‌ठलदास सों कहे, जो–फिटरे ! तें मोकों अब तांई क्यों न जनाई ? जो–मैं श्रीगुसांईजी कौ सेवक हूँ। तब विट्‌ठलदास ने नारायनदास सों कह्यो, जो–नारायनदास हों तो तेरी चाकरी करन आयो हूँ। परि कछू तुम्हारे हाथ वैष्णवता बेचन नाहीं आयो। तब तो नारायनदास विट्‌ठलदास कों छोरि दिये। तब विट्‌ठलदास जामा पहरि कै श्रीगुसांईजी के सन्मुख नारायनदास के संग ही गए। तहां जाँइ कै विट्‌ठलदास ने श्रीगुसांईजी कों दंडवत् कर्‌यो। तब श्रीगुसांईजी ने हँसि कै विट्‌ठलदास सों पूछ्‌यो, जो–तू इहां कब सों आइ रह्यो है ? तब विट्‌ठलदास ने प्रभुन आगें बिनती करी, जो–राज ! थोरे से दिनन सों नारायनदास के पास हों रहत हूँ। तब श्रीगुसांईजी फेरि विट्‌ठलदास सों कहे, जो–विट्‌ठलदास ! हम कों तेरी खबरि पाए बोहोत दिन भए हते। पाछें श्रीगुसांईजी के आगें नारायनदास और विट्‌ठलदास दोऊ प्रभुन के निकट ही बैठें। सो नारायनदास कौ मोहोंडो सूकि गयो। तब श्रीगुसांईजी आप रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो हतो। तब विट्‌ठलदास सों प्रभुन पूछी, जो–विट्‌ठलदास ! आगें तो तू आछी तरह सों रहतो। और अब तो तू बोहोत सूकि गयो है ताकौ कारन कहा ? तब विट्‌ठलदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–राज ! यहां के पात्साह की चाकरी करत हुतो। सो वाने मोकों बंदीखाने में दियो हतो। तासों या सरीर की यह व्यवस्था भई। तब

श्रीगुसांईजी विट्ठलदास सों कहे, जो–विट्ठलदास ! यह तू नारायनदास सों क्यों न कह्यो ? तब विट्ठलदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–राज ! चाकरी करी परि माला कैसें बेचि जाँइ ? यह तो देह कौ भोग है, ताकों तो भुगत्यो (ही) चहिए। परि अपनो धर्म काहू कों क्यों जनायो जाँइ ? तब विट्ठलदास के दृढतां के बचन सुनि कै श्रीगुसांईजी विट्ठलदास सों कहे, जो–विट्ठलदास ! तू धन्य, धन्य है । सो नारायनदास कौ मोहोंडो बोहोत सुपेद होंइ गयो। तब फेरि तो प्रभु भोग सरावन पधारे। तब विट्ठलदास सों यह कहे, जो–विट्ठलदास ! आज तू इहांइ प्रसाद लीजियो । तब विट्ठलदास श्रीगुसांईजी सों बिनती करे, जो–महाराज ! मेरी देह आछी नाहीं। तासों हों स्नान नाहीं कर्‌यो। तब श्रीगुसांईजी विट्ठलदास सों यह आज्ञा किये, जो–तू इहांइ न्हाइ ले। और खवास सों कहे, जो–विट्ठलदास कों स्नान कराइ दीजियो । सो प्रभुनकी आज्ञा मानि कै विट्ठलदास ने न्हाइवे कों जामा उतार्‌यो। तब नारायनदास कांप्यो। पाछें विट्ठलदास कों खवास ने स्नान कराइ दियो। सो स्नान करि कै विट्ठलदास बैठे हते। तब श्रीगुसांईजी पातरि धरिवेकों पधारे। सो प्रभु विट्ठलदास की देह देखि कै कांपे। पाछें श्रीगुसांईजी विट्ठलदास सों पूछे, जो–विट्ठलदास ! यह देह में कहा भयो है ? तब विट्ठलदास के नेत्र भरि आए। पाछें विट्ठलदास ने प्रभुन सों बिनती करी, जो–महाराज ! मो पर मार परी ही । तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–ऐसों तोकों कौन ने मार्‌यो ? तब विट्ठलदास नारायनदास की ओर देख्यो। तब

श्रीगुसांईजी नारायनदास सों पूछे,–जो नारायनदास ! तू ऐसी भांति वैष्णव कों क्यों मार्‍यो है ? तब नारायनदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! मैं इन कों वैष्णव जान्यो नाहीं। तब फेरि श्रीगुसांईजी नारायनदास सों कहे, जो–तें याकों वैष्णव न जान्यो। परि जीव तो जान्यो होतो। सो वैष्णव कों ऐसी निर्दयता न चहिए। वैष्णव कों जीव मात्र ऊपर दया राखी चहिए। तब नारायनदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–राज ! यह मोसों बड़ो अपराध पर्‍यो है। पाछें नारायनदास विट्ठलदास कों बोहोत आग्रह करे। परि विट्ठलदास नारायनदास पास न रहे। जब ही श्रीगुसांईजी उहां तें विजय किये तब ही नारायनदास के देस तें विट्ठलदास हू चले। श्रीगुसांईजी के साथ के साथ ही विट्ठलदास निकसे। परि फेरि वहां विट्ठलदास न रहे।

भावप्रकाश– काहेतें, ? जो–अब नारायनदास विट्ठलदास कों वैष्णव जाने। तातें न रहे।

सो वे विट्ठलदास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। सो उनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? ॥ वार्ता ॥६॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक रूपमुरारीदास क्षत्री, अंबालय में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये रूपमुरारीदास राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'चित्रांकिनी' है। ये चित्रा तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं। सो चित्रांकिनी कुंज–निकुंजन में अनेक भांति के चित्र बनावति हैं। तातें ये श्रीठाकुरजी कों बोहोत प्रिय हैं।

सो रूपमुरारीदास अंबालय में एक क्षत्री के जन्मे। सो वह क्षत्री देसाधिपति कौ चाकर हो। सो देसाधिपति के साथ सिकार कों जातो। सो देसाधिपति उन पर बोहोत प्रसन्न रहतो। पाछें

ये वृद्ध भयो। तब रूपमुरारीदास कों अपने संग राखन लाग्यो। सो रूपमुरारीदास सिकार में संग रहते। ता पाछें कछूक दिन में वह क्षत्री मर्‍यो तब देसाधिपति ने रूपमुरारीदास कों चाकरी में राखे।

वार्ता प्रसंग–१

सो वे रूपमुरारीदास देसाधिपति के चाकर रहे। सो देसाधिपति के संग रूपमुरारी सिकार कों जाते। सो एक समै देसाधिपति के डेरा 'गोवर्द्धन' में 'मानसी गंगा' पर भए। तब रूपमुरारीदास सिकार कों पूंछरी की ओर आए। तहां बाज कौ सिकार किये। पाछें बाज लिये घोड़ा पर असवार होंइ रूपमुरारीदास पूंछरी तें चले, सो गोविंदकुंड पर आए। ता समै श्रीगुसांईजी गोविंदकुंड ऊपर संध्या वंदन करत हे। सो रूपमुरारीदास कों श्रीगुसांईजी के दरसन भए। सो श्रीगुसांईजी आप रूपमुरारीदास कों कोटि कंदर्प लावन्यरूप सों दरसन दिए। सौ रूपमुरारी वही सिकारी साज पहिरें आइ कै श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करे। पाछें रूपमुरारीदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज! मेरी तो यह अवस्था है। और अब तो मैं आपकी सरनि आयो हूँ। तातें आप मेरो अंगीकार करिए। तब श्रीगुसांईजी रूपमुरारीदास सों कहे, जो–तू स्नान करि आऊ। हम तेरो अंगीकार करेंगे। तब रूपमुरारीदास कपड़ा उतारि कै अति प्रसन्नता सों स्नान करि श्रीगुसांईजी पास आइ दंडवत् करि प्रभु के सन्मुख ठाढ़े रहे। पाछें श्रीगुसांईजी वा रूपमुरारीदास कों कृपा करि कै नाम सुनाए। तब रूपमुरारीदास और वस्त्र पहरि श्रीगुसांईजी के साथ ही श्रीगोवर्द्धन पर्वत पर आइ श्रीनाथजी के मंदिर में जाँइ बैठे। पाछें समै भयो तब

श्रीनाथजी के दरसन रूपमुरारीदास ने किये । ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी कों अनोसर कराइ पर्वत तें नीचे पधारि, आपु भोजन करि, आपु ही रूपमुरारीदास आगें पातर धरी । तब रूपमुरारीदास आज्ञा प्रभुन सों माँगि कै तामें तें कछूक प्रसाद लिये । पाछें रूपमुरारीदास वा पातरि की गांठि बांधि सिरहाने धरि सोवते ।

भावप्रकाश–काहतें ? वह अनसखड़ी महाप्रसाद की पातरि हती । तातें ऐसें करते ।

सो जहां तांई रूपमुरारीदासकी देह रही तहां तांई वा पातरि कौ प्रसाद नित्य लिये । पाछें और कछू प्रसाद लैते । सो वह पातरि मार्ग में तो खवास पास रहती और डेरा तथा घरमें सिरहाने धरि सोवते । सो वे रूपमुरारीदास प्रभुनकी कृपा तें ऐसे भगवदीय भए ।

वार्ता प्रसंग–२

और रूपमुरारीदास पर श्रीगुसांईजी श्रीगिरिधरजी बोहोत कृपा करते । उन रूपमुरारीदास सों श्रीगिरिधरजी एकांत वार्ता करते । लीला कौ सब रहस्य कहते । और श्रीनाथजीके सिंगार होत में रूपमुरारीदास श्रीगिरिधरजी की आज्ञा तें श्रीनाथजी कौ दरसन ठाड़े ठाड़े कर्‌यो करते । ऐसी उन पर कृपा श्रीगिरिधरजी आप करते ।

सो वे रूपमुरारीदास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे । तातें इनकी वार्ता अनिर्वचनीय है । सो कहां तांई कहिए ?

॥ वार्ता ॥ ७ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्री गुसांईजी के सेवक माधौदास क्षत्री, काबुल में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये माधौदास तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'मकरंदिनी' है। ये चित्रा ते प्रगटी है, तातें इन के भावरूप हैं। सो मकरंदिनी के अंग तें विविध भाँति की मकरंद आवति हैं। ता मकरंद की लालच सों श्रीठाकुरजी आप भँवर व्है मकरंदिनी के पाछें पाछें लागे डोलत हैं।

सो माधौदास काबुल में एक क्षत्री के जन्मे। सो बालपने तें इन कौ चित्त कथा वार्ता में रहे। जहाँ कहूँ कथा–वार्ता होंइ तहां जांइ। ऐसें करत ये बरस पंद्रह के भए। तब इन के माता पिता मरे। पाछें माधौदास कौ ब्याह तो भयो नाहीं। सो माधौदास कौ पिता बजाज हतो। वाके कपड़ान की हाट हती। ता हाट पर माधौदास बैठन लागे। सो निर्वाह भली भांति चल्यो जातो।

सो एक दिन माधौदास कछू कार्यार्थ हरद्वार आए। ता समै श्रीगुसांईजी हू हरद्वार पधारे हे। तहां श्रीगुसांइजी आप गंगाजी के तीर पर संध्या करत हे। ता समै माधौदास हू गंगाजी न्हान आए। तब इन श्रीगुसांईजी के दरसन पाए। सो दरसन करत ही चक्रत से व्है रहे। ता बिरियाँ चाचाजी श्रीगुसांईजी के साथ हे। सो इन माधौदास चाचाजी सों पूछ्यो, जो–ये कौन है ? इन कौ कहा नाम है ? और ये रहत कहां है ? तब चाचाजी माधौदास सो कहे, जो–ये श्रीवल्लभाचार्यजी के पुत्र हैं। इन कौ नाम श्रीविट्ठलनाथजी हैं। ये अड़ेल में रहत हैं। इन विष्णुस्वामि संप्रदाय दृढ करि ताकौ सार जो सेवा–प्रकार ताकौ प्रकास कियौ है। सो वल्लभी मार्ग कहावत है। इह सुनत ही माधौदास ने चाचाजी सों कह्यो, जो मोकों इन कौ सेवक कीजिए। हों इन की सरनि जाऊंगो। सो ऐसी कृपा मो पर कीजिए, तातें हों इन कौ सेवक होंऊ। तब चाचाजी श्रीगुसांईजी सों बिनती किये, जो–महाराज ! माधौदास सेवक होंन की कहत है। तब श्रीगुसांईजी माधौदास की ओर देखे। सो वा समै माधौदास कों श्रीगुसांईजी के दरसन साक्षात् पुरुषोतम कोटि कंदर्प–लावन्य रूप सों भए। सो दरसन होत ही माधौदास मूर्च्छित व्है गए। तब श्रीगुसांईजी आप माधौदास पर वेद–मंत्र पढ़ि जल छिरके। तब ये सावधान भए। पाछें इन बिनती कीनी, जो–महाराज ! आपने यह कहा कियो ? मैं तो परम सुख में हतो। तहाँ सों निकास्यो ? तब श्रीगुसांईजी आप हँसि कै आज्ञा किये, जो–माधौदास ! अभी तोकों देरि है। पाछें माधौदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! मोकों कृपा करि अपनो सेवक कीजिए। तब गुसांईजी आप आज्ञा किये, जो–गंगाजी में स्नान करि। हम तोकों सेवक करेंगे। तब माधौदास गंगाजी में स्नान किये। पाछें श्रीगुसांईजी आप कृपा करि माधौदास कों नाम निवेदन कराइ सेवक किये। पाछें श्रीगुसांईजी जहां लों हरद्वार बिराजे तहां लों माधौदास श्रीगुसांईजी के पास रहि टहल में तत्पर रहे। और श्रीगुसांईजी के श्रीमुख तें नित्य कथा हू सुने। ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे। सो माधौदास हू श्रीगुसांईजी के

संग श्रीगोकुल आए। सौ कछूक दिन श्रीगोकुल में रहे। श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन किये। ता पाछें श्रीगुसांईजी माधौदास कों संग लै श्रीनाथजीद्वार पधारे। तहां पर्वत पर जाँई श्रीनाथजी के दरसन किये। सो दरसन होत ही माधौदास देहानुसंधान भूलि गए। सो श्रीगुसांईजी की कानि तें श्रीनाथजी माधौदास कों या प्रकार दरसन दिये, जो–माधौदास कौ मन श्रीनाथजी में गड़ि गयो। या प्रकार दरसन करत कछूक दिन बीते। तब श्रीगुसांईजी माधौदास सों आज्ञा करें, जो–माधौदास ! अब तुम अपने घर जाहु। अब तुम कों काल, देस कछू बाधा न करेगो। तुम सुखेन काबुल में रहो। श्रीनाथजी तुम कों वहां ही दरसन देइंगे। पाछें माधौदास श्रीनाथजी कों हृदय में पधराइ कै चले। सो कछूक दिन में अपने घर आए। उहां नित्य आठौं समै की मानसी करे। सो जैसें श्रीगुसांईजी के श्रीमुख सों कथा में 'गौ–चारन' आदि लीला कौ वरनन पहिले सुन्यो हतो ता प्रकार माधौदास नित्य मानसी करे। सो श्रीनाथजी उन कों श्रीगुसांईजी की कानि तें उहांई ऐसें दरसन देते। और सब लीला कौ अनुभव करावते।

वार्ता प्रसंग–१

वे माधौदास काबुल में रहते। सो वे परम भगवदीय कृपापात्र हते। सो उनकों श्रीगुसांईजी की कृपा तें श्रीनाथजी काबुल में दरसन देते। नित्य माधौदास कों सर्व समै कौ अनुभव ऊहांई जानि परतो। ऐसी कृपा श्रीनाथजी माधौदास ऊपर करते। परि माधौदास काबुल में रहते, सो जैसो वहां कौ कपड़ा वहां के मनुष्यन कौ वेष है तैसेई भेख सों माधौदास रहते। जो कोई अनजान्यो जातो सो यों न जानतो, जो–ये वैष्णव है। सो माधौदास कपड़ान की हाट करते। पाछें केतेक दिनकों देसाधिपति के पठाए रूपमुरारी कछू कार्यार्थ काबुल गए। सो एक दिन संध्या–आर्ति के समै भैयारूपमुरारी काबुल के बाजारमें कछू सोदा लैन निकसे। सो उहां रूपमुरारी काहु वैष्णवकी हाट देखे। परि कोई वैष्णव न जान्यो जाँइ। उहां के सगरे लोग एकसे ही दीसे। पाछें मार्ग में जात रूपमुरारी ने माधौदास कों ठाढ़े हाट ऊपर उपरेना कौ अंचल फिरावत देखे।

तहां रूपमुरारी ठाढ़े रहे। जब माधौदास अंचल फिराइ चुके। तब रूपमुरारी माधौदास की हाट ऊपर पूछे, जो–तुम कौन हो ? सो वे माधौदास पहिचाने न परे, जो–ये वैष्णव हैं। तब उन माधौदास ने रूपमुरारी सों पूछी जो–तुम्हारो कहा नाम है ? तब रूपमुरारी ने अपनो नाम बतायो। पाछें रूपमुरारीने माधौदास सों पूछ्यो, जो–तुम्हारो नाम कहा है ? तब माधौदास ने अपनो नाम रूपमुरारी सों कह्यो। पाछें रूपमुरारी ने माधौदास सों कह्यो, जो–तुम कौन के सेवक हो ? तब रूपमुरारी सों माधौदास ने कह्यो, जो–हम तो श्रीगुसांईजी के सेवक हैं। तब तो रूपमुरारी अति आनंद पाए। पाछें माधौदास ने रूपमुरारीदास सों पूछ्यो, जो–तुम कौन लोग हो ? कौन के सेवक हो ? तब रूपमुरारी ने माधौदास सों कह्यो, जो हम तो क्षत्री हैं और श्रीगुसांईजी के सेवक हैं। तब तो माधौदास अति आनंद पाय रूपमुरारी सों भेटे। पाछें श्रीकृष्ण–स्मरन करि कै माधौदास ने रूपमुरारी को अपनी हाट ऊपर बैठारे। पाछें माधौदास ने रूपमुरारी सों श्रीगुसांईजी के कुसल समाचार पूछे। तब रूपमुरारी ने माधौदास आगें सब कहे। पाछें रूपमुरारी ने माधौदास सों पूछी, जो–माधौदास ! तुम अंचल कहा फेरत हते ? तब माधौदास ने रूपमुरारी सों कही, जो–श्रीगुसांईजी की कृपा तें मोकों श्रीनाथजी इहांई नित्य दरसन देत हैं। तब रूपमुरारी ने माधौदास सों पूछी, जो–तुम अंचल क्यों फेरत हते ? तब माधौदास ने रूपमुरारी सों कह्यो, जो–श्रीनाथजी कों वा समै संध्या–आर्ति होत हती। तातें हों अंचल फेरत हतो। पाछें जब

आर्ति होइ रही तब हों दंडवत् करि कै बैठ्यो। सो ये माधौदास के बचन सुनि कै रूपमुरारी अपने मनमें बोहोत ही विस्मित भए। तब रूपमुरारीदास ने बिचार कियो, जो–इन माधौदास के बड़े भाग्य है। जो ये ह्यां रहत हैं और कहां श्रीनाथजी बिराजत हैं ? सो इहां सों पांचसौ कोस मार्ग पर बिराजत हैं। तहां तें इनकों दरसन देत हैं! सो जो–यह बात साँची है तो इन के भाग्य कौ पार नाहीं। तब रूपमुरारी आश्चर्य मानि कै माधौदास सों पूछे, जो–आज श्रीनाथजी कौ कहा सिंगार हतो ? तब रूपमुरारी सों माधौदास ने कह्यो, जो–वागो तो आज जंगाली रंग कौ हतो। और आज श्री–बालकृष्णजी सिंगार किये हैं। पाछें और हू सर्व सिंगार श्रीनाथजी के माधौदास ने भैया रूपमुरारी के आगें कहे। तब रूपमुरारीने वह दिन लिखि कै वह सिंगार लिखि वह बालक हू कौ नाम लिखि राख्यो। पाछें रूपमुरारी सों माधौदास ने बिनती करी, जो–रूपमुरारीदासजी! अब तुम मो पर कृपा करि कै मेरे घर पधारो। पाछें रूपमुरारीदास के मनुष्य पाछें रहे हते, तासों एक मनुष्य माधौदास की हाट ऊपर उन कों देखिवे कों बैठायो। और आपु तौ रूपमुरारी उन माधौदास के साथ उन के घर गए। तब माधौदास ने रूपमुरारी सों बिनती करी, जो–आप मो ऊपर कृपा करि कै आज रसोई ह्यांई करो। पात्र माटी के कोरे मँगाइ कै जल नयो मँगाऊँ। तब रूपमुरारी ने माधौदास सों कह्यो, जो–जल पात्र सब तुम्हारोइ सरंजाम हमारे काम आइ जाइगो, तासों तुम नयो साज कछू मति मँगावो।

पाछें रूपमुरारी तहां स्नान करि रसोई करि श्रीठाकुरजी कों

भोग समर्पि कै, माधौदास की हाट ऊपर सों वा दूसरे वैष्णव कों बुलाई, भोग सराइ, वा वैष्णव सहित रूपमुरारी दोऊ जनेंन भली भांति सों प्रसाद लियो। पाछें रूपमुरारी अपने डेरा आइ वाही समै रामदासजी भीतरिया कों वे सब समाचार लिखि पत्र में, ऐक घरू मनुष्य पठायो। सो पत्र रामदास पास आयो। ता पत्र कों रामदासजी बांचि कै वा दिना कौ सिंगार वागो श्रीगुसांईजी के बालक कौ नाम सब आछी भांति लिखि पठायो। सो पत्र लैकै मनुष्य रूपमुरारीदास पास आयो। तब रामदासजी के पत्र के सब समाचार और माधौदास के बचन वा दिन के दोऊन की एक बिधि मिलि गई। तब रूपमुरारी उन माधौदास की बोहोत ही सराहना किये। जो–या वैष्णव के बड़े भाग्य है। जो–ये रहत तो काबुल में हैं और इन कौ मन दृष्टि ब्रज में हैं। तातें इन समान कोऊ भाग्य–पुरुष और नाहीं है। श्रीगुसांईजी आपु कृपा करि कै इन कों दिव्य दृष्टि दिये हैं। तातें ये या सुख कौ प्रभुन की कृपा तें अवलोकन करत हैं। यह काबुल कितनी दूरि अनार्य देस है। तहां श्रीनाथजी इन कों नित्य दरसन देत हैं। तातें इन के भाग्य कौ कहा कहनो ?

भावप्रकाश – सो या वार्ता में यह सिद्धांत जतायो, जो–पुष्टिमार्गीय वैष्णवन कों देस, काल कर्म बाधा करत नाहीं। जहां अपने प्रभु सुख सों बिराजे वाही देस वैष्णवन के लिये उत्तम है। क्यों ? जो–म्लेच्छ देस में हू प्रभु अपने जन कों या प्रकार अनुभव जतावत हैं। तातें वैष्णव कों एक सेवा ही कौ आश्रय करनो।

और प्रथम माधौदास हरिद्वार में श्रीगुसांईजी पास नाम पाए हते। ता पहिले श्रीगोकुलजी और वृंदावन व्रज कछू हू माधौदास ने देख्यो न हतो। सो श्रीगुसांईजी पास नाम पाये पाछें

सर्व दरसन कर्‌यो। पाछें अपने देस काबुल गए। तहां प्रभुन की कृपा ऐसी भई, जो–श्रीनाथजी माधौदास कों उहांई दरसन देन लागे। और श्रीगुसांईजी माधौदास के हृदय में अलौकिक लीला स्थापित अपने प्रताप तें करे। तातें ये माधौदास हृदय की अलौकिक दृष्टि सों सर्व देखन लागे। सो वे माधौदास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए। ॥ वार्ता ॥ ८ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक हरजी कोठारी, भाइला कोठारी के भतीजा, राजनगर असारुवा में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये हरजी सात्विक भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'सुरंगी' है। ये चित्रा तें प्रगटी हैं, तातें इन के भावरूप हैं।

सो हरजी गुजरात में बेनी कोठारी हे, ताके घर जन्मे। ये बेनी कोठारी तीन भाई हे। सो बेनी कोठारी जा प्रकार श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक भए, सो तो नरहरि सन्यासी की वार्ता में कहि आए हैं। और भाइला कोठारी और जैता कोठारी ये दोऊ भाई श्रीगुसांईजी के सेवक भए। इन की वार्ता आगें कहेंगे।

सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिका कों पधारे। सो राजनगर के मार्ग में बेनी कोठारी कौ गाम आयो। तहां एक बगीचा में डेरा किये। सो बेनी कोठारी तो हे नाहीं। तातें हरजी की मा हरजी कों लै श्रीगुसांईजी के दरसन कों आई। ता समै हरजी बरस छह के हे। सो हरजी की मा ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज! हरजी कों सरनि लीजिए। सो श्रीगुसांईजी बेनी कोठारी कौ बेटा जानि हरजी कों कृपा करि कै नाम निवेदन करायो। ता पाछें हरजी कों श्रीगुसांईजी अपुनो जूंठन महाप्रसाद अपने श्रीहस्त सों दिये। सो महाप्रसाद लेत ही हरजी कों श्रीआचार्यजी की जन्म–लीला कौ अनुभव भयो। सो बानी स्फुर्द भई। सो ताही समै हरजी अपनी मा कों बोलि कै पद गावन लागे। सो पद–

राग धनाश्री

प्रगटे ए 'मा' श्रीवल्लभदेव, श्रीलछमन भट गृहे बधाइयां। मंगल सुहेलरा। टेक
गावे ए 'मा' गीत रसाल, सबै सुहागिनि आइयां॥ मंगल ०

ब्राह्मन ए 'मा' वेद पढ़ाय, देत असीस सुहाइयां।
मोतिन ए 'मा' चौक पूराय, बंदनवार बंधाइयां ।।मंगल ०
घर घर ए 'मा' दुंदभी बजाय, पहौप अंजुली बरखाइयां।
दीने ए 'मा' बहु बिधि दान, नरनारीन पहराइयां ।। मंगल ०
धन्य धन्य ए 'मा' एलम्मागारु, आसा सबै पूजाइयां।
सब दिन ए 'मा' सुख संपति राज, 'हरजीवन' मन भाइयां ।। मंगल ०

सो यह पद सुनि कै श्रीगुसांईजी आप हरजी ऊपर बोहोत प्रसन्न भए। सो ताही समै श्रीगुसांईजी आप अपनो चर्वित उगार हरजी कों दिये।

पाछें श्रीगुसांईजी आप ऊहां ते विजय किये। सो राजनगर व्है द्वारकाजी पधारे। तहां कछूक दिन रहे। फेरि राजनगर आइ तहां तें अड़ेल पधारे।

वार्ता प्रसंग-१

सो एक समै उन हरजी कोठारी ने आपु श्रीगुसांईजी के 'सहस्रनाम' कौ ग्रंथ सुंदर करि कै प्रभुन आगें निवेदन कर्‌यो। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी हरजी कोठारी ऊपर बोहोत प्रसन्न भए। पाछें जब श्रीगुसांईजी कब हू राजनगर पधारते, तब भाइला कोठारी तीनों भाईन के घर उतरते। तामें श्रीगुसांईजी भाइला कोठारी के घर तो बैठक करते। तहां तो बिराजते। और हरजी कोठारी के घर प्रभु रसोई करते। और जैता कोठारी के घर रात्रि कों श्रीगुसांईजी पोंढते। या प्रकार श्रीगुसांईजी इन तीनोंन के मनोरथ सिद्ध करते।

भावप्रकाश–काहेतें ? लीला में ये तीनों श्रीचंद्रावलीजी की अंतरंग सखी हैं। सो हरजी तो 'सुरंगी' सखी कौ प्रागट्य हैं। और भाईला कोठारी 'कौमोदिनी' है। सो श्रीस्वामिनीजीकी सखी चंपकलता है, ताके राजस भाव रूप (ये) हैं। सो श्रीचंद्रावलीजी में इनकी बोहोत आसक्ति है। और जैता कोठारी 'ब्रजभामा' है। सो हू श्रीचंद्रावलीजी की अंतरंग सखी हैं।

सो उन के द्वारे एक कोठ कौ वृक्ष हतो। ताकें तरें श्रीगुसांईजी चरन प्रक्षालन करते। संध्यावंदन करते। वे तीनों श्रीगुसांईजी के

ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए।
॥ वार्ता ॥९॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजीके सेवक भाइला कोठारी, राजनगर असारुवा में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये भाइला कोठारी कौ लीला कौ अलौकिक स्वरूप ऊपर हरजी कोठारी की वार्ता में कहि आए हैं। सो भाईला कोठारी राजनगर तै कछूक दूरि एक गाम में एक बनिया के प्रगटे। सो ये तीन भाई हे। बेनी कोठारी, भाइला कोठारी, जैता कोठारी। सो इन कौ पिता राजनगर में हाकिम के ऊहां रहतो। सो कोठार करतो। सो पिता मर्यो पाछें वा हाकिम ने इन तीनों भाईन कों कोठार पै राखे। तब ये तीनों भाई राजनगर आसारवा आइ रहे।

ता पाछें बेनी कोठारी नरहरि सन्यासी कौ संग पाइ श्रीआचार्यजी के सेवक भए। सो तो नरहरि सन्यासी की वार्ता में कहि आए हैं। पाछें श्रीगुसांईजी प्रथम बार जब द्वारिका पधारे, तब भाइला कोठारी, जैता कोठारी राजनगर में आप की सरनि आए, सेवक भए। ता पाछें दोऊ भाइन श्रीगुसांईजी सों बिनती करि श्रीगुसांईजी कों अपने घर असारुवा पधराए। तहां सगरे कुटुंब कों सेवक कराए। पाछें भाइला कोठारी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–राज! अब कहा कर्तव्य है? तब श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो–भगवत्सेवा करो। सो एक लालाजी कौ स्वरूप श्रीगुसांईजी भाइला कोठारी कों आप अपनी पास तें पधराइ दियो। तब भाइला कोठारी ने बिनती करी, जो–राज! मोकों तो आप की सेवा करने कौ मनोरथ है। तब श्रीगुसांईजी अपनी पादुका दिये।

और जैता कोठारी कौ दूसरो नाम मथुरा कोठारी हतो। सो ये श्री गुसांईजी के स्वरूप में सदा मगन रहते। इन (ने) श्रीठाकुरजी, श्रीआचार्यजी (और) श्रीगुसांईजी के बोहोत पद किये हैं। सो श्रीगुसांईजी सदा इन पर प्रसन्न रहते।

वार्ता प्रसंग–१

सो वे भाइला कोठारी श्रीगुसांईजी कों पधरायवे कों बारबार पत्र अति आतुरता सों लिखते। जो–राज! एकबार बेगि पधारो। ऐसें पत्र भाइला कोठारी के श्रीगुसांईजी के पास बोहोत आए। तब एक समै श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें अचानक श्रीरनछोरजी

के दरसन करिवे कों और भाइला कोठारी कौ मनोरथ पूरन करिवे कों द्वारिकाजी कों प्रभु तत्काल चले। सो तहां तें श्रीगुसांईजी 'सीकरी फतेपुर' पधारे। सो घर तें प्रभु जब चलत भए, तब तो न चांपाभाई अधिकारी कों जताए और न संकरभाई भंडारी कों जताए। योंही एकाएकी सीकरी फतेपुर पधारे। तब वा समै फतेपुर बीरबल हतो, तिन सुनी। जो–श्रीगुसांईजी इहां पधारे हैं। तब बीरबल साम्हे आइ दंडवत् करि श्रीगुसांईजी कों अपनें अपने डेरा पधराय अपने ही डेरा पास श्रीगुसांईजी कौ डेरा ठाढ़ो करवायो। पाछें बीरबल ने वा ठौर प्रभुन के दोइ चारि मुकाम करवाए। पाछें चांपाभाई संकरभाई दोऊ जनेंन श्रीगुसांईजी के दरसन करि दंडवत् करि प्रभुन सों पूछी, जो–राज ! काहू सों कहे बिना आप अचानक परदेस क्यों पधारत हो ? तब श्रीगुसांईजी चांपाभाई, संकरभाई सों कहे, जो–भाइला कोठारी के देखे बिना बोहोत दिन भए हैं। तासों अब के एक बार गुजरात पधारूंगो। यह श्रीमुख के बचन सुनि कै चांपाभाई, संकरभाई चुप करि रहे।

पाछें चांपाभाई सों बीरबल ने पूछी, जो–ऐसी उतावलि सों श्रीगुसांईजी पधारत हैं, सो कहा कारन है ? तब चांपाभाई बीरबल सौं कहे, जो–भंडार में करज बोहोत भयो है, तातें गुजरात के परदेश कों पधारत हैं। तब बीरबल ने चांपाभाई सों पूछी, जो–करज कितनोक भयौ है ? जो तासों (ऐसी) उतावलि सों पधारत हैं ! तातें करज भयो होइ सों मोसों कहो, ता करज के द्रव्य कों हों चुकाइ देहुंगो। और तुम श्रीगुसांईजी कों

परदेस पधारत सों राखि कै घर पधराओ। सो श्रीगुसांईजी तो अतंरजामी है। तातें इन दोऊन के मन की बात जानि गए। पाछें प्रभु बीरबल कों खबरि किये बिना आधी रात्रि के समै फतेपुर सों आगें कों पधारे।

भावप्रकाश–सो काहेतें ? जो–श्रीगुसांईजी कौ यह संकल्प है, जो द्रव्य निमित्त परदेस सर्वथा न जानो। तातें आप द्वारिकाजी के दरसन निमित्त गुजरात पधारते। और दैवी जीवन कों अंगीकार करते। परि चांपाभाई कों अधिकार पाइ लौकिक बुद्धि भई। सो बीरबल सों या भांति कह्यो। और बीरबल जद्यपि श्रीगुसांईजी कौ सेवक है, तोऊ दुसंग पाइ बहिर्मुख व्है रह्यो है। तातें करज कौ द्रव्य चुकाइवे की कही। सो श्रीगुसांईजी इन पर अप्रसन्न व्है उतावलि सों आधी रात्रि कों ही तहांतें पधारे। काहू कों कह्यो नाहीं। तातें वैष्णव कों प्रभुन के, गुरुन के कार्य में लौकिक बुद्धि सर्वथा न करनी। यह सिद्धांत जतायो। जो–लौकिक बुद्धि करि नारायनदास दीवान सारिखेन कों अंतराय भयो। सो आगें कहि आए हैं। तातें वैष्णव कों बोहोत सँमारि कै बोलनो।

सो यह खबरि तो बीरबल कों बड़े सवारे भई। जो श्रीगुसांईजी तो गुजरात पधारे। सो श्रीगुसांईजी आप तो बेगि ही राजनगर में भाइला कोठारी के घर जाइ पहोंचे। पाछें भाइला कोठारी के मन में जो–जो मनोरथ हुते सो सर्व करे। ता पाछें भाइला कोठारी के घर श्रीगुसांईजी थोरे से दिन बिराजि कै द्वारिकाजी पधारि श्रीरनछोरजी के दरसन करि तहां तें वाही मार्ग फिरि आइ, थोरेसे दिनन में श्रीगोकुल पधारे। और घर पधारे कौ पत्र बीरबल कों लिखे। सो पत्र देखि कै बीरबल अति ही विस्मित होइ रह्यो। वे भाइला कोठारी श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। तिनकों आप सुधि करि कै दरसन दैन पधारते।

वार्ता प्रसंग–२

और एक समै श्रीगुसांईजी असारुवा में बिराजत हते। तहां

चाचा हरिवंसजी श्रीगुसांईजी के साथ हते । तब एक दिन श्रीगुसांईजी सों बिनती करि चाचा हरिवंसजी कहे, जो–महाराज ! भाइला कोठारी के माथे करज बोहोत भयो है । ऐसें तीन बेर बिनती चाचाजी प्रभुन आगें करे । तब श्रीगुसांईजी चाचाजी सों कहे, जो–चाचाजी ! द्रव्य की तो कितनीक बात है, परि जैसो मन अब कोठारी कौ है तैसो द्रव्य पाइ कै रहेगो नाहीं । यह श्रीमुख के बचन सुनि कै चाचा हरिवंसजी चुप करि रहे । पाछें भाइला कोठारी, ने यह बात काहू द्वारा सुनी । तब ये अपने मन में बोहोत दुःख पाइ कै कहे, जो–हों तो यह बात कछू जानत हूँ नाहीं । मति श्रीगुसांईजी के मन में यह आइ होंइ, जो–चाचाजी द्वारा कोठारी ने बिनती करी होइगी । यह कोठारी अपने मनमें बोहोत डरपि कै श्रीगुसांईजी पास आइ कै दंडवत् करि कै बिनती करे । जो–महाराज ! मोकों आप के चरनारविंद बिना और काहू बस्तु की अपेक्षा नाहीं है । और राज ने श्रीमुख तें यह बचन कह्यो, जौ–आगें वह दसा न रहेगी । सो काहेतें ? सो मोसों आप कृपा करि कै कहिए । तब श्रीगुसांईजी ने भाइला कोठारी को समाधान कर्‌यो । जो मैं यह नाहीं कही, जो–पाछें यह दसा नाहीं रहेगी । परि द्रव्य ऐसी बस्तू है । और हू श्रीगुसांईजी कोठारी कौ समाधान कर्‌यो । जो–हम यह जानत हैं, जो–तेरे मन में यह बात कबहू न आवेगी । और तेरी बुद्धि मोमें तें कबहू अन्यत्र न फिरेगी । यह आसीर्वाद प्रभु प्रसन्न होंइ कै भाइला कोठारी कों दिये । सो वे भाइला कोठारी श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र हे ।

भावप्रकाश–यामें यह सिद्धांत जतायो, जो–द्रव्य पाय बुद्धि निर्मल रहे नाहीं। दीनता होत नाहीं। तातें प्रभु अपने जन कों निष्किंचन करत हैं। और भाइला कोठारी तो श्रीगुसांईजी के अंतरंग सेवक हैं। सो इनकी बुद्धि तो द्रव्य पाये तें हू कबहू मलीन होइ नाहीं। यह तो स्वकीय जन सिक्षार्थ यह बात कही। जो–कोऊ छोटो पात्र होंइ तो द्रव्य पाइ विमुख व्है जांइ। तातें कोठारी के मिष करि इतनो जतायो। और यहू अभिप्राय है, जो–निष्किंचन होइं तब प्रभुन की विसेस कृपा जाननी। तो सर्व भाव की सिद्धि होंइ।

वार्ता प्रसंग–३

और एक समै श्रीगुसांईजी राजनगर असारुवा में बिराजत
हते। तब काहूने गुजरात के देसाधिपति आगें चुगली करी। सं
एक धोलका में 'लाछाबाई' और वाकौ भाई दोऊ जन एक हं
घर में रहत हते। सो लाछाबाई कौ अमल सगरी गुजरात
हतो। सो चुगली करनवारे ने, 'बाज बहादुर' एक खोजा वा बा
के आगें सरनाम हतो, तासों मिलि कै जाँइ चुगली करी
जो–श्रीगोकुल सों एक फकीर आयो है। सो राजनगर में कोठारं
की बहनि सों मिलि कै रहत है। और वह फकीर बड़ो महापुरु
कहावत हैं। तब वा लाछाबाई ने बाज बहादुर कों परवानगं
दीनी, जो–तुम असारुवा में जाइ कै न्याय करिकै आऔ। त
वह बाज बहादुर असारुवा में श्रीगुसांईजी ऊपर चढि आयो
सो यह खबरि वाके आवत पहिले श्रीगुसांईजी ने सुनी। त
प्रभु तो भीतर पधारे। सो वा बैठक में 'बाछा बघेला,' औ
'झबोजी' राजपूत गरासिया तथा कोठारी ऐसें दस पांच जनें बै
हते। इतने ही बाज बहादुर बैठक में आइ बैठ्यो। ताही स
श्रीगुसांईजी गादी ऊपर आइ बिराजे। तब वह बाज बहादु
उठि श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै फेरि बैठ्यो। ता पाछें बा

बहादुर ने श्रीगुसांईजी सों अपनी बोली में कछू बात करी। ताकौ प्रतिउत्तर श्री गुसांईजी भली भांति सों वाही की बोली में वाकों समुझाइ कै दिये। तब तो वह बाज बहादुर अपने मनमें बोहोत ही प्रसन्न भयो। और श्रीगुसांईजी वाकों समुझावत में अपनी ईस्वरता जताए। तब तो बाज बहादुर नें अपने मन में जानी, जो–ये तो साक्षात् ईस्वर हैं। तासों ये बावरे लोग मोकों लरायो चाहत हैं। सो जा दिन बाज बहादुर श्रीगुसांईजी पास आयो हतो, तब बरखा के दिन हते। परि वा देस में मेह न बरसतो हतो। तातें लोग सगरे बिलबिलाय रहे हते। तब बाज बहादुर ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! पानी बिना प्रजा बोहोत दुःख पावत है। तब श्रीगुसांईजी वासों कहे, जो–वर्षा तो बोहोत होइगी। तब वह बाज बहादुर श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै चलन लाग्यो। तब वाकों श्रीगुसांईजी एक बीरा दिये। तब वह बीरा माथें चढाइ बाज बहादुर फेरि श्रीगुसांईजी सों बिनती कर्‍यो, जो महाराज ! एक़ कछू ऐ सी बस्तू अपने हाथ सों देहू, जो–आठ पहर मेरे माथे ऊपर रहे। तब श्रीगुसांईजी अपने श्रीहस्त सों वाकों एक सुपारी दिये। सो सुपारी वह लै माथे चढाइ कै, अपनी पाग के खूंट में बांधि कै श्रीगुसांईजी सौ दंडवत् करि कै अपने घर कों बाज बहादुर चल्यो। तब मार्ग में अकस्मात ही ऐसी बरषा भइ, जो–जैसें तैसें करि कै वह बाज बहादुर घर पहोंच्यो। तब वह बाज बहादुर अपने मन में बोहोत ही प्रसन्न भयो। पाछें घर जाइ कै बाज बहादुर ने ये समाचार लाछाबाई के आगें कहे। तब लाछाबाई ने यह हुकम वा समै

कियो, जो–जा ने यह चुगली करी है वा चुगल कों अब ही खरच करि डारो। जो–कोई फेरि ऐसो काम न करे। यह हुकम कर्‍यो। सो यह बात वा चुगल की माता ने सुनी, जो–याकों मारिवे कौ हुकम भयो है। तब वह अपने बेटा कों लै कै श्रीगुसांईजी की सरनि आइ कै बिनती करी, जो–महाराज ! मेरे बेटा कों तो ठौर मारत हैं। तातें अब आप की सरनि मैं पुत्र अपने कों लै कै आइ हों। तब श्रीगुसांईजी बाज बहादुर कों कहवाइ पठाए, जो–तुम काहू कों मारियो मति। तब बाज बहादुर श्रीगुसांईजी की आज्ञा मानि कै अपने मनुष्यन कों बरज्यो। पाछें और काहू दिन बाज बहादुर वाकों दरबार में बुलाइ कै कह्यो, जो–अब के तो तोकों हों श्रीगुसांईजी की आज्ञा तें छोर्‍यो हूँ। परि अब तैनें काहू की झूंठी चुगली करी तो हों तोकों ठौर ही मारूंगो। यह कहि उन कौ समाधान करि दियो। पाछें श्रीगुसांईजी केतेक दिन कों श्रीगोकुल पधारे।

भावप्रकाश–या वार्ता में यह जतायो, जो–वैष्णव कों जीव मात्र पर दया करनी। कैसोहू चोर चुगल होंइ तो हू अपनो बस चले जहां तांई वाकों उबार लेनो।

सो वे भाइला कोठारी श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। सो इन की वार्ता कौ पार नाहीं सो कहां तांइ कहिए।

॥ वार्ता ॥१०॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक गोपालदास, भाइला कोठारी के जमाई, सो वे रूपपुरा में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश–ये गोपालदास सात्विक भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'सारंगी' है। ये चंपकलता तें प्रगटी हैं। तातें इन के भावरूप हैं। और सारंगी की एक अंतरंग सखी हैं। ताकौ

नाम 'गोमति' है। सो यहां गोपालदास की स्त्री गोमति भई।

ये गोपालदास 'रूपपुरा' में एक बनिया के जन्मे। और 'गोमति' असारुवा में भाइला कोठारी के जन्मी। सो गोपालदास जन्मत ही सों मूंगे, कछू बोले नाहीं। सो काहेतें ? जो–ये पहिले जन्म में 'नरसी महेता' हे। सो उन प्रभुन कों अनेक भांति बिनती करि श्रम करवायो है। ता अपराध ते ये मूंगे भए। पाछें ये बरस पांच के भए तब भाइला कोठारी की बेटी गोमति सों इन की सगाई भई।

वार्ता प्रसंग–१

सो वे गोपालदास भाइला कोठारी के जमाइ हते। सो प्रथम जब श्रीगुसांईजी भाइला कोठारी के घर पधारे, तब कोठारीने सगरे कुटुंब कों नाम निवेदन कराइ दंडवत् कराए। पाछें जब गोपालदास कों नाम निवेदन कराइ दंडवत् करावन लागे, तब श्रीगुसांइजी पूछे, जो–कोठारी। यह कौन है ? ता समै गोपालदास बरस नौ के हते। तब कोठारी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! यह गोमती कौ वर है। तब श्रीगुसांईजी कोठारी सों हँसि कै कहे, जो–गोमती कौ बर तो सागर है। और यह बालक तो सूधो मुग्ध है। तासों जोड़ा कैसें बनें ? तब कोठारी ने फेरि श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–राज ! यह आपकी कृपा तें सागर होंइ जाइगो। तब श्रीगुसांईजी भाइला कोठारी कौ जमाइ जानि, अपनी गोदि में बैठाइ, आप कृपा करि कै अपनो अधरामृत गोपालदास के मुख में दिये। सो उगार लैत ही गोपालदास की अति उज्ज्वल बुद्धि होइ गई। तब गोपालदास श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै श्रीवल्लभाख्यान कौ आरंभ करे। सो कारिका–

"वंदों श्रीविट्ठलवर सुंदर नव घनश्याम तमाल।"

यह 'कडवा' संपूरन गोपालदास ने श्रीगुसांईजी के आगें गाइ सुनायो। तब श्रीगुसांईजी और भाइला कोठारी सुनि कै बोहोत प्रसन्न भए। पाछें श्रीगुसांईजी गोपालदास सों यह आज्ञा करे, जो–गोपालदास ! श्रीआचार्यजी कौ गुनगान करो। तब गोपालदास फेरि श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि दूसरे आख्यान कौ गान करे। ताकी कारिका–

'श्रीलक्ष्मण सुत श्रीवल्लभरायजी, सुमिरन करतां दुष्कृत जायजी।'

यह आख्यान गोपालदास श्रीगुसांईजी आगें गाए। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–अब यह गोमती कौ बर सागर भयो। यह आसीर्वाद श्रीगुसांईजी गोपालदास कों दिये। पाछें सात आख्यान और हू गोपालदास किये।

भावप्रकाश–सो या वार्ता में श्रीगुसांईजी आपु अपने भक्तन कौ उत्कर्ष जताए। जो–भाइला कोठारी द्वारा श्रीगुसांईजी आप गोपालदास कों सागर होंन की कहे। सो बानी तत्काल फलित भई। तातें गोपालदास हू आगें गाए हैं, जो–'भक्तजन पद–रज प्रतापे, सकल सरियां काज।'

वार्ता प्रसंग–२

पाछें ता गोपालदास (ने) श्रीठाकुरजी के पद एकसे गुजराती भाषा में नरसी महेता कौ भोग दै कै बोहोत ही करे।

भावप्रकाश–सो काहेतें, जो–इन कों अपने पूर्व स्वरूप कौ ज्ञान भयो। जो–हों नरसी महेता कौ अवतार हूँ। सो वा जन्म में मैंने मर्यादा रीति सों प्रभुन कों माहात्म्य गायो है। तातें अब पुष्टि प्रकार सों पद गाऊं। जासों वा बानी कों पुष्टि संबंध होंइ।

सो उन गोपालदास ऊपर श्रीगुसांईजी या प्रकार कृपा करि सागर करे।

और एक समै श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें चाचा हरिवंसजी कों यह आज्ञा करे, जो–चाचाजी ! तुम गुजरात जाऊ । तब चाचा हरिवंसजी श्रीगुसांईजी सों यह बिनती करे, जो–राज ! हों आप के दरसन बिना कैसें दिन निर्वाह करूंगो ? तब श्रीगुसांईजी यह आज्ञा किये, जो–चाचाजी ! तुम भाइला कोठारी सों और गोपालदास सों मिलत रहियो । और हों हूं तुम कों दरसन देत रहुंगो । तब चाचाजी प्रभुन पास आज्ञा माँगि गुजरात गए । सो जा दिन तें चाचाजी श्रीगोकुल छोर्‌यो, ता दिन तें नित्य श्रीगुसांईजी चाचाजी कों दरसन देते । या प्रकार चाचा हरिवंसजी गुजरात जाइ पहोंचे । पाछें नित्य चाचाजी भाइला कोठारी सों और गोपालदास सों मिलत रहते । वे गोपालदास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे । तातें उन की वार्ता कहां तांई कहिए । ॥ वार्ता ॥११॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक मानिकचंद क्षत्री, सो वे आगरा में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये मानिकचंद तामस भक्त हैं । लीला में इन कौ नाम 'रागिनी' है । ये चंपकलता तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं । और रागिनी की एक सखी हैं । तिन कौ नाम 'अनुरागिनी' है । सो यहां मानिकचंद की स्त्री भई ।

ये आगरे में गोपालपुरा के निकट दोऊ क्षत्री के घर पास हते, तहां दोऊ जन्म लिये । सो उन दोऊ क्षत्री के परस्पर बोहोत मित्रता हती । तातें दोऊ जनें कही, जो–अपने बेटा, बेटी कौ बिवाह करें तो आछौ । पाछें बड़े भए तब दोऊन कौ बिवाह किये । सो मानिकचंद कौ पिता राजद्वार में चाकर हतो । सो द्रव्य बोहोत भेलो कियो । पाछें कछूक दिन में पिता मर्‌यो । तब मानिकचंद राजद्वार में चाकर रहे । **वार्ता प्रसंग–१**

सो एक समै श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार तें अड़ेल कों पधारे ।

तब आगरे में मानिकचंद के घर के पाछें एक वैष्णव कौ घर हुतो। तहां श्रीगुसांईजी जाँइ उतरे। सो उष्णकाल के दिन हुते। सो सांझ कों अटारी ऊपर झरोखा बजार के हे, तहां श्रीगुसांईजी बिराजे हते। ताके सन्मुख मानिकचंद कौ घर हुतो। सो मानिकचंद की स्त्री अपनी अटारी ऊपर चढ़ी हुती। सो स्त्री कों श्रीगुसांईजी के दरसन भए। तब प्रभु साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम आनंद मात्र कर पाद मुखोदरादि सर्व अंग या रीति के दरसन श्रीगुसांईजी मानिकचंद की स्त्री कों दिये। सो वह तो प्रभुन के दरसन करत मात्र थकित होत भई। पाछें तो या स्त्री कों अपने देह कौ अनुसंधान भूल्यो। ता पाछें जब रात्रि कों मानिकचंद राजद्वार तें आए तब मानिकचंद ने लोंडी सों पूछ्यो, जो वह ऊपर कहां है ? तब लोंडी ने मानिकचंद सों कही, जो अटारी उ... ने बेठी हैं। तब मानिकचंद अटारी ऊपर चढ़े। परि वा स्त्री के मानिकचंद आए जानें नाहीं। वाकी दृष्टि तो एक श्रीगुसांईज... ...ही, स्वरूपमें आसक्त हती। तब मानिकचंद सों स्त्री ने व... हैं। जो–देखो, साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम जो कहियत हैं बिराजत ...करि सो स्त्री के बचन सुनि मानिकचंद हूँ श्रीगुसांईजी के दरसन ... लों थकित होंइ रहे। सो श्रीगुसांईजी रात्रि प्रहर सवा गई तहां ...ये उहां बिराजे रहे। पाछें प्रभु पोढिवे कों पधारे। तब लगि ...रे। स्त्री–पुरुष उहांई ठाढ़े रहे। श्रीगुसांईजी के दरसन कर्‌यो व... स्त्री पाछें मानिकचंद हू उठे। तब स्त्री सों कहे, जो–उठो। तब ...रुष ने मानिकचंद सों कही, जो–अब कहां जाइए ? पाछें स्त्री–पु... देह सगरी रात्रि उहांई बैठे रहे। सो जब प्रातःकाल भयो तब

कृत्य करि दोऊ जन स्नान करि कै श्रीगुसांईजी पास जाँइ, दंडवत् करि, बिनती प्रभुन सो करें। जो–राज ! हम कों कृतारथ करो। तब श्रीगुसांईजी उन दोऊ स्त्री पुरुष कों कृपा करि कै नाम निवेदन कराए। सो मानिकचंद नें ताही समै श्रीगुसांईजी के सन्मुख यह बधाई गाई–

राग देवगंधार

चहुँ जुग वेद बचन प्रतिपार्‌यौ
धर्म ग्लानी भई जब ही जब तब तब तुम बपु धार्‌यौ।
सत्ययुग श्वेत वाराह रूप धरि हिरण्याक्ष उर फार्‌यौ।
त्रैता राम रूप दसरथ गृह रावन कुल ही संहार्‌यौ।
द्वापर व्रज बूडत तें राखी सुरपति पाँयन पार्‌यौ।
कंसादिक दानव सब मारे वसुधा भार उतार्‌यौ।
अब श्रीवल्लभ गृह प्रगट होइ कै मायावाद निवार्‌यौ।
'मानिकचंद' श्रीविट्ठल प्रभु कौ पुरुषोत्तम रूप निहार्‌यौ।

ऐसें ऐसें बोहोत पद मानिकचंद ने श्रीगुसांईजी के आगें गाए। तामें श्रीगुसांईजी कों मानिकचंद पूरन पुरुषोत्तम रूप सों देखे हैं। या प्रकार मानिकचंद ने श्रीगुसांईजी कों पूरन पुरुषोत्तम दृढ़ करि जानें। सो ऐसो मानिकचंद कौ दृढ़ भाव देखि श्रीगुसांईजी आप मानिकचंद ऊपर बोहोत प्रसन्न भए। पाछें मानिकचंद ने श्रीगुसांईजी कों बिनती करि अपने घर पधराए। सो श्रीगुसांईजी दिन तीन लों उहां बिराजे।

पाछें जब श्रीगुसांईजी अड़ेल कों पधारन लागे तब ए दाऊ

जन एक एक वस्त्र सों घर के बाहिर ठाढ़े रहे। पाछें मानिकचंद ने चांपाभाइ सों कही, जो–या घर में जो–कछू होइ सो सगरो तुम लै जाहु। यह घर में जो–कछू है सो सर्व श्रीगुसांईजी कौ हैं। पाछें अपने घोड़ा तबेला में हते सो, और ऊंट सब सामान मँगाइ कै श्रीगुसांईजी की भेंट करि दिये। सर्वस्व मानिकचंद भेट करि समर्पन करे। पाछें मानिकचंद सों श्रीगुसांईजी यह आज्ञा करे, जो–आज तुम दोऊ जन इहांई प्रसाद लीजियो। सो तीन दिन श्रीगुसांईजी उहां और हू बिराजे। पाछें चौथे दिन अड़ेल कों विजय करे। तब मानिकचंद एक ऊंट की डोरी स्त्री कों गहाए। और एक ऊंट की डोरी आप पकरि कै साथ ही चले। और कितनो ही सामान मानिकचंद ने घर कौ बेच्यो। ताके दाम की छहत्तर हजार की हुंडी भई। पाछें थोरीसी दूरि गाम बाहिर जाँइ कै मानिकचंद श्रीगुसांईजी की पालकी के साथ चले। सो ऊंट तो प्रथम ही आगें चले। और वैष्णवन की बिदा करत प्रभुन कों विलंब भयो। पाछें सुखपाल तो बेगि ही ऊंटन कों जाँइ पहोंची। तब श्रीगुसांईजी खवास सों पूछे, जो–यह ऊंट के साथ स्त्री जन कौन चली जात है ? तब वह खवास दोरि कै देखें तो मानिकचंद की स्त्री है। पाछें वह खवास श्रीगुसांईजी पास आइ बिनती कर्‌यो, जो–महाराज ! मानिकचंद की स्त्री है। तब श्रीगुसांईजी ऊंट थंभाइ वा ठौर पालकी थंभाइ कै वा खवास सों पूछे, जो मानिकचंद कहां है ? तब खवास ने बिनती करी, जो–मानिकचंद तो आप के पीछे चले आवत हैं। तब श्रीगुसांईजी मानिकचंद कों बुलाइ कै मानिकचंद सों यह आज्ञा

आप करे, जो–मानिकचंद ! अब तुम फिरो। तब मानिकचंद तो चुप करि रहे । पाछें स्त्री ने श्रीगुसांईजी सों उत्तर कर्‌यो, जो–महाराज ! अब हम कहां जाँइ ? हम कों तो तुम्हारे चरन–कमल बिना और आश्रय नाहीं। तब श्रीगुसांईजी वा स्त्री कों बोहोत भांति समुझाइ बार बार यही आज्ञा करे, जो–तुम अब पाछें फिरो। तब वा स्त्रीनें प्रभुन प्रति कही, जो–राज ! मोकों तो आपु घर की टहल, जो सोंपोगे सो हों करूंगी। और नाँतरु उपरा थापूंगी। परि हम कों तो और ठौर नाहीं है, जो–तहां हम जांइ। जो मोकों आप अपने साथ न लै जाउ तो मोकों इहां काहू के हाथ बेचि कै मेरे दाम होंइ सो आप लै पधारो। जाके हाथ मोकों बेचोगे ताही के घर की टहल हों आछी भांति करूंगी। परि हम कों तिहारे चरन–कमल बिना और आश्रय नाहीं । तब श्रीगुसांईजी इन कौ बोहोत समाधान कर्‌यो। परि इन न मानी। तब श्रीगुसांईजी इन सों कहे, जो–हों तुम पास एक बस्तू माँगत हूं, सो तुम मोकों देहु। और मै तुम कों एक बस्तू देत हूं, सो तुम मो पास तें लेहु। तब वा स्त्री ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! और बस्तू हमारे पास कहा है ? जो–आप माँगत हो ? एक यह देह है, सो तो हम तुमही कों समर्पे हैं। सो तो तुम्हारोइ है। आप यह देह कौ चाहो सो करो। और हम पास देवे कों कछू है नाहीं। तब श्रीगुसांईजी मानिकचंद सों कहे, जो–तुम हमारो कह्यो मानो। ऐसें ही श्रीगुसांईजी मानिकचंद की स्त्री सों कहे, जो–तू तो घर में रहि कै सेवा करि। और मानिकचंद सों प्रभु कहे, जो–तुम व्यौहार करो। तब वा स्त्री ने श्रीगुसांईजी सों

कही, जो–महाराज ! हों सेवा करि कहा जानूं ? और प्रभुन सों मानिकचंद ने कही, जो–महाराज ! व्यौहार काहे सौं होंइ ? हमारे पास तो कछू द्रव्य नाहीं। तब श्रीगुसांईजी पास भंडारी ठाढ़ो हतो। तासों प्रभुन कह्यो, जो–मानिकचंद की भेंट कहा भंडार में आइ है ? तब भंडारी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! मानिकचंद ने छहत्तर हजार की हुंडी कराइ भंडार में दीनी है। और इन ने घर में तिनुका पर्यंत कछू राख्यो नाहीं। तब श्रीगुसांईजी वासों पूछी, जो–व्यौहार कौ कहा चहिए ? तब मानिकचंद ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! दस हजार रुपैया होंइ तब व्यौहार होंइ। तब श्रीगुसांईजी ने भंडारी सों कह्यो, जो–वा द्रव्य में सों दस हजार रुपैया मानिकचंद कों देहु। तब मानिकचंद ने श्रीगुसांईजी सों कही, जो–महाराज ! मैं तिहारो द्रव्य लै कहा करूंगो ? तब श्रीगुसांईजी मानिकचंद सों कहे, जो–या द्रव्य सों कमाओ। पाछें हमारो द्रव्य हम पास पठाइ दीजियो। तब मानिकचंद ने फेरि श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–राज ! आप कौ द्रव्य लेहु सो तो रिन माथें भयो। और या द्रव्य सों उद्यम करों ? और या देह की तो स्थिति नाहीं। कदाचित् देह परे, और आप कौ द्रव्य भंडार में न भर्‌यो गयो होंइ, तो मेरे माथे रिन रहि जाँइ। तातें आप के द्रव्य सों उद्यम न करूंगो। तब श्रीगुसांईजी मानिकचंद सों कहे, जो–कमाइ दीजो। और जो यौ करत रहि जाइगो तो तेर माथे रिन नाहीं। पाछें श्रीगुसांईजी मानिकचंद की स्त्री सों यह कहे, जो–हों देत हों सो तू लै। हों तुम ऊपर प्रसन्न हों। और श्रीगुसांईजी बचन दै

कै वा स्त्री सों यह कहे, जो–हों पांच महीना श्रीनाथजीद्वार में रहत हूँ। सो मैं श्रीनाथजीद्वार में चारि महिना रहूंगो। और एक महिना आवत जात तुम्हारे घर रहूँगो। पाछें श्रीगुसांईजी की आज्ञा मानि मानिकचंद अपने घर आए। तब श्रीगुसांईजी मानिकचंद के माथे लालजी की सेवा पधराए। सो कछूक दिन आपु सेवा करि वा स्त्री कों सर्व सेवा कौ प्रकार समुझाए। सो जब श्रीगुसांईजी सेवा करते तब मानिकचंद स्त्री–पुरुष दोऊ जन जाँइ ठाढ़े रहते। सो सर्व सेवा कौ प्रकार मानिकचंद कों श्रीगुसांईजी समुझाइ कै कहे। तब वे दोऊ जन मानिकचंद और उनकी स्त्री आछी भांति सों सेवा करन लागे। पाछें वा द्रव्य सों मानिकचंद कमावते। सो एक भाग सों तो निर्वाह करते। और तीन भाग कौ द्रव्य भेलो करते। सो थोरेइ दिनमें द्रव्य कमाए। सो जब श्रीगुसांईजी मानिकचंद के घर पधारे। तब वे दस हजार कौ तोडा प्रभुन के आगें धरे। पाछें मानिकचंद ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! यह अपनो द्रव्य लेहु। और मोकों उरिन करो। आपकी कृपा सों अब मेरे पास द्रव्य उद्यम लाइक है। तातें अब हों आप कौ रिन काहे कों राखों ? तब श्रीगुसांईजी मानिकचंद ऊपर अति प्रसन्न होंइ कै वा समै यह श्रीमुख तें कहे, जो–के तो समर्पन राजा बलि ने कर्‌यो, और के समर्पन मानिकचंदने कर्‌यो।

भावप्रकाश– यहां यह संदेह होंइ, जो–राजा बलि ने समर्पन कियो सो तो कछू लियो नाहीं। और मानिकचंद तो वामें तें ब्यौहार कों द्रव्य लिये। सो हू रिन काढ़ि कै। तातें यह समर्पन कैसें कह्यो जाँई ? तहां कहत हैं, जो–राजा बलि कौ समर्पन मर्यादा रीति कौ है। सो प्रभु आप दान लियो है। सो दान की वस्तू पाछी लीनी नहीं जाँई। और यह तो पुष्टिमार्ग की

रीति सों समर्पन कियो है, स्नेह करि। तातें लोक में जा भांति स्वामि–सेवक कौ ब्यौहार होत है ता प्रकार यहां हूँ है। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु 'सिद्धांत–रहस्य' ग्रन्थ में लिखे हैं, सो श्लोक–

तस्मादादौ सर्वकार्ये सर्ववस्तुसमर्पणम्।
दत्तापहारवचनं तथा च सकलं हरेः॥
न ग्राह्यमिति वाक्यं हि भिन्नमार्गपरं मतम्।
सेवकानां यथा लोके व्यवहारः प्रसिद्ध्यति॥

तातें मानिकचंद लोक ब्यौहार की नाँई रिन काढ़ि कै द्रव्य लियो। सो हू श्रीगुसांईजी की आज्ञा तें। तातें मानिकचंद कौ समर्पन उत्तम है। यह भाव जाननो।

पाछें जब महिना एक भयो तब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार होइ कै फेरि अड़ेल कों पधारे। या प्रकार श्रीगुसांईजी प्रति वर्ष मानिकचंद के घर एक महिना रहते। ऐसी कृपा मानिकचंद ऊपर श्रीगुसांईजी की हती।

वार्ता प्रसंग–२ *

और एक समै मानिकचंद के बेटा कौ विवाह हतो। सो मानिकचंद बिनतीपत्र लिखि कै श्रीगुसांईजी कों अपने घर पधराए। सो श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलजी तें आगरे पधारे। पाछें केतेक दिन कों श्रीगोकुलनाथजी कौ जन्म दिवस आयो। तब श्रीगुसांईजी श्रीगिरिधरजी कों श्रीगोकुल कहाइ पठाए, जो–तुम श्रीवल्लभ के जन्म दिवस कौ कामकाज करियो। हों तो इहां सों ब्याह भए पाछें आऊंगो। पाछें जब मानिकचंद के बेटा कौ विवाह होंइ रह्यो, तब श्रीगुसांईजी मानिकचंद सों बिदा होंइ कै श्रीगोकुल पधारे। ऐसी कृपा श्रीगुसांईजी मानिकचंद ऊपर करते। वे मानिकचंद स्त्री–पुरुष श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए। ॥ वार्ता ॥१२॥

* यह प्रसंग कृष्ण भट्टकी पोथी का है।

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक ब्राह्मन कपड़ा की दलाली करतो, सो बंगाले में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'आनंदी' है ये रतिकला तें प्रगटी हैं, तातें इन के भावरूप हैं।

ये बंगाले में एक गाम है, तहां एक ब्राह्मन के जन्म्यो। पाछें बरस ग्यारह कौ भयो तब इन कौ ब्याह भयो। सो स्त्री साधारन मिली। लीला संबंधी नाहीं। पाछें ये बरस बीस पच्चीस कौ भयो। तब इन कौ पिता मर्‍यो। तब ये कपड़ा की दलाली करन लाग्यो।

वार्ता प्रसंग–१

सो प्रथम एक बंगाले कौ साथे मथुराजी में आयो। ता साथ में सोदागर बोहोत आए। पृथ्वीपति के देस कों सोदागर कपड़ा बेचन जात हते। तिन सोदागरन कों मिलि कै ये ब्राह्मन दलाली करतो। सो वह ब्राह्मन सामर्थ्यवान् हतो। सो अपनी जीविका कों ब्राह्मन हूँ मथुरा में उन सोदागरन के साथ आयो। पाछें वे व्यौपारी तो मथुराजी में रहे। और वा साथ में वैष्णव हते, सो श्रीगोकुल कों श्रीगुसांईजी के दरसन कों चले। तिन के साथ यह ब्राह्मन हू श्रीगोकुल आयो। सो सगरे वैष्णवन के साथ ब्राह्मन हू ने श्रीगुसांईजी के दरसन पाए। तब श्रीगुसांईजी के दरसन करत ही वा ब्राह्मन के मन में यह आई, जो–हों इनकौ सेवक होऊं तो आछी बात है। यह बिचारि कै ब्राह्मन ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! अब आप मोकों अपनो सेवक करो। तब वाकों स्नान कराइ श्रीगुसांईजी नाम निवेदन कराए। पाछें वाही संग के साथ वह ब्राह्मन अपने सोदागरन के कपड़ा दिल्ली में बिकवायो। ताकी दलाली कौ द्रव्य गांठि बांधि अपने देस बंगाले में आयो। तब वाके मनमें यह मनोरथ उपज्यो, जो–या द्रव्य कौ एक ऐसो उत्तम परकालो लेहु, ताकौ श्रीगुसांईजी के

श्रीअंग कौ बागो ब्योंताऊं । सो एक परकालो थान रुपैया अढाइसैं कौ अति उत्तम लियो । वा थान के रुपैया डेढसैं हाँसिल लागे तब सहर के बाहिर निकसन पावे । तब वा ब्राह्मन ने वा थान कों एक बांस के नलुवा में धरि कै लाठी करि वह बाहिर निकस्यो । सो स्त्री कों हू संग लै चल्यो ।

भावप्रकाश–काहेतें ? जो–इन कों श्रीगुसांईजी के दरसन कराइ नाम निवेदन करवानो है ।

तब दरवानन जानी, जो–ब्राह्मन है, सो यह स्नान करन जात है । और यह तो वह परकालो लै कै घर तें निकस्यो । सो श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी पास कछूक दिनन में आइ दंडवत् करि वह परकालो काढ़ि प्रभुन के आगें धर्‌यो । सो श्रीगुसांईजी वा परकाले कों देखि कै अति प्रसन्न भए । सो वा समै श्रीगुसांईजी यह बचन कहे, जो–यह परकालो तो श्रीनाथजी के योग्य है ।

भावप्रकाश–काहेतें ? जो–उत्तम वस्तू के भोक्ता प्रभु हैं । तातें उत्तम वस्तू प्रभुन कों समर्पनी । यह दास कौ धर्म है ।

यह कहि वाही समै दरजी बुलाइ श्रीनाथजी कौ बागो ब्योंतायो । सो बागो वाई दिन सिद्ध भयो । पाछें वह बागो लै सवारे ही वैष्णव स्त्री–पुरुष कों साथ लै श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारि, आप स्नान करि पर्वत ऊपर मंदिर में पधारि, श्रीनाथजी के दरसन करि राजभोग धरे । पाछें समै भए भोग सराइ किवाड़ खोले । तब वह ब्राह्मन श्रीनाथजी के दरसन करि कै अपने मन में बोहोत ही प्रसन्न भयो । पाछें दूसरे दिन श्रीगुसांईजी बह बागा श्रीनाथजी कों अंगीकार कराए । तब वह

ब्राह्मन वैष्णव श्रीनाथजी कौ दरसन करि कै अति प्रसन्न भयो। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी की सेवा सों पहोंचि कै पर्वत तें नीचे पधारे। तब यह ब्राह्मन बारबार प्रभुन कों दंडवत् करि अपने जन्म कों सुफल करि कै मानत भयो। पाछें ब्राह्मन ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! ये स्त्री जन कों नाम निवेदन कराइए। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–यह साधारन जीव है। तातें इन कों नाम सुनावेंगे। पाछें श्रीगुसांईजी कृपा करि इन कों नाम सुनायो। ता पाछें वा ब्राह्मन के मन में एक वार्ता उपजी। जो–यह परकालो तो श्रीनाथजी अंगीकार किये। परि एक परकालो ऐसो और हू लाऊं तो वामें तें अबके श्रीगुसांईजी कौ बागो होंइ। तब तो मेरो जीवन सुफल है। तातें यह बिचार करि श्रीगुसांईजी सों बिदा होंइ कै अपने देस बंगाले कों चल्यो। सो कछूक दिन में स्त्री–पुरुष घर आए। पाछें कछूक दिन में ब्राह्मन अपनी स्त्री सों कहे, जो–अपने खरच कौ काम तो भिक्षा माँगि कै चलावेंगे। और दलाली कौ द्रव्य आवे सो भेलो करिए तो भली बात है। तब स्त्री ने कही, जो–अपनो निर्वाह दलाली में आछी भाँति होत है। तुम ऐसी बुद्धि कहां तें सीखि आए हो ? तब ब्राह्मन ने स्त्री सों कह्यो, जो–ये सगरे लोग अपनी अपनी वृत्ति छोरत नाहीं तो हम अपनी वृत्ति क्यों छोरे ? हमारे तो अति उत्तम वृत्ति भिक्षा माँगिवे की है। ताकों क्यों छोरे ? सो ब्राह्मन ने स्त्री सों अपनो मनोरथ जतायो नाहीं।

भावप्रकाश–काहेतें ? जो–इन की बुद्धि लौकिक है। सो लौकिक बुद्धि वारे कों अलौकिक बात सर्वथा कहनी नाहीं। नाँतरु कलेस होंइ। यह सिद्धांत जतायो।

पाछें वाही रीति अपनों निर्वाह वह ब्राह्मन करन लाग्यो । ता पाछें फेरि द्रव्य परकाले लाइक भेलो भयो । तब फेरि वह वैष्णव वेसोइ परकालो लाइ कै फेरि वाही प्रकार वह श्रीगोकुल कों चल्यो । सो थोरेसे दिनन में श्रीगुसांईजी पास आइ दंडवत् करि कै वह परकालो आगें धर्यो । तब श्रीगुसांईजी वा परकाले कों देखि कै यह बचन कहे, जो–ऐसोइ परकालो आगें हू एक वैष्णव लायो हतो । सो वा परकाले कों श्रीनाथजी अंगीकार करे । तब वा वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों दंडवत् करि बिनती करी, जो–महाराज ! वह हू परकालो मैं ही लायो हतो । तब तो श्रीगुसांईजी वाके ऊपर बोहोत प्रसन्न भए । पाछें वह परकालो आपु श्रीहस्त सों खवास कों सोंपन लागे । तब या वैष्णव ने श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि बिनती करी, जो–महाराज ! वह परकालो तो श्रीनाथजी ने अंगीकार कर्यो । और या परकाला कौ बागा आपु अंगीकार करो । सो दरसन करि कै हों अपने घर जाऊं । तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णव सों कहे, जो –श्रीठाकुरजी तो बारबार ऊत्तम वस्तू कों अंगीकार करत हैं । और हम तो कब हूँ अंगीकार करेंगे । और ऐसी वस्तू इहां तुम द्वारा ही आवे सोई आवे । नाँतरु कौन इहां लावत है ? पाछें वा वैष्णव सों प्रभुन कही, जो–यह थान तो मंदिर योग्य है । तब वा वैष्णवनें श्रीगुसांईजी के बचन सुनि कै बिनती करी, जो–महाराज ! ये तो ईस्वरन के घर है । इहां कौनसी बात की न्यूनता है ? परि मेरे तो मन में यह मनोरथ है, जो–आपु या थान कौ बागा अंगीकार करो । यह दरसन करि कै हों अपने घर जाऊं । तब श्रीगुसांईजी

दरजी बुलाइ कितने बागा तो श्रीनवनीतप्रियजी के करवाए। पाछें अपनो बागा ब्योंतायो।

भावप्रकाश—यामें यह जतायो, जो—उत्तम बस्तू स्वामि कों अंगीकार कराए बिना सेवक कों सर्वथा न लेनी। नाँतरु बाधक होंई।

तब वह वैष्णव बोहोत प्रसन्न भयो। पाछें दरजी वे बागा सब सिद्धि करि ल्यायो। तब श्रीगुसांईजी ने एक बागा तो श्रीनवनीतप्रियजी कों धरायो। पाछें आपु मंदिर सों पहोंचि भोजन करि श्रीगुसांईजी विश्राम करि वा बागा कों पहरि कै गादी पर बिराजे। सो दरसन करि कै वह वैष्णव अपने मन में बोहोत प्रसन्न भयो। पाछें जहांलों वह वैष्णव श्रीगोकुल रह्यो तहांलों श्रीगुसांईजी आपु नित्य एक बार वा बागा कों पहिरते। पाछें केतेक दिन कों वह वैष्णव श्रीगुसांईजी सों बिदा होंइ कै अपने देस कों चल्यो। तब श्रीगुसांईजी वा ब्राह्मन कों सगरे समाचार पूछे, जो—तू बंगाले में कहा उद्यम करत है ? तब वाने प्रभुन आगें सब समाचार कहे। तब श्रीगुसांईजी वाकी दसा देखि कै बोहोत प्रसन्न भए। पाछें वा वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो—राज ! आप कौ नाम 'भक्तेच्छापूरकायनमः' सुनत हते, सो आपु अनुभव करवाए। तातें आप कौ नाम मैं सद्‌स ही जान्यो। अब जो आज्ञा पाऊं तो मैं अपने घर कों चलूं ? तब श्रीगुसांईजी अति आनंद सों वाकों बिदा करे। सो थोरेसे दिनन में वह ब्राह्मन बंगाले में अपने घर आयो। सो जा दिन वह अपने घर जाँइ पहोंच्यो ता दिन वाके पिता कौ श्राद्ध दिन हतो। सो याकी स्त्री ब्राह्मनी प्रथम दिवस कहूं सों उरद की

दारि और तेल माँगि कै लाई हती। सो दारि भिंजोइ धोइ पीसि कै वाके बरा करति हती। इतने ही यह ब्राह्मन घर आइ पहुंच्यो। तब वह ब्राह्मनी याकौ देखि कै कही, जो–भली भई ! जो–तुम घर आइ पहोंचे। आज तिहारे पिता कौ श्राद्ध दिन हो । तातें मैं बरा किये हैं। पाछें वा ब्राह्मनी ने ब्राह्मन सों कही, जो–अब तुम सुद्ध श्राद्ध जाँइ कै बेगि करि आओ। तब ब्राह्मन ने वा स्त्री सों कह्यो, जो–श्राद्ध दिन कैसो होत है ? पाछें जब रसोइ होंइ रही, तब स्त्री ने ब्राह्मन सों कही, जो–रसोइ सिद्ध भई है। तब वह ब्राह्मन स्नान करि कै श्रीनाथजी कों भोग समर्प्यो। सो बरा थोरेसे हते। तब ब्राह्मन ने स्त्री सों पूछी, जो–घर में कछू मिठाई है ? तब ब्राह्मनी ने कही, थोरोसो गुर तो है। पाछें वा ब्राह्मनी ने गुर पास लाइ धर्‌यो। तब वह ब्राह्मन अति आनंद सों प्रेमसंयुक्त होंइ श्रीनाथजी कौ ध्यान कर्‌यो। सो अपने बागा कौ दरसन करि गयो हतो ताही स्वरूप कों अपने हृदय में आनि कै यह बिनती कर्‌यो, जो–महाराज ! यानें यह सामग्री लौकिक बुद्धि सों करी हती। परि अब आप या सामग्री कों अंगीकार करोगे। पाछें वे बरा और गुर बोहोत भक्तिभाव सों प्रभुन आगें वा ब्राह्मन ने भोग समर्प्यो। तब श्रीनाथजी इहां गिरिराज पर तें उहां बंगाले में या ब्राह्मन के घर पधारि कै बरा और गुर वाकौ प्रेम देखि कै आरोगे।

भावप्रकाश–या वार्ता में यह बड़ो संदेह है, जो–ब्राह्मन ने श्राद्ध की सामग्री श्रीनाथजी कों कैसें धरी ? यह श्रीआचार्यजी के मार्ग की रीति सों विरुद्ध है। और श्रीनाथजी वा सामग्री कों क्यों आरोगे ? तहां कहत हैं, जो–यह सामग्री तो वा ब्राह्मन की स्त्री ने श्राद्ध के निमित्त सों करी हती। परि ब्राह्मन के मन में तो श्राद्ध कौ संकल्प है नाहीं। और ता दिन घर में कछू हतो

नाहीं। तातें ब्राह्मन ने सुद्ध भाव सों यह सामग्री श्रीनाथजी कों धरी। सो श्रीनाथजी वा ब्राह्मन की बिनती सों वाकौ भाव देखि सुद्ध प्रेम देखि प्रसन्नता सों आरोगे। काहेंते, जो–श्रीनाथजी कौ नाम 'भक्तमनोरथपूरक' है। सो जो कोऊ भक्ति भाव सों श्रीनाथजी कों जो–कछू धरत है, सो प्रभु अवस्य आरोगत हैं। यह सिद्धांत भयो।

सो जब श्रीनाथजी वाके घर पधारे तबही वा ब्राह्मन ने जान्यो। और जब याके घर सों आरोगि कै श्रीनाथजी अपने मंदिर में पधारे, तब वा ब्राह्मन कों जताए। जौ–अब हम तेरे बरा और गुर आरोगि के जात हैं। तब वह ब्राह्मन अपने मनमें बोहोत प्रसन्न होइ कै अपने जनम कों सुफल करि कै मानत भयो। जो–धन्य मेरो भाग्य है। जो–मेरे घर श्रीनाथजी पधारे। और श्रीगुसांईजी की कानि तें ये बरा और गुर आरोगे। और श्रीनाथजी तो याके घर पधारे हते, सो वाही समै पर्वत पर मंदिर में श्रीगुसांईजी ने श्रीनाथजी कों राजभोग समर्प्यो हतो। सो श्रीनाथजी तो उहां ब्राह्मन के घर पधारे। पाछें श्रीगुसांईजी तो यह बात जाने नाहीं। सो जब समै भयो तब श्रीगुसांईजी राजभोग सराइ, आर्ति करि अनोसर करि पर्वत तें नीचे पधारि आपु भोजन करि कै विश्राम करे। ता समै श्रीगुसांईजी कों निंद्रा न आइ हती। इतने ही श्रीनाथजी एक लाल छरी श्रीहस्त में लिये श्रीगुसांईजी पास पधारे। तब श्रीगुसांईजी दंडवत् करि अपनी पर्यंक ऊपर श्रीनाथजी कों पधराइ, श्रीमुख चुंबन करि, कपोल पर हाथ फिराइ पूछे, जो–बाबा! आजु ऐसें अनमने क्यों बिराजे हो ? तब श्रीनाथजी ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो–हों तो आजु भुखो हुँ। तब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी सों पूछे, जो अबही तुम राजभोग आरोगे हो और हू जो आपकों चहिए सो चलो हों

देऊं ? तब श्रीनाथजी श्रीगुसांईजी सों कहे, जो–हों तो राजभोग सर्‍यो तब आयो हतो। तासों राजभोग हों नाहीं आरोग्यो।

भावप्रकाश–याकौ अभिप्राय यह, जो–भक्तोद्धारक स्वरूप सों नाहीं आरोग्यो। सर्वोद्धारक स्वरूप सों आरोग्यो हूं। सो तिहारे भाव तें मैं भूखो हूं।

तब तो श्रीगुसांईजी विस्मित होइ कै श्रीनाथजी सों पूछे, जो–बाबा ! ऐसें आप कहां पधारे हते ? तब श्रीनाथजी श्रीगुसांईजी सों कहे, जो–तुम्हारो सेवक बंगाले कौ ब्राह्मन परकाला वारो ताके घर बरा और गुर आरोगन पधार्‍यो हतो। और वाके घर के सर्व समाचार श्रीनाथजी ने श्रीगुसांईजी सों कहे। तब श्रीनाथजी के बचन सुनि कै श्रीगुसांईजी कौ हृदौ भरि आयो। पाछें श्रीनाथजी तो श्रीगुसांईजी के पास तें पर्वत ऊपर अपने मंदिर में पधारे। और श्रीगुसांईजी सगरे भीतरियान कों स्नान कराइ कहे, जो–बेगि ही राजभोग की सामग्री सर्व जन मिलि कै रसोइ सिद्ध करो। तब भीतरिया सर्व मिलि कै रसोइ करन लागे। और श्रीगुसांईजी आप स्नान करि पर्वत ऊपर मंदिर में पधारि संखनाद कराइ एक थाल लडुवान कौ भोग समर्प्यो। तब ही रसोइया ने श्रीगुसांईजी कों खबरि करि, जो–महाराज ! रसोइ सिद्ध भइ है। पाछें भोग सराइ श्रीगुसांईजी ने राजभोग श्रीनाथजी कों समर्प्यो। समयानुसार भोग सराइ आर्ति करि अनोसर करवाइ श्रीगुसांईजी पर्वत तें नीचे पधारि अपनी बैठक में बिराजि कै बंगाले कों पत्र लिखि ब्रजबासी दोइ वा वैष्णव के पास पठाए। ता पत्र में प्रभुन लिख्यो, जौ–अमुके दिन तुमने श्रीनाथजी कों कहा समर्प्यो हतो ? सो याकौ

प्रतिउत्तर तुम हम कों लिखि पठाइयो । सो ब्रजबासी दोउ बंगाले में वह वैष्णव के घर जाँइ पहोंचे। तब वह वैष्णव अपने मन में अति प्रसन्न भयो। पाछें उन ब्रजबासीन श्रीगुसांईजी कौ पत्र वाके हाथ दीनो । और वा दिन के सर्व समाचार श्रीनाथजीद्वार के वाके आगें कहे। तब वह प्रेम उत्कंठित होंइ अति भक्तिभाव सों प्रभुन के पत्र कों माथे चढाइ दंडवत् करि बांचिके वह वैष्णव अपने मन में अति प्रसन्न भयो। पाछें उन ब्रजवासीन कों उतराइ, आछि भांति रसोइ कराइ, प्रसाद लिवाए। पाछें रात्रि कों वा वैष्णव ने वा पत्र कौ प्रतिउत्तर लिख्यो। तामें बोहोत भांति सों श्रीगुसांईजी कों बिनती लिखी। और वा दिन कौ सर्व प्रकार लिखि पठायो । और लिख्यो, जो–महाराज ! यह श्रीनाथजी ने आपकी कानि तें सर्व मानि लियो। तातें मेरे बड़े भाग्य हैं। और लिख्यो, जो–राज ! सो बरा हू थोरे हते । पाछें उन दोऊ ब्रजवासीन कों भली भांति सों समाधान करि श्रीगुसांईजी पास पठाए। सो थोरेसे दिनन में ब्रजबासी बंगाले तें श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी पास आइ वा वैष्णव कौ पत्र दियो। सो वा वैष्णव कौ पत्र आपु ही कृपा करि श्रीगुसांईजी ने वांच्यो । तब श्रीगुसांईजी अपने मनमें बोहोत प्रसन्न भए। पाछें प्रभुन वह पत्र चाचा हरिवंसजी कों दै सब समाचार कहे। तब चाचाजी कौ हृदय भरि आयो । सो वह ब्राह्मन श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो । तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥१३॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक गनेस व्यास, श्रीमाली ब्राह्मन, पश्चिम में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये गनेस व्यास सात्विक भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'प्रमोदिनी' है। ये 'रतिकला' तें प्रगटी हैं, तातें इन के भावरूप हैं।

ये गनेस व्यास पश्चिम में एक श्रीमाली ब्राह्मन के घर जन्मे। सो गनेस व्यास दोइ चारि महिनान के भए तब ही इनके माँ–बाप मरे। पाछें इन कौ एक काका हतो, सो वह इन कों अपने घर लै गयो। तहां ये बड़े भए। सो बरस बीस के भए। तब एक संग पश्चिम तें मथुराजी जात हतो। ता संग में येहू चले। सो कछूक दिन में संग मथुराजी आयो। तामें गनेस व्यास हू आए। सो उन दिनन श्रीगुसांईजी मथुराजी बिराजत हे। सो श्रीगुसांईजी विश्रांत घाट पर संध्यावंदन करत हे। तहां गनेस व्यास ने श्रीगुसांईजी के दरसन पाए। सो गनेस व्यास श्रीगुसांईजी सों बिनती किये, जो–महाराज ! मैं अनाथ हूँ। मेरे माता पिता कोऊ है नाहीं। सो मैं आपकी सरनि आयो हूं। तातें कृपा करि आप मोकों अपनो सेवक कीजिए। (और) कछू टहल दीजिए। तब श्रीगुसांईजी वाकों दैवी जीव देखि कहे, जो–श्रीयमुनाजी में न्हाइ लै, हम तोकों सेवक करेंगे। सो गनेस व्यास श्रीयमुनाजी में स्नान करि श्रीगुसांईजी के निकट आए। *तब श्रीगुसांईजी गनेस व्यास कों नाम निवेदन कराए।* पाछें श्रीगुसांईजी आप कृपा करि गनेस व्यास कों अपनी परचारगी की टहल दीनी। सो गनेस व्यास प्रीति पूर्वक सेवा करन लागे।

वार्ता प्रसंग–१

सो वे गनेस व्यास एक समै श्रीठाकुरजी की सामग्री लै द्वारिका कों जात हते। सो एक दिन सांझ कों एक गाम के बाहिर भए और गाम कों जात हते। तब मार्ग में मेह बोहोत आयो। सो इत उत देखें तो कछू छाया नाहीं। तब थोरीसी दूरि एक सिखरबंद एक देहरा दीस्यो। सो दोरि कै गनेस व्यास तहां गए। तब तहां देखे तो वामें एक देवी है। और सर्व सामान वा पास धर्यो है, परि मनुष्य कोऊ नाहीं। तब अपने मनमें गनेस व्यास ने बिचार कियो, जो–कोई पुजारी रहत है। सो कहूँ गाम में गयो है। अब आवत होइगो। यह बिचारि करि कै ये तो बाहिर छाया में सामग्री धरि बैठि रहे। पाछें जब रात्रि बोहोत गई तब

तो तहां कोई आयो नाहीं। परि वह (देवी) ऐसी जागती जोति हती, सो अपनी वस्तु की आप रखवारी करती। और वाकों राजा की ओर सों नित्य बलि आवती। सोई खाँइ कै बैठि रहती। और जो कोई पुजारी आवतो तो वाकों खाँइ जाती, और गामन में प्रसिद्ध हती। सो नित्य पूजा आवती। सो सामग्री सब आप ही भेली करि कै धरत जाती। सो कोई एक मनुष्य रात्रि कों वा देवी के दरसन कों आयो। तिन गनेस व्यास सों कही, जो–तुम इहां मति सोइयो। इहां कोई पुजारी तो सोवत नाहीं। और कोई रहि सकत नाहीं। तब गनेस व्यास ने वासों पूछी, जो–ताकौ कारन कहा है ? तब वाने गनेस व्यास सों कह्यो, जो–कोई इहां सोवत है, रहत है, ताकों यह देवी खाँत है। तब वह मनुष्य तो देवी के दरसन करि कै गनेस व्यास सों ये समाचार कहि कै चल्यो गयो। तब तो गनेस व्यास निधरक होंइ देवी के मंदिर के भीतर जाँइ कै किवाड़ दै सामग्री एक कौने में धरि वा देवी कों न्हवाइ कै नाम सुनाइ वाके गरे में प्रसादी माला बांधी। वाकों वैष्णव करे। पाछें देखे तो देहरा में कोऊ सर्व वस्तू धरि गयो है। यह प्रकार देखि कै देहरा कों धोयो। पाछें रात्रि कों वहांइ रहे। अपने पास प्रसाद हतो सो लिये। तहां एक कूआँ हतो ताकौ जल पीए। और सोइ रहे। और वाही रात्रि कों वा देवी ने वा राजा कों स्वप्न दियो, जो–मोकों अब नित्य की सी बलि मति पठाईयो। अब हों वैष्णव भई हों। तातें अब यह बलि मैं न खाउंगी। मोकों रसोई करिवे कों इहां कोई एक पुजारी राखि देहु। सो रसोइ करि मोकों धरेगो सो हों खाऊंगी। तब वह राजा तो बोहोत विस्मत

भयो। पाछें सवारे गनेस व्यास तो सामग्री लै आगें कों चले। और वह राजा बड़े सवारे वा देवी के दरसन कों आयो। तहां देखे तो काहू ने देहरा धोयो है। देवी कों न्हवायो है। और देवी के गरे में माला बांधी है। तब तो वह राजा यह देखि कै बोहोत ही प्रसन्न अपने मन में भयो। पाछें वा देवी पास एक पुजारी राखि दियो। और नित्य कौ सीधो कर दियो। सो वह रसोई करि देवी कों धरतो। पाछें वह आप खाँतो।

भावप्रकाश–सो भगवदीय कौ स्वरूप ऐसो जाननो। जिन तें देवी देवता तीर्थ आदि सब कृतार्थ होत हैं। और भगवदीय ऐसें दयालु होत हैं, जो–मार्ग जाँत सहज ही देवी कों कृतार्थ करे।

वार्ता प्रसंग–२

और श्रीगुसांईजी वा गनेस व्यास ऊपर बोहोत रिस करते। परि गनेस व्यास अपनो मन न बिगारते। वे ऐसें भगवदीय हते। ज्यों–ज्यों श्रीगुसांईजी रिस करते, त्यों–त्यों ये अपने मनमें अति प्रसन्न होते। और अपने मन कों कहते, जो–प्रभु मोसों सदा सर्वदाइ रिस कर्‌यो करो। मोकों जो आपु अपनो दास जानत है तो मो ऊपर रिस करत हैं। नाँतरु रिस और सों क्यों न करे?

भावप्रकाश–यामें यह जतायो, जो–अपुनो होंइ ताही सों रिस करी जाँइ।

सो वे गनेस व्यास प्रभुन की रिस कों ऐसो गुन मानते।

पाछें केतेक दिन कों गनेस व्यास की देह छूटी। तब काहु वैष्णव ने कहूँ खबरि सुनी। सो श्रीगुसांईजी आगें आइ कही, जो–राज! गनेस व्यास की देह छूटी। यह सुनि कै श्रीगुसांईजी के रोमांच होंइ आए। तब वाही वैष्णवने श्रीगुसांईजी कों

पुलकित जानि कै बिनती करी, जो–महाराज ! आपु तो वा गनेस व्यास ऊपर बोहोत रिस करते। और अब वाकी खबरि सुनि कै रोमांच क्यों होंइ आए ? तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णव सों कहे, जो–गनेस व्यास सो कोइ मेरो ऐसो सेवक होंनो कठिन है। न है और न होंइ। जा ऊपर हों या प्रकार रिस करतो। और वह गनेस व्यास अपने मन में सिक्षा करि मानतो। मोसों वह कबूह मन न बिगारतो। वह मेरो ऐसो अंतरंग सेवक हतो। यह श्रीगुसांईजी के श्रीमुख के बचन सुनि कै वैष्णव चुप करि रह्यो। वे गनेस व्यास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ १४ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक हरिदास खवास, सनाढ्य ब्राह्मन, मथुराजी के बासी, जिन कों श्रीभागवत सुनत मूरछा आई, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–वे राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'सरला' है। इन कौ स्वभाव सरल बोहोत हैं। ये रतिकला तें प्रगटी हैं, तातें इन के भावरूप हैं।

सो हरिदास मथुरा में एक सनाढ्य ब्राह्मन के घर जन्में। सो बालपने सों ही मुग्ध अवस्था, इनकी। कछू लौकिक व्यवहार आदि कौ ज्ञान नाहीं। माता–पिता इनकी मुग्ध अवस्था देखि बड़ो खेद करे। जो–इन कौ याह कैसें होइगो ? या प्रकार बोहोत चिंता करे। पाछें ये बरस आठ के भए तब इन कों एक पंडित के पास पढिवे कों पठाए। सो कछूक पढे। पाछें मथुरा में महामारी फैली। तामें माता–पिता मरे। तब हरिदास बिचार कियो, जो–अब कहा करनो ? कछू समुझ परै नाहीं। तब श्रीयमुनाजी के तीर विश्रांत पर जाँइ बैठे। सो बोहोत रुदन कियो। ता समैं श्रीगुसांईजी तहां संध्यावंदन करत हैं। सो श्रीगुसांईजी हरिदास कों देखे। ताही समै खवास पठाइ हरिदास कों अपनी पास बुलाए। सो हरिदास श्रीगुसांईजी की पास आए। तब श्रीगुसांईजी हरिदास कों कहे, हरिदास ! रोवत क्यों है ? तब हरिदास कह्यो, जो–महाराज ! या संसार में मेरो कोई है नाहीं। और में कछू जानत नाहीं। तातें अब में आपके सरनि आयो हूँ। मोकों आप अपनी पास राखो। मैं दीन हूं, अनाथ हूं। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–तू चिंता मति करे। श्रीयमुनाजी में स्नान करि लै। हम तोकों अपनो सेवक करेंगे, और अपनी

पास राखेंगे। तब तो हरिदास प्रसन्न व्है श्रीयमुनाजी में स्नान कियो। पाछें श्रीगुसांईजी नाम सुनाइ निवेदन कराए। और आज्ञा करी, जो–अब तू हमारी खवासी करि। ता दिन तें हरिदास श्रीगुसांईजी की खवासी करन लागे।

वार्ता प्रसंग – १

सो वे हरिदास श्रीगुसांईजी की खवासी करते। सो एक समै हरिदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! मेरो मनोरथ आपु के श्रीमुख तें भागवत सुनिवे कौ है। तब श्रीगुसांईजी हरिदास सों यह आज्ञा करे, जो–तू उज्जैनि जा। तहां कृष्ण भट तोकों श्रीभागवत सुनावेंगे। और मोकों तो कथा कहिवे कों घरी दोइ घरी कौ अवकास है। परंतु संपूरन श्रीभागवत कब लगि कहूँ ? सगरे श्रीभागवत कहिवे कों तो एक पहर कौ अवकास होंइ, तब पांच वरस में संपूरन श्रीभागवत पूरन होंइ। तातें तू उज्जैनि कृष्णभट के पास जा। वे तोकों आछी भांति सो श्रीभागवत कहि सुनावेंगे। तब श्रीगुसांईजी कौ पत्र एक हरिदास कृष्ण भट कों लिखाइ लै कै श्रीगुसांईजी सों बिदा माँगि कै उज्जैनि कों चले। सो कछूक दिन में उज्जैनि जांइ पहोंचे। तब तहां हरिदास कृष्ण भट सों मिलि वह श्रीगुसांईजी कौ पत्र कृष्ण भट कों दिये। सो कृष्ण भट अति आनंद पाइ वह पत्र माथें चढाइ कै बांचे। तब कृष्ण भट अति आनंद पाए। तब हरिदास ने कृष्ण भट सों कही, जो–मैनें श्रीगुसांईजी सों बिनंती करी हती, जो–महाराज ! मोकों आप श्रीभागवत सुनावो। तब श्रीगुसांईजी ने मोसों यह आज्ञा करी, जो–तू उज्जैनि जा। तोकों कृष्ण भट भागवत सुनावेंगे।

तातें हों तुम्हारे पास आयो हूं । तासों तुम मोकों श्रीभागवत सुनावो। तब कृष्ण भट ने हरिदास खवास सों कही, काल्हि दिन नीको है। तातें काल्हि आरंभ करेंगे। सो दूसरे दिन कृष्ण भट ने 'भ्रमरगीत' कौ आरंभ कर्‍यो। ताकौ प्रसंग चलायो। सो सुनत ही हरिदास कों मूरछा आइ। सो मूरछा हरिदास कों प्रहर एक लों रही। पाछें औषध करत सावचेत भए। तब कृष्ण भट ने पोथी बांधी। तब हरिदास ने कृष्ण भट सों कही, जो –भटजी ! आगें प्रसंग चलावो। तब कृष्ण भट ने हरिदास सों कह्यो, जो–हौं श्रीगुसांईजी कों कहा प्रतिउत्तर देहुंगो ? जो–हों दूसरो प्रसंग कहूंगो तो तुम्हारी अन्यथा गति होंइ जाइगी।

भावप्रकाश–काहेतें, अभी हरिदास की कच्ची दसा है। सो इन कौ अवधारन होत नाहीं। तातें देह छूटी जाँइ।

तब हरिदास कृष्ण भटजी सों बिदा होंइ कछूक दिन में श्रीगोकुल श्रीगुसांईजी की पास आइ दंडवत् करि सब समाचार कहे। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी चुप करि रहे पाछें फेरि हरिदास श्रीगुसांईजी की खवासी करत हते, ताही भांति सों प्रभुन की टहल करन लागे।

वार्ता प्रसंग–२

और एक समै एक वैष्णव ने एक रुपैया श्रीगुसांईजी आगें भेंट धर्‍यो। सो गादी के आगें वह रुपैया धर्‍यो हतो। और श्रीगुसांईजी तो आप भीतर भोजन कों पधारे हते। सो श्रीगुसांईजी तब भोजन करि कै बैठक में पधारे तब हरिदास सों पूछे, जो–हरिदास ! इहां तें रुपैया कहां गयो ? तब हरिदास ने

श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो–महाराज ! ताख में धर्‍यो है । तब श्रीगुसांईजी यह सिक्षा दिये, जो–हरिदास ! यह द्रव्य पर्‍यो रहन दीजे, परि तू आज पाछें फेरि कबहू मति उठाइयो । सो यह सिक्षा हरिदास ने मानि लीनी ।

वार्ता प्रसंग–३

बहौरि एक समै श्रीगुसांईजी भोजन कों पधारे हते । सो एक चादर सुकाइवे की आज्ञा हरिदास सों करि कै आपु तो भोजन कों पधारे । इतने ही हरिदास सिज्या बिछाइ रहे हते, (तहां) ता समै एक नागर ब्राह्मनी हरिदास सों बात करन लागी । सो हरिदास वाकी बातन में चादर सुकावनो भूलि गए । सो दोऊ जनें बाते करत हुते, इतनेइ श्रीगुसांईजी भोजन करि कै पधारे । सो दूरि ते इन दोऊन कों बातें करत देखि कै आपु ठाढ़े होंई रहे । पाछें वह बाई तो बातें करि कै उठि गई । तब ही श्रीगुसांईजी बैठक में पधारे । और हरिदास सों कहे, जो–हरिदास ! अज हु यह चादर सुकाई नाहीं ? तब हरिदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनंती करीं, जो–राज ! वा बाई सों बातन में सुधि भूलि गयो । तब श्रीगुसांईजी हरिदास कों यह सिक्षा दिये, जो–हरिदास ! आज पाछें तू काहू की स्त्री सों फेरि बातें मति करियो । सो वे हरिदास वा दिन तें काहू की स्त्री सों बातें न करते ।

सो इन हरिदास ऊपर श्रीगुसांईजी या प्रकार कृपा करते । सो हरिदास खवास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते । तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए । ॥ वार्ता ॥ १५ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक मधुसूदनदास गौडिया ब्राह्मन, वृंदावन में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं।

भावप्रकाश–ये मधुसूदन दास तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'बंदिनी' है। बंदिनी इंदुलेखा तें प्रगटी हैं, तातें इन के भावरूप हैं।

ये मधुसूदनदास गौडदेस में एक ब्राह्मन के जन्मे। सो वह ब्राह्मन 'रूप–सनातन' कौ सेवक हुतो। सो वह प्रति वर्ष अपने गुरु के दर्सनार्थ वृंदावन जातो। तहां कछूक दिन रहि गुरुन की टहल करतो। पाछें गुरुन आज्ञा पाइ अपने देस आवतो। या प्रकार करतो। ऐसें करत मधुसूदनदास बरस बीस के भए। तब वह मधुसूदनदास कों हू अपने साथ वृंदावन लै चल्यो। सो बृंदावन में आई मधुसूदनदास कों हू रूप–सनातन कौ सेवक किये। पाछें मधुसूदनदास अपने पिता के साथ बृंदावन रहे। सो बृंदावन की लता–पतान की सोभा देखि मधुसूदनदास कौ मन बृंदावन में लगि गयो। ता पाछें कछूक दिन में मधुसूदनदास कौ पिता देस चलन लाग्यो। तब मधुसूदनदास पिता सों कह्यो, जो–हों तो अब ब्रज–बृंदावन छोरि कै तुम्हारी संग नाहीं आऊंगो। मेरो मन तो यहां लग्यो है। तातें हों तो अब ब्रज में ही रहुंगो। तब पिता ने इन कों बोहोत समुझाइ कह्यो, जो–बेटा! अभी तो तू बालक हैं। तेरो ब्याह हू भयो नाहीं। और में वृद्ध भयो हूं। तातें तू अभी मेरे साथ देस कों चलि। मेरे मरे पाछें तेरी इच्छा आवे वहां रहियो। परि मधुसूदनदास न माने। तब पिता हारि कै अपने देस कों चल्यो। सो जाती बिरियां इन रूप–सनातन सों बिनती करी, जो–ये बालक हैं। सो मैं तुम्हें सोंपि जात हूं। तब रूप–सनातन कही, जो–कोई बातकी चिंता मति करो। तुम सुखेन जाऊ। इन कों मैं अपनी पास राखुंगो। तब पिता मधुसूदनदास कों कछू खरच दै देस कों गयो। पाछे मधुसूदनदास तो निसंक व्हे ब्रज में बिचरन लागे।

वार्ता प्रसंग–१

सो वे मधुसूदनदास एक समै श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुल आए। तब मधुसूदनदास और के सेवक हते। सो श्रीगोकुल आए। तब श्रीगुसांईजी के दरसन करे। तब मधुसूदनदास के मन में यह आइ, जो–इन के सेवक हूजिये तो आछी बात है। सो वाही समै मधुसूदनदास श्रीगुसांईजी सों बिनंती करे, जो–महाराज! मो ऊपर कृपा करि कै आप मोकों अपनो सेवक करो। तब श्रीगुसांईजी इनकी आर्ति जानि तबही इन कों स्नान

कराइ नाम निवेदन कराइ आपु प्रभु भोजन कों पधारे । तब मधुसूदनदास कों श्रीगुसांईजी यह आज्ञा करे, जो–मधुसूदनदास ! आज प्रसाद लेवे कों तुम इहांइ आइयो । तब वा दिन तो मधुसूदनदास प्रसाद उहांइ लिये । पाछें दूसरे दिन मधुसूदनदास पाक करत हते । सो ता समै श्रीगुसांईजी भोजन कों भीतर पधारत हते । सो मधुसूदनदास कों प्रभुन देख्यो । तब श्रीगुसांईजी ता ठौर पधारि मधुसूदनदास कों पूछे, जो–मधुसूदनदास ! तुम पास कछू द्रव्य है ? तब मधुसूदनदास नें श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! खरच तो थोरोसो है, गांठि में । तब श्रीगुसांईजी यह आज्ञा मधुसूदनदास सों श्रीमुख तें करे, जो–मधुसूदनदास ! आज तो तुम इहां प्रसाद लो । और सवारे अपने घर जइयो । तब मधुसूदनदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! जहां लों मेरी गांठि में द्रव्य है, तहां लों तो रसोई करि प्रसाद लेहुंगो । और जब द्रव्य निघटेगो तब कोरी भिक्षा करि निर्वाह करूंगो । परि आपु के चरनारविंद नीचे पर्‍यो रहुंगो । तब श्रीगुसांईजी दोइ दिन तो प्रसाद मधुसूदनदास कों भीतर लिवाए । तीसरे दिन मधुसूदनदास आज्ञा माँगि रसोइ करन लागे । सो जब खरच निघट्यो तब मधूसूदनदास कोरी भिक्षा करन लागे । सो जब दिन चारि भिक्षा करत भए तब एक दिन श्रीगुसांईजी मधुसूदनदास कों पूछे, जो–मधुसूदनदास ! अब कैसें निर्वाह करत हो ? तब मधुसूदनदास अपने सर्व समाचार श्रीगुसांईजी आगें कहे, जो–महाराज ! दिन दोइ कौ खरच हतो । तब तो

सवारेइ रसोइ करि भोग धरि राजभोग भए पाछें प्रसाद लेतो। और अब तो भिक्षा माँगि रात्रि कों सिद्ध करि राखत हूं। सो सवारेइ रसोइ करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरि वह प्रसाद ढांपि कै दरसन को आवत हूं। सो दरसन करि कै प्रसाद लै कै फेरि भिक्षा करन जात हूं। तब श्रीगुसांईजी मधुसूदनदास कों पूछे, जो–भिक्षा कौन कौन के घर की लावंत हो ? तब मधुसूदनदास प्रभुन सों बिनती करे, जो–वैष्णवन के घर तें, भटजीन के घर तें और भीतरिया, ब्रजबासीन के घरन तें लावत हूं। और बनियान की हाटन सो माँगि कै निर्वाह करत हूं। तब श्रीगुसांईजी मधुसूदनदास सों कहे, जो और सबन के घरसों भिक्षा लीजियो। परि भटजीन के तथा भीतरियान के घर सों एक कनिका मति लीजियो।

भावप्रकाश–सो काहेतें ? जो–वे श्रीगुसांईजी के घर कौ संकल्प्यो द्रव्य लेत हैं। तातें उन के घर की सत्ता लै तो वैष्णव कों सर्वथा बाधक होंइ। सो आगें विष्णुदास छीपा की वार्ता में कहि आए हैं।

तब मधुसूदन श्रीगुसांईजी के बचन सुनि कै त्यों ही करन लागे। पाछें केतेक दिन. कों श्रीगुसांईजी ने उन मधुसूदनदास कों श्रीनाथजी के बीरान को सेवा सोंपी। सो मधुसूदनदास भली भांति सों श्रीनाथजी के पानन की सेवा करन लागे। और उष्णकाल के दिन में गरमी जब बोहोत होंइ तब मधुसूदनदास चारि प्रहर रात्रि कों पंखा करते। ऐसें करत केतेक दिन भए। सो एक दिन श्रीगुसांईजी पानघर में पधारे। तहां देखे तो मधुसूदनदास की आंखि निंद्रा में झूकि रही है। आलस्य बोहोत ही नेत्रन में भरि रह्यो है। परि पंखा हाथ सों चल्योइ जात है।

तब श्रीगुसांईजी मधुसूदनदास की या प्रकार की सेवा देखि कै बोहोत प्रसन्न भए। परि श्रीगुसांईजी पधारे सो मधुसूदनदास ने न जानी। वे मधुसूदनदास श्रीनाथजी के पानन की सेवा देह रही तहां तांई या प्रकार करें।

भावप्रकाश–या वार्ता में यह जतायो, जो–वैष्णव कों सेवा में ऐसो व्यसन चहिए। कब प्रभु प्रसन्न होंइ। और तबही जीव कृतार्थ होंइ। सो श्रीआचार्यजी 'भक्तिवर्द्धिनी' ग्रन्थ में कहत हैं। सो श्लोक–

"यदा स्याद् व्यसनं कृष्णे कृतार्थः स्यात् तदैव हि"

सो मधुसूदनदास कों सेवा कौ या प्रकार व्यसन सिद्ध भयो हतो।

तातें श्रीगुसांईजी उन मधुसूदनदास ऊपर सदा कृपा करते। बोहोत प्रसन्न रहते। वे मधुसूदनदास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए।

॥ वार्ता ॥ १६ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक रूपचंदनंदा क्षत्री, सो वे आगरा मे रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

सो रूपचंदनंदा 'राजस' भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'सोनजूही' है। ये 'ईंदुलेखा' तें प्रगटी हैं, तातें इन के भावरूप हैं। सो सोनजूही श्रीचंद्रावलीजी की 'अष्टोत्तरशत' अंतरंग सखीन की मुखिया हैं। श्रीचंद्रावलीजी के हार्द कों जाननहारी हैं। और 'सोनजूही' की एक सखी हैं। ताकौ नाम 'सुगंधिनी' है। सो इहां हरिचंदा भए। रूपचंदनंदा के भाई।

ये दोऊ आगरा में एक क्षत्री के जन्मे। सो वह क्षत्री बड़ो द्रव्यमान् हतो। सो वाके दो बेटा (हे)। एक कौ नाम रूपचंदनंदा और दूसरे कौ नाम हरिचंदा। ये दोऊ भाई बालपने तें वैराग दसा में रहते। इन कौ चित लौकिक में लगे नाहीं। ये बरस दस बारह के भए तब पिता ने दोऊन कौ ब्याह कियो। तोऊ ये दोऊ भाई वैराग दसा में ही रहैं। सो रूपचंदनंदा कौ पिता वासुदेवदास छकड़ा कौ जजमान हतो। तातें वासुदेवदास छकड़ा अपनी जजमानी कों प्रति वर्ष आगरा इन के घर आवते।

सो (जब) रूपचंदनंदा बरस तीस के भए तब इन कौ पिता मर्‌यो। ता पाछें एक समै वासुदेवदास आगरा आए। सो इनके इहां उतरे। तब रूपचंदनंदा ने वासुदेवदास कों पूछ्यो, जो–प्रोहितजी ! या देह सों श्री ठाकुरजी के चरनारविंद की प्राप्ति कैसें होंई ? साक्षात् दरसन कैसें होंई ? तब वासुदेवदास ने इन कें दैवी जीव जानि कह्यो, जो–श्रीगुसांईजी श्रीविट्‌ठलनाथजी साक्षात् पुरुषोत्तम हैं। तातें श्री गुसांईजी की सरनि जाऊ तो सब मनोरथ सिद्ध होंइ। तब रूपचंदनंदा ने ये बात अपने भाई हरिचंदा सों कही। तब हरिचंदा ने कह्यो। जो–चलो ! श्रीगुसांईजी के सेवक हूजिए तब दोऊ भाइन ने वासुदेवदास छकड़ा सों कह्यो, जो–प्रोहितजी ! हम कों कृपा करि कै श्रीगुसांईजी के सेवक करावो। तब इन दोऊ भाईन कौ आग्रह देखि वासुदेवदास छकड़ा कहें, जो–तुम हमारे साथ अड़ेल चलो। श्रीगुसांईजी उहां बिराजत हैं। तब दोऊ भाई वासुदेवदास छकड़ा के साथ अड़ेल कों चले। सो कछूक दिन में अड़ेल आइ पहोंचे। तहां श्रीगुसांईजी के दरसन पाए। सो साक्षात् कोटि कंदर्प–लावन्य रूप सों श्रीगुसांईजी आप दोऊ भाईन कों दरसन दिये। तब दोऊ भाई चक्रत से व्है रहे। पाछें वासुदेवदास छकड़ा ने सर्व समाचार श्रीगुसांईजी सों कहे। जो–महाराज ! ये दोऊ भाई मेरे जजमान क्षत्री हैं। सो आगरा में रहत हैं। दैवी जीव हैं। तातें आप की सरनि आए हैं। सो कृपा करि कै सरनि लेहू। तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न व्है, दोऊन कों कहे, जो– जाऊ, त्रिवेनी में स्नान करि आऊ। सो दोऊ भाई त्रिवेनी में स्नान करे। पाछें श्रीगुसांईजी के पास आई दोऊ हाथ जोरे ठाड़े व्है रहे। तब श्रीगुसांईजी कृपा करि दोऊ भाईन कों श्रीनवनीतप्रियजी के सन्निधान नाम निवेदन कराए। सो वाही समै दोऊ भाईन कों श्रीनवनीतप्रियजी अनुभव जताए। जो–साक्षात् दरसन दिये। तब दोऊ भाई गद्‌गद् व्है श्रीगुसांईजी को दंडवत् करि बिनती करी, जो–महाराज ! आजु हमारो जन्म सुफल भयो। जो राज के चरनारविंद पाए। अब हम कों कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी दोऊ भाइन सों कहे, जो–घर में रहि कै भगवत्सेवा करो। तब रूपचंदनंदा ने बिनती कीनी, जो–राज ! हम को तो सदा आप के चरनारविंद मिले येही अभिलाषा है। तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न व्है कुमकुम मंगाई एक वस्त्र पर दोऊ चरन में कुमकुम लगाइ छाप कै दोऊभाईन कों दिये। और आज्ञा किये, जो–इन की सेवा करियो। पाछें दोऊ भाई श्रीगुसांईजी के पास कछूक दिन अड़ेल में रहि सेवा की रीति सीखे। ता पाछें आज्ञा माँगि अपने देस आगरा कों आए। ता पाछें कछूक दिन में श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे। तब आगरा में रूपचंदनंदा के घर बिराजे। सो रूपचंदनंदा ने भक्ति–भाव सों श्रीगुसांईजी कों अपने घर पधराए। और स्त्रीजन आदि सब कों नाम निवेदन करवाए। पाछें श्रीगुसांईजी तहां तें श्रीगोकुल पधारे।

वार्ता प्रसंग–१

सो वे रूपचंदनंदा एक समै श्रीगुसांईजी के दरसन कों

श्रीगोकुल आए । तहां राघौदास गुजराती ब्राह्मन, सो वे श्रीसुबोधिनीजी श्रीगुसांईजी पास पढ़े हते । तिन कौ रूपचंदनंदा सों मिलाप भयो । वे राघौदास श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी पास सदैव रहते । सो एक दिन राघौदास के मन में आई, जो–चाचा हरिवंसजी तो कछू पढे नाहीं । और परदेस में जाँइ कै भेंट बोहोत लावत हैं । और मोतें श्रीगुसांईजी कहे, तो हों पठ्यो हूं (तातें) भेंट बोहोत लाऊं । यह राघौदास के मनकी बात श्रीगुसांईजी जाने । सो प्रभु तो अंतरजामी हैं । तातें इनके मनकी बात जानि गए । ता समै श्रीगुसांईजी हाथ पांव धोइवेकों पधारे हे । तहां तैं बाहिर पधारे । तब इतनो बचन कहत पधारे–

'पाषंडप्रचुरे लोके कृष्ण एव गतिर्मम ।'

तब ता समै प्रभुन आगें रूपचंदनंदा, राघौदास, और हू बोहोत वैष्णव पासा ठाढ़े हते । सो यह बात रूपचंदनंदा ने परमानंद सोनी सों पूछी, जो–यह श्लोक कहा कारन पर श्रीगुसांईजी पढ़त पधारे । तब परमानंद सोनी ने रूपचंदनंदा सों कही, जो–श्रीगुसांईजी पढ़त पधारे सो तो कछू काल बलावेस देखि कै ही पढ़यो होइगो । तब रूपचंदनंदा ने अपने मन में बिचारी, जो यह बात परमानंद सोनी कहा जाने ? यह तो 'अक्षरचट्टा' है । याकौ भेद कौन जानें ? सो ये रूपचंदनंदा और परमानंद सोनी दोऊ जनें बतरात हते, इतने ही इनके पास राघौदास आय ठाढ़े रहे । तब रूपचंदनंदा जानि गए । जो–यह कछू कारन इनकौ ही दीसत है । पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करि कै पोढ़त हते तब रूपचंदनंदा ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! यह

बचन आप वा समै कौन ऊपर पढ़त पधारे हते ? तब श्रीगुसांईजी रूपचंदनंदा सों कहे, जो–रूपचंदनंदा ! तू कछू समझ्यो नाहीं ? तब रूपचंदनंदा ने श्रीगुसांईजी सों यह बिनती करी, जो–महाराज ! आपु प्रभु हो। आपकी यह अगाध बानी कों जीव कौन जानिवे कों समर्थ है ? तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न होंइ रूपचंदनंदा सों कहे, जो–राघौदास के मन में अपनी योग्यता आई। परि इतनी तो राघौदास नें न जानी, जो–कोई भेंट वैष्णव देत हैं सो हरिवंसजी कों तो जानि कै भेंट देत नाहीं। भेंट वैष्णव देत है सो भगवदीय हैं। वे अपने मन में कछू और समुझि कै भेंट पठावत हैं। तब रूपचंदनंदा ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! मेरे मन में तो वाही समै ऐसी आई हती। जो–यह कछू कारन राघौदास कौ है। परंतु यह भेद न जान्यो हतो। सो अब आप कृपा करि कै जनाए। उन रूपचंदनंदा ऊपर श्रीगुसांईजी या प्रकार कृपा करते।

भावप्रकाश– या वार्ता में यह जतायो, जो– जैसें धनमद, राजमद, बाधक हैं, ऐसेंइ विद्या कौ मद हू बाधक हैं। तातें अहंकार तैं सदा डरपत रहनो। अहंकार धर्म कौ नास करत है।

वार्ता प्रसंग – २

और एक समै श्रीगुसांईजी आगरे पधारे। तब रूपचंदनंदा के घर सों रथ चलायो। प्रथम खवास सों खबरि मँगाई, जो–देखि तो रूपचंदनंदा घर है ? तब खवास घर जाँइ कै पूछि आयो। सो वा समै रूपचंदनंदा घर न हते। तब खवास ने नाहीं करी। तब श्रीगुसांईजी आगें कों रथ चलाये।

भावप्रकाश – काहेतें ? स्त्रीजन आदि घर के सब साधारन वैष्णव हे। तातें श्रीगुसांईजी वा समै रूपचंदनंदा के घर न पधारे।

सो भाना कपूर के घर प्रभु पधारे। तहां श्रीगुसांईजी वस्त्र खोलि कै, उपरेना माथे सों लपेटि कै, कान ऊपर जनेऊ चढाइ कै, हाथ पांव धोइवे चौक में पधारे हते। इतने ही कहूं सहर में रूपचंदनंदा ने सुनी, जो–श्रीगुसांईजी पधारे हैं। तब रूपचंदनंदा दोरेई आए। सो भाना कपूर के द्वार पर भीर देखि कै घर में गए। तहां दूर ही तें प्रभुन के दरसन करि कै उहां तें त्योंहि अपने घर कों रूपचंदनंदा चले।

भावप्रकाश– सो काहेतें ? जो–ए राजसी भक्त हैं। तातें यह जान्यो, जो–श्रीगुसांईजी अपुनो जानेंगे तो आपु ही घर पधारेंगे। तातें दुर ही तें दरसन करि रूपचंदनंदा चले। बिनती नाहीं किये।

सो श्रीगुसांईजी वही प्रकार उहां तें त्योंही रूपचंदनंदा कों देखि कै रूपचंदनंदा के पाछें पाछें रूपचंदनंदा के घर पधारे। तब रूपचंदनंदा अपने मनमें बोहोत प्रसन्न भए। पाछें श्री गुसांईजी रूपचंदनंदा के घर ही हाथ पांव धोइ स्नान करि रसोई करि, भोग धरि, प्रसाद लै, विश्राम करिवे कों पधारे। तब श्री गुसांईजी रूपचंदनंदा सों पूछे, जो–रूपचंदनंदा ! तू उहां आयो तब हमकों दंडवत् करि कै त्योंही पाछौ फिरि आयो सो कहा ? और हम तो तेरे घर बिना बुलाए ही पधारे। सोउ तेरे पाछें पाछें चले आए। तेरे घर आए। सो कारन तो तू हम सों कहि। तब रूपचंदनंदा ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो –महाराज ! आप यह अपनो घर छौरि कै उहां क्यों पधारे हते ? तब श्रीगुसांईजी रूपचंदनंदा सों कहे, जो–हम तो तेरे खबरि मँगाइ लई हती। परि तू वा समै घर हतो नाहीं। तातें हम उहां पधारे। तब

रूपचंदनंदा ने प्रभुन सों यह बिनती करी, जो –महाराज ! हों तो घर न हतो । परि घर तो इहां सों कहूँ गयो न हतो । तब श्रीगुसांईजी रूपचंदनंदा के बचन सुनि कै चुप करि रहे ।

पाछें भाना कपूर के घर सगरे वैष्णव बिचार करन लागे, जो–इतनी बार श्रीगुसांईजी कों क्यों भई ? तब काहू ने कही, जो–श्रीगुसांईजी तो भोजन करि कै रूपचंदनंदा के घर पोंढे हैं । तब सगरे सेवक सब सोंज रूपचंदनंदा के ही घर लै आए । पाछें थोरे से दिन श्रीगुसांईजी रूपचंदनंदा के घर बिराजे । ता पाछें श्रीगुसांईजी फेरि श्रीगोकुल कों विजय करे । उन रूपचंदनंदा ऊपर श्रीगुसांईजी या प्रकार कृपा करते ।

वार्ता प्रसंग – ३

बहौरि एक समै श्रीगुसांईजी रूपचंदनंदा के घर पधारे हते । सो एक दिन गादी तकिया ऊपर बिराजे हते । ता समै श्रीगुसांईजी के मन में यह आई, जो–अबलक घोड़ा अमुके रंग कौ ताके ऊपर मखमली साज अमूके रंग कौ होंइ तो ता घोड़ा ऊपर चढि कै श्रीनाथजीद्वार जाइए । ता समै रूपचंदनंदा नकास में हते । सो रूपचंदनंदा ने यह श्रीगुसांईजी के मनकी बात प्रभुन की कृपा तें उहांइ जानी । सो जैसो घोड़ा श्रीगुसांईजी ने बिचार्यो हतो तैसोइ घोड़ा, तैसोइ मखमली सब साज सिद्ध करि कै रूपचंदनंदा वा घोड़ा की बागडोरि पकरि कै चाबुक लै आइ ठाढ़े रहे । और श्रीगुसांईजी सों रूपचंदनंदा ने बिनती करी, जो–महाराज ! घोड़ा सिद्ध है । सो घोड़ा देखि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए । पाछें वाही समै श्रीगुसांईजी वा घोड़ा के

ऊपर चढ़ि कै श्रीनाथजी के दरसन कों पधारे।

सो वे रूपचंदनंदा श्रीगुसांईजी के ऐसें अंतरंग सेवक कृपापात्र हते। जो–श्रीगुसांईजी के मन की या प्रकार जानते। वे रूपचंदनंदा श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। तातें उनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ १७ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक माधौदास कायस्थ, सहारनपुर के, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश – ये माधौदास सात्विक भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'सारसिनी' है। ये इंदुलेखा तें प्रगटी हैं, तातें इन के भावरूप हैं।

ये माधौदास सहारनपुर में एक द्रव्यमान् कायस्थ हतो, ताके घर प्रगटे। सो वा कायस्थ के और कोऊ संतती नाहीं। तातें वह माधौदास पर बोहोत प्रीति करे। सो माता–पिता दोऊ माधौदास पर सनेह राखे। ऐसें करत माधौदास बरस अठारह के भए। तब माधौदास कछू कार्यार्थ दिल्ली आए। ता समै श्रीगुसांईजी आप दिल्ली बिराजत हे। तहां 'निगमबोध' घाट पर श्रीगुसांईजी आप स्नान–संध्या करन कों पधारते। सो एक दिन माधौदास निगमबोध घाट पर श्रीयमुनाजी न्हान आए। सो इन श्रीगुसांईजी के दरसन पाए। सो माधौदास श्रीगुसांईजी के दरसन करि चक्रत से व्है रहे। ऐसो तेज प्रभुन कौ माधौदास देखे। पाछें माधौदास की ओर श्रीगुसांईजी आप कृपा करि देखे। तब माधौदास श्रीगुसांईजी सों बिनती किये, जो–महाराज ! कृपा करि मोकों सेवक कीजिए। तब श्रीगुसांईजी माधौदास कों पूछे, जो–तुम कौन हो ? कहां रहत हो ? तब माधौदास श्रीगुसांईजी सों बिनती करि कहे, जो–महाराज ! हों कायस्थ हूं। सहारनपुर में रहत हों। आज आपकी बड़ी कृपा भई जो आप के दरसन पाए। तातें अब आप बेगि मोकों सेवक कीजिए। आपकी सरनि बिना मेरो जन्म अबलों वृथा गयो। अब बेगि कृपा कीजिए। तब श्रीगुसांईजी माधौदास की आर्ति देखि माधौदास कों न्हवाइ नाम निवेदन कराए। पाछें माधौदास बिनती किये, जो–महाराज ! अब कहा कर्तव्य है ? तब श्रीगुसांईजी माधौदास कों मार्ग की प्रनालिका समुझाइ आज्ञा किये, जो–तुम भगवत्सेवा करो। तब माधौदास कहे, जो–महाराज ! घर में मा–बाप सैवी हैं। तातें सेवा कैसें होंइ ? तब श्रीगुसांईजी माधौदास कों आज्ञा किये, जो–तू अपने हाथ सों रसोई करि मानसी में भोग धरि प्रसाद लीजो। काहू के हाथ कौ कछू लीजो मति। तोकों आपही तें मार्ग स्फुरेगो। ऐसो श्रीगुसांईजी आप माधौदास कों आसीर्वाद दिये। पाछें माधौदास श्रीगुसांईजी की आज्ञा माँगि अपने घर सहारनपुर आए।

वार्ता प्रसंग – १

सो वे माधौदास श्रीगुसांईजी पास नाम निवेदन पाए। और माधौदास के माता पिता सैव बहिर्मुख हते । तिन यह बात जानी। तब तिन माधौदास कों न्यारो करि दिये। सो द्रव्य कछू माधौदास कों नाहीं दियो। परि माधौदास तो भगवदीय हते। सो कछू या बात कौ हरख विषाद माने नाहीं। परि वह पिता इन कौ ऐसो दुष्ट हतो, जो–जब माधौदास कों देखतो, तब अपने मन में बोहोत खेद पावतो। और या प्रकार गाम के लोगन सों कहतो, जो–यह माधौदास अब वैष्णव भयो है। तातें यह मेरे काम कौ नाहीं। ऐसें करत केतेक दिन भए। सो वह जब आप बरस पचहतर कौ भयो तब उन अपने मन में बिचार कियो, जो–मैं प्रथम विषय दुराचार बोहोत कर्‍यो है। तासों अब बने तो तीर्थयात्रा करिए। यह बिचार करि माधौदास कौ पिता अपनी स्त्री कों साथ लै और रुपैया हजार चार घर तें लै के तीर्थयात्रा कों चल्यो। और सगरो द्रव्य ऐसी ठौर धर्‍यो, जो–माधौदास न जाने। सो घर तें चलि कै दिल्ली के उरे कों जब चल्यो, तब मथुरिया (चोबे) कोस दसबीस पर साम्हे आइ कै उन कों लै आए। तहां उन मथुरियान माधौदास के पिता सों कह्यो, जो–तुम तीर्थयात्रा कों जात हो, तो गुरुमुखी होंइ कै जाउगे तो तीर्थयात्रा कौ तुम कों फल होइगो। तब उन अपने मनमें बिचार्‍यो, जो–मोकों ये द्रव्य के लालच सों द्रव्य लेवे के लिये कोस बीस ऊपर तें लिवाइ ल्याये हैं। सो मेरे गुरु होंइ कै कहा मोकों

कृतारथ करेंगे ? तातें मैं सरन जाऊंगो तो माधौदास के गुरु की सरन जाउंगो। यह भाव वाके मनमें निर्द्धार ऊपज्यो। सो काहु कौ कह्यो वानें न मान्यो। और वे दोऊ स्त्री–पुरुष मथुरा तें सूधे प्रयाग कों चले। सो कछूक दिन में प्रयाग जाँइ पहोंचे। तहां तें अड़ेल आए। तब द्वारपाल के हाथ श्रीगुसांईजी कों खबरि कराई, जो–महाराज ! माधौदास कौ पिता आयो है। सो पोरिया ने प्रभुन कों खबरि करी। तब श्रीगुसांईजी ने वाकों भीतर बुलायो। तब वे दोऊ जन स्त्री–पुरुष भीतर जाँइ श्रीगुसांईजी के दरसन करि कै अति आनंद पाए। तब उनकों श्रीगुसांईजी बैठिवे की आज्ञा दिए। तब वे दंडवत् करि कै बैठे। तब श्री गुसांईजी वासों माधौदास के समाचार पूछे। पाछें माधौदास के पिता ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! मै जब तें बारह बरस कौ भयो तब तें विषय के आचरन आज पर्यंत हू कर्‌यो है। सो करत अब जब वृद्ध भयो हूं तब छूटे हैं। तातें राज ! आप मेरो अंगीकार करो। तब श्रीगुसांईजी ने वासों यह आज्ञा करी, जो–तुम दोऊ जनें स्नान करि आवो तब वे दोऊ जनें स्त्रीपुरुष स्नान करि आइ श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करे। तब श्रीगुसांईजी कृपा करि उन कों नाम निवेदन कराए। तब ही उन कौ मन सब ठौर तें फिर्‌यो। तब उन अपनी स्त्री सों कही, जो–अब हों आगें कहां जाऊं ? मेरे मन के दोस तो सब दूरि भए। सो नित्यप्रति अड़ेल ही में बैठे रहे। और श्रीगुसांईजी के दरसन कर्‌यो करे। यों करत बोहोत दिन भए। तब एक दिन श्रीगुसांईजी यासों पूछे, जो–तुम तीर्थयात्रा कों नाहीं जात सो

कहा ? तब उह श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! अब हमारे तीर्थयात्रा सों कहा काम हैं ? हों तो राज के द्वार बैठ्यो रहूंगो। और आप के दरसन कर्यो करूंगो। मेरे तो ऐसो मनोरथ है। तब श्रीगुसांईजी उन सों कहे, जो–यों न करनो। भगवदीयन कों लौकिक हू राख्यो चहिए। तब उन के पास चार हजार की हुंडी हती सो भंडार में दिये। और करज माँगि कै, प्रोहित सों लै कै, गया जाँइ श्राद्ध करि कै अड़ेल में पाछें फिरि आइ कै श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करे। सो अड़ेल में आए पाछें माधौदास के पिता ने माधौदास कों ये समाचार लिखि कै, और घर में जहां द्रव्य धर्यो हतो सो सब ठिकानो लिखि कै, एक मनुष्य अपने देस पठायो। तामें यह लिख्यो, जो–इतनी सब ठौर तें द्रव्य लै कै बेगि इहां तू एक बार आइयो। सो वह पत्र माधौदास के पास पहोंच्यो। ता पत्र कों बांचि कै माधौदास बोहोत प्रसन्न भए। पाछें माधौदास सगरो द्रव्य लै कै श्रीगुसांईजी के दरसन कों अपने देस तें अड़ेल कों चले। सो कछूक दिन में तहां जाँइ कै श्रीगुसांईजी के दरसन करे। तब वे दोऊ जन माधौदास के माता–पिता श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! हम आप कै चरनारविंद के दरसन पाए हैं सो या माधौदास के प्रताप सों पाए हैं। और माधौदास के पिता ने कह्यो, जो–महाराज ! इतने दिन तें हों माधौदास के ऊपर अप्रसन्नता राखतो। तातें अब हों माधौदास के पाँवन परूं तो अब कछू बाधा तो नाहीं ? सो, जो–कछू राज आज्ञा देहु सो हों करूं। तब श्रीगुसांईजी वासों कहे, जो–तुम कों उचित तो योंही है। परि माधौदास

तुम्हारो बेटा है। तब वे अति प्रसन्नता सों माधौदास कों गरें लगाइ कै मिले। और उनने माधौदास कों मुख चूम्यो। और माधौदास सों कहे, जो–बेटा ! यह सब तेरी कृपा तें हम कों श्रीगुसांईजी के चरनारविंद की प्राप्ति भई। नाँतरु हम कों श्रीगुसांईजी के चरनारविंद की प्राप्ति कौ संसर्ग कहां तें होतो ? जो–यह चरनारविंद कों पावते ? तब माधौदास ये बचन पिता के सुनि कै तासों कहे, जो–प्रभु सर्व समर्थ हैं। इन कों मन फेरत कछू हू विलंब न जाननो। परि अपने अंगीकृत कों प्रभु छोरे नाहीं। माधौदास के ये बचन सुनि माता पिता दोऊ जन अति प्रसन्न भए। पाछें माधौदास घर सों जो द्रव्य ल्याये हते सो सर्व अपने पिता कों सोंप्यो। ता सगरे द्रव्य कों माधौदास के पिता ने श्रीगुसांईजी के भंडार में दियो। पाछें वे द्वार ऊपर बैठे रहते। तब उन सों श्रीगुसांईजी यह आज्ञा करे, जो–तुम दोऊ जन स्त्री–पुरुष फूलन की सेवा कर्‌यो करो। और महाप्रसाद भीतर लीजियो। और दरसन कर्‌यो करियो।

भावप्रकाश – काहेतें ? ये दोऊ श्रीयमुनाजी के जूथ के माली–मालिनि हैं। सो पुरुष कौ नाम तो 'गेंदुवा' है, और स्त्री कौ नाम 'सुरजमुखी' है। सो यहां हू श्रीगुसांईजी आप उन कों फूलन की सेवा सोंपे।

पाछें केतेक दिन माधौदास श्रीगुसांईजी पास रहि कै प्रभुन तें बिदा मांगि कै अपने देस कों आए। सो माधौदास जब पिता पास तें बिदा होंइ कै अपने देस कों चलन लागे तब वाके पिताने अपने घर में जो और द्रव्य हतो सो सब माधौदास कों बताइ दियो। पाछें माधौदास अपने घर कों चले सो कछूक दिन

में तहां जाँइ पहोंचे। इन के माता–पिता दोऊ जन श्रीगुसांईजी के पास रहे।

भावप्रकाश – तातें संग कौ यह प्रभाव है। सो संगति तो या जीव कों अवस्य करनी। उन माधौदास के प्रताप सों दोऊ जन कौ कार्य भयो।

वे माधौदास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता॥ १८॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक कायस्थ बापबेटा, हिंसार में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश – ये बाप बेटा दोऊ तामस भक्त हैं। लीला में बाप तो 'व्रजांगना' है। और बेटा 'व्रजवल्लभा'। सो 'व्रजांगना' प्रेममंजरी तें प्रगटी हैं। तातें उन के भाव–रूप हैं। और 'व्रजांगना' की एक सखी है, अंतरंगिनी। सो व्रजवल्लभा है। सो इहां बेटा भयो।

यो दोऊ बाप बेटा कायस्थ हिंसार में रहते। सो चाकरी के लिये दिल्ली आए। तहां पृथ्वीपति के इहां चाकर रहे। सो द्रव्य बोहोत कमायो। पाछें एक समै दोऊ बाप बेटा ओड़ परगना में कछु कार्यार्थ गए। तहां तें मथुरा वृन्दावन दरसन कों आए। सो वहां के दरसन करि पाछें दोऊ बाप बेटा श्रीगोकुल आए। सो ठकुरानी घाट पर टाढ़े रहे। तहां श्रीगुसांईजी आप संध्यावंदन करत हे। सो इन श्रीगुसांईजी के दरसन किये। ता समै श्रीगुसांईजी इन बाप बेटान कों देखि कछूक मुसिकाए। तब दोऊ आपस में बिचार कियो, जो–ये हमें देखि मुसिकाए तामें कछू कारन दीसे है। पाछें बाप ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज! आप हमें देखि हँसे ताकौ कारन कहा है? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–हम तो योंही अपने सेवकन सों बातें करत हँसे हैं। तब फेरि वा कायस्थने बिनती करी, जो–महाराज! यह बात तो अवस्य कहि चहिए। हम तो अज्ञानी जीव हैं, तातें कछू समुझत नाहीं। तब श्रीगुसांईजी वाकी दीनता देखि, आज्ञा करें, जो–तुम अपनो स्वरूप भूलि (कै) इत उत भटकत हो। तातें हम तुम्हें देखि हँसे। काहेतें? (हम जानें) जो–ये अपनो जन्म योंही खोवत हैं। तब तो वा कायस्थ ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज! अब तो आप कृपा करि कै हमारे स्वरूप कौ ज्ञान कराइए। हम कों आप सरनि लीजिये। आप साँचि कहत हैं, जो–हम अपनो जन्म योंही खोवत हैं। तब श्रीगुसांईजी उनकी आतुरता जानि इन दोऊन कों आज्ञा किये, जो–तुम श्रीयमुनाजी में स्नान करि बेगि मंदिर में आउ। हम तुम दोऊन कों ऊहां सरनि लेइंगे। तब वे दोऊ बाप बेटा बेगि श्रीयमुनाजी में स्नान करि मंदिर में आए। तहां श्रीगुसांईजी इन दोऊन कों

श्रीनवनीतप्रियजी के सन्निधान नाम निवेदन कराए। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप अनोसर कराइ बैठक में पधारे। तहां ये दोऊ बाप बेटा आइ श्रीगुसांईजी कों दंडवत् किये। और बिनती करी, जो–महाराज ! हम अज्ञानी जीव हैं। तातें कृपा करि हमें अपने स्वरूप कों ज्ञान कराइए। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–पहिले तुम यहां प्रसाद लेऊ, ता पाछें तुम कों सब समझावेंगे। तब दोऊ बाप बेटा प्रसन्न व्है उहां बैठे। पाछें श्रीगुसांईजी भोजन कों पधारे। इतने में चाचाजी तहां आए। ता पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करि, आचमन करि बीरी लै गादी तकियान पर बिराजे। तब चाचाजी ने श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करी। पाछें श्रीगुसांईजी चाचाजी सों आज्ञा किये, जो–चाचाजी ! ये दोऊ बाप बेटा कों कछूक दिन तुम्हारे पास राखि मार्ग कौ सिद्धांत समझावो। सो इन कों अपने स्वरूप कौ, श्रीठाकुरजी के स्वरूप कौ, मार्गकी प्रनाली आदि कौ ज्ञान होंइ। पाछें श्रीगुसांईजी दोऊ बाप बेटान कों आज्ञा किये, जो–तुम जाँइ महाप्रसाद लेऊ। सो दोऊ महाप्रसाद लियो। पाछें श्रीगुसांईजी कों आइ दंडवत् करी। पाछें प्रभु तो आप पोढिवे कों पधारे। तब चाचाजी वे बाप बेटान कों लै अपने घर आए। तहां चाचाजी ने उन कों निवेदन कौ स्मरन करायो। तब सगरो मार्ग आप ही स्फुर्‌यो। ताही समैं श्रीठाकुरजी कौ, श्रीगुसांईजी कौ और अपने स्वरूप कौ ज्ञान इन दोऊन कों भयो। सो चाचाजी के छिनक संग करि दोऊन पर श्रीगुसांईजी आप ऐसी कृपा करी। पाछें दोऊ बाप बेटा निवेदन के स्मरन में छके रहते। इन दोऊन की यह दसा देखि श्रीगुसांईजी इन दोऊन कों आज्ञा करे, जो–अब तुम अपने घर जाउ। अब तुम कों संसार ब्यापेगो नाहीं। तब ये दोऊ बाप बैटा श्रीगुसांईजी की आज्ञा माँगि अपने देस आए।

वार्ता प्रसंग–१

वे दोऊ देसाधिपति के चाकर हते। सो उन कों परगनो कमाइवे कों देसाधिपति ने पठाए। पाछें कछूक दिन उन कों परगनो कमावत भए, तब काहूनें चुगली करी। तब देसाधिपति ने उन सों परगना तागीर करि उन कों अपने पास बुलाए। सो उन के माथे देसाधिपति नें, राजा टोडरमल नें रुपैया हजार बीस कौ दंड किये। पाछें उन दोऊन कों राजा टोडरमल ने बंदीखाने दिये। सो केतेक दिन भए तब इन दोऊन अपने मन में बिचार करि कै अपने प्रोहित कों अपने देस में अपने घर पठायो। और

इनन प्रोहित सों यह कह्यो, जो–गहनों तथा घर बेचि कै, कछू द्रव्य उधार करि कै, हुंडी कराइ लाओ। जो इहां तें छूटिए। सो वह ब्राह्मन उन के देस जाँइ, गहनों–पातो बेचि कै, कछू करज करि कै रुपैया हजार चौदह की हुंडी कराइ कै, फेरि इन के पास आगरे में आयो। सो वह हुंडी उन कों सोंपी। और सगरे घर के समाचार कहे। पाछें वा ब्राह्मन कों तो वाके घर पठायो। और पिता ने अपने बेटा सों कह्यो, जो–यह द्रव्य सवारें राजा कों देइ कै छूटेंगे। बाकी छह हजार कौ वायदो करि कै छूटेंगे। तब वा बेटा ने पिता सों कही, जो–एक बिनती तुम मेरी सुनो। पाछें तो तुम्हारे मन में आवे सो करियो। जो–आपुन यह द्रव्य देइंगे, सो राजा यह द्रव्य हू लेइगो और आपनु सों कहेगो, जो–और हू छह हजार भरोगे तब छूटन पाओगे। अपनो कर्‌यो वायदो राजा मानेगो नाहीं। तातें यह द्रव्य हू अपने हाथ सों जाइगो। और आपुन कों वह छोरेगो हू नाहीं। और यह तो जब अपनो भोग पूरन होइगो तब यह आपुन कों योंहि छोरि देइगो। और यह घर कौ जो द्रव्य है, सो तो श्रीठाकुरजी कौ है। सो रिन कौ द्रव्य है। सो अपने माथे ब्रह्मरिन होइगो। तासों मेरी बुद्धि जो मानो तो यह हुंडी श्री गुसांईजी कों याही प्रोहित के हाथ श्रीगोकुल में पठाइ देहु। और आपुन जब निवेदन करे हते, तब यह पढ़े, जो–गृहान्, दारान्, सुतान् ये सर्व समर्पन किये हैं। तातें यह द्रव्य दिये आपुन छूटनहार नाहीं। पाछें और हू राजा कों भरम परेगो। जो–इनन इतनो द्रव्य दियो है तो और हू द्रव्य इन पास होइगो। तातें आपुन कौ राजा छोरेगो नाहीं। यह बात पिता सों बेटानें

समुझाई कै कही । तब बेटा के ये बचन सुनि कै यह पिता बोहोत प्रसन्न भयो । और पिता ने कह्यो, जो–बेटा ! स्याबास तेरी धीरजता कों । जो–या समै तेरी यह बुद्धि रही है । तातें अब यह सगरो द्रव्य तो सवारे श्रीगोकुल श्रीगुसांईजी कों पठावनो । और आपुन के जब भोग पूरन होंइगे, तब छूटेहींगे । नाँतरू इहांइ मरेंगे । तो परलोक में तो कछू बाधा नाहीं । यासों तू धन्य है । जो–तू मेरो याहू समै में धर्म राख्यो । अब योंही करनो । पाछें सवेरो भयो तब वा प्रोहित ही कों बुलायो । तब वासों इन कही, जो–हम कों तो श्रीगुसांईजी कौ बोहोत द्रव्य देनो है । परि भलो, अब तो हम पास और द्रव्य तो है नाही । तासों तुम अब यह द्रव्य श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुल पहोंचतो करि कै प्रभुन आगें हमारी दंडवत् कहोगे । और इहां तो इतनो द्रव्य दिये हू हमारो छुटकारो होत नाहीं । तातें तुम यह हुंडी चापांभाई भंडारी कों सोंपि आओ । और एक बिनती–पत्र इनन प्रभुन कों लिख्यो । सो वह प्रोहित आप नामधारी हतो । तासों वह इन कौ कह्यो मानि कै श्रीगोकुल कों उठि चल्यो । सो श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी पास वह प्रोहित आइ पहोच्यों । पाछें वह प्रोहित चापांभाई भंडारी सों इनके सर्व समाचार कहि कै वह बिनतीपत्र और हुंडी सोंपी । पाछें चांपाभाई, प्रोहित के ये समाचार सुनि कै सब श्रीगुसांईजी सों कहे । जो महाराज ! अपने भंडार कौ तो द्रव्य वा पास कछू बाकी नाहीं । परि ये दोऊ कायस्थ आपके सेवक हैं । सो उनन अपने प्रोहित के हाथ यह हुंडी दिवाइ पठाई है । और आप वे बंदीखाने में परे हैं । तब तो श्रीगुसांईजी ने चापांभाई सों कही,

जो–अब तो यह द्रव्य भंडार में राखो। पाछें श्रीगुसांईजी चाचा हरिवंसजी कों बुलवाइ कै एक पत्र प्रभुन बीरबल कों लिख्यो। तामें यह लिखे, जो–ये दोऊ कायस्थ हमारे सेवक हैं। सो वे दोऊ राजा टोडरमल के इहां बंदीखाने में हैं। तिनको तुम छुड़ाइ दीजो। इनके साथे बीस हजार रुपिया दंड भयो है। सो द्रव्य हम रिन काढ़ि कै तुमकों पठाइ देहिंगे। पत्र में प्रभुन यह लिख्यो। सो चाचा हरिवंसजी कों समुझाइ कै कह्यो। पाछें चाचाजी के साथ एक ब्रजबासी दै कै श्रीगुसांईजी चाचा हरिवंसजी कों बिदा किये। सो चाचाजी प्रभुन पास तें बिदा होइ कै आगरे आए। पाछें चाचाजी वा ब्रजबासी साथ उन बाप बेटा कायस्थन कों बंदीखाने में कहि पठाए, जो–अब तुम चिंता मति करियो। तुमकों छुडाइवे कों चाचा हरिवंसजी को श्रीगुसांईजी ने आप पत्र लिखि, दै, कै पठाए हैं। तब वा ब्रजबासी ने उहां बंदीखाने में जाइ कै उन तें ये समाचार कहे। तब वे वैष्णव वा ब्रजबासी सों पूछें, जो–वह श्रीगुसांईजी के हस्ताक्षरन कौ पत्र कहां है ? तब वा ब्रजबासी ने उन वैष्णव सों कह्यो, जो–वह पत्र तो मेरी पाग में है। तब उन वैष्णवन वा ब्रजबासी सों कह्यो, जो–तुम हम कों वा पत्र कौ दरसन करावो। तब वा ब्रजबासी ने वह पत्र पाग में तें खोलि कै उनके हाथ में दियो। तब वे वैष्णव वा ब्रजबासी सों रुपैया एक दै कै कह्यो, जो–याकौ सौदा तुम बजार तें लै आवो। तब वह ब्रजबासी तो बजार में सौदा लैन गयो। पाछें इन वैष्णवन अपने मन में बिचार कर्यो। जो–या पत्र में श्रीगुसांईजी यह लिखे बीरबल कों, जो–ये दोऊ कायस्थ

हमारे हैं। तासों बीरबल कौन है ? ताकों यह पत्र दीजिये ? सो उनन वा पत्र कौ माथे चढाइ कै समाचार बांचि कै उहांई दुबकायो।

भावप्रकाश––काहेतें ? जो–श्रीगुसांईजी बीरबल कों पत्र में लिख्यो, जो–हम रिन काढ़ि कै तुम कों बीस हजार रुपया चुकाई देइंगे। सो यामें प्रभुन कों श्रम होंई। तातें हमारो धर्म रहे नाहीं। यों जानि इन बाप बेटानने श्रीगुसांईजी कौ पत्र दुबकाय दियो।

पाछें वह ब्रजबासी बजार तें सब सौदा लै, वा ठौर उन पास आइ, वह सौदा उन कों दै कै उन पास ब्रजबासी ने वह पत्र माँग्यो। तब उनन ब्रजबासी सों कह्यो, जो–वह पत्र तो हम पास तें खोइ गयो। पाछें वा ब्रजबासी ने उन सब समाचार आई कै हरिवंसजी सों कहे। पाछें अपने सर्व समाचार हरिवंसजी सों कहे, जो–वह पत्र मो पै सों उनन देखिवे कों लीनो हतो। और मोकों एक रुपैया दैकै सौदा बजार सों मो पास मँगायो। पाछें मैं बजार सों आइ कै उन पास वह पत्र माँग्यो। तब उनन कही, जो–वह पत्र तो हमारे पास सों खोइ गयो। तब हरिवंसजी वा ब्रजबासी तें कहे, जो–पत्र कौ काम तो हतो, परंतु यह तो निकट ही कौ काम है। और बीरबल हू अपनो कह्यो मानेगो। तासों इहां तो हों काम चलाइ लेहुंगो। और परदेस में जो कहूँ ऐसें पत्र जात रहे तो कहा विवस्था होइ ? तब वह ब्रजबासी सुनि कै चुप करि रह्यो। पाछें दूसरे दिन हरिवंसजी बीरबल सों मिले। तब बीरबल हरिवंसजी कौ बोहोत समाधान करि, बोहोत भक्तिभाव सों श्रद्धापूर्वक भेंटि कै, अपने घर पधराइ, प्रभुन के कुसल समाचार पूछि, हरिवंसजी कों अपने पास बैठारि कै बीरबल ने

बिनती करी, जो–हरिवंसजी ! मोसों श्रीगुसांईजी ने आज्ञा कीनी होंइ सो आप कृपा करि कै कहो। तब हरिवंसजी ने जो–कछू पत्र में श्रीगुसांईजी ने लिख्यो हतो सो समाचार बीरबल सों कहे। तब बीरबल ने हरिवंसजी सों कह्यो, जो–आजु तो हों प्रसाद लियो हूं। परि काल्हि तो प्रसाद तब लेऊंगो जब उन दोऊन कों छुड़ाइ कै लाऊंगो। पाछे बीरबल दरबार सों सांझके समै अपने घर आयो। पाछें घर तें सवारे बीस थेली रुपैयान की हाथी की अंबारी ऊपर धरि, आपु वाही हाथी पै बैठि कै राजा टोडरमल के घर आए। तब राजा टोडरमल सों बीरबल ने कही, जो–वे हिंसार के कायस्थ बाप बेटा दोऊ जनें तुम्हारे बंदीखाने में हैं। तिन के माथे तुम बीस हजार रुपैया दंड कर्‌यो है। सो वे श्रीगुसांईजी के सेवक हैं। तासों श्रीगुसांईजी ने बीस हजार रुपैया रिन काढि कै द्रव्य मेरे पास पठायो है। सो वह द्रव्य आप लीजिये। और उन कायस्थन कों छोरिन। वे श्रीगुसांईजी के सेवक हैं। तब राजा टोडरमल ने बीरबल सों कही, जो–वे कायस्थ श्रीगुसांईजी के सेवक हैं। और प्रभुन यह द्रव्य रिन काढि कै पठायो है। और तुम द्रव्य लै कै मेरे घर आए हो। तो हों द्रव्य कौ कहा करूं ? योंही उन कायस्थन कों पात्साह सों कहि कै छुड़ाइ देउंगो। पाछें वाही समै पात्साह पासा राजा टोडरमल जाँइ कै कह्यो, जो–हजरत ! फलानो परगनो उजार पर्‌यो है। सो वह फलाने कायस्थ बिना समरेगो नाहीं। और वे कायस्थ तो मेरे इहां बंदीखाने हैं। तिन के माथे बीस हजार रुपैया दंड कर्‌यो है। सो उन पास अब तो पैसा नाहीं है। वे कहत हैं, जो–हम कों

परगने पर पठावो तो तुम कों द्रव्य कमाई कै देइ । तासों आप कौ हुकम होंइ तो उन कों छोरि परगने कौ सिरोपाव दैकै बिदा करिए। तब वह पात्साह ने राजा टोडरमल सों कही, जो–आछी बात है। उन कायस्थन कों छोरि कै मेरे पास लाओ। तब वाही समै उन कों बंदीखाने सों छुराइ पात्साह ते सन्मुख ठाढ़े किये। तब पात्साह ने उन कों सिरोपाव दै बीस हजार रुपैया दंड के हे, सोऊ माफ करि कै यह हुकम कर्यो, जो–वह परगनो तुम आछी भांति बसाइयो । सो उन कों सिरोपाव पहराइ, राजा टोडरमल अपने घर लाइ, बीरबल सों सब समाचार कहि कै उन दोऊ कायस्थन कों सोंपि दिये । तब बीरबल उन दोऊन कों संग लै, अपने घर आइ, हरिवंसजी कों सोंपि दिये । तब हरिवंसजी बीरबल ऊपर बोहोत प्रसन्न भए । पाछें वे दोऊ हरिवंसजी कों दंडवत् करि, मिलि, भेंटि कै बोहोत बिनती करे। जो–प्रभुनकी कृपा सों यह सर्व कार्य भयो है । जो–प्रभुन की कृपा हम ऊपर भई तो हम छूटे। और सगरो दंड माफ होइ कै दूसरे परगना कौ सिरोपाव पायो। यों कहि वे दोऊ अति आनंद पाइ हरिवंसजी सों बोहोत बिनती करे। पाछें हरिवंसजी सवारे बीरबल सों बिदा होइ कै श्रीगोकुल कों चलन लागे। तब वे बीस थेली बीरबल ने श्रीगुसांईजी की भेंट पठाइ । सो लैकै हरिवंसजी आगरे तें श्रीगोकुल श्रीगुसांईजी पास आइ, वे बीस हजार रुपैया बीरबल की ओर तें श्रीगुसांईजी की भेंट धरि कै ये सब समाचार हरिवंसजी श्रीगुसांईजी आगें कहे । तब

श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए। पाछें वे कायस्थ राज कौ प्रबंध बांधि कै परगने कों कमावन चले। तब फेरि पिता सों बेटा ने कही, जो–यह सर्व पदार्थ आपुन कों प्राप्त भयो है, सो श्रीगुसांईजी की कृपा तें भयो है। जो–श्रीगुसांईजी आपुन कों अपने सेवक जाने, तब आपुन इहां सों आछी भांति छूटे हैं। तासों एक बार तो अब इहां सो श्रीगोकुल चलि कै, श्रीगुसांईजी के दरसन करि कै, ता पाछें परगनो कमावन चलेंगे। सो वे बाप बेटा दोऊ बीरबल सों बिदा होइ कै श्रीगोकुल श्रीगुसांईजी के दरसन कों आए। तहां श्रीगुसांईजी के दरसन अति आनंद सो करि दंडवत् करि ठाढ़े रहे। तब श्रीगुसांईजी उनकों आज्ञा दिये, जो–बैठो। तब वे दंडवत् करि कै अति आनंद सों बैठे। पाछें श्रीगुसांईजी उन सों पूछे, जो–तुम आछें हो ? तब इनन अति उत्कंठित होई कै प्रभुन सों कह्यो, जो–राज ने अपने सेवक करि जाने, तो, तब हम आछें क्यों न होइंगे ? आपु की कृपा सों वा ठौर तें छूटे। और दूसरो परगनो पात्साह के हजूर सों पाए। या प्रकार बोहोत ही बिनती उनन प्रभुन आगें करी। तब ता ऊपर श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न भए। पाछें पिता श्रीगुसांईजी सों बिनती कर्‌यो, जो–महाराज मोकों यह कृपा आपु की कृपा सों भई है। जो–या पुत्र ही की बुद्धि प्रमान भई है। नाँतरु मेरे कही ठौर न हती। यह बड़ो धैर्यवान् है। एसें पिता ने पुत्र की बड़ाई प्रभुन आगें करी। सो सब प्रथम के समाचार सुनि कै श्रीगुसांईजी उन कौ ऐसो सुद्ध भाव जानि कै प्रभु उन ऊपर बोहोत प्रसन्न भए। पाछें बाप बेटा दोइ दिन श्रीगुसांईजी पास

रहि, आज्ञा माँगि कै, परगनो कमावन कों चले । सो परगने पर जाँइ पहोंचे । पाछें वह परगनो बसायो । तहां तें बोहोत द्रव्य लै कै पात्साह कों टोडरमल राजा की मारफत पहोंचायो । और कितनो द्रव्य श्रीगुसांईजी की भेंट पठायो । और अपने माथे रिन हतो सो दीनो । प्रोहित कों बोहोत प्रसन्न कर्‌यो । पाछें प्रतिवर्ष पात्साह कों बोहोत बोहोत द्रव्य पठावन लागे । सो टोडरमल पात्साह सों कहे । तब वह पात्साह उन पर बोहोत प्रसन्न भयो । और वे कितनो द्रव्य प्रतिवर्ष श्रीगुसांईजी कों पठावते । वे ऐसें भगवदीय हते । उन कौ मन देखि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न होते । वे बाप बेटा कायस्थ दोऊ जन श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते । तातें उनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां ताईं कहिए ? वार्ता ॥ १९ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक दोई भाई पटेल, गुजरात में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये दोऊ भाई सात्विक भक्त हैं । लीला में बड़े भाई कौ नाम तो 'तरंगिनी' है । और छोटे भाई कौ नाम 'मुग्धा' है । सो 'तरंगिनी' श्रीयमुनाजी के जूथ की हैं । और 'मुग्धा' राधा सहचरी की सखी प्रेममंजरी है, ताकी ये सखी हैं । ये दोऊ प्रेममंजरी तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं ।

सो ये दोऊ भाई गुजरात में एक कुनबी पटेल के घर जन्में । सो इनके माता–पिता इन दोऊन कों बालक छोरि कै मरे । तब ये दोऊ अपने काका के घर कहे । सो काका वैष्णव हतो । तातें श्रीगुसांईजी जब खंभाइच पधारे, तब इन हू कों श्रीगुसांईजी के सेवक कराए । पाछें ये दोऊ बरस बीस, बाइस के भए । तब इन कौ काका मर्‌यो । तब ये दोई भाई ब्रजकी यात्रा कों निकसे ।

वार्ता प्रसंग –१

सो एक समै एक साथ गुजरात कौ श्रीनाथजी के दरसन कों

गुजरात सों चल्यो। ता संग में ये दोऊ भाई पटेल हू श्रीनाथजी के दरसन कों चलें। सो केतेक दिन में वह साथ श्रीनाथजीद्वार आइ पहोंच्यो। सो सगरेन (ने) श्रीगुसांईजी के दरसन करे। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी कों अनोसर करवाइ कै पर्वत तें नीचे आइ कै अपनी बैठक में बिराजे। तब साथ के सगरे वैष्णव श्रीगुसांईजी के दरसन कों आवत हते। तिनमें सगरेन के पहिले ये दोऊ भाई पटेल आइ श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कहे, जो–महाराज ! हमारो मन कछूक दिन ब्रज में रहिवे कौ है। तासों हम कों आप श्रीनाथजी की सेवा बतावो सो करेंगे। और आप जो महाप्रसाद धरोगे सो हम लेइंगे। और आप जो प्रसादी वस्त्र देउगे सो पहिरेंगे। सो उन दोऊ भाईन में छोटो भाई सूधो हतो। और बड़ो भाई बांको। सो छोटे भाई में कछू ज्ञान न हतो। ताकों तो श्रीगुसांईजी ने श्रीनाथजी की गाँइन के खिरक झारिवे की सेवा सोंपी। गाँइन कौ घास नीरिवे की टहल बताई। और एक भाइ चोकस हतो। ताकों श्रीनाथजी के जलघरा में स्नान कराइवे की सेवा सोंपी। सो वे दोऊ अति आनंद सों प्रभुन की आज्ञा पाई श्रीगुसांईजी की सेवा करन लागे। तब जो भाई जलघरा में न्हायो हतो, सो तो अपनी टहल सों पहोंचि कै प्रसाद लै पांचमें सातमें दिन भाई पास जातो। और जाकों गाँइन की सेवा सोंपी हती, सो तो अति प्रेम सों श्रीनाथजी की गाँइन की टहल इतनी करतो, जो–दोऊ बार तो गाँइन कौ खिरक या प्रकार झारतो, जो–फेरि कहूं वा ठौर कांकर न रहे। वह अपने मन में यह

बिचारतो, जो–इहां श्रीनाथजी पधारत हैं । सो प्रभुन के चरनारविंद अति कोमल हैं । तासों कांकर रहेंगे तो मोकों अपराध परेगो । या प्रकार वह पटेल गाँइन कौ खिरक झारतो । और घास तथा न्यार गाँइन के आगें बीनि कै नीरतो । वामें कछू कांकर न्यार में न रहे । और घास में कोइ जनावर न रहन पावे । चौमासे में खिरक आछी भांति सूंततो । तासों ठौर कोरी रहती । सो गाँइ अति सुख पाँवती । यह या प्रकार दिन दिन रुची बढाइ कै गाँइन की टहल करतो । सो वाकी पातरि करि भीतरिया धरि राखते । तब अवारो सो ये सेवा सों पहोंचतो तब जाँइ श्रीगुसांईजी के दरसन करि कै पाछें प्रसाद लेतो । कब हूँ कब हूँ प्रसाद लैन सांझ कों जातो । यों करत केतेक दिन भए तब श्रीगुसांईजी सों भीतरिया ने जाँई कै कहि, जो–महाराज ! याकी पातरि अज हूँ परी है । यह तो समैसिर आवत नाहीं । तासों आप यासों कछू कहो । जो–यह समै पर आइ करि अपनी पातर तो लै जांइ । तब वह पटेल दूसरे दिन श्रीगुसांईजी के दरसन कों आयो । तब श्रीगुसांईजी वासों कहे, जो–पटेल ! तुम पातरि अपनी बेगि ही लै जायो करो । तब वह श्रीगुसांईजी सों दंडवत् करि कह्यो, जो–भलें महाराज । यह कहि फेरि खिरक में जांइ सेवा करन लाग्यो । सो पातरि की सुधि भूलि गयो । या प्रकार मन लगाइ गाँइन की सेवा करन लाग्यो । सो वाकौ मुग्ध भाव जानि कै श्रीनाथजी वा ऊपर बोहोत प्रसन्न भए । वाकौ सेवा के आवेस में खाइवे की सुधि हू न रहती । तासों श्रीनाथजी वाकों

कब हूं दरसन देते। और वाकों प्रभु प्रसाद लैवे कों पठावते। तऊ वह सेवा सों पहोंचतो तबही जातो। ऐसो वाकौ मन श्रीनाथजी की गाँइन की सेवा में अनुरक्त हतो।

तब एक दिन वाकों श्रीनाथजी एक सिज्या–भोग कौ लडुवा उहांई दियो। सो वह खाँइ कै सेवा करन लाग्यो। पाछें वा दिन वह पातरि लैन न गयो। तब भीतरिया ने फेरि श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज! वह आज पातरि लैन अज हू आयो नाहीं। तब श्रीगुसांईजी वाकों रात्रि कों बुलाइ कै पूछे, जो–पटेल! तुम आजु अब लों पातरि लैन क्यों न आए? तब वा पटेल ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज! "मन्हें श्रीनाथजी एक लडुवा आप्यो हतो तेमांथी थोडो खाधो छे, ने थोडो म्हारे पासे बांध्यो छे। तेथी भूख नथी। तो पातल लेइ ने शूं करूं?" तब श्रीगुसांईजी वाके बचन सुनि कै श्रीनाथजी की कृपा जानि वा ऊपर बोहोत प्रसन्न भए। पाछें यह बचन श्रीगुसांईजी वासों कहें, जो–पटेल! वह लडुवा तेरे पास है? तब वा पटेल ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–"महाराज! आधो लडुवा मारे पासे छे।" सो वाने लडुवा की गांठि खोलि कै वह आधो लडुवा श्रीगुसांईजी के आगें धर्‍यो। तब श्रीगुसांईजी ने रामदासजी भीतरिया कों वह लडुवा दिखायो। सो रामदासजी वह सिज्या–भोग कौ लडुवा देखि कै अति विस्मित होंइ रहे। ता दिना तें रामदासजी वाकी पातरि आछी भांति अपने हाथन करि ढांपि राखन लागे। सो सयन–आर्ति लों जो वह पातरि लैन

न जातो, तो वाके भाई हाथ पातरि वहांई पहोंचती करते । या प्रकार वाको मन गाँइन की सेवा में अनुरक्त हतो।

भावप्रकाश–या वार्ता में यह जतायो, जो कोऊ गायन की सेवा आछी भाँति करें तो श्रीनाथजी आपही तें वा पर प्रसन्न होंइ।

वार्ता प्रसंग–२

और वह पटेल सूधो हतो, श्रीगुसांईजी कौ नाम हू न जानतो। सो एक दिन वह अपने मन में सोच करत श्रीगुसांईजी के पास बैठ्यो हतो। जो–"हूं तो एमनूं नाम जानतो नथी तो शूं करिने कहूं, ने दंडवत् करूं ?" यह सोच करत हतो । इतने ही श्रीबालकृष्णजी तहां पधारि दंडवत् करि कै श्रीगुसांईजी सों बिनती करि कै कहे, जो–काकाजी ! भोजन कों पधारिए। तब तो यह श्रीबालकृष्णजी के बचन सुनि कै वह पटेल अपने मन में बोहोत प्रसन्न होंइ श्रीगुसांईजी सों दंडवत् करि यह बिनती कर्यो, जो–"महाराज तमारूं नाम आज जाण्यूं छे। मारा मनमां चिंता हती जे हूं शूं कही ने प्रणाम करूं ? ते तमारूं नाम तो काकाजी दीसे छे।" यह बचन वाकौ सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए। वाको निष्कपट सुद्धभाव जाने। पाछें श्रीगुसांईजी तो भोजन कों पधारे । तब वह पटेल काकाजी महाराज कहि उठि चल्यो। तब वाके बचन सुनि कै वैष्णव और श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए। तब आपु श्रीगुसांईजी हँसि कै श्रीमुख तें उन वैष्णवन सों कहे, जो–हमारे एक यह नयो भतीजा काकाजी कहिवे कों आयो है। पाछें श्रीगुसांईजी तो वा समै भोजन कों पधारे। पाछें वह पटेल जब श्रीगुसांईजी पास आवतो तब या

प्रकार कहि दंडवत् करतो। और खिरक में जातो (तब कहतो) जो–काकाजी महाराज ! यह बचन सुनि वा समै प्रभुन पास बैठे होंइ, तिन सहित श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न होते। और जब ही श्रीगुसांईजी वाकों दूरि तें आवत देखते तब ही वैष्णवन सों कहते, जो–अब काकाजी कहिवे कों आइ रह्यो है। इतने ही वह काकाजी महाराज कह्यो। तब श्रीगुसांईजी सहित सब वैष्णव वाके बचन सुनि कै बोहोत प्रसन्न भए। और वाकों दूरि तें आवत देखते तबही सब बोहोत प्रसन्न होंइ चुप रहते।

सो एक दिन कोई वैष्णव ने वा पटेल तें कह्यो, जो–जाकों तुम काकाजी कहत हो तिनकौ नाम तो श्रीविट्ठलनाथजी श्रीगुसांईजी है। तासों तुम श्रीगुसांईजी कहि दंडवत् कर्‍यो करो। तब वा पटेल ने वा वैष्णव सों कह्यो, जो– "हूं तो तारूं कह्यूं मानूं नाहीं। तू तो मने ऐम कहवावी ने काकाजी थी रीस करावीश !" यह कहि कै वाकौ बचन न मान्यो। तब श्रीगुसांईजी सों वा वैष्णव ने कह्यो, जो–महाराज ! मैं तो आप कौ नाम यासों कह्यो हो। परि याके तो कछू मन में न आई। तब फेरि दूसरे दिन श्रीगुसांईजी के दरसन कों वह पटेल आयो। सो काकाजी महाराज कहि बेठि कै बिनती कर्‍यो, जो– "महाराज ! ए सघला वैष्णव मली ने मन्हे तमथी रीस करवाने ऐम ऐम कहे छे। जे तू काकाजी मा कहीश, ने एम कह्यो करि। ते नाम काल्हि ऐंणे भाई लीधूं हतूं। ते मने नाम सुधि रह्यूं नथी। ते ऐवडूं मोटूं नाम मारी जीभथी केम उकलशे ते हूं कहूं ? तेथी हूं तो तम्हने सूधो नाम काकाजी कह्यो करीश।" तब श्रीगुसांईजी वाकौ सुद्ध भाव जानि

यह आज्ञा आपु श्रीमुख तें करे, जो–पटेल ! तारी जीभथी उकले तेज नाम तू कह्यो करि। यह श्रीगुसांईजी की वह पटेल आज्ञा पाय बोहोत प्रसन्न भयो। और वा वैष्णव सों पटेल ने कह्यो, "जे जूओ ! हवे अमने काकाजी ए शूं कहूं ? भूंडा ! तू तो मने काल्हि केटली वात कही हती ?" तब वह वैष्णव सुनि कै चुप करि रह्यो। पाछें वह पटेल तो श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै अपने खिरक में आवत भयो। तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णव सों कहे, जो–यह पटेल बापड़ो सूधो है, कछू समुझत नाहीं। तासों हम याकों गाँइन की टहल ऊपर राख्यो है।

पाछें तो चौमासा के दिन आए। तब श्रीनाथ जी की गाँइन तरें की वह पटेल कीच सूंतत रहे। तासों वा काम के आगें वाको छुटकारो न होंइ। सो प्रसाद लेवे न जाँइ। तासों जो–श्रीनाथजी वाकों कछू देते सोई खाँई कै वह टहल कर्यो करे। परि पातरि लैन न जातो। सो श्रीनाथजी हू वासों कहते, जो–तू पातरि लाइ कै पाछें टहल करियो। तब वह पटेल श्रीनाथजी सों कहतो, जो–"बाबा ! तमे तो बालक छो, तेथी तमे मन्हे बालक बुद्धि आपो ते हूं केम मानूं ? हमणां सांझ थाशे। तो सरवे गाँइ भींज्या मांहे बेसशे।" या प्रकार श्रीनाथजी के हू बचन न मानतो। सो वाइ दिन रात्रि बोहोत गई। और मेह बरसत हतो। तासों रात्रि कों पातरि लेवे कों न जाँइ सक्यो। सो काम करत हार गयो हतो। और मध्याह्न कों जो–कछू श्रीनाथजी नें दियो हतो, सोइ खाँइ रात्रि कों सोइ रह्यो। पाछें जब श्रीनाथजी पोढें तब ही झारी, बीरा, बंटा लैके श्रीनाथजी वा समै खिरक में वा पटेल के पास

पधारन लागे। इतने ही श्रीनाथजी सों श्रीस्वामिनीजी ने कही, जो–ऐसे बरसते मेह में कहां, कों पधारत हो ? तब श्रीनाथजी ने श्रीस्वामिनीजी सों कही, जो–श्रीगुसांईजी कौ एक नयो भतीजा प्रगट भयो है। सो वह गाँइन की टहल आछी भांति करत हैं। तानें आज प्रसाद नाहीं लियो है। अपनी आस करत वह सोइ रह्यो है। तासों हम वाकों यह प्रसाद लिवाइ आवें। तब श्रीस्वामिनीजी ने श्रीनाथजी सों कह्यो, जो–हम हूं श्रीगुसांईजी के भतीजा कों देखन चलेंगे। पाछें श्रीनाथजी और श्रीस्वामिनीजी दोऊ वा समै खिरक में पधारे। सो वा पटेल कों श्रीनाथजी ने जगायो। तब वह पटेल उठि कै श्रीनाथजी कों श्रीस्वामिनीजी कों दंडवत् कर्‌यो। पाछें श्रीनाथजी वाकों दोऊ लड्‌वा खवाइ अपनी झारी सों जल पिवाइ, बीरा दै, झारी बंटा उहांई छोरि कै, दोऊ स्वरूप पर्वत ऊपर मंदिर में पधारे। तब वह पटेल बीरा खाँइ कै सोय रह्यो।

भावप्रकाश–सो प्रभु भक्तवत्सल हैं। तातें अपने भक्त कौ नेक हू दुःख सहन करि सकत नाहीं। याही तें ऐसें मेह में हू श्रीठाकुरजी या पटेल कों खवाइवे कों आए। और श्रीस्वामिनीजी इन कों राधा सहचरी कौ सबंध जानि दरसन दिये। क्यों, जो–नंदालय में श्रीस्वामिनीजी आप ही राधा सहचरी रूप सों बिराजति हैं। तातें निज परिकर पर श्रीस्वामिनीजी आप की सहज प्रीति हैं।

पाछें जब सवारे श्रीगुसांईजी स्नान करि संखनाद करवाइ मंदिर में श्रीनाथजी कों जगावन कों पधारे, तब श्रीगुसांईजी सिज्या पास देखे तो बंटा, झारी, दोइ बीरा नाहीं। पाछें श्रीगुसांईजी और झारी बंटा धरि कै वा समै काम चलायो। पाछें जब श्रीनाथजी जागे तब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी के दोऊ

कपोलन पर अपनो श्रीहस्त फेरि कै पूछे, जो–बाबा ! झारी, बंटा, बीरा दोइ, कौन कों दै आए हो ? तब श्रीनाथजी अरसात श्रीगुसांईजी सों कहे, जो–तुम्हारे नये भतीजा पास रात्रि कों खिरक में भूलि आए हैं। वह तो रात्रि कों मेह बरसत में आइ न सक्यो। सो पातरि लैन आयो नाहीं। तासों हम दोऊ जनें रात्रि कों खिरक में पधारे हते। सो वाकों प्रसाद लिवाइ कै आय सोय रहे। वा समै अवार भई। तासों झारी, बंटा वहांई छोरि आए। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी कों मंगल भोग धरि कै बाहिर पधारे तब एक ब्रजबासी पठायो। ता ब्रजबासी सों चलत समै यह कहे, जो–तू झारी बंटा छूइयो मति। वा पटेल पास खिरक में देखि कै चल्यो आइयो। सो ब्रजबासी खिरक में जाँइ कै देखें तो पटेल तो सोयो है। और श्रीनाथजी के बंटा झारी दोऊ वाके सिरहाने पास धरे हैं। सो ये समाचार वह ब्रजबासी आइ कै श्रीगुसांईजी सों कह्यो। तब श्रीगुसांईजी चुप करि रहे। पाछें और एक ब्रजबासी कों श्रीगुसांईजी पठाए। तासों यह आप कहे, जो–तू दूरि तें वा झारी बंटा की रखवारी या भांति करियो, जो–वह पटेल न जाने। पाछें वह झारी बंटा लैं घर कों आवे, तब तू वाके पाछें पाछें चल्यो आइयो। सो वह ब्रजबासी वा पटेल की दृष्टि बचाइ बैठ्यो। वह झारी बंटा दूरि तें देखत रह्यो। पाछें सवारे वह पटेल जाग्यो। तब देखे तो श्रीनाथजी झारी बंटा इहांइ भूलि गए हैं। तब वाने झारी बंटा तो एक गवाखे में उठाइ धरे। और आप गाँइन की टहल नित्य करतो ताही प्रकार अपनी टहल निधरकता सों कर्‌यो कर्‌यो। पाछें जब

मध्याह्न भए और टहल सों पहोंच्यो तब वह पटेल झारी बंटा लै श्रीगुसांईजी के दरसन कों आयो। पाछें 'काकाजी महाराज!' कहि दंडवत् करी। पाछें कह्यो, जो "आ पोतानुं झारी बंटा ल्यो। रात्रे श्रीनाथजी मने लाडुवा बे खवडावी गया। ने ए बेहू वस्तू ने मूकी चाल्या आव्या।" तब श्रीगुसांईजी वाकों देखि कै बोहोत प्रसन्न भए। पाछें श्रीगुसांईजी ये सब समाचार रामदासजी भीतरिया सों कहे। और श्रीगुसांईजी रामदास भीतरियान सों यह आज्ञा करे, जो–या पटेल की पातरि खिरक ही में आजु (तें) पहोंचती करवाइयो।

भावप्रकाश – काहेतें, जो इन के लिये प्रभुन कों इतनो श्रम करनो पर्‍यो।

सो ता दिन सों भीतरिया जब परोसना करि अपने घर प्रसाद लिये पाछें वा पटेल की पातरि खिरक ही में सब भीतरिया अपने अपने ओसरे पहोंचावन लागे। सो वाकों बोहोत अवार होंइ जाती, तो श्रीनाथजी वाकौ खेद सहि सकत नाहीं।

वार्ता प्रसंग – ३

बहौरी एक दिन श्रीनाथजी वाकों अपने भोजन करत समै ग्वालन पास बैठार्‍यो। सो आछी भांति सों वाने प्रसाद लियो। सो जा ठौर भीतरिया धरि गयो हतो ता ठौर वह पातरी धरी रही। तब दूसरे दिन पातरि धरन भीतरिया गयो। तब तहां देखे तो पातरि काल्हि ही की धरी है। तब वा भीतरिया ने वा पटेल सों पूछी, जो–पटेल! तू काल्हि प्रसाद क्यों न लियो? तब भीतरिया सों पटेल ने कही, जो– "हूं तो हवे श्रीनाथजी साथे जिमुं छुं। तेथी तमो मारी पातरि शूं करवाने मूकी जाओ छो?"

यह बचन वा पटेल के यह भीतरिया सुनि कै श्रीगुसांईजी सों जाँइ कह्यो। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी चुप होइ रहे। फेरि जब दूसरे दिन श्रीगुसांईजी के दरसन कों वह पटेल आयो, तब वा पटेल सों श्रीगुसांईजी ने कही, जो–पटेल ! तू दोइ दिन तें अपनी पातरि क्यों नाहीं लैत ? तब पटेल ने श्रीगुसांईजी सों कही, "जो–काकाजी ! हूं तो श्रीनाथजी नी ग्वालमंडली मां जिमुं छु। तो ए पातरि लई ने शुं करूं ? मन्हे तो त्यांनां जिमे भूख लागती नथी।" यह बचन वा पटेल कौ सुनि कै श्रीगुसांईजी कौ हृदौ भरि आयो। सो वा पटेल ऊपर श्रीनाथजी ऐसी कृपा करते।

भावप्रकाश – तासों जीव कों श्रीठाकुरजी की सेवा में ऐसो सुद्ध भाव राखनो। वह पटेल ऐसो भोरो हतो। सो वा ऊपर श्रीनाथजी ऐसी कृपा करते। और श्रीनाथजी के पाइवे में बड़ो उपाइ है, सो गाँइन की सेवा है। गाँइन की सेवा जो– कोऊ मन लगाइ कै करें तो श्रीनाथजी थोरेइ दिनन में वा ऊपर या भांति प्रसन्न होंइ। तातें श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के मार्ग में गाँइन की सेवा कौ यह प्रभाव है।

वार्ता प्रसंग – ४

पाछें केतेक दिन कों श्रीनाथजी के सिंघद्वार कौ पोरिया कहूं गाम कों गयो हतो। तब श्रीगुसांईजी सों अधिकारी ने कह्यो, जो–महाराज ! अब सिंघद्वार की पोरी पर बैठिवे की कौन कों आज्ञा करत हो ? तब श्रीगुसांईजी ने वा पटेल कों बुलाइवे कों एक ब्रजबासी पठायो। सो वा ब्रजबासी ने जाँइ कै वा पटेल सों कही, जो–पटेल ! तोकों श्रीगुसांईजी बुलावत हैं। तब वा पटेल ने वा ब्रजबासी सों कह्यो, जो– "हूं तो काम छोडी ने तारा श्रीगुसांईजी पासे नथी चालतो। हूं इहांथी तारा श्रीगुसांईजी पासे

जाऊं तो, ने, मारा काकाजी सांभले तो मारी पातरि काकाजी न मूके ।" यह बचन वा पटेल के सुनि कै वह ब्रजबासी श्रीगुसांईजी सों आइ कै सर्व समाचार कह्यो । तब श्रीगुसांईजी ने वा ब्रजबासी सों, कह्यो, जो–ऐसें कहे तें वह न आवेगो । तासों तू अब के जाँइ कै वासों यह कहियो, जो–तोकों काकाजी बुलावें हैं । तासों तू बेगि चलि । तब वह तेरे साथ ही चल्यो आवेगो । तब फेरि वह ब्रजबासी उहां जाँइ कै वा पटेल सों कह्यो, जो–पटेल ! तोकों काकाजी बुलावत हैं । तब तो वह पटेल वा ब्रजबासी सों पहिलें श्रीगुसांईजी पास दोरि आइ कै कह्यो, जो– "काकाजी महाराज ! मने शूं कहो छो ?" तब श्रीगुसांईजी वा पटेल सों कहे, जो–पटेल ! तूं श्रीनाथजी की सिंघपोरी की रखवारी पै बैठ्यौ करि । तब वा पटेल ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–काकाजी ! "मने तो त्यां खिरकमां गमतूं हतुं । हवे तम्हे इहां कहो छो तो हूं इहां बेसीश । परि पातरि तमे मूकशो के नहि मूको ?" तब श्रीगुसांईजी वाके बचन सुनि कै बोहोत प्रसन्न भए । पाछें आप श्रीमुख तें वा पटेल सों आज्ञा करे, जो–"पटेल ! हूं तने पातरि मूकीश । जे कांई तने वली जोइए ते तू श्रीनाथजीना प्रसादी भंडारमांथी लेजे ।" तब श्रीगुसांईजी ने प्रसादी भंडारी सों कह्यो, जो–यह पटेल जो–जा समै प्रसाद माँगे सोई दीजियो । यह तोकों मेरी आज्ञा है । और जो कबहू या पटेल ने मेरे आगें आइ कै यह कही, जो–महाराज ! हम कों यह बस्तू भंडारी ने नहीं दीनी तो हम तेरे ऊपर रिस करेंगे । तब वह भंडारी श्रीगुसांईजी के बचन सुनि कै अपने मन में वा पटेल कौ डर

बोहोत मानतो। और वह पटेल हू अपने खाइवेइ जितनो भंडारी पासे तें लेतो। और सिंघपोरी की रखवारी आछी भांति सों करतो। सो मध्याह्न कों श्रीगुसांईजी वाकों पातरि अपनी पातरि साथ पठावते। ऐसी वा ऊपर श्रीगुसांईजी कृपा करते।

पाछें एक दिन श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी कों पोढाइ अपनी बैठक में जांइ पोढे। पाछें रात्रि जब आधी गई तब श्रीनाथजी श्रीस्वामिनीजी के पाछें ब्रजभक्तन के जूथ सहित पधारे। तब या प्रकार नूपुर के सब्द अनवट विछियान के पाइलन के तथा कटि सूत्रन के सब्दन सों पधारे। सो यह आभरन के सब्द सुनि कै वह पटेल जागि पर्यो। पाछें हाथ में लाठी लै सिंघपोरी घेरि कै ठाढ़ौ रह्यो। तब श्रीनाथजी श्रीस्वामिनीजी की ओर देखि कै हँसे। पाछें श्रीनाथजी प्रथम वा पटेल पास पधारि कै कहे, जो–पटेल ! तू हम कों जान दै। तब वा पटेल ने श्रीनाथजी सों कह्यो, जो–"महाराज ! तम्हे कांई घहेला थया छो ? जो एटली रात्रि गये वनमां बाइडीयो सहित घरेनुं लूगडां पहरी ने पधारो छो ? ने एटला घरेनामांथी कोई पाडी आओ तो पछे काकाजी मने रीस करे। ने कहे, जो तू अहीं बैठयो हतो ने श्रीनाथजी ने रात्रिनी वेला तें केम जवा दीधा ? ने घरेनुं तो तमे पाडी आओ ने काकाजी म्हारे ऊपर रीस करीने सवारे मने पातरि न मूके तो हुं शूं करूं ?" यह बचन सुनि कै श्रीनाथजी अपने मनमें बोहोत प्रसन्न भए। और वाकों एक अपने श्रीकंठतें हार उतारि कै दिये, जो–यह हार तू श्रीगुसांईजी कों दीजियो। और कहियो, जो–यह हार श्रीनाथजी ने दियो है। तब श्रीगुसांईजी तेरे ऊपर न

खीजेगें। यह श्रीनाथजी ने वा पटेल कों हार की सेंधानी दीनी। और वाकौ समाधान बोहोत भांति सों कर्यो। तब वा पटेल ने दरवाजो खोल्यो। पाछें वह तो एक ओर ठाढौ होंइ रह्यो। तब प्रथम तो श्रीनाथजी पधारे। पाछें अनेक जूथ सों श्रीस्वामिनीजी दोऊ पधारे। ता पाछें कितने जूथ और हू ब्रजभक्तन के पधारे। सो सबन कौ दरसन वा पटेल ने पायो। तब तो यह अपने मनमें बोहोत ही विस्मित भयो। और यह बचन वा समै कह्यो। "जो–एटली बायडीओ घरमां जातां तो न जोई। ने एटली ने घरमां ठाम नथी। ते ए सहु क्यां रहेती हशे। ने हवे हूं एऊने पाछल जाऊं तो खरो। ए वनमां जइने शुं करे छे?" यह अपने मन में निश्चय करि कै वह पटेल उन ब्रजभक्तन पधारे पाछें सिंघपोरी के किवाड़ दै कै आप हू पाछें पाछें निकल्यो। सो वा समै श्रीनाथजी श्रीवृंदावन परासोली पधारे। ता ठौर जांइ श्रीयमुनाजी के तट बिराजे। पाछें यह तो एक कुंज के तरै दुबकि कै बैठि रह्यो। ता पाछें श्रीनाथजी नृत्यारंभ करें। सो रासमंडल के याने दरसन करे। पाछें ब्रजभक्त नृत्य करत श्रमित भए। तब तो श्रीनाथजी श्रीयमुनाजी के निकट जांइ बिराजे। और तब वह पटेल वा कुंज तें निकरि कै जा ठौर रासमंडल भयो हतो ता ठौर तें यह आभरन बीनन लाग्यो। सो कितनेक आभरन याने बीने। पाछें एक रास श्रीनाथजी ने श्रीयमुनाजी के किनारे कर्यो। पाछें वहां श्रमित भए। तब फेरि कुंज में ब्रजभक्तन सहित पधारे। तब यह श्रीयमुनाजी के घाट उपर जाँइ आभरन बीने। सो तिन रास में आभरन सों याकी झोरी भरि गई। पाछें रात्रि घरी चारि हती।

तब श्रीनाथजी तो अपने मंदिर में पधारे। और यह श्रीगुसांईजी पास बैठक में गयो। ता समै श्रीगुसांईजी तेल लगावत हते। सो यह जाँइ काकाजी महाराज कहि वह आभरन की गांठि श्रीगुसांईजी के आगें धरी। पाछें प्रथम सों जहां पर्यंत श्रीनाथजी मंदिर में पधारे सो सर्व समाचार कहि, यह पटेल ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, "जूओ काकाजी ! एटलां घरेनां त्यां पाडी आव्या हता। ते हूं न जात तो कौन लै आवतो ? ने एटली वस्तू ज्यारे मंदिरमां घटे त्यारे तमे मने पूछता। ने हूं तो जानतो नहीं ते हूं तमने कहेत। त्यारे तमे मारा ऊपर रीस करी ने पातरि न मूकत। तो हूं शूं करतो ?" तब श्रीगुसांईजी वाके बचन सुनि कै बोहोत प्रसन्न भए। पाछें वह पटेल काकाजी महाराज कहि सिंघपोरी पर आइ बैठ्यो। वा ऊपर श्रीनाथजी या प्रकार कृपा करि रास के दरसन करवाए।

भावप्रकाश – काहेतें, ये कुमारिका के जूथ की सखी हैं। तातें दरसन दिये।

पाछें श्रीगुसांईजी स्नान करि पर्वत ऊपर श्रीनाथजी के मंदिर में पधारि संखनाद करवाइ कै श्रीनाथजी कों जगाए। तब श्रीगुसांईजी सों श्रीनाथजी हँसि कै कहे, जो–आछौ पोरिया राख्यो है। तब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी सों कहे, जो–आप हू वा ऊपर भली कृपा करो हो। तब दोऊ जन परस्पर मुस्कराई कै चुप करि रहे। पाछें मंगला–भोग धरि कै श्रीगुसांईजी सिंघद्वार पर पधारे। तब वा पटेल सों श्रीगुसांईजी आज्ञा करे, जो–आज पाछे तू श्रीनाथजी कों कबहू मति बरजियो। और तू कबहू साथ मति जैयो। जहां श्रीनाथजी पधारे तहां पधारन दीजियो। हम तेरे

ऊपर रिस न करेंगे। और आज तें सिंघपोरि कौ एक किवाड़ खुलो रखियो।

भावप्रकाश – काहेतें, जो–श्रीनाथजी कों पधारन में श्रम न परै। सो ता दिन तैं यह रीति चली, जो–सिंघपोरी के किवाड़ दोऊ कबहू बंद न रहे।

तब वह पटेल श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि भलो कहि कै बैठि रह्यो। पाछें कबहू श्रीनाथजी कहूं पधारते तो वह पटेल ता दिन पाछें बरजतो नाहीं। परि श्रीनाथजी वा ऊपर ऐसी कृपा करते, जो–पधारत समै वाकों नित्य दरसन देत पधारते। श्रीनाथजी वा पटेल पर या प्रकार कृपा करते। सो यह पटेल श्रीगुसांईजी की कृपा तें ऐसो भगवदीय भयो। तातें याकी वार्ता कहां ताईं कहिए। वार्ता ॥ २० ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक पटेल अकिंचन, गुजरात में रहतो, जा ने श्रीगुसांईजी कों माला समर्पी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश – यह पटेल राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'मालिनी' है। सो मालिनी प्रेममंजरी तें प्रगटी हैं। तातें इन के भाव–रूप हैं।

ये गुजरात में एक कुनबी पटेल के घर जन्म्यो। सो जन्मत ही इन कौ पिता मर्‍यो। पाछें ये बरस पंद्रह कौ भयो, तब इन की माता हू मरी। तब घर में द्रव्य तो कछू हतो नाहीं। तातें ये मजूरी करि अपनो निर्वाह करन लाग्यो।

सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी कों पधारे। सो मार्ग में या पटेल कौ गाम आयो। तहां एक तलाव पर श्रीगुसांईजी आप डेरा किये। ता समै यह पटेल तहां माटी खोदत हुतो। सो इन श्रीगुसांईजी के दरसन पाए। सो दरसन करत ही याके मन में यह आई, जो–ये कोई महापुरुष हैं। तातें इनकी सरनि जाइए तो आछौ। पाछें यह पटेल श्रीगुसांईजी सों बिनती कियो, जो–महाराज ! कृपा करि मोकों अपनो सेवक कीजिये। में आप की सरनि आयो हूं। सो या प्रकार दीनता देखि श्रीगुसांईजी आप वा पटेल कों कृपा करि सेवक किये। नाम–निवेदन कराए। तब और हू बोहोत से दैवी जीव श्रीगुसांईजी की सरनि आए। सो सब कों श्रीगुसांईजी

आप सेवक किये, ता पाछें दूसरे दिन श्रीगुसांईजी आप द्वारकाजी पधारे। तहां कछूक दिन बिराजि कै पाछें अड़ेल कों विजय किये।

वार्ता प्रसंग – १

सो एक समै एक साथ वैष्णवन कौ गुजरात सों श्रीनाथजी के श्रीगुसांईजी के दरसन कों चल्यो। ता साथ में एक पटेल श्रीगुसांईजी कौ सेवक हतो। (सो हू चल्यो) तानें प्रथम श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी पधारे हते तब नाम निवेदन पायो हतो। और तबही श्रीगुसांईजी के वाने दरसन पाए हते। ता बात कों बोहोत दिन भए हते। सो वह (पटेल के) गाम तें साथ श्रीगोकुल कों चल्यो। तब और मनुष्य तो अपने अपने खरच कौ सामान करि कै चले। और वा पटेल के पास कछू द्रव्य न हतो। परि याके मन में श्रीगुसांईजी के दरसन की अभिलाषा बोहोत हती। सो अपने मन में यह निर्द्धार करि कै घर सों निकल्यो। जो जहांलों कोऊ वैष्णव प्रसाद लिवावेगो तहांलों वाके इहां प्रसाद लेउंगो। नाँतरु साथ में चुकटी माँगि कै अपनो निर्वाह करत चल्यो जाउंगो। यह निर्द्धार करि घर सों चल्यो। सो याही प्रकार चुन माँगत चल्यो आवे। सो केतेक दिन कों श्रीनाथजीद्वार आय पहोंच्यो। सो सगरे वैष्णव श्रीनाथजी के दरसन करि कै अति आनंद पाए। पाछें श्रीनाथजी की सयन–आर्ति भई। तब वह सगरो साथ 'रुद्र कुंड' ऊपर आय डेरा कियो पाछें रात्रि कों रसोइ करि प्रसाद लै सगरे आपुस में अपनी अपनी गांठि कौ द्रव्य भेंट कों जाकों जैसी सक्ति हती सो ता प्रमान काढ़त भए। और अपनी फेंट में बांधत गए। और आपुस में कहे, जो–भाई ! काल्हि श्रीगुसांईजी दरसन देइंगे।

तासों वा समै कौन गांठि खोलन बैठेगो। तातें अपनी अपनी भेंट ऊपर राखो।

भावप्रकाश – यामें यह अभिप्राय जतायो, जो–प्रभु सन्मुख, गुरु सन्मुख कबहू रीते हाथ न जानो।

तब यह पटेल अपने मन में सोच करन लाग्यो, जो–ये तो अपनी अपनी भेंट काढ़ि लिये हैं। और मेरे पास तो कछू भेंट कौ द्रव्य नाहीं। सो हों कहा श्रीगुसांईजी की भेंट करूंगो ? और काहू सों करज काढि भेंट करूंगो तो मेरे पास कछू देवे कों तो है नाहीं। जो–वाकों पाछें देउंगो। और वे तो आप प्रभु हैं। तासों मेरी गति सर्व जानत ही हैं। सो यह सोच करत याकों तो चार प्रहर रात्रि निद्रा नाहीं आई। पाछें वे तो सगरे वैष्णव बड़ेई सवारे उठि चले। तब यहू सोच करत उठि चल्यो। सो यह तो सोच करत चल्यो जात हतो। तब मार्ग में एक बाग आयो। ता बाग में जूही बोहोत फूली हती। सो एक याके पास अंगोछा कौ टूक हतो। सो यानें वा माली कों दै कै और बिनती करी, जो–मोकों तू एक माला लाइक जूही के फूल तोरि देहि, तो हों अपने गुरु की भेंट करूंगो। तब वा माली ने याकौ अंगुछा तो फेरि दियो। और याकी दीनता जानि कै वा माली ने कह्यो, जो–तू अपने हाथ सों जैसी माला भावे तेसी करि लै। तब तो वह बोहोत प्रसन्न होंइ कै, माली की आज्ञा माँगि कै एक माला जूही की करि कै लै निकर्‌यो। सो वा माला कों लिये अति उत्कंठा सों नाना भांति कै मनोरथ करत चल्यो। जो–और सगरे वैष्णव तो श्रीगुसांईजी के आगें नाना प्रकार की भेंट करेंगे। और हों यह माला श्रीगुसांईजी

के श्रीकंठ में धराऊंगो। तब मेरी माला देखि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न होइंगे। परि अब हों बेगि बेगि या संग के साथ जाँइ पहोंचों तो आछी बात है। पाछें यह वैष्णव श्रीगुसांईजी के चरनकमल कौ ध्यान करि कै चल्यो। सो याकी आर्ति श्रीगुसांईजी सहि न सके। सो प्रभु वा दिन बड़े सवारें श्रीनाथजी के सिंगार कों पधारे। तब आप तो घोड़ा ऊपर असवार भए। और वैष्णव दोइ चारि प्रभुन के साथ हते। तिन वैष्णवन सों श्रीगुसांईजी प्रथम ही कहे हते, जो–एक संग गुजरात कौ आवत है। तामें एक पटेल अकिंचन है। सो वह एक माला सँवारि कै बोहोत सुंदर मेरी भेंट कों लावत है। और वह सब साथ के पाछें हैं। सो वाकी माला कौ प्रथम अंगीकार होंइ रहे ता पाछें और सब वैष्णव भेंट करन पावे। ताके पहिले कोऊ भेंट न करे। सो यह कहत आप बेगि बेगि घोड़ा चलाए।

और इहां ज्यों ज्यों माला कों घाम लागे त्यों त्यों वा वैष्णव कों सोच होंइ है। सो श्रीगुसांईजी सों वाकौ ताप सह्यो जात नाहीं। तासों श्रीगुसांईजी ने बेगि बेगि घोड़ा चलायो। सो वह सब साथ मार्ग ही में मिल्यो। तब वे सब वैष्णव प्रभुन कों दंडवत् करे। पाछें बिनती करे, जो–महाराज! रंच घोड़ा राखिए तो हम सगरे भेंट करें। तब उन वैष्णवन सों प्रभुन के साथ के वैष्णवन कह्यो, जो–घोड़ा तो एक पटेल माला करि कै तुम्हारे साथ में सब के पाछें आवत है, वह जहां मिलेगो तहां घोड़ा थंभेगे। इतनो कहत ही पधारे। सो अति उतावलि सों वा पटेल के पास प्रभुन कौ घोड़ा जाँइ पहोंच्यो। तब वा पटेल ने

श्रीगुसांईजी के दरसन पाए। सो प्रभु जब निकट पधारे तब वा पटेल ने श्रीगुसांईजी कों माला पहराइ दंडवत् कियो। सो सरीर–विस्मरन होंइ गयो।

भावप्रकाश – क्यों ? जो–श्रीगुसांईजी के स्वरूपानंद में मगन होंइ विह्वल व्है रह्यो। सो देह की सुधि न रही।

पाछें प्रभु घोड़ा तें उतरि कै वा पटेल के माथे श्रीहस्त धरि, वाके कान मै अष्टाक्षर उपदेस किये। तब वह पटेल जाग्यो। तब श्रीगुसांईजी वा पटेल सों कहे, जो–पटेल ! हों तेरी माला के लिये श्रीगोकुल तें साम्हें आयो हूं। और तू तो मेरे चरनारविंद में लीन भयो चाहे। सो ये सगरे तेरे साथ के हम कों कहा कहेंगे ? अब ही तो तोसों आगें सेवा करावनी है। यह बचन कहत जाँइ, और बीच बीच में बार बार माला की सराहना करत जांइ। तब वा पटेल ने अपने सर्व समाचार श्रीगुसांईजी आगें दीनता सों बिनती करे। जो–महाराज ! आप प्रभु हो। दीनवत्सल हो। दयानिधान हो। पतितपावन हो। तासों आपु की उपमा कहिवे कों कौन जीव की सामर्थ है ? तातें अपने दास की सेवा आप अंगीकार करत हो।

इतने ही वह सब साथ पाछें तें दोरि आइ श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि सगरे बिनती करी। पाछें अपनी अपनी भेंट धरी। तब वे सगरे अपने मन में चकित होइ रहे। पाछें श्रीगुसांईजी फेरि घोड़ा उपर असवार होइ कै श्रीनाथजीद्वार पधारि, स्नान करि, पर्वत ऊपर मंदिर में जाँइ, श्रीनाथजी की राजभोग–आर्ति करि, बैठक में आइ बिराजे। तब हू वा मालावारे पटेल कों प्रभु

निकट बुलाए। तब वे सगरे वैष्णव विस्मित होंइ रहे। तासों श्रीगुसांईजी करुनासागर हैं। पाछें वा पटेल कों श्रीगुसांईजी कृपा करि कै श्रीनाथजी के फूल घर की सेवा सोंपी। वह पटेल श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ २१ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक विरक्त, ब्रज में पर्यटन करतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश – ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'रसिका' है। ये भगवद्रस में सदा मगन रहति हैं। सो रसिका 'कलकंठी' तें प्रगटी हैं, तातें उन के भाव–रूप हैं।

यह पूरव में एक क्षत्री के घर जन्म्यो। सो ये बालपने तें ही वैराग्य दसामें रहे। खाइवे पीवे की कछू सुधि नाहीं। माता–पिता जो खाइवे कों दै, सो खाँइ। पहिरवे कों दै सो पहरि लैं। और जहां कहूँ कथा–वार्ता होंइ तहां जाँइ। सो माता–पिता बेटा की यह दसा देखि बड़ी चिंता करन लागे। जो–याकौ ब्याह कैसें होइगो ? याके तो सरीर–सुख कौ हू बिचार नाहीं है। यों करत यह बरस बीस कौ भयो। तब एक संग मथुराजी कों चल्यो। तब इन के मन में आइ, जो–हों हूँ या संग के साथ मथुरा–बृंदाबन दरसन कों जाउं तो आछौ। सो वाही समै ये संग के साथ चल्यो। सो माता–पिता जान्यो नाहीं। पाछें माता–पिता ढूंढ्यो बोहोत, परि पायो नाहीं। तब हार मानि बैठि रहे। और ये तो मथुराजी संग के साथ आयो। तहां विश्रामघाट दरसन कों आयो। ता समै श्रीगुसांईजी तहां श्रीसुबोधिनीजी की कथा कहत हते। सो यह कथा सुनिवे कों बैठ्यो। सो श्रीगुसांईजी के श्रीमुख की कथा सुनि कै बड़ो प्रसन्न भयो। पाछें अपने मन में कहन लाग्यो, जो–मैंनें कथा तो बोहोत सुनी, परि आज कौ सो सुख पायो नाहीं। तातें इन के सेवक व्है नित्य कथा सुनिये तो आछौ। पाछें इन श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! मोकों सरनि लीजिये। मेरो मन आपु के पास रहि कै नित्य कथा सुनिवे कौ है। तब श्रीगुसांईजी इन कों दैवी जीव जानि सरनि लिये। नाम निवेदन कराए। पाछें कछूक दिन अपने पास राखि कथा सुनाई। सो कथा के मिष करि श्रीगुसांईजी वाकों ब्रज के स्वरूप कौ अनुभव करायो। सो याके ब्रज कौ स्वरूप हृदयारूढ व्है रह्यो। सो ये ब्रज के भाव में सदा मगन रहतो। पाछें श्रीगुसांईजी की आज्ञा माँगि ये विरक्त दसा सों ब्रज में बिचरन लाग्यो।

वार्ता प्रसंग – १

सो वह विरक्त एक ठौर ब्रज में बैठतो नाहीं। फिर्योई करतो। सो एक दिन चुकटी माँगि कै कोकिला बन में बाटी दारि करत हतो। सो इतने ही उनकों सुधि आई, जो–आजु तो डोल–उत्सव कौ दिन है। तब तो अपने मनमें बोहोत ही खेद करन लाग्यो। जो–देखो! प्रथम सुधि आवती तो और हू एक दो गाम तें चुकटी माँगि लावतो। तासों चोखा, घी, आनतो। तो आछी भांति रसोइ करि भोग धरतो। परि मोकों अब पाछें सुधि आई है। यों अपने मन में बोहोत ही सोच कर्यो। पाछें कह्यो, जो–हों कहा करूं ? जो–प्रभुनकी ईच्छा, भई सो सही। पाछें रसोई करि कै थोरी सी बाटी रहन दीनी। और थोरीसी बाटी (सों) श्रीठाकुरजी कों राजभोग धर्यो। पाछें एक कुंज में डोल कौ भाव कर्यो। वासों लता इत उत लपटाइ, बांधि, श्रीठाकुरजी कों भोग सराइ, पाछें आप वा कुंज में ठाढ़ो रहि कै, श्रीठाकुरजी कों, दोऊ हाथन की हथेली ताकौ पटुली कौ भाव करे, तामें श्रीठाकुरजी कों डोल झूलाए। सो अति आनंद सों डोल गावन लाग्यो। पाछें भाव ही तें श्रीठाकुरजी कों खिलाए। और बाटी और दारि तीनों समै भोग समर्प्यो। पाछें श्रीठाकुरजी कों अनोसर करवाए।

भावप्रकाश – या वार्ता में यह जतायो, जो–वैष्णव कों उत्सव कौ दिन भूलनो नाहीं। वा दिन यथासक्ति भावपूर्वक ठाकुर कों सामग्री अवस्य करनी। काहेतें ? जो–प्रभु बालक हैं। सो उत्सवन कौ पैंडो देखत हैं। तातें वैष्णवन कों उत्सवन कौ लोप सर्वथा न करनो।

सो इन प्रथम श्रीगुसांईजी सों बिनती करी हती, जो–महाराज ! मोकों कछू सेवा पधराओ। तब श्रीगुसांईजी इन सों कहे,

जो–तुम एक ठौर तो कहूं रहत नाहीं। तो श्रीठाकुरजी की सेवा कौन भांति करोगे ? तब इन श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! हों तो या प्रकार व्रज में फिरूंगो। परि आप जो सेवा पधराओगे तिन श्रीठाकुरजी सों पूछि लीजो । तब श्रीगुसांईजी इनके बचन सुनि कै बोहोत प्रसन्न होंइ कै याके माथे श्रीनवनीतप्रियजी की सेवा पधराए । तिन श्रीनवनीतप्रियजी कों यह विरक्त अपनी सक्ति प्रमान सेवा या प्रकार करतो। सो सब सेवा भाव युक्त करे। तासों श्रीगुसांईजी वासों बोहोत प्रसन्न भए रहें। पाछें यह डोल कौ प्रकार सर्व श्रीनवनीतप्रियजी ने वाही दिन श्रीगुसांईजी सों कह्यो। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए। पाछें केतेक दिन कों वह विरक्त श्रीगोकुल आय श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै बैठ्यो। तब श्रीगुसांईजी वासों पूछे, जो–वैष्णव ! श्रीठाकुरजी कहां बिराजत हैं ? तब वा वैष्णवने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! आप मेरे स्थल के समाचार तो सर्व जानत ही हो, तासों श्रीठाकुरजी मेरे साथ ही बिराजत हैं। तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णव सों कहे, जो–अब कौ तुम डोलोत्सव कौन ठौर कौन प्रकार कर्यो ? तब वा वैष्णव ने अपने मन में जानी, जो–श्रीनवनीतप्रियजी ने प्रभुन कों जनाई तो सही। पाछें याने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! आप तो सर्व जानत ही हो। तातें आप आगें कहा जनावनो ? जो–कोई न जानतो होंइ ताकों जनाइये। तब श्रीगुसांईजी वा विरक्त सों कहे, जो–तेरे प्रकार तो जानें ? तब वाने डोलोत्सव कौ सर्व प्रकार कह्यो। तब

याके बचन सुनि कै श्रीगुसांईजी कहे, जो–तू याहू प्रकार प्रभुन कों डोल तो झूलायो। हों तो ऊपर बोहोत प्रसन्न भयो हूँ। तब वह वैष्णव गद्‌गद् कंठ होंई कै श्रीगुसांईजी सों बिनती कर्‌यो, जो–महाराज ! मेरी तो यह अवस्था है। परि श्रीठाकुरजी बड़े हैं। तातें आप की कानि सों मानि लेत हैं। तब श्रीगुसांईजी वा ऊपर बोहोत प्रसन्न भए। वह विरक्त श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता॥ २२॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक और विरक्त, गिरिराज की परिक्रमा करतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहते हैं।

भावप्रकाश–ये तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'सुदेवी' है। सो सुदेवी कलकंठी तें प्रगटी है, तातें इन के भाव–रूप हैं।

ये पूरव में एक ब्राह्मन के जन्म्यो। सो बरस बीस–पच्चीस कौ भयो तब वा गाम तें एक संग मथुराजी यात्रा कों चल्यो। सो वा संग में येहू मथुराजी आयो। सो विश्रांत पर स्नान कियो। पाछें काहू ने कह्यो, जो–यहां तें कोस सात पर श्रीगोवर्द्धन पर्वत है। तहां श्रीगोवर्द्धननाथजी आप बिराजत हैं। सो साक्षात् कृष्ण कौ स्वरूप हैं। परम सुंदर मनोहर हैं। सो उनके दरसन किये तें कृतार्थता होत हैं। तब तो यह ब्राह्मन मथुराजी तें गोवर्द्धन आयो। तहां गोपालपुर में आइ श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। सो दरसन करत ही यह ब्राह्मन मुग्ध व्है गयो। सो कछू सरीर की हू सुधि न रही। पाछें टेरा आयो। तब यह सावधान व्है बिचार करन लाग्यो। जो–भाई ! ऐसें दरसन छोरि कै अब तो कहूं नहीं जानो। चुकटी माँगि निर्वाह करूंगो परि श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन न छोरूंगो। या प्रकार यह ब्राह्मन अपने मन में निर्धार कियो। सो ऐसें करत कछूक दिन बीते। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी या ब्राह्मन कों स्वप्न में दरसन दै आज्ञा किये, जो–तू श्रीगुसांईजी कौ सेवक हूजियो। तब तू कृतार्थ होइगो। तब वह ब्राह्मन श्रीगुसांईजी कौ सेवक भयो। नाम–निवेदन पायो।

वार्ता प्रसंग–१

सो वा विरक्त नें यह नेम लियो, जो–एक परिक्रमा नित्य श्रीगिरिराज की करनी। सो वह नित्य बड़े सवारें उठि कै

श्रीगोवर्द्धन की परिक्रमा करन जाँइ। सो श्रीनाथजी के दरसन आइ करें। पाछें श्रीगुसांईजी तथा कोई और बालक श्रीनाथजीद्वार में होंइ तिनके दरसन कर। पाछें यह गामन में चुकटी करन जांइ। सो कोरी चुकटी करि ल्यावे। ताकी रोटि करि श्रीनाथजी की ध्वजा कों समर्पि कै प्रसाद लेइ। या भाँति अपने दिन निर्वाह करें। सो एक दिन याके मन में यह आई, जो–भाई ! मोकों इतने दिन श्रीगुसांईजी के दरसन करत भए। परि मोसों श्रीगुसांईजी कबहू बोलत नाहीं। सो कारन कौन भांति जान्यों जांइ ? यह याके मन में संदेह रहे। सो चिंता कर्‌यो करे। पाछें केतेक दिन कों अन्नकूट उत्सव आयो। तब याके मन में आई, जो–आज तो परिक्रमा कों भोग आवेगो तब जाउंगो। तातें अब तो कछू टहल करूं। सो याने श्रीनवनीतप्रियजी के मंदिर तें श्रीगिरिराज की पूजा होत है, तहांलों प्रथम सर्व मार्ग आछी भांति झार्‌यो। पाछें पैंड़े में कहूँ एक कांकर रहन न दीनो। या प्रकार कांकर बीने। सो याके मन में यह भाव आयो, जो–या मार्ग में आज श्रीठाकुरजी और श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धन पूजा कों पधारेंगे। तासों मार्ग आछौ करूंगो तो मेरी सेवा होइगी। और श्रीठाकुरजी के तथा श्रीगुसांईजी के चरन अति कोमल हैं। सो कांकर कौ स्पर्स न होइगो। पाछें श्री श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी कों लै गोवर्द्धन–पूजा कों ता मार्ग व्है पधारे। सो मार्ग सुंदर देखि कै श्रीठाकुरजी और श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए। पाछें वा समै श्रीगुसांईजी चुप करि रहे। ता पाछें

जब श्रीगोवर्द्धन–पूजा करि कै श्रीनाथजी कों बड़ो भोग धरि कै आप अपनी बैठक में पधारे, तब काहू वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों याकी सेवा कौ प्रकार कह्यो। तब श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए। पाछें वह वैष्णव श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करन आयो। सो वह तो नित्य दंडवत् करतो ताही प्रकार दंडवत् करि कै बैठ्यो। तब श्रीगुसांईजी यासों हँसि कै कहे, जो–वैष्णव आयो ? तब तो यह फेरि श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि बिनती कर्‌यो, जो–महाराज ! इतने दिन में आप आज कृपा करि मोसों बचन उच्चार करे हो। और आज तांई कबहू बोलत न हते। सो कारन मोसों कृपा करि कै कहिए ? तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णव सों कहे। जो–वैष्णव ! इतने दिन तें तो तुम अपनी देह कौ साधन करत हते। और आज तो तुम साधन छोरि कै सेवा करे। तासों आज हम तुम तें बोले।

भावप्रकाश–काहेतें, जो–प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभु एक सेवा, यही साधन या जीव कों कहे हैं। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के ये बचन हैं–

'सेवायां वा कथायां वा'

याकौ तात्पर्य यह है, जो–जीव कों अन्य साधन करि वृथा काल न खोवनो। प्रथम तो सेवा करे। पाछें कथा कहे, वा सुने। यह प्रकार सेवा कौ उपदेस श्रीआचार्यजी महाप्रभु करे। तातें या मार्ग में सेवा तूल्य और साधन नाहीं।

सो यह बचन कहि आपु तो प्रभु मंदिर में पधारे। और यह वैष्णव तो ता दिन तें सेवा कों फल जानि साधन छोरि कै सेवा करन लाग्यो। तब तें श्रीगुसांईजी वा ऊपर बोहोत प्रसन्न रहते। यह विरक्त प्रभुन कों प्रसन्न जानि कै आप हू बोहोत प्रसन्न रहतो।

भावप्रकाश–तातें श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के मार्ग में सेवा सार है। यह श्रीगुसांईजी वा

विरक्त द्वारा सब जीवन कों उपदेस करे।

पाछें वह विरक्त श्रीगुसांईजी की कृपा तें भलो भगवदीय भयो। तातें वाकी वार्ता कहां तांई कहिए। ॥ वार्ता २३ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक कृष्णदास कायस्थ, पूरव के, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं।

भावप्रकाश–ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'नीलवर्णी' है। सो नीलवर्णी, कलकंठी तें प्रगटी हैं, तातें इन के भावरूप हैं।

सो ये पटना तें उरे में कोस दस पर एक गाम है, तहां एक कायस्थ के घर जन्में। वह कायस्थ एक म्लेच्छ पास चाकर हुतो। सो परगनो कमावतो। तातें वा म्लेच्छ की याके ऊपर बोहोत निघा रहती। पाछें कृष्णदास बरस तीस के भए। तब वह कायस्थ मर्‌यो। तब वा म्लेच्छ ने कृष्णदास कों चाकर राख्यो। ता पाछें कछूक दिन में कृष्णदास कों वा म्लेच्छ ने कछू कार्यार्थ दिल्ली भेजे। तहां कृष्णदास कों एक मर्यादामार्गी वैष्णव कौ संग भयो। सो उन वैष्णव ने कृष्णदास कों कह्यो, जो–तुमने मथुरा–बृंदाबन के दरसन किये ? तब कृष्णदास कह्यो, जो–हों तो या मुलकमें प्रथम बार आयो हूं। तब वा वैष्णव ने कह्यो, जो–मथुराजीमें जाँइ श्रीयमुनाजी के स्नान अवस्य करने चहिए। वा बिना मनुष्य जन्म सगरो वृथा है। तातें तुम यहां लों आए हो तो मथुरा–बृंदाबन के दरसन करि श्रीयमुनाजी में स्नान करि अपनो जन्म कृतार्थ करो। तब कृष्णदास उहां तें चले। सो मथुराजी आए। वहां श्रीयमुनाजी में स्नान किये। पाछें श्रीगोकुल–बृंदाबन व्है गोवर्द्धन आए। तहां मानसी–गंगा में स्नान करि कृष्णदास तहां तें गोपालपुर आए। सो पर्वत उपर जांइ श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। ता समै श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजी की राजभोग–आर्ति करत है। सो कृष्णदास कों श्रीगुसांईजी के दरसन भए। सो दरसन करत ही कृष्णदास के मन में आई, जो–इन के सेवक हूजिये तो आछो। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी कों अनोसर कराय पर्वत तें नीचे अपनी बैठक में पधारे। तब कृष्णदासने बिनती करी, जो–महाराज ! मोकों सेवक कीजिये। सो कृष्णदास की दीनता देखि, श्रीगुसांईजी आप कृष्णदास कों नाम सुनाए। पाछें आप कृष्णदास सों आज्ञा किये, जो–काल्हि तुम कों श्रीनाथजी के सन्मुख निवेदन करावेंगे। सो आज व्रत करि काल्हि सवेरे न्हाई कै बेगि अइयो। पाछें दूसरे दिन कृष्णदास कों श्रीगुसांईजी आप श्रीनाथजी के सन्निधान निवेदन कराए। तब कृष्णदास बिनती कीनी, जो–महाराज ! अब कहा कर्तव्य है ? तब श्रीगुसांईजी कृष्णदास कों आज्ञा किये, जो–तोकों वैष्णवन की सेवा दीनी। तातें तू

वैष्णवन कों प्रसन्न राखियो। ता पाछें कृष्णदास श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि, आज्ञा माँगि अपने देस आए।

वार्ता प्रसंग–१

सो वे कृष्णदास एक म्लेच्छ पास चाकर रहते । तिन कृष्णदास पास जो कोऊ वैष्णव आवतो ताकों चाकर सिरकार में रखाइ कै काम सोंपते । और जो कोऊ वैष्णव चाकरी न करतो ताकों अपनी गांठि तें द्रव्य दै कै ब्यौपार करावते। (और) जो कोऊ और देस जाइवे कों द्रव्य मांगतो तो ताहू कों द्रव्य देते। परि काहू कों कृष्णदास नाहीं न करते। उन वैष्णवन पास तें खत तो मँडाइ लेते। परि द्रव्य दै कै काहू पास मांगते नाहीं। ऐसें करत केतेक दिन भए। तब वा म्लेच्छ ने कृष्णदास को बंदीखाने दियो। सो तीसरे दिन वा म्लेच्छ ने फेरि कृष्णदास कों अपने हजूर (में) बुलाइ कै बीस हजार रुपैया कृष्णदास पास सों दंड मांग्यो। तब कृष्णदास वासों कहे, जो–मेरे पास तो द्रव्य नाहीं, सो तुम कों देहुं। तब वाने फेरि बंदीखाने में कृष्णदास कों दिवाइ दियो।

सो केतेक दिन कों कृष्णदास कौ प्रोहित बंदीखाने में कृष्णदास पास आय कृष्णदास सों कह्यो, जो–तुम क्यों बैठि रहे हो ? तब कृष्णदास अपने प्रोहित सों कहे, जो–बीस हजार रुपैया मो पास तें दंड माँगत हैं। तब वह प्रोहित कृष्णदास सों कह्यो, जो–तुम देत क्यों नाहीं ? तब कृष्णदास ने प्रोहित सों कह्यो, जो–कहां तें देहुं ? मेरे पास तो द्रव्य कोई नाहीं। तब प्रोहितने कृष्णदास सों कही, जो–तुम पास वैष्णवन के खत तो

रुपैया हजार पचीस वा तीस कें हैं, तिनमें सों देत क्यों नाहीं ? तब कृष्णदास ने प्रोहित सों पूछ्यो, जो–वे खत कहां हैं ? तब प्रोहितने कृष्णदास सों कही, जो–वे खत तो सब मेरे पास हैं। तब कृष्णदास ने प्रोहित सौं कही, जो–वे खत ल्याओ, तुमने भली सुधि दिवाई। फेरि कै कृष्णदास ने कही, जो–मोकों तो सीत बोहोत लगत है। तासों तुम अंगीठी करि ल्याओ। सो प्रोहित एक अंगीठी करि ल्यायो। पाछें वासों खत मँगाय कै कृष्णदास कहे, जो–तुम स्नान करि कै मेरे पास आवो। तहां तांई हों इन खतन कों बांचि राखत हूं। पाछें तुमही दरबार में दै आईयो। सो वह प्रोहित तो स्नान करन कों गयो। पाछें कृष्णदास उन खतन कों बांचि बांचि कै अंगीठी में डारि सगरे खत जराई कै चुप होइ कै बैठि रहे। पाछें कृष्णदास पास प्रोहित स्नान करि कै आयो। तब प्रोहित ने कृष्णदास सों कह्यो, जो–वे खत ल्याओ। हों दरबार में जाइ कै दै आऊं। तब कृष्णदास ने वा प्रोहित सों कह्यो, जो–अरे अधर्मी ! तू तो मेरो धर्म पहिलें ही खोयो हो, परि प्रभु मेरो धर्म क्यों खोवें ? जो–या समै तैनें यह खत राखि छोरे ? सो तोकों वे खत दै कै वैष्णवन कों सताऊं ? और हों सुख करुं ? मेरे एक देह के काजे अनेक वैष्णवन कों, सतावतो, तो उन वैष्णवन कै सराप तें तो मेरो धर्म नष्ट हो जातो। अब तो मेरे या देह के भोग पूरे होंइगे तब ही छूटोंगो, नाहीं तो यह देह छूटेगी; तोऊ धर्म तो मेरो न जाइगो ? यों कहि कै वा प्रोहित कों तो कृष्णदास ने बिदा कियो। और आपु तो कृष्णदास उहां बैठि रह्यो। पाछें दूसरे दिन कृष्णदास कों वा

म्लेच्छ ने बुलायो। सो कृष्णदास वा आगें जाँइ ठाढ़े रहे। पाछें वाने कृष्णदास सों कह्यो, जो–बीस हजार रुपैया दै। तब कृष्णदास ने वा म्लेच्छ सों कह्यो, जो–मेरे पास तो कछू नाहीं। तब फेरि वा म्लेच्छ ने कृष्णदास सों कह्यो, जो–दस ही हजार दै। तब हू कृष्णदास ने नाहीं करी। तब वा म्लेच्छ ने जान्यो, जो–यह कृष्णदास पास कछू द्रव्य नाहीं है। पाछें वाही समै कृष्णदास की बेड़ी कढ़ाइ और सिरोपाव पहराइ परगने पर पठायो। सो फेरि कृष्णदास परगनो आछी भांति कमात हते।

भावप्रकाश– या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो–जीव कों भगवद्धर्म में दृढ विश्वास राखनो। भगवद्धर्म की आगें देहादि के सुख तुच्छ करि जानने। सो दुःख परे तोऊ अपने धर्म कौ त्याग न करनो। सो जीव धर्म न छोरे तो श्रीठाकुरजी याकी सहाइ करें। श्रीठाकुरजी तो अपने अनन्य भक्तन कौ दुःख सहि सकत नाहीं। काहेतें, जो–श्रीठाकुरजी कौ मृदुल स्वभाव है। तातें जीव कों एक अनन्य ब्रत राखनो।

वार्ता प्रसंग–२

पाछें केतेक दिन कों श्रीरुक्मिनी बहूजी की खबरि कृष्णदास ने सुनी। तब कृष्णदास अपने मन में बोहोत खेद पायो। पाछें क्षौर करवाय कै कृष्णदास ने अपने मन में यह विचार्यो, जो–अब यह देह रह्यो कछू काम कौ नाहीं। तातें अब यह देह छूटे तो आछी बात है। और आपुन कों आत्महत्या हू करनी ऊचित नाहीं। पाछें एक मलेच्छ वा गाम ऊपर चढ़ि कै (आयो) ता लराई में कृष्णदास ने देह छोरी।

भावप्रकाश–सो भगवदीयन कों जो काम करनों सो बिचार कै करनो। कोऊ बात में अन्याश्रय (अरु) कलंक न लागे सो काम करनो।

पाछें कृष्णदास की खबरि वा म्लेच्छ ने सुनि तब वह मलेच्छ

अपने मन में बोहोत पश्चाताप करन लाग्यो। पाछें वह अपनी सभा में कहतो, जो–कृष्णदास सो मनुष्य मोकों कोऊ मिलिवे कौ नाहीं। एसें कहि कै वह म्लेच्छ बारबार सभा में पश्चाताप करतो। तातें तब के म्लेच्छ हू वैष्णव की संगति करि या प्रकार वैष्णव कौ स्वरूप जानतें। तातें जो कृष्णदास ने अपनो धर्म राख्यो तो कृष्णदास कों श्रीठाकुरजी वा म्लेच्छ कौ हृदौ प्रेरि कै सहाइ भए।

सो वे कृष्णदास श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कहां तांइ कहिए। वार्ता ॥२४॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक जनार्दनदास कायस्थ और गोपालदास सहगल क्षत्री, सिंहनंद के बासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहते हैं–

भावप्रकाश–ये राजस भक्त हैं। लीला में ललिताजी की सखी 'रत्नप्रभा' हैं, ताकी ये दोऊ सखी हैं। 'बिमला' और 'निर्मला' इन कौ नाम हैं। सो बिमला तो जनार्दनदास कायस्थ भए। और निर्मला गोपालदास कौ प्रागट्य। सो दोऊ रत्नप्रभा तें प्रगटी हैं, तातें इन के भावरूप हैं।

ये सिंहनंद में एक कायस्थ, एक सहगल क्षत्री, (ये) दोऊ पास पास रहत हते, तहां जन्म दोऊ लिये। सो कायस्थ के घर जनार्दनदास प्रगट भए। ताके केतेक दिन पाछें वा क्षत्री के उहां गोपालदास जन्में। सो जनार्दनदास गोपालदास बरस पांच सात के भए तब तें दोऊन में प्रीति बोहोत। सो दोऊ विरक्त–वैरागीन के पास जाँय। कथा–वार्ता सुने। ऐसें करत ये दोऊ बरस बीस–बाईस के भए तब दोऊन के माता–पिता ने इन को ब्याह कियो। पाछें कछूक दिन में दोऊन के माता–पिता मरे। तब ये दोऊ म्लेच्छ के चाकर रहे। घर कों सम्हारन लागे। परि दोऊन की साधु–वैरागिन में प्रीति बोहोत। जो–कोऊ साधु–वैरागी गाम में आवतो ताकौ ये भली–भाँति समाधान करे। वाकौ उपदेस सुने। या प्रकार ये दोऊ रहते।

सो एक दिन वासुदेवदास छकड़ा सों ये दोऊन कों मिलाप भयो। सो वासुदेवदास छकड़ा सों दोऊन कह्यो, जो–वासुदेवदास ! कोई ऐसो महापुरुष हैं, जो–हम कों भगवान् के मिलिवे कौ प्रकार समुझावें ? तब वासुदेवदास दोऊन कों दैवी जीव जानि कहे, जो–तुमने आज लों

अनेक साधु–वैरागिन कौ संग कियो सो उन ने तुम कों कहा कह्यो ? तब दोऊ जनें वासुदेवदास सों कहे, जो–कोऊ तो तप करन कों कहत हैं, तो कोऊ सन्यासी होंन की कहत हैं, (और) कोऊ कहत हैं, जो–दान–पुन्य करो। ता करि प्रभु प्रसन्न होत हैं। और काहू कह्यो, जो–पूजा–पाठ उपासना आदि किये तें प्रभु प्रसन्न होत हैं। परि हम कों तो ये कछू समुझ परत नाहीं। कछू रुचत नाहीं। या काल में ये सब साधन कैसें होई ? तब वासुदेवदास कह्यो, जो–तुम हमारी बात मानो तो हम तुम कों एक बात कहे ? तब जनार्दनदास, गोपालदास दोऊ हाथ जोरि कै कहें, तुम जो–कछू कहोगे सो हम मानेंगे। तब वासुदेवदास कह्यो, जो–कछूक दिन में अड़ेल तें श्रीगुसांईजी आप थानेस्वर पधारत हैं। सो तुम उन की सरनि जइयो। वे तुम कों सब बात समुझावेंगे। तब तो ये दोऊ प्रसन्न भए। पाछें कछूक दिन में श्रीगुसांईजी आप थानेस्वर पधारे। तब इन सुनी, जो–श्रीगुसांईजी थानेस्वर पधारे हैं। तब ये दोऊ थानेस्वर आइ श्रीगुसांईजी के दरसन किये। पाछें ये दोऊ श्रीगुसांईजी सों हाथ जोरि बिनती किये, जो–महाराज ! हम कों वासुदेवदास छकड़ा ने आप कौ नाम लै, कह्यो है, जो–तुम उनकी सरनि जइयो। सो महाराज ! हम आपकी सरनि आए हैं। सो कृपा करि हम कों सेवक करिए। और महाराज ! हमारे मन में बोहोत दिन सों प्रभु–प्राप्ति की चिंता रहत है। सो ताकौ उपाइ कृपा करि हम कों समुझाइए तो आछौ। तब श्रीगुसांईजी दोऊन कौ सुद्ध भाव देखि आज्ञा करे, जो–तुम सरस्वतीजी में न्हाइ आओ। हम तुम कौ सरनि लै प्रभु–प्राप्ति कौ मार्ग समझावेंगे। तब तो दोऊ अति प्रसन्न व्है सरस्वती न्हान गए। सो न्हाइ कै अपरस ही में श्रीगुसांईजी पास आइ ठाड़े रहे। तब श्रीगुसांईजी आप दोऊन कों कृपा करि नाम–निवेदन कराए। पाछें दोऊन कों निवेदन कौ स्वरूप समुझाइ कहें, जो–प्रभु तो सर्वतंत्र स्वतंत्र हैं। तातें कोई साधन करि उन कों प्राप्त करनो चाहे तो वे सर्वथा प्राप्त न होंई। वे तो अपनी कृपा तें आप ही प्रसन्न व्है जीव कों प्राप्त होत है। तब दोऊन श्रीगुसांईजी सों बिनती किये, जो–महाराज ! उन की कृपा कैसें प्राप्त होंइ ? तब श्रीगुसांईजी दोऊन सों प्रसन्न व्है आज्ञा किये, जो प्रभुन की सरनि जात हैं ता पर प्रभु की कृपा होत हैं। तातें मन, वाचा, कर्म करि उन की सरनि रहनो। यही प्रभु–प्राप्ति कौ एक मात्र उपाइ है। सो तुम कों या निवेदन मंत्र द्वारा हमने यह उपाइ बतायो है, ताकौ तुम हृदय में धारन करियो। या प्रकार श्रीगुसांईजी के बचन सुनि ये दोऊ हाथ जोरि बिनती किये, जो–महाराज ! प्रभु–प्राप्ति कौ उपाइ तो प्रभु ही जानें। तातें आपने या प्रकार सरल उपाइ दिखायो, सो आप प्रभु हो। आपके बिना या प्रकार निवेदन कौ विलक्षन मार्ग और कौन जानि सके ? सो या प्रकार जनार्दनदास गोपालदास श्रीगुसांईजी कों ईस्वर करि माने, अपने स्वामि जाने ! पाछें जहां लों श्रीगुसांईजी थानेस्वर बिराजे तहां लों इन दोऊ सेवक भाव तें श्रीगुसांईजी की टहल किये। सो ये दोऊ निवेदनके भाव में सदा मगन रहते।

वार्ता प्रसंग–१

सो वे जनार्दनदास और गोपालदास ए दोऊ चाकर हते। सो एक समै जाके पास जनार्दनदास, गोपालदास चाकर रहते, ताके देस में श्रीगुसांईजी आपु पधारे। सो ये दोऊ जनें अपनी स्त्री लरिका लै कै वा समै घुड़सार में आइ रहे। और घर में श्रीगुसांईजी के डेरा कराए। पाछें सगरे घरन की तारी भंडारी कों सोंपि आए। और भंडारी सो जनार्दनदास गोपालदास कहे, जो चहिए सो सर्व घर में तें खरच करियो। और अपनो सीधो दोऊ जनें बजार सों मँगावे। और माटी के पात्रन में रसोइ करि कै काम चलावे। पाछें जब श्रीगुसांईजी चलिवे कौ बिचार करे। तब ये दोऊ जन भंडारी सों कहे, जो कछू या घर में सामान है सो सब तुम्हारो है। गहेनां, पात्र, कपड़ा, अन्न, खाट, पीढा, जो कछू तिहारे काम आवे सो तो राखो। नाहीं तो ताकों बेचि कै दाम करि अपने साथ लै जाऊ। तब भंडारी ने जनार्दनदास गोपालदास के कहे प्रमान श्रीगुसांईजी की आज्ञा माँगि कै दाम किये। पाछें श्रीगुसांईजी तहां ते विजय किये। तब ये दोऊ जन वा घर में आइ रहे।

भावप्रकाश–या वार्ता में स्वामि–सेवक भाव दृढ जतायो। काहेतें, जो जनार्दनदास गोपालदास दोऊ श्रीगुसांईजी के सेवक हैं। सो स्वामी के आगें सेवक कों अपनी सब बस्तू निवेदन करनी चहिए। या भाव तें जनार्दनदास गोपालदास ने अपनी सब बस्तू श्रीगुसांईजी कों समर्पन करी।

वार्ता प्रसंग–२

पाछें केतेक दिन कों ये दोऊ जन मुलतान की ओर परगनो कमावन जले। सो जाँइ पहोंचे। तहां कोऊ चारि भाट एक दिन

आए। तिन भाटन इन के बाप दादे कौ जस बड़ी बार लों बरनन कर्‌यो। परि इनने वा बात में चित्त न दियो। पाछें काहू ने उन भाटन सों कह्यो, जो–तुम श्रीआचार्यजी के तथा श्रीगुसांईजी के कवित्त छंद पढोगे तब तिहारो ये दोऊ जन समाधान करेंगे। तब वे भाट श्रीआचार्यजी के श्रीगुसांईजी के कवित्त छंद पढन लागे। सो सुनि कै ये दोऊ अति प्रसन्न होइ कै उन भाटन कौ समाधान किये। पाछें वे अपने घर आए।

भावप्रकाश–या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो–भगवदीय अपनो जस चाहत नाहीं। वाकों तो अपने स्वामी कौ जस सुने तें ही सुख होत हैं। तातें जनार्दनदास गोपालदास श्रीआचार्यजी के श्रीगुसांईजी के कवित्त छंद सुने तब प्रसन्न भए।

तहां तें केतेक दिन पाछें ये दोऊ जन और परगने कों चले। सो जनार्दनदास वा परगने ऊपर जाइ पहोंचे। ता परगने में जनार्दनदास आप तो मुसरफी करते। और गोपालदास तहसीलदारी करते। सो वा परगने में एक म्लेच्छ दरोगा रहे। सो मुलक कौ पैसा सब गोपालदास के हवालें रहे। सो गोपालदास वैष्णवन कों प्रसाद लिवावे। और हू कितनो द्रव्य श्रीगोकुल श्रीगुसांईजी पास पठावे। सो केतेक दिन पाछें हिसाब करन, जाकौ परगनो कमायो हतो ताके पास ये तीनों जन गए। ताकों हिसाब सब समझावन आए। तब गोपालदास के माथे दाम बोहोत बाकी रहे। सो वा म्लेच्छ ने गोपालदास जनार्दनदास कौ और वा दरोगा म्लेच्छ कौ इन तीनोंन के महिना काटि लिये। परंतु तोऊ वाके द्रव्य कौ पूरो न पर्‌यो। तब वा दरोगा म्लेच्छ ने वा सिरदार सों कह्यो, जो–इन दोऊ जनेंन कों दूरि करिए। तब वा सिरदार ने दरोगा सों कह्यो, जो–इन के प्रताप तें तो तेरो मेरो

भलो होत है। तासों इन कों दूरि क्यों करिए ? तब वा दरोगा ने कह्यो, जो–तुम हमारो महिना क्यों काटे हो ? तब वा सिरदार ने वा दरोगा कौ द्रव्य दियो। जनार्दनदास कौ हू द्रव्य जनार्दनदास कों दियो। गोपालदास के माथे द्रव्य रह्यो। सो गोपालदास कों माफ किये। पाछें फेरि इन तीनों जन कों सिरोपाव दै परगना कमावन पठाए।

भावप्रकाश–तातें भगवदीयन के संग तें तब कै म्लेच्छन हू की बुद्धि ऐसी रहती। यासों भगवद्‌भक्त कौ संग करनो।

वे गोपालदास जनार्दनदास श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं। इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? ॥ वार्ता ॥२५॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक हरिदास बनिया, मेरता के, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

वार्ता प्रसंग–१

सो प्रथम मेरता में कोई वैष्णव न हतो। वा मेरता कौ राजा जेंमलजी रजपूत महा सैव हतो। तासों सगरो गाम राजा के धर्म में चलतो। सो एक बार श्रीगुसांईजी श्रीरनछोरजी दरसन कों द्वारिकाजी कों पधारे। तब मेरता के बाहिर श्रीगुसांईजी के डेरा भए। सो वा दिन सांझ कों हरिदास गाम बाहिर आए हते। तहां श्रीगुसांईजी के दरसन हरिदास ने करे। पाछें तो हरिदास के मन में यह आई, जो–हम तो इनके सेवक होइंगे। तब वा समै श्रीगुसांईजी चौकी ऊपर बैठे संध्यावंदन करत हते। इतने ही हरिदास श्रीगुसांईजी आगे दंडवत् करि बिनती किये, जो–महाराज ! मोकों आपु कृपा करि कै नाम सुनाओ। हों तो आपु कौ सेवक होउंगो। तब हरिदास की अवस्था बरस अठारह की

हती। सो वाही समै श्रीगुसांईजी ने हरिदास कों नाम सुनायो। पाछें निवेदन करायो। तब हरिदास अपने घर आइ अपनी स्त्रीकों और अपनी बेटी कों वाही समै श्रीगुसांईजी पास लिवाइ जाँइ कै नाम निवेदन करवाए। पाछें हरिदास यथासक्ति भेंट करि श्रीगुसांईजी सों विदा माँगि अपने घर आए।

पाछें केतेक दिन कों श्रीगुसांईजी द्वारिका तें पाछें फिरि आइ, मेरता के बाहिर वाही प्रकार डेरा किये। तब प्रभुन कों पधारे जानि हरिदास दरसन कों आए। तहां आइ हरिदास दरसन श्रीगुसांईजी के करि दंडवत् करि बिनती करे, जो–महाराज ! मोकों कछू सेवा आपु कृपा करि कै पधराइ देहु। तब श्रीगुसांईजी उन के माथें भगवद् सेवा पधराए। पाछें सवारे भए हरिदास श्रीगुसांईजी कों अपने घर पधराए। तब श्रीगुसांईजी श्रीठाकुरजी कों स्नान कराइ अंगवस्त्र करि सिंगार–बागा रितु अनुसार धराइ भोग समर्पि आपु रसोई करि भोग सराइ राजभोग श्रीठाकुरजी कों समर्प्यो। पाछें समै भए भोग सराइ आर्ति करि अनोसर करवाइ श्रीठाकुरजी कों, आपु भोजन करि कै उन तीनोंन कों पातरि धरि कै श्रीगुसांईजी तो पोंढिवे पधारे। पाछें विश्राम करि उत्थापन समै श्रीगुसांईजी गादी–तकिया पर बिराजे। तब हरिदास ने श्रीगुसांईजी सों सर्वे सेवा कौ प्रकार पूछि कै प्रभुन कों विजय तिलक कर्‍यो। सो बिदा की भेंट में हरिदास के घर में जो–कछू हतो, सो सर्व श्रीगुसांईजी कों समर्प्यो। पाछें तहां ते श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल कों विजय करे। तब ये हरिदास थोरीसी दूरि लों श्रीगुसांईजी कों बिदा करि

अपने घर आए। पाछें श्रीठाकुरजी की सेवा हरिदास भली भांति सों करते।

भावप्रकाश–सो हरिदास लीला में 'रत्नप्रभा' की सखी हैं। 'प्रवालिका' इन कौ नाम है। ये तामस भक्त हैं। रत्नप्रभा तें प्रगटी हैं, तातें इन के भाव रूप है। और प्रवालिका की दोइ सखी हैं। सो उन कौ नाम एक कौ 'उजियारी' है। एक कौ नाम 'सीतला' है। सो हरिदास की बेटी 'उजियारी' कौ स्वरूप और हरिदास की स्त्री 'सीतला' कौ प्रागट्य जाननो। सो ये दोऊ यहां हू हरिदास कों सेवा में सहायक भई।

सो यों सेवा करत ही हरिदास कों केतेक दिन बीते। तब काहू ने जेंमलजी सों जाँई कै हरिदास की चुगली करी। जो–एक बनिया हरिदास अपने गाम में रहत हैं। सो वह एकादसी पाछली करत हैं। और तिहारे मंदिर में दरसन कों नाही आवत। यह वाकौ बचन सुनत ही हरिदास के ऊपर राजा ने बोहोत ही बुरो मान्यो। सो वाही समै राजा ने अपने चार मनुष्य हरिदास के बुलावन कों पठाए। और उन मनुष्यन सों राजा ने यह कह्यो, जो–अब ही हरिदास कों यहां बुलाइ लावो। सो मनुष्य हरिदास पास आइ हरिदास सों कहे, जो–तुमकों अबही जेंमलजी ने बुलाए हैं, तासों तुम बेगि चलो। सो हरिदास वाही समै उन मनुष्यन के साथ जेंमलजी के दरबार में आइ सलाम करि ठाढ़े रहे। तब मनुष्यन राजा सों कह्यो, जो–हरिदास आए हैं। तब राजा जेंमलजी रिस करि हरिदास सों कहे, जो–क्यों रे हरिदास! तू हमारे मंदिर में दरसन क्यों नाहीं करत ? और तू पाछली एकादसी क्यों करे है ? तब हरिदास ने रिस करि कै जेंमलजी सों कहीं, जो–जेंमल ! या तेरे गाम में रहे तासों कहा तेरो धर्म करेंगे ? तो सारिखे राजा हमारे प्रभुन के दरसन की अभिलाषा

करत अनेक द्वार पर परे हैं। तू तो इहां अपने मन कौ बड़ो राजा कहावत है ? तब हरिदास ते बचन सुनि कै राजा बोहोत क्रोध कर्‌यो। सो कह्यो, जो–देखो यो यह बनिया कौन की हिमायत सों बोलत है ? तातें याकों तुरत ही खरच करि डारो। सो वा हरिदास कों वे मनुष्य मारन कों लै चले। सो राजा की बहनि ने ये सब समाचार, न्याव कौ प्रकार, अपनी लोंडी के मुख सुन्यो। सो वह राजा की बहनि हू श्रीगुसांईजी की सेवकनी हती। तानें जान्यो, जो–यह वैष्णव नाहक मार्‌यो जात है। सो वे अपने द्वार पर आइ ठाढ़ी रही। पाछें जब ही वे मनुष्य हरिदास कों दरबार सो संग लै कै जनानी ड्योढ़ी के आगें आए, इतने ही वह राजा की बहनि बाहिर निकसि हरिदास कों हाथ पकरि कै अपने महल में लिवाइ गई।

भावप्रकाश–काहेतें, लीला में ये 'प्रवालिका' की सहचरी है। इन कौ नाम 'प्रेममंजरी' है। सो दोऊन कौ भाव मिलत हैं। तातें दोऊन में अधिक प्रीति है। और प्रेममंजरी की एक सखी है। ताकौ नाम 'किसोरी' है। सो इहां राजा जेंमल भये।

तब वे मनुष्य आइ राजा सों ये समाचार कहे। जो–महाराज ! वा हरिदास कों तो तुम्हारी बहनि हाथ पकरि हमारे हाथ सों छुराइ कै भीतर लै गई। तब तो राजा ये समाचार सुनि कै अति क्रोधित भयो। जो–देखो ! मेरी बहनि ने अजूह काहू पुरुष कौ मुख देख्यो नाहीं। सो बनिया कौ हाथ पकरि कै महल में लै गई है। तासों मेरो नाम जेंमल खरो तब, जो प्रथम तो या बहनि कों मारों। पाछें बनिया कों मारों। यह अपने मन में निर्द्धार करि कै हाथ में एक तरवार नांगी लै जेंमलजी अपने बहनि के घरमें आए। तहां देखे तो बहनि नें हरिदास कों एक चौकी के ऊपर बैठाए हैं। और

आप ठाढ़ी ठाढ़ी वाकों पंखा करति हैं। सो यह राजा जेंमलजी जांई कै बहनि के आगें ठाढ़ो भयो। तब वा बहनि नें राजा कों क्रोधित जानि कै हंसि कै कह्यो, जो–वीरा ! तू तो आज अपनो घर खोयो होतो। परि ऐसी प्रभु क्यों करे ? जो–हमारे कुल कौ नास होंइ ? जा गाम में एक हू वैष्णव होंइ तो वह सगरे गाम को उद्धार करे। तातें तू अब इन के पाँवंन परि। यह तो श्रीगुसांईजी कौ सेवक वैष्णव है। याके माथे त्रैलोक्याधिपति बिराजत हैं। तातें इनकौ अपराध क्यों करिए ? तब राजाने कही, तो अब हों कहां करो ? पाछें यह राजा अपने मन में डरपि कै हरिदास के पांइ छू कै अपने दरबार गयो।

और राजा ने अपनी बहनि सों कह्यो, जो–तू इनकी आछी भांति सों सेवा करियो। इन कों प्रसन्न करि कै मेरो अपराध छिमा कराय कै घर पठाइयो। यह कहि राजा तो दरबार, हरिदास सों बिनती करि कै गयो। तब राजा के गए पाछें राजा की बहनि ने हरिदास सों कही, जो–हरिदासजी ! जल लेहु। तब हरिदास ने कह्यो, जो–हों तो अपने घर के अतिरिक्त और कहूं जल लैत नाहीं। तब राजा की बहनि ने जान्यो, जो–यह अब मोकों वैष्णव जाने नाहीं। तब हरिदास कौ हाथ पकरि कै राजा की बहनि ने अपने महल में लिवाइ जाइ कै अपने श्रीठाकुरजी के दरसन हरिदास कों करवाए। सो श्रीगुसांईजी वाके माथे बिराजते। सो प्रभुन के हस्ताक्षर हते। तिन के दरसन हरिदास ने आछी भांति सों करे। तब हरिदास ने साष्टांग दंडवत् करी। और बोहोत प्रसन्न भए। पाछें जल हू तहां लियो। तब हरिदास

ने राजा की बहनि सों पूछ्यो, जो–तुम कौन प्रकार श्रीगुसांईजी के सरनि आए हो ? तब राजा की बहनि ने हरिदास सों कह्यो, जो–मैं बरस बीस की हती । तब एक दिन हों अपनी अटारी ऊपर चढ़ी हती । तब श्रीगुसांईजी अमूके बाग में डेरा किये हते । सो मैं प्रभुन के दरसन पाए । तब मैं एक बिनती–पत्र लिखि एक लोंडी के हाथ प्रभुन पास पठायो । ता पत्र में मैंने अपने घरके सर्व समाचार लिखि पठाये । जो–महाराज ! मेरे घर की तो संगति या भांति की है । तासों मेरो आवनो तो आप कै दरसन कों होइ सकत नाहीं । और आपहू कौ पधारिवो मेरे घर होत नाहीं । संग मोकों अति दुष्टन कौ है । और मेरो तो उद्धार कर्‍यो चहिए । हों तो आप की दासी हूं । तासों आपु मोकों काहू प्रकार अपनी सेवक करो । और या पत्र कौ प्रतिउत्तर हू पत्र में आप कृपा करि कै लिखि पठाओगे । तब वा लोंडी ने जाइ कै मेरो पत्र श्रीगुसांईजी के श्रीहस्त में दियो । सो पत्र प्रभुन बांच्यों । पाछें श्रीगुसांईजी मेरी बोहोत आर्ति जानि मो ऊपर कृपा करि के 'निवेदन' कौ पत्र लिखि पठायो । ता पत्र में यह प्रकार प्रभुन लिख्यो, जो–तू स्नान करि कै अपरस में यह पत्र बांचियो । सो प्रभुन की आज्ञा प्रमान कियो । पाछें मैं सेवा पधराइवे कौ बिनतीपत्र लिखि पठायो । तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करि कै नित्य कौ तथा बरस दिन के सर्व उत्सव कौ प्रकार प्रनालिका लिखि पठाए । सो हों या प्रकार प्रभुन की आज्ञा प्रमान सेवा करत हों । तब राजा की बहनि के समाचार सुन कै हरिदास बोहोत आनद पाए । पाछें हरिदास कों वाने सांत करि घर

पठाए। सो हरिदास अपने घर आए।

पाछें यह बात केतेक दिन में श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी सुने। तब आपु श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें श्रीरनछोरजी के दरसन कों द्वारिकाजी पधारत हे। सो आप जब मेरता के पास आए तब अपने मनुष्यन सों श्रीगुसांईजी यह आज्ञा करे, जो–मेरता कों बांयो छोरि चलियो। वा गामकी राह छोरि दीजियो। तब श्रीगुसांईजी मेरता की सींव छोरि कै पधारे। तब हरिदास आगें जाइ श्रीगुसांईजी के दरसन करि दंडवत् करे। पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती करि उहां डेरा कराए। तब हरिदास ने श्रीगुसांईजी आगें भेंट करी। और राजा की बहनिनें भेंट पठाई हती सो भेंट करि दंडवत् कर्‌यो। तब श्रीगुसांईजी ने हरिदास कों सर्व समाचार पूछे। सो हरिदास ने सर्व समाचार प्रभुन आगें कहे। तब श्रीगुसांईजी हरिदास के बचन सुनि कै बोहोत प्रसन्न भए। पाछें टोकरी खोलि भोग धरि श्रीगुसांईजी कछू भोजन करि आगें कों पधारे।

पाछें जेंमलजी सों बहनिने कह्यो, जो–देखि भाई! तू वैष्णव कौ अपराध कर्‌यो। तो अब कै श्रीगुसांईजी तेरे गाम की सींव में हू होइ कै न पधारे। और ही गाम में भए जात हैं। देखि! वह धूरि उड़त है। सो प्रभु द्वारिकाजी कों पधारे हैं। तब जेंमलजी ने अपनी बहनि सों कह्यो, जो–तू मोसों कहे तो हों श्रीगुसांईजी कौ रथ पाछो फिराइ मँगाऊं। तब बहनि ने राजा सों कही, जो–यह काम जोर कौ नाहीं। यह काम है सो दीनता कौ है। तासों अब जो, जब श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी तें पाछें फिरें तब तू दीनता करि

कै अपने गाम में पधराइयो। तब जेंमलजी ने बहनि सों कह्यो, जो–बोहोत भलें। फिरती बेर अपने गाम में पधराउंगो। पाछें राजा नें द्वारिकाजी सों और मेरता सों डाक चौकी बेठारि दीनी। जो– श्रीगुसांईजी जब द्वारिकाजी सों फ़िरें, और जहां जहां डेरा होंइ तहां तहां की खबरि सब मोसों करियो। या प्रकार डाक–चौकी वारेन सों जेंमलजी ने कहि दई। सो नित्य की खबरि जेंमलजी पास आवें। श्रीगुसांईजी श्रीरनछोरजी के दरसन करि कै फिरे तब गाम गाम के डेरान की खबरि जेंमलजी पास आइवो करी। तब राजा प्रभुन कों अपने गाम के निकट पधारे जानि एक मनुष्य हरिदास बनिया कों बुलाइवे कों पठायो। सो हरिदास आय कै राजा के दरबार में ठाढ़े रहे। तब वह जेंमलजी हरिदास के हाथ पकरि कै एकांत ठौर लै जाँइ राजा जेंमलजी हरिदास सों बिनती कियो। जो–आज श्रीगुसांईजी के डेरा अमूके गाम में है। तासें काल्हि आपुन इहां सों चलि कै प्रभुन के दूसरे दिन दरसन करि अपने गाम में डेरा करवाइये। परि जो तुम मेरो अपराध क्षमा करि मेरे ऊपर दया करि कै मोकों अपने साथ लै कै प्रभुन कौ दरसन कराओ। जो–तुम्हारी कृपा तें हम कृतारथ होइंगे। तुम वैष्णव हो तासों हम ऊपर यह कृपा अवस्य करो। या प्रकार जेंमलजी नें हरिदास सों बोहोत ही बिनती करी। तब हरिदास राजा कौ सुद्ध भाव जानि कृपा करि कै प्रसन्न होइ कै राजा सों कह्यो, जो–आछी बात है। तब दूसरे दिन हरिदास कों साथ लै राजा बाहिर गाम के आयो। जब श्रीगुसांईजी की खबरि निकट बोहोत ही पधारे की सुनी तब जा

मार्ग होइ कै प्रभु प्रथम पधारे हते ता मार्ग में जाँइ ठाढ़ो होइ रह्यो। पाछें श्रीगुसांईजी ने जेंमलजी की फौज देखी। तब काहूं सों पूछ्यो, जो–यह फौज कौन की है ? तब वानें श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! यह फौज तो मेरता के राजा जेंमलजी की है। तब वाके ये बचन सुनि कै श्रीगुसांईजी ने अपनो रथ और ही मार्ग कों हांक्यो। तब जेंमलजी ता मार्ग में हरिदास कों साथ लै, दौरि जाँइ कै श्रीगुसांईजी के रथके आगें राजा जेंमलजी लोटि गयो। पाछें रथ सारथी ने ठाढ़ो राख्यो। तब हरिदास श्रीगुसांईजी सों दंडवत् करि बोहोत प्रकार सों बिनती कियो, जो–महाराज ! यह जेंमलजी आप कों पधरावन आयो है। सो दंडवत् करिवेकी बिनती करत है। तब प्रभुन जेंमलजी कों दंडवत् करन की आज्ञा करी। तब हरिदास ने जेंमलजी पैं प्रभुन कों दंडवत् कराई। पाछें जेंमलजी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! धन्य भाग्य हरिदास के हैं, जो–यह आपकी सरनि हैं। आपु याके प्रभु गोकुलाधिपति कहावत हो। मैं तो महा अज्ञान हूं। मैं तो हरिदास पर अति मंद बुद्धि ठानी हती। परि जाके माथे आप सारिखे प्रभु बिराजत हो, तासों जीव की गति कौन प्रकार बाधक करे। तातें महाराज ! अब तो हों आप की सरनि हूं। आप की इच्छा में आवे सो मेरो करो। परि एक बार तो मोकों आपु इहांई कृपा करि कै नाम सुनाइ कै पाछें मेरे गाम में पधारिए। यह कृपा मेरे ऊपर करिए। या प्रकार जेंमलजी राजाने श्रीगुसांईजी सों बोहोत बिनती करी। तब श्रीगुसांईजी वाकौ सुद्ध भाव जानि कै वाइ ठौर स्नान कराइ

नाम सुनायो । पाछें आपु श्रीगुसांईजी ने रथ फिरायो । सो जेंमलजी के गाम में पधारि कै हरिदास बनिया के घर डेरा किये । सो जहां सों जेंमलजी ने नाम पायो तहां सों जेंमलजी प्रभुन के रथ के साथ पाँवन पाँवन आयो । पाछें प्रभुन के डेरा हरिदास के घर करवाइ कै राजा अपने घर गयो । ता पाछें राजा जेंमलजी ने सगरे गाम में ढंढेरा पिटाइ दियो । जो–भाइरे ! जो–कोई श्रीगुसांईजी कौ सेवक न होइगो सो मेरे गाम में न रहन पावेगो । सो सब गाम श्रीगुसांईजी के पास नाम पायो । पाछें राजा जेंमलजी अपनी बहनि पुत्रादिक सगरेन कों नाम निवेदन करवायो । पाछें श्रीगुसांईजी कों अपने घर पधराए । तब श्रीगुसांईजी राजा कों श्रीठाकुरजी कौ स्वरूप दै, पंचामृत स्नान कराइ, आपु उहांइ रसोई करि, श्रीठाकुरजी कों भोग समर्पि कै समयानुसार भोग सराइ आरती करि, अनोसर करवाइ आपु भोजन करि विश्राम उहांई करे । पाछें श्रीठाकुरजी की सेवा कौ प्रकार सर्व राजाने श्रीगुसांईजी सों पूछ्यो । सो प्रभुन सर्व बतायो । ता पाछें जेंमलजी राजाने केतेक दिन श्रीगुसांईजी कों मेरता में राखे । पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारन लागे । तब राजा सों प्रभुन यह कह्यो, जो–तोकों पूछनो होइ सो हरिदास सों पूछियो । तब राजा बोहोत प्रसन्न होंइ श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि बोहोत भेंट धरि कै प्रभुन कों श्रीगोकुल कों बिदा किये । पाछें श्रीगुसांईजी जेंमलजी सों बिदा होंइ कै हरिदास के घर एक दिन बिराजे । ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल कों बिजय किये । तब सगरो गाम श्रीगुसांईजी कों पहोंचावन आयो । पाछें सबन

कों, राजा कों, हरिदास कों श्रीगुसांईजी घर पठाय, आपु प्रभु श्रीगोकुल कों पधारे।

भावप्रकाश – या वार्ता में भगवदीयन कौ प्रताप श्रीगुसांईजी जगत विख्यात प्रगट करे। जो–जा गाम में एक हू वैष्णव होंइ तो काहू समें वा गाम कौ उद्धार निश्चय होंइ तामें संदेह नाहीं, यह जतायो।

पाछें केतेक दिन कों यह बात – समाचार नागजी भट गोधरा के नें सुने। जो–जेंमलजी सब मेरता सहित श्रीगुसांईजी के सेवक भए हैं। तब नागजी भट गोधरा तें मेरता में आइ कै जेंमलजी पास चाकर रहे। सो नागजी कों राजा कारकुन करि कै केतेक दिन पाछे पृथ्वीपति पात्साह पास पठायो। तब नागजी सों जेंमलजी ने कही, जो–तुम पृथ्वीपति पास जाँइ हमारो काम करि आओ। तब नागजी राजा कौ काम करि श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी पास आइ भेंट बोहोत करि दिन एक दोइ प्रभुन पास रहि कै फेरि मेरता कों आए। तब श्रीगुसांईजी नागजी कों आछी भांति बिदा किये। सो नागजी मेरता आइ जेंमलजी राजा कों पृथ्वीपति कौ परवानो दियो। सो जेंमलजी नागजी ऊपर बोहोत प्रसन्न भए। पाछें जेंमलजी आगें नागजी कुल्ल दीवान भए।

सो वह जेंमलजी राजा बहनि के उपदेस सों ऐसो वैष्णव भयो।

वार्ता प्रसंग – २

और हरिदास बनिया के एक बेटी हती। सो वह बेटी बड़ी भई। जब हरिदास सोच करन लागे, जो–अपनी ज्ञाति में तो कोऊ वैष्णव कौ बालक है नाहीं, जो–वाकों दीजिये। ऐसें सोच

हरिदास बोहोत ही करन लागे। परि कोऊ लरिका कहूं नजरि न आयो। पाछें एक दिन हरिदास अपने प्रोहित कों बुलाइ वाके साथ अपनी बेटी कों दै, कछू द्रव्य विवाह कौं दै, वा प्रोहित सों हरिदास ने यह कह्यो, जो–प्रोहितजी ! या लरिकी कौ तुमही कहूं आछौ घर, वर, देखि कै इहां तैं दूरि देस में कहूँ याकौ विवाह करि आओ। सो प्रोहित एक बार तो बर देखिवे कों गयो। सो द्वारिकाजी के मार्ग में एक बर सों हरिदास की बेटी की सगाई करि, पाछें फिरि आइ कै, इहां तैं वा लरिकी कों संग लै जाँइ कै वहां विवाह करि आयो। पाछें ये सब समाचार वह प्रोहित हरिदास सों कह्यो। जो–अमूके गाम में अमूके बनिया के छोहरा कों तिहारी बेटी की सगाई करि, विवाह आछी भांति करि आयो हूं। तब हरिदास प्रोहित के बचन सुनि चुप करि रहे। पाछें वा प्रोहित कों यथासक्ति दै हरिदास बिदा किये।

वे हरिदास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे। सो सगरे गाम सहित राजा जेंमलजी कों वैष्णव कियो। ता दिन तें जेंमलजी कों जो कछू पूछनो होंइ सो हरिदास सों पूछि कै काम करते। और राजा जेंमलजी वा दिन तें हरिदास की बोहोत कानि मानि कै डरपत रहतो। वे हरिदास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ।।२६।।

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक मानिकचंद, हरिदास बनिया कौ जमाई, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

वार्ता प्रसंग – १

सो वह प्रोहित याकौ विवाह करि कै चल्यो गयो। अब यह

अपने घर आइ माथो बांधि कै सोय रही। घर में सगरेन कौ अनाचार देखि कै याके मन में बोहोत ही ग्लानी उपजी। और याने अपने मन में यह निर्द्धार कियो, जो–इन कौ पानी हों तो पीवनो नाहीं। योंही परी रहूंगी। सो कोइक दिन में तो देह छूटेगी। यों करत दिन दोइ तीन परी रही। तब एक दिन वाकी सास ने खीझि कै कह्यो, जो–बहू! तू खाँत पीवत नाहीं सो कहा तू हमारे हत्या दैन आइ है! तू खाँत पीवत नाहीं सो कारन कहा है? हम कों कहि तो सही। तब या बहू ने श्रीगुसांईजी कौ स्मरन कर्‍यो, जो–महाराज! पिता माता ने तो मेरो त्याग कियो। जो–मोकों या दुःसंग कौ मुख देखनो पर्‍यो। अब मैं काहू सों कहों सुनों नाहीं तोऊ मेरी हत्या तें डरपत हैं। और मेरे मन कौ संकल्प है सो तो आपु सब जानत हो। तासों अब तो तुम मेरी सहाइ करोगे तो मेरो कह्यो याके मन में आवेगो। या प्रकार बोहोत ही आर्ति सों श्रीगुसांईजी सों हरिदास की बेटी ने प्रार्थना करि कै अपनी सास तें निधरकता सों बोली, जो–सासुजी! हों तो जब पानी पीउंगी जब अपने हाथ अपनो पानी भरि लाउंगी। पाछें हों ही रसोई करूंगी। वह मेरो पानी कोऊ छूवे नाहीं। तो तो मेरे पानी पियो जांइ। नाँतरु यह मेरी हत्या मेरे पिता माता के ऊपर है। जो–उनने मोकों अपने घर तें काढ़ि प्रोहित हाथ इहां विवाह करवायो। कै तुम सगरे मेरो कह्यो मानो तो जल पीऊं। और तब ही अन्न खाऊंगी। तब सास ने कही, जो–बहू! जामें तेरो भलो होंइ सोई तू करि। तब अपनी सास सों याने कह्यो, जो–सासुजी! ये सगरे पानी के बासन नए मँगाओ। और ये

रसोई के बासन नए मँगाओ। और हों ही पानी के बासन भरि लाऊंगी। पाछें हों ही सब रसोई करि एक पातरि अपनी न्यारी करि धरूं। पाछें वह सब अन्न तुम कों तुम्हारे बासनन में ठलाइ देहुंगी। तब तुम्हारी इच्छा में आवे सो करो। फेरि मेरी रसोइ कों कोऊ छूवन न पावे। तब सास (ने) बहू के ये बचन सुनि कै पात्र नए रसोइ के मँगाइ दिये। पाछें सास ने बहू सों कही, जो–बहू ! अब तेरी इच्छा में आवे सो तू करि। जामें तेरी प्रसन्न होंइ। हम तोसों कोऊ कछू कहें, बोलेंगे नाहीं। तब वह बहू उठि स्नान करि कै जल भरि लाई। पाछें रसोई करि पातरि एक परोसि श्रीनाथजी कों भोग समर्पि कै सास सों कही, जो–अब तुम अपने बासन लाओ। तिन में हों सर्व रसोई ठलाइ देऊं। तब सासने अपने बासन ल्याइ धरे। तिन में वह सर्व रसोई ठलाइ दीनी। आपु अपनी रसोइ के पात्र माँजि कै न्यारे धरि कै रसोइ पोति के घर कै सब जन जें रहे, ता पाछें आप भोग सराय प्रसाद लियो। पाछें सीधो सब आछी भांति रसोइ कौ बीनि राखे। जल अपनो भरि राखे। सो बड़ेई सवारें उठि कै रसोइ नित्य या प्रकार करिवो करे। सो सगरे घर के देखि कै याकौ आचार, विस्मित होंइ रहे। जो–भाई ! अब तो कछू काम होत घर में जान्यो जात नाहीं। सो या प्रकार करत हरिदास की बेटी कों केतेक दिन होंइ गए। तब एक वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ सेवक वा गाम में रहत हतो। तिन याकौ या सब प्रकार सुन्यो। पाछें एक दिन वह वैष्णव अपनें घर सों पहोंचि कै हरिदास की बेटी के घर आयो। तब याने वा वैष्णव कौ स्वरूप जान्यो।

भावप्रकाश – सो यह वैष्णव लीला में श्रीयमुनाजी की सखी हैं। इन कौ नाम 'वैष्णवी' है। सो ये यहां नागर ब्राह्मन के घर जन्म्यो। सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी कों पधारत हे। तब या गाम की सींव पर श्रीगुसांईजी आप डेरा किये। ता समै यह ब्राह्मन श्रीगुसांईजी कौ सेवक भयो। पाछें श्रीगुसांईजी इन कों एक लालाजी सेवा कों पधराय आज्ञा करे, जो–तू इन की सेवा नीकी भांति सों करियो। सो ता दिन तें यह ब्राह्मन गुप्त प्रकार सों श्रीठाकुरजी की सेवा करतो। काहेतें, ये जैनीन कौ गाम है। सो कहूँ आचार–बिचार दीसत नाहीं। यातें यह ब्राह्मन या प्रकार अपने ठाकुर की सेवा करतो, जो–कोऊ जाने नाहीं।

सो यह वा वैष्णव कों श्रीकृष्ण–स्मरन कर्यो। पाछें वा वैष्णव ने या हरिदास की बेटी सों पूछ्यो, जो–तू कौन गाम की है। और कौन की बेटी है ? कौन की सेवक है ? तब याने अपने सर्व समाचार कहे। तब तो याकी बात सुनि कै वा वैष्णव कौ हृदौ भरि आयो। पाछें वा वैष्णव सों हरिदास की बेटी अपने निर्वाह के सब समाचार कहि कै बिनती करी, जो–एक बार तुम मोकों कृपा करि कै दरसन दै जायो करो। तब वा वैष्णव ने यासों कह्यो, जो–मोकों तेरे पास तेरे घर के नित्य आवत जानेंगे तो तोकों तेरे घर के सब खेद करावेंगे। तासों मेरो नित्य कौ तो आवनो न होइगो। कबहू काहू समै पाइ कै आऊंगो। तब याने वा वैष्णव सों कही, जो– तुमही मोकों अपनो घर बताइ देऊ तो हों ही तुम सों जल भरत समै श्रीकृष्ण–स्मरन करत जाऊंगी। तब वैष्णव ने हरिदास की बेटी सों कह्यो, जो–यह हू बात कछू काम की नाहीं। तेरी अवस्था और है। और तू तो अपने सुद्ध भाव सों आवेगी; परि इहां के लोग महा दुराचारी हैं। सो तेरे घरकेन सों कहेंगे। तोऊ तोकों खेद होइगो। तासों एक बार हों ही तेरे घर आइ श्रीकृष्ण–स्मरन करि जायो करूंगो। ऐसें कहि वह वैष्णव अपने घर गयो। पाछें वह वैष्णव नित्य अपने घर

सों पहोंचि कै याके घर आइ कै श्रीकृष्ण–स्मरन यासों करि जाँइ। ता पाछें यह प्रसादी लेती। सो एक दिन वह वैष्णव सवारे याके घर आवनो भूलि गयो। और प्रसाद लै कै अपने काम कों गयो। पाछें हरिदास की बेटी ने तो अपनी पातरि ढांपि राखी। सो जब वह वैष्णव तीसरे प्रहर अपने घर उत्थापन के समै न्हान लाग्यो। तब वाकों सुधि आई। जो–आजु हों हरिदास की बेटी सों श्रीकृष्ण–स्मरन नाहीं करि आयो। सो वह स्नान करि श्रीठाकुरजी सों पहोंचि कै वाके घर आय श्रीकृष्ण–स्मरन करि अपने घर गयो। पाछें वह वा दिन रात्रि के समै प्रसाद लैन बैठी। तब वाकी सास वा पास आइ वासों पूछी, जो–बहू ! तू आज या समै क्यों जेंवत है ? तब याने अपनी सास सों कह्यो, जो–इहां गाम में मेरो एक गुरुभाई है। सो वह नित्य एक बार मोकों दरसन दै जात है। ता पाछें हों प्रसाद लेति हों। तब सास ने बहू सों कह्यो, जो–बहू ! तू धन्य है। जाकों अपने गुरु ऊपर ऐसी दृढ़ भक्ति है। तासों अब सवारे जब वह दरसन तोकों दैन आवे, तब तू वाके दरसन मोहू कों करवाइ दीजियो। तब तो बहू सास के बचन सुनि कै अपने मन में बोहोत प्रसन्न होंइ कै कही, जो–अब इन कौ मन श्रीगुसांईजी फेर्‌यो दीसत है। जो इनकों वैष्णव ऊपर यह भाव उपज्यो है। पाछें सवारे वह वैष्णव इन के घर आयो। तब हरिदास की बेटी ने वा वैष्णव सों श्रीकृष्ण–स्मरन करि अपने घर के प्रथम दिन के सब समाचार कहे। सो वह वैष्णव याके बचन सुनि कै अपने मन में बोहोत प्रसन्न होंइ कै कह्यो, जो–श्रीगुसांईजी सर्व सामर्थ्यवान् हैं। प्रभु

हैं। उन कों जीव कौ मन फेरत विलंब न जानिये। परि अब तो ऐसी दीसत है, जो–तेरे द्वारा इन सबन कौ प्रभु उद्धार करेंगे।

भावप्रकाश – काहेतें, ये दैवी जीव हैं। लीला में सास कौ नाम तो 'कल्यानी' है। सो श्रीयमुनाजी के जूथ की है। और मानिकचंद कौ नाम 'सुमति' है। सो 'सुमति' 'रत्नप्रभा' तें प्रगटी हैं। तातें इन के भावरूप है। ये सात्विक भक्त हैं।

तब वैष्णव के ये बचन सुनि यह बोहोत प्रसन्न होंइ कै वा वैष्णव सों बोली, जो–तिहारे आसीर्वाद तें इन कौ कल्यान होइगो। तुम बड़े भगवदीय हो। मोकों यह दीसत है, जो–मेरे ऊपर श्रीगुसांईजी की बड़ी कृपा है। जो पिता माता ने तो मेरो त्याग कियो। जैसें दूध में तें माँखी काढ़ि कै न्यारी करे। परि दूध आप सों माँखी कों कबहूं न न्यारी करे। परि कहा करे, वह दूध और वह माँखी आधीन पराए हैं। तासों वह न्यारी करि डारत हैं। तैसें स्त्री कौ जन्म है सो माता पिता के आधीन है। वह जाकों सोंपि देइ ताके आधीन होंइ रहनो परत है। परि वे पिता माता हू कहा करें ? काल के आधीन है। लोकापवाद तें वेऊ डरपत हैं। तातें वेऊ कन्या कों बड़ी भए पाछें राखि सकत नाहीं। सो यह सर्व प्रभुन के हाथ तीनोंन की डोरि है। तासों प्रभुन अपनेन की डोरि दृढ करि गही हैं। सो छोरत नाहीं। तातें अपने जीव कों संग मिलाइ देत हैं। सो इहां श्रीगुसांईजी मोकों तुम्हारी संगति अनायास मिलाइ दिये। तातें प्रभु जो श्री–गुसांईजी, सो परम दयाल हैं। याके ये बचन सुनि कै वह अपने मन में बोहोत प्रसन्न होंइ कै कह्यो, जो–यह तो हरिदास की बेटी है। जा हरिदास ने राजा जेंमलजी सहित सगरे मेरता कौ उद्धार

कर्‌यो है। ता हरिदास की यह बेटी है। तो याकी ऐसी निर्मल बुद्धि होंइ ताकौ कहा कहनो ? पाछें वा बहू ने जाँइ कै आपनी सास सों कह्यो, जो–सासुजी ! वह वैष्णव मोकों श्रीकृष्ण–स्मरन करन आयो है। तिनकों हों बैठारि आइ हों। तुम उन के दरसन कों चलोंगी ? के वे अपने घर कों जांइ ? तब वाकी सास वाके बचन सुनि कै अति आनंद पाइ, वा वैष्णव के दरसन कों आई। सो आवत ही वा वैष्णव के पाँवन परि कै वा वैष्णव सों कही, जो–हमारे कुल कौ तो या बहूने उद्धार कियो। तब वह वैष्णव अपने मनमें वाकौ सुद्ध भाव जानि कै बोहोत प्रसन्न भयो। तब वाकी सास ने वा वैष्णव सों बिनती करी, जो–यह बहू तो हम सों कछू भेद जनावत नाहीं। तासों तुम हम ऊपर कृपा करि अपनो प्रकार सुनाओ। तब वा वैष्णव ने हरिदास की बेटी ओर देख्यो। तब याने सेन ही में नाहीं करी।

भावप्रकाश – सो यातें, जो–अभी आर्ति और हू बढ़ैं तो आछौ। क्यों, जो–आर्ति बढ़ें बिना बस्तू फलेगी नाहीं। तासों बहू ने सेन ही में नाहीं करी।

तब वा वैष्णव ने वाकी सास सों कह्यो, जो–अब तो मोकों काम है। तासों हों तो या समै जाऊंगो। पाछें और दिन तुमसों यह समाचार कहूंगो। तब वाकी सास सुनिकै चुप करि रही। पाछें वा बाई ने एक बिनती और करी, जो–तुम मोकों और याकों नित्य एक बार दरसन दै जायो करो। हमारे घर कौ कोऊ तुम सों कछू कहिवे कौ नाहीं। काल्हि तुम सवारे न आए हते तो यह रात्रि कों जेंई हती। तासों यह कृपा तो तुम हम ऊपर बेगि ही कर्‌यो करियो। हम तो सब तुम्हारे सेवक हैं। तब यह वैष्णव

भलें कहि कै उठि चल्यो। पाछें वाकों नित्य दरसन दैन आवे तब वाकी सास नित्य वा वैष्णव सों कहे, जो–मोकों अपनी सम्प्रदाय कब कहोगे ? यों कहत कहत इनकों बोहोत दिन बीते। तब वाकी आर्ति बोहोत जानी। तब एक दिन वा वैष्णव सों हरिदास की बेटी ने सेन ही में कह्यो, जो–तुम या मेरी सास तें कहो, जो–तुम कों हमारी प्रथा सुनि कै कहा करनो है ? तब वाकी सास तें वा वैष्णव ने कही, जो–तुमकों हमारी प्रथा सुनिकै कहा करनो है ? तब वाकी सासने वा वैष्णव सों बिनती करी, जो–तुम्हारो मार्ग अति उत्कृष्ट है। जो मोकों सुनिवे की इच्छा है। तब वा वैष्णव ने वाकी सास सों कह्यो, तुम अन्यमार्गीय हो। तुम यह मार्ग सुनि कै कहा करोगे ? यह मार्ग की चर्चा हम अन्यमार्गीय आगे कहत नाहीं। तब याने कह्यो, जो–तुम हम कों सेवक करो। तब वा वैष्णव ने वासों कह्यो, जो–हम तो काहू कों सेवक करत नाहीं। तासों सेवक करनवारे तो प्रभु श्रीगुसांईजी श्रीविट्ठलनाथजी महाराज श्रीगोकुल में बिराजत हैं। तासो सेवक (कौ) तो वे प्रभु जब इहां पधारें तब ही जोग बनें। तब वाकी सास ने वा वैष्णव सों बोहोत प्रार्थना करी तब वा वैष्णव ने अपनी संप्रदाय वल्लभी बताई। तब तो वह अपने मन में बोहोत प्रसन्न होंइ कै वा वैष्णव सों कही, जो–तुम हम कों एक पत्र श्रीगुसांईजी कों लिखि देऊ तो, हम एक मनुष्य अपने घर कौ पठाइ कै वा पत्र कौ उत्तर श्रीगुसांईजी पास तें मँगावे। तब वाकों पत्र एक वा वैष्णव ने श्रीगुसांईजी के नाम कौ लिखि दियो। तब वह पत्र कों एक मनुष्य के हाथ दै

श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुल पठायो। सो मनुष्य श्रीगोकुल आय कै श्रीगुसांईजी कों वह पत्र दियो। ता पत्र कौ जुवाब श्रीगुसांईजी नें वा वैष्णव कों कृपा करि कै यह लिख्यो, जो–तुम इन सगरेन कों या पत्र द्वारा नाम सुनाईयो। हम हू कछूक दिन में इहां तें द्वारिकाजी कों आवत हैं। यह पत्र लिखि कै वा मनुष्य के हाथ दिये। तब वह मनुष्य श्रीगुसांईजी सों बिदा होंइ कै मानिकचंद के घर आयो। पाछें मानिकचंद की माता कों यह पत्र दियो। तब वह अति प्रसन्नता सों वा पत्र कों माथें चढ़ाइ कै वा वैष्णव कों बुलाइ पठायो। सो वह वैष्णव प्रभुन कौ पत्र आयो जानि कै अति उत्कंठा सों वाके घर आयो। तब मानिकचंद की माता ने वा पत्र कों वा वैष्णव के हाथ में दीनो। तब वह वैष्णव दंडवत् करि वा पत्र कों माथें चढ़ाइ कै बांच्यो। सो सब समाचार बांचि कै चुप करि रह्यो। पाछें और समाचार सुनाइ कै वह वैष्णव अपने घर गयो। पाछें फेरि रात्रि कों श्रीठाकुरजी सों पहोंचि कै हरिदास की बेटी पास वह वैष्णव आयो। तब प्रभुन कौ पत्र वाकों बांचि सुनायो। तब वह पत्र के समाचार सुनि अपने मन में बोहोत प्रसन्न होंइ रही। पाछें वा वैष्णवनें हरिदास की बेटी सों वा पत्र कौ बिचार पूछ्यो। तब हरिदास की बेटी ने वा वैष्णव सों कही, जो–याकौ प्रतिउत्तर तुम सों काल्हि कहूंगी। तब वह वैष्णव वा समै तो अपने घर गयो। पाछें याने अपनी सास सों कही, जो–सासुजी ! पत्र तो प्रभुन कौ आयो। तामें वा वैष्णव कों आज्ञा हू आई है। यह हों पत्र बांचत समै देखी हूं। परि अब तो या वैष्णव के हाथ यह बात है। तब वह सास बहू

के बचन सुनि कै अपने मन में बोहोत खेद करि कै बहू के पाइंन परि कै कही, जो–या वैष्णव नें तो मोसों दुराव कर्यो। और यह तेरी आज्ञा में है। तासों तू हमारी बिनती अब यासों करे तो हमारे सगरेन कौ उद्धार होंइ। तब वा बहू नें सबन कौ सुद्ध भाव ऐसो जान्यो। तब बहू न सास सों कहीं, जो–हों वा वैष्णव सों प्रार्थना करूंगी। तब वह सास चुप करि रही। पाछें दूसरे दिन जब वह वैष्णव हरिदास की बेटी पास आयो तब हरिदास की बेटी नें वा वैष्णव सों कही, जो–अब इन कौ सुद्ध भाव तो श्रीगुसांईजी ऊपर भयो। तातें अब तो तुम्हारी इच्छा आवे सो करो। तब बहू फेरि इत उत फिरि कै वा वैष्णव कों घर में बुलाइ सास के देखत वासों बोहोत प्रार्थना करी। तब वाके कहे तें वा वैष्णवनें उन सगरेन कों स्नान करवाइ, श्रीगुसांईजी कौ पत्र एक चौकी ऊपर धरि प्रभुन की आज्ञा प्रमान उन कों नाम उपदेस कर्यो। पाछें श्रीकृष्ण–स्मरन करि वह वैष्णव अपने घर आयो। पाछें दूसरे दिन उन सगरेन वा वैष्णव सों पूछी, जो–अब तुम हम कों मार्ग की प्रनालिका कहो। तब वा वैष्णव ने उन सों कही, जो–सब प्रनालिका तुम्हारी बहू तुम्हारे आगें कहेगी। तब वे सगरे घर के जो कछू काम करते सो सब वा बहू सों पूछते। तब जो बहू कहती सोई वे सब करते। वह हरिदास की बेटी ऐसी प्रभुन की कृपापात्र हती।

भावप्रकाश–या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो–वैष्णव कौ कैसो हू संकट आय परै तोऊ धैर्य धारन करि एक श्रीगुसांईजी के चरनारविंद कौ स्मरन करनो। क्यों ? जो–श्रीगुसांईजी कौ आश्रय किये ते सर्व कार्य की सिद्धि तत्काल होत है। श्रीगुसांईजी परम दयाल भक्तवत्सल है। तातें अपने भक्त पर तत्काल दया करत हैं। और दूसरो (अभिप्राय) यह है,

जो–भगवदीय वैष्णव के रंच संग तें जीवन कौ उद्धार सहज में होत है। तातें भगवदीय वैष्णव पर निष्कपट भाव सों स्नेह राखनो। वाके कहे कौ विश्वास करनो। यह पुष्टिमार्ग वैष्णव द्वारा ही फलित होत हैं। तातें वैष्णव कौ (अपनो) सर्वस्व जानि ताकौ संग करनो। यह जतायो।

पाछें केतेक दिन में श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें श्रीरनछोरजी के दरसन कों द्वारिकाजी कों पधारे। सो वा गाम में आइ कै वा बाहिर कुआँ ऊपर श्रीगुसांईजी के डेरा भए। ता कुआँ ऊपर हरिदास की बेटी हू जल भरन आइ। इतने ही एक ब्रजबासी हू वा कुआँ पैं जल भरन आयो। तब वासों हरिदास की बेटी ने पूछ्यो, जो–ये डेरा कौन के हैं ? तब वा ब्रजबासी ने हरिदास की बेटी सों कह्यो, जो–ये डेरा तो श्रीगुसांईजी के हैं। तब तो यह वा ब्रजबासी कौ बचन सुनि अति उत्कंठा सों जल कौ बासन घर धरि कै सास सों कही, जो–श्रीगुसांईजी इहां पधारि अमूके बाग में डेरा किये हैं। जो–तुम्हारें दरसन कों आवनों होइ तो आइयों। और हों तो जात हूं। यह कहि अति उन्मत्त दसा सो जाँइ कै दूरि तें श्रीगुसांईजी ते दरसन करत भई। सो ता समै प्रभु स्नान–चौकी पर ठाढ़े कटि पर्यंत स्नान करत हते। इतने ही याकों दुरि तें उन्मत्त दसा सों आवति देखि कै, जाकौ मन केवल चरनारविंद में लीन है और देह कागद कौ पूतरा पवन बस उड्यो चल्यो आवत होंइ, ता प्रकार याकों आवति देखि कै प्रभु वाइ प्रकार खडाउं पहरि कै वाके सन्मुख पधारे। सो वाके हाथ श्रीगुसांईजी अपने श्रीहस्त में पकरि कै ठाढ़ी करि यह बचन वा समै वासों बोले, जो–अमूकी ! तू कहां जात है ? हों तो तेरे काजे वहां डेरा छोरि स्नान करत तें इहां आयो हूं। सो सब श्रीगुसांईजी

याकौ हाथ पकरि कै ठाढ़ी करी, और यह बचन श्रीमुख तें प्रभु वासों कहें, तब वाकों चैतन्यता भई । सो श्रीगुसांईजी के चरनारविंद पर लौटि जाँइ कै बोहोत ही रुदन यह करन लागी। तब श्रीगुसांईजी याकौ समाधान करि अपने डेरा पास पधारे। तब श्रीगुसांईजी वासों यह श्रीमुख (तें) बचन कहे, जो–अमूकी ! तू तो धीर है। हरिदास की बेटी है। तेरे काजे तो अब के हम द्वारिकाजी कों आए हैं । तू ऐसो खेद क्यों करत है ? मोकों तो तेरी चिंता हती । तासों हों तो पास आयो हूं। अब तू कछू चिंता मति करे। जब तू हम कों प्रसन्न होंइ कै बिदा करेगी तब हम आगें कों चलेंगे । या भांति बोहोत बचन सों श्रीगुसांईजी वाकौ समाधान किये । तब वाने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! आप मेरो या भांति समाधान न करोगे तो और कौन मेरो समाधान करे ? मेरो धैर्य तो आप के हाथ हतो। तो आप की कृपा सों धैर्य रह्यो। नाँतरु मोकों या जग में कहूं बैठिवे कों ठौर न हती । मोकों माता पिताने तो मध्य समुद्र के धार पटकी हती। परि आप के आश्रय तें आप के नाम रूपी जहाज ऊपर चढि कै पार लगी। सो मोकों आप की कृपा ता दिन जानी परी । जा दिन या गाम में वा वैष्णव सों भेंट करवाए। तब में अपने मन कों जानी, जो–मोकों प्रभुन तो नाहीं छोरी । जो–याहू गाम में एक वैष्णव तादृसी नित्य चर्चा करन और श्रीकृष्ण–स्मरन करन आवत है । या प्रकार सों हरिदास की बेटी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी। तब श्रीगुसांईजी याकी बिनती सुनि कै बोहोत प्रसन्न भए। पाछें प्रभु स्नान करि मुद्रा

धरत हते। इतने ही वह वैष्णव श्रीगुसांईजी के दरसन कों आयो। सो श्रीगुसांईजी के दरसन करि दंडवत् करि भेंट धरि कै ठाढ़ो होंइ रह्यो। तब श्रीगुसांईजी वाकों बैठिवे कों आज्ञा दिये। तब वह वैष्णव दंडवत् करि प्रभुन के सन्मुख बैठ्यो। पाछें वा हरिदास की बेटी नें वा वैष्णव की प्रभुन आगें बोहोत ही सराहना करी। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न भए। पाछें हरिदास की बेटी के श्वसुरपक्ष के सगरे कुटुंबी आइ श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि वा बहू की प्रभुन आगें बोहोत ही प्रसंसा करन लागे। जो–महाराज ! हम कों जो आप के चरनारविंद की प्राप्ति भई है, सो या बहू कै प्रताप सों। नाँतरु हम मंदभागी आप के स्वरूप कों कहा जानते ? हमारे तो कुलदीपक यह बहू ही है। या प्रकार सगरे वाकी सराहना श्रीगुसांईजी आगें करन लागे। पाछें श्रीगुसांईजी मुद्रा धरि संध्या करि रसोई में पधारे। तब वे सब बैठि रहे। पाछें प्रभु भोग धरि बाहिर पधारे। तब इन मानिकचंद आदि सबन श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! अब आप कृपा हम ऊपर करि कै हम सबन कों नाम सुनाइये। तब उन सबन सों श्रीगुसांईजी यह आज्ञा किये, जो–सवारे तुम कों नाम सुनावेंगे। तब श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि सगरे अपने घर आए। पाछें सब बड़े सवारें उठि कै बहू सों सर्व प्रकार पूछि कै स्नान करि श्रीगुसांईजी पास आय दंडवत् करे। तब उन सबन कों श्रीगुसांईजी नाम सुनाय सबन कों वा दिन उपवास की आज्ञा दिये।

भावप्रकाश–काहे तें, ये सब जैनी हैं। सो उन कों कछू आचार–बिचार है नाहीं। तातें उपवास करायो।

तब उनन बिनती करि श्रीगुसांईजी कों अपने घर पधराय आछी भांति पाक करवाए। सो श्रीगुसांईजी पाक करि भोग धरि महाप्रसाद लिये। पाछें आप सगरे वा दिन उपवास करे। तब दूसरे दिन इन सबन कों श्रीगुसांईजी निवेदन करवाय उन के माथे सेवा कों एक स्वरूप श्रीबालकृष्णजी कौ पधराए। तब उन श्रीगुसांईजी सों बिनंती करी, जो–महाराज ! हम तो कछू सेवा कौ प्रकार जानत नाहीं। तब श्रीगुसांईजी हरिदास की बेटी कों सब सेवा कौ प्रकार समुझाय कै उन सबन सों कहे, जो–तुम अपनी बहू सों सब सेवा कौ प्रकार पूछि लीजियो। तब वे सगरे घर के श्रीगुसांईजी के श्रीमुख के बचन सुनि कै बोहोत प्रसन्न भए। वे मानिकचंद आदि सगरे हरिदास की बेटी की संगति तें ऐसी भांति वैष्णव भए। पाछें श्रीगुसांईजी कों अपनी श्रद्धा प्रमान बोहोत आछी भांति सों बिदा करे। पाछें इन सों श्रीगुसांईजी बिदा होंइ कै श्रीरनछोरजी के दरसन करन द्वारिकाजी कों पधारे।

तब यह हरिदास की बेटी अपने घर श्रीठाकुरजी की सेवा आछी भांति प्रभुन की आज्ञा प्रमान करन लागी। सो हरिदास की बेटी कों श्रीबालकृष्णजी थोरेई दिनन में सानुभावता जनावन लागे। यह हरिदास की बेटी सर्व सामग्री रसोई की बोहोत सुंदर करती। सो श्रीठाकुरजी आछी भांति सों आरोगते। सो एक दिन मानिकचंद की माता नें रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग धर्‌यो। तब वा दिन रात्रि कों मानिकचंद की माता सों श्रीठाकुरजी कहे, जो–मोकों तो तेरी बहू के हाथ की रसोई रुचत

है। पाछें वह हरिदास की बेटी सों श्रीठाकुरजी कहे, जो–आज तैनें रसोई क्यों न करी ? हों आरोग्यो तो आज सही। परि मोकों तेरी सास के हाथ की रसोई रुचत नाहीं। मोकों तो तेरे ही हाथकी रसोई आछी लगत है। तासों तू ही नित्य रसोई करियो। पाछें वाई दिन रात्रिकों श्रीठाकुरजी ने श्रीगुसांईजी सों यह बात कही, जो–आज मानिकचंद की माता ने रसोई करी हती। सो हों आरोग्यो तो सही। परि मोकों रसोई हरिदास की बेटी के हाथ की बोहोत रुचत है। तातें मानिकचंद की माता सों तुम इहां ते पधारती बार बरजियो। कहियो, जो–तू रसोई अपनी बहू के हाथ कराइयो। पाछें जब श्रीगुसांईजी द्वारिका तें फेरे, तब बधैया गाम में आयो। तब मानिकचंद और वह वैष्णव जाँइ कै आगें श्रीगुसांईजी कों अपने घर पधराइ ल्याये। पाछें श्रीगुसांईजी हरिदास की बेटी सों वा दिन के समाचार कहे, जो–तेरी करी रसोई श्रीबालकृष्णजी या प्रकार सों अंगीकार करत हैं। तब हरिदास की बेटीने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! हों तो कछू करि जानत नाहीं। परि श्रीठाकुरजी परम दयाल हैं। जो–तुम्हारी कानि तैं मेरी करी रसोई अरोगत हैं। याकौ ये बचन सुनि कै श्रीगुसांईजी वा हरिदास की बेटी ऊपर बोहोत प्रसन्न भए। पाछें ताही समै श्रीगुसांईजी मानिकचंद की माता सों कहे, जो–तुम वृद्ध हो, तातें तुम सों बने सो ऊपर की सेवा करिवो करो। और यह हरिदास की बेटी कों नित्य रसोई में न्हवायो करो। अभी यह बालक है। और रसोई कौ काम बालक ही कौ है। तब मानिकचंद की माता ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी,

जो–महाराज ! श्रीठाकुरजी आप हमारे माथे पधराये ता दिन पाछें मैं एक दिन रसोई करी ही । सो मेरी करी रसोई श्रीठाकुरजी कों रुची नाहीं । और मोसों रसोई होंइ सकत हू नाहीं । यह बचन मानिकचंद की माता के सुनि कै श्रीगुसांईजी चुप करि रहे । अपने मन में श्रीगुसांईजी जानें, जो–श्रीबालकृष्णजी इन हूं को यह बात जनाए हैं । पाछें श्रीगुसांईजी वासों यह आज्ञा करि कै आप चुप करि रहे । ता पाछें श्रीगुसांईजी वा वैष्णव के घर पधारे । सो वह वैष्णव बोहोत भक्तिभाव सों श्रीगुसांईजी को अपने घर पधराए । पाछें श्रीगुसांईजी स्नान करि, रसोई करि, श्रीठाकुरजी की सेवा करि, वाकों पातरि धरि, महाप्रसाद की आज्ञा करि कै विश्राम कों पधारे । पाछें वह वैष्णव महाप्रसाद लै श्रीगुसांईजी पास आइ, दंडवत् करि प्रभुन की आज्ञा पाइ कै बैठ्यो । तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णव सों हरिदास की बेटी के समाचार पूछे । तब वाने जा दिन तें याकौ संग भयो हतो ता दिन तें सर्व सांगोपांग समाचार श्रीगुसांईजी आगें वा वैष्णव ने निरूपन करे । तब याकी दसा वा वैष्णव सों सुनि कै श्रीगुसांईजी वा ऊपर बोहोत प्रसन्न भए । पाछें दिन होइ वा वैष्णव के घर आपु बिराजे । तीसरे दिन मानिकचंद के घर श्रीगुसांईजी फेरि पधारे । सो जब ही श्रीगुसांईजी चलिवे कौ नाम लै तब ही हरिदास की बेटी बोहोत ही हठ करे । सो श्रीगुसांईजी दोइ चारि दिन रहि जांई । या प्रकार महिना दोइ श्रीगुसांईजी मानिकचंद के घर बिराजे । ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल कों विजय किये । तब मानिकचंद यथासक्ति भेंट करि

थोरीसी दूरि पहोंचावन आये। तब श्रीगुसांईजी मानिकचंद सों यह आज्ञा करे, जो–यह हरिदास की बेटी है सो मेरी अनन्य सेवक है। तासों जो याके कहे में रहेगो ताकौ कल्यान ही होइगो। पाछें यह बचन कहि कै श्रीगुसांईजी उन मानिकचंद कों बिदा किये। और आप आगें पधारे। और मानिकचंद अपने घर आइ श्रीगुसांईजी के श्रीमुख के बचन अपने घर में सगरेन आगें कहे। तब मानिकचंद के बचन सुनि कै सगरे चुप करि रहे। वह हरिदास की बेटी श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती।

वार्ता प्रसंग–२

पाछें केतेक दिन कों हरिदास आप श्रीरनछोरजी के दरसन करन कों द्वारिकाजी कों चले। सो मानिकचंद के गाम में ही आए। तब मानिकचंद ने अपनी स्त्री की उनहारि सों हरिदास कों पहिचाने। सो हरिदास तो आगे कों चले जात हते। तब मानिकचंद अपनी हाट तें उतरि हरिदास के पांवन परि श्रीकृष्ण–स्मरन करि कै अपनी हाट ऊपर लिवाइ ल्याये। तब हरिदास अपने मन में तो जान्यो, जो–यह है तो वैष्णव सही। पाछें हरिदास मानिकचंद की हाट ऊपर बैठि कै पूछे, जो–तुम कौन के सेवक हो ? और कौन ज्ञाति हो ? और कहा तुम्हारो नाम है ? तब मानिकचंद ने अपनो नाम, गाम, ज्ञाति सब हरिदास आगें कह्यो। पाछें श्रीगुसांईजी के सेवक कहे। तब तो हरिदास अपने मन में बोहोत ही खेद करन लागे। जो–देखो ! अपनी ज्ञाति कौ यह बर श्रीगुसांईजी कौ सेवक निकट ही हतो। परि हमने न जान्यो। नाँतरु हम अपनी बेटी याही कों विवाहि देते।

कौन जाने वह प्रोहित वा बापड़ी कौ कौन से गाम में कौन के घर विवाह करि आयो है ? वह मेरी बेटी या वर योग्य हती। तब मानिकचंद ने हरिदास सों पूछ्यो, जो–तुम्हारो नाम कहा है ? और कौन के सेवक हो ? कहा तुम्हारी ज्ञाति है ? तब हरिदास अपनो नाम, गाम, ज्ञाति सब मानिकचंद आगें कहे। पाछें श्रीगुसांईजी के सेवक बताए। तब तो मानिकचंद अति आनंद पाय हरिदास के पाँयन लागि, मिलि, बोहोत सराहना करे। जो हरिदासजी ! आज तुम हम कों कृतारथ करे। जो–हमारी हाट ऊपर पधारे। अब तो सीधो लेहु। घर चलि रसोई करि प्रसाद लेहु। तब हरिदास वा हाट सों सीधो लै मानिकचंद के साथ मानिकचंद के घर कों चले। सो मानिकचंद तो उहां जाँइ अपनी स्त्री सों कहे, जो–तेरे पिता हरिदास जी द्वारे ठाढ़े हैं। तिनकों तूँ जाँइ कै भीतर लिवाइ लाउ। तब हरिदास की बेटी ने अपने पति मानिकचंद सों कही, जो–तुम तो मेरी हांसी करत हो। मेरे पिता इहां कहा कारन आवेंगे ? तब मानिकचंद ने स्त्री सो कह्यो, जो–तुम एक बार घर के द्वारें जाइ कै देखो तो खरी। तब स्त्री द्वारें आइ देखें तो पिता द्वार ऊपर ठाढ़ो है। तब वह पाँवन परि मिली। तब हरिदास अति आनंद पाई बेटी के साथ घर में भीतर गए। तब वह बोहोत खेद करि रोवन लागी। और हरिदास हू बोहोत गद्गद् कंठ होइ वाकौ समाधान कर्‍यो। पाछें वह सीधो लै बीनि फटकि, स्नान करि रसोई करन लागी। तब वाने पिता सों कही, जो अब तुम उठि के स्नान करो। तब हरिदास उठि स्नान करि मंदिर में जाँइ उत्थापन करे। सो श्रीबालकृष्णजी के दरसन

करि अति आनंद पाय श्रीठाकुरजी की सर्व सेवा सों पहोंचि सयन–भोग धरि हरिदास बाहिर आय बैठें। तब बेटी ने पिता सों कही, जो–तुम तो मोकों बीच धारा में पटकी हुती। परि मोकों श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै बचाई। नाँतरु मोकों कहूं ठौर न हती। और मैंने तो तुम्हारे माथे हत्या देवे कौ विचार अपने मनमें कर्‍यो हतो। परि श्रीगुसांईजी ने इन कौ मन मेरी सास द्वारा फेरयो। तब इन कौ एक वैष्णव द्वारा मन फिर्‍यो। तातें यह सर्व कृपा तुम श्रीगुसांईजी की जानियो। ये बचन बेटी के सुनि हरिदास बोहोत लज्या पाइ, मंदिर में जाँइ, भोग श्रीठाकुरजी कौ सराई, आर्ति करि, श्रीठाकुरजी कों पोढाइ, प्रसाद लीने। पाछें मानिकचंद के मातापिता आदि सगरे हरिदास सों मिले। अपनी बहू की सराहना बोहोत करे। तब हरिदास उन के बचन सुनि कै बोहोत ही आनंद पाए। पाछें मानिकचंद की माता ने श्रीठाकुरजी के रसोई करिवे के सर्व समाचार जा दिन के कहे। तब हरिदास बेटी की उपमा सुनि कै अपने मन में बोहोत प्रसन्न भए। पाछें मानिकचंद नें वा वैष्णव कों खबर करी, जो–हरिदास हमारे घर पधारे हैं। तब वह वैष्णव हरिदासजी कों मिलिवे कों मानिकचंद के घर आय हरिदास कों मिले। पाछें हरिदास ने वा वैष्णव कों अपने पास बैठारि कै कुसल समाचार पूछे। ता पाछें बेटी ने पिता सों कही, जो–यह धीर है, और यह कृपा जो सब भई है सो इन कौ प्रताप जानियो। और सगरे मानिकचंद के घर के वा वैष्णव की सराहना करन लागे। तब वैष्णव ने इन सों कह्यो, जो–तुम मेरी सराहना करत हो सो क्यों करत हो ?

सराहना तो हरिदासजी की करो । जाके प्रताप सों तुम कों श्रीगुसांईजी के चरनारविंद की प्राप्ति भई । और ये हरिदासजी ऐसें भगवदीय हैं, जिनने राजद्वार में श्रीगुसांईजी कौ डंका या प्रकार बजायो । जो–मेरता सहित राजा जेंमलजी श्रीगुसांईजी की सरनि आए । इन के धैर्य की उपमा करो । जो अपनो प्रान देनो कर्‌यो । परि श्रीगुसांईजी कौ आश्रय न छोर्‌यो । इन के धैर्य की उपमा कहा जीव करेगो ? पाछें या प्रकार परस्पर बतराइ यह वैष्णव अपने घर गयो । पाछें हरिदास बड़े सवारे देहकृत्य करि चलन लागे । तब बेटी बोहोत खेद करन लागी । तब हरिदास ने बेटी सों कही, जो–बेटी ! याही प्रकार तेरी माता तेरे मिलिवे कों खेद बोहोत करत हैं । तासों हों एक बार पाछो घर जाउंगो । तहां सों हों तेरी माता कों इहां तो पास तेरे मिलिवे कों लिवाइ लाउंगो । तब जो–तेरी इच्छा में आवे तब तू हम कों इहां सों बिदा करियो । तब पिता के ये बचन सुनि कै बेटी अति प्रसन्न होंइ पिता कों घर कों बिदा कर्‌यो । सो हरिदास मेरता में अपने घर आइ बोहोत सामग्री बासन कपड़ा और जो दाइजे कौ सामान सर्व होत है सो सिद्ध कराए । तब अपनी स्त्री सों हरिदास ने ये बेटी के सब समाचार कहे । तब स्त्री ने कही, जो–हों तो अब एक बार अपनी बेटी सों मिलोंगी । तासों तुम बेगि मोकों लिवाइ चलो । सो वाने बेटी के लिये बोहोत गहनो लियो । और श्रीठाकुरजी कों संग पधराय लै, सब सामान लै घर तें चले । तब एक मनुष्य बेटी पास पठायो । ता सों ये समाचार बेटी सों कहाए, जो–हमारे साथ श्रीठाकुरजी पधारत हैं । तातें एक घर

अपने पास कौ खासा कराइ जल भराइ चूल्हा कराइ राखियो। जो–श्रीठाकुरजी पधारे पाछें अवार न होंइ। तब वे मानिकचंद अति आनंद पाइ घर सिद्ध कराय राख्यो। सो हरिदास तो आवत ही वा घर में पधारे। और हरिदास की स्त्री तो अपनी बेटी के पास गई। पाछें हरिदास तो सब वस्तू–भाव पधराइ कै श्रीठाकुरजी की सेवा में स्नान करे। और ये तो मा–बेटी भेंटि कै अति आनंद पाय कै वह तो बेटी के मंदिर में न्हाइ मंदिर सों पहोंचि कै बेटी कों अपने घर लिवाइ ल्याई। पाछें इहां दोऊ स्नान करि हरिदास रसोई करत हते तहां ये दोऊ जाँइ कै इनन रसोई करी। पाछें हिलिमिलि कै श्रीठाकुरजी के सेवा करि कै भोग धरि समयानुसार भोग सराइ कै जब ही हरिदास की बेटी मंदिर में जाँइ श्रीठाकुरजी के चरन–परस करे, तब श्रीठाकुरजी वाके ऊपर बोहोत प्रसन्न होंइ कै वासों कहे, जो–अमूकी ! तू आछी है ? तब यह श्रीठाकुरजी सों बोली, जो–अब तो तुम योंही कहोगे। जो–हों आछी न होती तो तुम मेरे पास कौन भांति पधारते ? परि तुम तो आछें हो ? जो–मेरी खबरि प्रथम न राखी। अब मोसों पूछे, जो–अमूकी ! तू आछी है ? यह सब निठुराई मैं तुम्हारी जानी। परि तुम तो श्रीगुसांईजी के बस हो। तातें तुम्हारी निठुराई इहां न चली ! यह वाके निठुर बचन सुनि कै श्रीठाकुरजी ने हँसि कै अपने चरनारविंद पसार दिये। तब वाने श्रीठाकुरजी के चरन–परस किये। श्रीठाकुरजी अपनी स्व इच्छा सों कराए। वह हरिदासकी बेटी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती।

पाछें मानिकचंद आदि सगरेन कों हरिदास ने प्रसाद लेवे कों

अपने घर बुलाए। सो वे सगरे हरिदास के घर आइ कै प्रसाद भली भांति सों लिये। पाछें वह सब दाइजा कौ सामान जो हरिदास अपने घर तें ल्याये हते, सो सबन कों सब पहराइ दीनें। पाछें केतेक दिन हरिदास वा गाम में रहे। ता पाछें हरिदास द्वारिकाजी जाँइ तहां श्रीरनछोरजी के दरसन करि कै पाछें फेरि मानिकचंद के गाम में आए। तहां केतेक दिन रहे। पाछें मानिकचंद कों साथ लै कै अपनी बेटी कों साथ लै कै हरिदास मानिकचंद के गाम सों स्त्री सहित श्रीठाकुरजी सहित चले। सो कछूक ही दिन में मेरता गाम में अपने घर आए। पाछें मानिकचंद कों हरिदास ने बोहोत दिन लों मेरता में राखे। ता पाछें हरिदास बोहोत द्रव्य दैकै मानिकचंद कों और बेटी अपनी कों प्रसन्न करि मेरता सों बिदा करि कै उन के गाम घर पठाए। ता पाछें हरिदास परस्पर आप उन कों बुलावते। और आप हू हरिदास काहू समै बेटी कों मिलन जाते। या प्रकार दोऊ जन अति प्रसन्न भए रहते।

भावप्रकाश–तातें जीव को संगति चहिए। जो–या जीव कों संगति भगवदीय की होंइ तो श्रीनाथजी या ऊपर निश्चय कृपा करें। मन की गम्य संगति तें उत्कर्ष होंइ।

वह हरिदास की बेटी श्रीगुसांईजी ऐसी की कृपापात्र भगवदीय हती। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए? ॥ वार्ता ॥ २७ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक नागर ब्राह्मन बड़नगरा, गुजरात में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'दिव्यरत्ना' है। सो इन की देह दिव्य रत्न के समान दमकति है। ये पुलिंदिनी के यूथ में हैं। 'गति उत्तालिका' तें प्रगटी हैं, तातें उन के भाव रूप हैं।

ये गुजरात में एक बड़नगरा नागर ब्राह्मन के घर जन्म्यो। सो वह नागर सैव हतो। वाकों महादेवजी कौ इष्ट हतो। सो बेटा बरस बारह कौ भयो तब वाकों एक वैष्णव कौ संग भयो। सो वह वैष्णव याके घर के पास रहत हतो। वह श्रीगुसांईजी कौ सेवक हतो। वाके इहां नित्य भगवद्वार्ता होंइ। सो यह ब्राह्मन कौ लरिका नित्य वाके उहां जांइ वार्ता सुने। सो एक दिन यह बात वा ब्राह्मन ने जानी। तब वह अपने बेटा कों समुझाय कह्यो, जो–बेटा ! अपने तो सैव हैं। अपने इष्ट तो महादेवजी हैं। तातें महादेवजी की कथा–वार्ता छोरि और की न सुननी। ऐसें बोहोत कह्यो। परि यह बात बेटा के मन में न आइ। सो यह तो वा वैष्णव के उहां नित्य जांइ। श्रीठाकुरजी के दरसन हू करे। वह वैष्णव वाकों प्रसाद दै सोऊ खाँय। या प्रकार यह लरिका वैष्णवन कौ संग करे। सो एक दिन वा ब्राह्मन ने अपने बेटा कों बोहोत मार्‌यो। और कह्यो, जो–क्योंरे ! मैं तोकों इतनो समुझायो तोऊ तू समुझ्यो नाहीं ? हमारे कुल कौ ब्रत भंग कियो ? महादेव कों छोरि और के दरसन करत है, प्रसाद लैत है ? और वैष्णव कौ संग करत है ? ता पाछें वह ब्राह्मन ने अपने बेटा कों घर में मूंदि घर कौ तारो मार्‌यो। सो बाहिर निकसन न दै। खाँइवे के समै वाकों खाइवे कों दै आवे। परि यह लरिका कछू खाँइ, पीवे नाहीं। ऐसें करत तीन दिन भए। तब यह लरिका निश्चेष्ट होंइ रह्यो। तब तो वह ब्राह्मन डरप्यो। जाने, जो–यह मरि जाइगो। पाछें वा ब्राह्मन ने बेटा कों छोर्‌यो। तब बेटा तो घर तें निकसि कोऊ जाने नाहीं या भांति वा वैष्णव के घर गयो। और अपने सब समाचार वा वैष्णव, सों कहे। जो–हों या प्रकार तीन दिन भूखो रह्यो, तब निकसन पायो हूं। तब वा वैष्णव ने वाकों महाप्रसाद खवायो। पाछें जल पिवायो। फेरि कह्यो, जो–अब तू अपने घर जा। उहां ही रहि। यहां मति आयो करि। नाहक कलेस होंइ सो आछौ नाहीं। परि यह लरिका मान्यो नाहीं। यह तो नित्य भगवद्वार्ता सुनिवे कों आवे। ऐसैं करत वह बरस बीस कौ भयो। तब वह ब्राह्मन मर्‌यो। पाछें यह निःसंक व्है वा वैष्णव के घर जान लाग्यो। सो भगवद्वार्ता बोहोत रुचि करि सुनतो। ता पाछें एक दिन याने वा वैष्णव सों कह्यो, जो–तुम मोकों वैष्णव करो। अब मेरे कोई प्रतिबंध नाहीं। तब वा वैष्णव ने कह्यो, जो–तुम गोकुल जांइ श्रीगुसांईजी के सेवक होऊ, वैष्णव होऊ। हम हूं उन के सेवक हैं। या काल में श्रीगुसांईजी श्रीविट्ठलनाथजी ही एक साँचे गुरु हैं। काहेतें, उन के अधीन श्रीगोवर्द्धननाथजी आप रहत हैं। तातें उन की सरनि गए तें जीव कृतार्थ होत है। तब तो वह वैष्णव सों पूछ्यो जो–श्रीगुसांईजी श्रीविट्ठलनाथजी आप कहां बिराजत हैं ? तब वा वैष्णव ने कही, जो–वे तो आप श्रीगोकुल बिराजत हैं। तब यह नागर ब्राह्मन यात्रा कै मिस श्रीगोकुल कों चल्यो।

वार्ता प्रसंग–१

सो वह नागर तीर्थयात्रा करत श्रीगोकुल आयो। तहां वा नागर

कों श्रीठकुरानी घाट ऊपर श्रीगुसांईजी कौ दरसन अलौकिक भयो। तब वा नागर ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! कृपा करि कै मोकों सरनि लीजे। तब श्रीगुसांईजी आप वा नागर सों यह आज्ञा किये, जो–तुम श्रीयमुनाजी में स्नान करो। पाछें हम तुम कों सेवक करेंगे। तब वह नागर श्रीयमुनाजी में स्नान करि प्रभुन पास आइ हाथ जोरि ठाढ़ो भयो। तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करि कै वाकों सरनि लिये। नाम–समर्पन करवाए। तब वा नागर ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करि कह्यो, जो–महाराज ! मेरी ज्ञाति के बहिर्मुख हैं। सो मोकों दुःख देइंगे। तब श्रीगुसांईजी वाकों एक गोवर्द्धन–सिला दै कै कहें, जो–तोकों संकट परे तब तू इन कों दूध सों न्हवाई कै अभ्यंग करि कै यथासक्ति सामग्री भोग धरियो। पाछें प्रार्थना करियो।

भावप्रकाश–यामें यह जतायो, जो–वैष्णव कों कछू संकट आइ परे तो श्रीगोवर्द्धन की सरनि जानो। उन की प्रार्थना करनी। काहेतें, ठाकुर तो लीला परवस हैं। तातें उन को प्रार्थना किये तें श्रम होत हैं। और श्रीगोवर्द्धन विष्णु कौ स्वरूप हैं। तातें ये सदा वैष्णवन की रक्षा करत हैं। आगें हू इनन ब्रज की रक्षा कीनी है। तातें ठाकुर ने श्रीगोवर्द्धन कों अपनो कुल–देवता मान्यो है या भाव तें वैष्णव कों हू श्रीगोवर्द्धन की सेवा–पूजा करनी। और दूध न्हवाइवे कौ अभिप्राय यह है, जो–दूध है सौ उज्ज्वल भक्ति–रस कौ स्वरूप है। सो श्रीगोवर्द्धन आप हरिदासवर्य हैं। तातें ये भक्ति–रस सों सदैव स्नान करत हैं। ता करि ये ठाकुर कों प्रिय हैं।

पाछें वह नागर तीर्थ करि कै अपने घर आयो। तब श्रीगोवर्द्धन सिला कों भोग धरि कै सगरी ज्ञाति कों ब्रह्मभोजन करवायो। तब सबन आइ तिलक माथे माला गरे में देखी। सो यासों पूछि कै क्रोध करि कै सब चलन लागे। तब इन, उन सों

कही, जो–तुम क्यों जात हो ? तब उन सबन या नागर सों कही, जो–तू महादेव कों छोरि कै माला पहिर्यो। तातें हम तो तेरे हाथ कौ न खाँईंगे। तब याने उन सों कही, जो–याकौ जुवाब हों तुम कों एक घरी में देउंगो। पाछें यह श्रीगोवर्द्धन सिला कों दूध सों न्हवाइ अभ्यंग करि (और) सामग्री आगें उनके धरि कै दंडवत् करि बिनती करि कै कह्यो, जो–महाराज ! मेरी लाज तुम्हारे हाथ है। नाँतरु मोकों ये ज्ञाति के दुष्ट नागर हैं सो रहन न देइंगे। तब यासों श्रीगिरिराजजी कहे, जो मेरे प्रसाद की इन कों योग्यता नाहीं है। परि इन कों माहात्म्य दिखाऊंगो। पाछें श्रीगिरिराज ने सब देवता बुलाए। सो विमान पर द्वै एक घरी में सब आइ कै प्रसाद की सुंगध लैन लागे। और हाथ जोरि जोरि कै नमन करन लागे। पाछें ब्राह्मनन के देखत सब स्वर्ग कों गए। सो वह माहात्म्य सब ब्राह्मनन ने हू देख्यो। सो सब इन ब्राह्मन के पांईन परे। पाछें इन ब्राह्मन ने सब कों सीधो दिवाइ दियो। तामें कितनेक दैवी हते सो पाछें तें वैष्णव भए।

सो यह नागर श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कहां तांइ कहिए। वार्ता ॥ २८ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक सनाढ्य ब्राह्मन, सो वह मथुराजी में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत है–

भावप्रकाश–ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'प्रमदा' है। सो प्रमदा 'गतिउत्तालिका' तें प्रगटी हैं। तातें इन के भावरूप हैं। और प्रमदा श्रीयमुनाजी के यूथ में हैं। तातें श्रीयमुनाजी के स्वरूप कों ये नीकी भांति जानति हैं। श्रीयमुनाजी द्वारा भगवद्रस की प्राप्ति भई है। तातें श्रीयमुनाजी में प्रमदा की प्रीति हैं।

ये मथुरा में सनाढ्य ब्राह्मन के जनम्यो। सो बरस बीस कौ भयो। ता समै श्रीगुसांईजी

आप अड़ेल ते विजय करि मथुराजी में आइ बिराजे। तहां श्रीगुसांईजी आप नित्य विश्रांत घाट संध्या करन कों पधारते। पाछें केसोरायजी के दरसन कों पधारते। सो एक दिन यह ब्राह्मन केसोरायजी के दरसन कों गयो हतो। ता समै श्रीगुसांईजी आप केसोरायजी के मंदिर में मथुरिया चोबेन सों श्रीयमुनाजी कौ माहात्म्य कहत हते। सो या ब्राह्मन न यह बात सुनि। तब तो यह ब्राह्मन अपने मन में बिचार कियो, जो–इन की सरनि जाँइ इनके सेवक हूजिये तो आछौ। पाछें श्रीगुसांईजी आप केसोरायजी के दरसन करि अपने घर पधारे। तब यह ब्राह्मन हू श्रीगुसांईजी के संग ही संग आयो। पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीनवनीतप्रियजी की राजभोग–आर्ति किये। ता पाछें अपनी बैठक में आइ बिराजे। तब यह ब्राह्मन दोऊ हाथ जोरि बिनती कियो, जो–महाराज! कृपा करि मोकों सेवक कीजिये। तब श्रीगुसांईजी याकौ सुद्ध भाव देखि या ब्राह्मन कों नाम सुनाये। पाछें एक ब्रत कराइ दूसरे दिन निवेदन कराए। तब यह ब्राह्मन श्रीगुसांईजी सों फेरि बिनती कियो, जो–महाराज! कृपा करि मोकों श्रीयमुनाजी कौ स्वरूप समुझाइए। तब श्रीगुसांईजी याकी दीनता देखि ताही समै 'यमुनाष्टपदी' करि वाकों दीनी। पाछें श्रीगुसांईजी आप या ब्राह्मन कों आज्ञा किये, जो–तू याको पाठ नित्य कर्‌यो। तब यह ब्राह्मन बिनती कियो, जो–महाराज! हम अज्ञानी जीव हैं, तातें कृपा करि याकौ भाव समुझाइए तो आछौ। तब श्रीगुसांईजी याको 'यमुनाष्टपदी' कौ भाव खोलि कै कह्यो। तब तो यह ब्राह्मन श्रीयमुनाजी के स्वरूप में मगन होंइ गयो।

पाछें वह ब्राह्मन श्रीगुसांईजी सों बिनती कियो, जो–महाराज! कृपा करि मोकों श्रीयुमनाजी की सेवा पधराइ दीजिए। तो हों इन की सेवा करूं। तब श्रीगुसांईजी आप या ब्राह्मन कों श्रीयमुनाजी की रेनुका एक थेली में दै कहे, जो–तू इन की आछी भांति सेवा करियो। तोकों श्रीयमुनाजी कृपा करि सब अनुभव जतावेंगे। पाछें यह ब्राह्मन श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि घर आयो। ता दिन तें यह ब्राह्मन श्रीयमुनाजी कों स्वरूपात्मक करि जानन लाग्यो।

वार्ता प्रसंग–१

सो उह ब्राह्मन श्रीयमुनाजी कौ अपरस में परस करें, पान करें। श्रीयमुनाजी में पांव (हू) न धरें। सगरो कार्य कुआँ के जल सों करे। प्रभुन को झारी अपरस में श्रीयमुनाजल ल्योई भरें। सो श्रीमथुराजी के वैष्णव श्रीगुसांईजी के बालकन सों कहे, जो–वाकी परीक्षा लेऊ। तब श्रीगिरिधरजी नाहीं किये। जो–

वैष्णव की परीक्षा लेनी नाहीं। काहेतें ? ये अपराध है। पाछें और बालक मिलि कै वाकों नाव पर बैठारि कै लै गए। बीच में पुलिन हो तहां जांइ बिराजे। और नाववारेन सों कहे, जो–पार जा। बुलावें तब अइयो। इतने करत प्रहर दिन रह्यो। तब उन बिनती करी, जो–महाराज ! मेरे न्हाइवे कौ समै भयो है। नाव मँगाइए। सो नाव मँगाय के सगरे बालक नाव पर चढे। और वासों कहे, तू पुलिन में बैठि। हम कहें तब तू नाव पर चढियो। सो वह बैठ्यो रह्यो; पुलिन में। और वे तो नाव चलाइ पार आए। तब तो वह महा चिंता आर्त्त सो प्रनति होंन लाग्यो। तब कमल प्रगट भए। और श्रीयमुनाजी याकों दरसन दै कै यासों कहे, जो–या पर चढि कै तू जा। तब वह आयो। सो यह बात सब बालकन ने पार तें देखी। सो सब बालक याकी सराहना करन लागे। पाछें सब मिलि कै श्रीगिरिधरजी सों यह प्रकार कह्यो। तब श्रीगिरिधरजी कहे, जो–यमुनाष्टक (यमुनाष्टपदी ?) याही कों फलित भयो।

भावप्रकाश–या वार्ता में यह जताए, जो–वैष्णव कों श्रीयमुनाजी कौ परस बिना अपरस के न करनो। न्हावें तो प्रथम कुआँ के जल सों न्हाय। ता पाछें श्रीजमुनाजी में स्नान करनो। और वैष्णव कों टेक राखनी। काहेतें ? वैष्णव कों टेक ही बड़ो धर्म है। जो–टेक हती तो या ब्राह्मन कों श्रीयमुनाजी प्रगट दरसन दै अपनो अलौकिक स्वरूप जतायो। अलौकिक कमल प्रगट किये।

तातें इन की वार्ता अनिर्वचनीय है। सो कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥ २९ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांइजी कौ सेवक एक रजपूत, द्वारिकाजी के मारग में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

वार्ता प्रसंग–१

सो एक समै श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें श्रीद्वारिकाजी श्रीरनछोरजी के दरसन कों पधारत हते। तहां मार्ग में एक गाम में डेरा किये हते। सो उहां एक रजपूत कों श्रीगुसांईजी कौ दरसन भयो। सो साक्षात् श्रीपूरन पुरुषोत्तम श्रीयसोदोत्संगलालित श्रीनंदरायकुमार कौ दरसन वा रजपूत कों भयो। तब वा रजपूत के मन में यह आई, जो–इन के सेवक हूजिये तो आछौ है। पाछें वा रजपूत ने दंडवत् करि दोऊ हाथ जोरि कै श्रीगुसांईजी सो बिनती करि कह्यो, जो–महाराज धिराज ! आप मो ऊपर कृपा अनुग्रह करि कै मोकों अपनो सेवक करिए। यह वाकी दीनता सुनि वाकी आर्ति जानि श्रीगुसांईजी आप कृपा करि कै वा रजपूत कों नाम सुनाय सेवक किये। तापाछें केतेक दिन में वह रजपूत श्रीगुसांईजी कौ लीला–विस्तार सुनि असवारी करि कै दोर्यो सो हिमालय कों चल्यो।

भावप्रकाश–काहेतें ? ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'रसालिका' है। ये 'गतिउत्तालिका' तें प्रगटी हैं। तातें इन के भावरूप हैं। सो रसालिका श्रीचंद्रावलीजी के स्वरूप में अनुरक्त हैं। तातें यहां हू श्रीगुसांईजी के स्वरूप में आसक्ति भई। सो अंतर्धान लीला सुनत ही। याकौ चित्त विक्षिप्त भयो।

सो दूसरी मजली श्रीगुसांईजी वा रजपूत कों दरसन दै, बचन दियो, जो–तोकों नित्य दरसन देऊंगो। तू दुःख मति पावे। तब वह रजपूत श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै अपने घर आयो। दुःख सब गयो।

सो वह रजपूत श्रीगुसांईजी कौ बड़ो कृपापात्र भगवदीय भयो। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ ३० ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी एक सेठ की बेटी, लाहौर में रहती, जाने चाचाजी के कहिवेतें अपने धनी कों जहर दियो। तिनकी वार्ता कौ भाव कहत है–

भावप्रकाश–ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'राईन' है। ये 'मनसुखा' गोप की बेटी हैं, तातें इन के भाव–रूप हैं।

सो वह सेठ की बेटी लाहौर में काहू बहिर्मुख के घर ब्याही हती। सो पहिले तहां न तो वैष्णव (जाँइ) न कोई वल्लभकुल जाँइ। न भगवद्धर्म। सो वह सेठ की बेटी ने कच्चे चना खाँइ कै बरस एक निर्वाह कियो। यह बात श्री श्रीगुसांईजी जानी। तब श्रीगुसांईजी वा ऊपर कृपा करि कै उहां चाचा हरिवंसजी कों पठाए। सो चाचा हरिवंसजी वा गाम में जाँइ पहोंचे। तहां एक बगीचा में डेरा कियो। परंतु वह सेठ की बेटी सों और चाचा हरिवंसजी सों एक महिना लों मिलाप न भयो। तब चाचा हरिवंसजी चुकटी माँगन लागे। तब वा सेठ की बेटी कौ घर आयो। तहां वह सेठ की बेटी चुकटी दैन आई। तब वा सेठ की बेटी चाचाजी कों तिलक–कंठी देखि जाने, जो–ये कोऊ वैष्णव हैं। तब तो वह सेठ की बेटी हरिवंसजी सों पूछ्यो, जो–तुम कौन के सेवक हो ? तब हरिवंसजी जानें, जो–येही वह लरिकिनी है। तब हरिवंसजी कहे, जो–हम श्रीगुसांईजी के सेवक हैं। तब वह सेठ की बेटी, हरिवंसजी कों पहिचानि, श्रीकृष्ण–स्मरन करि रोवन लागी। सो बोहोत ही रोई। पाछें हरिवंसजी वह सेठ की बेटी सों पूछ्यो, जो–तू क्यों रोवति है ? तोकों ऐसो कहा दुःख है ? तब वह सेठ की बेटी ने हरिवंसजी सों कह्यो, जो–हों श्रीगुसांईजी की सेवकिनी हूँ। मेरे मा–बाप हू श्रीगुसांईजी के सेवक हैं। वे गुजरात में रहत हैं। परि उनन मेरो

ब्याह यहां या बहिर्मुख के घर कियो है। सो सगरो घर धर्म कौ विरोधी है। आचार–बिचार कछू है नाहीं। यह म्लेच्छ देस है। वैष्णव, वल्लभकुल, कोऊ यहां आवत नाहीं। अब मैं कहा करूं? मैंने बरस एक लों कच्चे चना चवाई दिन निकासे हैं। इतनो कहि वह फेरि रोवन लागी। तब हरिवंसजी वाकों समझाय कै कहें, जो–तू रोवे मति। तेरे लिये तो मोकों श्रीगुसांईजी ने यहां लों पठायो है। तातें अब तू हों कहों सो करि। पाछें वह सेठकी बेटी रोवत तें बंद रही। तब चाचाजी कहें, जो–प्रभु बड़े दयाल हैं। तातें अपने जन की सुधि क्यों न लै? अब तेरो सब दुःख निवृत होइगो। तू धैर्य धरि एक उपाय करि। जो–तू अपने धनी कों जहर दै। तब वह सेठ की बेटी ने चाचाजी कौ बचन मानि कै अपने धनी कों जहर दियो। सो वह धनी मर्‍यो। सो घर के सब रोवन लागे। तब वह सेठ की बेटीनें अपने श्वसुर पक्षके सब मनुष्यन सों कह्यो, जो यह गाम के बाहिर बगीची है, तहां एक महापुरुष हैं। ताके पास तुम जाँइ कै बिनती करो, तो वह महापुरुष मेरे यह धनी कों जिवावें। यह मैंने सुपने में देख्यो। तब से सब गाम बाहिर बगीची में चले गए। सो तहां जांइ चाचा हरिवंसजी सों सबन बिनती करी, जो–तुम हमारे वह मनुष्य कों जिवावो, तो हम कों तुम जीव दान देऊ। तब हरिवंसजी ने उन सों कह्यो, जो–तुम सगरे घर के वैष्णव होऊ तो वह तुम्हारो मनुष्य जीवे। तब उन सबन नें हरिवंसजी सों कह्यो, जो–तुम कहोगे सोई हम सब करेंगे। परंतु तुम वाकों जिवावो, तो हम सबन ऊपर आप बड़ी ही कृपा

करो। तब हरिवंसजी ने चरनामृत दियो। सो उन नें लै जाँइ कै वाके मुख में घोरि कै डार्यो। तब वह जीयो।

भावप्रकाश–या वार्ता में यह बड़ो संदेह है, जो–हरिवंसजी सारिखे भगवदीय सेठ की बेटी कों या प्रकार जहर दैन कों क्यों कहे ? वे तो सर्व समर्थ हैं। क्षन में चाहे तो सगरे घरवारेन कों वैष्णव करि सकत हैं। तातें ऐसो लोक विरूद्ध कार्य करिवे कों क्यों कहे ? तहां कहत है, जो–चाचाजी या सेठ की बेटी कौ प्रारब्ध पूर्व–संबंध जाने। जो–पूर्व जन्म में यह एक राजा की बेटी ही। सो वह राजा बड़ो अभिमानी हतो। वह अपने घर में बेटी कों बड़ी होन न दै। जो–कोऊ बेटी होंइ ताकों जहर दै मरवाइ डारे। काहेतें, जो–बेटी के ब्याह कों माँग और तें करनी परे। तातें नीचो देखनो परे। यासों ऐंसे करे। सो या बेटी कों हू राजा ने जहर दै मरवाइ डारी। सो वह राजा या जन्म में याकौ धनी भयो है। सो अब यह सेठ की बेटी या जन्म में याकों जहर दै मारेगी । यह बात चाचाजी ने जानी। तातें यह प्रारब्ध–कर्म पूरो करन कों चाचाजी ने या प्रकार या सेठ की बेटी सों कह्यो। नाँतरु फेरि हू यह कार्य करनो परतो। तातें ऐसें कह्यो। पाछें चाचाजी प्रभुन कौ स्मरन करि चरनामृत दियो। तातें वाकौ नयो जन्म भयो। या प्रकार दोऊन के प्रारब्ध–कर्म मिटे। सो भगवदीय ऐसें दयालु होत हैं, जो–जन्म जन्म के प्रारब्ध क्षन में मिटाइ देत हैं।

पाछें उन सबन सों हरिवंसजी कहे, जो–अब तुम सब स्नान करि अपरस में वस्त्र नए कोरे पहरि आवो, वा मनुष्य सहित। तब हम तुम कों वैष्णव करें। सो वे सब घर के वा मनुष्य सहित स्नान करि नए वस्त्र कोरे पहरि आइ हरिवंसजी पास बिनती करे, जो–अब आप हम ऊपर कृपा अनुग्रह करि कै हम सबन कों वैष्णव करो। तुम्हारी कृपा तें हमारो मनुष्य जीयो है। तुम तो कोई बड़े महापुरुष हो। तब चाचाजी उन ऊपर कृपा करि उन सबन कों नाम सुनाय वैष्णव किये। तब वे सब बोहोत ही प्रसन्न भए।

ता पाछें चाचाजी उन सबन तें कहे, जो–अब जैसें यह बहू कहे तैसेई तुम करियो। तो सुख पाओगे। या प्रकार सब कों

समझाइ चाचाजी तहां तें चले। सो श्रीगोकुल आए। पाछें यह सब प्रकार चाचाजी श्रीगुसांईजी आगें कहे। सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए।

सो वह सेठ की बेटी श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती। जो–सगरे कुटुंबीन कों सेवक कराइ उनकौ उद्धार कियो। और श्रीगुसांईजी वाकी आर्ति सहि न सके। वाके लिये आप कृपा करि कै वा पास हरिवंसजी कों पठाए। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ ३१ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक कुम्हार, गुजरात कौ तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'परमानंद' हैं। सो परमानंद 'मनसुखा' गोप कौ भतीजा हैं। ये श्रीठाकुरजी की अतरंग लीला में सहायक है। तातें चंद्रकला की इन पर प्रीति हैं।

वार्ता प्रसंग–१

सो एक समै श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे। तहां वा कुम्हार कों श्रीगुसांईजी कौ दरसन भयो। तब वा कुम्हार के मन में यह आई, जो–इन कौ सेवक हूजिये तो आछौ है। पाछें वा कुम्हार ने साष्टांग दंडवत् करि हाथ जोरि कै श्रीगुसांईजी सों बिनती करि कह्यो, जो–महाराज! आप कृपा करि कै मोकों नाम सुनाइये। तब श्रीगुसांईजी करूनानिधान कों दया आई। सो वा कुम्हार सों कहें, जो–तू न्हाइ कै नई धोती पहरि कै नयो उपरेना ओढ़ि आऊ, तब तोकों नाम सुनावेंगे। तब वह कुम्हार जाँइ, न्हाई के नई धोती पहरि नयो उपरेना ओढ़ि कै आइ प्रभुन के सन्मुख ठाढ़ो भयो। तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करि कै वाकों नाम

सुनाए। पाछें श्रीगुसांईजी तो द्वारकाजी होंइ श्रीरनछोरजी के दरसन करि कै श्रीगोकुल कों पधारे। सो कछूक दिन में श्रीनवनीतप्रियजी के राजभोग आर्ति के दरसन किये।

ता पाछें केतेक दिन कों चाचा हरिवंसजी गुजरात के परदेस कों गए। तब गुजरात में या कुम्हार के घर चाचा हरिवंसजी गए। सो घर में याके में कछू सीधो नाहीं। तब (वह) बजार में गयो। तहां एक जिमींदार ने या कुम्हार सों कह्यो, जो–तू कुआँ खोदेगो? तब याने कही, जो–हां, हां! कुआँ खोदूंगो। परंतु चार दिन पीछे खोदूंगो। ऐसें वा जिमींदार सों यह कुम्हार कहि वा पास ते रुपैया एक ल्याय चाचा हरिवंसजी कों चारि दिन बिनती करि कै राखे। पाछें हरिवंसजी द्वारिकाजी कों चले। और वह कुम्हार वा जिमींदार कौ कुआँ खोदन लाग्यो। सो ऊपर तें हजारन मन माटी गिरी। ताके तरें रह्यो। तहां कह्यो 'श्रीवल्लभ', 'श्रीविट्ठल'। इतने रंच पोलो भयो। सो भीतर यही जपे। इतनें में चाचाजी सों काहू ने कह्यो, जो–अमूकौ कुम्हार कुआँ में दब्यो है। तब चाचाजी फिरि आए। तहां देखे तो वाके घर के रोवन लागे। कुआँ दिखाए। पाछें चाचाजी माटी कढ़ाइ निकारे। ता पाछें चाचाजी उहां ते द्वारिका गए।

भावप्रकाश–या वार्ता में यह जतायो, जो–भगवदीय वैष्णव घर आवे ताकौ समाधान आछी भांति सों स्नेहपूर्वक करनो। द्रव्य कौ सौकर्य न होंइ तोऊ उधारो लाइ कै करनो। परि विमुख न रहनो। क्यों? जो–भगवदीयन की कृपा तें जीव कों सदा सर्वदा कल्यान होंइ। सो चाचाजी की कृपा तें या कुम्हार कौ जीव बच्यो। तातें भगवदीय की सेवा ऐसो पदार्थ है।

वार्ता प्रसंग–२

बहौरि एक दिन वह कुम्हार के भाई पाहुने आयो। ताके लिये

मेवा मिश्रि डारि कै लडुवा किये । और पानि न हुतो सो कुम्हारी लैन कों गई । वाकौ मन लडुवा में । इतने दोइ कुम्हार वैष्णव आए । तिन कों या कुम्हार ने लडुवा खवाई दीने । सो वह कुम्हारी दौरि आइ कै देखि कै आगि सी लागी । पाछें भाई कों रोटी करि खवायो । सो यह कुम्हार घर में जो आछी वस्तू देखे सो वैष्णव कों देई । बासन कपरा । तब स्त्री ने और कुम्हार कियो । तब वह कुम्हार बोहोत प्रसन्न भयो । पाछें अकाल पर्‍यो । तब वह कुम्हारी कुम्हार भूखे मरे । इहां नित्य वैष्णव आय मंडली करें । तब वह कुम्हारी आय कै या कुम्हार के पांइन परि कै कही, जो–अब तुम मोकों घर में राखो । तब इन कह्यो, जो–अब घर में नाहीं । द्वार बाहिर रहो । प्रसाद देहिंगे ।

भावप्रकाश–काहेतें, जो–कुम्हारी धर्म की विरोधी है । इन के संग तें या कुम्हार कौ मन बिगरे । तब बहिर्मुखता प्राप्त होंइ । ताते उन कों घर में राखी नाहीं । और वैष्णव कौ यह धर्म है । जो–जीव मात्र पर दया राखनी । तामें यह त्तो स्त्री हैं । तातें प्रसाद दैन की कही ।

वह कुम्हार श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो । सो वाकों श्रीगुसांईजी की कृपा तें श्रीगुसांईजी ऊपर ऐसो दृढ़ विश्वास हतो । तातें उनकी वार्ता कहां तांई कहिए । वार्ता ३२ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक गोविंददास खवास, सनाढ्य ब्राह्मन, मथुरा में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये तामस भक्त हैं । लीला में इन कौ नाम 'नृत्यकला' है । सो नृत्यकला 'मनसुखा' गोप की छोटी बेटी हैं । तातें इन के भावरूप हैं । ये नृत्य में बोहोत प्रवीन हैं । यातें श्रीचंद्रावलीजी कों अतिप्रय हैं । ये चंद्रावलीजी के यूथ की हैं ।

ये गोविंददास मथुरा में एक सनाढ्य ब्राह्मन के जन्मे । सो वे बड़े भए, बरस बीस पच्चीस के । तब इन कों रागरंग कौ इस्क लग्यो । सो वेस्या भवैयान के संग रहे । नाच तमासो देख्यो

करे। सो कछूक दिन में गोविंददास नृत्य करिवो सिखे, संग करि। और गान हू करन लागे। पाछें गोविंददास नृत्य ऐसो करते, जो–सब कौऊ इन कौ नृत्य देखि मोहित व्है जाते। सो गोविंददास बड़े प्रसिद्ध भए। ता पाछें एक समै श्रीगुसांईजी मथुरा पधारे। तब काहू ने गोविंददास तें कह्यो, जो–श्रीगुसांईजी यहां पधारे हैं। अमूक ठौर बिराजत हैं। सो उन कों नृत्य–संगीत बोहोत प्रिय हैं। यहा बात सुनि कै गोविंददास श्रीगुसांईजी के दरसन कों आए। सो दरसन करत थकित व्है गए। पाछें श्रीगुसांईजी गोविंददास कों सावधान किये। और आज्ञा किये, जो–गोविंददास तुम अपनो नृत्य श्रीनवनीतप्रियजी कों दिखाऊ। ताही समै श्रीनवनीतप्रियजी के सिंगार के दरसन खुले। सो गोविंददास श्रीनवनीत प्रियजी के सन्मुख नृत्य करन लागे। सो नृत्य करत करत गोविंददास रस में तदाकार होंइ गए। वा समै श्रीनवनीतप्रियजी ने हू गोविंददास कों अलौकिक रीति सों दरसन दिये। सो दरसन होत ही मुर्च्छित व्है गए। पाछें टेरा खिंच्यो। तब श्रीगुसांईजी गोविंददास कों टेरि कै कहे, जो–गोविंददास! उठो तुम कों नवनीतप्रियजी के सदैव ऐसेंही दरसन होइंगे। तब गोविंददास ठाढ़े भए। पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती किये, जो–महाराज! मोकों कृपा करि सरन लीजिए। सदैव आप के चरन में राखिए। तब श्रीगुसांईजी कृपा करि गोविंददास कों नाम निवेदन कराए। ता पाछें चर्वित तांबुल दिये। सो लेत ही गोविंददास कों श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी, के स्वरूप कौ ज्ञान भयो। तब गोविंददास श्रीआचार्यजी के पद करन लागे। सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए। पाछें गोविंददास कों श्रीगुसांईजी कृपा करि अपनी खवासी दिये।

वार्ताप्रसंग–१

ये गोविंददास श्रीगुसांईजी की खवासी करते। और श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी कौ सेवा–सिंगार करे तब यह गोविंददास घूंघरू बांधि कै श्रीनवनीतप्रियजी के आगें नृत्य करें। सो एक समै श्रीराधाअष्टमी के दिन राजभोग तें पहोंचि कै श्रीगुसांईजी सगरे बालकन सहित रावल पधारे। इहां श्रीसोभा बेटीजी ने श्रीनवनीतप्रियजी कों उत्थापन की झारी भरी। पाछें भोग समै गोविंददास नृत्य श्रीनवनीतप्रियजी के आगें करन लागे। रस में तदाकार भए। सो एक पग के घूंघरू तूट्यो। तब

श्रीनवनीतप्रियजी ने अपने चरन के नूपुर गोविंददास कों पहिराये। सोऊ सुधि गोविंददास कों कछू नाहीं। पाछें घरी चारि रात्रि गई तब श्रीगुसांईजी सब बालकन सहित रावल तें श्रीगोकुल आए। सो सुने, जो–श्रीनवनीतप्रियजी के भोग कौ समै है। तब श्रीगुसांईजी मंदिर में आइ कछू कहन लागे। तब श्रीनवनीतप्रियजी ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो–तुम बोलो मति। पाछें अर्द्धरात्रि समै नृत्य रह्यो। तब सोभा बेटी कों सुधि आई। तब संध्याभोग सेनभोग इकठो धरि, समै भए भोग सराइ, सेन आर्ति करि कै, सोभा बेटीजी श्रीनवनीतप्रियजी कों सेन कराए। वे गोविंददास खवास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। सो सदैव समै के समै श्रीनवनीतप्रियजी के सन्निधान नृत्य करते। सदा प्रेम तें रस मत्त भरे रहते। बड़ेई कृपापात्र हते। तातें उन की वार्ता कौ पार नाहीं है। सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ ३३ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक ब्राह्मन गुजरात कौ बासी, ताकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

वार्ता प्रसंग – १

सो वह ब्राह्मन गुजरात तें ब्रज कों आयो हतो। सो प्रथम श्रीमथुराजी आइ विश्रांत स्नान कियो। पाछें वह ब्राह्मन अपने मन में बिचार्‌यो। जो–श्रीगोकुल बड़ो धाम सुनत हैं, तातें तहां चलि कै एक बार श्रीगुसांईजी कौ दरसन, श्रीगोकुलजी कौ दरसन तो करिये। ता पाछें ब्रजयात्रा परिक्रमा सब करि लेऊंगो। यह बिचारि कै वह ब्राह्मन श्रीमथुराजी तें श्रीगोकुल आयो। ता

समै श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी कों राजभोग धरि कै आप श्रीठकुरानी घाट ऊपर मध्याह्न की संध्यावंदन करिवे कों पधारे हते। तहां वा ब्राह्मन कों श्रीगुसांईजी कौ दरसन भयो। तब वा ब्राह्मन ने अपने मन में बिचारी, जो–इन कौ सेवक हूजिये तो आछौ है। पाछें वा ब्राह्मन ने श्रीगुसांईजी सों दंडवत् करि हाथ जोरि कै बिनती करी, जो–महाराजाधिराज ! मो ऊपर कृपा करि कै आप मोकों अपनो सेवक करिये। तब श्रीगुसांईजी आपने वा ब्राह्मन सों कह्यो, जो–तुम यह श्रीयमुनाजी में स्नान करि कै हम पास आओ तो, हम तुम कों नाम–समर्पन दै कै अपनो सेवक करें। तब वह ब्राह्मन श्रीयमुनाजी में स्नान करि कै श्रीगुसांईजी के पास आयो। तब श्रीगुसांईजी वा ऊपर अनुग्रह करि कै वा ब्राह्मन कों नाम–समर्पन कराए। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी के मंदिर में पधारे। तब वासों आज्ञा किये, जो–अब तेरो कहा मनोरथ है ? तब वानें कह्यो, जो–महाराज ! एक श्रीनवनीतप्रियजी और श्रीगोवर्द्धननाथजी की झांकी करि कै पाछें ब्रज की यात्रा परिक्रमा करूंगो। तब श्रीगुसांईजी मंदिर पधारत समै वा ब्राह्मन कों संग लै पधारे। सो वह ब्राह्मन तो बाहिर जगमोहन में प्रभुन की आज्ञा पाय कै बैठ्यो। और आप श्रीगुसांईजी भीतर मंदिर में पधारि श्रीनवनीतप्रियजी कौ राजभोग सराय, आचमन मुखवस्त्र करि, बीरी आरोगाइ कै किवाड़ दरसन के खोलि राजभोग–आर्ति श्रीगुसांईजी किये। सो दरसन करि श्रीनवनीतप्रियजी के, वह ब्राह्मन बोहोत प्रसन्न भयो। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी कौ अनोसर कराय

अपनी बैठक में पधारि वह ब्राह्मन सों कहे, जो–ब्राह्मन ! आज तुम इहांई प्रसाद लीजियो। यह वासों कहि कै आप श्रीगुसांईजी भीतर भोजन कों पधारे। सो भोजन करि आचमन करि बीरा आरोगि वा ब्राह्मन कों महाप्रसाद की पातरि जूठन धरी। सो महाप्रसाद लै कै वह ब्राह्मन अत्यंत प्रसन्न भयो। पाछें श्रीगुसांईजी आप बैठक में विश्राम करन लागे। तब वह ब्राह्मन ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! आज्ञा होइ तो सवारे मैं श्रीगिरिराज जाँइ कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि, पाछें ब्रज–परिक्रमा करूं। तब श्रीगुसांईजी आप कहे, जो–बोहोत आछौ। पाछें श्रीगुसांईजी विश्राम करि उत्थापन समै उठि, स्नान करि, श्रीनवनीतप्रियजी कों उत्थापन कराइ भोग, संध्या, सयन की सब सेवा सों पहोंचि कै अपनी बैठक में आई गादी–तकिया ऊपर आप बिराजे। सो उत्थापन तें सयन पर्यंत के सगरे दरसन श्रीनवनीतप्रियजी के करि वह ब्राह्मन बोहोत प्रसन्न भयो। पाछें सवारे वह ब्राह्मन श्रीगिरिराज गयो। तहां जाँइ श्रीगोवर्द्धननाथजी के राजभोग की आर्ति के दरसन करि कै अति ही प्रसन्न भयो। ता पाछें ब्रजयात्रा कों गयो। सो करि कै ब्रजयात्रा, श्रीगोकुल आइ श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै वह ब्राह्मन ने बिनती करी, जो–महाराजाधिराज ! मेरो सेवा कौ मनोरथ है। सो मोकों सेवा पधराय दीजिए।

भावप्रकाश – क्यों, जो–ये 'रोहिनीजी' की सखी हैं। इन तें प्रगटी हैं। तातें इन के भावरूप हैं। इन कौ नाम 'गोपदेवी' हैं। ये राजस भक्त हैं। सो गोपदेवी नंदालय में श्रीठाकुरजी की सेवा में सदा तत्पर रहत हैं। तातें यहां हू सेवा कौ मनोरथ भयो।

तब श्रीगुसांईजी मथुराजी पधारे। तब यह ब्राह्मन हू प्रभुन के

संग मथुरा गयो। तहां बजार में होंइ कै श्रीगुसांईजी पधारे हते। सो एक भरिया स्वरूप बोहोत करि, लिये, बैठ्यो हतो। तब श्रीगुसांईजी वह ब्राह्मन सों कहे, जो–यह भरिया पास तें तू वह स्वरूप कछू नोछावरि दै कै लै आऊ। तब वह ब्राह्मन भरिया कों नोछावरि दै कै स्वरूप लै आयो। सो श्रीगुसांईजी आप द्दष्टि भरि वह स्वरूप देखे। सो स्वरूप बोहोत सुंदर हतो। वह बालकृष्णजी हते। तिनके श्रीहस्तन में कड़ा हते। सो देखि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न व्है वा ब्राह्मन कों आप आज्ञा किये, जो–तू याकों पधराय ल्याऊ। तब या बाह्मन ने हाट पर आइ वा भरिया सों कह्यो, जो–ये कड़ा तू अपने बड़े करि लै। तब वह भरियाने या ब्राह्मन सों कह्यो, जो–अब तो सांझ भई है, तातें काल्हि बड़े करि लेउंगो। और काल्हि ही तू इन कों लै जइयो। तब वह वैष्णव ब्राह्मन ने अपने हाथ सों कड़ा तो बड़े करि लिये। सो वा कड़ान कों अपने पास राखे। पाछें स्वरूप कों उहांई राखि वह श्रीगुसांईजी के पास आयो। सो श्रीगुसांईजी की पोरी पर आइ बैठ्यो। तब प्रभु ब्रजबासी के लरिका कै स्वरूप करि कै श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो–फलानों वैष्णव मेरे कड़ा उतारि ल्यायो है। ऐसें तीन बार कह्यो।

भावप्रकाश – या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो–श्रीगुसांईजी की द्दष्टि परे तें वह साक्षात् स्वरूप सिद्ध भयो। सो अब वह हाट पें कैसें रहै ? तातें कड़ान के मिष करि ठाकुर यह जतायो। और या ब्राह्मन वैष्णव पें सेवा करवावनी है। तातें याकौ विश्वास द्दढ़ करिवे के तांई या प्रकार कहे।

तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णव ब्राह्मन कों बुलायो। पाछें यह बात कहि श्रीगुसांईजी वाकों खीझे। तब वह वैष्णव ब्राह्मन

श्रीगुसांईजी सों सब बात कह्यो । ता पाछें अर्द्धरात्रि जाँइ उह भरिया सों कह्यो, जो–उह स्वरूप दै । तब वा भरिया ने उह स्वरूप दियो । सो स्वरूप लै आइ वह ब्राह्मन ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो–महाराज ! वह श्रीबालकृष्णजी कौ स्वरूप ल्यायो हूं । तब श्रीगुसांईजी वा स्वरूप कों पंचामृत स्नान कराइ, अंग–वस्त्र करि कै ऋतु अनुसार वस्त्र वागा सिंगार करि भोग धरि, वा ब्राह्मन के माथे सेवा पधराइ, सब सेवा की रीति भांति नित्य की वर्ष दिन के उत्सवन की बताइ दिये । सो वह ब्राह्मन सेवा करन लाग्यो । तब थोरेई दिन में प्रभु सानुभावता जनावन लागे । वह ब्राह्मन श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो । सो वाकी वार्ता कहां तांई कहिए । वार्ता ॥ ३४ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक सनोढ़िया ब्राह्मन, ब्रज में रहतो, ताकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

वार्ता प्रसंग – १

सो वह सनोढ़िया ब्राह्मन आइ श्रीगुसांईजी सों बिनती करि कह्यो, जो–महाराज ! मोकों कृपा करि नाम दीजिये । तब श्रीगुसांईजी कृपा करि वा ब्राह्मन कों नाम सुनाए । ता ब्राह्मन के एक बहिन हती । सो वह ब्राह्मन अपनी बहिन कै घर गयो । तब याकों बोहोत आदर करि कै बहिन ने अपने घर में राख्यो । सो बहिन के, द्रव्य बोहोत संपत्ति देखी । सो द्रव्य संपत्ति देखि कै वह ब्राह्मन नें बहिन कों जहर दैकै मारी । गहना द्रव्य सब लै आयो । पाछें सवेरे घर के लोगन वाकौ संस्कार कियो । जाने जो–भाई मारि गयो है । भले मनुष्य हते तासों प्रगट नाहीं करे ।

सो कछूक दिन पाछें वा ब्राह्मन की देह छूटी। तब विषधर सर्प भयो। सो मथुरा के और गोकुल के बीच में 'मई' के घाट पर रहे। सो आवते जाते मनुष्य कों देखि कै वह सर्प दौरे। तब मारग छूटि गयो। सो श्रीगुसांईजी मथुराजी पधारे तब मई के घाट पर, जहां वा सर्प कौ बिलो हतो, तहांई श्रीगुसांईजी ने डेरा किये। सो भीर देखि कै वह सर्प बिल में धसि गयो। परंतु दाव बिचारे, जो–कब काटौं ? ऐसो क्रोध में वह सर्प भर्‍यो। तब श्रीगुसांईजी जल मँगाई दस लोटान सों चरन धोए। सो चरनामृत वाहि के बिले में वा सर्प के पास गयो। ताकों वह पीयो। और वाकी सगरी देह में लग्यो। तब वा सर्प कों पूरव जन्म की सुधि आई। सो अपने बिले तें वह बाहिर निकरि कै फैन नँवाय कै श्रीगुसांईजी कों दंडवत् कियो। तब श्रीगुसांईजी कृपा करि कै वाके फैन ऊपर चरन धरे। सो सर्प तत्काल देह छोरि कै ब्राह्मन की देह पायो। तब देखि कै सगरे वैष्णव चकित होइ रहे। पाछें श्रीगुसांईजी नाम निवेदन कराए। तब वह देह छोरि कृतार्थ भयो। सो वैष्णव सब श्रीगुसांईजी सों पूछे, जो महाराज ! यह कौन हुतो ? (और) याकी ऐसी गति क्यों भई ? तब श्रीगुसांईजी सब वैष्णव कों समुझाइ कै कहे, जौ–ये लीला कौ जीव हतो। वहां यह 'तमसादेवी' है। सो तामस (भक्त) हैं। 'रोहिनीजी' के यूथ की। सो जब श्रीयसोदाजी ने ठाकुरजी कों बांधे तब ये दाम ल्याई। यह बात रोहिनीजी ने जानी। तब सराप दिये। ता अपराध तें ये व्रज में एक सनाढ्य ब्राह्मन के यहां जन्म्यो। पाछें याने द्रव्य के लोभ तें अपनी बहिनि कों जहर दै

मारी। तातें यह सर्प–योनि पायो। परि यह हमारी सरनि आयो हतो। तातें चरनामृत पाई मुक्त भयो।

यह बात श्रीगुसांईजी के श्रीमुख तें सब वैष्णव सुने। सो बोहोत प्रसन्न भए। पाछें येहू अपने अपने भाग्य की सराहना करन लागे। जो–हमहू कों श्रीगुसांईजी कौ सरनि प्राप्त भयो हैं, तातें हमहू निश्चय कृतार्थ होंइगे।

भावप्रकाश – काहेतें ? जो–श्रीगुसांईजी पूरन पुरुषोत्तम हैं। सो इन के सरनि मात्र तें जीव निश्चय कृतार्थ होत हैं। क्यों ? जो–या पुष्टिमार्ग में प्रभु आप अपने जीवन कौ प्रमेय बल तें उद्धार करत हैं। जीव के साधन की अपेक्षा राखत नाही। ऐसें प्रभु परम दयाल हैं।

सो यह ब्राह्मन श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। सो याकौ आप प्रमेयबल तें उद्धार कियो। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ ३५ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक मा, बेटा, बहू, गुजरात की, तिनको वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश – सो लीला में माता तो विसाखाजी की सखी हैं। 'स्यामा' इन कौ नाम है। और स्यामा की एक सखी हैं। उन कौ नाम 'रामदे' है। सो यह बेटा है। और बहू लीला में 'श्रीरोहिनीजी' की सखी हैं। इन कौ नाम 'स्याम–सनेहिनी' है। रात दिन श्रीठाकुरजी में इन कौ मन रहत हैं। सौ नंदालय में बावरी सी डोलति हैं। तातों सब कोऊ इन कौ स्याम–सनेहिनी कहत हैं। ये रोहिनीजी कों अति प्रिय हैं। इन के यूथ की हैं। तातें इन के सात्विक भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग – १

सो श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें गुजरात पधारे। सो मा, बेटा श्रीगुसांईजी के पास आई कै बिनती करि कै कह्यो, जो–महाराज ! आप कृपा करि कै हम कों अपने सेवक करिये। तब इन मा–बेटान तें श्रीगुसांईज़ी ने यह आज्ञा करी, जो–तुम दोऊ स्नान करि कै नए वस्त्र पहरि कै हम पास आओ। जब हम तुम

कों सेवक करें। तब वे दोऊ मा–बेटा स्नान करि नए वस्त्र पहरि श्रीगुसांईजी पास हाथ जोरि कै आइ ठाढ़े भए। तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करि कै उन दोऊन कों नाम निवेदन कराइ कै कहे, जो–आज तुम इहांइ महाप्रसाद लीजियो। पाछें आप श्रीगुसांईजी भोजन करि आचमन करि बीरी आरोगि उन दोऊ मा–बेटान कों महाप्रसाद की पातरि अपने श्रीहस्त सों श्रीगुसांईजी धरी। तब वे दोऊ मा–बेटा अति आनंद पाइ कै महाप्रसाद लिये। पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करि विश्राम किये। पाछें उत्थापन समै श्रीगुसांईजी उठि कै उन मा–बेटान कों सब सेवा कौ प्रकार नित्य कौ तथा उत्सव कौ आप कृपा करि बताय दिये। सो मा–बेटा भगवत्सेवा पधराइ लै जाँइ कै प्रीति पूर्वक सेवा करन लागे। तब श्रीठाकुरजी थोरेई दिन में प्रसन्न होंइ कै सानुभावता जनावन लागे। पाछें कितनेक दिन कों या बाई के बेटा कौ विवाह भयो। सो बहू भोरी आई। तब बेटा तो कहूं गाम गयो। और श्रीगुसांईजी गाम बाहिर पधारे। तब सास श्रीगुसांईजी के दरसन कों गई। सो दरसन करि कै प्रभुन सों बिनती करि गई, जो–महाराज ! बहू कों सेवक करियो। पाछें बहू कों सासने श्रीगुसांईजी के पास नाम पाइवे कों पठाई। और वा बहू सों सास ने कही, जो–श्रीगुसांईजी आप कहे सो तू कहियो। सो प्रभु या बहू सों कह्यो, जो–आऊ बैठि। तब या बहू ने हू ऐसें ही कही, जो–आऊ बैठि। ये सुनि कै श्रीगुसांईजी हँसे और जान्यौ, बहू भोरी है। तब श्रीगुसांईजी उठि कै वाके पास आय कै तीन बार अष्टाक्षर मंत्र कह्यो। सो बहू ने हू अष्टाक्षर

मंत्र कह्यो । इतने में काहू वैष्णव ने सास तें ये बात जाँइ कै कही । सो सास श्रीगुसांईजी पास आइ अपराध क्षमा कराइ बिनती करि, बहू कों समर्पन श्रीगुसांईजी पास करवायो । पाछें प्रभु सास तें कह्यो, जो–अब श्रीठाकुरजी की सेवा या बहू के पास कराइयो । तब सास ने कही, जो–महाराज ! ये तो बावरी है । सेवा में कहा समझेगी ? तब श्रीगुसांईजी नें आज्ञा करी, जो–श्रीठाकुरजी आप सिखाय लेइंगे ।

भावप्रकाश – काहेतें, जो–ये भोरी है । और लीला कौ संबंध अब दृढ़ भयो । तातें श्रीठाकुरजी इन पर बेगि कृपा करेगें ।

ता पाछें कछूक दिन में सास कों अटकाव भयो । तब सासने बहू सों कह्यो, जो–श्रीठाकुरजी कों सिंगार करि कै दरपन दिखाइयो । सो हँसत मुख होंइ तो प्रसन्न जानियो । यह कहि कै बहू तें, सास तो नदी पर जाँइ बैठी । तब बहू ने सिंगार कियो, परि श्रीठाकुरजी हँसे नाहीं । तब फेरि बहूने सिंगार पलट्यो । तोऊ हँसे नाहीं । ऐसें वाने आठ बेर श्रीठाकुरजी कौ सिंगार पलट्यो । तब पीछले प्रहर प्रभु हँसे ।

भावप्रकाश– सो काहेतें ? जो–पुष्टिमार्ग में (जब लों) आर्ति न होंइ तब तांई प्रभु अनुभव न जतावे । सो बहू कों आर्ति कराइवे के तांई आठ बेर सिंगार पलटायो । तब बहू श्रमित व्है दुःखी भई । तब आर्ति उत्पन्न भई । तब प्रभु वा पर कृपा करि हँसे ।

ता पाछें नित्य ही श्रीठाकुरजी वाके संग हास्य–विनोद करते । या प्रकार सानुभावता जनावन लागे । जो–चहितो सो वा पास तें प्रभु माँगि कै आरोगते । पाछें वह श्रीठाकुरजी सों कहती, जो–कछू सेवा में भूल परेगी तो हों अपने पीहर चलि जाउंगी । सो वह बहू बोहोत ही भोरी हती । वासों श्रीठाकुरजी जा प्रकार

कहते ताही प्रकार वह करती ।

पाछें पांचमें दिन सास सेवा में न्हाई । तब वह सिंगार करन बैठी । ता समै सास कों नींद कौ झोका आयो । तामें श्रीठाकुरजी कहे, जो–मोकों सिंगार बहू के हाथ कौ बोहोत आछौ लागे हैं । तातें तू रसोई की सेवा करि, और बहू मेरो नित्य सिंगार करेगी । ता दिन तें बहू नित्य सिंगार करन लागी । सो बहू सों श्रीठाकुरजी हास्य–विनोद आदि करि सब रस कौ अनुभव करावते । सो वे मा, बेटा बहू श्रीगुसांईजी के बड़ेई कृपापात्र भगवदीय हे । सो उन की वार्ता कहां तांई कहिए ।। वार्ता ।। ३६ ।।

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक अलीखान पठान, ताकी बेटी पीरजादी, महावन में रहती, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश – ये अलीखान बच्छगाँव में एक बाछिल गौरवा क्षत्री के घर जन्मे । पाछें अलीखान कौ पिता दिल्ली में सिपाहीगिरी करन लाग्यो । तहां इन कों पठानन कौ संग भयो । ता संग करि येहू पठान भयो । सो इन अपने बेटा कौ नाम अलीखान धर्‌यो । तब तें अलीखान कौ पिता अपनो कुटुंब लै दिल्ली आय रह्यो । पाछें अलीखान बरस बीस पच्चीस के भये तब इन कौ पिता मर्‌यो । तब तें पात्साह ने अलीखान कों अपने पास राखे । सो अलीखान कों पात्साह जागीर कमावन भेजतो । तहां ये जाँतें । ता पाछें अलीखान कौ ब्याह भयो । सो एक बेटी भई । ताकौ नाम पीरजादी राख्यो । सो अलीखान वा बेटी कों बोहोत ही प्यार करे ।

और अलीखान कौ घर हिन्दुन की बाखरि में हतो । तहां कितनेक वैष्णव हू रहत हते । सो पीरजादी बरस पांच की भई तब तें वैष्णवन के लरिकान संग खेले । सो वे लरिका ठाकुर कौ खेल खेलते । तामें ठाकुर कों न्हवाय, सिंगार करि भोग धरते । पाछें प्रसाद आपस में बांटते । तामें पीरजादी हू वह प्रसाद लेती । सो पीरजादी कौ मन ठाकुर के खेल में लगि गयो । सो येहू ऐसें खेलन लागी । ता पाछें कछूक दिन में अलीखान कों पात्साह ने तवीसा के परगना पर भेजे ।

वार्ता प्रसंग – १

सो उन अलीखान ने तवीसा कौ परगनो पायो । सो महावन में

अलीखान आइ रहे। सो वे अलीखान बन के हाकिम भए। पाछें एक समै ब्रज देखिवे कों अलीखान निकसे। सो अलीखान ब्रज देखि कै बोहोत प्रसन्न भए। सो अलीखान ने ब्रज कौ स्वरूप नीके जान्यो। और अलीखान कौ मन ब्रज में बोहोत आसक्त भयो। सो ब्रज के दरसन करि अलीखान घर आए। तब ब्रज के गामन में डौडी फेरी। जो–भाई ! जो कोई ब्रज के रूखन के पतौआ तथा डार तोरेगो ताके हाथ की अंगुरी हों तोरूंगो। या प्रकार अलीखान ब्रज की रखवारी करते। आपु नित्य ब्रज में भ्रमन करते। सो कोऊ एक पतौआ तौरन न पावे।

सो एक दिन अलीखान तो अपने चोंतरा पर बैठे हते। ता ठौर एक तेली तेल बेचन आयो। सो तेल की कूपी कौ महोंडो नए पतौवान सों ढांपि के बांध्यो हतो। सो अलीखान ने देख्यो। और वा तेली के साथ एक बरध हतो। ताके हांकिवे कों एक हरी लकड़ी हाथ में हती। सो अलीखान ने मनुष्यन सों कह्यो, जो–या तेली कों इहां पकरि ल्याओ। तब वे मनुष्य वा तेली कों पकरि ल्याई कै अलीखान के साम्हे ठाढ़ो कियो। तब अलीखान कचहरी सों उठि कै आइ, वा तेली सों पूछ्यो, जो–तू ये डार–पात कौनसे रूख के तोर्यो है। सो रूख मोकों दिखाऊ। तब या तेली के साथ साथ अलीखान गए। तब वा तेली ने वह रूख बतायो। तब अलीखान ने वा तेली सों कह्यो, जो–यह सब तेल है सो तू या वृक्ष के मूल में सींचि दै। तब वह तेली बोहोत बिनती करन लाग्यो, कह्यो, जो–साहिब ! मैं जान्यो नहीं। तासों मेरी तकसीर माफ करो। तब अलीखान ने वा तेली

सों कह्यो, जो–आज तो हों तेल के बासन ही डराइ कै छोरत हूं। परि और दिन जो डार–पात तोरत देखूंगो तो तेरे हाथ पांव आछी भांति तुराउंगो। तासों आज तो तू न जान्यो। तासों यह दंड करनो। तब या तेली के बासन तेल के भरे हते, सो वा वृक्ष के मूल में डारि कै अपने घर कों वह गयो। तब अलीखान अपने घर आए। पाछें ता दिन तें सगरे लोग अलीखान सों डरपन लागे। वे अलीखान या प्रकार सों ब्रज की रखवारी करते।

सो एक दिन अलीखान रोटी खाँइ के सोए हते। पाछें सोइ कै उठे। सो देखे तो एक बारी ढाक के पतौआ तोरत है। ताके पास अलीखान आप गए। तब वा बारी सों अलीखान ने पूछ्यो, जो–इतने पतौवा तू क्यों तोरत है ? तू इन पतौवान कों कहा करेगो ? तू कौन कौ मनुष्य है ? तब वा बारीने अलीखान सों कह्यो, जो–ए पतौवा तो श्रीगोकुल कों श्रीगुसांईजी के घर कों पातरि दोनान के लिये तोरि लै जात हों। सो हों तो श्रीगुसांईजी कौ बारी हूं। तब वा बारी सों अलीखान ने कह्यो, जो–तू तो बड़ी ठौर कौ नाम लियो। तासों हों तेरे पास एक बस्तू माँगत हों। जो–आज तो तें पतौवा तोरे सो तोरे। परि आज पाछें एक एक ढाक तें दस दस पतौवा तू माँगि कै तोरियो ! एक ही ढाक पै तें मति तोर्‌यो करियो। इतनो तू मोकों मांग्यो दै। तब तें वह बारी वाही प्रकार करन लाग्यो। और अलीखान सों बारी ने कह्यो, जो–अब तुम अपने मनुष्यन सों कहि राखियो, जो–मोसों वे कछू कहे नाहीं। तब अलीखान अपने चोकीदारन सों कह्यो,

जो–एक श्रीगुसांईजी को बारी अमूके नाम करि कै है, ताकों तो पतौवा तोरिवे की परवानगी है। और वा सिवाय कोई और पतौवा एक तोरन न पावे। या प्रकार अलीखान ब्रज के वृक्षन की रखवारी करते।

भावप्रकाश–या वार्ता को अभिप्राय यह है, जो–ब्रज के वृक्ष अलौकिक हैं। सो पद्मपुरान में ब्रज कौ स्वरूप वरनन कियो है। तहां कह्यो है, सो श्लोक–

"वृक्षे वृक्षे वेणुधारी पत्रे पत्रे चतुर्भुजः।
यत्र वृंदावनं तत्र लक्ष्यालक्ष्यकथा कुतः।"

या प्रकार बृंदाबन के वृक्ष–वृक्ष वेनुधारी श्रीगोवर्द्धनधर रूप हैं। और तिन के पत्र सो चतुर्भुज रूप हैं। यासों वृक्ष भगवदीय हैं। तातें वैष्णव कों ब्रज की वृक्षावली सर्वथा तोरनी नाहीं। तोरे तो अपराध लगे। और श्रीठाकुरजी के अर्थ तोरे तो कछू बाधा नाहीं। परि जादा पत्र तोरने होंइ तो एक ही वृक्ष पें तें सर्वथा न लेने। थोरे थोरे सब पें तें माँगि कै लेने।

वार्ता प्रसंग–२

सो अलीखान के एक बेटी रूपवती हती। सो वाकों अलीखान बोहोत ही प्यार करते। सो वह बेटी जब बड़ी भई तब वानें अलीखान सों कही, जो–बाबाजी! मोकों खेलिवे कों एक न्यारो मंदिर करवाइ देउ। तब वा अलीखान के कारीगर बुलाइ आछौ दिन देखि कै मंदिर बनवायवे कों कारीगर लगाए। सो नींव खोदत में एक स्वरूप श्रीठाकुरजी कौ बोहोत सुंदर निकर्‍यो। सो वह स्वरूप कारीगर ने अलीखान कों दियो। सो वह स्वरूप अलीखान ने अपनी बेटी कों खेलिवे को दीनो। तब वा स्वरूप सों वह खेलन लागी। जो–कछू अपनी देह कों करे ता प्रकार श्रीठाकुरजी कों हू लाड़ लडावे। सो वा स्वरूप कों सुंदर जल सों न्हवाइ वस्त्र पहराइ आभरन धराइ वा

स्वरूप कों आछी भांति पधराय खेलन लागी । सो खेलत खेलत वा स्वरूप सों बोहोत आसक्ति भई । सो वाकौ वा स्वरूप सों स्नेह करत तन्मयता भई । सो वा स्वरूप सों इह ऐसी आसक्त भई, जो–वा स्वरूप बिना क्षन एक रहि सके नाहीं । ऐसो वाकौ मन वा स्वरूप में आसक्त भयो । सो जब याकी आर्ति बोहोत श्रीठाकुरजी जाने तब याकों साक्षात्कार भयो । सो एक दिन प्रभुन दरसन दीनो । सो वह रात्री कों सोई हती तब वाकों दरसन दीनो । सो याकों चारि प्रहर रात्रि सोच करत ही बिती । और वह अपनी सिज्या ऊपर वा स्वरूप कों ढूंढन लागी । सो वह स्वरूप तो याकों दरसन दै कै अंतर्धान भयो । पाछें यह तो सोच करत ही रहीं । सो सवारो होंइ गयो । तब यह खाट ऊपर तें उठे नाहीं । सो याने अपने मन में यह निर्द्धार कर्‌यो, जो–अब तो मोकों दरसन देइंगे तब ही हों उठोंगी । नाँतरु अपने प्रान कों त्याग करूंगी । यह निर्द्धार कियो । पाछें उन अपनो यह प्रन लियो । सो श्रीठाकुरजी वाकी आर्ति सहि न सके । वाई ठौर साक्षात् श्रीबृंदावनचंद कौ दरसन वाकों दैकै कहे, जो–अब तो तू उठि, स्नान करि कै कछू रसोई करि कै मोकों भोग धरि । अवार भई है, तासों मोकों भूख लागी है । तातें अब तू उठि । तब वह उठी । पाछें स्नान करि रसोई करि भोग धरि आप प्रसाद लियो । ता पाछें फेरि रात्रि कों वाही सो श्रीठाकुरजी ने रास कर्‌यो । ता दिन सों प्रभु वासों सानुभाव भए । सो नित्य खेलें, इच्छा आवे सो मांगि लै, वा पास तें । या प्रकार श्रीठाकुरजी वासों नित्य विहार करते । वाकों छोरि कै छिन एक न्यारे न होते ।

यों करत केतेक दिन बीते। तब एक दिन अलीखान ने अपनी बेटी कौ स्वरूप देख्यो। जो–याकौ स्वरूप तो फिर्‌यो है। पाछें अपने मन में अलीखान ने बिचार्‌यो, जो–याकों कहा भयो ? यह आश्चर्य मन में करन लाग्यो। पाछें अलीखान ने ये समाचार अपनी स्त्री सों कहे, जो–मोकों बेटी कौ स्वरूप और भांति दीसत है। सो वह स्त्री बेटी कौ स्वरूप देखि कै अलीखान सों कही, जो–याकों कोई पुरुष मिल्यो है। तब अलीखान ने महल की अति गाढी चौकी बैठारी। पाछें रात्रि कों वे सब चौकीदार पहरा दैत हते। सो जब अर्द्धरात्रि भई तब भीतर रागरंग होंन लाग्यो। सो ताल पखावज नूंपुर किंकिनी के सब्द होंइ। सो सब बाहिर के आदमी सुनते। परि उन कों कछू ज्ञान में न आवतो। सो ये सब समाचार सवारें उन मनुष्यन ने अलीखान सों कहे। तब अलीखान नें उन मनुष्यन सों कह्यो, जो–आज हों रात्रि कों देखूंगो। सो वा दिन रात्रि कों जब रागरंग होंन लाग्यो, तब ही उन मनुष्यन अलीखान सों खबर करी। तब अलीखान उठि कै बेटी के घर आगें आइ, किवाड़ की संध हती ता संध में सों झांक्यो तो रागरंग तो सुने, परि कछू दृष्टि में आवे नाहीं। तब सवारो होंन आयो। तब तो रागरंग रहि गयो। पाछें अलीखान तो अपने घर आयो। फेरि सांझ भई। तब सगरे मनुष्यन कों बिदा करि कै आप अकेलो द्वार पर खपूवा बांधि कै अलीखान बैठ्‌यो। सो जब रात्रि प्रहर डेढ़ गई तब फेरि भीतर रागरंग होंन लाग्यो। तब अलीखान ने अपने मन में यह निश्चय कियो, जो–आज भीतर कोऊ मनुष्य तो जान पायो

नाहीं। और इतने बाजे तो मनुष्य के बाजत तो कहूँ सुने नाहीं। तासों यह तो कछू श्रीठाकुरजी की रचना है। सो तो वे जब कृपा करें तब ही देखिवे में आवे। पाछें साक्षात् कन्हैयालालजी श्रीबृंदाबनचंद्रजी आप रास करत हैं। और अनेक यूथ ब्रजभक्तन के गान करत हैं। तामें अपनी बेटी कों हू ठाढ़ी देखी। सो देखि कै अलीखान अपने मन में अत्यंत आनंद पाए। सो तत्काल दरसन करत ही मूर्छित होंइ कै वाही द्वार आगें परे। तब घरी चारि में अलीखान कों चेत भयो। तब जाग्रत होंइ कै कान दै कै सुनिवे लागे। तो बाजें–बाजें कछू बजत नाहीं। तब वाही संध की राह देखे तो श्रीठाकुरजी और बेटी एक आसन पर बैठे हैं। सो श्रीठाकुरजी वाके गरे में श्रीहस्त धरि कै बीरा आरोगत हैं। पाछें फेरि उठे। सो परस्पर गरे में हाथ धरि कै नृत्य करन लागे। ता समै अलीखान इत उत देखन लागे। सो उहां तो कहूँ चेंटी कौ हू प्रवेस न हतो। तहां और कौन जाँई सके? तब वा संध सों देखे तो कछू और भांति दीसे नाहीं। तब अपनी कमरि तें खपुवा काढ़ि किवाड़ में एक छैद करि कै आछी भांति अलीखान दरसन करन लागे। सो साक्षात् श्रीबृंदाबनचंद के श्रीकन्हैयालाल के दरसन किये। तब तो अलीखान कों मूर्छा आई। सो फेरि घरी चार में सावधान भए। तब फेरि दरसन करन लागे। सो सवारो भए प्रभु मुकुट धरें नटवर भेष धरि नृत्य के श्रमित बिराजत हैं। पाछें अति अरसाते दोऊ जन कै दरसन करि कै फेरि अलीखान कों मूर्छा आई। उहांई द्वार पें परे। इतने सवारो भयो। तब बेटी ने किवाड़ खोले। तहां देखे तो द्वार

आगें पिता पर्‌यो है। तब दोऊ हाथन सों वाने थांभि कै वाकों बेठ्‌यो कियो। पाछें अपने दोऊ हाथ पिता के माथे ऊपर फेरि कै यह बचन वह बोली, जो–बाबाजी ! बाबाजी ! उठो सवारो भयो है। तब अलीखान की मूर्छा जागी। सो सावचेत भए। पाछें अलीखान बेटी के पाँवन परि कै यह बचन बेटी सों कह्यो, जो–बेटी ! तू धन्य, धन्य, धन्य है। अब तू मोकों श्रीकन्है-यालाल के दरसन कराय। तब बेटीनें पितासों वा समै यह बचन कह्यो, जो आज पूछि देखूंगी। सो वा दिन रात्रि भई तब श्रीठाकुरजी पांव धारे। तब वा पीरजादी ने श्रीठाकुरजी सों पूछ्‌यो, जो–महाराज ! मेरो पिता आप के दरसन की अभिलाषा करत है। जासों आप जो आज्ञा मोसों करो सो मैं वासों कहूं। तब श्रीठाकुरजी वासों यह आज्ञा करे, जो–तुम सवारे ही वहां श्रीगोकुल में दोऊ बाप-बेटी जाँई श्रीगुसांईजी पास नाम पाय आवो। तब दरसन होंइगे। तब अलीखान की बेटी ने फेरि श्रीठाकुरजी सों बिनतीकरी, जो–महाराज ! हम तो यह सुनत हैं, जो–श्रीगुसांईजी तो म्लेच्छ कौ मुख देखत नाहीं तो हमकों नाम उपदेस कौन प्रकार करेंगे ? तब श्रीठाकुरजी अलीखान की बेटी सों कहे, जो–मैं श्रीगुसांईजी सों कहूंगो। वे मेरी आज्ञा तें तुमकों नाम उपदेस देइंगे। और तुम सवारे ही श्रीठकुरानी घाट ऊपर जाँइ बैठियो। तहां वे स्नान करन कों पधारेंगे। तब तुमकों वे अपने सेवक हाथ बुलाइ कै नाम उपदेस करेंगे। यह बचन कहि श्रीठाकुरजी तो पधारे।

भावप्रकाश–या वार्ता में यह बड़ो संदेह हैं, जो अलीखान और अलीखान की बेटी कों

श्रीठाकुरजी आप कृपा करि कै रास के दरसन दिये। बेटी कों रास के सब सुख कौ अनुभव करायो। तोऊ श्रीठाकुरजी आप उन सों श्रीगुसांईजी के सेवक होंन की क्यों कहे ? तहां कहते हैं, जो–जद्दपि बेटी के विरह–ताप करि कै श्रीठाकुरजी वाके संग रास–बिलास किये। वाकों सब प्रकार कौ सुख दियो। और बेटी के संबंध करि कै अलीखान कों हू दरसन भयो। परि श्रीगुसांईजी के संबंध बिना यह दृढ़ न होंइ। क्यों, जो–श्रीठाकुरजी स्वतंत्र हैं। अपनी इच्छा तें वाकों सुख दिये। परि श्रीगुसांईजी के संबंध बिना पुष्टि रीति सों बंधे नाहीं। पुष्टिमार्ग में श्रीठाकुरजी श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी के बस हैं। तातें पुष्टिमार्गीय जीवन पर श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी की कानि तें श्रीठाकुरजी नित्य कृपा करत हैं। तातें श्रीठाकुरजी, अलीखान और अलीखान की बेटी सों श्रीगुसांईजी के सेवक होंन की कहे।

पाछें श्रीठाकुरजी श्रीगुसांईजी सों कहे, ये दोऊ म्लेच्छ बाप–बेटी आज श्रीठकुरानी घाट ऊपर आई बैठेंगे। सो जब तुम स्नान कों पधारो तब उन दोऊन कों नाम सुनाईयो। यह मेरी आज्ञा है। पाछें श्रीठाकुरजी के ये सब बचन बेटी ने अलीखान आगें समुझाइ कै कहे। तब अलीखान बेटी के बचन सुनि कै अति प्रसन्न भयो। पाछें बड़े सवारे उठि दोऊ जन देहकृत्य करि महावन तें श्रीगोकुल में श्रीठकुरानी घाट की सिढ़ी ऊपर आइ कै बैठि रहे। पाछें दिन प्रहर डेढ़ चढ़े श्रीगुसांईजी अपने घर श्रीनवनीतप्रियजी कों राजभोग धरि कै श्रीयमुनाजी स्नान कों पधारें। सो श्रीगुसांईजी स्नान करि कै धोती पहिरत हते तब अलीखान बाप–बेटी दोऊ जन श्रीगुसांईजी की दृष्टि परे। तब श्रीगुसांईजी एक वैष्णव सों कहे, जो–वे दोऊ जन बैठे हैं, तिन तों हमारे पास बुलाइ ल्याओ। तब वह वैष्णव जाँइ अलीखान सों कह्यो, जो–तुम दोऊ जन कों श्रीगुसांईजी बुलावत है। तब ये दोऊ जन अति आनंद पाइ कै श्रीगुसांईजी सन्मुख आई कै दंडवत् करि कै ठाढ़े होंइ रहे। तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें कहे।

जो–अलीखान ! आगे आउ । तब ये दोऊ जन थोरीसी दूरि आगें जाँइ ठाढ़े भए । पाछें अलीखान दंडवत् करि श्री–गुसांईजी सों बिनती करे, जो–महाराज ! हम तो आप की सरनि हैं । तब उनकी बिनती सुनि कै श्रीगुसांईजी कृपा करि कै पिता–पुत्री दोउन कों श्रीयमुनाजी के निकट बुलाइ कै नाम सुनायो । तब वाही समै अलीखान ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! हम म्लेच्छ कौन अपराध तें भए ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–अलीखान ! यह बात कहिवेकी नाहीं । तब फेरि अलीखान ने बिनती करी, जो–महाराज ! यह बात कौ भेद आप सों न पावेंगे तो जीव यह पूर्वजन्म की बात कहिवे कों कौन समर्थ है ? जो–हम कों यह बात कहेगो ? तातें, महाराज ! आप ही यह बात कहन योग्य हो । सो कृपा करि कै यह बात तो कही ही चाहिए । तब श्रीगुसांईजी उन अलीखान सो कहे, जो–अलीखान ! सुनो–

तुम प्रथम जन्म में दक्षिन के कावेरी रंगनाथ ठाकुर हैं, तिन की सेवा करत हते । सो एक दिन श्रीठाकुरजी के पोढिवे कौ समै हतो । सो तुम श्रीठाकुरजी की सिज्या सँवारत हते । और यह तुम्हारी बेटी श्रीठाकुरजी आगें नृत्य करती हुती । श्रीठाकुरजी के किवाड़ खुले हते । ता समै दरसन होत हुते । इतने ही एक बड़ो राजा वाही समै श्रीठाकुरजी के दरसन कों आयो । तब तुम श्रीठाकुरजी की सिज्या सँवारत तें छोरि कै वा राजा कौ समाधान करन लागे । और यह तिहारी बेटी श्रीठाकुरजी के सन्मुख नृत्य करत हती, सो श्रीठाकुरजी कों

छोरि कै राजा के सन्मुख हावभाव कटाक्ष करन लागी। ता अपराध तें तुम म्लेच्छ भये हो।

और श्रीगुसांईजी उन उपर कृपा करि कै अलीखान सों यह आज्ञा करे, जो–अलीखान ! हम हमारे सेवकन कों कबहू छोरे नाहीं। तातें तुम हमारे हो। ये बचन श्रीगुसांईजी के श्रीमुख तें सुनि अलीखान अपने मन में बोहोत प्रसन्न होंइ दंडवत् करि अपने घर आए। पाछें श्रीगुसांईजी मुद्रा धरि संध्या करि श्रीनवनीतप्रियजी के मंदिर में पधारे।

पाछें रात्रि भई। तब अलीखान ने अपनी बेटी सों कही, जो–बेटी ! तू मेरी बिनती श्रीठाकुरजी पधारे तब सुधि करि करियो। जो–मैं हू तेरी कृपा तें श्रीठाकुरजी कौ दरसन पाऊं। तब बेटी ने अलीखान सों कह्यो, जो–हों कहूंगी तो सही। आगें तो वे प्रभु हैं। जो कछू इन की इच्छा में आवे सो सही बात है। तब फेरि अलीखान ने कही, जो–तू कहियो तो सही। पाछें उन की इच्छा तो मुख्य है ही। तब रात्रि कों श्रीठाकुरजी ब्रजभक्तन सहित इहां पधारि आप ही तें वा अलीखान की बेटी सों पूछे, जो–तुम दोऊ जन श्रीगुसांईजी पास नाम सुनि आए ? तब अलीखान की बेटी ने श्रीठाकुरजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! नाम पाइ आए। तब फेरि श्रीठाकुरजी ने वासों कह्यो, जो–अलीखान कहां है ? तब याने बिनती करी, जो–महाराज ! दरसन की अभिलाषा करत द्वारे ठाढ़ौ है। तब वासों प्रभुन यह आज्ञा करी, जो–वाकों भीतर बुलावत क्यों नाहीं ? तब अलीखान की बेटी अति आनंद पाइ अपने पिता कों भीतर

बुलाइ ल्याई। तब अलीखान भीतर आइ दंडवत् करि अति आनंद पाए।

पाछें अलीखान आप पखावज बोहोत सुंदर बजावते। सो श्रीठाकुरजी की आज्ञा माँगि कै पखावज अलीखान ने ता ठौर वा दिन रास में अति आनंद सों बजाई। सो अलीखान की पखावज बाजत सुनि के श्रीठाकुरजी बोहोत प्रसन्न भए। ता दिन तें नित्य श्रीठाकुरजी अलीखान कों नृत्य समै पखावज बजाइवे कों बुलाइ कै दरसन देते।

भावप्रकाश–सो यातें, जो–अलीखान लीला में श्रीयमुनाजी के यूथ में है। इन कौ नाम 'रसरंगिनी' है। सो रसरंगिनी मृदंग बजावन में परम चतुर हैं। तातें उन की मृदंग सुनि श्रीठाकुरजी अति प्रसन्न होत हैं। सो यहां हू पखावज की सेवा किये। और पीरजादी सुभ आनना की सखी हैं। उन तें प्रगटी हैं। ये तामस भक्त हैं। इन कौ नाम सलौनी है। सो वाकौ स्वरूप बोहोत मनोहर है। और ये नृत्य में निपुन हैं। तातें सलौनी सों श्रीठाकुरजी सदा हिले रहत हैं। सो यहां हू या भांति बस भए।

या प्रकार सो श्रीनाथजी अलीखान ऊपर कृपा श्रीगुसांईजी की कानि तें करते।

वार्ता प्रसंग–३

और एक समै महावन में अलीखान की बेटी ने काहू वैष्णव के मुख सुनी, जो–श्रीगुसांईजी कथा कहत हैं। सो वा वैष्णव सों पूछी, जो–श्रीगुसांईजी कथा कहन कों कौन समै बिराजत हैं? तब वा वैष्णव ने अलीखान की बेटी सों कह्यो, जो प्रहर डेढ़ दिन रहे तब प्रभु कथा कौ प्रारंभ करत हैं। सो उत्थापन समै स्नान करन कों उठत हैं। तब ये समाचार बेटी ने अलीखान आगें कहे, जो–श्रीगुसांईजी या समै कथा कहत हैं तातें तुम

चलो तो आपुन कथा सुनिवे कों श्रीगोकुल चलिए। यह मेरी इच्छा है। तब अलीखान बेटी के ये बचन सुनि कै बोहोत प्रसन्न भयो। ता दिन तें अलीखान बाप–बेटी दोऊ कथा सुनिवे कों आवते। तब श्रीगुसांईजी पोथी खोलते, कथा कहिवे कों। सो ये दोऊ जन श्रीगुसांईजी के श्रीमुख तें श्रीभागवत सुनते। सो यह चर्चा वैष्णव आपुस में करते। जो–देखो! दोऊ म्लेच्छ हैं तिन कों द्वार तें कथा कहन समै मनुष्य पठाइ कै श्रीगुसांईजी बुलावत हैं। तब कथा कहन कों पोथी खोलत हैं। और इन कों श्रीगुसांईजी श्रीभागवत सुनावत हैं। या प्रकार आपुस में सब वैष्णव चर्चा करन लागे। परि डरपि कै कोई श्रीगुसांईजी सों पूछि न सके। सो प्रभु तो अंतर्यामी हैं। तातें इन वैष्णवन के मन कों आसय जानि गए। तब एक दिन अलीखान बाप–बेटी दोऊ आइ बैठें। तब आप कथा कहन कों पोथी खोलत हते। सो वे सगरे वैष्णव श्रीगुसांईजी के सन्मुख बैठे हते। तिन वैष्णवन सों श्रीगुसांईजी पूछे, जो–काल्हि हम कौन सो प्रसंग कथा में कह्यो हो? सो सब तुम हम कों सुनावो। तब वे सब वैष्णव आपुस में एक एक कौ मुख देखन लागे। परि काहू सों कथा कौ प्रसंग प्रभुन को न बतायो गयो। तब श्रीगुसांईजी चुप करि रहे। पाछें श्रीगुसांईजी ने अलीखान की बेटी सों पूछी, जो–काल्हि हम कहा कथा कहे हते? तब अलीखान की बेटी श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि बिनती करी, जो–महाराज! आपकी आज्ञा होंइ तो हम जा दिन तें कथा सुनत है ता दिन तें काल्हि पर्यंत (की) कथा की बिनती करें। और आज्ञा होंइ तो

कालिह की कथा की बिनती करें। तब इन के बचन सुनि कै श्रीगुसांईजी उन वैष्णवन सों कहे, जो–अब तिहारे मन कौ संदेह निवृत्त भयो ? के और हू मन में संदेह है ? तो कहो। सो वे सगरे वैष्णव लज्या पाइ चुप करि रहे।

सो वे अलीखान बाप–बेटी कौ ऐसो मन श्रीगुसांईजी की कृपा तें हतो।

वार्ता प्रसंग–४

और अलीखान एक समै घोड़ा फेरत हते। सो श्रीगुसांईजी ने देख्यो, जो–यह भलो घोड़ा है। तब यह बात चिरवादार ने अलीखान सों कही, जो–या घोड़ा की सराहना श्रीगुसांईजी ने अपने श्रीमुख तें बोहोत करी है। सो यह बात अलीखान सुनि वा घोड़ा पै नयो साज बांधि कै श्रीगुसांईजी की भेंट पठाय दियो। सो घोड़ा लै मनुष्य द्वार जाँइ ठाढ़ौ रह्यो। पाछें भीतर पोरिया सों श्रीगुसांईजी कों खबरि कराई। सो पोरिया भीतर जाँइ श्रीगुसांईजी सों बिनती कर्‌यो। जो–महाराज ! अलीखान ने घोड़ा पठायो है। सो मनुष्य वा घोड़ा कों लिये द्वार पर ठाढ़ौ है। तब श्रीगुसांईजी घोड़ा राखिवे की नाहीं किये। सो ये समाचार वा पोरिया ने वा घोड़ा के साथ के मनुष्य सों कहे। तब वह मनुष्य घोड़ा लै, पाछें अलीखान पास आइ कै श्रीगुसांईजी के सब समाचार कहे। जो–साहिब ! वे तो यह घोड़ा पाछो फेरि पठाए, राख्यो नाहीं। तब अलीखान अपने मन में बिचारे, जो–हमारे द्रव्य कों प्रभुन कौन भांति अंगीकार करेंगे ? ता दिन तें अलीखान वा घोड़ा पै चढते नाहीं। और वा चिरवादार कों हू

न चढन दैते । वह घोड़ा बंध्योई रहतो । जैसें नेग दानों मसालो पावत हतो तसेई नेग नित्य पायो करतो । और जब अलीखान की असवारी निकरती तब वा घोड़ा कौ सिंगार करि कै अलीखान अपनी दृष्टि आगें कोतल (में) राखतो । और अलीखान भाव सों श्रीगुसांईजी की असवारी करावते । सो वा घोड़ा के आगें अलीखान दंडवत् करि कै पाछें दूसरे घोड़ा पर चढ़ते । और बरस दिन के बरस दिन दसहरा कों वा घोड़ा कौ साज सब नयो पलटते । सो वा घोड़ा कौ प्रसादी प्रथम कौ साज अपने घोड़ा ऊपर बांधते । और कहते, जो–या घोड़ा की सराहना श्रीगुसांईजी करे हैं । यह भाव हतो । वे अलीखान बाप–बेटी दोऊ ऐसें भगवदीय हते । तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए । ॥ वार्ता ॥ ३७ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी एक ब्राह्मनी उज्जैनि तें चार कोस ऊरेमें एक गाम हैं, तहां रहती, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये राजस भक्त हैं । लीला में इन कौ नाम 'चंद्रमुखी' है । सो चंद्र जैसो जिन कौ मुख है । सो चंद्रमुखी 'सुभआनना' तें प्रगटी हैं । तातें उन के भावरूप हैं । सो चंद्रमुखी कौ रसबिलासिनी सो बोहोत मिलाप है । रसबिलासिनी श्रीठाकुरजी की एकांत वार्ता चंद्रमुखी सों कहति हैं । सो एक दिन चंद्रमुखी ने श्रीठाकुरजी अरु विसाखाजी के एकांत की बात भामा सखी सों कही । सो विसाखाजी ने वह बात सुनी । तातें सराप दियो, जो–भूमि पर गिरो ।

सो उज्जैनि तें कोस चारि उरे में एक गाम है । तहां एक द्रव्यपात्र सांचोरा ब्राह्मन रहतो । ताके घर इन कौ जन्म भयो । सो ये बरस आठ की भई तब मा–बाप ने इन कौ विवाह कियो । पाछें बरस बीस पच्चीस की भई तब गाम में महामारी फैली । सो मा, बाप, धनी, सब मरे । तब घर में ये अकेली रही । सो बोहोत रोवे । गाम के लोग बोहोत समुझावे परि काहू की न माने । ऐसें कछूक दिन बीते । पाछें काहू ने कही, जो–अमूकी ! तू उज्जैनि में कृष्णभट के इहां कथा–वार्ता सुनिवे (कों) जायो करि । कृष्णभट कथा–वार्ता बोहोत सुंदर करत हैं । तातें तेरो दुःख दूरि होयगो ।

वार्ता प्रसंग–१

सो वह बाई ब्राह्मनी उज्जैनि तें चारि कोस ऊरे में एक गाम हतो तहां रहती हती। सो तहांतें वह बाई कृष्ण भट के घर आवें। सो श्रीगुसांईजी की वार्ता कृष्ण भट के घर सुनती। सो वाकौ मन बोहोत श्रीगुसांईजी ऊपर आसक्त भयो। वाकों बोहोत आर्ति श्रीगुसांईजी के दरसन की भई। सो एक समै श्रीगुसांईजी उज्जैनि कों पधारे। तब वा बाई ब्राह्मनी ने सुनी, जो–श्रीगुसांईजी उज्जैनि कों पधारे हैं। तब वह बाई ब्राह्मनी अति उत्कण्ठा सों श्रीगुसांईजी के दरसन कों वा गाम में आई। श्रीगुसांईजी के दरसन करि दंडवत् करि एक दिस न्यारी ठाढ़ी होंइ रही। ता समै उज्जैनि के बोहोत वैष्णव नाम पाइवे कों आए हते। तिन कों श्रीगुसांईजी नाम उपदेस करत हुते। सो सगरे नाम पाइ रहे, तब वह बाई ब्राह्मनी हू श्रीगुसांईजी पास नाम पाइवे आई। पाछें श्रीगुसांईजी उज्जैनि में कृष्ण भट के घर पधारे। तहां रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरि श्रीगुसांईजी भोजन करि विश्राम करे। ता पाछें रात्रि कों सब वैष्णव फेरि श्रीगुसांईजी पास दरसन कों आए। तिन वैष्णवन कह्यो, जो–महाराज! वह ब्राह्मनी तो बिभिचारिनी है। ताकों आप बाग में नाम क्यों सुनाए? तब श्रीगुसांईजी उन वैष्णवन सों कहे, जो–या बात में तुम कहा लेउगे?

भावप्रकाश–यह कहि यह जतायो, जो–हमारे सिद्धांत सों तो जहां तांई जीव ठाकुर में अनन्य नहीं होंइ, इंद्रीयन कौ अन्य विनियोग होंइ, तहां तांई वह सर्व इंद्रियन करि के व्यभिचारी ही है। और दूसरो अभिप्राय यहू है, जो–पुष्टिमार्ग में दैवी जीव कैसो ऊ क्यों न होंइ ताकौ निश्चय अंगीकार है। काहेतें या मार्ग में प्रभु जीव की कृति देखत नाहीं है। अपने

प्रमेय बल तें उद्धार करत हैं। तातें प्रभुन की सरन निरंतर रहनो यही जीव कौ एक कर्तव्य है। काहेतें जो–सरनस्थ जीवन कों प्रभु निश्चय उद्धार करत हैं। सो श्रीआचार्यजी 'कृष्णाश्रय' ग्रन्थ में प्रभुन सों विज्ञप्ति किये हैं। सो श्लोक–

"शरणस्थ समुद्धारं कृष्णं विज्ञापयाम्यहम्।"

यातें पुष्टिमार्ग में भगवान की कृपा (ही) मुख्य हैं। जीव की योग्यता कौ बिचार नाहीं। तातें सरन आए जीव पर निश्चय कृपा होत हैं।

पाछें वह बाई कृष्णभट के घर आइ कै रही। जहां पर्यंत श्रीगुसांईजी कृष्णभट के घर बिराजे तहां पर्यंत वह बाई हू कृष्णभट के घर ही श्रीगुसांईजी की सेवा में रही। सो श्रीगुसांईजी की परचारगी और टहल करती। पाछें वा बाई ने कृष्णभट सों बिनती करी, जो–मोकों श्रीगुसांईजी सों कहि समर्पन करावो। तब वा बाई की आर्ति देखि कै कृष्णभट ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! या बाई कौ मनोरथ समर्पन कौ है। तब श्रीगुसांईजी वाकौ सुद्ध भाव जानि कै समर्पन की आज्ञा करे। पाछें दूसरे दिन वा बाई कों श्रीगुसांईजी ने समर्पन करवायो। सो वह बाई कृष्णभट के संग तें भगवद्भाव संपन्न भई। तब वा बाई ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! अब कछू मोकों सेवा सोंपिये। तब श्रीगुसांईजी वाकों सेवा करिवे कों श्रीनाथजी कौ बागा पधराइ दिये। पाछें श्रीगुसांईजी कृष्ण भट सों बिदा होंइ कै श्रीगोकुल कों पधारे। ता पाछें कृष्ण भट ने वा बाई कों श्रीनाथजी के बागा कौ श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ स्वरूप करि दियो। वह सेवा पधराइ वह बाई अपने गाम में आइ रही। सेवा प्रकार सब कृष्ण भट कों पूछि कै ता प्रकार आछी भांति सों अपने घर सेवा करन

लागी। सो वह बाई अति प्रीति सों श्रीनाथजी की सेवा करती। सो सेवा करत बोहोत दिन भए। तब वा बाई सों श्रीनाथजी सानुभावता जनावन लागे। त्यों त्यों वह बाई मन लगाइ कै सेवा करन लागी। पाछें वा बाई सों श्रीनाथजी प्रत्यच्छ बातें करन लागे। वा बाई के पास तें जो बस्तू चहिये सो श्रीठाकुरजी माँगि लैन लागे। और वा बाई कों सेवा करत समै बोहोत अनुभव श्रीनाथजी जतावन लागे। त्यों त्यों वह बाई अति रुचि सों सेवा करन लागी। और श्रीनाथजी जो बस्तू माँगते सो बस्तू घर में होती तो वाही समै धरती। जो बस्तू घर में न होती तो बेगि बेगि श्रीठाकुरजी सों पहोंचती, पाछें प्रसाद लै उज्जैनि जाँइ वह बस्तू ल्याइ कै उत्थापन समै श्रीनाथजी आगें भोग धरि कै वह बाई प्रभुन सो बिनती करती, जो–महाराज ! अमूकी बस्तू लीजिए। तब श्रीनाथजी वा बस्तू कों अति आनंद सों अंगीकार करते। या प्रकार वह बाई केतेक बरस भली भांति सों सेवा करी। सो कृष्णभट सों बोहोत मिलाप राखती। और काहू समै कृष्णभट के सेव्य श्रीठाकुरजी कों कछू चहियतो सो वा बाई पास माँगते। सो वह बाई रात्रि प्रहर डेढ़ रहे तब अपने घर तें वह बस्तू लै कृष्णभट के घर आइ, वह बस्तू कृष्णभट कों सोंपि कै अपने घर प्रातःकाल आइ, वह बाई श्रीठाकुरजी की सेवा करें। श्रीठाकुरजी ऐसें वा बाई कों सानुभावता जनावत हते। तातें कृष्णभट वा बाई पर बोहोत हित करते। परि निहालचंद भाई वा बाई सों कहते, जो–बाई ! तू सावधान रहियो। तू श्रीगुसांईजी की कृपा तें बस्तू बड़ी पाई है, तासों श्रीठाकुरजी की सेवा

सावधानी सों करियो। यह उपदेस वा बाई सों निहालचंद भाई करत रहते। सो वह बाई निहालचंद भाई की बात सिक्षा करि मानती। सो वह बाई श्रीठाकुरजी की सेवा रुचि सों करती।

पाछें एक दिन वह बाई की चर्चा निहालचंद भाई आगें कृष्ण भट करे। तब निहालचंद ने कृष्णभट सों कह्यो, जो–भटजी ! या बाई ने बस्तू बड़ी पाई है। और पात्र तो ओछो है। तासों ठहराय तब जानिए। या प्रकार कृष्णभट सों निहालचंद भाई ने कह्यो। सो या प्रकार निहालचंद भाई कबहू कबहू कृष्णभट सों कहत रहते। तब कृष्णभट सुनि कै चुप करि रहते। ऐसें करत केतेक दिन बिते। सो एक समै एक साक्त गाम की सहनगी लै भूमि भरन आयो। ताकौ डेरा वा बाई के घर पास भयो। सो एक दिन वह बाई अपने घर में बैठी चाँवर बीनत हती। तब वा साक्त ने देखी। सो वह साक्त आई कै वा बाई सों पूछ्यो, जो–बाई ! तू ऐसें सुंदर चाँवर कौन के काजे या भांति बीनति है ? तू चाँवर बड़ी बार में बोहोत जतन सो बीनति है, सो तेरे कहा है ? तब वा बाई ने वा साक्त सों कह्यो, जो–मेरे घर में श्रीठाकुरजी की सेवा है। सो मैं यह चाँवर अपने श्रीठाकुरजी के लिये बीनति हों। तब वा साक्त ने वा बाई सों पूछ्यो, जो–तेरे श्रीठाकुरजी की सेवा है, सो मोकों तू अपने श्रीठाकुरजी के दरसन करावेगी ? तब वा बाई ने समै भए वा साक्त कों अपने श्रीठाकुरजी के दरसन करवाए। पाछें वह साक्त दरसन करि भूमि नापन गयो। तहां कितनीक भूमि वा बाई की हती। जो खेत के रखवारे ने कही, जो–साहिब ! यह भूमि वा बाई की है। सो

वा सात्त ने दोरी भरत में कछू थोरी भरी। तब वह सात्त भूमि नाप कै आयो। तब वा सात्त ने वा बाई सों कह्यो, जो–बाई ! मैं तेरी भूमि जानि कै इतनो तोकों अहसान कर्‍यो हूं।

भावप्रकाश – सो लौकिक मनुष्य की यह रीति है, जो–अपने किये अहसान (कों) दूसरे कों कहि दिखावे। अरु भगवदीय काहू पर अहसान करें, जो सर्वथा कहे नाहीं। सो यह सात्त ने या प्रकार वा बाई सों कह्यो।

तब वा बाई ने वा सात्त सों कह्यो, जो–पूत ! तैं मोकों जिवाई। ऐसें वा बाई ने वा सात्त सों कह्यो। तब वाके घर तें श्रीठाकुरजी श्रीगुसांईजी के घर पधारे।

भावप्रकाश – सो काहेतें, जो–(या बाई कों वाचिक) अन्याश्रय भयो। अन्यमार्गी कौ अहसान मोल लियो। तातें वैष्णव कों बोहोत संभारि कै बोलनो। अन्यमार्गी सों संभाषन (हू) न करनो। जो बोलनो तोहू बिचारि कै बोलनो। परि अहसान सर्वथा न लैनो। यह सिद्धांत भयो। और अपने श्रीठाकुरजी के दरसन अन्यमार्गी कों न करावने, यहू जतायो।

सो पधारत समै श्रीठाकुरजी कृष्ण भट सों जनाए, जो–वा बाई ने अन्याश्रय कर्‍यो है। तातें हम तो अब श्रीगुसांईजी के घर पधारत हैं। पाछें कृष्ण भट सों जनाइ कै निहालचंद भाई के घर श्रीठाकुरजी पधारे। ता समै निहालचंद भाई प्रसाद लै सोवत हते। सो श्रीठाकुरजी ने निहालचंदभाई कों स्वप्न में जनाई। ता समै निहालचंद भाई चौंकि उठे। सो कपड़ा पहरि निहालचंद भाई कृष्ण भट के घर आए। सो कृष्ण भट सों कहे, जो–भटजी ! वा बाई के घर तें श्रीठाकुरजी उठे। सो मोकों यह प्रभु कहत पधारे। जो–वा बाई के घर सेवा में हम न रहेंगे। जो–या बाई ने तो अन्याश्रय कर्‍यो है। तासों हम तो श्रीगोकुल जात हैं। सो यह सुनि कै निहालचंद भाई सों कृष्ण भट हू ने कह्यो,

जो–मोहू सों श्रीठाकुरजी याही प्रकार कहत पधारे हैं । तब निहालचंद भाई ने कृष्ण भट सों कह्यो, जो–याही तें भटजी हों तुम तें कहत हतो, जो–यह बाई पात्र ओछो है । और बस्तू बड़ी पाई है । ठहराय तब जानिये । सो ये बचन निहालचंद भाई के सुनि कै कृष्ण भट चुप करि रहे ।

पाछें घरी चारि में वह बाई उत्थापन समै स्नान करि मंदिर के किवाड़ खोलि कै भीतर जाँइ (देखे) तो सिंघासन ऊपर श्रीठाकुरजी नाहीं । और सब सामग्री यथास्थित है । तब वह बाई श्रीठाकुरजी कों गादी ऊपर देखे नाहीं । तब वह बाई बोहोत रोवन लागी । सो खेद बोहोत करन लागी । सो खेद करत अपने गाम तें उज्जैनि में कृष्ण भट के घर आई । ता समै कृष्ण भट और निहालचंद भाई दोऊ बैठे हते । सो यह बात कृष्ण भट के घर आइ कै वह बाई बोहोत ताप करि रोइ कै कही । तब वा बाई सों कृष्ण भट ने कह्यो, जो–बाई ! हमारे श्रीठाकुरजी बनज–ब्यौपार करत नाहीं है, जो–ऐसें लोगन कों दिखाइये । और वे लोग ऐसी भांति वैष्णव जानि अहसान करें तो वैष्णवता तो बिकानी । तातें अब तोसों वे तो सेवा सर्वथा न करावेंगे । अब तू अपने मन कों जाने सो करि । तब वह बाई कृष्ण भट के ये बचन सुनि कै चुप करि रही । पाछें हारि कै अपने घर गई ।

तातें या जीव कों अन्याश्रय तै या प्रकार डरपत रहनो । पाछें श्रीनाथजी वा बाई के घर तें श्रीगुसांईजी पास पधारे । तब या बाई के सब समाचार श्रीनाथजी ने श्रीगुसांईजी सों कहे । तब श्रीगुसांईजी प्रभुन के बचन सुनि कै चुप करि रहे । तातें यह फल

अन्याश्रय कौ दिखाए।

भावप्रकाश – सो श्रीगुसांईजी "भक्ति हेतु निर्णय" ग्रंथ में कह्यो है। सो श्लोक–

"अन्यसंबंध गंधोपि कंधरामेव बाधते।"

यामें कह्यो, जो–अन्य संबंध कौ गंध हू कंधरा कौ बाध करनहारो हैं। सो वैष्णव कों अन्य संबंध तें डरपत रहनो।

सो यह बाई श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। ॥ वार्ता ॥ ३८ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक मथुरादास क्षत्री, गोपालपुर के जाकों श्रीगुसांईजी ने त्याग किये कौ कह्यो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं––

भावप्रकाश – ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'प्रेमवल्लरी' है। सो प्रेमवल्लरी 'सुभआनना' तें प्रगटी हैं। तातें इन के भाव–रूप हैं।

ये मथुरादास गोपालपुर में एक क्षत्री के जन्मे। सो बरस तीस के भए। तब एक वैष्णव कौ संग पाई, श्रीगोकुल आइ, श्रीगुसांईजी के सेवक भए। ता दिन तें ये नित्यप्रति श्रीगोकुल श्रीगुसांईजी के दरसन कों जाते। सो श्रीसुबोधिनीजी की कथा सुनि कै ता पाछें वे अपने घर कों आवते।

वार्ता प्रसंग – १

सो एक समै श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में बिराजे हते। तब पास पांच सात वैष्णव बैठे हते। ताही समै मथुरादास आए। सो श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि पाछें आज्ञा पाइ बैठें। ता पाछें मथुरादास श्रीगुसांईजी सों बिनती किये, जो–महाराज ! आप की सृष्टि में और श्रीआचार्यजी की सृष्टि में कितनो बिलगि है ? तब ये बात सुनि कै श्रीगुसांईजी तो चुप करि रहे। पाछें एक दिन वेई वैष्णव सगरे प्रभुन आगें बैठे हते। तब या मथुरादास कों श्रीगुसांईजी बुलाइ कै कहें, जो–वैष्णव ! मैं तेरो त्याग

कियो। सो श्रीगुसांईजी के बचन सगरे वैष्णवन ने सुने। पाछें सगरे वैष्णव अपने अपने घर आए। ता पाछें वह मथुरादास हू लज्जित होंइ कै अपने घर आए। सो ता दिन तें कोऊ वैष्णव मथुरादास सों श्रीकृष्ण –स्मरन न करें। कोऊ वासों बोलेऊ नाहीं। ता ऊपर जो कोऊ के घर वह जाँइ तो वैष्णव ये बचन वासों कहे, जो–भाई ! तू हमारे घर क्यों आवत है ? तेरो तो श्रीगुसांईजी ने त्याग कियो है। तासों तू हमारे घर मति आवे। या प्रकार सगरे वैष्णव वासों कहे। सो मथुरादास कों जलपान करें तीन दिन भए। तब चौथे दिन मथुरादास ने अपने मन में यह निर्द्धार कियो, जो–अब या देह कौ त्याग करनो। सो चौथे दिन गाम बाहिर कों चले। तहां मार्ग में एक डोकरी कौ घर मिल्यो। सो वह डोकरी श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवकिनी हती। तब मथुरादास ने अपने मन में बिचार्यो, जो–यह श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी की सेवक हैं। ता सों तो या समै श्रीकृष्ण–स्मरन करत जांई। सो मथुरादास तो वा डोकरी के घर आए। ता समै वह डोकरी अपने श्रीठाकुरजी कौ राजभोग धरि बाहिर बैठी हती। सो यह वैष्णव जाँइ श्रीकृष्ण–स्मरन कियो। तब वह बाई बोहोत प्रसन्न होंइ कै मथुरादास कों भक्तिभाव सों बैठारि कै बिनती करी, जो–हों तो अब वृद्ध भई हों। तातें नित्य मोसों श्रीगुसांईजी के दरसन कों जायो जात नाहीं। परि प्रभु बड़े दयाल हैं जो–आजु कृपा करि कै बिना बुलाए मेरे घर अपने वैंष्णव कों या समै पठायो है। तासों प्रभुन की कृपा कौ पार नाहीं।

भावप्रकाश – यामें यह जतायो, जो–अब प्रभु प्रसन्न होंइ तब ही वैष्णव अचानक अपने

घर आवें। सो सूरदासजी ने गायो है –

प्रभु जन पर प्रसन्न जब होंई।
तब वैष्णव जन दरसन पावे पाप रहे नहीं कोई।
हरिलीला उर आवे ताके सकल बासना नासे।
'सूरदास' निश्चय बिचार करि हरि स्वरूप जब भासे।

या प्रकार वैष्णव कै स्वरूप कौ ज्ञान या डोकरी कों हतो।

ता पाछें वा बाई ने मथुरादास सों कही, जो–उठो ! स्नान करो। तब तो मथुरादास कों रुदन आइ गयो। तब वा बाईने यासों कही, जो–तुम दिलगीर क्यों होत हो ? सो कारन तो मोसों कहो। तब मथुरादास ने अपने सब समाचार वा बाई सों कहे, जो–मोकों श्रीगुसांईजी और सब वैष्णवन त्याग कर्‌यो है। तासों हों अपनी देह कौ त्याग कर्‌यो चाहत हूं। सो आज मोकों चौथो दिन है, जल पान नाहीं लीनो। तब वा बाई ने या वैष्णव सों कह्यो, जो–भलो ! तुम लरिकान के कहे कौ बुरो मानत हो ? ये तो श्रीगुसांईजी बालक हैं। इन की बात कौ बावरो होंइ सो बुरो मानें। तातें उठो, स्नान करि दरसन करि मंदिर सों पहोंचि आपुन दोऊ श्रीगुसांईजी के दरसन कों चलेंगे। तब मथुरादास ने उहां स्नान कर्‌यो। पाछें भोग सराइ दोऊ जन श्रीठाकुरजी सों पहोंचि कै श्रीगुसांईजी के दरसन कों आए। तब या वैष्णव ने श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करी। तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णव कों पूछे, जो–वैष्णव ! तुम चारि दिन लों दीसे नाहीं सो कहूं गए हते कहा ? तब या बाई नें श्रीगुसांईजी आगें या वैष्णव के सब समाचार कहे। तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख सों कहे, जो–हम तो यासों कछू कह्यो नाहीं। याकौ त्याग कर्‌यो नाहीं। तब श्रीप्रभु के

बचन सुनि कै यह वैष्णव या बाई की बात सत्य मानि कै पुलकित होंइ श्रीगुसांईजी कों दंडवत् कर्यो। तब श्रीगुसांईजी उन सगरे वैष्णवन सों कहे, जो–देखो वैष्णव ! श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सृष्टि ऐसी है।

भावप्रकाश – सो कहा ? जो–श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी सृष्टि में सुदृढ़ प्रीति हैं। सो जानत है, जो–या मार्ग में त्याग सर्वथा न होंइ। तातें या वैष्णव कों मरत तें जीवायो। सो जैसें अच्युतदास ने भगवानदास भीतरिया पै अनुग्रह कियो ता भांति या डोकरी ने हू मथुरादास पै अनुग्रह कियो। तासों श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सृष्टि कौ कहा कहनो ?

तब वे सगरे वैष्णव अपने मन में प्रभुन के बचन सुनि कै चुप करि रहे। पाछें वह बाई वा वैष्णवन कों दंडवत् करवाइ आपु दंडवत् करी। तब उन कों कृपा करि कै श्रीगुसांईजी दोऊ बीरा दिये, पाछें वा वैष्णव कों वह बाई अपने घर लिवाइ ल्याई। सो आछी भांति सों वाकों महाप्रसाद लिवाइ कै प्रसन्न करि वाके घर पठायो। जब वह बाई श्रीगुसांईजी के पास तें उठि कै अपने घर गई तब श्रीगुसांईजी वा बाई के सब समाचार उन वैष्णवन के आगें आप श्रीमुख तें कहि बोहोत सराहना करें। तब सगरे वैष्णव सुनि कै चुप करि रहे। वह बाई श्रीआचार्यजी की ऐसी सेवकिनी हती। सो मथुरादास कों वाकी संगति तें श्रीगुसांईजी के स्वरूप कौ ज्ञान भयो।

सो मथुरादास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय भये। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। ॥ वार्ता ॥ ३९ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक वैष्णव कौ लरिका, दक्षिन कौ, ताको वार्ता कौ भाव कहत हैं–

वार्ता प्रसंग – १

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप दक्षिन के परदेस कों पधारे हते। सो आप रात्रि के समै कथा कहत हते। सो एक दिन वा वैष्णव के लरिका नें श्रीगुसांईजी के श्रीमुखतें कथा सुनी। सो वा दिन कथा में यह प्रसंग सुन्यो, जो–ठाकुरजी आप ब्रज में नित्य–लीला करत हैं। जो–गोचारन लीला करि कै श्रीनटवर वेष धरि कै ग्वाल सहित गाँइन सहित मुरली बजावत हैं। सो नित्य–लीला या रीति सों करत हैं। और संध्या समै घर आवत हैं। ता समै संध्या–आर्ति श्रीयसोदाजी करत हैं। सो ऐसो प्रसंग सुनि कै वा वैष्णव के लरिका ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी। और पूछी, जो–महाराजाधिराज ! अज हू यह लीला है ? तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख सों कहे, जो–यह तो लीला नित्य ही है। तब तो वा वैष्णव के लरिका कों बोहोत ही चटपटी लागी। सो रह्यो न जाँइ। और मन में यह लगन लागी, जो–कब ब्रज जाऊं ? और मैं ऐसें दरसन करूं ?

पाछें एक दिन कछूक खरची लै कै वह वैष्णव कौ लरिका उहां तें चल्यो। और अपने घर में काहू सों कछू कह्यो नाहीं। बिना पूछे ही उठि गयो। और आगें जाँइ कै माता–पिता सों कहाइ पठाई, जो–मैं श्रीगोकुल होंइ कै आऊंगो, सब ब्रज के दरसन करि कै। सो कोईक दिन में वह वैष्णव कौ लरिका श्रीगोकुलजी में आई कै पहोंच्यो। पाछें गोवर्द्धन आयो। सो जा ठिकाने श्रीगुसांईजी आप कहे हैं ता ठिकाने वह वैष्णव कौ

लरिका बैठि कै देखन लाग्यो । सो यह रटना लागी, जो–श्रीप्रभुजी आप अब कब पधारेंगे ? सो याही भांति सों देखत देखत सांझ परी । सो लौकिक ग्वाल गाँइ तो आवत देखी, परि जैसें श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख सों कहे हते, सो, ता बात कौ तो लेस हू न देख्यो । सो इतने तो सूर्य हू अस्त भयो । तब तो वैष्णव के लरिका कों बड़ो ही आश्चर्य भयो । जो–श्रीगुसांईजी तो कब हू झूठ बोले नाहीं । और मैंनें तो कछू इहां देख्यो नाहीं । सो वह तीन दिन लों वाही ठौर बैठ्यो रह्यो । सो वा वैष्णव के लरिका के हृदय में बड़ो ताप भयो । पाछें तीसरे दिन हू सूर्य अस्त भयो । तब तो वा वैष्णव के लरिका कों बोहोत कलेस भयो । और बिचार्यो, जो–श्रीगुसांईजी तो कब हू झूठ बोले नाहीं, और मैंनें तो कछू देख्यो नाहीं । तातें यह देह मेरी त्याग करूंगो । जो–यह देह मेरे कौन काम की है ? यह बिचारि वा वैष्णव के लरिका ने अपने मन में निश्चय कियो । तब श्रीगोवर्द्धनधर वाकौ ताप सहि न सके । सो श्रीप्रभुजी आप बिचारे, जो– या लरिका कौ अब दरसन देनो । तब इतनेई वा वैष्णव कौ लरिका देखे तो अलौकिक घरी दोइ दिन बादर में सों निकस्यो है । सो वा वैष्णव कौ लरिका बिचारन लाग्यो, जो–बादर में तें मोकों कहा भ्रम भयो है ? पाछें निश्चय कियो, जो–साँचे ही दिन दीसत है । तब वा वैष्णव के लरिका कों धीरज भयो । ता पाछें श्रीगुसांईजी जा प्रकार कथा में आप ने श्रीमुख सों कह्यो हतो ताई प्रकार सों श्रीठाकुरजी ने वा वैष्णव के लरिका कों दरसन दीनो । सो वाही समै वा वैष्णव के लरिका ने देख्यो तो प्रथम अनेक सोने रुपे की सिंग वारी और बडे बडे

कजरौटे नेत्रवारी गाँयें दीसी। सो जूथ के जूथ चली आवति हैं। वाके सोने रुपे के खूर हैं। बड़े बड़े वाके थन हैं। सो थनन में सों दूध श्रवति जाति है। और बछरन की सुधि करि कै राँभति राँभति बेग बेग ब्रज कों आवति हैं। सो उन की खूरन की रजन तें आकास आच्छादित होंइ गयो है। तिन कै पाछें पाछें असंख्य ग्वालन कों वा वैष्णव के लरिका ने देखे। सो परस्पर गाते–बजाते चले आवत हैं। उन के बीच में श्रीठाकुरजी आपु श्रीदामा सखा कै कंधा पर श्रीहस्त धरे पधारत हैं। आगें बलदेवजी हैं। सो श्रीठाकुरजी ने मोर पीच्छ कौ मुकुट धारन कियो है। कानन में अनेक प्रकार के फुलन के गुच्छ हैं। पीतांबर धारन कियो है। धातुन के अनेक भांति के चित्र किये हैं। गुंजामाला, बनमाला आदि सिंगार कियो है। अलकावलि पै गौरज लागी है। तातें मुखारविंद परम सुसोभित होंइ रह्यो है। कमल से नेत्र में प्रसन्नता छाई रही है। श्रीहस्त में मुरली है। और मंद मंद हास्य सों सगरे ग्वाल–गोपन कों मुग्ध करत हैं। या भांति वा वैष्णव के लरिका कों श्रीठाकुरजी आप दरसन दिये। पाछें वा वैष्णव के लरिका के निकट आय अपने श्रीहस्त सों श्रीगोवर्द्धनधर ने वाकों अपनी मंडली में ऐंच लियो। पाछें नंदालय में ल्याये। वहां तीन दिन लों वाकों अपने पास राख्यो। खवायो पिवायो। अपने साथ सिज्या में सुवायो। या प्रकार वाकों बोहोत सुख दियो।

भावप्रकाश – काहेतें ? यह वैष्णव कौ लरिका लीला में 'गोपदेवी' है। सो 'मधुरेक्षना' तें प्रगटी हैं। तातें इन के सात्विक भावरूप हैं। ये कुमारिका के जूथ में हैं। तातें ठाकुर आप उन कों या प्रकार नंदालय में राखि तीन दिन लों अपनी निकट सिज्या में लै पोढे।

ता पाछें वा वैष्णव के लरिका कों फिरि कै चटपटी लागी। जो–कब घर जाउं ? और कब श्रीगुसांईजी सों लीला के समाचार कहों ? और या वैष्णव के लरिका की दसा तो और ही होंई गई। तब श्रीठाकुरजी आप वा वैष्णव के लरिका कों उन के घर पहोंचायो।

भावप्रकाश – सो काहेतें ? जो–वा वैष्णव कौ लरिका अपने मा–बाप कों कहे बिना ब्रज कों आयो हतो। सो मा–बाप कौ मन वा लरिका में बोहोत हुतो। तातें श्रीठाकुरजी ने वा वैष्णव के लरिका कौ पाछो घर भेज्यो। क्यों जो–जब लौं लौकिक वारेन की आसक्ति रहे तब लों वा जीव की नित्यलीला में स्थिति संभवे नाहीं। और दूसरो अभिप्राय यहू है, जो–श्रीगुसांईजी के बचन लोक में सत्य करि दिखावने हैं। तातें ठाकुर ने वा वैष्णव के लरिका कों अपने घर भेज्यो।

सो श्रीगुसांईजी जहां कथा कहत हते ता समै (तहां) जाँइ कै याने दरसन किये। और वैष्णव सब बैठे हुते। सो तिन में यहू श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् करि कै बैठ्यो। पाछें श्रीगुसांईजी आप कथा कहि चुके। तब वा वैष्णव के लरिका कों श्रीगुसांईजी पूछे, जो–तू इतने दिन तें दीसत नाहीं, सो तू कहां गयो हतो ? तब वा वैष्णव के लरिका ने श्रीगुसांईजी आगें ब्रज की लीला के सब समाचार कहे। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो–पात्र तो छोटो है और दान तो बड़ो भयो है। सो या पात्र में ठहरेगो नाहीं। ता पाछें वा वैष्णव के लरिका की प्रातःकाल देह छूटी। तब लीला में जाँइ कै प्राप्त भयो। तातें ब्रज है सो अलौकिक हैं। या में कछू संदेह नाहीं है। जो–वैष्णव होंइ सो सर्वथा संदेह नाहीं करे। सो यह नित्यलीला ब्रज की सदैव है। जो–कृपा अनुग्रह तें दृष्टि आवे। सो श्रीठाकुरजी आप

श्रीगुसांईजी की कानि तें दैवी जीवन के ऊपर कृपा करत हैं।

सो वह वैष्णव कौ लरिका श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम भगवदीय हतो। जो–जाकों श्रीठाकुरजी आप कृपा करि कै साक्षात् दरसन दीने। तातें इन की वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिये। ॥ वार्ता ॥ ४० ॥

* * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक अदना एक गरीब ब्राह्मन, मथुराजी में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश – ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'रूपदेवी' है। ये 'मधुरेक्षना' तें प्रगटी हैं। तातें इन के भाव–रूप हैं। सो रूपदेवी कौ स्वरूप बोहोत सुंदर हैं। मानौ साक्षात् रूप की मूरति हैं। सो एक दिन श्रीठाकुरजी ने मधुरेक्षना सों रूपदेवी की बोहोत सराहना कीनी। सो बात मधुरेक्षना ने रूपदेवी सों कही। जो–आज श्रीठाकुरजी ने तेरी बोहोत सराहना कीनी है, तातें तू उन तें मिलि। तब रूपदेवी ने कह्यो, जो–मिलनो कहा होंई ? सो तो हों कछू जानति नाहीं। और श्रीठाकुरजी कों कछू काम होंइगो तो आप ही तें मिलेंगे। तब श्रीठाकुरजी यह बात सुने। पाछें 'काम–दूतिका' सहचरी सों श्रीठाकुरजी कहे, जो–तू रूपदेवी कों समुझाई कै यहां लै आऊ। मैं यहां बैठ्यो हूँ। तब काम–दूतिका रूपदेवी के पास आई। सो रूपदेवी भेद यह बात कौ समुझ गई। सो रूपदेवी तहां तें चलन लागी। तब काम–दुतिका रूपदेवी सों कहे, जो–रूपदेवी ! श्रीठाकुरजी तोकों याद करत है। तातें तू बेगि चलि। हों तोकों लैन पठाई हूं। श्रीठाकुरजी बिलास–बट पै तेरो पैंड़ो देखत है। तब रूपदेवी गर्व सों कहे, जो–हों तो अभी आय सकत नाहीं। तब काम–दूतिका कहे, जो–तोकों रूप कौ गर्व है। तातें तू श्रीठाकुरजी के बुलाइवे पै हू नाहीं आवति है। सो ताकौ फल तू पावेगी। और श्रीठाकुरजी के तो तो सारिखी अनेक ब्रजभक्त हैं, जो–सदा मिलिवे कों चाह करति हैं। यह कहि काम–दुतिका श्रीठाकुरजी पास आइ कहे जो–महाराज ! वह तो आवति नाहीं। तब श्रीठाकुरजी रूपदेवी पर अप्रसन्न व्है और कुंज में पधारे। सो रूपदेवी रूप कौ गर्व करि अपराध कियो। ता अपराध तें यह भूतल पै आई।

सो मथुराजी में एक ब्राह्मन के जन्म लियो। सो वह ब्राह्मन गरीब हतो। सो जब याकौ लरिका बरस चौदह कौ भयो तब वह मर्‌यो। पाछें यह लरिका भिक्षा मांगि अपनो निर्वाह करन लाग्यो। सो एक समै श्रीगुसांईजी मथुराजी में बिराजत हे। तब यह लरिका भिक्षा माँगत

माँगत श्रीगुसांईजी के ड़ेरा पै आयो। तब श्रीगुसांईजी वाकों गरीब जानि अपने श्रीहस्त सों महाप्रसाद दियो। सो या लरिका ने खायो। सो खाँत ही याकी बुद्धि फिरी। तब तो यह लरिका दुसरे दिन फेरि श्रीगुसांईजी के दरसन कों आयो। सो दरसन करि यह श्रीगुसांईजी सों बिनती कियो, जो–महाराज ! हों गरीब ब्राह्मन हूँ। तातें कृपा करि मोकों अपनो सेवक कीजिए। मैंने काल्हि महाप्रसाद लियो तातें यह ज्ञान भयो, जो–आप पूरन पुरुषोत्तम हो। तातें अब हों आप की सरनि आयो हूं। तब श्रीगुसांईजी वाकों दैवी जीव जानि सरनि लिये। पाछें कछूक दिन अपनी पास राखि मार्ग की प्रनालिका, सिद्धांत आदि सब समुझायो। ता पाछें यह ब्राह्मन श्रीगुसांईजी की आज्ञा मांगि श्रीनाथजीद्वार आय रह्यो। तहां चुकटी करि देहनिर्वाह करतो। जहां भगवद्वार्ता होंई तहां सुनिवे जातो।

वार्ता प्रसंग – १

सो भगवदीच्छा सों एक–समै या ब्राह्मन के सरीर में कोढ़ निकस्यो।

भावप्रकाश – काहेतें, इन (ने) लीला में रूप कौ गर्व कियो है, तातें कोढ़ निकस्यो।

सो वह अपने मन में बोहोत ही पश्चात्ताप करन लाग्यो। पाछें यह श्रीगोवर्द्धननाथजी सों बोहोत ही प्रार्थना करन लाग्यो। सो यह वैष्णव कहे, जो–महाराजाधिराज ! मेरो कोढ़ खोईए। तब श्रीठाकुरजी ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो–यह वैष्णव मोकों दुःख देत है। जो–कछू हों वैद्य तो नाहीं हों, सो याके कोढ़ कों दूरि करों। तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णव सों बोहोत खीजे। और वा वैष्णव सों कही, जो–तू दवाई करि। श्रीगोवर्द्धननाथजी सों क्यों प्रार्थना करत है ? तब वा वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो–महाराजाधिराज ! मोकों तो अन्याश्रय करनो नाहीं है। जो–हों और कौन सों कहों ? और मेरे तो श्रीप्रभुजी आप हैं। तब श्रीगुसांईजी–श्रीमुख सों आज्ञा किये, जो–फलाने गाम में फलानो वैष्णव है। जो–वह वेस्या के घर रहत है। ताकौ तू

दरसन करि आऊ । तो तेरो रोग तत्काल जाइगो । तब वह वैष्णव अपने घर तें कछू खरची लै कै वा गाम कों चल्यो। सो उहां जाँइ पहोंच्यो । पाछें गाम में गयो तब वा वैष्णव ने वा वेस्या कौ घर पूछि कै वा वेस्या कै घर गयो। देखे तो वा वेस्या की सिज्या ऊपर दोऊ जनें परस्पर गरे में बांह मेलें बैठें हैं। और महोंडे आगें अस्तोविस्त अभक्षाभक्ष धर्यो है। तब वा वैष्णव ने जाँइ कै श्रीकृष्ण–स्मरन कियो । पाछें वा वैष्णव ने पूछी, जो–तुम कौन हौ ? तब या वैष्णव ने अपनो सर्व वृतांत कह्यो। तब तो वह सुनत ही उठि ठाड़ो भयो। सो अति आनंद सों नृत्य करन लाग्यो । और अपने मुख सों कहन लाग्यो, जो–मोसें पतितन कों श्रीगुसांईजी आप सुधि करत है ? तब वा वैष्णव कों बड़ो ही आश्चर्य भयो। और कही, जो–श्रीगुसांईजी आप सुधि करत तो हैं। जो–इतनो सुनत ही दसमें द्वार तें प्रान प्रानांतर गए। और वा वैष्णव के सरीर में तें तत्काल सब ठौर तें कोढ़ जात रह्यो।

भावप्रकाश–या वार्ता में यह जतायो, जो–वैष्णव की ऊपर की क्रिया देखि कै कछू और बात सर्वथा न बिचारनी। कैसो हू जीव होंइ, परि श्रीआचार्यजी के मार्ग में वाकौ अंगीकार भयो है, ताकों प्रभु आप सर्वथा छोरत नाहीं। श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजी आप अपने प्रमेय बल तें वाकौ उद्धार करत हैं। छिनक में विरह कौ दान करि वाके सगरे दौष कौं निवृत्त करत हैं। सो कैसें ? जैसें अंतर्गृहगता के सगरे पाप–ताप प्रभु के विरह–मात्र तें जरि गये। ता भांति श्रीआचार्यजी आप विरह रूप तें हृदय में प्रवेस करि जीव के सगरे पापन कों छिन में नास करत हैं। ऐसें आप परम दयाल कारुनिक हैं। यह बात या वैष्णव द्वारा श्रीगुसांईजी आप प्रगट किये।

पाछें वा कोढ़वाले वैष्णव कों अपने मन में अंतःकरन में धिःक्कार आयो। जो–रोग मेरो रहतो तो भलो हो। परि मेरे लिये

वैष्णव की देह छूटी सो आछी नाहीं। ता पाछें यह वैष्णव अपने मनमें बोहोत ही पश्चाताप करत अपने घर आयो। पाछें श्रीठाकुरजी के मंदिर में गयो। तब देखे तो उहां वह वैष्णव ठाढ़ो दरसन करत हैं। तब या वैष्णव नें वा वैष्णव सों श्रीकृष्ण–स्मरन कीनो। ओर कह्यो, जो–यह कहा है ? तब वा रोगवारे वैष्णव तें वानें कह्यो, जो–भाई ! एकांत चलि गोप्य वार्ता करें। सो एकांत बिना यह बात कही न जांई। तब दोऊ जन एकांत में बैठि कै गोप्य वार्ता करन लागे।

भावप्रकाश–सो यह वैष्णव लीला में 'रूपदेवी' की सहचारिनी है। 'श्रीदेवी' इन कौ नाम है। ये दोऊन के भाव मिलत हैं। सो श्रीदेवी ने रूपदेवी कों सगरी लीला की बात कही।

पाछें रोगवारे वैष्णव ने वासों पूछ्यो, जो–तूम पूर्व जन्म में कौन हते ? तब उन कह्यो, जो–मैं पूर्व जन्म में सिंहनंद में एक क्षत्री के घर जन्म्यो। पाछें श्रीआचार्यजी कौ सेवक भयो। सो सेवा बोहोत भांति सों करत हुतो। और कुबुद्धि हू करत हुतो। जो–वैष्णव आवतो ताके मूंड में टोला देतो। और बड़ेन के आगे वैष्णवन की चुगली करत हतो। ता अपराध तें मेरी वह गति भई हती। परि श्रीगुसांईजी या जीव की बांह पकरी, सो ताकों छोरत नाहीं है।

भावप्रकाश–सो या वार्ता में यह सिद्धांत भयो, जो–अन्याश्रय नाहीं करनो। श्रीठाकुरजी कौ अपने कार्यार्थ श्रम नाहीं करवावनो। और वैष्णव मात्र कों काहू प्रकार सों कुढावनो नाहीं। जो–यह मार्ग (सुद्ध) अद्वैत है। सो याकी सराहना कहां तांई करिये ?

सो वह वैष्णव कोढ़वालो यह सुनि कै बोहोत ही प्रसन्न भयो। सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो बड़ो ही कृपापात्र भगवदीय हुतो। जिन के ऊपर आप श्रीगुसांईजी सदैव प्रसन्न रहते। उन

कों अपुनो स्वरूप जतायो। महात्म्य प्रगट कियो। तातें उन की वार्ता कहां तांई कहिए। ॥ वार्ता ॥ ४१ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक वैष्णव , गौरवा क्षत्री महावन कौ, जानें सर्प मार्‌यो हतो, ताकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश– ये तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'दुर्गा' है। ये 'मधुरेक्षना' तें प्रगटी हैं। तातें उन के भावरूप हैं।

ये महावन में एक कायस्थ के उहां जन्म्यो। सो महावन के हाकिम कौ सगरो काम वह कायस्थ करतो। सो बेटा बरस बारह चौदह कौ भयो तब तें वह कायस्थ इन कों संग ही राखतो। सो बेटा कों सगरो काम सिखावें। पाछें कछूक दिन में वह कायस्थ मर्‌यो। तब हाकिम ने वाके बेटा कों वाकौ सब काम सौंप्यो। सो एक समै वह कछू कार्यार्थ मथुराजी आयो। सो ता समै श्रीगुसांईजी आप मथुराजी में बिराजत हते। सो मथुराजी में मायावादीन सों सास्त्रार्थ होइ रह्यो हतो। तामें श्रीगुसांईजी आप जीतें। तब श्रीगुसांईजी कौ तेज–प्रताप देखि बोहोत से दैवी जीव आप की सरन आए। ता समैं ये हू आपके सरनि आयो। पाछें ये कछूक दिन श्रीगुसांईजी के पास रहि मार्ग की सब प्रनालिका जान्यो। ता पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती करि भगवत्सेवा पधराई। हस्ताक्षर पधराए। पाछें आज्ञा लै अपने घर आयो।

वार्ता प्रसंग–१

सो वह वैष्णव नित्य जैसें उठे सो तैसें ही प्रातःकाल उठि कै देहकृत्य दंतधावन करि कै स्नान करें। पाछें श्रीठाकुरजी की सेवा करे। रसोई करि कै भोग धरें। ता पाछें भोग सराइ कै वैष्णव कों महाप्रसाद लिवावें। और हाथन की सेवा हाथ सों करें। और मुख सों भगवन्नाम लेतो जाँइ। जो–भगवन्नाम क्षन एक छोरे नाहीं। सो उष्णकाल के दिन हते। और वैष्णव प्रसाद लैन कों आयो नाहीं, कोऊ। तब बुलाइवे कों जात हतो। सो पैंडे में सर्प पर्‌यो हतो सो सरके नहीं। तब तो याकों घरी दोइ ठाढ़े भई। बोहोतेरो उपाय कियो, परि मार्ग देइ नाहीं। तब

वैष्णव कायो होंई कै कह्यो, जो–मेरो दोष नाहीं है । तब पाछें वैष्णव नें वह सर्प मार्‍यो । तब वा सर्प की नागिन नें वा वैष्णव कौ पीछो कियो । जो–मैं या वैष्णव कों सर्वथा खाउंगी । परि वह वैष्णव रात्रि–दिन भगवद् नाम लियो ही करें । तातें दाव पावे नाहीं ।

पाछें एक दिन यह वैष्णव और अवैष्णव तें बातैं करन लाग्यो । तब वा सर्पनी ने अपने मन में बिचार्‍यो, जो–अब मेरो दाव है । सो वा सर्पनी नें दौरि कै वा वैष्णव कों खायो । तब वह वैष्णव तो मर्‍यो । तब और वैष्णव गाम के कहन लागे, जो–ऐसे वैष्णवकी मृत्यु ऐसी क्यों भई चहिए ? तब श्रीगुसांईजी आप बिराजे हुते और सब वैष्णव बैठे हते । तब एक वैष्णव ने बिनती श्रीगुसांईजी सों करी, जो–महाराजाधिराज ! जो–फलाने वैष्णव कों सर्पनी ने खायो, सो मर्‍यो । सो वह ऐसो वैष्णव हतो ताकी ऐसी मृत्यु क्यों बूझिए ? तब श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो–वाकों पूर्व जन्म कौ बैर हुतो । और श्रीगुसांईजी आप द्दष्टांत दै कहें, जो–सर्प रूपी यह काल है । सो, जो वैष्णव भगवन्नाम कौ छोरि कै और बात करत है तिन कों यह काल खात हैं । सो श्रीगुसांईजी आप यह आज्ञा वैष्णवन सों किये ।

भावप्रकाश–सो या वार्ता में यह जतायो, जो–वैष्णव कों जीव हिंसा सर्वथा करनी नाहीं । और अन्यमार्गी कौ संग नाहीं करनो । अहर्निस भगवन्नाम लैनो । तातें काल बाधा करे नाहीं ।

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो । तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए । ॥ वार्ता ॥ ४२ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक साहूकार के बेटा की बहू, गुजरात में रहती, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–सो वह साहूकार गुजरात में रहत हतो। ताके एक बेटा हतो। सो वाकौ ब्याह अपनी जाति में वा साहूकार ने कियो। सो बहू बोहोत ही सुंदर नवयौवना आई। वह दैवी जीव हती। श्रीगुसांईजी की सेवकिनी हती। सो बड़ी भगवदीय हती। वाके नेत्रन में श्रीगोवर्द्धननाथजी झलकत हते। सो वाने अपने धनी सों कह्यो, जो–मैं तो श्रीगुसांईजी की सेवकिनी हूँ। तातें श्रीगुसांईजी के सेवक बिना काहू के हाथ कौ खान–पान नाहीं करूंगी। तातें जो–तुम श्रीगुसांईजी के सेवक होऊ तो मेरे तुम्हारे बने। तब बेटा ने पूछ्यो, जो–श्रीगुसांईजी कौन हैं ? तब बहू ने कह्यो, जो–श्रीगुसांईजी साक्षात् ईस्वर हैं। वे श्रीगोकुल में रहत हैं। तब तो बेटा ने अपने बाप सों ये सब समाचार कहे। तब वा साहूकार ने कह्यो, जो–अब ही श्रीगोकुल चलो। हम हू श्रीगुसांईजी के सेवक होंई कृतार्थ होंईगे। पाछें सब जने श्रीगोकुल आइ श्रीगुसांईजी के सेवक भए। तब वा साहूकार के बेटा की बहू ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! कृपा करि कै सेवा पधराइ दीजिये। तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करि एक लालाजी कौ स्वरूप उन के माथें पधराय दियो। पाछें कछूक दिन रहि सेवा की रीति भाँति जानें। ता पाछें वह साहूकार, वाकौ बेटा, बहू आदि सब श्रीगुसांईजी की आज्ञा मांगि अपने देस कों आए। सो आछी रीति सों सेवा करन लागे।

वार्ता प्रसंग–१

सो एक समै महाप्रसाद लै कै वह बहू झरोखा में बैठी हुती। श्रीठाकुरजी के बीरान की सींक करत हुती। ता समै एक म्लेच्छ की दृष्टि वा झरोखा की ओर गई। तब वा स्त्री कौ मुख वा म्लेच्छ ने देख्यो। तब वानें पूर्व जन्म कौ संबंध जान्यो।

भावप्रकाश–सो काहेतें ? जो–या बहू के नेत्र में वा म्लेच्छ कों श्रीगोवर्द्धननाथजी के साक्षात् दरसन भए। तब ताकों बिसन भाव भयो। तातें पूर्व–जन्म की स्मृति भई।

सो वा स्त्री कों नित्य वह म्लेच्छ देखे बिनु अन्न नहीं खांइ। सो वह म्लेच्छ नित्य वाके द्वार पैं जाँइ बैठे। सो जब वा स्त्री कौ मुख देखे तब जलपान वह म्लेच्छ करे। नाँतरु ऐसें ही ठाढ़ो रहे। जब कोई पूछे तब वह म्लेच्छ कहे, जो–या स्त्री कौ मुख

देखोंगो तब अन्न लेहुंगो। सों ऐसें नित्य वह करे। परि देखे बिना रहे नाहीं। और जो–जब वह दिखाई न देई तो तबलों एक दिन दोइ दिन चारि दिन भूखो ही मरे। परि कहूं जाँइ नाहीं। सो ऐसें करत वाके सगे सहोदर, जाति, पार–परोसी जानन लागे। और लौकिक में गाम में वा देस में वा स्त्री की निंदा बोहोत ही होंन लागी। तब वा स्त्री के घर के महा चिंता करन लागे, जो–अब कहा करिए ? जो–यह म्लेच्छ तो नित्य ही पीछे पर्‌यो है। सो ऐसें बोहोत उपाय करि कै वा म्लेच्छ हू कों बोहोत ही समुझायो। परि म्लेच्छ हू माने नाहीं। और दिन–दिन निंदा तो बोहोत ही होंने लागी। तब वा स्त्री के घर के मनुष्य ने बिचार कियो, जो–अब कहा करिए ? जो–कहूं परदेस में जाइए तो यह अपवाद मिटे। तब वा बहू ने अपने घरकेन तें कह्यो, जो–मैं तुम्हारे घर में बुरी आई। जो–मेरे आए तें ऐसी निंदा होत है। और घर हू छोरनो आयो। और देस हू छोरनो आयो। तातें और देस जाइवे कौ बिचार करत हो तो एक बिनती मैं करों, जो–तुम सबन के मन में आवे तो। तब वाके सुसर ने कह्यो, जो–कहि, हम प्रसन्न हैं। तब वा बहू ने कही, जो–मेरी ओर तें निंदा भई है सो बुरो। और घर छूटे देस छूटे सो बुरे तें बुरो। इतनो भलो है, जो–और देस न जाइए। एक श्रीगोकुल जाइए तो भलो है। तब तहां श्रीगुसांईजी के दरसन होइंगे। जो–सातों स्वरूपन कौ दरसन होइगो। श्रीयमुनाजी कौ दरसन होइगे। और श्रीगुसांईजी के सब बालकन के दरसन होइंगो। और संपूरन ब्रजभूमि के दरसन होइंगे। सो यह मैं बिनती करत हों। अब तुम प्रसन्न होऊ

सो बात करो। तब तो सब घर के वा बहू के बचन सुनि कै बोहोत ही प्रसन्न भए। कहे, जो–स्याबास बहू ! तैनें आछी बात कही। यह उपद्रव उठ्यो है सो आछें ही कों उठ्यो है। जो–'निजेच्छातः करिष्यति।' श्रीप्रभुजी आप करेंगे सो उत्तम ही करेंगे। जो–इतने में यह दुष्ट हू भूलि जाइगो। ऐसो निश्चय अपने मन में बिचारि कै सवेरे ही एक दोइ गाड़ी भाड़े करि कै उन गाड़ीन में सब बस्तू धरि कै सिद्धि करि के राखी। तब दूसरे दिन सब तैयारी करी। तब वा म्लेच्छ ने गाड़ी देखि कै गाड़ीवान सों पूछ्यो, जो–यह गाड़ी कौन की भरी है ? और कहां कों जाइगी ? तब वा गाड़ीवान ने वा म्लच्छ सों कही, जो–अमूके साहूकार के घर के सब श्रीगोकुल जात हैं। तब ऐसें सुनि कै वह म्लेच्छ हू साथ चलिवे कों तैयार भयो। ता पाछें वे सब गाड़ी जुड़ाइ कै चले। सो कोस दोइ चारि पर गए। तब देखें तो वह दुष्ट म्लेच्छ हू पाछें तें आवत हैं। तब सबन अपनें मन में बिचार्यो, जो–जाके लिये घर छोर्यो हतो सो तो रोग साथ ही है। सो ऐसें करत कोईक दिन में श्रीगोकुल में जाँई पहोंचे। तब ये सब नाव में बैठे। और वा नाव वारे मलाह सों साहूकार ने कह्यो, जो–यह एक म्लेच्छ हमारे साथ में नहीं है। तासों या म्लेच्छ कों नाव में मति बैठारियो। याकों पार मति उतारियो। ऐसें वा साहूकार नें उन मलाहन सों कहि कै वा म्लेच्छ कों नाव में बैठन न दीनो। ता पाछें और सब पार उतरि गए। और वह म्लेच्छ श्रीयमुनाजी के कांठे बैठ्यो रह्यो। और उन सबन ने जाँइ कै श्रीगुसांईजी के दरसन किये। ता पाछें

श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन खुले । सो राजभोग–आर्ति के दरसन करि कै परम आनंद पाए । ता पाछें अनोसर कराइ कै श्रीगुसांईजी आप बैठक में पधारे । तब वा साहूकार सों श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें कहे, जो–तुम रसोई मति कर्‍यो । आज महाप्रसाद इहांई लीजियो । और तुम कितने जनें हो ? तब वा साहूकार ने कह्यो, जो–महाराज ! हम तो चार जनें हैं । तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख सों कहे, जो–तुम तो पांच जनें हो । चार कौ नाम तुम क्यों कहत हो ? तुम्हारे साथ में एक वैष्णव और आयो है । जो–ताकों तुम बुलाओ । तब इन साहूकार ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराजाधिराज ! यों तो साथ में अनेक आवत हैं । परि हमारे घर के तो हम चार ही मनुष्य हैं । और तो चाकर हैं सो सीधो पावत हैं । तब फेरि श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–चाकरन (की) कहा है ? परि वह तो तुम्हारे साथ ही आयो है । जो–तुम सों वाकौ स्नेह बोहोत ही हैं । तासों वाकों बुलाओ । ता पाछें श्रीगुसांईजी तों आप भोजन कों पधारे । सो भोजन करि आचमन लै मुख सुद्धार्थ बीरा आरोगि कै उन कों महाप्रसाद की पातरि पांच धराई । तब फेरि कै श्रीगुसांईजी श्रीमुख सों आज्ञा करे, जो–तुम पांच ही जनें महाप्रसाद लेऊ । वा पांचमें वैष्णव कों बुलाई कै तुम सब संग ही महाप्रसाद लेऊ । सो ऐसें श्रीगुसांईजी आज्ञा करि कै आप तो भीतर पधारे । ता पाछें ये चारों जनें तो बैठे ही रहे । पाछें श्रीगुसांईजी आप फेरि बाहिर पधारे, तब देखें तो महाप्रसाद धर्‍यो है । और चारों वैष्णव बैठे हैं । तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख सों कहे, जो–तुम

बैठि क्यों रहे हो ? तब वा साहूकार ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराजाधिराज ! हमारे संग में तो कोई पांचमो वैष्णव है नाहीं। जो–एक तो मैं, एक मेरी बहू, एक मेरो बेटा, एक बेटा की बहू। ये हम चार ही जनें हैं। और तो कोई है नाहीं। और तो ऐसें साथ में बोहोत हैं। सो बिना जाने कौन कों बुलावें ? और आप आज्ञा करि कै पधारे, जो–तुम पांचों ही वैष्णव बैठि कै महाप्रसाद लीजो। तातें हम बैठि रहे हैं। तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख सों आज्ञा किये, जो–तुम पार कौन कों छोरि आए हो ? सो ऐसें अनुचित तुम कों नहीं चहिये। जो–वह तो परम कृपापात्र भगवदीय है, वाकों अवस्य बुलावो। तब तो वह साहूकार अपनें मन में खिस्याइ कै चुप करि रह्यो । पाछें कछू बोल्यो नाहीं। तब श्रीगुसांईजी ने एक मनुष्य कों बुलाई कै कह्यो, जो–तू नाव ल्याइ कै पार जा। सो उहां एक वैष्णव बैठ्यो है। सो आसुरी देह संबंधी है। सो वाकों तू बुलाइ ल्याऊ। ता पाछें वह मनुष्य नाव लिवाइ कै पार गयो। सो वाकों नाव में बैठारि कै लै आयो। तब वा मनुष्य ने आइ कै श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराजाधिराज ! वह वैष्णव आयो है। तब श्रीगुसांईजी आप वा मनुष्य सों कहे, जो–वाकों ठकुरानी घाट पर स्नान कराइ नये वस्त्र पहराइ कै लिवाइ ल्याऊ। तब उह तो वाकों श्रीठकुरानी घाट स्नान कराइ नये वस्त्र पहराइ कै लिवाइ ल्यायो। तब वाने श्रीगुसांईजी कों आय कै दंडवत् कीनी। ता समै वाकों श्रीगुसांईजी के पूरन पुरुषोत्तम के दरसन भए। तब वाकों बोहोत ही आनंद भयो। सो वाई

आनंद में श्रीगुसांईजी के सन्मुख देखि रह्यो। तब श्रीगुसांईजी हू वाकों कृपा–कटाक्ष सों देखि कै वाकों नाम उपदेस दै, दृष्टि द्वारा ही निवेदन कौ दान किये। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख सों आज्ञा करे, जो–अब तुम पांचों जन महाप्रसाद लेऊ। तब एक पातरि वाकों धरी। तब श्रीगुसांईजी एक सांगामांची धराइ कै बीच में बिराजे। सो एक और तो वह वैष्णव इकलोइ महाप्रसाद लै। और एक ओर वे चारों जनें महाप्रसाद लै। और श्रीगुसांईजी कों निरखते जाँइ। और महाप्रसाद लेत जाँइ। इतने ही उहां तें उठि कै श्रीगुसांईजी भीतर पधारे। और वह इकलोइ (जो) महाप्रसाद लेत हो, सो, ताकों तो पातर पैं बैठे ही मूर्छा आई। सो गिरि पर्यो। जो–अत्यंत विरह ताप भयो। सो वाकी देह छूटि गई। तब इतने ही सोर भयो। सो सब वैष्णव कहन लागे, जो–देखो! यह कहा भयो? सो इतने ही श्रीगुसांईजी आपु सुने। तब श्रीगुसांईजी के रोमांच होंइ आए। और हृदय भरि आयो। ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीमुख सों आज्ञा किये, जो–ऐसें प्रेमी भक्त होने दुर्लभ हैं। तब सब वैष्णव और जो साहूकार वाके साथ आयो हतो तासों श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–तुम याकों श्रीयमुनाजी के किनारे पर लै जाँइ कै अग्नि–संस्कार करि आवो। तब वे वैष्णव आनाकानी करन लागे। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा करे, जो–तुम या बात में कछू संदेह मति करो। यह तो अलौकिक जीव है। याकी देह कौ बिचार तुम अपने मन में मति ल्याओ। जो–यामें तुम कों कछू बाधक नाहीं है। जो–स्नान मात्र तें ही सुद्ध होऊगे।

अब याकौ संस्कार करि आओ। ता पाछें याकी बात हों तुम सों कहुंगो। तब वे वैष्णव वाकों श्रीयमुनाजी के किनारे लै जाँइ काष्ट मँगाइ कै अग्नि–संस्कार कियो। ता पाछें न्हाइ सुद्ध होंइ अपने घर आए। ता पाछें दूसरे दिन श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में बिराजे हते। सो उत्थापन तें पहिले श्रीगुसांईजी सदैव कथा कहत हते। ताही भांति कथा कहत हते। तब उन वैष्णवन श्रीगुसांईजी पास आइ कै बिनती करी, जो–महाराजाधिराज ! आप आज्ञा कीनी हती, जो–याकों अग्नि–संस्कार करि आओ पाछें याकी बात कहोंगो। सो अब आप कृपा करि कै कहिए। यह पूर्व जन्म कौ कोन है ? और याकी देह कौ संबंध ऐसें कैसें भयो है ? और याकी या रीति सों अकस्मात् मृत्यु कैसें भई ? सो वह सब हम सों कहिए। तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख सों आज्ञा किये, जो–वैष्णव हो ! सुनो।

जो–या साहूकार वैष्णव के साथ यह आयो हतो। सो याके बेटा की बहू सों वाकी आसक्ति हुती। सो स्त्री–पुरुष सब बैठे हुते। तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख सों आज्ञा किये, जो–यह पूर्व देस में पटना के पास आगें कोस चार पांच ऊपर एक गाम है, तहां यह पूर्व जन्म में ब्राह्मन हतो। सो परम भगवदीय कृपापात्र वैष्णव हतो। सो यह बाई याकी स्त्री हती। सो ये दोऊ जनें भगवदीय कृपापात्र हते। सो ये दोऊ जनें भगवत्सेवा बोहोत ही भली भांति सों करते। जो–श्रीठाकुरजी आप इन सों प्रत्यच्छ बातें करते। और रात्रि कों स्त्री–पुरुष दोऊ जनें परस्पर भगवद्वार्ता करते। सो यों करत करत सब रात्रि बितीत होंइ

जाती। और ये दोऊ जन लौकिक व्यवहार कछू जन्म पर्यंत जाने ही नाहीं। और इन दोऊन कै परस्पर अत्यंत स्नेह हतो। सो अलौकिक स्नेह हुतो। सो एक समै यह ब्राह्मन कहूं भिक्षार्थ कों गयो हुतो। और पीछे सों एक वैष्णव आयो। सो इन के घर वह वैष्णव कबहूक आवतो जातो। सो भगवद्वार्ता करतो। सो दोइ चारि घरी बैठतो। तब यह बाई भगवद्वार्ता करती सो सुनतो। और वाकौ घर नेंक दूरि हतो। सो एक दिन वह वैष्णव आयो। तब वा बाई कों पूछ्यो, जो–तुम्हारो धनी कहां है ? तब वा बाई नें कह्यो, जो–धनी तो ये मंदिर में बिराजे हैं। और जिन के भेलें रहति हूं सो तो वे भिक्षा कों गए। सो अब आवेंगे। तुम बैठो। ता पाछें आसन डारि दियो। सो ता पर वह वैष्णव बैठ्यो। तब वा वैष्णवनें भगवद्वार्ता–चर्चा या बाई सों करी। तब या बाई ने कछू संदेह पूछ्यो। तब वा वैष्णवनें कह्यो, जो–बाई ! यह बात तो एकांत की है। और तुम्हारो घर रस्ता कौ है। सो कोऊ निकसतो जातो आवतो सुने तो भलो नहीं है। तब वा बाई ने किवाड़ दै कै आँगल मारि दई। ता पाछें वह वैष्णव तें वह बाई धीरे धीरे वार्ता करन लागी।

तब इतने ही में वह बाई कौ पति आयो। सो देखे तो किवाड़ लगें है। तब वह बोहोत ही पुकार्‌यो। तब वाकी स्त्री ने किवाड़ खोले। तब वह ब्राह्मन घर में आय कै देखे तो वह वैष्णव एकांत में बैठ्यो है। तब वाकों देखत ही वा ब्राह्मन के मन में दोष आयो। तब दोऊ जनेंन पर दोष भयो। तब ब्राह्मन नें अपने मनमें बिचारी, जो–मेरी स्त्री की तो किसोर वय है। और यह

वैष्णव हू नव यौबन है। और मेरे तो लौकिक संबंध कौ त्याग है। और मोसों यह स्त्री हू कहत हैं, जो –मेरे तो या कार्य सों प्रयोजन नाहीं। और ये दोऊ जनें किवाड़ मारि कै एकांत ठौर मैं बैठे हैं। सो कछू भलाई नाहीं दीसत है। सो ऐसो अपने मन में बिचार कियो। पाछें वह वैष्णव ने भगवत्स्मरन कर्‌यो। परि वासों यह रोष करि कैं दोष ल्याइ कै बोल्यो नाहीं। तब वाहू वैष्णव ने अपने मन में जान्यो, जो–याके मन में तो दोष आयो। ता पाछें वह वैष्णव तो अपने घर गयो। पाछें यह ब्राह्मन अपने घर में अपनी स्त्री सों खीझि कै कह्यो, जो–तुम दोऊ जनें किवाड़ मारि कै कहा करत हते ? तब वा स्त्री ने जो प्रकार भयो हतो सो सब कह्यो। भगवद् वार्ता भई सो सब वानें अपने पति के आगें कही। परंतु या ब्राह्मन वैष्णव ने मानी नाहीं। ता पाछें वा वैष्णव सों द्वेष राखत रह्यो। मिलि बैठे, श्रीकृष्ण–स्मरन करे। पर मन में कौ द्वेष मिटे नाहीं। परंतु स्त्री ने तो पति सों प्रेम बोहोत ही राख्यो हतो, अंतःकरन सों। सों काहेतें, जो–स्त्री ने पति सों प्रतिज्ञा करी हती। परि ब्राह्मन वैष्णव ने मानी नाहीं। तब केतेक दिनन में भगवद् इच्छा तें वा ब्राह्मन वैष्णव की देह छूटी। तब वह मलेच्छ भयो।

भावप्रकाश–सो काहेतें ? जो–याने वैष्णव पर दौष बुद्धि कीनी, (और) तासों द्वेष कियो। तात म्लेच्छ योनी प्राप्त भई। सो जो–कोऊ वैष्णव पर या प्रकार लौकिक बुद्धि करे ताकों हीन योनि में जन्म लैनो परे। यह सिद्धांत जतायो।

और वाकी स्त्री की देह छूटी सो यह बाई बैठी है। यह इन के पूर्व जन्म कौ वृत्तांत कह्यो। और अब के जन्म में या बाई पर एक दिन या म्लेच्छ की दृष्टि परी। तब या बाई के नेत्रन द्वारा

श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन वा म्लेच्छ कों भए। सो तब ही तें याकों आर्ति भई। सो नित्य या स्त्री कों देखे। तब याके नेत्रन में वाकों श्रीप्रभुजी के दरसन होंई। और लौकिक निमित्त तो वह नहीं देखे। सो ये लौकिक दुर्बुद्धि या बात कों कहा जानें ? जो–वा म्लेच्छ नें तो या बाई कों पहचानी हैं। और याने वाकों नहीं पहचान्यो है। और वाने तो तुमसों इतनो कियो, जो–नित्य देखिवे आवतो। और तुम कों वाके पीछे घर छोरि कै इहां लों आवनो पर्‌यो। सो ऐसें सब वैष्णवन सहित वा साहूकार सों श्रीगुसांईजी आज्ञा आप श्रीमुख तें किये। और यानें जब मोकों देख्यो। तब याकों मेरे दरसन भए, श्रीस्वामिनीजी के भाव सों। जैसें लीला में होंई हैं तैसेंही भए हैं। ता पाछें जब हों भीतर गयो तब याकों विरह करि कै जो ताप उपज्यो, सो मूर्छा आई। सो तब ही याकी देह छूटी। सो अब या म्लेच्छ कों मेरी दृष्टि द्वारा संबंध भयो है। तातें यह लीला में पहोंच्यो। अब याकों कछू कर्तव्य रह्यो नाहीं। और यह बाई कों ज्ञान अजहूँ नाहीं है। तातें यह यहां अटकी है। सो लौकिक संबंधी देह के संगादि में याकौ मन अटक्यो है। सो वाकौ मद है।

भावप्रकाश–यहां यह बड़ो सदेह है, जो–या बहू के नेत्र में तो श्रीगोवर्द्धननाथजी आप झलकत हैं। ऐसी यह भगवदीय है। तोऊ याकों अज हू ज्ञान नाहीं भयो। और वा म्लेच्छ कों या बहू के दरसन मात्र तें अपने स्वरूप कौ ज्ञान भयो। ताकौ कारन कहा ? तहां कहत हैं, जो–या बहू कों श्रीगुसांईजी की कृपा तें श्रीगोवर्द्धननाथजी में प्रीति है। श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ ध्यान करत हैं। तातें श्रीगोवर्द्धननाथजी इनके नेत्रन में झलकत हैं। परि देहादि में याकी अलौकिक बुद्धि भई नाहीं। काहेतें ? जो–वाकों वैष्णवन कौ संग नाही है। सो वैष्णवन के संग बिनु यह बुद्धि प्राप्त न होंई। तातें याकों देहादिक कौ लौकिक मद है। सो अलौकिक स्वरूप कौ ज्ञान होत नाहीं। और वा म्लेच्छ कों दीनता भई। तातें श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपा भई, जो–तत्काल विरह–ताप करि लीला में प्राप्त भयो। तातें भगवदीय कों सदा दैन्य

राखनो। देहादि के दुःसंग ते सर्वथा डरपत रहनो। और वैष्णवन कौ संग अहर्निस करनो। यह जतायो।

सो या बाई कों देह–संबंधी मद अपने मन में तें छूटेगो तब यहू लीला में बाई कै समीप ही पहोंचेगी। ये दोऊ श्रीकृष्णावतार में बहिन–भाई हे। जो ऐसें श्रीगुसांईजी आपने श्रीमुख तें जीवन के ऊपर दया करि कै इन कौ सांगोपांग पूर्वजन्म तें लै कै सो या जन्म तांई कौ वृत्तांत संपूरन कह्यो। तब वा स्त्री कों विरह–ताप भयो। सो बिरह–ताप अत्यंत ही भयो। सो एक मुहूर्त में वा स्त्री हू की देह छूटी। तब वह साहूकार के बेटा की बहू भगवत् लीला में जाँइ कै प्राप्त भई। तब सब वैष्णव वाहू कौ संस्कार करि आए। तब वा स्त्रीके देह संबंधीन सों अनुग्रह करि कै श्रीगुसांईजी नें कह्यो, जो–तुम कों याकौ सूतक कछू लगे नाहीं। काहेंते, जो–ये दोऊ परम भगवदीय भक्त हते। सो ये दोऊ निकुंज रासादिक लीला में पहोंचे हैं। अब इन कों कछू कर्तव्य रह्यो नाहीं हैं। ऐसें कहत ही हृदौ भरि आयो।

भावप्रकाश–सो ये दोऊ लीला में श्रीचंद्रावलीजी के यूथ के हैं। सो बहू कौ नाम 'कामा' है। ये 'भद्रा' के राजस भाव कौ स्वरूप हैं। इनतें प्रगटी है। तातें इन के भाव रूप हैं। और वह म्लेच्छ कौ नाम 'काम–आतुरी' है। सो ये दोऊ श्रीठाकुरजी की सेवा में सदा तत्पर रहति हैं। निकुंज दि सँवारति हैं। दोऊन कौ भाव मिलत हैं। सो दोऊ श्रीचंद्रावलीजी की सहायक हैं।

सो वह साहूकार के बेटा की बहू और मलेच्छ श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। तिन के ऊपर श्रीगुसांईजी आप सदा ही प्रसन्न रहते। जो–कृपा करि कै ऐसो माहात्म्य दिखायो। तातें इन की ऐसी वार्ता बोहोत ही हैं। सो इनकी वार्ता कौ पार नाहीं। तातें कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ ४३ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक स्यामदास, आंजना कुनबी, सो वह गुजरात के हैं, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश– ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'प्रेमकली' है। ये 'भद्रा' तें प्रगटी हैं। तातें इन के भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग–१

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुलजी तें द्वारिकाजी श्रीरनछोरजी के दरसन कों पधारत हते। सो गुजरात में होंइ कै द्वारिकाजी जाँई श्रीरनछोरजी के दरसन करि कै पाछें फिरे। सो श्रीगुसांईजी चले। सो मार्ग में एक गाम आयो। सो वा गाम में स्यामदास आंजनो कुनबी रहत हतो। सो उन ने श्रीगुसांईजी के दरसन करे। तब स्यामदास ने अपने मन में बिचार कियो, जो–श्रीगुसांईजी के सरन जैये तो आछौ है। सो स्यामदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराजाधिराज ! आप कृपा करि कै मोकों सरनि लीजिये। तब श्रीगुसांईजी ने स्यामदास सों कह्यो, जो–तुम जाँइ कै स्नान करि आओ। तब स्यामदास स्नान करिवे गयो। सो स्नान करि आयो। पाछें श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् करि कै कह्यो, जो–महाराज ! मैं स्नान करि कै आयो हूं। तब श्रीगुसांईजी स्यामदास कों सरनि लिये। पाछें श्रीगुसांईजी रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरि समयानुसार भोग सराइ प्रभुन आप भोजन करि आचमन करि स्यामदास कों आज्ञा किये, जो–स्यामदास ! तुम इहांई महाप्रसाद लीजियो। पाछें स्यामदास कों आपने जूंठन की पातरि धरी। सो स्यामदास ने महाप्रसाद लियो। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप विश्राम करे। पाछें दूसरे दिन श्रीगुसांईजी –उहांतें विजय किये। सो

स्यामदास कों संग लै कै फेरि द्वारिकाजी श्रीरनछोरजी के दरसन कों चले। तहां जाँइ दरसन करि कै उहां तें चले सो श्रीगोकुल आए। और स्यामदास तो गुजरात ही में रहे।

पाछें एक समै स्यामदास कों एक गुगली नें पूछयो, जो–तुम्हारी कौन ज्ञाति है ? तब स्यामदास ने वा गुगली सों कह्यों, जो–हमारी ज्ञाति तो हम जानत नाहीं है। और मेरे माता पिता तो बालकपने में मरि गए हते। सो मोकों तो बालक छोर्‌यो हतो। तातें मोकों तो कछू ठीक है नाहीं, जो–मैं कौन ज्ञाति हूं। और हमारे माता–पिता सों कौन काम है ? हमारो सर्वस्व धन श्रीगुसांईजी हैं। सो जिननें श्रीगोवर्द्धननाथजी के स्वरूप कौ ज्ञान बतायो है। और उन ही की सरनि लिये हैं। और मेरो उद्धार तो श्रीगुसांईजी आपने कर्‌यो है। ताते हमारे ज्ञाति सों कहा प्रयोजन है ? तब गुगली ने मुसकाई कै कह्यो, जो–देखो ! इन कों कैसी दृढ़ता है ? जो–कछू संसार की बात कौ तो लेस हू नाहीं है। ता पाछें वह गुगली स्यामदास सों कछू कह्यो नाहीं और कछू बोल्यो हू नाहीं।

और स्यामदास तो उहां केतेक दिन रहि कै पाछें श्रीगुसांईजी के दरसन कों श्रीगोकुल कों चले। सो गुजरात तें श्रीगोकुल आय स्यामदास ने श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन राजभोग–आर्ति के किये। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप सेवा सों पहोंचि कै अपनी बैठक में पधारे। तब स्यामदास श्रीगुसांईजी के दरसन कों गए। सो तहां जाँइ के श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् करी। तब श्रीगुसांईजी स्यामदास सों पूछें, जो स्यामदास ! तुम कब आए

हो ? तब स्यामदास ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो–महाराजाधिराज ! अब ही आयो हूँ। तब श्रीगुसांईजी आप भोजन कों पधारे। सो भोजन करि आचमन करि कै स्यामदास सों प्रभुन कह्यो, जो–स्यामदास ! उठो, महाप्रसाद लेहु। तब स्यामदास स्नान करि कै महाप्रसाद लैन कों गए। सो श्रीगुसांईजी आप अपने श्रीहस्त सों स्यामदास कों पातरि धरी। तब स्यामदास ने महाप्रसाद लियो। पाछें श्रीगुसांईजी आपने तो अपनी बेठक में जाँइ कै विश्राम कियो। और स्यामदास तो श्रीगुसांईजी के चरनारविंद की सेवा करन लागे। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप जागे। सो श्रीनवनीतप्रियजी के उत्थापन कौ समै भयो हतो। तब श्रीगुसांईजी आप स्नान करि मंदिर में पधारि संखनाद कराइ श्रीनवनीतप्रियजी कों उत्थापन–भोग धरि सयनभोग, आर्ति पर्यंत सेवा सों पहोंचि कै अपनी बैठक में पधारे। सो स्यामदास दरसन करि कै बोहोत ही प्रसन्न भए। पाछें श्रीगुसांईजी उहां केतेक दिन रहि कै श्रीनाथजीद्वार पधारे। सो स्यामदास हू प्रभुन के संग चले। सो श्रीगिरिराज आइ कै श्रीगुसांईजी तो आप स्नान करि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के राजभोग कौ समौ हतो, तातें पर्वत ऊपर मंदिर में पधारि कै भोग सरायो। तब स्यामदास श्रीगोवर्द्धननाथजी के राजभोग–आर्ति के दरसन करि कै बोहोत ही प्रसन्न भए। और कहे, जो धन्य मेरो भाग्य है। जो–श्रीगुसांईजी की कृपा सों ऐसें दरसन पाए। ता पाछें अनोसर करि कै श्रीगुसांईजी श्रीगिरिराज तें नीचे उतरि कै अपनी बैठक में बिराजे। तब स्यामदास हू संग आए। तब श्रीगुसांईजी

स्यामदास सों पूछे, जो–स्यामदास ! श्री गोवर्द्धननाथजी के दरसन करे ? तब स्यामदास श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् करि कै कहे, जो महाराजाधिराज ! आप तो कृपासिंधु हो। आपु की कृपा तें मो सारिखे पतित कों ऐसें दरसन कौ सुख भयो। ऐसें स्यामदास ने बिनती कीनी। तब स्यामदास कौ सरल स्वभाव देखि कै श्रीगुसांईजी आप बोहोत प्रसन्न भए। ता पाछें स्यामदास कौ ऐसो मनोरथ भयो, जो–बनयात्रा करिए तो आछौ है। तब स्यामदास नें श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराजाधिराज ! मेरो मनोरथ बनयात्रा करिवे कौ है। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–बोहोत आछौ। तब स्यामदास श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै बनयात्रा कों चले। सो बनयात्रा करि कै पाछें श्रीगिरिराज आइ श्रीगिरिराजजी के दरसन करि श्रीगुसांईजी के दरसन किये। पाछें स्यामदास उहां ही रहे। तब श्रीगुसांईजी इन स्यामदास कों फूलघर की सेवा दिये। तब स्यामदासने श्रीगुसांईजी कों बिनती करी, जो–महाराजाधिराज ! फूलन कौ कहा स्वरूप है ? तब श्रीगुसांईजी ने आज्ञा करी, जो–ब्रजभक्त जो श्रीगोपीजन हैं, तिनके चित्त हैं सो ये फूल हैं। सो श्रीठाकुरजी के अंग कौ स्पर्स करत हैं। सो सुनि कै स्यामदास बोहोत प्रसन्न भए। सो फूलन कों ब्रजभक्तन कौ चित्त जानि कै पाँव लगन न देते। और धोए बिना हाथ न लगावते। और कुम्हलाय न जाँय ऐसो जतन करते। ता पाछें फेरि एक दिन स्यामदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो महाराज ! फूलन कौ ऐसो स्वरूप, तिन कों सुई है सो कैसें पराए

जांई ? तब श्रीगुसांईजी ने आज्ञा करि, जो सुई है सो सूची है। सो ब्रजभक्तन के चित्त में भगवत्संबंध की सूचना करत हैं। वा सूचना सों ब्रजभक्तन के चित्त बोहोत प्रसन्न होत हैं। तातें खिलत हैं। सो ऐसें जाने हैं, जो अब भगवत्संबंध (कौ) हम कों सूचन भयो है। अब हमारो सिघ्र अंगीकार होइगो। ये सुनि कै स्यामदास कौ सब संदेह गयो। पाछें भाव सों सेवा करते।

सो एक दिन स्यामदास देखे तो ब्रजभक्तन के यूथन के यूथ फूलघर में दीसे। तब स्यामदास ने पूछी, जो मैं तुम कों पहचानत नाहीं हूं। तब ब्रजभक्तन नें आज्ञा करी, जो–पुष्पन की माला तू अंगीकार करावत है सो हमारो स्वरूप हैं। हम तेरे भाव सों प्रसन्न होंइ कै श्रीगुसांईजी की कानि तै तोकों दरसन देत हैं। तू कछू माँगि। तब स्यामदास ने दोऊ हाथ जोरि बिनती करि, जो मेरो चित्त कोई दिन ये सेवा छोरि कै और कहूँ न जांई। तब ब्रजभक्तन ने कह्यो, जो–तथास्तु। ऐसें ही होइगो। फेरि स्यामदास ने ये बात श्रीगुसांईजी सों बिनती करी। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किर, जो जिन कौ छेल्लो जन्म होवे है, तिन सों श्रीठाकुरजी कछू अ तराय नहीं राखे हैं। और ऐसें जीवन के लिये मार्ग प्रगट भयो है। पाछें जहां तांई स्यामदास की देह चली तहां तांई और कछू बिचार न कियो। सेवा ही करत देह छोरी। ता पाछें वैष्णवन वाकौ संस्कार कियो। सो ये समाचार वैष्णवन श्रीगुसांईजी आगें कहे। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत ही सराहना करे। जो–देखो ! कैसो सूधो मुग्ध स्वभाव हतो ! जो–अपने सरीर की हू सुधि रहती नाहीं। सो वे स्यामदास

श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। जिन के ऊपर श्रीगुसांईजी आप सैदव प्रसन्न रहते। और अपनी सरनि लै कै अपने स्वरूप कौ ज्ञान श्रीगुसांईजी ने इन स्यामदास कों बतायो। तातें उन स्यामदास की बात कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥ ४४ ॥

भावप्रकाश– या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो–भगवत्सेवा स्वरूपात्मक हैं। सो जो–कोऊ भाव बिचारि कै सेवा करें वाकों अनुभव होंइ। यामें संदेह नाहीं।

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी छज्जो ब्राह्मनी सनाढ्य, भामिनी बहूजी की खवासी करत हुती, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश – ये तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'कलहांतरिता' है। सो इन कों कलह प्रिय हैं। सो 'भद्रा' तें प्रगटी हैं, तातें इन के भाव रूप हैं।

ये मथुरा में एक सनाढ्य के जन्मीं। सो बरस दस की भई तब इनकौ ब्याह मा–बाप ने ज्ञाति के लरिका सों कियो। ता पाछें यह बरस पचपन की भई, तब याकौ धनी मर्‌यो। और घर में याकौ काहू तें बने नाहीं। सब सों कलह करे। सो कोऊ यासों बोले नाहीं। तब वे श्रीगोकुल आई श्रीगुसांईजी की सरनि भई। ता पाछें श्रीगुसांईजी की आज्ञा तें श्रीभामिनी बहूजी की खवासी में रही। सो खवासी ऐसी करे, जो–भामिनी बहूजी याकी ऊपर प्रसन्न रहते। परि याकौ सुभाव कलह करिवे कौ बोहोत। तातें श्रीगुसांईजी के सब बालक और घर के यासों अप्रसन्न रहते।

सो छज्जो श्रीगुसांईजी के बालकन सों नित्य कलह करती। सो श्रीगिरिधरजी, श्रीगुसांईजी बोहोत दुःख पावते। तब एक दिन श्रीगुसांईजी कहे, जो–है रे कोई ! जो–या रांड की नाक काटे। सो तहां एक 'भगवंत' नाम कौ श्रीगुसांईजी कौ सेवक ठाढ़ो हतो। ताने अपने मनमें बिचार कियो, जो–छज्जो की नाक मैं काटों तो आछौ है। परि एकांत में काटोंगो। जो–कोई जान न पावे। सो एक दिन एकांत पाय वह छज्जो की नाक काट्‌यो।

पाछें वह वहां तें निकसि गयो। तब श्रीगिरिधरजी ने सुनी, परि काहू सों कछू कह्यो नाहीं। सो श्रीभामिनी बहूजी ने श्रीगिरिधरजी सों बिनती करी, जो–आप वाकों कछू सिक्षा दो। तब श्रीगिरिधरजी कहे, जो–करिये कहा? अपनो कछू बस नहीं। काहेतें? ये श्रीगुसांईजी कौ सेवक है। तातें हम वातें कछू कहि सकत नाहीं। पाछें श्रीगुसांईजी आप सुनी। तब श्रीगुसांईजी आप बाहिर निकसि कै वा भगवंत ऊपर बोहोत ही खीझे। परि भगवंत पायो नाहीं। पाछें वह भगवंत कितनेक दिन पाछें छांनेंसीक आइ कै श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् करि कै मिल्यो। तब श्रीगुसांईजी भगवंत सों कह्यो, जो क्यों रे कुजात! तें वा छज्जो ब्राह्मनी कौ नाक काट्यो? तो सों कौन ने कह्यो हतो? तब भगवंत ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो –महाराजाधिराज! मैं कहा करों? महाराज की आज्ञा हती। सो श्रीमुख के बचन कैसें मिथ्या होंइ? ता पाछें श्रीगुसांईजी आप कछू बोलि सके नाहीं। तब वह भगवंत सेवा करन लाग्यो।

भावप्रकाश – या बार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो–श्रीगुसांईजी आप पूरन पुरुषोत्तम हैं। सो आपकी बानी असत्य सर्वथा न होंई। और दूसरो अभिप्राय यह है, जो–प्रभु कौ स्वभाव बड़ो दयालु है। तातें अपने जन की तनक सेवा कौ हू प्रभु मेरु के समान मानि लेत हैं। और समूद्र जैसे अपराध कों एक बूंद की समान हू, गिनत नाहीं है। सो सूरदासजी गाए हैं –

धनाश्री –

देखो देखो हरि जू कौ एक सुभाई।
अति गंभीर उदार उदधि जानि सिरोमनि राई॥
तिनका सो अपने जन कौ गुन मानत मेरू समान।
समझ दास अपराध सिंधु सम बूंद न ऐको मान॥
बदन प्रसन्न कमल ज्यों सन्मख देखत है हों ऐसे।

बिमुख भए कृपा या मुख की जब देखो तब तैसे।
भक्त विरह कातर करुनामय डोलत पाछें लागें।
'सूरदास' ऐसें स्वामी कों कित दीजे पीठ अभागे॥

सो प्रभु ऐसें दयालु हैं। तातें या ब्राह्मनी के अपराध कों आपने थोरीसी सिक्षा दै निवृत्त कियो। नाँतरु याकौ कहूं ठिकानो न हतो। सो वैष्णव सिक्षा कों अनुग्रह करि माने। तो अपराध की निवृत्ति होंइ। और बल्लभकुल के अपराध तें सदा डरपत रहनो, यहू जतायो।

सो छज्जो ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए। ॥ वार्ता ॥ ४५ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक बेनीदास छीपा, सो वह सहजादपुर में रहतो तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश – ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'कृष्ण रंगा' है। सो इनकौ कृष्ण जैसो वर्ण है। ये 'स्यामा' तें प्रगटी हैं। तातें इन के भाव–रूप है।

वार्ता प्रसंग – १

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप सहजादपुर पधारे हते। सो तहां छीपा वेनीदास कों श्रीगुसांईजी के दरसन भए। सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम स्वरूप के दरसन भए। तब बेनीदास छीपाने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराजाधिराज ! मोकों आप कृपा करि कै नाम–निवेदन कराइए। तब श्रीगुसांईजी ने बेनीदास छीपा सों कह्यो, जो–तुम जाँइ कै स्नान करि आवो। सो बेनीदास जाँइ, स्नान करि, अपरस ही में आई कै श्रीगुसांईजी के आगें हाथ जोरि कै ठाढ़े भए। तब श्रीगुसांईजी बेनीदास कों नाम–निवेदन कराए। पाछें घरकेन कों बुलाइ बेनीदास श्रीगुसांईजी के सेवक कराए। ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीठाकुरजी कों भोग समर्पि भोग सराइ, आप अनोसर कराइ, भोजन करि कै

पोढे । सो ऐसें करत कितनेक दिन श्रीगुसांईजी आप उहां बिराजे । ता पाछें बेनीदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! कछू सेवा पधराय दीजिए । तब श्रीगुसांईजीने बेनीदास कों एक लालजी कौ स्वरूप सेवा करिवे कों पधराइ दियो । पाछें बेनीदास कों काहू ने कह्यो, जो–नील रंग होत हैं, सो श्रीठाकुरजी के काम नाहीं आवत है । तब श्रीगुसांईजी सों बेनीदास ने बिनती करी, जो–महाराजाधिराज ! हम ऐसें सुनी हैं, जो–नील के वस्त्र कों श्रीठाकुरजी अंगीकार करत नाहीं हैं । तब श्रीगुसांईजी ने बेनीदास सों कह्यो, जो–रंगवे में कछू दोष नाहीं है । परि नील कौ श्रीठाकुरजी कों बागा–बस्त्र नहीं अंगीकार होत है । जो सब में उत्तम तें उत्तम वस्तु होंइ है सो श्रीठाकुरजी कों अंगीकार होत है । तब बेनीदास ने एक छींट कौ परकालो बोहोत ही उत्तम हतो सो भेंट कियो । तब श्रीगुसांईजी वह छींट कौ परकालो देखि कै बोहोत ही प्रसन्न होंइ कै कहे, जो देखो ! कैसी उत्तम बस्तू महींन श्रीठाकुरजी लाइक है ! तब बेनीदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराजाधिराज ! एक परकालो और ऐसोई है । सो आप आज्ञा करो तो ल्याऊं । तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें बेनीदास सों कहे, जो–बोहोत आछौ । तब बेनीदास छीपा ने वा परकाल में कछू काम हतो सिद्ध करनो, सो सिद्ध करि कै श्रीगुसांईजी के आगें ल्याइ धर्‌यो । और बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! या परकाले में कछू काम हतो सो डाँड़ दैकै आप के पास ल्यायो हूं । तब श्रीगुसांईजी आप बेनीदास के बचन सुनि कै वाकों सरल

स्वभाव देखि कै बोहोत प्रसन्न भए। सो ऐसें बात करत करत ही बोहोत रोमांच होंइ आए। जो–तदनुरूप होंई गए। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप बेनीदास की दसा देखि कै बोहोत ही दिन लों उहां रहे। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां तें बिदा होंइ कै श्रीगोकुल कों बिजय किये। सो वा बेनीदास छीपा ने श्रीगुसांईजी कों बोहोत ही द्रव्य भेंट कियो, और श्री गोवर्द्धननाथजी की भेंट पठाई।

ता पाछें बेनीदास छीपा श्रीगोकुल आए। सो श्रीगुसांईजी की कृपा तें श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन किये। सातों स्वरूपन के दरसन किये। और बालकन के दरसन किये। सो दरसन करि कै बोहोत ही प्रसन्न भए। श्रीगुसांईजी कौ दरसन कियो। सो कोटि कंदर्पलावन्य साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम माधुरी मूरति के दरसन कियो। और श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी के सेवा सिंगार सों पहोंचि कै राजभोग–आर्ति करि अनोसर करि आइ कै अपनी बैठक में बिराजे। तब सब वैष्णव दंडवत् करन कों आए। सो दंडवत् प्रभुन कों करि कै अपने अपने घर कों गए। ता पाछें बेनीदास हू तहां आई दंडवत् करि बैठे। ता पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करिवे कों पधारे। सो भोजन करि कै बैठक में आए। तब श्रीगुसांईजी ने बेनीदास सों कह्यो, जो–बेनीदास! उठो महाप्रसाद लेहु। तब बेनीदास हू दंडवत् करि कै महाप्रसाद लियो। तब श्रीगुसांईजी तो आप विश्राम करे। और बेनीदास ठाढ़े ठाढ़े पंखा कर्‌यो करे। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप जागे। सो स्नान करि कै श्रीनवनीतप्रियजी कों भोग समर्प्यो। ता

पाछें सेन–आर्ति पर्यंत की सब सेवा (सों) पहोंचि कै श्री नवनीतप्रियजी कों अनोसर करि कै अपनी बैठक में पधारि कै गादी–तकिया ऊपर आय बिराजे। सो ऐसें दरसन करत बेनीदास बोहोत दिन श्रीगोकुल में रहे। ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों श्रीनाथजीद्वार कों पधारे। सो बेनीदास हू संग आए। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के राजभोग कौ समौ हतो। सो श्रीगुसांईजी आप तहां स्नान करि श्रीगिरिराज ऊपर मंदिर में पधारि श्रीगोवर्द्धननाथजी कों राजभोग समर्पि समय भए भोग सराइ आर्ति किये।

सो बेनीदास छीपा श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि कै तन्मय होंइ गए। सो देहानुसंधान भूल गये। तब उहां मंदिर में मूर्छा खाँइ कै गिरे। तब तो श्रीगुसांईजी ने बेनीदास कों हेला पार्‌यो। सो बेनीदास कों चेत भयो। ता समै बेनीदास श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज! ऐसे आनंद सों बाहिर क्यों निकास्यो ? तब श्रीगुसांईजी ने आज्ञा करी, जो–अभी तो तुम कों कारज बोहोत करने हैं। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी कों अनोसर करि कै नीचे अपनी बैठक में आइ गादी–तकिया ऊपर बिराजे।

सो बेनीदास कों हू अपने साथ नीचे बैठक में ल्याये। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजन कों पधारे। तब बेनीदास सों कहे, जो–बेनीदास! आज इहांई महाप्रसाद लीजो। पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजन करि अपनी बैठक में पधारे। और अपनी जूंठन बेनीदास कों दिये। सो लै कै बेनीदास बोहोत ही आनंद पाए।

ता पाछें कितनेक दिन श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि कै बेनीदास छीपा ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो –महाराजाधिराज ! आप की आज्ञा होंइ तो बनयात्रा करि आऊं। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–बोहोत आछौ । पाछें बेनीदास श्रीगुसांईजी की आज्ञा लै कै बनयात्रा कों गए । सो ब्रज के दरसन करि कै बेनीदास अति आनंद पाए । पाछें श्रीगिरिराज आइ कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये । ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे । सो बेनीदास हू श्रीगुसांईजी के संग श्रीगोकुल आइ कै श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन किये । ता पाछें बेनीदास के ऊपर श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए । पाछें केतेक दिन रहि कै बेनीदास श्रीगुसांईजी सों बिदा मांगि कै कहे, जो–महाराजाधिराज ! आज्ञा होंइ तो मैं अपने देस कों जाऊँ । तब श्रीगुसांईजी बेनीदास कों प्रसाद और महाप्रसादी उपरेना दिये । ता पाछें बेनीदास श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् करि कै बिनती किये, जो महाराज ! मेरे घर श्रीठाकुरजी बिराजे हैं सो श्रीनाथजी के दरसन दैई, ऐसी कृपा करो । तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–श्रीठाकुरजी पुष्टिमार्गीय जीवन के सकल मनोरथ पूरन करत हैं । पाछें बेनीदास श्रीगोकुल तें चले । सो कछूक दिन में अपने घर सहजादपुर में आए । सो सबन कों मिले । और घर में श्रीठाकुरजी की सेवा करन लागे । तब श्रीठाकुरजी बेनीदास के मनोरथ प्रमान दरसन दैन लगे । जैसें मनोरथ करते तैसें दरसन देते ।

भावप्रकाश – या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो–कोऊ सरल भाव करि श्रीठाकुरजी की सेवा करें ताकों श्रीठाकुरजी बेगि अनुभव जतावें ।

ऐसें बोहोत दिन लों बेनीदास सेवा करे। ता पाछें बेनीदास की देह छूटी। सो अग्निसंस्कार करि उन के घर जो कछू और द्रव्य हुतो सो श्रीगोकुल पठाइ दिये। और ये समाचार बेनीदास के काहू वैष्णवने श्रीगुसांईजी आगें कहे। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें बेनीदास की बोहोत सराहना करि कै कहे, जो–बेनीदास भलो वैष्णव हतो। वे बेनीदास छीपा श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। जिनके ऊपर श्रीगुसांईजी सदा प्रसन्न रहते। तातें उनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ ४६ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी एक क्षत्रानी, गुजरात में रहती, ताकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश – ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'सुखदा' है। ये 'स्यामा' तें प्रगटी हैं। तातें इन के भाव–रूप हैं।

वार्ता प्रसंग – १

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप गुजरात पधारे हते। सो द्वारिकाजी श्रीरनछोरजी के दरसन कों पधारे हते। सो श्रीगुसांईजी आप गुजरात के मार्ग में उतरे हते। तहां श्रीगुसांईजी आप श्रीठाकुरजी की सेवा करि रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग समर्पि समयानुसार भोग सराइ आप भोजन करि कै बिराजे हते। ता समै एक क्षत्रानी ने आइ कै श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराजाधिराज ! मोकों आप कृपा करि कै नाम सुनाईये। तब श्रीगुसांईजी ने वा क्षत्रानी सों कह्यो, जो–तू जाँइ कै स्नान करि आऊ। तब वह क्षत्रानी स्नान करि कै आई। परि वह क्षत्रानी ढीट बोहोत हती। सो आइ कै ठाढ़ी भई। तब श्रीगुसांईजी आप नाम सुनाइवे कों आइ बिराजे। सो नाम

सुनावे, परि वह क्षत्रानी नाम कहे नाहीं अरु देख्यो ही करे। तब श्रीगुसांईजी वासों रिस करि कह्यो, जो–क्योंरी ! कहा सुनत नाहीं है ? और बात तो मुख सों बकवोई करति है। और अब तो बोलत हू नाहीं है। और कछू सुनत हू नाहीं है। तब वा क्षत्रानी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराजाधिराज ! बलिहारी जाऊं। मैं इतने ही के लिये बोली नाहीं हों। सो ऐसें वा क्षत्रानी के बचन सुनि कै श्रीगुसांईजी आप बोहोत ही वा क्षत्रानी के ऊपर प्रसन्न भए।

भावप्रकाश – काहेतें ? याने श्रीगुसांईजी की रिस कौ गुन करि मान्यो।

ता पाछें श्रीगुसांईजी आप वाकौ नाम सुनाइ दूसरे दिन निवेदन कराए। तब वा क्षत्रानी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराजाधिराज ! मोकों श्रीठाकुरजी की सेवा पधराइ दीजिये। तब श्रीगुसांईजी ने वाकों श्रीठाकुरजी की सेवा पधराइ दै कै सब सेवा की रीति सिखाई। ता पाछें वह बाई श्रीठाकुरजी की भली भांति सों सेवा करन लागी। पाछें वा बाई ने श्रीगुसांईजी कों बोहोत ही भेंट करी। और श्रीगोवर्द्धननाथजी कों भेंट पठाई। ता पाछें श्रीगुसांईजी वा बाई सों बिदा होंइ कै द्वारिकाजी श्रीरनछोरजी के दरसन कों पधारे। सो तहां श्रीरनछोरजी के दरसन करि कै कितनेक दिन लों आप ऊहां रहे। पाछें उहां ते श्रीगुसांईजी बिजय करि श्रीगोकुल कों पधारे। पाछें वह बाई श्रीठाकुरजी की सेवा बोहोत ही भली भांति सों करन लागी। सो श्रीठाकुरजी वा बाई कों सानुभावता जनावन लागे। बातें करते। जो–कछू चहियतो सो वा बाई पास ते माँगि

लेते। ऐसी कृपा श्रीठाकुरजी वा क्षत्रानी के ऊपर करते। सो वह क्षत्रानी श्रीगुसांईजी आप की ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती। ताके ऊपर श्रीगुसांईजी आप सदाई प्रसन्न रहते। तातें उन की वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए। ॥ वार्ता ॥ ४७ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक दुर्गादास ब्राह्मन, गंगापुत्र, पूरव में रहते, ताकी वार्ता कौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश– ये तामसी भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'कल्यानी' है। ये 'स्यामा' तें प्रगटी हैं, तातें इन के भावरूप है।

वार्ता प्रसंग – १

सो एक समै वैष्णव कौ संग मथुरा आयो हतो। ता संग में दुर्गादास हू श्रीगोकुल आए हते। सो श्रीगुसांईजी के दरसन करे। सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम के दरसन भए। तब दुर्गादास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराजाधिराज ! मोकों नाम निवेदन कराइए। तब दुर्गादास सों श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो–तुम जाँइ कै श्रीयमुनाजी में स्नान करि आओ। तब दुर्गादास श्रीयमुनाजी में स्नान करि आए। तब श्रीगुसांईजी ने दुर्गादास कों नाम–निवेदन करवायो। तब दुर्गादास ने श्रीगुसांईजी के आगें यथासक्ति भेंट धरी। और बोहोत ही दीनता करि कै कह्यो, जौ–महाराजाधिराज ! मैं दासानुदास हों। मैं बड़ो ही अपराधी हूं। सो मो सारिखे पतित कौ आप ही अंगीकार कियो। और काहू की सामर्थ्य हती नाहीं।

पाछें श्रीनवनीतप्रियजी कौ राजभोग कौ समो हतो; तहां श्रीगुसांईजी पधारे। सो श्रीनवनीतप्रियजी कों राजभोग धरि

समयानुसार भोग सराइ आर्ति करि कै दरसन कों बुलाये। सो दुर्गादास तहां मंदिर में आइ श्रीनवनीतप्रियजी कौ दरसन करि कै बोहोत ही प्रसन्न भए। पाछें श्रीगुसांईजी आप श्री नवनीतप्रियजी की सेवा सों पहोंचि कै अपनी बैठक में पधारे। तब सब वैष्णव दरसन करि कों आए। तब दुर्गादास हू श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै बैठें। ता पाछें श्रीगुसांईजी तो आप भोजन करिवे कों भीतर पधारे। तब दुर्गादास सों कह्यो, जो–आज तुम इहांई महाप्रसाद लीजियो। पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजन करि कै दुर्गादास कों महाप्रसाद की पातरि धरी। तब दुर्गादास ने महाप्रसाद लियो। ता पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में पधारि कै विश्राम करे। पाछें विश्राम तें उठि कै आप अपने गादी–तकिया ऊपर बिराजे। तब श्रीगुसांईजी ने दुर्गादास सों कह्यो, जो–दुर्गादास ! अब तुम्हारे मन में कहा मनोरथ है ? सों कहो। तब दुर्गादास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराजाधिराज ! एक बेर बनयात्रा और श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ दरसन करिए तो आछौ है। तब श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो–बोहोत आछी बात है। तब दुर्गादास श्रीगुसांईजी सों बिदा होंइ कै चलै। सो श्रीगिरिराज आइ श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि कै दुर्गादास तो बोहोत ही प्रसन्न भए। पाछें केतेक दिन दुर्गादास उहांई रहे। ता पाछें दुर्गादास बनयात्रा कों गए। सो परिक्रमा करि श्रीगोकुल आइ कै दुर्गादास ने श्रीगुसांईजी के दरसन किये। तब श्रीगुसांईजी ने दुर्गादास सों कह्यो, जो–दुर्गादास ! तुम कब आए ? तब

दुर्गादास श्रीगुसांईजी सों बिनती करि कहे, जो–महाराजाधिराज! अब ही आवत हों। ता पाछें श्रीनवनीतप्रियजी के उत्थापन कौ समौ हतो। सो श्रीगुसांईजी आप मंदिर में पधारि कै श्रीठाकुरजी कों उत्थापनभोग धर्‌यो। समै भए भोग सराइ झारी भरि कै दरसन के किवाड़ खोले। तब दुर्गादास ने श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन करे। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप सयन पर्यंत की सेवा सों पहोंचि कै अपनी बैठक में पधारे। तब दुर्गादास हू श्रीगुसांईजी पास आइ बैठे। पाछें दुर्गादास नें बिनती श्रीगुसांईजी सों करी, जो–महाराजाधिराज! मोकों सेवा करिवे की इच्छा है। तब श्रीगुसांईजी दुर्गादास कों श्रीनवनीतप्रियजी के वस्त्र पधराय दिये। पाछें दुर्गादास श्रीगुसांईजी सों कहे, जो– महाराजाधिराज! आज्ञा होंइ तो मैं अपने देस कों जाऊं। और दुर्गादास ने श्रीगुसांईजी आगें भेंट राखी। तब श्रीगुसांईजी ने हँसि कै दुर्गादास सों कह्यो, जो–दुर्गादास! कहा यह नईसी करत हो?

भावप्रकाश–सो यातें कह्यो, जो–ये गंगापुत्र हैं, तातें पूज्य हैं। सो इन की भेंट लीनी न जाँइ। या अभिप्राय तें श्रीगुसांईजी आप ऐसें कहे।

तब दुर्गादास नें श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो–महाराजाधिराज! बलि जाऊं। तुम जब नई करी, तब हमें हू नई करनी परी। तब श्रीगुसांईजी ने दुर्गादास सों कह्यो, जो–हम कहा नई करी? तब दुर्गादास श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराजाधिराज! ये माला तुम पहराई हैं। तातें अब तो हम निर्द्धार करि कै तुम्हारे भए हैं। अब तो भेंट राखनी उचित है। और पहिले तो न राखते सो सत्य। परि अब तो राखी चहिए। ता पाछें श्रीगुसांईजी ने

भेंट राखी। पाछें दुर्गादास श्रीगुसांईजी सों बोहोत प्रनयति करि कै आज्ञा लै अपने देस गाम में आए।

सो दुर्गादास भले वैष्णव भये। जिन के संग तें बोहोत वैष्णव भए। और श्रीठाकुरजी की सेवा बालक की न्यॉंई करन लागे। सो श्रीठाकुरजी दुर्गादास कों सानुभाव जतावन लागे। बालक की न्यॉंई जो–चाहे सो मॉंगि लेते। और बाललीला कौ अनुभव करावते। ता पाछें केतेक दिन दुर्गादास उहां रहे। पाछें दुर्गादास की देह छूटी। तब सब वैष्णव मिलि कै संस्कार दुर्गादास कौ कियो। सो वे दुर्गादास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय भए। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ ४८ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक पुरुषोत्तमदास, पुष्करना ब्राह्मन, कासी के बासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'त्रिबेनी' है। ये कुमारिका के यूथ में हैं। 'प्रवीना' तें प्रगटी हैं। तातें इन के भाव–रूप हैं। सो त्रिबेनी नंदालय की सेवा में सदा तत्पर रहति हैं।

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप कासी में बिराजत हते। तहां आप मनिकर्निका स्नान कों नितप्रति पधारत हे। सो एक दिन श्रीगुसांईजी आप मनिकर्निका घाट पर स्नान करि संध्या करत हे। ता समै पुरुषोत्तमदास हू गंगाजी में स्नान करत हुते। सो इन दरसन पाए। सो पुरुषोत्तमदास कों श्रीगुसांईजी के दरसन साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम कोटि कंदर्पलावन्य ऐसें भए। सो पुरुषोत्तमदास थकित व्है रहे। सो ये बड़ी बेर लों देख्यो करे। तब श्रीगुसांईजी पुरुषोत्तमदास कों दैवी जीव जानि पूछे, जो–तुम कौन हो ? यहां ऐसें क्यों ठाढ़े होंई रहे हो ? तब पुरुषोत्तमदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! मैं पुष्करना ब्राह्मन हों। कासी में रहत हों। मेरे माता–पिता कोऊ हैं नाहीं। दो अक्षर जानत हूं। तातें श्रीमद्भागवत बांचि अपनो निर्वाह करत हूं। सो आज विधाता मेरे दाहिनी भई है। तातें मैं साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम के दरसन पाए। अब में आप के सरनि हों। सो कृपा करि मोकों आपुनो सेवक कीजिए। सो पुरुषोत्तमदास की या भांति दीनता देखि श्रीगुसांईजी आप बोहोत प्रसन्न भए।

पाछें कृपा करि पुरुषोत्तमदास कौ नाम निवेदन कराइ, सेवक किये। तब पुरुषोत्तमदास श्रीगुसांईजी सो बिनती करे, जो–महाराज ! अब मेरो कहा कर्तव्य है ? तब श्रीगुसांईजी आप पुरुषोत्तमदास सों कहे, जो–आज पाछें भागवत की जीविका सर्वथा मति करियो। और तो तेरी इच्छा होंइ सो करियो। तब पुरुषोत्तमदास कहे, जो–महाराज ! आप कृपा करि मोकों अपनी टहल देऊ तो भलो है। अब मैं जगह जगह कहां भटकोंगो ? तब श्रीगुसांईजी आप पुरुषोत्तमदास कौ सरल सुभाव देखि उन कों अपनी पास राखे।

वार्ता प्रसंग–१

सो श्रीगुसांईजी कासीजी तें पुरुषोत्तम क्षेत्र कों श्रीजगन्नाथराइजी के दरसन कों पधारे। सो पुरुषोत्तमदास श्रीगुसांईजी के संग चले। तहां पुरुषोत्तमदास ने श्रीगुसांईजी कों सखड़ी महाप्रसाद आरोगायो।

भावप्रकाश–काहेतें, ये पुरुषोत्तम क्षेत्र है। तातें वैष्णवन के हाथ सों श्रीजगन्नाथराइजी कौ सखड़ी महाप्रसाद लैन की मर्यादा श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी आप राखी हैं। तातें पहिले हू श्रीगुसांईजी आप बीरजो कै हाथ तें श्रीजगन्नाथराइजी कौ सखड़ी महाप्रसाद आरोगे हैं।

वार्ता प्रसंग–२*

बोहोरि एक समै पुरुषोत्तमदास ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो–महाराजाधिराज ! गोपीनाथदास भीतरिया ने मोकों कह्यो, जो–श्रीगोकुलनाथजी आप तो ईस्वर हैं। जो–कोई कों रुपैया दै कै प्रसन्न करत हैं। और कोई कों पात्र दैकै प्रसन्न करत हैं। तब श्रीगुसांईजी आपने पुरुषोत्तमदास सों कह्यो, जो–हां, हां, पुरुषोत्तमदास ! श्रीवल्लभ ऐसोई है। तब पुरुषोत्तमदास ने श्रीगुसांईजी सो बिनती कीनी, जो–महाराजाधिराज ! आप तो श्रीमुख के अधरामृत के बचन सींचि कै वैष्णवन कों प्रसन्न करत हो। तब श्रीगुसांईजी ने पुरुषोत्तमदास सों कह्यो, जो–जाकों रुपैया दैत हैं सो तो अप्रसन्न होत हैं।

* यह प्रंसग कृष्णभट्ट की पोथी का है।

भावप्रकाश–काहेतें, जो–वैष्णव होंई सो तो गुरु द्रव्य लै नाहीं।

सो या प्रकार पुरुषोत्तमदास कों श्रीगुसांईजी आप सिक्षा दिये।

ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों पुरुषोत्तमदास कों संग लै कै श्रीनाथजीद्वार पधारे। सो स्नान करि पर्वत ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में पधारि श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ आप सिंगार किये। पाछें राजभोग समर्पि, समै भए भोग सराइ, राजभोग–आर्ति के समै पुरुषोत्तमदास कों बुलाई कै दरसन कराए। सो दरसन करि कै पुरुषोत्तमदास बोहोत ही प्रसन्न भए। और कह्यो, जो–धन्य मेरो भाग्य है। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोवर्द्धननाथजी कों अनोसर करवाइ कै श्रीगिरिराज पर्वत तें नीचे ऊतरि कै अपनी बैठक में आई बिराजे। तहां पुरुषोत्तमदास हू आइ श्रीगुसांईजी को दंडवत् करि कै बैठे। पाछें पुरुषोत्तमदास ने पूछ्यो, जो–महाराज ! मर्यादामार्ग में और पुष्टिमार्ग में भेद कहा ? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–मर्यादामार्ग में साधन की मुख्यता अरु कर्म के फल की इच्छा रहत है। और पुष्टिमार्ग में स्नेह पूर्वक कृष्ण–सेवा निष्काम भाव सों करे हैं। और भगवदीय कौ संग करि भगवदनुग्रह कौ बल बिचारि कै केवल निःसाधनपने की भावना करे। भगवद्धर्म कौ आचरन करे ये मुख्य हैं। और लौकिक वैदिक तो लोगन कों दिखायवे के तांई करे। मुख्यता तो भगवद्धर्म की है। जामें ठाकुर कौ सुख होंइ सो भगवद्धर्म कहिए। और सब गोन भाव है। पाछें श्रीगुसांईजी आप

पुरुषोत्तमादास कों 'सिद्धांत-रहस्य' आदि सब ग्रंथ अभिप्राय सहित पढ़ाए। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजन कों पधारे। सो पुरुषोत्तमदास कों पातरि धराई। पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजन करि छिनक विश्राम करे। ता पाछें जगे।

और पुरुषोत्तमदास हू महाप्रसाद लै कै उठे। तब पुरुषोत्तमदास ने फेरि श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराजाधिराज! श्रीठाकुरजी पीतांबर काहे कों पहिरत हैं? और श्रीस्वामिनीजी नील वस्त्र काहे कों धरत हैं? तब श्रीगुसांईजी ने आज्ञा करी, जो-श्रीस्वामिनीजी कौ गौर वर्ण है, कंचन जैसो। सो श्रीस्वामिनीजी के बिना श्रीठाकुरजी क्षन हू रहत नाहीं। ऐसेंई श्रीठाकुरजी कौ स्याम वरन है। सो सिंगार-रस रूप हैं, जामें अगाध रस भर्‌यो है। सो श्रीस्वामिनीजी या स्वरूप बिना क्षन हू रहि सकत नाहीं। सो दोऊन कौ गाढ़ौ प्रेम हैं। तातें ये दोऊ नीलांबर पीतांबर धारन करत हैं। ता करि दोऊ के प्रेम कौ सूचन होत हैं। सो श्लोक

रूपं तवैतदतिसुंदरनीलमेघे प्रोद्यत्तडिन्मदहरं व्रजभूषणांगि।
एतत्समानमिति पीतवरं दुकूलमूरावुरस्यपि बिभर्ति सदा स नाथः॥

भावप्रकाश-सो याकौं भाव सूरदासजी गाए हैं। सो पद-

बलि बलि बलि कुंवरि राधिका नंदसुवन जासों रति मानी।
तू अति चतुर वे चतुर-सिरोमनि प्रीति करो कैसें रहे छानी।
'वे जो धरत तन कनक पीतपट सो तो सब तेरी गति ठानी।
ते पुनि स्याम सहज वे सोभा अंबर मिष अपने उर आनी।'
पुलकि रोम अब ही व्है आयो निरखि रूप निज देह सयानी।

'सूर' सुजान सखी के बूझै प्रेम–प्रकास भयो विहसानी ॥

सो या प्रकार दोऊ जन परस्पर प्रेम कौ प्रकास करत हैं। यह भाव जाननो।

ये सुनि कै पुरुषोत्तमदास या रस में मगन व्है गए। ता पाछें पुरुषोत्तमदास कों श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा में राखे। सो जीये तहां लों सेवी कीनी। सो श्रीगुसांईजी की कृपा तें पुरुषोत्तमदास ने भली भांति सों श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा कीनी। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी पुरुषोत्तमदास कों सानुभावता जनावन लागे। ता पाछें कितनेक दिन में पुरुषोत्तमदास की देह छूटी। सो सब वैष्णव मिलि कै अग्नि–संस्कार कियो। सो वे पुरुषोत्तमदास पुष्करना ब्राह्मन श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय भए। जिन के ऊपर श्रीगुसांईजी सदा प्रसन्न रहते। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। ॥ वार्ता ॥४९ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक लक्ष्मीदास दोषी, गुजरात के बासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये 'राजस' भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'वनराजी' है। ये 'प्रवीना' ते प्रगटी हैं, तातें इन के भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग–१

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप गुजरात कों पधारे हते। सो लक्ष्मीदास के गाम में श्रीगुसांईजी के डेरा भए हते। तहां श्रीगुसांईजी के दरसन कों लक्ष्मीदास आए हते। तब श्रीगुसांईजी ने लक्ष्मीदास कों अपनो स्वरूप दिखायो। सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम के दरसन लक्ष्मीदास कों श्रीगुसांईजी के भए। तब लक्ष्मीदास नें श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् करि

कै बिनती करी, जो–महाराजाधिराज ! मोकों कृपा करि कै नाम दीजिए। तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करि कै लक्ष्मीदास कों नाम सुनाए पाछें निवेदन करायो। सो लक्ष्मीदास द्रव्यपात्र हुते। तातें श्रीगुसांईजी सो बिनती किये, जो–कृपानाथ ! मोकों स्वरूप–सेवा की इच्छा है। तातें कृपा करि भगवत्स्वरूप पधराय दीजिये। तौ हों सेवा करों। तब श्रीगुसांईजी आप लक्ष्मीदास कों एक लालजी कौ स्वरूप पधराय दिये। ताकी ये राजवैभव सों नीकी भांति सेवा करते।

वार्ता प्रसंग–२

ता पाछें एक समै अन्नकूट की भेंट श्रीगोवर्द्धननाथजी की पहिले ही भई हती। सो श्रीगुसांईजी ने बोहोत ही प्रसन्न होंइ कै अपने श्रीहस्त सों वैष्णव के पास तें पहिलें एक रुपैया लियो हतो। तब लक्ष्मीदास दोषी ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो–महाराजाधिराज ! यह बात तो आछी नाहीं करी है। तब श्रीगुसांईजी ने लक्ष्मीदास सों पूछ्यो, जो–कैसें आछी नाहीं करी है ? तब लक्ष्मीदास नें श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो –महाराजाधिराज ! (हाथ सों) नहीं लीजे। तब श्रीगुसांईजी चुप व्है रहे। ता पाछें केतेक दिन पाछें या बात के ऊपर श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न भए। तब लक्ष्मीदास ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो–महाराजाधिराज ! आप तो बड़े हो, ईश्वर हो। आप तो सर्वदा करत ही हो। जो उन कौ तो ऐसोई स्वभाव ही है। जैसें चंद्रमा अठारह भार बनस्पती कों अपने अमृत करि कै सींचत है। और इतनो नाहीं जानत हैं, जो–मैं इन कों जिवावत हों। सो

काहेंतें ? जो–इन कौ सहज स्वभाव ही है। परि कहा कौन सों बूझिये ? जो उहां तो थोरो रह्यो सो आश्चर्य है।

भावप्रकाश–याकौ अभिप्राय यह है, जो–श्रीगुसांईजी आप तो ईश्वर हैं। आप कों द्रव्य की कछू न्यूनता नाहीं है। सदा सर्वदा अन्नकूट आदि सब करत ही हैं। परि जीवन की ऊपर कृपा करिवे कौ आप कौ सहज सुभाव है। तातें श्रीगुसांईजी आप वैष्णवन सों श्रीगोवर्द्धननाथजी के अन्नकूट की भेंट अपने श्रीहस्त सों लिये। या प्रकार जीवन की ऊपर अति करुना करी। परि 'कहा कोन सों बूझिए'। ताकौ तात्पर्य यह, जो–कौन के मन में कहा है ? सो कैसें जानि परे ? यामें यह कह्यो, जो–सब कोऊ या भाव कों समुझत नाहीं। तातें कितने यों आश्चर्य करत हैं, जो–श्रीगोवर्द्धननाथजी के इहां द्रव्य की न्यूनता है। तासों श्रीगुसांईजी आप श्रीहस्त सों यह भेंट लेत हैं। सो जो कोऊ या प्रकार जानत हैं तिन कौ बिगार होत हैं। या भाव सों लक्ष्मीदास श्रीगुसांईजी सों कहै, जो–'यह बात आछी नाहीं करी हैं'। सो या बात कों समुझि श्रीगुसांईजी आप लक्ष्मीदास पर प्रसन्न भए। सो यह बात ऐसी है।

सो यह लक्ष्मीदास की बात सुनि कै श्रीगुसांईजी आप बोहोत ही प्रसन्न भए। और कहे, जो–लक्ष्मीदास बड़े ही कृपापात्र भगवदीय हैं। जिन कों ऐसो स्वरूप कौ ज्ञान है।

ता पाछें श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी श्रीरनछोरजी के दरसन कों पधारे। सो लक्ष्मीदास हू श्रीगुसांईजी के संग ही हुते। सो श्रीरनछोरजी के दरसन करि कै बोहोत ही प्रसन्न भए। ता पाछें श्रीगुसांईजी ने श्रीठाकुरजी कों रसोई करि कै भोग समर्प्यो। भोग सराई श्रीगुसांईजी आप भोजन किये। और लक्ष्मीदास हू महाप्रसाद लिये। ता पाछें कितनेक दिनलों श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी में रहि कै श्रीरनछोरजी के दरसन किये। पाछें श्रीगुसांईजी उहां तें विजय किये। सो गुजरात में लक्ष्मीदास के घर पधारि रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो। भोग सराइ आप भोजन किये। और सब ब्रजबासी टहलवान हू महाप्रसाद

लियो। सो रात्रि कों उहांही रहे। ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल कों पधारे। तब लक्ष्मीदास ने श्रीगुसांईजी कों बोहोत ही भेंट करी। श्रीगोवर्द्धननाथजी कों भेंट पठाई। और थोरीसी दूरि आप पहुंचावन आये। पाछें लक्ष्मीदास श्रीगुसांईजी कों बिदा करि कै अपने घर आए। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल पधारे। और लक्ष्मीदास अपने घर में श्रीठाकुरजी की सेवा करन लागे। पाछें लक्ष्मीदास लौकिक व्यवहार सब छोरे। सो ऐसें करत काल व्यतीत करि दियो। सो उन कौ ऐसो सरल स्वभाव हतो। सो कहां तांई कहिए ? अहर्निस भगवद्वार्ता में ही जन्म व्यतीत कियो। परंतु कछू और वार्ता में घरी पल वृथा नहीं गँवायो। वैष्णव कोऊ आवतो तासों बोहोत ही स्नेह सिष्टाचार राखते। वैष्णव कों भगवद् स्वरूप करि कै जानते। भगवदीय आवे तिन सों साम्हें जाँइ कै मिलते। भगवद् वार्ता, जो पूछते सो कहते। अहर्निस वे भगवद् वार्ता में मन राखते। अन्य वार्ता में समुझते ही नाहीं। सो वे लक्ष्मीदास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। जिनके ऊपर श्रीगुसांईजी आप सदा प्रसन्न रहते। तातें उनकी वार्ता कौ पार नाहीं। सो कहां तांई कहिए।

॥ वार्ता ॥ ५० ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक ध्यानदास क्षत्री, गुजरात के बासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये तामस भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'मनसादेवी' है। ये 'प्रवीना' तें प्रगटी हैं। तातें इनके भाव–रूप हैं।

वार्ता प्रसंग–१

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप द्वारिकाजी श्रीरनछोरजी के

दरसन कों पधारे हते। तहां ध्यानदास ने श्रीगुसांईजी सों नाम पायो हतो। ता पाछें एक समै ध्यानदास श्रीगुसांईजी के दरसन कों श्रीगोकुल आए। तहां श्रीनवनीतप्रियजी के आगें निवेदन कियो। तब तें ध्यानदास श्रीगुसांईजी के पास ही रहे। सो क्षन एक दूरि न रहे। जहां श्रीगुसांईजी पधारे तहां ही ध्यानदास संग रहे।

और जगन्नाथ श्रीगुसांईजी के पास रहत हुते। सो वे जगन्नाथ दास के हाथ में पद्म कौ चिह्न हतो। सो जा बस्तू में तें ये कछू निकासते सो फेरि बढ़ि जाती। सो घटती नाहीं। सो जगन्नाथदास भोरे बोहोत हते। सो उन कों या बात की खबरि नाहीं।

भावप्रकाश–सो जगन्नाथदास लीला में श्रीयमुनाजी के यूथ के हैं। 'कीरति' इन कौ नाम है। सो ये श्रीगोकुल में एक क्षत्री वैष्णव के घर जन्मे। सो वा क्षत्री वैष्णव कों संतति न हुती। तातें उनने अपने हृदय में बिचार्यो, जो–मोकों पुत्र होंइ तो मैं श्रीगुसांईजी की भेंट करूंगो। पाछें भगवद् ईच्छा तें पुत्र भयो, ताकौ नाम जगन्नाथ धर्यो। सो जगन्नाथ बरस दस के भये। पाछें वा क्षत्री वैष्णव ने श्रीगुसांईजी के पास आय बिनती करी। जो–महाराज! मैनें ऐसो संकल्प कियो हतो, जो–मेरे पुत्र होंइ तो मैं आप कों भेंट करों। सो ये पुत्र भयो है। तातें आप इन कों सरनि लै अपनी टहल में राखिये। तब श्रीगुसांईजी जगन्नाथदास कों दैवी जीव जानि अपने पास राखे। सो वाके हाथ में पद्म श्रीगुसांईजी आप देखे। तातें उन कों श्रीगुसांईजी आप अपनी भेंट राखिवे कों आज्ञा किये। सो जगन्नाथदास श्रीगुसांईजी के संग ही रहते। सो श्रीगुसांईजी की भेंट सम्हारते। सो जगन्नाथदास कौ सुभाव सरल बोहोत। सो काहू कौ रंच दुःख हू देख्यो न जाँई। तातें जब कोऊ श्रीगुसांईजी के पास मांगन आवे तब जगन्नाथदास अपनी पास के द्रव्य में तें उन कों देते।

सो एक समै श्रीगुसांईजी के इहां भिक्षुक बोहोत आए हते। सो जगन्नाथदास पास श्रीगुसांईजी के भेंट के पैसा हते। सो भिक्षुक मांगिवे कों आए तब जगन्नाथदास सब कों एक एक पैसा देत गए। तब ध्यानदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी,

जो–महाराजाधिराज ! जगन्नाथदास सब कों पैसा देत हैं, सो ये कहां सों देत है ? तब ध्यानदास कों श्रीगुसांईजी आप कहे, जो–कोऊ सत्कर्म करत है ताकी सहायता प्रभु आप करत हैं।

और वैष्णव कों निर्दोष वस्तून में दोषारोपन सर्वथा न करनो। और जो करत हैं सो आप ही दूषित होत हैं। तासों तुम वैष्णव हो सो दोष रहित हो। सो काहेकों दोषारोपन करत हो ? ए सुनि कै ध्यानदास बोहोत प्रसन्न भए। और ता दिन तें नेम लियो, जो–आज पाछें भगवद् ध्यान छोरि कै कोई के दोष नहीं देखूंगो। सो ता दिन सों जन्म पर्यंत ध्यानदास ने काहू के दोष नाहीं देखे। सो वे ध्यानदास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। सो इन की वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥५१॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक सेठ राजनगर कौ बासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये 'राजस' भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'पयोनिधि' हैं।

ये 'मनआतुरी' तें प्रगटी हैं। तातें इन के भावरूप हैं।

सो यह सेठ राजनगर में एक बनिया के घर जन्म्यो। सो वह बनिया बोहोत ही द्रव्य–पात्र हतो। सो एक समै श्रीगुसांईजी राजनगर पधारे हे। तब वह बनिया आप अपने बेटा कुटुंब सहित श्रीगुसांईजी कौ सेवक भयो हतो। पाछें वह मर्‍यो तब वाकौ बेटा यह सेठ, सो श्रीगोकुल आयो। सो इनन श्रीगुसांईजी की बोहोत सेवा करी। पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराजाधिराज ! मोकों भगवत्सेवा पधराए दीजिये। तब श्रीगुसांईजी इन कौ एक लालजी कौ स्वरूप पधराय दियो। और आज्ञा किये, जो–इन की नीकी भांति सेवा करियो। पाछें यह सेठ कछूक दिन श्रीगोकुल रहि, श्रीगुसांईजी सों सब सेवा की रीति जानि अपने देस राजनगर कों आयो। तहां श्रीठाकुरजी की भली भांति सों सेवा करन लाग्यो। आए गए वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवावे। काहू के खरची न होंइ ताके खरची देई। या भांति सों सेवा करे।

वार्ता प्रसंग–१

सो एक समै दस हजार वैष्णवन कौ साथ राजनगर में आयो।

सो श्रीगोकुल जात हतो । तब या सेठ ने रुपैया दस हजार श्रीगुसांईजी कों भेंट पठायो । और जा वैष्णव कों खरची नाहीं हती ताकों खरची दियो । और घर में श्रीठाकुरजी सामग्री बोहोत अरोगते । सो नित्य वैष्णवन महाप्रसाद लेते । सगरे वैष्णव वाकी बड़ाई करते । सो दस हजार वैष्णव गुजराति के श्रीगोकुल कों आए । सो सब वैष्णव ने उह सेठ की बड़ाई श्रीगुसांईजी के आगें बोहोत करी । ता समै चाचा हरिवसंजी और नागजीभाई पास बैठे हते । सो उह सेठ की बड़ाई श्रीगुसांईजी के आगें सब वैष्णवन के मुख तें सुनि कै चाचा हरिवंसजी की ओर, नागजीभाई की ओर, श्रीगुसांईजी आप मुसिकाई कै देखे । तब नागजी भट और चाचा हरिवंसजी श्रीगुसांईजी सों बिनती किये, जो–महाराजाधिराज ! वह सेठ आप कौ सेवक है । ताकी यह बड़ाई होंइ सो उचित ही है । और आप वह सेठ की बड़ाई सुनि कै कछू बोले नाहीं, मुसिकाइ कै हमारी ओर कृपाकटाक्ष करि कै देखे, ताकौ कारन कहा है ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–भेंट–मनोरथ दोई प्रकार को हैं । एक तो द्रव्य कों तुच्छ जानि कै मनोरथ करत हैं । तिन कों संकोच दैन्यता बोहोत होत है । ता करि प्रभु बेगि प्रसन्न होत हैं । और जो द्रव्य कों पदार्थ जानि कै भैट करत हैं तिन कों दैन्यता सिद्धि नाहीं होत है । उन कों अपनो उत्कर्ष मन में रहत हैं, जो–यह मनोरथ आछी भांति भयो । या प्रकार ऊपर दिखावें, सब कों जतावें । ता मनोरथ में भगवत–संतुष्टि नाहीं है ।

यह सुनि कै ऊह दस हजार वैष्णवन में चारि वैष्णव बोहोत

समुझत हते । सो तिन नें श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! हम तो अपने देस में सेठ के समान और कोई कों जानत नाहीं है । सो आप उनकी बड़ाई सुनि कै प्रसन्न नाहीं होत ताकौ कारन कहा है ? तब श्रीगुसांईजी हँसि कै कहे, जो–वैष्णव धर्म बोहोत कठिन है । सूक्ष्म है । काहू तें जान्यो जात है नाहीं । जब संग करि कै झीनी दृष्टि सों उन के हृदय कौ भाव देखिए तब जान्यो जाँई तब उन चारों वैष्णवन श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! ऐसें वैष्णव कों आपु कृपा करि बतावो तो चारि रात्रि उन कौ संग करिए । तब श्रीगुसांईजी उन चारों वैष्णवन कों कृपा करि कहे, जो–आगरे में स्त्री–पुरुष कनोजिया ब्राह्मन रहत हैं । सो आगरे में जाँइ संतदासजी सों पूछि लीजो । तिन कौ संग करियो । तब चारों वैष्णव श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि तत्काल आगरे कों चले, दूसरे दिन । सो वे वैष्णव आगरे में आई, प्रथम संतदासजी के घर गए । तब संतदासजी बोहोत आदर सन्मान किये । श्रीगुसांईजी के कुसल समाचार पूछे । और कहे, जो–वैष्णव कहा कार्यार्थ या गाम में आए हो ? तब चारों वैष्णव संतदासजी सों कह्यो, जो–हम कों श्रीगुसांईजी फलाने स्त्री–पुरुष वैष्णव हैं तिन के पास पठाए हैं । तब संतदासजी उन चारों वैष्णवन कों संग लै जाइ कै वे स्त्री–पुरुष जहां रहत हते ता घर कौ द्वारा बताइ आए । जाने, जो–श्रीगुसांईजी कहा जानिए कौन अर्थ इन कों पठाए हैं ? (तातें) अपने कों बीच में रहनो नाहीं । यह बिचारि कै संतदासजी अपने घर आए । तब वें चारों वैष्णव उह घर भीतर

गए। सो स्त्री तो रसोई सिद्ध करि चुकि हती। और वाकौ पुरुष सिंगार करि भोग धरि कै बाहिर आयो हतो। इतने में इन वैष्णवन जाँइ भगवदस्मरन कियो। सो पुरुष ने इन सों पूछ्यो, जो–वैष्णव तुम कहां तें आए हो ? तब चारों वैष्णवन कही, जो–हम कों श्रीगुसांईजी तुम्हारे पास पठाए हैं। सो हम श्रीगोकुल तें आए हैं। या प्रकार श्रीगुसांईजी कौ, श्रीगोकुल कौ, नाम सुनत मात्र ही वा पुरुष कौ मन विह्वल होंइ गयो। सो तत्काल अपरस में तें दोरि कै चारों वैष्णवन कों परम प्रीति सों मिले। पाछें चारो जनेंन कों अपने घर में उतारि दिये। पाछें वा ब्राह्मन ने उन वैष्णवन सों कही, जो–तातो पानी करूं, यहीं न्हाउ। तब उन वैष्णवन कही, जो–राजभोग–आर्ति के दरसन करि कै श्रीयमुनाजी न्हाय आवेंगे। तातें अब तो तुम अपनी सेवा में जो कार्य करत हो सो करो। तब वह ब्राह्मन वैष्णव न्हाइ कै फेरि मंदिर में गयो। अपनी स्त्री सों कह्यो, जो–चार वैष्णवन कों श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें पठाए हैं। सो बड़ी कृपा श्रीगुसांईजी हम ऊपर करी। जो–हम कों सम्हारत हैं। तब स्त्री ने कही, जो–श्रीगुसांईजी परमदयाल हैं। जो–हम सारिखे निःसाधन जीव कों सम्हारत हैं। पाछें स्त्री ने कही, जो–घी थोरो है। सो मैं राजभोग धरति हों तहां तांई लावोगे। तब वह वैष्णव कटोरी लै माथें पाग धरि तत्काल बजार में गयो। सो एक बनिया ने तत्काल घी लियो हतो। सो ताय–छानि कै अपने बासन में करत हतो। ताही समै वैष्णवने आइ कै कही, जो पाव सेर घी के दाम होइ सो लेहू। और बेगि हम कों घी देहु। तब

बनिया ने पाव सेर घी दियो। सो वैष्णव तत्काल घी लै कै परम हरख सों चल्यो।

सो वैष्णव अपने घर आई ता आनंद में न्हाइवे की, पाग की, सुधि रही नाहीं। सो रसोई करि कै भीतर जाँइ जहां स्त्री राजभोग धरत हती तहां यह पुरुष हू भोग धर्‍यो। मानसी सेवा कौ भाव स्त्री-पुरुष बिचारत हते। ता करि कै स्त्री कों हू कोऊ सुधि ना आई। या प्रकार राजभोग दोऊ जनें धरि कै बाहिर आइ स्त्री-पुरुष श्रीनंदरायजी के घर की सेवा कौ, ब्रजभक्तन के घर की सेवा कौ, तथा श्रीवृषभानजी के घर की सेवा कौ, राजभोग कौ भाव बिचार करन लागे।

भावप्रकाश-यामें यह जतायो, जो-वैष्णव कों भगवत्सेवा ब्रजभक्तन के भाव सों करनी। तातें निरोध सिद्ध होंई। और भोग धरे पाछें समयानुसार आरोगवे की भावना करनी। सो कैसें? जैंसे सीतकाल होंइ तो नंदालय में ठाकुर भोजन करत हैं। कबहूक ब्रजभक्तन के घर न्योतें हैं, तहां भोजन करत हैं। या प्रकार भाव बिचारनो।

उष्णकाल में छाक की भावना करनी। श्रीयमुना पुलीन, सघन बन, स्यामढ़ाँक आदि ठौर में ठाकुर गाय चरावत हैं। तहां सखा मंडली सहित प्रभु हास्य-विनोद करत हैं। ता समै आप कों क्षुधा लागी है। सो वृक्षन पैं चढि कै घर की छकहारीन कों देखत हैं। कबहूक छकहारी पैंड़ो भूलि जाति हैं। सो प्रभु आप बेनु बजावत हैं। ता मारग अनेक छकहारी सीस पर सामग्रीन के डला लै लै कै ता ठौर आवति हैं। तहां और हू अनेक ब्रजभक्तन के घर की छाक आवत हैं। तब श्रीठाकुरजी सखान कों अपनी जूठन देत हैं। तहां अनेक प्रकार के खेल होत हैं। कबहूक छीनत हैं, झपटते हैं। कबहूक हास्य-विनोद करत हैं। संकेत होत हैं। या प्रकार अनेक भावना करनी।

और वर्षा ऋतु में प्रीया-प्रितम बन में पधारे हैं। तहां बनकी सोभा निरखि रहे हैं। ऐसें में मेह आवत है। तब श्रीस्वामिनीजी भींजत हैं। तब श्रीठाकुरजी अपनी कामर की खोई करि तामें उन कों ढांपत हैं। तहां अनेक प्रकार के मनि जटित, रत्न जटित कुंज आदि हैं। तामें प्रिया-प्रीतम बिराजत हैं। तहां सखीजन अनेक भांति की सामग्री लावति हैं। सो श्रीठाकुरजी प्रियाजी कों मनुहार करि लिवावत हैं। तब श्रीस्वामिनीजी कहत हैं, जो-पहिले आप आरोगिये।

या प्रकार दोनों परस्पर मधुर बचन कहत हैं। सो सोभा ललितादि सखीजन देख रही हैं। ता पाछें ललिता दोनों कों आरोगावति हैं। ऐसें अनेक प्रकार की भावना करनी। सो श्रीआचार्यजी के मार्ग की रीति है, जो–वैष्णव सुद्ध हृदय तें जैसी भावना करत हैं तैसी रीति सों श्रीप्रभु आप साक्षात् अंगीकार करत हैं। सो श्रीगुसांईजी श्रीवल्लभाष्टक में कहत हैं। सो श्लोक–

"यस्मादस्मिन् स्थितौ यत्किमपि कथमपि क्वाप्युपाहर्तुमिच्छ त्यद्धा तद् गोपीकेशः स्ववदनकमले चारुहासे करोति ॥"

सो या पुष्टिमार्ग में वैष्णव जो–कछू, जा भांति जा जगे, प्रभुन कों अरोगाइवे की इच्छा करत है वाकों साक्षात् गोपीजनन के ईस जो–श्रीकृष्ण ताही भांति ताही ठौर अपने मुखकमल में हँसत हँसत अति प्रीति सों अंगीकार करत हैं। तातें वैष्णव कों या प्रकार भावना करनी और जाकों भावना हृदय में न स्फूरे ताकों अष्टसखा तथा और हू भगवदीयन के कीर्तन गावने। ता करि प्रभु भोग अरोगत हैं। यह निश्चय है।

और इहां चारों वैष्णवन देख्यो, जो–वह बजार तें वैष्णव घी ल्यायो सो पाग सहित। (तातें) सगरी अपरस छुवायो। तब चारों वैष्णव अपने मन में बिचार करन लागे, जो–श्रीगुसांईजी हम कों पठाए हैं। सो वैष्णव तो आछौ है। स्नेह बोहोत हैं। परंतु आचार–क्रिया तो कछू नाहीं है। तातें अब इहां महाप्रसाद तो लियो न जाँइ। तब दूसरे वैष्णव ने कही, जो–चलो ! अपने श्रीगोकुल चलिए। तब चारों जनें बिचारि कियो, जो–एक वैष्णव तो सब कौ खड़ीया लै कै गाम के द्वार के ऊपर चलि कै बैठो। और हम तीन जनें राजभोग–आर्ति के दरसन करि कै श्रीयमुनाजी न्हाइवे के मिस पाछें चले चलेंगे। तब एक वैष्णव सब के खड़ीया लै कै गाम कै द्वार ऊपर आइ बैठ्यो। पाछें राजभोग सरवे कौ समै भयो। तब स्त्री–पुरुष दोऊ जन भीतर राजभोग सराइ, बीरा आरोगाइ, आर्ति कौ समौ भयो तब वह ब्राह्मन नें उन वैष्णव कों दरसन करन कों बुलाए। तब तीनों

जनें दरसन कों गए। सो श्रीठाकुरजी ने जान्यो, जो–मोसों ये कपट करि दरसन करन कों आए हैं। मेरो दास निष्कपट है, जासों यह कपट कियो। तातें इन कों दरसन देनो उचित नाहीं है। या प्रकार श्रीठाकुरजी बिचारि कै उन कों दरसन न दिये। तब इन तीनों जनेंन अपने मन में जानी, जो–यह वैष्णव ऊपर तें दिखाइवे के लिये प्रेम करत हैं। भगवद्धर्म नाहीं है। सो श्रीठाकुरजी तो हैं नाहीं। भगवद् चर्चा किन के लिये करे? तातें अब इहां तें बेंगि जैये तो आछौ है। या प्रकार श्रीठाकुरजी इन तीनों वैष्णवन कौ मन उदास करि दिये। पाछें वा ब्राह्मन वैष्णवनें राजभोग–आर्ति करी। तब तीनों जनें मंदिर में तें बाहिर आए। तब वह स्त्री तो श्रीठाकुरजी कौ अनोसर कराइवे में रही। और वह पुरुष वैष्णव इन के पास आइ बोहोत बिनती करी, जो–बेगि न्हाइ कै महाप्रसाद लेहु, तुम्हारो एक वैष्णव साथ कौ कहां गयो है? तब इन तीनों जनेंन कही, जो–एक वैष्णव श्रीयमुनाजी न्हायवे कों गयो हैं। सो हम हूं श्रीयमुनाजी न्हाइ आवें। तब तुम कहोगे सो करेंगे। तब वा ब्राह्मन वैष्णव ने कही, जो–बेगि न्हाइ कै अइयो। मार्ग के चले हो सो भूखे होउगे। तब वे तीनों वैष्णव तहां तें चले सो आगरे के द्वार ऊपर आए। तहां देखे तो वह चौथो वैष्णव बैठ्यो है। तब उन पूछ्यो, जो–तुम तीनों जनें दरसन करि आए? तब इन ने कह्यो, जो–दरसन कहा रहे? तहां तो श्रीठाकुरजी ही नाहीं है। और सामग्री, झारी, सिंघासन, पिछवाई, इत्यादिक तो तहां सब हैं। परंतु श्रीठाकुरजी तो नाहीं है। तातें यह वैष्णव ऊपर तें स्नेह

बोहोत जनावत हैं। और भीतर कछू धर्म नाहीं है। तातें बजार तें घी लै आइ कै रसोइ में चल्यो गयो। ऊपर वैष्णवन में बोहोत स्नेह जनावत हैं। सो कोई वैष्णव नें श्रीगुसांईजी के आगे याकी बड़ाई करी है। तातें श्रीगुसांईजी तो बालक हैं। परम भोरें हैं। सो जानें, जो–यह वैष्णव बोहोत आछो है। यह तीनों जनेंन के बचन सुनि कै उह एक वैष्णवनें कही, जो–भली भई, जो–वाके घर कौ कछू जलपान महाप्रसाद नाहीं लियो। नाँतरु सगरी बुद्धि भ्रष्ट होंइ जाती। तातें अब तुम इहां तें बेगि चलो। मति कहूं ढूंढिवे कों आवे तो आछौ नाहीं। तब चार्‌यो जनें अपनी खड़ीया वस्तूभाव लै कै तहां तें चले। सो गऊघाट आइ कै चारों जनें रहे।

और इहां आगरे में स्त्री–पुरुष वैष्णवन नें जान्यो जो–वे वैष्णव श्रीयमुनाजी न्हाइ कै आवे तो महाप्रसाद लेंई। सो उत्थापन कौ समै भयो। वैष्णव तो नाहीं आए। तब स्त्रीनें कही, जो–मैं न्हाय कै श्रीठाकुरजी सों पहोंचत हों। और तुम श्रीयमुनाजी के घाट पर तथा संतदासजी आदि वैष्णव के घर ढूंढि कै समाचार लै आवो। तब स्त्रीनें न्हाइ कै श्रीठाकुरजी कों उत्थापन करायो। और पुरुष प्रथम तो सगरे श्रीयमुनाजी के घाट पर ढूंढ्यो। पाछें संतदासजी आदि सगरे वैष्णव के घर ढूंढि हारि कै प्रहर एक रात्रि गए अपने घर आयो। तब स्त्रीनें कही, वैष्णव कहूं न मिले ? तब पुरुष ने कही हमारो महाअपराध है। हमारे ऊपर श्रीगुसांईजी के वैष्णव कैसें कृपा करें ? हमारे में ऐको धर्म नाहीं है। केवल दोष करि कै भरे हैं। या

प्रकार दोऊ स्त्री–पुरुष अपनो दोष बिचार करन लागे। और महाप्रसाद न लेइवे कौ संकल्प किये।

भावप्रकाश–काहतें, जो–श्रीगुसांईजी कृपा करि कै वैष्णव कों पठाए। सो वैष्णव उदास होंइ कै हमारे घर तें उठि गए। अब हम कों प्रसाद लेनो, जीवनो, उचित नाहीं है। या प्रकार अपनो दोष बिचार्‌यो। यह मार्ग की रीति है, जो–निरंतर अपनो दोष बिचारनो। तातें दीनता सिद्ध होंई। तब प्रभु प्रसन्न होंइ अपनो अनुभव जतावे। दूसरे के दोष हृदय में लावे तो अपनी गांठि हू कौ जाँई। दीनता सिद्ध न होंई। महा अपराधी होंई।

ऐसो बिचार करि कै महाप्रसाद सब राजभोग कौ सेन भोग तांई कौ गाँई कों खवाय दियो। पाछें दोऊ स्त्री–पुरुष महा चिंता करि कै परि रहे। सो जब मध्य रात्रि गई, ताही समै श्रीठाकुरजी श्रीमदनमोहनजी कहे, जो–वैष्णव ! तुम काहे कों दुःख करत हो ? वे चारों वैष्णव तो श्रीगोकुल कों गए। तुम बजार तें घी ल्याए। सो तुम तो परम आनंद में हुते। देहानुसंधान भूले। सो पाग सहित बजार के पांव रसोई में आई कै तुम राजभोग धरे। सो मैं तो भली भांति सों प्रसन्न होंइ कै आरोग्यो। और वे चारों जनें तुम्हारो दोष देखे। तातें मैं उन कों राजभोग–आर्ति समै दरसन नाहीं दियो। सो वे चारों जनें श्रीगोकुल कों गए। अब तुम भूखे क्यों रहे ? या प्रकार श्रीठाकुरजी ने उन सों कह्यो, जो–तुम अपने मन में खेद मति करो। तब स्त्री–पुरुष ने कही, जो–महाराज ! या बात में तो हम हीं भूले। श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी की बांधी मर्यादा है सो हम उल्लघंन किये। बजार तें होंइ कै रसोई में आए। सगरी अपरस छुई गई। सो वैष्णव कों तो देखि कै अभाव होंइ तो, यह तो मार्ग की रीति है। तुम उन चारों वैष्णवन कों दरसन क्यों नाहीं दियो ? तब श्रीठाकुरजी ने

कह्यो, जों–तू जानि कै मार्ग की रीति उल्लघंन नाहीं कियो। प्रेम में बिबस होंइ कै रसोई में आयो। सो प्रेम है सो तो मेरो स्वरूप हैं। सो मेरो स्वरूप जब भयो तब वासों वा समै कछू हू छूइ जाँइ नाहीं। जानि कें कछू अनाचार करे तो वाके ऊपर में अप्रसन्न होऊं। तब स्त्री–पुरुष ने कही, जो–महाराज! अब तो हम सों महाप्रसाद तो न लियो जाइगो। वैष्णव चार मेरे घर तें भूखे गए। यह सुनि कै श्रीठाकुरजी हँसि कै चुप होंइ रहे।

भावप्रकाश–सो काहेतें, जो–इन स्त्री पुरुष कौ भगवद्धर्म दृढ़ देख्यो। सो वैष्णव कौ यह धर्म है, जो–अपने घर जो कोऊ आवें ताकों प्रसाद लिवाइ कै लै। और यह तो श्रीगुसांईजी के पठाए वैष्णव आए हे। तातें उन कों प्रसाद लिवाए पहिले आप प्रसाद कैसें लैई?

पाछें प्रातःकाल भयो। तब स्त्री–पुरुष ने जानी जो श्रीठाकुरजी की अपरस छुइ गई। तातें सब काढ़ि कै नई अपरस करि मंगला तें लै कै राजभोग लों पहोंचि महाप्रसाद सब गाँइन कों खवाइ कै दोनो जनें भूखे ही बैठि रहे।

भावप्रकाश – यहां यह बड़ो संदेह है, जो–श्रीठाकुरजी ने या वैष्णव तें कह्यो; जो– 'प्रेम है सो मेरो स्वरूप है, तातें वा समै कछू हू छूई जाँइ नाहीं' फेरि या वैष्णव ने अपरस क्यों काढी? श्रीठाकुरजी की आज्ञा हू नाहीं मानी? याकौ कहा कारन? तहां कहत हैं, जो–ये वैष्णव श्रीआचार्यजी कौ सेवक है। सो सेवक कौ यह धर्म है, जो–अपने स्वामी की आज्ञा प्रमान चले। तातें श्रीआचार्यजी के मार्ग की रीति प्रमान चले तो श्रीआचार्यजी प्रसन्न होंई। सो श्रीआचार्यजी के मार्ग की यह रीति हैं, जो–जानें पाछें अपरस छूइ जाई। जब लों ज्ञान न होंइ तब लों कछू दोष नाहीं। सो या वैष्णव ने जब जान्यो तब अपरस निकासी। और श्रीआचार्यजी की बांधी मर्यादा कों ठाकुर हू अनुसरत हैं। तातें वैष्णव कों श्रीआचार्यजी की मर्यादा अनुसार सेवा करनी। तातें ठाकुर हू प्रसन्न होंई। और ठाकुर ने कह्यो, जो– 'वा समै कछू हू छूइ न जाँई।' सो वा समै तो न छूयो। परि अब तो वह प्रेम कौ आवेस है नाहीं। क्यों? जो–ज्ञान भयो है। सो ज्ञान में अपरस छूइ जाँई। और ठाकुर ने हू परीक्षार्थ यह बचन कह्यो, जो– 'वा समै कछू हू छूई न जाँई।' याकौ अभिप्राय यह, जो–देखे! यह वैष्णव मेरे बचन

प्रमान चले हैं कै आचार्यजी की मर्यादा अनुसार चले हैं ? सो या वैष्णव कों तो श्रीआचार्यजी महाप्रभु कौ दृढ आश्रय हैं। तातें इन अपरस निकासी। सो ठाकुरजी हू प्रसन्न भए।

पाछें उहां वे चारों वैष्णव गऊघाट तें घरी दोइ रात्रि पिछली रही तब उठि कै श्रीगोकुल कों चले। सो सवा प्रहर दिन चढ्यो ता समै श्रीगोकुल आये। सो श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी कों राजभोग धरि कै श्रीठकुरानीघाट मध्याह्न की संध्या करिवे कों पधारे हते। ता समै उन चारों वैष्णव आइ के श्रीगुसांईजी कों दंडवत् कियो। सो श्रीगुसांईजी उन चारों वैष्णवन के ऊपर अप्रसन्न होंइ कै पीठि दै बैठे।

भावप्रकाश – काहेतें, प्रभु के पीठि में बहिर्मुखता रहत है। सो जानें जो–ए चारों वैष्णव बहिर्मुख हैं। तातें इन कों पीठि कौ दरसन करावनो।

तब चारों वैष्णवन नें श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराजाधिराज ! हमारो कहा अपराध है ? हम आप के कहे तें आगरे में वैष्णव पास होंइ आए। यह सुनि के श्रीगुसांईजी खीझि कै कहे, जो–हम तुम कों उन वैष्णव के ऊपर की क्रिया देखिवे कों नाहीं पठाए। उहां दोइ चारि दिन रहि कै उन वैष्णवन के हृदय कौ भाव देखते तो जानते। उलटो वैष्णव कौ अपराध कियो। ता कर कै उन वैष्णव के श्रीठाकुरजी ने दरसन तुम कों नाहीं दियो। सो वे स्त्री–पुरुष अब ही तांई कछू खायो नाहीं। महाखेद करत हैं। सो मेरे हृदय में महादुःख होत है। यह सुनत ही वे चारों वैष्णव श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै फेरि आगरे कों चले। सो रात्रि कों गऊघाट फेरि आइ रहे। महाप्रसाद चारों वैष्णवन नाहीं लियो। आपुस में कह्यो, जो–हमारी चारों जनेंन की बुद्धि भ्रष्ट होंइ गई। जो–श्रीगुसांईजी आपुन कों पठाये हते। सो श्रीगुसांईजी के बचन कौ विश्वास

नाहीं रह्यो। पाछें प्रातःकाल बेगि ही उठि के चारों वैष्णव चले। सो आगरे में स्त्री–पुरुष ब्राह्मन वैष्णव के घर गए। सो स्त्री न्हाइ कै राजभोग की रसोई करत हती। और पुरुष सिंगार करि भोग धरि कै श्रीठाकुरजी कों, आप बाहिर आइ बैठ्यो हतो। सो इन चारों वैष्णवन कों देखि कै वह ब्राह्मन वैष्णव दोरि कै इन के पाँइन परि कै कह्यो, जो–वैष्णव ! हम तुम्हारो महा अपराध कियो। तुम्हारो अपराध हम सों भयो। तब उन चारों वैष्णवन कह्यो, जो–तुम्हारो अपराध हम सों भयो। सो हमारे ऊपर श्रीठाकुरजी अप्रसन्न होइ कै हम कों दरसन नाहीं दिये। और श्रीगुसांईजी हू अप्रसन्न होंइ कै हम कों दरसन नाहीं दिये। सो अब तुम हमारो अपराध क्षमा करो। तुम जैसें कहोगे तैसेंई हम अब करेंगे। यह सुनि कै वा ब्राह्मन वैष्णव कौ हृदय भरि आयो। और कह्यो, जो–वैष्णव बैठो। प्रभु सब आछी करेंगे। पाछें वा ब्राह्मन वैष्णव ने कही, जो–तातो पानी तैयार है, न्हाओ। तब उन चारों वैष्णव कों वह ब्राह्मन वैष्णव न्हवायो। तब वे चारों वैष्णव न्हाइ कै अपनो नित्य नेम हतो सो करन लागे। पाछें राजभोग धरि कै स्त्री बाहिर आई। उन चारों वैष्णवन कों भगवद्–स्मरन करि कै बोहोत भांति सों दैन्यता करी, जो–हमारो अपराध क्षमा करो। हम संसार में परे हैं, दोष रूप होंइ रहे हैं। यह सुनि कै चारों वैष्णवन कही, जो–तुम धन्य हो। और तुम्हारो धर्म परम उत्तम है। जो–श्रीगुसांईजी श्रीमुखतें तुम्हारी सराहना करत हैं। हम तुम्हारो स्वरूप जाने नाहीं। तातें इतनो दुःख पाए।

भावप्रकाश – सो यह ब्राह्मन वैष्णव लीला में 'मृदु भाषिनी' हैं। और ब्राह्मन वैष्णव की स्त्री 'कोमलांगी' है। ये दोऊ श्रुतिरूपा के जूथ के हैं। और ये चारों वैष्णव इन दोऊन की दो दो सहचरी हैं। इन के नाम 'हंसगामिनी', 'ब्रह्मानंदिनी', 'कोकिला' और 'कलावती' हैं। सो हंसगामिनी और ब्रह्मानंदिनी मृदुभाषिनी की सहचरी हैं। और कोकिला और कलावती ये दोऊ कोमलांगी की सहचरी हैं। सो इन चारों सहचरीन के भाव कौ पोषन मृदुभाषिनी और कोमलांगी करति हैं। तातें यहां हू श्रीगुसांईजी आप उन कों चारों वैष्णवन कों इन वैष्णव पास पठाए। परि पहिले उन वैष्णवन इन कौ स्वरूप जान्यो नाहीं। तातें दुःख पाए। पाछें श्रीगुसांईजी आप रिस के मिष अनुग्रह करि उन कों फेरि पठाए। तब उन चारों वैष्णवन कों इन वैष्णवन के स्वरूप कौ ज्ञान भयो। और इन के संग तें अपने स्वरूप कौ हू ज्ञान भयो।

पाछें समै भयो तब स्त्री नें राजभोग सराय आचमन कराय बीरी अरोगाई। पाछें राजभोग–आर्ति कौ समै भयो तब चारों वैष्णव कों दरसन कों बुलाए। सो श्रीठाकुरजी चारों जनेंन कों क्रोध सहित दरसन दिये। तातें चारों जनेंन कों महा भय लागी।

भावप्रकाश – सो काहेतें ? जो–ठाकुर वैष्णवन के अपराध तें अप्रसन्न होत हैं। सो सूरदासजी गाए हैं –

हम भक्तन के भक्त हमारे।
सुनि अर्जुन प्रतिज्ञा मेरी यह ब्रत टरत न टारे।
भक्तन काज लाज हों छांडों पाऊं प्यादे धाऊं।
जहां जहां भीर परे भक्तन कों तहां तहां जाँइ छुडाऊं।
जोई बैर करे भक्तन सों सो बैरी निज मेरो।
देखि बिचारि भक्तन के नाते रथ हांकत हूं तेरो।
भक्तन के जीते हों जीतों भक्तन हारे हारूं।
'सूरदास' जो–भक्त विरोधी सो चक्र सुदरसन मारूं।

सो उन चारों वैष्णवन ने इन ब्राह्मन स्त्री–पुरुष वैष्णवन कौ अपराध कियो। तातें उन कों ऐसें दरसन दै भय उत्पन्न कियो। परि ये चारों वैष्णव हू श्रीगुसांईजी के सेवक हैं। तातें या प्रकार भय कराय पूर्व दोष की निवृत्ति करी। पाछें अनुग्रह कियो, सो अब कहत हैं।

पाछें अनोसर भयो। तब चारों जनें आपुस में कहे, जो–श्रीठाकुरजी दरसन तो दिये। परंतु महाक्रोध संयुक्त हैं। अब यह स्त्री–पुरुष जो कहे तैसेंई करि कै जब इन दोऊ जनेंन

कों प्रसन्न करिये तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होंइगे।

पाछें स्त्री–पुरुष चारों जनेंन के पास आइ कै कहे, जो–जा प्रकार तुम प्रसन्न होंइ तैसेंई करो। चाहो अनसखड़ी प्रसाद लेहु, चाहो सखड़ी प्रसाद लेहु। कोई बात कौ संकोच मति करियो। यह सुनि कै चारों जनेंन कही, तुम्हारे श्रीठाकुरजी जो–सामग्री आरोगे हैं सो धरो। तामें प्रथम तो सखड़ी की पातरि धरो। अब हमारे मन में संदेह नाहीं। तब चारों वैष्णव कों स्त्री–पुरुष ने महाप्रसाद की सखड़ी अनसखड़ी पातरि धरी। सो चारों वैष्णवन बोहोत ही प्रसन्न होंइ कै महाप्रसाद लिये। पाछें उठि हाथ धोइ, कुल्ला किये। तब उन स्त्री–पुरुष ने इन चारों वैष्णवन कों बीरी दिये। सो इनन खाँई। पाछें वे दोऊ वैष्णव गाँइ कों एक पातरि धरि बाहिर आए। ता पाछें वे दोऊ जनें महाप्रसाद लै चौका दैकै चारों वैष्णव के पास स्त्री–पुरुष आइ बैठे। सो भगवद् चर्चा करन लागे। सो उत्थापन कै समै उठे। पाछें सेन लों पहोंचि के चारों वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवाए। स्त्री–पुरुष एक समै लेते, फेरि नाहीं लेते। पाछें रात्रि कों फेरि भगवद् वार्ता करन बैठे। सो मंगला के समै उठे। या प्रकार पंद्रह दिन बीते। सो चारों वैष्णवन के रोम रोम में भगवद्रस भरि गयो। सो चारों वैष्णव उन स्त्री–पुरुष को दंडवत् करि कै कहे, जो–धन्य तुम वैष्णव हो। जिन कों यह रस श्रीगुसांईजी दान किये हैं। पाछें चारों जनें जब दरसन करन गए तब श्रीमदनमोहनजी कृपादृष्टि सों अवलोकन किये। ता करि कै चारों वैष्णव के रोम रोम प्रफुल्लित होंइ गए। पाछें अनोसर

भयो। तब चारों जनें प्रसन्न होंइ कै उन स्त्री–पुरुष पास तें बिदा माँगे। तब स्त्री–पुरुष ने कही, जो–कछू दिन और हू रहो। तुम सारिखे वैष्णव तो महा दुर्लभ हैं। यह तो श्रीगुसांईजी कृपा करि कै पठाए हैं। तातें इतनो संबंध भयो। नाहीं तो हम कों वैष्णव कौ दरसन कहां ? यह सुनि कै चारों वैष्णव ने बिनती करी, जो–हम एक बार तुम कों अप्रसन्न करि कै गए तब श्रीगुसांईजी हमारे ऊपर अप्रसन्न भए। तातें जब तुम प्रसन्न होंइ कै हम कों बिदा करोगे तब ही हम जाइंगे। तब स्त्री–पुरुष ने कही, जो–तीन रात्रि तुम और हू हमारे पास रहो। तब तहां तीन रात्रि और हू चारों वैष्णव रहे। पाछें चौथे दिन राजभोग की आर्ति करि कै दरसन करि कै चारों वैष्णव महाप्रसाद लिये। पाछें स्त्री–पुरुष चारों वैष्णव कै पास आए। तब चारों वैष्णवन ने बिदा माँगी। तब स्त्री–पुरुष यथासक्ति श्रीगुसांईजी कों भेंट दै कै कहे, जो–सब बालकन सहित दंडवत् हमारी श्रीगुसांईजी कों करियो। समस्त वैष्णव कों भगवद् स्मरन करियो। और तुम कृपा करि कै फेरि बेगि ही आईयो। पाछें दोई जनें पहोंचावन कों चले। सो आगरे के द्वार लों आए। तब चारों वैष्णवन ने बोहोत बिनती करी। पाछें दोऊ वैष्णव स्त्री–पुरुष की बिदा कीनी। तब दोऊ जनें अपने घर आए। वे चारों वैष्णव श्रीगोकुल कों चले। सो ऐसें भगवद् रसमें छके, जो–गेल में चल्यो नहीं जाँइ। सो बारह दिन में श्रीगोकुल उत्थापन के समय आए। ता समै श्रीगुसांईजी आप पोढि उठि कै गादी–तकिया ऊपर बिराजे हते। सो चारों वैष्णव कों दूरि तें श्रीगुसांईजी ने भगवद्रस में मगन

आवत देखें। तब चाचा हरिवंसजी सों श्रीगुसांईजी ने कही, जो–चाचाजी ! अब इन चारोंन कों वैष्णवन कौ संग भयो। पाछें चारों जनें आइ श्रीगुसांईजी के चरनकमल कों दंडवत् करि बिनती किये, जो–महाराजाधिराज ! जो–आप आज्ञा करे हते वैसेई दोऊ हैं। हम अज्ञान करि बाहिर की क्रिया देखि कै वैष्णव कौ अपराध किये। ता करि कै आप हू हम ऊपर अप्रसन्न भए। और उन स्त्री–पुरुष के ठाकुर श्रीमदनमोहनजी हू अप्रसन्न होंइ कै हम कों दरसन न दिये। पाछें वैष्णव प्रसन्न भए तब श्रीठाकुरजी हू प्रसन्न भए और आप हू प्रसन्न भए। सो आप की कृपा तें ऐसें वैष्णव कौ दरसन भयो। यह सुनि कै श्रीगुसांईजी कहे, जो–वे स्त्री–पुरुष बोहोत आछी भांति सेवा करत हैं। उन के मन में लौकिकावेस एक दिन हू नाहीं आवत है। सदा भगवद् भाव में मगन रहत हैं। सो उन हू कों हरिवंसजी के संग तें ऐसी अनन्यता दृढ भई है। सौ वैष्णव के संग बिना मार्ग हृदयारूढ न होंइ। या प्रकार श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें उन स्त्री–पुरुष की बोहोत ही सराहना किये। सो वे स्त्री–पुरुष परम भगवदीय हुते। और वह सेठ हू श्रीगुसांईजी कौ कृपापात्र हतो। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए। ॥ वार्ता ५२ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक रजपूत गरासिया, कांठे कौ, ताकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश– ये तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'केलिनी' है। ये पुलिंदिनी के यूथ में हैं। 'मनआतुरी' तें प्रगटी हैं। तातें इन के भावरूप हैं। और 'केलिनी' की एक सखी हैं। ताकौ नाम 'रामा' है। सो वह रजपूत की स्त्री भई।

सो ये मही नदी के कांठे एक गाम हतो तहां रजपूत गरासिया के जन्म्यो। सो वह गरासिया

वहां के राजा कौ हांसिल उघावतो। सो बेटा बरस अठारह कौ भयो तब वह गरासिया मर्‌यो। पाछें राजा ने याकौ वा काम पै राख्यो। सो ये हांसिल उघावतो।

वार्ता प्रसंग – १

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप परदेस कों पधारत हते। सो मार्ग में एक गाम आयो। सो तहां आप उतरे हे। और यह रजपूत वा गाम में राजा कौ हांसिल बाकी लैनो हतो सो राजरीति सों लेत हतो। सो वा समै श्रीगुसांईजी आप वाहनि में बिराजे। सो पधारत हते। सो वा रजपूत कों श्रीगुसांईजी के साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम के दरसन भए। तब वह रजपूत श्रीगुसांईजी के समीप आय कै साष्टांग दंडवत् कीनी, और बिनती करी, जो –महाराजाधिराज ! हों तो महा अपराधी हूं। महा पतित हूं। लोगन कों सताय कै हांसिल लेत हों। तासों यह बिनती करत हों। सो हों आप कौ गुलाम हूं। ताकों कृपा करि कै दरसन तो दिये। अब अनुग्रह करि कै मेरो अंगीकार करो। मैं दासानुदास हूं। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–तुम तो लेहनो लेत हो। तब वा रजपूत ने बिनती कीनी, जो–महाराजाधिराज ! अब लेहनो कैसो ? अब अंगीकार करो। और कृपा करि कै गुलाम के गाम पधारिए। तब वा रजपूत की बोहोत ही दैन्यता देखि श्रीगुसांईजी वा रजपूत कों नाम सुनायो। निवेदन करवायो। सो तब वा रजपूत ने साष्टांग दंडवत् करि कै और बिनती करी, जो–महाराजाधिराज ! अब ऐसो उपाय बताईये जासों इहां मन लागे। तब श्रीगुसांईजी वाके माथे कृपा करि लालजी कौ स्वरूप और अपने दोऊ चरन कुमकुम सों छापि वस्त्र पधराए। सो वह रजपूत आप के अनुग्रह तैं सेवा भलीभांति सों करन

लाग्यो। तब वाके घर के गाम के सब सेवक भए। और सेवा की रीति, मार्ग की रीति सब वाकों बताई। पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां तें विजय किये। तब वा रजपूत ने भेंट बोहोतसी कीनी। सो गाम के कोस एक तांई पहोंचावन आए। और यह बिनती कीनी, जो–जैसो दरसन दियो है सो तैसेई कृपा करि कै फेरि बेगि दरसन देउंगे, राज ! पाछें श्रीगुसांईजी उहांतें कछूक दिनन में श्रीगोकुल पधारे।

वार्ता प्रसंग – २

और एक दिन श्रीगुसांईजी दांत कुचरते हे। सो दांतन मे तें एक ज्वारि कौ बुबला निकस्यो। सो ता समैं चाचा हरिवंसजी ठाढ़े हते। तब चाचा हरिवंसजी ने श्रीगुसांईजी सों पूछ्यो, जो–राज ! यह कहा है ? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा आप किये, जो–अमूके देस में एक रजपूत वैष्णव है, तानें ज्वारि के पकें भोग धरे हैं। ताकौ बुबला है। तब चाचा हरिवंसजी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराजाधिराज ! ऐसो कहा समर्प्यो है सो दांतन में उरझ्यो है ? तब श्रीगुसांईजी आप चाचा हरिवंसजी सों कही, जो–जाँई कै देखि आवो। तब चाचा हरिवंसजी श्रीगोकुल तें चले। सो थोरेसेक दिनन में जाँइ पहोंचे। तब वा गाम में गये तो रजपूत वैष्णवने सुनी, जो–श्रीगुसांईजी के परम कृपापात्र बड़े भगवदीय हरिवंसजी पधारे हैं। तब वह रजपूत हरिवंसजी कों अपने घर लै गयो। बड़े सन्मान सों आछी जगे में उतारे। पाछें हाथ जोरि कै साम्हें ठाढ़ो भयो। और बिनती करे, जो–धन्य मेरो भाग्य ! जो आप

को पधारनो भयो । तब हरिवंसजी ने पूछ्यो, जो–तुम्हारे श्रीठाकुरजी कौ कहा समै है ? तब वा रजपूत ने कह्यो, जो–राजभोग आयो है। तब हरिवंसजी ने पूछी, जो–रसोई कौन करे, भोग कौन समर्पे हैं ? तब वा रजपूत ने कही, जो–स्त्री रसोई करे है। भोग समर्पे है। आप चलो देखो। अपने मार्ग की रीति सों धरे हैं। तब हरिवंसजी वाके श्रीठाकुरजी के मंदिर में गए। टेरा सरकाय कै देख्यो। तब वा रजपूत ने हू देख्यो। सो देखे तो श्रीठाकुरजी उलंबि कै भोजन करे हैं। सो चौकी दूर हती। तब वह रजपूत पांचों कपरा पहेरें ठाढ़ो हतो। सो मंदिर में जाँइ कै चौकी सरकाई। तब यह हरिवंसजी देखि कै चुप व्है रहे। सो कछू कह्यो नाहीं। सो पाछें भोग सरायो। तब वा रजपूत ने हरिवंसजी सों कही। जो–महाप्रसाद लेहु। तब हरिवंसजी ने कह्यो, जो– मैं तो मेरे हाथ सों करि कै लेत हों। काहेतें, जो तहां आचार नाहीं देख्यो। और कपरा पहेरे हाथ धोए नाहीं। चौकी ऐसेंई सरकाई। पाछें यह हरिवंसजी के आगें सीधो ल्याय धर्‌यो। जो–सब रसोई की त्यारी करि दई। तब वा रजपूत नें कही, जो–तुम रसोई करो और महाप्रसाद लेहुगे ता पीछे हम लेइंगे। तब तो हरिवंसजी तत्काल न्हाय कै रसोई करि, भोग धरि, भोग सराय कै महाप्रसाद लियो। पाछें रजपूत स्त्री–पुरुष दोऊ जनेंन महाप्रसाद लियो। पाछें हरिवंसजी वा रजपूत सों पूछे, जो–अमूके महिना में अमूके दिन तुमने श्रीठाकुरजी कों कहा समर्प्यो हतो ? और नित्य तें अधिक कहा सामग्री धरी ही ? तब उनन कही, जो–जब यह ज्वारि के पेंक धरे हे। तब चाचा

हरिवंसजी सुनि कै चुप व्है रहे। ता पाछें हरिवंसजी वा राजपूत सों बिदा होंइ कै चले। तब वा रजपूत ने श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् करि कै कहाई। और भेंट पठाई। श्रीगुसांईजी कों श्रीगोवर्द्धननाथजी कों। पाछें चाचा हरिवंसजी कों आछी रीति सों बिदाय किये। सो थोरेसेक दिनन में श्रीगोकुल आए। तब श्रीगुसांईजी आप के पास बैठक में गए। सो दरसन किये, दंडवत् करी। तब वा वैष्णव रजपूत ने भेंट पठाई ही, सो भंडारी कों सोंपी। तब वह श्रीगोवर्द्धननाथजी की भेंट न्यारी धराई। सो वा रजपूत वैष्णव की ओर तें दंडवत् करी। तब तहां श्रीगुसांईजी आपने चाचा हरिवंसजी सों पूछी जो–तुमने वह रजपूत देख्यो ? तब हरिवंसजी कह्यो, जो–महाराज ! देख्यो। परि वाके इहां महाप्रसाद तो नहीं लीनो। और आचार कछू देख्यो नाहीं। तातें नहीं लीनों। तब श्रीगुसांईजी आप हरिवंसजी सों आज्ञा किये, जो–तुम वा वैष्णव रजपूत के घर आचार देखिवे कों गए हे सो देखि आए। परि और हू कछू तुमने देख्यो ? और वाकौ स्नेह वात्सल्यता तो नहीं देख्यो। और यह आचार देख्यो। परि हम कों तो वैष्णव कों प्रेम प्रीति है और मनकी दैन्यता है सो देखनी है। वाकी कृति सों कहा काम है ?

भावप्रकाश – यामें यह जतायो, जो–पुष्टिमार्ग में प्रभु जीव की कृति देखत नाहीं। क्यों, जो–स्नेह सों प्रभु बस होत हैं। जहां स्नेह होई तहां कृति कौ प्रयोजन नाहीं। पुष्टिमार्ग में प्रमेयबल तें प्रभु आप जीव कौ उद्धार करत हैं। सो श्रीगुसांईजी विज्ञप्ति में आज्ञा करत हैं, सो श्लोक –

'क्रियान्पूर्व जीव स्तदुचितकृतिश्चापि कियती भवान् यत्सापेक्षो निजचरणदाने बत भवेत।'

जासों वैष्णव के हृदय को स्नेह सर्वोपरी है। स्नेह बिना कृति फलित होत नाहीं।

सो इह वैष्णव कों वैष्णव ऊपर ममत्व चहिए। और तहां वैष्णव के ऊपर लगन देखनी है। सो इह वाने कपड़ा पहिरे मंदिर में चौकी सरकाई। परि श्रीगोवर्द्धननाथजी आप तो प्रीति सों अरोगे। सो यह आचार नहीं देख्यो। सो आगें भगवदीय गाये हैं।

भजी सखी भाव–भाविक देव।

कोटि साधन करो कोऊ तौऊ न मानै सेव।

धुम्रकेतु–कुमार मांग्यो, कौन मारग प्रीति।

पुरुष तें त्रिय–भाव उपन्यो, सबै उलटी रीत।

बसन–भूषन पलट पहिरे, भाव सौं संजोइ।

उलटि मुद्रा दई अंकन, बरन सूधे होइ।

वेद विधि कौ नेम नहीं, जहां प्रेम की पहचान।

ब्रजबधू बस किये मोहन, 'सूर' चतुर सुजान।

सो उहां कृति नहीं देखी है। तातें वैष्णव की कृति न देखनी। यह श्रीजी की कृपा कौ लक्षन है। सो श्रीगुसांईजी आप चाचा हरिवंसजी कों समुझाई कै कहे।

सो वह रजपूत श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। जाकी श्रीगुसांईजी सराहना करते। श्रीठाकुरजी आप हू वाकों अनुभव जतावते। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥ ५३ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक पटेल कुनबी, गुजरात कौ बासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश – ये 'सात्विक' भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'अंगुरी' है। ये 'मनुआतुरी' तें प्रगटी हैं य तातें इन के भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग – १

सो एक समै श्रीगुसांईजी श्रीरनछोरजी के दरसन कों द्वारिकाजी पधारे हे। तहां मार्ग में यह पटेल कुनबी सेवक भयो हतो। सो श्रीगुसांईजी के दरसन भए बोहोत दिन भए हते। तासों या पटेल ने बिचार कर्‌यो, जो–श्रीगुसांईजी के दरसन कों श्रीगोकुल जानो। सो यह अकिंचन हतो।

सो एक समै एक साथ श्रीगोवर्द्धननाथजी तथा श्रीगुसांईजी के दरसन कों गुजरात तें चल्यो। सो ता साथ में बड़े बड़े द्रव्यपात्र चले। सो यह पटेल हू ता साथ में चल्यो। सो काहू के साथ टहल करत अपनो पेट भरत आवत हतो। सो वा पटेल (कों) चाकरी सों छुराइ दीनो। तब वह पटेल नें अपने मन में बिचार कियो। जो–अब तो श्रीगोवर्द्धननाथजी के श्रीगुसांईजी दरसन करि कै जाउंगो घर कों। अब पाछें कौन फिरे ? यह निर्द्धार करि कै वह वैष्णव वाही साथ में चल्यो। पाछें जब मजलि दोइ श्रीनाथजीद्वार रह्यो तब वा वैष्णव कों ज्वर आयो। सो वह एक मजलि तो हरें हरें सांझ परत आयो पहोंच्यो। पाछें मजलि एक जब श्रीनाथजीद्वार रह्यो तब वा पटेल ने अपने संग के वैष्णवन सों कह्यो, जो–भाई ! काल्हि मोकों कोई गाड़ी ऊपर चढाय कै लै चले तो हों तुम्हारे प्रताप तें श्रीगोव– र्द्धननाथजी के दरसन पाऊं। तब वे तो सब द्रव्यपात्र हुते । सो द्रव्य के मद में काहू ने याकी बात मानी नाहीं। तब यह सगरेन

कों कहि कै चुप करि कै बैठि रह्यो। ता पाछें याकों तो चारि प्रहर रात्रि यह सोच मन में भयो, जो–मेरी देह की तो यह विवस्था है। और काल्हि कैसें मोकों श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन होंइगे ? यों चित्त में बोहोत ताप भयो। सो याकौ ताप श्रीगोवर्द्धननाथजी आप सहि न सके। तब वाही समै श्रीगोवर्द्धननाथजी ने श्रीगुसांईजी सों आय कै सब समाचार कहे। और श्रीगोवर्द्धननाथजी ने श्रीगुसांईजी सों कही, जो–अमूके गाम यह साथ है। तहां यह गाड़ी याही समै पठाईयो। और इन वैष्णव कों संध्या–आर्ति समै एक दिन दरसन कराइयो। गाड़ीवान सों यह कहि दीजियो, जो–वाही पटेल कों अकेलो गाड़ी ऊपर चढावें और कों नाहीं। यह श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगुसांईजी कों कहि कै मंदिर में पधारे। तब श्रीगुसांईजी उठि कै देखे, तो रात्रि घरि चारि अथवा पांच पिछली बाकी है। तब श्रीगुसांईजी अपनी खासा गाड़ी मँगाये। वाकों सर्व समाचार समुझाय कै कहें। और कहें, जो–वा संग तें वह पटेल प्रथम इहां आवे। सो वा गाड़ीवान नें गाड़ी बेगि चलाई। सो सवेरो होत में वा गाड़ी संग में जाँइ पहोंची। तब वे सगरे साथ के दांतन करत हते। तिनसों गाड़ीवान ने पूछ्यो, जो–अमूको पटेल कहां है ? तब तो वे सगरे साथ के वा गाड़ीवान के बचन सुनि कै अति आश्चर्यवंत होंइ रहे। जो–भाई ! वा ऊपर तो श्रीगुसांईजी बड़ी कृपा करी हैं। जो–आप वाकों गाड़ी में बैठाय कै बुलावत हैं। तासों अब वह पटेल काहू भांति अपनी गाड़ी में बैठे तो आछी बात होंई। वह तो आपुन के पास आयो हतो। परि आपुन कोई याकी बात मानी

नाहीं। और यह पटेल जो–कछू आपुन की श्रीगुसांईजी आगें कहेगो तो आपुन ऊपर श्रीगुसांईजी रिस करेंगे। तातें अब तो याकों अपने साथ ही गाड़ी में बैठाय लै जानो। यह सगरे साथ के सोच करत ही रहे। इतने वा गाड़ीवान ने वा पटेल कों पुकार्‌यो। तब वह पटेल उठि कै आयो। तब गाड़ीवान ने वा पटेल सों कह्यो, जो–या गाड़ी पर तू बेगि आऊ, अवेर होइगी। तोकों श्रीगुसांईजी बेगि बेगी बुलाए हैं। तोकों प्रभु अपनी खासा गाड़ी असवारी की पठाई है। सो घरी चारि में इहां आयो हूं। तासों हों तोकों घरि चारि में सगरे साथ के पहिले दरसन श्रीगोवर्द्धननाथजी के कराउंगो। तातें तू बेगि असवार होंई। तब वह पटेल कों प्रभुन की अतुल कृपा जानि रोमांच होंइ आयो। ता पाछें दंडवत् करि कै वा गाड़ी ऊपर असवार भयो। इतने ही गाड़ी चलाई। सो और सगरे मोहों धोवत रहे और देखत रहे। और यह पटेल तो गाड़ी में बैठि कै पवन के बेग सों चल्यो। सो श्रीनाथजी के सिंगार समै आय पहोंच्यो। तब वा गाड़ीवान ने खबर कराई, जो–महाराज ! अमूको पटेल मंदिर की तिवारी में ठाढ़ो है। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगुसांईजी परस्पर मुसिकाइ कै बोहोत प्रसन्न भये। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो–याकों याही समै दरसन करावो। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–यह मर्यादा तो नाहीं। ता ऊपर आज्ञा होंइ आप की सो हम कों करनो। तब श्रीगुसांईजी के बचन सुनि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी चुप करि रहे।

भावप्रकाश– काहेतें, जो–याकों सख्यभक्ति कौ दान श्रीगोवर्द्धननाथजी आप कियो नाहीं।

सो सख्यता बिना सिंगार होत समै काहूकों दरसन न होंई। यह मार्ग की मर्यादा है।

ता पाछें सिंगार जब होंइ रह्यो तब सगरेन के पहिले याकों दरसन भयो।

ता पाछें सिंगार के किवाड़ खुले। पाछें वह वैष्णव श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि अति आनंद पायो। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी कों गोपीवल्लभ भोग धरि कै श्रीगुसांईजी बाहिर पधारे। तब वा पटेल कों बाहिर निकट बुलायो। तब वह पटेल दंडवत् करि कै ठाढ़ो रह्यो। सो अति आनंद कौ आवेस वा पटेल के मन में प्रभुन की कृपा तें आयो। सो वह मुग्ध सो ठाढ़ो होंइ रह्यो। वाकी देह में प्रान रंचक के से रहि गए। तब वाकी दसा प्रभुन जानी। तब एक लोटी जल मँगाय कै रामदासजी भीतरिया सों कहे, जो–तुम छुवाय कै याकों बेगो चरनोदक देऊ। नाँतरु याकी अब ही देह छुटत हैं। तब श्रीगुसांईजी कौ चरनोदक रामदासजी छुवाय के दिये। ता पाछें श्रीगुसांईजी एक अंजुली जल हाथ में लै अष्टाक्षर पढ़ि कै वा पटेल ऊपर छिरक्यो। तब तो वह पटेल सावधान भयो।

भावप्रकाश–सो या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो–चरन हैं सो सीतल भक्ति है। तातें चरनोदक लिये तें स्वास्थ्यता प्राप्त होत है। और अष्टाक्षर सरन भाव कौ देनहारो है। सो हू चित्त कों स्थिर करत है। तातें या पटेल वैष्णव कों इन दोऊन तें स्वास्थ्य प्राप्त भयो। नाँतरू अति आनंद करि अस्वास्थ्यता में याकी देह छूट जाती। यह भाव जतायो।

पाछें श्रीगुसांईजी वाकों सर्व समाचार पूछे। जो–पटेल ! तुम कहां हते ? तब पटेल ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! आप तो पाग बांधत हते। और मैं आप की पाग लिये बंधावत हतो। सो आप के दरसन मोकों कोटी

कंदर्पलावन्य रूप सों भए। श्रीनाथजी के स्वरूप सों आपने कृपा करि दरसन दिये। तब श्रीगुसांईजी यह बात सुनि कै बोहोत ही प्रसन्न भए।

ता पाछें श्रीगुसांईजी सिंघपोरि के पोरिया सों कहे, जो–आज गुजरात कौ संग आवत है। तामें सों कोऊ पर्वत ऊपर चढन न पावे। ता पाछें राजभोग समै सब साथ आयो। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों पर्वत ऊपर चढन लाग्यो। तब सिंघपोरि के पोरिया ने वाकों कोई कों चढन न दिये। तब वे सगरे आपुस में कहन लागे, जो–या पटेल ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो है तासों आपुन कों यह पोरि भीतर जान देत नाहीं। ता पाछें वा पटेल ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज! यह साथ आयो है। ताकों यह पोरिया भीतर नाहीं आवन देत हैं। तब श्रीगुसांईजी वा पटेल के बचन सुनि कै चुप व्है रहे। ता पाछें राजभोग–आर्ति भई तहां लों वा साथ के वैष्णव श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन न पाये। ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजी कों अनोसर करवाय कै पर्वत तें नीचे पधारि कै अपनी बेठक में पधारे। तब वे सब वैष्णव श्रीगुसांईजी की बैठक में आय बिनती करे, जो–महाराज! हम कहा अपराध कर्‍यो है? जो–श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन न पाए। तब एक बार तो उन की बिनती सुनि कै श्रीगुसांईजी चुप करि रहे। ता पाछें घरी दोइ कों फिर उनन श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज! हमारो अपराध कृपा करि कै कहिए। तब उन सों श्रीगुसांईजी कृपा करि कै कहे, जो–तुम्हारो अपराध कहा है सो

तुम जानत ही हो। जो–हम सों कहा पूछत हो ? तुम सगरे लक्ष्मी मदांध हो । परि श्रीगोवर्द्धननाथजी तो करुना निधान हैं । दीनबंधु हैं । तासों तुमकों आज श्रीगोवर्द्धननाथजी संध्या–आर्ति के समै दरसन देइंगे। सवारे तुम कोउ दरसन कों आईयो मति। और तुम आये तब सों वा पटेल ने तुम्हारी बिनती दोइ बेर करी मोसों । परि हों कहा करों ? मोकों श्रीगोवर्द्धननाथजी की यह आज्ञा है तासों तुमको दरसन न भयो। तब सगरे वैष्णव श्रीगुसांईजी के श्रीगोवर्द्धननाथजी के श्रीमुख के बचन सुनि कै आपुने जन्मकों धिकः धिकः करन लागे। ता पाछें श्रीगुसांईजी भोजन कों पधारे। ता पाछें उन वैष्णवन वा पटेल सों कहे, जो–भाई ! तू हमारी बिनती श्रीगुसांईजी सों करे तो हम कछूक दिन श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करन पावें। तब वा वैष्णव सों पटेल ने कह्यो, जो–हां ! में तुम्हारे आगें श्रीगुसांईजी सों बिनती करूंगो। पाछें आप प्रभु हैं, माने सो सही। पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करि कै बैठके में पधारे। तब वा पटेल ने उन की ओर सों बिनती करी। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–यह सामर्थ मेरी तो नाहीं। प्रभु चाहें ताकों दरसन देहि। न चाहे ताकों न देहि। याकों हों कहां करों ? अब तो मोकों श्रीगोवर्द्धननाथजी की यह आज्ञा भई है। ता पाछें और हू पूछि कै हों सांझ कों याकौ प्रतिउत्तर देऊंगो । तब वैष्णवन जानी, जो–यह सर्व कारन श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ है। याने तो कछू अपनी चुगली करी नाहीं। ता पाछें वह वैष्णव सब 'रुद्रकुंड' ऊपर डेरा किये। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी के संखनाद भये। तब सगरे आये कै द्वारे

ठाढ़े रहे। परि दरसन सो न पाए। याही प्रकार भोग के हू दरसन भए। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी कों श्रीगुसांईजी संध्याभोग धरे। ता समै पूछे, जो–बावा! अब वे दरसन कों आवे? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगुसांईजी सों कहे, जो– आजु तो दरसन देहुंगो परि और दिन तो उन कों दरसन न होइगो। तब श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजी सों अति हठ कर्‌यो। जो–महाराज! जीव हैं। आप इतनी मन में क्यों बिचारत हो? तब श्रीगुसांईजी की बिनती सुनि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी दिन तीन की आज्ञा दिये। ता पाछें श्रीगुसांईजी जब और बिनती करन लागे तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगुसांईजी सों कहे, जो–अब तुम मोकों बिनती करोगे तो हों मानोंगो नाहीं। तासों आपु कछू अब मोकों कहो मति। तब श्रीगुसांईजी चुप करि रहे। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी कों भोग धरि कै बाहिर पधारे। तब वाही पटेल सों उन वैष्णवन कों बाहिर सों बुलाए।

ता पाछें वह पटेल इन कों लिवाय कै अपने साथ भीतर लै गयो। तब वे नाना भांति सों श्रीगोवर्द्धननाथजी कों दंडवत् करे। ता पाछें समय भयो तब श्रीगुसांईजी भोग सरावन पधारे। ता पाछें भोग सराय कै किवाड़ खोले। तब इन सबन वा पटेल कों आगें लै कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करे। पाछें दरसन करि कै अति आनंद पाए। ता पाछें दरसन करि कै सगरे पर्वत तें नीचे उतरे। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजी कों सयन कराय कै पर्वत तें नीचे उतरि अपनी बैठक में बिराजे। तब वे सब वैष्णव श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि बैठे। तब श्रीगुसांईजी

उन वैष्णवन सों कहे, जो–अति हठ हम कियो तब श्री–गोवर्द्धननाथजी यह आज्ञा करे, जो–इन कों तीन दिन दरसन कराइयो। ता पाछें फेरि हम कछू कहिवे कौ बिचार कर्‌यो इतने ही हमकों श्रीगोवर्द्धननाथजी बरजे। जो–अब हों तुम्हारो कह्यो मानोंगो नाहीं तासों हम चुप करि रहे। ता पाछें उन वैष्णवन सों श्रीगुसांईजी यह कहे, जो–अब तुम तीन दिन दरसन करि कै जहां जानो होंइ तहां चलियो। परि इहां दरसन कौ हठ मति करियो। और हू उन कों श्रीगुसांईजी यह उपदेस दियो, जो–आज पाछें वैष्णव कहे सो बचन मान्यो करियो। और वैष्णव कौ तिरस्कार मति करियो। प्रभु द्रव्य सों (जैसें) प्रसन्न न होंई तैसें वैष्णव की सेवा सों प्रसन्न होत हैं। वैष्णव कों चाकर करि कै न जानिए। ता पाछें वह वैष्णव सब वा पटेल के पाँवन परे।

भावप्रकाश–सो या वार्ता में यह जतायो, जो–वैष्णव कौ अपराध प्रभु सहन करि सकत नाहीं। और गुरु हू वैष्णव के अपराध कौ क्षमा करत नाहीं। तातें वैष्णव के अपराध तें सदा डरपत रहनो। और वैष्णव में दोष बुद्धि हू न करनी। नाँतरु प्रभु अप्रसन्न होत हैं।

सो वह वैष्णव पटेल श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कहां तांइ कहिए। वार्ता ॥ ५४ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक निहालचंदभाई, जलोटा क्षत्री, उज्जैनि के, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'मकरंदिनी' हैं। ये 'ध्रुवनंद' तें प्रगटी हैं। तातें इनके भावरूप हैं।

ये उज्जैनि में एक जलोटा क्षत्री के जन्में। सो वह क्षत्री पद्‌मारावल के घर के पास रहत हुतो। तातें बालपने तें निहालचंदभाई, कृष्णभट के संग रहते। जब कृष्णभट श्रीगुसांईजी के

सेवक भए तब ये हू सेवक भए हे। तब निहालचंदभाई श्रीगुसांईजी सों बिनती करि श्रीठाकुरजी की सेवा पधराई है।

वार्ता प्रसंग–१

सो उन निहालचंद भाई कों श्रीआचार्यजी के, श्रीगुसांईजी के ग्रंथ तथा श्रीसुबोधिनीजी में रुची बोहोत हती। तातें निहालचंद भाई और कृष्ण भट कौ बोहोत मिलाप रहेतो। सो कृष्ण भट ग्रंथ तथा कथा सुबोधिनीजी निहालचंद भाई कों अहर्निस सुनावते। ता पाछें वार्ता करते। या प्रकार दोऊ जनें वार्ता में छके रहते। सो श्रीठाकुरजी निहालचंद भाई कों सानुभावता बोहोत ही जनावते।

सो एक समै निहालचंद भाई उज्जैनि तें श्रीगोकुल कों आवत हते। सो निहालचंद भाई कों भूमिया पकरि लै गए। उन की वस्तू भूमिया सब लूटि लीनी। निहालचंद भाई कों अंधारे घर में दै राखे। तब वा भूमिया कों मुखिया ने कह्यो, जो–सवारे इन सगरेन कों खरच करि डारो। और रात्रि कों वह भूमिया आगें सोये। तब निहालचंद भाई के साथ एक वैष्णव और हतो। सो दोऊ जनेंन ने बिचार कर्‍यो। तब निहालचंद भाई ने वा वैष्णव सों कह्यो, जो–सोच कहा करत हो ? भीतर अंतःकरन में आनंद मानो। जो लिखी है सो मिटिवे की नाहीं। तातें यही अपने भागि में होइगी। तातें वृथा काहे कों खोवत हो ? तातें मन में आनंद मानि कै अपने भागि पर निर्द्धार (करि) प्रभुन कौ भजन करो। तब दोऊ जनें अति आनंद पाइ कै प्रभुन कौ कीर्तन करन लागे। सो भूमिया की महतारी वैष्णव हती। सो चाचाजी द्वारा

श्रीगुसांईजी की सेवक भई है। सो तिन ने इन के कीर्तन सुने। तब वा बाई ने अपनो एक मनुष्य पठायो। सो मनुष्य सों कहि दीनो, जो–तू इन दोऊन सों पूछि आऊ, जो–ये कौन हैं ? कौन के सेवक हैं ? सो वह बाई कौ मनुष्य इन पास आइ कै पूछ्यो, जो–तुम कौन के सेवक हो ? परि वा मनुष्य सों निहालचंद भाई ने कह्यो नाहीं। कीर्तन करिवो करे। कीर्तन के आवेस में कछु स्फुर्द न भई। सो कछु मनुष्य कौ जवाब दियो नाहीं। तब वह मनुष्य बड़ी बेर तांई ठाढ़ो रहि कै वा बाई के पास फिरि कै आयो। इन के समाचार कहे। जो–वे तो वैष्णव हैं, कीर्तन करत हैं। परि बोलत नाहीं है। तब वा बाईने अपने बेटा भूमिया सों कहि पठाई, जो–आज कौ साथ तुम लूटे हो तामें दोइ वैष्णव है। सो वे कीर्तन करत हैं। परि बोलत नाहीं। उन के गरे में माला हैं। उनकौ तू घात मति करियो। जो तू उन दोऊन कौ घात करेगो तो हों तेरे ऊपर मरूंगी। ता पाछें सवारो भयो तब वह मुखिया आइ बैठ्यौ। ता पाछें सगरेन कों वा घर में तें काढ़े। ता पाछें वाने इनके गरे में माला देखी। तब पहिचाने जो–ये वैष्णव हैं, तिन कों तो राखो। और अपने मनुष्यन कों वा भूमियाने कह्यो, जो–और इन सगरेन कों मारो। तब निहालचंदभाई ने वा भूमिया के मुखिया सों कह्यो, जो–पहिलें तो तुम मोकों मारो। ता पाछें इन सगरेन कों मारो। तब वा भूमिया के मुखियाने निहालचंद भाई सों कह्यो, जो–तुम दोऊ जनें तो वैष्णव हो, तासों तुम कों न मारेंगे। और साथकेन कों तो मारेंगे। तुम्हारे ये कहा लागत हैं ? तब निहालचंद भाई ने वा

भूमिया सों कही, जो–ये सब हमारे हैं। तातें ये हम कों लागते हैं। तातें तुम्हारे जो कछू करनो होंइ सो प्रथम हम सों करो। ता पाछें इन सगरेन कों मारियो। यह निहालचंद भाई कौ बोहोत ही आग्रह देखि मुखिया ने सगरेन कों जीवत छोरे। तब मुखिया ने निहालचंद भाई सों कह्यो, जो–कोई पुकारे ताकौ कहा करनो ? तब निहालचंद भाई ने कह्यो, जो–सबन के बदले तुम कों हम लिखि दैं, जो–हमारो कछु गयो नाहीं है। पाछें निहालचंद भाई ने वा भूमिया कों लिखि ता पाछें सगरे साथ कों निहालचंद भाई ने यह कहि दियो, जो–कोऊ काहू के आगें कहियो मति। सो या प्रकार कहि कै निहालचंद भाई ने सगरेन कों छुराए। तब वा संग के सगरे मनुष्य निहालचंद भाई सों कहे, जो–हम सगरे तुम्हारी कृपा तें जीवत छूटे। या प्रकार सगरेन ने निहालचंद भाई की बोहोत ही बिनती करी। ता पाछें वा भूमिया ने निहालचंद भाई और वा वैष्णव इन दोऊन की जो कछू बस्तू लीनी ही सो (वह) सब फेरि दैन लाग्यो। तब निहालचंद भाई वा भूमिया सों कहे, जो–सबन कों फेरि देहु तो मेरी ही फेरि देऊ। नाँतरु मेरी काहे कों फेरि देत हो ? तब वह भूमिया निहालचंद भाई के बचन सुनि कै बौहोत ही प्रसन्न भयो। ता पाछें सगरे साथ कौ जो कछू लीनो हतो सो सगरे साथ कों फेरि दियो। और एक बस्तू वा भूमिया ने इन दोऊन कों दीनी। और वा दिन सगरे साथ कों सीधो दै कै आछी भांति सों रसोई कराई। ता पाछें वा भूमिया ने अपने मनुष्य दै सगरे साथ कों सरे दगरा तांई तो पहोंचाय दियो। सो निहालचंदभाई ऐसें भगवदीय हे। जो–प्राणांत कष्ट आयो परि अपनो धर्म न बतायो।

भावप्रकाश–तातें या मार्ग कौ यह प्रकार है, जो–वैष्णव–धर्म गोप्य राखनो। और परोपकार जैसो कोई पदार्थ नाहीं। दूसरे कों जहां तांई होंइ सके प्रान दै कै हू बचावनो। यह वैष्णव कौ धर्म है।

ता पाछें वह साथ निहालचंद भाई के संग में श्रीगोकुल जाँइ श्रीगुसांईजी कौ सेवक भयो। और एक एक वस्त्र सगरेन अपने पास राखत भए। और सब श्रीगुसांईजी की भेंट करत भए। ता पाछें थोरो थोरो द्रव्य अपने नाम श्रीगुसांईजी के भंडार तें लै कै यह द्रव्य खात अपने देस में आए। पाछें द्रव्य की हुंडी कराय कै श्रीगोकुल भेजी। और श्रीगुसांईजी कों पत्र लिख्यौ। सो पत्र बाँचि कै श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न भए। वे निहालचंद भाई श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ ५५ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक ज्ञानचंद सेठ, आगरे में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'अनंगिनी' है। सो अनंगिनी 'ध्रुवनंद' तें प्रगटी हैं, तातें उन के भावरूप हैं।

ये ज्ञानचंद आगरे में एक बनिया के प्रगटे। सो वह बनिया बोहोत द्रव्यपात्र हुतो। सो सराफि की दुकान करतो, दास जनन में। परि वाके कोऊ संतति नाँय। सो वह बोहोत दुःख पावे। तब काहू ने वा बनिया सों कह्यो, जो–तुम अपने घर एक सदाव्रत खोलो। तो काहू साधु बैरागिन की कृपा सों तुम्हारें संतति होंई। तब वाने अपने घर सदाव्रत खोल्यो। सो ब्राह्मन, साधु, वैरागी, बिरक्त जो कोऊ आगरे में आवें सो वा बनिया के उहां तें सदाव्रत पावे। सीधो सामान जो चहिए सो सब वह बनिया देतो, अपने हाथ सों। ऐसें करत कछूक दिन में वा बनिया के एक बेटा भयो। सो वाकौ नाम वानें ज्ञानचंद धर्‌यो।

सो ज्ञानचंद बरस चौदह के भए। तब वा बनिया नें इनकौ ब्याह कियो। पाछें केतेक दिन में ज्ञानचंद के माता–पिता मरे। ताके थोरे दिन पाछें इन की बहू मरी। सो ज्ञानचंद व्याकुल भए। सो ज्ञानचंद कौ मन कहूं लगे नाहीं। सो गाम में जहाँ कहूं कथा–वार्ता होंइ तहां जाँई। तब एक दिन काहू वैष्णव ने ज्ञानचंद सों कह्यो, जो–तुम संतदासजी के घर की कथा–वार्ता

सुनो तो तुम कों बोहोत आनंद होइगो। परि संतदासजी बल्लभी वैष्णव बिना और काहू कों अपने घर आवन देत नाहीं। तातें तुम बल्लभी वैष्णव होऊ तो यह जोग बने। तब ज्ञानचंद ने वा वैष्णव सों पूछ्यो, जो–बल्लभी वैष्णव कैंसे होंई ? तब वा वैष्णव ने कह्यो, जो–तुम श्रीगोकुल जाँइ श्रीगुसांईजी के सेवक होंइ बल्लभी वैष्णव होंऊ। तब ज्ञानचंद वा वैष्णव तें पूछे, जो–श्रीगुसांईजी कौन हैं ? तब वा वैष्णव ने कह्यो, जो–श्रीगुसांईजी साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं। श्रीगोकुल में बिराजत हैं। तब तो ज्ञानचंद कछूक खरची लै आगरे तें चले। सो श्रीगोकुल आए। तहां श्रीगुसांईजी के दरसन पाए। सो ता दिन श्रीगुसांईजी कौ जन्म दिवस हतो। सो ज्ञानचंद देखें तो जहाँ तहाँ श्रीगोकुल में आनंद बधाई होंई रही हैं। घरघर में बंदनवार तोरन बंधे हैं। सब सुहासिनी मिलि मंगलगीत गाय रही हैं। श्रीगुसांईजी आप केसरि–स्नान करि केसरी धोती–उपरेना श्रीहस्त तें धरत हैं। ताही समै ज्ञानचंद श्रीगुसांईजी कों दंडवत् किये। तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न व्है ज्ञानचंद की ओर देखें। ता पाछें ज्ञानचंद, सों कहे जो–ज्ञानचंद ! तू कब आगरे सों आयो ? सो श्रीगुसांईजी के बचन सुनि कै ज्ञानचंद आश्चर्यवंत होंइ रहे। और मन में बिचारे, जो–श्रीगुसांईजी ने तो मोकों कब हू देख्यो नाहीं। और मैं हू श्रीगुसांईजी के दरसन कबहू पाए नाहीं। और इन तो मेरो नाम लै कै पूछ्यो ! तातें कछू कारन दीसे हैं। पाछें ज्ञानचंद अपने मन में बिचार कियो, जो–ये साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं। इन बिना यह भेद कौन जानि सके ? पाछें ज्ञानचंद श्रीगुसांईजी सों बिनती कियो, जो–महाराज ! हों अब ही चल्यो आवत हूं। तब श्रीगुसांईजी हरिदास खवास के पास जल मँगाई अपनो चरनोदक ज्ञानचंद कों दियो। तब तो ज्ञानचंद कों सकल लीला सहित श्रीगुसांईजी के अलौकिक स्वरूप के दरसन भए। तब ज्ञानचंद श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! कृपा करि मोकों अपनो सेवक कीजिये। मैं बोहोत दिन सों बिछर्‍यो हूं सो आज राज के चरनारविंद प्राप्त भए हैं। तातें अब देरि मति कीजिये। बेग सरन लीजिए। तब श्रीगुसांईजी ज्ञानचंद की ऐसी आर्ति जानि उन कों नाम सुनायो। ता पाछें दूसरे दिन निवेदन करायो। सो ज्ञानचंद कों अपनो स्वरूप स्फुर्‍यो। तब ज्ञानचंद अति प्रसन्न भए। ता पाछें इन श्रीगुसांईजी की जन्म–लीला के दरसन किये हे, ताकों हृदय में धारन किये। सो ज्ञानचंद लीला में सदा मगन रहते। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप ज्ञानचंद कों श्रीआचार्यजी के ग्रंथ, अपने ग्रंथ जो हते सो सब ज्ञानचंद कों दिये। पाछें ज्ञानचंद कछूक दिन श्रीगोकुल रहे। ता पाछें श्रीगुसांईजी की आज्ञा माँगि अपने घर आगरे कों आए। सो ज्ञानचंद नित्यप्रति श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी के ग्रंथन कौ पाठ करे। और लीला–रस में मगन रहे।

वार्ता प्रसंग–१

सो जब श्रीगुसांईजी आप आगरे पधारते तब ज्ञानचंद के घर

उतरते। ऐसी कृपा श्रीगुसांईजी ज्ञानचंद के ऊपर करते। सो केतेक दिनन में ज्ञानचंद की देह असक्त भई। तब ज्ञानचंद कों भूमिसयन कराए। तब सगरे वैष्णव ज्ञानचंद के घर आए। तब उन सों ज्ञानचंद ने कह्यो, जो–तुम सगरे जो कोऊ आवत होऊ सौ सब कोई मो ऊपर कृपा करि कै भगवद् नाम कौ उच्चार करो। तब वे सगरे वैष्णव भगवद् नाम कौ उच्चार करन लागे। सो कोऊ 'पंचाध्याई', कोऊ 'बेनुगीत' कोऊ 'जुगलगीत' कोऊ 'गीतगोविंद' कोऊ 'कीर्तन' करे। या प्रकार सगरे वैष्णव भगवद् नाम कौ उच्चार करन लागे। सो ज्ञानचंद अति आनंद सों श्रवन करन लागे। ता पाछें जब अपनो समय निकट आयो तब ज्ञानचंद वैष्णवन सों कहे, जो–सुनो! एक समै श्रीगुसांईजी के जन्म दिन पर श्रीगुसांईजी केसरि–स्नान करि कै केसरी धोती–उपरेना श्रीहस्त तें धरत हे। ताही समै हों जाँइ दंडवत् कियो। तब प्रभुने जान्यो, जो–पाछें सों आयो है। तब श्रीगुसांईजी हरिदास सों जल मँगवाई कै चरनोदक दिये। और कृपा करि कै मोसों श्रीगुसांईजी पूछे, जो–ज्ञानचंद। तू कब आगरे सों आयो है? तब हों श्रीगुसांईजी सों बिनती कियो, जो–महाराज! अब ही चल्यो आवत हूं। ताही समै श्रीगुसांईजी कौ ज्ञानचंद ध्यान करि कै सगरे वैष्णवन सों श्रीकृष्ण–स्मरन करि कै तत्काल देह छोरे। सो वे ज्ञानचंद श्रीगुसांईजी के स्वरूप में ऐसें आसक्त हते। सो वे ज्ञानचंद नवीन देह धरि कै श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी कों जाँइ कै दंडवत् करी। तब श्रीगुसांईजी ने पूछी, जो–ज्ञानचंद! तू कब आयो? तब

ज्ञानचंद ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो–महाराज ! हों अभी आयो हूं। इतने में श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन खुले। तब ज्ञानचंद दरसन करि कै लीला में प्राप्त भए। सो वे ज्ञानचंद श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥५६॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक जदुनाथदास क्षत्री, धारु के चाकर, सो जोनपुर में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

वार्ता प्रसंग–१

ये धारु के (राजा के) चाकर हते। सो वे जोनपुर में रहत हते। सो जोनपुर में एक हाथी कौ हवालदार हतो। ताकी स्त्री बोहोत ही सुंदर रूपवंती हती। सो श्रीगुसांईजी की सेवकिनी हती। बड़ी भगवदीय हती। सो एक दिन जदुनाथ कहूँ जात हते। सो वा स्त्री कों जदुनाथ ने देख्यो। सो ता दिन तें वे जदुनाथ कों यह विस्मय पर्‌यो, जो–ऐसें हू लोग या धरती पर हैं ? ता पाछें वाकौ मुख देखे तब जदुनाथ जलपान करे। ऐसी वाकों वासों आसक्ति भई। सो वह स्त्री नित्य दांतन करत हती तहां एक मोखा हतो। ता मोखा साम्हनें ही जदुनाथ कौ घर हतो। सो नित्य वाकों दांतन करत समै देखतो। पाछें अपनो कामकाज करतो।

सो एक दिन वा स्त्रीनें जान्यो, जो–यह मो ऊपर ऐसो आसक्त है, तासों याकौ मन तो देखो। तब वह स्त्री एक दिन सोय कै अवारी उठी। सो जदुनाथ वा दिन वाकौ मुख सवारे देखन न

पायो। तब यह बोहोत ही दुःखित होंइ कै दरबार कौ समै भयो सो घोड़ो ऊपर चढि कै दरबार गयो। ता पाछें दरबार सों फिर्‍यो। तब जदुनाथ वा स्त्रीकों देखिवे कों वा स्त्रीके आगें आयो। तब वह तो सोई हती। सो खरे मध्याह्न कौ समै हतो। तब जदुनाथने अपनो घोड़ा तो अपने मनुष्य के साथ घर पठाय दियो। और जदुनाथ वा मनुष्य सों कहे, जो–तू तो रोटी करियो। हों तो पाछें सों आवत हूं। सो वह मनुष्य तो डेरा गयो। वह घोड़ा बांधि कै रसोई करि कै बड़ीबार लों इन की बाट देख्यो। पाछें वह खाँइ कै इन कों ढांपि सोय रह्यो। ता पाछें वह स्त्री सोय कै तीसरे प्रहर उठी। तब लोंडी ने वा स्त्री आगें पानी आनि धर्‍यो। सो वा दिन वह माथो मींडि कै न्हान बैठी। तब वाने अपनी लोंडी सों कह्यो। जो–तू देखि तो ठाढ़ी व्है कै मार्ग में कोई आवत जात तो नाहीं है ? तो हों बेगि न्हाय लेऊ। तब वह लोंडी याकों बड़ीबार कौ खड़ो देखि कै मुसकानी। तब वानें लोंडी सों पूछ्यो, जो–तू मुसिकानी काहे सों ? सो कहि। तब लोंडी वासों कहे, और तो कोई आवत जात नाहीं। परि वह दई कौ मार्‍यो तोकों देखिवे कों दोइ प्रहर कौ ठाढ़ो है। तब वा स्त्रीने लोंडी सों कही, जो–वह तो बावरो है, सो ठाढ़ो है। जैसो वाने अपनो मन मेरे में लगायो है तैसो वह परमेसुर में लगावे तो याकौ काम होंइ। मेरी देह में कहा विसेस है, जो–याने प्रीति बांधी है ? सो यह दोऊ जनें की बात जदुनाथने सुनी। ताही समै जदुनाथ वा लोंडी को बुलाई कै संदेसो पठावत भयो, जो–परमेसुर सों मिलेवे कौ उपाय अब तू ही बताउ।

भावप्रकाश– काहेतें, जो–ये दोऊ लीला के जीव हैं। सो जदुनाथ लीला में 'रूप–रसिका' है। सो प्रभुन के रूप में सदा मुग्ध रहत हैं। और यह स्त्री कौ नाम 'गज–गामिनी' है। सो इन की चालि हाथी की सी है। तातें श्रीठाकुरजी इन कों अपनी पास राखत हैं। इनकी चालि आप सिखत हैं। सो 'रूप–रसिका' श्रीठाकुरजी के मिलन के उपाइ 'गज–गामिनी' तें पूछति हैं। सो जा भांति 'गज–गामिनी' कहति हैं ताही भांति 'रूप–रसिका' प्रभुन के मिलन के उपाइ करत हैं। काहेतें, ये प्रभुन के रूप पर आसक्त हैं। तातें प्रभुन बिना क्षन एक रह्यो जात नाहीं। सो 'रूप–रसिका' श्रुतिरूपा के यूथ की हैं, ये ध्रुवनंद की बेटी हैं। उन ते प्रगटी हैं। तातें उन के तामस भावरूप हैं। और 'गज–गामिनी' हू 'श्रुतिरूपा' के यूथ की हैं। सो दोऊन में परस्पर प्रीति है। तातें यहां हू 'गज–गामिनी' तें 'रूप–रसिका' नें प्रभुन के मिलन कौ उपाइ पूछ्यो।

सो वा स्त्रीने कहि पठायो, जो–श्रीवल्लभकुल में श्रीविट्ठलनाथजी श्रीगुसांईजी प्रगट भए हैं। सो वे आप ही परमेसुर हैं। उन के पास जाँइ कै तू उन कौ सेवक होऊ। इतने बचन वाके, लोंडी ने जदुनाथ सों आइ कै कहे। तब जदुनाथ अपने डेरा आए। सगरे चाकरन कों महीना चुकाय दिये। और जो द्रव्य अपुने पास रह्यो, ताकी हुंडी कराइ लियो। और आप एक गुदरी कराइ तामें वह हुंडी धरि कै वैरागी कौ स्वरूप धरि कै चलै। तब जदुनाथ ने यह अपने मन में निर्द्धार कर्‌यो, जो–जब लों श्रीगुसांईजी के दरसन न पाऊंगो तब लों फलाहार करूंगो। जब जाँइ कै प्रभुन के दरसन करूंगो, उनके पास नाम पाऊंगो, तब जाँई कछू रसोई करि लेऊंगो। यह सत्य प्रतिज्ञा करि कै जदुनाथ अपने घर तें निकरे। सो जबही जोनपुर सों इह जदुनाथ चले इतनेई वैष्णव सब श्रीगुसांईजी के सेवक जात हते। सो श्रीगुसांईजी प्रथम ही बधैया गाममें पठाए हते। सो सगरे मिलि कै वैष्णव प्रभुन कों पधरावन जात हते। तिन कों

जदुनाथ सों भेंट भई। जो–तुम सगरे आज या समै कहां जात हो ? तब जदुनाथ सों उन वैष्णवन कही, जो–श्रीगुसांईजी इहां पधारे हैं। तिन कौ बधैया गाम में आयो हतो। तासों हम श्रीगुसांईजी कों पधरावन कों जात हैं। तब जदुनाथ ने कह्यो, जो–जिन कों तुम पधरायवे कों जात हो सो वे श्रीगुसांईजी कौन के कुल में प्रगटे हैं ? कौन के वे पुत्र हैं ? उन कौ नाम कहा है ? तब उन वैष्णव जदुनाथ सों कहे, जो–सुनि ! श्रीगुसांईजी श्रीवल्लभकुल में प्रगटे हैं। श्रीवल्लभाचार्यजी के पुत्र हैं। श्रीविट्ठलनाथजी उन कौ नाम है। तब जदुनाथ उन वैष्णवन के साथ अति उत्कंठा सों चले। सो श्रीगुसांईजी जोनपुर तें थोरी सी दूरि हते। सो रथ प्रभुन कौ आयो। सो देखि कै अति उत्कंठा सों जाँई कै प्रभुन कों प्रथम जदुनाथ ने साष्टांग दंडवत् कर्यो। और अति उत्कंठा सों जदुनाथ ने यह दोहा प्रभुन आगें पढ्यो। सो दोहा।

गिर्यो जो मनिया काँच कौ, गांठि हुतो 'जदुनाथ'।
सो ढूंढत बाहिर गयो, पर्यो पदारथ हाथ ॥

यह दोहा सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न भए। ता पाछें जदुनाथ ने सब समाचार प्रभुन आगें कहे। तब तो श्रीगुसांईजी वा ऊपर बोहोत ही प्रसन्न भए। ता पाछें श्रीगुसांईजी जोनपुर में पधारे। सो श्रीगुसांईजी एक वैष्णव के घर डेरा किये। तहांतें 'गोमती' नदी तीर्थ है, तहां स्नान करिवे कों पधारे। ता पाछें श्रीगुसांईजी स्नान करि कै बिराजै तब जदुनाथ ने प्रभुन सों बिनती करी, जो–महाराज ! अब मोकों आप अपुनो सेवक करो।

तब श्रीगुसांईजी ने जदुनाथ कों स्नान की आज्ञा दिये। तब जदुनाथ स्नान करि कै अपरस में ठाढ़ो रहि कै साष्टांग दंडवत् कर्‍यो। तब श्रगुसांईजी वा ऊपर कृपा करि कै नाम सुनायो। ता पाछें 'जदुनाथदास' (ऐसो) उन कौ श्रीगुसांईजी ने नाम धर्‍यो। ता पाछें वा जदुनाथदास की गांठि द्रव्य हुतो सो सब श्रीगुसांईजी कों जदुनाथदास ने वाही समै भेंट कर्‍यो।

ता पाछें वह श्रीगुसांईजी के साथ कितेक दिन कों श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों श्रीनाथजीद्वार आयो। तब जदुनाथदास श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि कै अति प्रसन्न भए। ता पाछें जदुनाथदास कछूक दिन श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा करि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी कों ऐसें प्रसन्न करे, जो–श्रीगोवर्द्धननाथजी जदुनाथदास सों थोरेई दिन में सानुभावता जनावन लागे। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कों जो चहियतो सो जदुनाथदास सों कहते। सो जदुनाथदास श्रीगुसांईजी आगें जाँइ कै कहते। जो–यह बस्तू श्रीगोवर्द्धननाथजी कों चहियत है। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कों श्रीगुसांईजी जदुनाथदास द्वारा समर्पावते। ताते श्रीगोवर्द्धननाथजी इन पर बोहोत ही प्रसन्न रहते। जदुनाथदास सो श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रत्यच्छ बातें करते। सो सर्व वार्ता जदुनाथदास श्रीगुसांईजी के आगें कहते। सो श्रीगुसांईजी जदुनाथदास के बचन सुनि कै बोहोत ही प्रसन्न होते। ता पाछें जदुनाथदास हू श्रीगुसांईजी कों प्रसन्न जानि कै आप हू अपने मन में बोहोत ही प्रसन्न रहते। और जो–कछू जदुनाथदास

श्रीगुसांईजी सों कहते, सो श्रीगुसांईजी करते। सो श्रीगुसांईजी जदुनाथदास के बचन सत्य करि मानते। और श्रीगोवर्द्धननाथज़ी की कृपा जदुनाथदास ऊपर हुती सो सब श्रीगुसांईजी जानते। और जदुनाथदास कहेते, जो "पर्‍यो पदारथ हाथ" सो ताकौ अनुभव श्रीगुसांईजी या प्रकार करवाए। वे जदुनाथदास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ ५७ ॥

भावप्रकाश–या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो–या मार्ग में आसक्ति मुख्य हैं। सो आसक्ति वारे कों प्रभु बेगि अंगीकार करत हैं।

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी पाथो गुजरी, आन्योर में रहती, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश–ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'चपला' हैं। सो चपला 'मन्मथमोदा' तें प्रगटी हैं तातें उनके भावरूप है। इन कौ श्रीठाकुरजी में बालभाव है।

ये भवनपुरा में एक गुजर के घर जन्मी। सो पाथो बरस दस की भई तब इन कौ ब्याह एक आन्योर के गुजर सों भयो। पाछें कछूक दिन में वाकौ गौना भयो। तब ये आन्योर में आई। तहां श्रीगुसांईजी तें नाम पायो। सो देवदमन में वाकी बालपने तें प्रीति बोहोत। सो नित्य दरसन कों जाँइ। सो वाकौ सुद्ध प्रेम देखि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी वा पर बोहोत कृपा करते। ता पाछें कछूक दिन में पाथो के दो बेटा भए।

सो पाथो के घर श्रीगोवर्द्धननाथजी पधारते। जो चहिए सो माँगि लेते। ऐसी कृपा श्रीगोवर्द्धननाथजी पाथो गुजरी पर करते। वा पाथो गुजरी के लरिकान के संग श्रीगोवर्द्धननाथजी आप खेलते। काहेतें? ये लीला में दोऊ गोप हैं। एक कौ नाम 'नरुआ' है। और दूसरे कौ 'गरुवा' है।

वार्ता प्रसंग–१

सो एक दिन वह पाथो गुजरी अपने बेटा कों दही–भात की छाक करि कै ल्याई। सो अपने घर तें वह बन कों जात हती। ता समै श्रीगोवर्द्धननाथजी गोविंदकुंड ऊपर पर्वत की छाया में

ठाढ़े हते। ता ठौर पाथो गुजरी छाक लै कै आइ निकसी। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ने वा पाथो गुजरी सों कह्यो, जो–अरी मैया ! यामें कहा है ? तब पाथो गुजरी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी सों कही, जो पूत ! यामें तो दही भात है। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी पाथो गुजरी सों कहे, जो–यामें यह छाक कौन कों लै जात है ? तब वा पाथो गुजरी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी सों कही, जो–मेरो बेटा सवारे ही बन में गयो है। सो घर में रोटी न हती तासों भूखो गयो है। ताकों हों छाक पहोंचावन चली जाति हूं। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ने पाथो गुजरी सों कह्यो, जो–मोकों भूख बोहोतही लागी है। तासों यह छाक तो तू मोसों दै जाँइ तो आछौ करे। तब पाथो गुजरी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी सों यह बचन कहे, जो–पूत ! मेरो बेटा भूखो होइंगा। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी वा पाथो सों कहे, जो–तू अपने बेटा कों घरमें हांडी में, और ओदन हैं सो लै जईयो। और यह तो मोकों परोसि जा। और में बोहोत ही भूखो हों। तब वा पाथो गुजरी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी सों कही, जो–लेहु तब श्रीगोवर्द्धननाथजी वा पाथो गुजरी सों कहे, जो–आऊ, मेरे थार में तू परोसि जा। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी के पाछें पाछें वह पाथो गुंजरी मंदिर में आई। सो देखे तो किवाड़ सब मंदिर के खुले हैं। पौरिया सोयो करे। तब पाथो आप मंदिर में गई। श्रीगोवर्द्धननाथजी आगें थार परोस्यो। ता पाछें श्रीगोवर्द्धन–नाथजी आरोगन लागे। और पाथो गुजरी तो तहां परोसि कै अपने घर आई।

भावप्रकाश – या वार्ता में बोहोत संदेह हैं, जो–बेटा के निमित्त की छाक कैसें आरोगे ? और अनोसर में पाथो कों श्रीगोवर्द्धननाथजी मंदिर में लै जाँइ कै वाके हाथ की छाक क्यों आरोगे ? यह तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के मारग की रीति नाहीं है। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी ऐसें कैसें किये ? तहां कहत हैं, जो–पाथो गुजरी और उन के बेटान कौ श्रीठाकुरजी तें साक्षात् सबंध भयो है। और ये ब्रजबासी हैं। तातें इन में भिन्न भाव श्रीगोवर्द्धननाथजी आप न राखते। सख्य भाव राखत हे। सो जैसें कृष्णावतार में ग्वाल–बालन की छाक लूटि कै खाते, जूठी हू खाते। तैसें ही यहां पाथो गुजरी के स्नेह–बस होंई श्रीगोवर्द्धननाथजी आप उनके संग वैसी ही लीला करते। और अनोसर में ब्रजभक्तन कों सेवा कौ अधिकार है। तातें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप अनोसर में पंखा आदि की सेवा न राखे। सो पाथो गुजरी ब्रजभक्त हैं। तातें उन कों यह अधिकार श्रीगोवर्द्धननाथजी आप दिये। तासों अनोसर में मंदिर में जाँइ कै वाके हाथ की छाक अरोगे। सो यह श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के मारग की रीति अनुसार जाननो। विपरीत नाहीं।

ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी आप दही–भात अरोगे। सो थार में श्रीगोवर्द्धननाथजी के श्रीहस्त की अंगुरिन की लकीर उपटी हैं। सो थार श्रीगोवर्द्धननाथजी आगें धर्‍यो रह्यो। और थोरो सो दही–भात हू थार में रह्यो हतो। सो उत्थापन के समै श्रीगुसांईजी स्नान करि कै पर्वत ऊपर चढि कै संखनाद करवाइ कै मंदिर में पधारे। सो श्रीगुसांईजी भीतर जाँइ कै देखे तो श्रीगोवर्द्ध–ननाथजी आगें थार धर्‍यो है। और अंगुरिन की लीक हू थार में उपटी हैं। सो देखि कै श्रीगुसांईजी ने ता बात कौ खेद कियो। सो प्रथम तो प्रभु रूपा पौरिया कों बुलाइ कै पूछे, जो–रूपा ! इहां कौन आयो हतो ? तब रूपा ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! इहां तो कोऊ नाहीं आयो। परि मोकों कछू निद्रा आइ गई। तब की तो नाहीं जानत हों। परि मेरे आगें तो कोऊ आयो गयो नाहीं। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी की बात श्रीगुसांईजी जानें। काहेतें, ? जो–रूपा कब हू सोवे नाहीं सो आज क्यों सोवे ?

तातें इह काम श्रीगोवर्द्धननाथजी कोई है । यह निर्द्धार श्रीगुसांईजी अपने मन में करे । तब श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्ध–ननाथजी सों पूछे, जो–बावा ! यह कौन पैं माँगि कै अरोगे हो ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगुसांईजी सों कहे, जो–आज यह –दही भात पाथो गुजरी सों माँगि कै अरोग्यो हूं । तब श्रीगुसांईजी चुप करि रहे ।

वार्ता प्रसंग – २

और एक समै श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों पाथो आई । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कों भोग आयो हतो । सो किवाड़ न खुले हते । ता समै पाथो दरसन कों आई । तब पाथो गुजरी श्रीगोवर्द्धननाथजी कों बाहिर तें उराहनों देन लागी । ये बचन पाथो गुजरी नें श्रीगोवर्द्धननाथजी सों कहे, जो–इहां तो अब तू राजा होंइ कै घर में बैठ्यो है । किवाड़ा दै कै आरोगत है । जो–कोऊ देखन न पावे । अब तेरे अति ठकुराई भई । तासों हमकों कौन भीतर जान दै ? ऐसो बचन पाथो गुजरी नें बोहोत ही कहि कहि श्रीगोवर्द्धननाथजी कों सुनाए । तब ताही समै मंदिर के किवाड़ खुलि गए । तब वह पाथो गुजरी श्रीगोवर्द्धननाथजी पास भीतर मंदिर में गई । ता दिन तें पाथो गुजरी दरसन कों आवें तब मुरक कै दरसन पावती । कोऊ पाथो गुजरी कों बरजतो नाहीं । वह पाथो गुजरी मंदिर में भीतर जाँइ कै दरसन करि कै आवती । वा पाथो गुजरी कों समै बेसमै की कछू अटक नाहीं । वह पाथो गुजरी कौ श्रीगोवर्द्धननाथजी सों ऐसो संबंध हतो ।

और जब श्रीगोवर्द्धननाथजी कुनवारा कौ भोग अरोगे तब श्रीगोवर्द्धननाथजी के इहां गायवे कों पाथो कौ सर्व कुटुंब आवे। उन पाथो गुजरी कौ नेग हो। सो यह पाथो की बात कहां तांई कहिए ? उन की बात वेई जानें। वह पाथो गुजरी श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ॥ ५८ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक धोबी, गोपालपुर में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश – ये तामस भक्त हैं। अन्तर्गृहगता में हैं। लीला में इन कौ नाम 'श्रीदेवी' है। ये 'मन्मथमोदा' से प्रगटी हैं। तातें उनके भावरूप हैं। सो एक समै चंद्रकला ने 'श्रीदेवी' तें कह्यो , जो–श्रीदेवी ! तू प्रभुन कों यह कहि आऊ, जो–श्रीचंद्रावलीजी आप कों याद करें हैं। सो बेगि पधारो। तब श्रीदेवी ने कह्यो, जो अभी तो मोकों मेरी मैया बुलावत हैं। तातें वहां जाऊंगी। तब चंद्रकला ने कह्यो, जो–श्रीठाकुरजी 'सौरभकुंज' में बिराजत हैं। सो कितेक दूरि है ? तत्काल कहि कै चली आऊ। और यह बीरा श्रीचंद्रावलीजी ने पठायो है सो श्रीठाकुरजी कों दीजो। तब श्रीदेवी बीरा लै कै चली। सो सौरभकुंज में आई। तब श्रीठाकुरजी कहे, अरी श्रीदेवी ! आज तू यहां कैसें आई ? तब श्रीदेवी कहे, महाराज ! आज मेरो मनोरथ पूरन करो। हों बोहोत दिन तें आप कौ भजन करति हों। सो मेरो ताप निवारन करिए। तब श्रीठाकुरजी मुसिकाए। सो श्रीदेवी जाने, जो–श्रीप्रभुजी मो पर प्रसन्न हैं। तातें वह बीरा आपुन खाँइ श्रीठाकुरजी कों आलिंगन करन लागी । सो इतनेई में चंद्रकला तहां आई। सो उनने यह बात देखी। सो श्रीदेवी ने जान्यो। सो डरपि कै न्यारी ठाढ़ी व्है रही। ता समै मुख की पीक श्रीठाकुरजी के वस्त्र पर परी। सो श्रीठाकुरजी अप्रसन्न भए। तब चंद्रकला ने सराप दियो, जो–श्रीदेवी ! तोकों मैनें कहा करिवे कों भेजी ही और तैनें यह कहा कियो ? उहां तो श्रीचंद्रावलीजी कों छिन छिन अधिक अधिक विरह होंइ रह्यो है। तामें तैनें यह विलंब कियो ? और छल कियो ? श्रीठाकुरजी के वस्त्र पैं पीक डारी। सो अब श्रीठाकुरजी कों वस्त्र पलटत में हू विलंब होइगो। सो तैनें अनुचित कार्य कियो। तातें तू हीन योनि में गिरि। तब तो श्रीदेवी कांपन लागी। पाछें वह चंद्रकला के पाँवन परी। तब चंद्रकला ने कह्यो, जो–प्रभु तेरो उद्धार करेंगे।

सो यह गांठौली में एक धोबी के जन्म्यो। सो बड़ो भयो तब गोपालपुर में रहिवे लाग्यो।

तहां श्रीगुसांईजी तें नाम पायो। पाछें श्रीनाथजी के वस्त्र धोयवे की सेवा करन लाग्यो। सो श्रीगुसांईजी वाकों नेग बांधि दियो।

वार्ता प्रसंग – १

सो वह धोबी श्रीगोवर्द्धननाथजी के वस्त्र धोवतो। सो बोहोत सावधानी सों धोवतो। सो एक समै श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारे हुते। तब एक दिन श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा सों पहोंचि कै ता पाछें भोजन करि कै पाछें गोविंदस्वामि की कदंबखंडी पांव धारे। ता पाछें वहां सों हरजी की पोखर पांव धारे। तब वह धोबी श्रीगोवर्द्धननाथजी के वस्त्र धोवते तें देख्यो। सो देखें तो वस्त्र बोहोत ही जतन सों घने घने प्रेम सो भाव सों धोवत हतो। परि सिला पर न पछांटे। तब देखि कै श्रीगुसांईजी ने वासों पूछ्यो, जो–तू ऐसें वस्त्र हाथ पर धोवत है सो काहेतें ? जो–सिला पर क्यों नहीं पछांटि कै धोवत है ? ऐसें पूछ्यो। तब वा धोबी ने कह्यो, जो–श्रीमहाराजाधिराज ! श्रीगोवर्द्धननाथजी के श्रीअंग के विनियोग के वस्त्र हैं। तो हों कैसें सिला पर पछांटों ? तातें ऐसें धोवत हों।

भावप्रकाश – यह कहि यह जतायो, जो–ये वस्त्र हू अलौकिक भक्तन के भाव कौ स्वरूप हैं। तातें हों इन सों ऐसी निठुराई कैसें करों ?

तब ऐसें बचन सुनि कै, ऐसें जतन सों धोवत देखि कै, श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न भए। पाछें श्रीगुसांईजी वा धोबी तें कह्यो, जो–तू कछू मांगि। मैं तो पर प्रसन्न हों। तब वा धोबी ने कह्यो, जो–मोकों मोक्ष दीजें। और मेरी पृथ्वी में सेवा चले। वैभव सों युक्त माहात्म्य चले। तब श्रीगुसांईजी धोबी सों कह्यो, जो–तैं मांग्यो सो दीनो।

भावप्रकाश – सो याने हीन बस्तू मांगी। काहेतें ? हीन वर्ण है। तात हीन बुद्धि है। सो तुच्छ बस्तू मांगे। और लीला में ये 'अंतर्गृहगता' में है। सो सगुण हैं, सकाम हैं। तातें यहां हू लौकिक कामना रही।

पाछें श्रीगुसांईजी तो अपने घर पांव धारे। पाछें केतेक दिन पाछें वाकौ काल आयो। तब वाकी देह छूटी। ता पाछें सायुज्य मोक्ष भई। पूजा चली।

वार्ता प्रसंग – २

सो एक समै चाचा हरिवंसजी और एक वैष्णव दोऊ जनें गुजरात जात हते। तब मार्ग में एक बड़ो गाम आयो। तहां आय कै मजलि उतरे। सो एक बनिया की हाट सों सीधो सामग्री सब लै कै, ता पाछें गाम कै बाहिर जाँइ कै, जल के स्थल निकट जाँइ कै, पाछें रसोई करि कै श्रीठाकुरजी आगें भोग धरि कै ता पाछें दोऊ जनेंन महाप्रसाद लियो। पाछें गाम में आय कै वा बनिया की हाट में बैठे। सो दिन थोरो सो रह्यो हो। तहां सब कोऊ लोग जात हते। और वह बनिया हू हाट कों बढ़ाय कै चल्यो। तब चाचा हरिवंसजी के साथ के वैष्णव ने वा बनिया सों पूछ्यो, जो–तुम कहां जात हो ? और ये सगरे लोग कहां जात हैं ? और इहां यह देहरा में कहा है ? तब वा बनिया ने कह्यो, जो–यह राजा के श्रीठाकुरजी हैं। यहां वैभव घनो है ! सुंदर मंदिर बोहोत मनिजटित काम है। देखिवे सारिखी जगह है। और श्री–ठाकुरजी के आभरन हू घने हैं। उँचे मोल के हैं। और चौकी सिंघासन कनक मनिजटित हैं। और वस्त्र, चंदरवा, पीछेवाई घने उंचे जरी मखमल कै हैं। औ गजमोतिन की झालरि और तोरन माला हैं। और पात्र सब कंचन के हैं। ऐसें वैभव घनो घनो

बतायो। और (कह्यो) जो–तुम हू चलो देखो तो खरे ? तुम घनी ठौर श्रीठाकुरजी कौ दरसन कर्‍यो होइगो। परि ऐसें कहूँ नाहीं है। तब वैष्णव साथके नें हरिवंसजी सों कह्यो, जो–या बनिया ने इतनी बड़ाई करी तातें चलो देखो तो खरे ? देखिवे में कहा लागे ? श्रीठाकुरजी हैं। ऐसें कहि कै घनो आग्रह कीनो। तब हरिवंसजी ने कह्यो, जो–तुम जाँइ कै देखि आऊ। तब वा वैष्णवनें कह्यो, जो–तुम हू चलो तो हों जाऊँ। ऐसो घनो आग्रह कीनो। तब हरिवंसजी और वह वैष्णव दोऊ जनें वहां देखन कों गए। तब वैष्णव द्रव्य कौ वैभव घनो देख्यो। ता पाछें राजाने घर की कंचन थारी में आर्ति करी। तब अनेक बाजा बाजत हैं, अनेक लोग ठाढ़े हैं। श्रीठाकुरजी सिंगार भारी भारी वस्त्र उंचे पहरि ठाढ़े हैं। तब श्रीठाकुरजी कों देखि कै हरिवंसजी ने मूड हलायो। और कह्यो, जो–भलो धोबी कौ बनाव है। सो मूड हलावत राजाने देख्यो। तब राजाने अपने खवास सों कह्यो, जो–वे दोऊ जनें परदेसी ठाढ़े हैं उन कों लै जाँइ कै कोटड़ी में रोको। तब वा खवासने उन दोऊ वैष्णवन कों पकरि कै कोटड़ी में रोकि कै तारो मारि कै कह्यो, जो–राजा कौ कोऊ काम है। तब हरिवंसजी ने वा साथ कै वैष्णव सों कह्यो, जो–तू हठ कीनो, और अन्यमार्गीय के श्रीठाकुर देखे, और उन के मंदिर गए, सो अपने श्रीठाकुरजी कों सुहावे नाहीं। तातें श्रीठाकुरजी ने ऐसो कर्‍यो, जो–बंध में पारे। परि भले, अनुचित तो कछु नाहीं। अपने माथें श्रीगुसांईजी बिराजत हैं। परि तुरत तो यह फल भयो।

भावप्रकाश – सो या वार्ता तें यह जतायो, जो–पुष्टिमार्गीय ठाकुर के सिवाय अन्य ठाकुर के पास सर्वथा न जानों। उन कों देखनो नाहीं, प्रसाद लेनो नाहीं। नाँतरु अन्याश्रय होंई। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु 'विवेकधैर्याश्रय' ग्रंथ में कहत हैं। सो श्लोक –

"अन्यस्य भजनं तत्र स्वतो गमनमेव च।
प्रार्थनाकार्यमात्रेऽपि ततोऽन्यत्र विवर्जयेत्।"

तातें वैष्णव कों अन्याश्रय तें बोहोत सावधान रहनो। अन्याश्रय समान और कोऊ अपराध नाहीं।

पाछें सेवा तें पहोंचि कै राजा घर आयो। तब खवास सों बोल्यो, जो–वे दोऊ जनें रोके हैं, जो–उन कों ल्याउ। तब दोउन कों राजा पास ल्याये। तब राजा चाचा हरिवंसजी सों कह्यो, जो–मेरे श्रीठाकुरजी कों तुमने देखि कै मूड काहे कों हलायो ? सो बात कहो। तब चाचा हरिवंसजी ने कह्यो, जो–हम तो सहज ही मूड हलायो हैं। तब राजा ने कह्यो, जो–ये बात तो तुम मोकों कहो। हम कों समुझाओ। यह बात तो सर्वथा कही चाहिए। नाँतरु छोरूंगो नाहीं। और रोकूंगो। तब चाचा हरिवंसजी ने कह्यो, जो–तेरे श्रीठाकुरजी तो हमारे श्रीठाकुरजी कौ धोबी है। यातें हम मूड हलायो। तब राजा ने कह्यो, जो–हों कैसें मानों धोबी ? तब हरिवंसजी ने कह्यो, जो–तुम मानो तैसें करिए, परि धोबी तो है। ता पाछें हरिवंसजी ने कह्यो, जो–तेरे मन में प्रतीत नाहीं तो हमारे पास हमारे श्रीठाकुरजी के वस्त्र हैं। सो आपु चलि कै तुम्हारे श्रीठाकुरजी के मंदिर में धरि आओ। और वे वस्त्र धोई कै आछें आहार–कुंदी घड़ी करि धरे तब तो तेरे प्रतीत आवें ? तब राजा ने कह्यो, जो–चले ऐसें करिए। ता पाछें राजा और हरिवंसजी उन के श्रीठाकुरजी के मंदिर में गए।

तब श्रीगोवर्द्धननाथजी के वसंत ऋतु के वस्त्र हरिवंसजी के पास हते, सो काढ़ि कै एक चौकी ऊपर वस्त्र बिछाय कै धरे। और राजा के श्रीठाकुरजी सों हरिवंसजी ने कह्यो, जो–यह वस्त्र श्रीगोवर्द्धननाथजी आप के हैं। सो आछी रीति सों पहिलें धोवत हते तैसेंई धोई कै कुंदी घड़ी करि कै दीजो। जैसेंई सदा तुम्हारी रीत है तैसेंई करियो। ऐसें कहि कै पाछें द्वार मारि तारो मारि कै बाहिर आए। ता पाछें हरिवंसजी बाहिर द्वार में सोय रहे। ता पाछें प्रातः काल उठि कै राजा और हरिवंसजी मंदिर में जाँइ कै मंदिर कै किवाड़ खोले। तब देखे तो वस्त्र सब आछें धोय कै चोवा के दाग सब काढ़ि कै घड़ी करि कै आहार–कुंदी करि कै आछें सुधारि सँवारि कै धरे हैं। तब चाचा हरिवंसजी ने राजा सों कह्यो, जो–अब तो धोबी बन्यो ? तेरे प्रतीति तो आई ? तब राजा ने कह्यो, जो–प्रतीति तो आई। परि यह बात मोसों बिचारि कै कहिये, जो–यह धोबी कैसो ? और श्रीठाकुरजी कैसें भए ? तब हरिवंसजी ने कह्यो, जो–यह पहिले हमारे श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ धोबी हतो। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के वस्त्र धोवत हतो। सो एक समै हमारे गुरु श्रीविट्ठलनाथजी, सो जा पोखर पर यह धोवत हुतो तहां पांव धारे। तब याकों वस्त्र धोवत देख्यो। सो बोहोत ही जतन सों हाथ सों मोड़ि कै धोवे। तब श्रीगुसांईजी ने पूछ्यो, जो–यह वस्त्र हाथ सों मोड़ि कै क्यों धोवत है ? सिला पर पछांटत नाहीं सो क्यों ? तब वा धोबी ने कह्यो, जो–यह श्रीठाकुरजी के वस्त्र हैं। सो प्रभु समान हैं। तातें सिला पर कैसें पछांटों ? यातें ऐसें धोवत हूं। तब यह

बात सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए । तब कह्यो, जो–तेरे मनोरथ होंइ सो तू मांगि । मैं तो पर बोहोत प्रसन्न हों । तब धोबीने कह्यो, जो–मोकों सायुज्य मुक्ति देहु । और लौकिक में पूजा मानता चले । जैसें श्रीठाकुरजी की सेवा करे तैसें मेरी सेवा करे । तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो–जा ऐसें ही होइगो ।

भावप्रकाश – यहां यह बड़ो संदेह है, जो–सायुज्य मुक्ति भए पाछें तो वह जीव प्रभुन के तेज में मिलि जाति है । तो लोक में वाकी पूजा कैसें चले ? तहां कहत हैं, जो–ये धोबी पुष्टिमार्गीय हतो । तातें पुष्टि की रीति सों वाकों सायुज्य–मुक्ति श्रीगुसांईजी आप दिये । सो तामें श्रीप्रभुन के अंग में जैसें अंतर्गृहगता की स्थिति भई, ता भांति याकी स्थिति भई जाननी । सो यह सायुज्य मुक्ति मर्यादा तें विलक्षन है । यामें प्रभुन की इच्छा होंइ तब वह जीव पाछो बाहिर प्रगटे । और उन तें प्रभु रासादि बिहार करें । ता पाछें फेरि प्रभुन के हृदय में वाकी स्थिति होंई । और मर्यादामार्गीय सायुज्य मुक्ति में तो तेज में तेज लीन व्है जाँई । फेरि न निकसे । सो यह धोबी आधिदैविक भावरूप तें तो सायुज्य कों प्राप्त भयो । और वह आध्यात्मिक रूप तें श्रीठाकुर व्है लोक में पूजायो । या प्रकार जाननो ।

ता पाछें केतेक दिन में वाकी देह छूटी और वाही समै तुम्हारे श्रीठाकुरजी की प्रतिष्ठा भई । सो वह धोबी कौ जीव हो सो तुम्हारे श्रीठाकुरजी के स्वरूप में प्रवेस भयो, आवेस भयो । सो यह ठाकुरजी हैं । सो मैं देखि कै पहिचाने हैं । तब मैं मूड हलायो । जो–देखो धोबी की कौन मानता चली है ? यह ऐसी बात है । सो वह धोबी श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो । तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए ? ॥ वार्ता ॥ ५९ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक धोबी राजा, मारवाड में रहतो, सो हरिवंसजी की संगति सों वैष्णव भयो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश – ये राजस भक्त हैं । लीला में इनकौ नाम 'रतिधामा' है । सो ये 'मन्मथमोदा' तें प्रगटी हैं । तातें उनके भावरूप हैं । ये चंद्रकला के यूथ की हैं । चंद्रकला इन पर प्रीति बोहोत राखति हैं । ये श्रीठाकुरजी के सेवा–सिंगार आछी भांति सों करति हैं ।

वार्ता प्रसंग – १

सो वह राजा, धोबी श्रीठाकुरजी भए ताकी सेवा करतो। सो धोबी के समाचार राजा ने पूछे सो सब हरिवंसजी ने विस्तार करि कै कहे। ता पाछें राजा बोल्यो, जो–भले, अब तो इतने दिन बिनु जाने सेवा करी सो तो करी। परि अब मैं कहा करों? तब हरिवंसजी ने कह्यो, जो–एक बात हों कहों जो तुम मानो तो। तब राजा ने कह्यो, जो–कहिए हों सर्वथा मानोंगो। तब हरिवंसजी ने कह्यो, जो–तुम श्रीगोकुल जाँई श्रीगुसांईजी के सेवक होऊ। ता पाछें और सेवा श्रीगुसांईजी के पास तें पधराय ल्याऊ। सो न्यारो मंदिर इहां करि तहां श्रीठाकुरजी न्यारे बैठारि कै सेवा करो। और इन श्रीठाकुरजी की सेवा जैसें चलि जाति है याही रीति सों चलाऊ। जैसें वैभव सों भीतरिया टहेलुवा सेवा करें हैं वैसें। तामें न्यून कछू मति करो।

भावप्रकाश – काहेतें, ये श्रीनाथजी कौ धोबी है। और श्रीगुसांईजी ने इनकों वर दियो है। सो ए श्रीगुसांईजी की दीनी ठकुराई है। तातें वैभव घटाइवे की चाचाजी नाहीं किये।

और दिन में एक बार तुम जाऊ सो नमस्कार मात्र करि आओ। सो जा भांति सों जैसें हरिवंसजी कहे, तैसें ही राजा कर्‍यो। और श्रीगोकुल कों अपनी स्त्री कुटुंब लै कै थोरेसेक दिन में आयो। ता पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती करि कै नाम–निवेदन कीनो। तब भेंट बोहोत ही करी। पाछें थोरेसेक दिन उहां ही रहि कै मार्ग की रीति सब सीखे। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करे। ब्रज की परिक्रमा करी। ता पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज! मोकों सेवा कौ

मनोरथ है। सो मेरे माथे स्वरूपसेवा पधराइए। तब श्रीगुसांईजी ने एक स्वरूप मँगाई कै ताकी प्रतिष्ठा करि कै पंचामृत सों स्नान करवाई कै सिंगार करि कै ता पाछें राजा कों श्रीठाकुरजी पधराई दिये। पाछें राजा श्रीगुसांईजी सों बिदा होई कै अपने देस कों मारवाड़ कों चल्यो। सो थोरेसेक दिन में घर कों आयो। ता पाछें एक मंदिर नयो घनो सुंदर करवायो। पाछें आछौ मुहूर्त देखि कै श्रीठाकुरजी मंदिर में पधराए। ता पाछें सुंदर सामग्री करि कै श्रीठाकुरजी कों भोग धर्‌यो। पाछें आर्ति अनोसर करि कै वैष्णव बुलाइ कै मंदिर में ही प्रसाद लियो। ता पाछें भली भांति सों सेवा करन लाग्यो। दिन में अपने हाथन सों सेवा करे। रात्रि में बैठे भगवद् वार्ता करे। सो वे धोबी के श्रीठाकुरजी भए हे, सो रात्रि कों आई कै एकांत में बैठि कै राजा और वैष्णव भगवद् वार्ता कीर्तन करे सो सब सुनें। तब केतेक दिन पाछें एक दिन रात्रि में वानें राजा कों स्वप्न में कह्यो, जो–मोकों तुम तुम्हारे श्रीठाकुरजी के मंदिर में द्वार बाहिर एक गवाखा में बैठारो। और तुम्हारे श्रीठाकुरजी कौ राजभोग सरावो ता पाछें वा महाप्रसाद में तें एक पातरि परोसि कै मेरे आगें धरो। और न्यारो मेरे लिये कछू मति करो। और मेरे मंदिर कौ वैभव है सो सब श्रीनाथजीद्वार पठाऊ। ऐसें स्वप्न में राजा सों कह्यो। तब राजा ने ऐसेंई कियो।

ता पाछें केतेक दिन पाछें हरिवंसजी गुजरात तें आवत हते। तब राजा के घर आइ कै उतरे। तब हरिवंसजी के साथ में और हू वैष्णव बीस पचीस साथ हुते। सो वह राजा भली भांति सों

वैष्णवन कों तथा हरिवंसजी कों मिलि, भेंटे। पाछें डेरा बैठाए। रसोई के समै सामग्री सब पहोंचाए। भली भांति सों रसोइ करि कै सबन श्रीठाकुरजी कों भोग धरि कै महाप्रसाद लियो। ता पाछें सवारे हरिवंसजी चलन लागे। तब राजाने बोहोत ही आग्रह करि कै राखे। पाछें नित्य चलिवे की कहे, तब राजा नाहीं करे। कहे, जो–भले, काल्हि चलियो। आज कौ दिन तो और हू रहो। तब ऐसें करत एक मास राखे। ता पाछें घनीसी भेंट राजाने श्रीगुसांईजी कों तथा श्रीगोवर्द्धननाथजी कों चाचाजी के साथ दीनी। ता पाछें घनी मनुहारि करि कै बोहोत बिनती करि कै हरिवंसजी कों बिदाय किये। थोरीसी दूरि हरिवंसजी कों पहोंचावन कों गए। और ता भांति फिरि घर आय कै सेवा करन लागे। सो राजा वैष्णवन विषे ममत्व घनो राखत हो। सो वैष्णव सों घनो दासत्व दीनता राखे। वैष्णव सों मिलि कै भगवद् वार्ता कीर्तन करतो। वैष्णवन कों महाप्रसाद नित्य लिवावतो। और जो वैष्णव द्रव्य मांगे ताकों द्रव्य देई। और व्यावृत्ति कों लगावे। और वैष्णव सों काहू बात सों दुराव नाहीं करे। वैष्णव के कहे कौ सदा विस्वास राखे। वैष्णव जैसें कहे तैसेंई करे। बचन उथापतो नाहीं। सदा विस्वास ही राखतो। रात्र दिवस भगवल्लीला वैष्णवन में छक्यो ई रहे। सेवा बहु भली भांति सों करें। सामग्री बोहोत ही सुंदर होती। सो श्रीठाकुरजी कों समर्पि कै महाप्रसाद आप वैष्णवन सों मिलि कै लेतो। श्रीठाकुरजी हू सानुभावता जनावन लागे। चहिये सो मांगि लेते। आप आरोगते तब बातें करते। श्रीगुसांईजी हू वा

पर घने प्रसन्न रहते । और हरिवंसजी गुजरात जाँई और आवे तब चाचाजी राजा के घर उतरते । दिन पांच दस रहते । रात्रि कों भगवद् वार्ता कीर्तन करते । मार्ग कौ सिद्धांत गोप्य वार्ता होंइ सो सब हरिवंसजी वा राजा सों कहे । वा राजा ऊपर हरिवंसजी सदा प्रसन्न रहते । राजा हू हरिवंसजी की कान घनी राखतो । भली भांति सों हरिवंसजी की सेवा करें । घने घने मनोरथ सों हरिवंसजी कों रसोई करवावे, महाप्रसाद लिवावें । राजा हरिवंसजी की आज्ञा प्रमान चले । सो वह राजा श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो । तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए । वार्ता ॥ ६० ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक पटेल कौ बेटा और पटवारी की बेटी, दोऊ गेधरा के बासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

वार्ता प्रसंग–१

सो उन दोऊन कों परस्पर बोहोत प्रीति हुती । सो दोऊ जनें एक पंड्या के घर बालक अवस्था में पढ़िवे कों बैठे हुते । सो दोऊन कौ आपुस में सनेह घनो हुतो । सो केतेक दिन कों पटवारी की बेटी कौ विवाह भयो । तब वह बड़ी भई । सो एक गाम कोस बीस पर हतो । तहां विवाह करि दीनो । ता पाछें केतेक दिन कों वह सयानी भई । तब वाके सुसरारि कौ आनो आयो । तब वाके माता–पिता ने बिदा करि दीनी । तब वा गाड़ी में बैठि कै सब कोऊ बिदा करि कै पाछें फिरें । तब वह पटेल कौ बेटा ऊ बिदा करिवे कों गयो हुतो । सो जब वह गाड़ी में बैठी कै चलि तब वह पटेल कौ बेटा एक रूख पर चढ़्यो । सो

ऊपर चढ़ि कै देखन लाग्यो। सो जबलों गाड़ी की धूरि हू दृष्टि परी तबलों तो देख्यो कर्‍यो। और धूरि हू दृष्टि नाहीं परी तब वह पटेल कौ बेटा निरास भयो। सो मन में दुःख ल्याइ कै रोयो। और आंखि मींचत भयो। सो मूर्छा खाँइ कै वा रूख पर तें गिर्‍यो। सो प्रान निकसि गयो। पाछें वाके देह संबंधी कुटुंब सब आइ कै जुरे। ता पाछें वाही रूख के नीचे वाकौ संस्कार कियो। ता पाछें वहां ही एक चोंतरा कियो। पाछें केतेक दिन में वह पटवारी की बेटी पाछी फिरि कै अपने माता–पिता के घर आई। तब मुहूर्त आछौ नाहीं हुतो। संध्या समै गाम में जाँइवे कौ मुहूर्त हतो। सो वह गाम के बाहिर बाग में उतरे। ता पाछें साथ के मनुष्य ने वा बाग में रसोई करी। तब वह पटवारी की बेटी इत उत देखन लागी। तब चोंतरा देख्यो। तब इन साथ के मनुष्यन सो पूछ्यो, जो–यह चोंतरा कैसो भयो है ? यह कहा है ? यह चोंतरा पहिले तो यहां न हुतो। तब इन साथ के ब्राह्मन ने कह्यो, जो–यह चोंतरा तो वह पटेल कौ बेटा अमूकौ, तोसों घनी प्रीति हती ताकौ है। तब इन स्त्री ने पूछ्यो, जो–वाकौ चोंतरा कैसो ? वह कहां मर्‍यो ? तब इन ब्राह्मन ने कह्यो, जो–यह यहांइ मर्‍यो। तब इन स्त्रीने पूछ्यो, जो–ये कैसें मर्‍यो ? और कब मर्‍यो ? सो समाचार मोसों विस्तार करि कै कहिए। तब वह ब्राह्मन ने कह्यो, जो–सुनि ! जा दिन तू तेरे सुसरारि कों चली ता दिना सब कोई तोकों बिदा करि कै घर कों आए। और यह पटेल कौ बेटा तो या रूख पर चढ्यो। सो जब लों तेरी या गाड़ी की धूरि याकी दृष्टि परी तब लों देख्यो कर्‍यो। और धूरि हू

दृष्टि नाहीं परी तब वाकों तो तेरो विरह–ताप भयो। सो मूर्छा खाँइ कै या रूख के उपर तें गिर्‌यो। सो देह–छोरी। सो ऐसी बात वा पटेल के बेटा की वा स्त्रीने सुनी। तब वाहू कों विरह–ताप कौ कलेस भयो। सो अत्यंत भयो। पाछें मूर्छा खाँई कै धरनी पर गिरी। पाछें स्त्रीने वाही ठौर देह छोरी। तब वाहू के देह संबंधी सब कोऊ खबरि सुनि कै आइ जुरे। ता पाछें वाकौ संस्कार वहां ही वाही बाग में करे। पाछें वा पटेल के बेटा के चोंतरा के समीप वाकौ हू चोंतरा कर्‌यो।

ता पाछें केतेक दिन कों भगवद् ईच्छा तें श्रीगुसांईजी गोधरा पाँव धारे। तब वाही बाग में उतरे। ता पाछें वैष्णव सब आय कै जुरे। तब सब वैष्णव दंडवत् करि बैठे। इतने ही श्रीगुसांईजी उन वैष्णवन सों पूछ्‌यो, जो–इहां दोऊ चोंतरा कैसे हैं ? तब उन वैष्णवन सब समाचार चोंतरा के कहे। और वे दोऊ जनें पटेल के बेटा और पटवारी की बेटी के प्रीति के और मृत्यु के समाचार सब कहे। इतने ही श्रीगुसांईजी दृष्टि वा सरवा पर गई। तब देखे तो वे ही दोऊ जनें भूत भए हैं। सो वे रूख पर बैठें देखे। तब श्रीगुसांईजी ने पहिचाने। ता पाछें आप सब वैष्णवन कों बिदा किये। वैष्णव दोइ चार मुखिया रहे। ता पाछें श्रीगुसांईजी उठि कै वा रूख नीचे गए। जाँइ कै ठाढ़े रहे। और उन दोऊ जनें कौ नाम लै कै पुकारे। इतने ही वे दोऊ जनें आंइ कै ठाढ़े रहे। ता पाछें श्रीगुसांईजी उन दोऊन कों चरन परस करवायो। अष्टाक्षर मंत्र कान में कह्यो। और चरनोदक जल मँगाइ कै दीनो। इतने ही उनकी वे देह दोऊन की छूटी।

अलौकिक देह की प्राप्ति भई। इतने में ही श्रीठाकुरजी की दूती आई, चारि। सो ठाढ़ी भई। तब श्रीगुसांईजी कों दंडवत् किये। ता पाछें श्रीगुसांईजी ने आज्ञा करी, जो–तुम इन दोऊन कों निकुंज देस और 'तुलसी–कुंज' में लै जाऊ। इनकों श्रीठाकुरजी की लीला में प्रवेस कराओ। तब वे दूति दोऊन कों भगवल्लीला में पहोंचाए।

ता पाछें उन वैष्णवन श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! ये पूर्वजन्म में दोऊ जनें कौन हे ? सो हमकों आप कृपा करि कै कहिए। और इनकों ऐसी प्रीति कैसें भई ? तब श्रीगुसांईजी कह्यो, जो–यह दोऊ जनें निजधाम में श्रीचंद्रावलीजी की सखी हैं। सो पुरुष तो लीला में 'कामकला' है और स्त्री कौ नाम 'रति' है। ये दोऊ 'कलहंसी' के सात्विक भाव–रूप हैं। सो दोऊन कों समप्रीति सदा की घनी है। सो कोऊक दोष अपराध तें कितनेक भक्त लीला–संबंध में तें मित्र भाव के बिछुरे हे, ता समै के ये दोऊ बिछुरे हैं। ता पाछें तो अनेक जन्म भए। सो कहां लों कहिए ? परि ये पूर्वजन्म में दोऊ पूरव दिसा में कान्यकुब्ज गाम है, तहां ब्राह्मन स्त्री–पुरुष दोऊ जनें हुते। सो भगवत्सेवा करत चार प्रहर दिन बीते। और रात्रि में दोऊ जनें भगवद् वार्ता करे। कीर्तन करे। ऐसें स्त्री–पुरुष दोऊ जनें करे। परि लौकिक व्यवहार कछू जानें नाहीं। ऐसें जन्म पूरो कियो। परस्पर प्रेम अत्यंत हो। सो पुरुष कौ अंत समै आयो तब उन स्त्री ने कह्यो, जो–तुम्हारे पीछे हों निर्वाह कैसें करोंगी ? ऐसें कहि कै रोवन लागी। तब उन पुरुष

ने कह्यो, जो–तू ही अन्न त्याग करि कै प्रान त्याग करियो। ता पाछें वाकी देह छूटी। ताकौ संस्कार कर्‌यो। पाछें वा स्त्री ने सेवा तो और ब्राह्मन के घर दीनी। और आप तो अन्न त्याग करि कै केतेक दिन में देह छोरी। सो इन दोऊन की यह गति भई। भगवद् भाव कौ अभाव कर्‌यो तातें ऐसो भयो। अब इनकों कछू दोष बाधक नाहीं। लीला में पहोंचे। सो वह पटेल कौ बेटा और पटवारी की बेटी दोऊ श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय भए। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥ ६१ ॥

भावप्रकाश–या वार्ता में यह जतायो, जो–भगवत्सेवा सर्वोपरि पदार्थ हैं। तातें लौकिक प्रीति करि सेवा छोरत हैं। ताकी यह गति होत हैं। तासों वैष्णव कों बिचारि कै चलनो।

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक राजा, गुजरात कौ, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'रास–रसिका' है। सो रास–रसिका प्रभुन के रासादि लीलान के ध्यान में सदा निमग्न रहति हैं। ये 'कलहंसी' तें प्रगटी हैं, तातें उन के भावरूप हैं।

सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी श्रीरनछोरजी के दरसन कों पधारे। सो मार्ग में या राजा कौ गाम आयो। तहां डेरा किये। तब राजा सों काहू ने कही, जो–आज तो एक महापुरुष अपने गाम के बाहिर डेरा किये हैं। सो उन कौ तेज–प्रताप बोहोत हैं। उन के साथ बोहोत से मनुष्य हू हैं। सो इन के दरसन कों गाम के लोग–लुगाई सब जात हैं। ये बड़े सिद्ध कहावत हैं। तब राजा नें कही, जो–हम हू उन के दरसन कों चलेंगे। सो राजा बोहोत से मनुष्यन कों साथ लै श्रीगुसांईजी के दरसन कों आयो। सो ता समै श्रीगुसांईजी आप संध्यावंदन करत हे। सो राजा कों ऐसें दरसन भए मानो साक्षात तेजःपुंज अग्नि होंई। तब राजा दंडवत् करि बिनती कियो, जो–महाराज ! कृपा करि मोकों अपुनो सेवक कीजिये। हों आप कौ दास हूं। तब श्रीगुसांईजी राजा की दीनता देखि प्रसन्न भए। पाछें राजा कों नाम सुनायो। ता पाछें राजा ने बिनती करी,जो–महाराज ! कृपा करि मेरे घर पधारिये। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–हम काल्हि तेरे इहां आवेंगे। ता समै चाचा हरिवंसजी साथ हे। सो राजा ने उन सों पूछी, जो–मोकों

श्रीगुसांईजी कौ स्वरूप मार्ग कौ स्वरूप कृपा करि कै समुझाइए। तब चाचाजी ने श्रीगुसांईजी कौ स्वरूप मार्ग कौ स्वरूप सब आछी भांति सों समुझायो। ता पाछें राजा ने श्रीगुसांईजी सो बिनती करी, जो–महाराज ! मोकों निवेदन कराई भगवत्सेवा पधराय दीजिये । तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–आज तुम ब्रत करो। और काल्हि तुम कों निवेदन करावेंगे। तब भगवत्सेवा हू पधराय देंगे। पाछें दूसरे दिन राजा ने श्रीगुसांईजी कों अपने घर पधराए। तब राजा सहकुटुंब श्रीगुसांईजी के सरनि आयो। निवेदन पायो। पाछें राजा कों श्रीगुसांईजी एक लालजी कौ स्वरूप पधराय दियो। सो राजा के आग्रह सों श्रीगुसांईजी आप उन के घर तीन दिन बिराजे। सो श्रीगुसांईजी आप श्रीठाकुरजी की सेवा किये। पाछें सब रीति भांति, मानसी प्रकार आदि सब राजा कों सिखाये । ता पाछें राजा सों बिदा होंइ श्रीगुसांईजी तो आप द्वारकाजी पधारे । ता दिन तें श्रीगुसांईजी की कृपा सों राजा के हृदय में भगवत्स्वरूप लीला सहित आय बिराज्यो। सो राजा वा रस में छक्यो रहतो। पाछें राजकाज सब दीवान कों सोंप्यो। आप काहू सों विसेस बोले हू नाहीं भगवन्नाम कौ उच्चारन रात दिन करे। लौकिक रंगराग सब छोरि दिये।

वार्ता प्रसंग–१

सो वह राजा कब हू काहू सों रीझे नाहीं, काहू सों संभासन हू करे नाहीं। भली भांति सों सेवा करे। वैष्णव कों घर में उतारे। सीधो सामग्री भली भांति सों देही। आग्रह करि कै घने दिन राखें। ता पाछें चले तब भली भांति सों बिदाय करे। द्रव्य मांगे ताकों द्रव्य देहि। उद्यम व्यावृत्ति कों लगावे। वैष्णव कों आदर सों आसन देइ कै बैठावे। आप बैठे भगवद् वार्ता करे। भली भांति सों वैष्णव की सेवा करे। द्रव्य और देह अन्य विनियोग न होंन देहि। अन्य कोऊ आवे तासों कार्य प्रमान बोले। मौन साधि रहे। काहू बात सों रीझि कै काहू कों कछू देवे नाहीं।

सो एक भवैया महा चतुर हो। सो सब देसांतर फिरि रिझाय सबन कों, द्रव्य घनो कमाय ल्यायो। कदाचित् कोऊ काहू बात तें नाहीं रीझे, और कृपा न होई काहू कों कछू देवे नाहीं, ताहू कों

यह भवैया रिझावें। और द्रव्य घनो सो लेई। सो सब देस फिरि कै वा राजा के नगर नें आयो। तब राजद्वार जाँई कै राजा के लोग–प्रधानन सों मिल्यो। तब राजा के लोग–प्रधानन सब ने वा भवैया सों कह्यो, जो–तू या गाम में मति रहे। मति खरच खाँय। इहां कौ राजा काहू सों रीझत नाहीं। काहू कों कछू देत नाहीं। ऐसें प्रधान ने कह्यो। तब भवैया ने कह्यो, जो–काहू कों रीझत नाहीं तो भले। परि हों तो भवैया, जो–राजा कों रिझाये बिनु गाम तें जीवत नाहीं जाउं। इहां बैठ्यो बरस दोइ चारि खरच खाउंगो। और राजा कों रिझाउंगो। एक बेर राजा मेरो ख्याल देखें। ता पाछें देखें कैसें नाहीं रीझत ? और कदाचित् मेरो ख्याल नाहीं देखत तो या गाम में तें जीवत न जाउंगो। इहां आपघात करि कै मरोंगो। ऐसें निर्द्धार वा भवैया ने कर्यो। ता पाछें एक बार राजद्वार में फिरि जाँइ कै उन लोक–प्रधानन सों वह भवैया मिल्यो। और कह्यो, जो–तुम्हारे राजा सों मेरी बिनती समाचार कहो, जो–मेरो ख्याल एक बेर देखे। ता पाछें भले कछू मति दीजो। परि ख्याल भेख सब दिखाए बिनु तो हों जाउंगो नाहीं। ऐसे निर्द्धार करि कै वा भवैया ने कही। सो वह खवास–प्रधान सब समाचार राजा सों जाँइ कहे। परि राजा उत्तर न देहि, बोले हू नाहीं। ऐसें करत एक वर्ष बीत्यो। सो और देस कमाय कै ल्यायो हतो सो सब खायो। और बनिया की हाट तें उचापति करि कै सौ खाँड रुपैया खाँये। खरच भारी हो। गाड़ी घोड़ा मनुष्य घने संग हुते। ता पाछें एक दिन जाँइ कै भवैया राजद्वार लांघवे कों बैठ्यो। वस्त्र सब जराय दिये। और सब

कोऊ समुझावें परि वह भवैया माने नाहीं। कहे, जो–कै तो राजा राज–सभा करि कै मेरो ख्याल देखे। ता पाछें भले मोकों कछू मति दीजियो, नाँतरु मैं मरोंगो। तब राजा के माथें हत्या देऊंगो। तब हों जलपान करोंगो। ऐसें करत दिन तीन चारि बीते। तब प्रधान नें जाँइ कै राजा सों बिनती करि कै कह्यो, जो–साहिब ! वह भवैया अपने द्वार आय कै बैठ्यो है। वस्त्र सब ज़राय दीने। पानी नाहीं पीवत। दिन चारि बीते वासों हम घनो समुझायो परि वह भवैया मानें नाहीं। हठ में पर्‌यो है। वह कहत है, जो–मैं सब देसांतर की कमाई खाई। और बनिया कौ रिन करि कै खायो है। तातें राजा एक दिन मेरो ख्याल देखें, नाँतरु मैं मरोंगो। देह त्याग करोंगो। तातें आप एक दिन सभा में आय कै बैठो। ता पाछें हम गाम के देसाई लोग और साह लोग सब कों बुलावेंगे। सो सबन पास वाकों द्रव्य दिवावेंगे। ता पाछें तुम्हारी इच्छा माने सो दीजियो। ऐसी घनी घनी प्रधान ने बात कही। तब राजा ने सभा में बैठि कै कही, जो–भले, सभा में बैठेंगे। ता पाछें प्रधान ने भवैया सों बुलाय कै कही, जो–हम तेरे लिये राजा सों घनो कह्यो है। सो रात्रि कों तुम्हारो ख्याल देखेंगे। तातें तुम अपने डेरा जाउ। जें कै कछु खाँय कै ता पाछें गाम के पटेल पटवारी और सब लोग साहूकार सब कों बुलावेंगे। तुम्हारो सब साजि लै कै आइयो। ऐसें कहि कै वाकों उठायो। ता पाछें रात्रि कों सब सभा भेली भई। तब राजा खाँय कै बैठ्यो। ता पाछें गाम के पटेल पटवारी और सब लोग साहूकार सब बुलवाये। ता पाछें वह, भवैया सब अपनो सब

साज लै के आयो। तब उन ख्याल रच्यो। सो वह भवैया ख्याल घने घने वेस ल्यायो। तमासो आछौ कियो और आछौ गायो। जो जो स्वांग करतो तथा ख्याल करतो सो सब कियो। कसर कछू राखी नाहीं। परि राजा तो नीचो माथो करि कै बैठ्यो। सो उंचो देखे नाहीं। ऐसें साहूकार कौ ख्याल रच्यो। सो रात्रि घरी चार–पांच रही तब लों वह भवैया सब पचिहारे। परि राजा तो रीझत नाहीं। तब उन भवैयानने अपने अपने मन में बिचार्यो, अब कहां उपाय कीजे ? रात्रि तो थोरीसी रही। और राजा तो रीझत नाहीं। तातें सवारो होइगो तब सभा सब उठि कै जाँइगी। तब मेरो प्रन वृथा होइगो। तब मोकों मरनो परेगो। और मेरी अपकीर्ति होइगी। तातें अब कहा उपाय कीजे ? ऐसें मन में सोच करन लाग्यो। ता पाछें बिचार्यो, जो–राजा के खवास सों पूछिये, जो–तुम्हारो राजा कौन बात सों रीझत हैं ? ऐसें बिचारि कै वा भवैयानें राजा के खवास कों सेन करि कै बुलायो। ता पाछें एकांत स्थल में जाँइ कै वासों पूछ्यो, जो–तुम्हारो राजा कौन बात सों रीझत हैं ? देखो, तुम हम सब पचिहारे चारि प्रहर रात्रि, परि राजा उंचो देखत नाहीं, तातें अब कहा कीजे ? मैंने तो ऐसो प्रन कर्यो है, सन्मुख देखि प्रतिज्ञा करी है। जो–राजा कों रिझाये बिनु या गाममें ते जीवत नाहीं जानो। सो अब राजा तो रीझत नाहीं, तातें अब कहा कीजे ? कौन उपाय कीजे ? सो तुम बतावो। जो–कदाचित् राजा रीझे और हम कों कछू देही तो हम आधो भाग तुम कों देहिंगे। ऐसें हमारो बचन है। परि मेरो जीवन बचे। नाँतर मेरो मरन है। तब वा खवास ने वा भवैया सों

कह्यो, जो–हमारो राजा तो एक वैष्णव बिनु और बात सों रीझत नाहीं। तातें तुम वैष्णव कौ भेख ल्याऊ तो राजा तुरत रीझे। ऐसें कहि कै राजा ने वा भवैया कों सब वैष्णव के लच्छन सिखाय कहे। तब जैसें खवास ने बतायो तैसें भेख वैष्णव कौ वा भवैया ने कर्‌यो। तब ता पाछें भेख सिद्ध भयो। तब सभा में आयो। तब सब सभा राजा सों 'जयश्रीकृष्ण' कर्‌यो। हाथ जोरें। इतने ही सुनि कै राजा उठि ठाढ़ो भयो। और वा भवैया कों देखि कै जाँइ कै मिल्यो, भेट्‌यो। हाथ पकरि कै अपनी गादी ऊपर ल्याय कै बैठार्‌यो। आगें हाथ जोरि कै ठाढ़ो भयो। तब राजा ने पांचों वस्त्र नवीन ऊँचे मँगाय कै वाकों पहिराये। और कंकन, कुंडल, मुद्रिका, पोहोंची, चौकी तथा मुक्ताहार, कंचनहार, कंठसरी, सिरपेच, जराउ, ऐसें सब सिंगार सो पहिरायो। और घोड़ा, एक रथ, एक सुखपाल, एक खासा साज संयुक्त दिये। और एक बड़ो गाम दियो। एक सहस्त्र रुपैया दीने। और सबन कों यथासक्ति सीधो दीनो। पाछें कह्यो, जो–मोकों कछू और हू आज्ञा देउ। सो जैसें सेवा कहिये तैसें करों। ऐसें हाथ जोर्‌यो रह्यो।

भावप्रकाश–यहां यह बड़ो संदेह है, जो–वा भवैया ने वैष्णव कौ भेख राजा कों रिझायवे कों, दिखायवे कों लियो है, कछू सांचो तो है नाहीं। राजा हू या बात कों जानत हैं। तोऊ ऐसो आदर राजा कैसें किये ? और भगवद् विनियोग की सब बस्तू सोना के कुंडल आदि या भवैया कों कैसें दियो ? तहां कहत हैं, जो–वैष्णव कौ वेष है वह भगवत्स्वरूप है। जा भांति राजा कौ सिपाही राज्य कौ वेष धारन करत हैं, तब राजा हू वाकों मानत है। और वा राजा की प्रजा हू वाकौ आदर करत हैं। तैंसे वैष्णव वेष भगवान के पारसदन कौ वेष है। तातें, जो–भगवान के सेवक हैं, भगवदीय हैं, वे वा वेष कौ आदर करते हैं, नमन करत हैं, और सत्कार करत हैं। सो राजा वा वेष कों देखत ही ठाढ़ो भयो, नमन कियो। कछू भवैया कौ राजा

सत्कार नाहीं कियो। दूसरो अभिप्राय यहू है, जो–वा भवैया कों राजा भेट्यो तब वाकौ स्पर्स भयो। ता स्पर्स करि वामें राजा के हृदय कौ भगवद् भाव आविर्भूत भयो। सो कैसें, जैसें अग्नि के परस तें लोहा हू अग्नि होंइ जात है। पारस के परस तें लोहा सोना होंइ जात है। तैसें या भगवदीय राजा के हृदय में लीला सहित प्रभु बिराजत हैं। सो उन के परस तें वा भवैया के हृदय में हू भगवद् भाव आयो। सो वा भगवद् भाव कौ राजा ने सत्कार कियो, वाकौ सिंगार पहेरायो, और नमन आदि कियो। यातें भाव ही मुख्य पदार्थ है। भाव ही तें मूर्ति में हू भगवान कौ प्रादुर्भाव होत है। सो वह ऐसो पदार्थ है। तातें वैष्णव में भगवद् भाव राखनो। यासों प्रभु प्रसन्न होत हैं।

पाछें और लोगन और प्रधान और देसाई पटेल ऊ घनो कछू दीनो। द्रव्य घनो आयो। ता पाछें सवारो भयो। तब वह भवैया वेसें ही वैष्णव के भेख सों ही अपने डेरा गयो। ता पाछें डेरा में जात ही फिरि कै देखे तो पाछें स्त्रीजन चारिजनि भौंडी सी दूरगंध सरीर में आवे ऐसी देखी। तब वा भवैया ने वासों पूछ्यो, जो–तुम कौन हो और मेरे पाछें काहे कों आवति हो ? तब उन स्त्री नें कह्यो जो–हम चारि हत्या हैं। सो तेरे सरीर में रहति हैं। एक गौहत्या, एक ब्राह्मन हत्या, एक स्त्री हत्या, एक बालक हत्या ऐसें चारजनी हैं। सो तैनें वैष्णव कौ वेस लियो है तातें हम बाहिर निकसी है। यह वेस उतारेगो तब हम तेरे सरीर में पीछें प्रवेस करेंगी। तब भवैया कह्यो, जो मैंने तो या जन्म में काहू की हत्या करी नाहीं है ? सो तुम यह कहा कहत हो ? तब उन स्त्रीन कह्यो, जो–तैंनें लोगन कों रिझायवे के तांई इन चारोंन कै भेख आगें किये हे। तब झूठे ही इन की हत्या कौ स्वांग हू दिखायो है। सो तोकों इन चारोंन की हत्या लागी है। वही हम चारों जनी हैं।

भावप्रकाश–याकौ आसय यह है, जो–**धर्म** की सूक्ष्म गति है। काहू कौ मन तें हू अपराध

करे तो वाकों दोष लागत है, ऐसें सास्त्र में कह्यो है। और जो–स्वरूप बनाय कै वाकौ अपराध करे ताकी हत्या लागे तामें तो कहनौ ही कहा है ? याही सों वासुदेवदास छकड़ा कों श्रीआचार्यजी बरजे, जो–स्वरूप बनायो वाकों खंडित नाहीं करनो। प्रतिष्ठा न भई कहा भयो ? स्वरूप की भावना तो कीनी हें। तातें वैष्णव कों मनसा, वाचा, कर्मना अपराध तें सदा डरपत रहनो, यह जतायो।

तब भवैया कह्यो, जो–कदाचित् यह वेस नाहीं उतारों तो तुम कहा करोंगी ? तब हत्या बोली, जो–तब तो हम तेरे पास नाहीं आय सकति। हम और कहूं जाँइगी। ता पाछें वह भवैया वैष्णव कौ वेस उतार्‌यो नाहीं। पाछें वैष्णव भयो।

भावप्रकाश–या वार्ता में वैष्णव के वेस कौ माहात्म्य दिखायो। जो–वैष्णव कौ वेस ऐसो है, जातें हत्या हू दूरि रहति है। परि मुख्य भाव तो यह है, जो–भगवदीय राजा के परस तें हत्या दूरि भई। काहेतें, उन के हृदय में श्रीआचार्यजी महाप्रभु बिराजत हैं। सो उन के सामने हत्या कैसें रहि सके ? जो–रहे तो जरि जाँइ। तातें राजा कों परस होत मात्र वे दूरि निकसि ठाढ़ी भई। और भवैया कौ हृदय हू सुद्ध भयो। तातें इन कौ वैष्णवता कौ ज्ञान भयो। और ये वैष्णव भयो। तातें भगवदीय वैष्णव सों निष्कपट भाव सों मिलनो, भेंटनो। जातें हृदय सुद्ध होंइ। भगवद् भाव कौ संबंध होंई। यह सिद्धांत जतायो।

सो वह राजा श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो तातें इन की वार्ता कहां तांइ कहिए। वार्ता ॥६२॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक दयो, भवैया, गुजरात में एक गाम में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'बहुरूपिनी' है। सो ये श्रीठाकुरजी और श्रीस्वामिनीजी दोऊन कों भांति भांति के रूप धारन करि रिझावति हैं। और श्रीठाकुरजी (और) श्रीस्वामिनीजी दोऊन कों छद्‌म कला में ये सहायक होति हैं। तातें इन पर दोऊ स्वरूप प्रसन्न रहति हैं। ये 'कलहंसी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

सो ये गुजरात के एक गाम में एक भवैया के घर जन्म्यो। सो बालपने सों नाच, गान, और स्वांग में निपुन हो। दया भवैया इन कौ नाम है। सो जब ये बड़ो भयो तब भवाई, तमासा

करन लाग्यो। पाछें देस बिदेस जान लग्यो। और राजा महाराजा सब कों रिझाय खूब द्रव्य कमायो। पाछें ये वैष्णव भयो सो प्रकार उपर कहि आए हैं।

वार्ता प्रसंग–१

सो वह भवैया वा राजा के पास आयो। तब राजानें सन्मान करि अपने पास बैठायो। तब वा भवैया ने राजा सों एकांत बैठि कै हत्यान के समाचार कहे। हत्यान कह्यो सो सब कह्यो और दूरि तें हत्या दिखाई। तब राजा ने कह्यो, जो–वैष्णव धर्म ऐसोई है। ऐसी धारन है। तातें या वैष्णव धर्म तें और सब तुच्छ हैं। या समान और धर्म तो नाहीं। तब वा भवैया ने राजा सों कह्यो, जो–सो तो सांची बात है। ऐसो दीसत हैं, जो–वैष्णव के वेस मात्र तें हत्या निकसि कै न्यारी भई। सो जो–कोऊ वैष्णवता जानि निःप्रपंच होंइ ताकौ कहा कहनो ? ता पाछें वा भवैया नें राजा सों फिरि कह्यो, जो–अब तुम मोकों कृपा करि कै वैष्णव करो और नाम सुनावो। तब राजाने वा भवैया सों कह्यो, जो–तुम्हारो कार्य श्रीगुसांईजी तें होइगो। उन की कृपा बिनु तो यह भक्तिमार्ग स्फूरत नाहीं। तातें तुम अडे़ल जाऊ। तब वा भवैयाने राजा सों कह्यो, जो–हम कों श्रीगुसांईजी कों एक बिनती–पत्र लिखि कै देउ। तब राजाने भवैया सों कह्यो, जो–भले। तब राजानें श्रीगुसांईजी सों बिनती–पत्र लिख्यो। तामें भवैया के समाचार सब लिखें। ता पाछें वह भवैया अपने स्त्री–पुत्र सब लै कै अडे़ल कों चल्यो। सो थोरेसेक दिन में उहां जाँइ पोहोंच्यो। ता पाछें श्रीगुसांईजी कों दरसन करि दंडवत् कर्‌यो। ता पाछें वह राजा कौ पत्र दियो। सो पत्र श्रीगुसांईजी ने बांच्यो। ता पाछें भवैया सों सब समाचार पूछें। सो भवैया ने

सब समाचार कहे। हत्यान जो कह्यो सो हत्यान की सब बात कही। ता पाछें श्रीगुसांईजी नें कृपा करि कै वा भवैया कों नाम सुनायो। ता पाछें व्रत कराय कै समर्पन करवायो। पाछें श्रीगुसांईजी भोजन कों पधारे। ता पाछें महाप्रसाद की पातरि वा भवैया कों दीनी। वाकी स्त्री–पुत्र सब सेवक भए। पाछें कोईक दिन उहाँ रहि कै श्रीगुसांईजी पास कथा सुनी। मार्ग की रीति सब श्रीगुसांईजी सों पूछी। सो श्रीगुसांईजी नें सब कृपा करि कै वाकों सुनाई, । समझाई। ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारे। सो भवैया हू श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों श्रीनाथजीद्वार श्रीगुसांईजी के साथ चल्यो। सो थोरेसेक दिन में श्रीनाथजीद्वार जाँई कै पहोंच्यो। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करे, भेंट करी, पाछें ब्रजपरिक्रमा श्रीगुसांईजी के साथ करी। घनो सुख भयो। ता पाछें श्रीगुसांईजी सों बिदा होंइ कै श्रीठाकुरजी की सेवा पधराय अपने देस आयो। सो अपनो घर बेचि कै सब कुटुंब लै कै वा राजा के नगर में जाँइ कै रह्यो। ता पाछें राजा सों मिलि श्रीगुसांईजी के सेवक होंइवे कै सब समाचार कहे। सो राजा बोहोत प्रसन्न भयो। पाछें घर एक रहिवे कों दियो। ता पाछें वह श्रीठाकुरजी की सेवा करन लाग्यो। सो सेवा सों पहोंचि कै राजा और भवैया दोऊ जनें भगवद् वार्ता करते। सो बोहोत आनंद होतो, सुख होतो। भगवद् रसमें छके रहते। राजा याकी बोहोत कानि राखतो। ता पाछें भवैया हू दया भलो वैष्णव भयो। मार्ग की रीति सब समुझन लाग्यो। श्रीठाकुरजी वासों बोलतें बातें करते। श्रीठाकुरजी वा भवैया

कौ सानुभावता जनावन लागे। सो सब राजा के संग तें सुख पायो।

भावप्रकाश—या वार्ता में यह सिद्धांत भयो, जो—काहू रीति सों तादृसी वैष्णव कौ संग करनो। संग वैष्णव कौ करे तो सब सुख होंइ। मार्ग की रीति हू स्फुरे। सो वैष्णव सिंगाररूप हैं। उन के कहे कौ विस्वास राखनो। तातें श्रीठाकुरजी कृपा करें। या भक्तिमार्ग तादृसी के संग तें स्फुर्द होत है। तातें और उपाय सब नीचो है। श्रीआचार्यजी के तथा श्रीगुसांईजी के स्वरूपन कौ बिचार करे तो सुमति होंइ। ता करि तादृसी वैष्णव की संगति मिले। विस्वास आवे।

सो वह भवैया श्रीगुसांईजी कौ ऐसो टेक कौ कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता॥ ६३॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक पटेल कुनबी, गुजरात कौ बासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहते हैं—

भावप्रकाश—ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'उजियारी' है। ये 'माधवी' ते प्रगटी हैं, तातें उन के भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग—१

एक समै श्रीगुसांईजी आप गुजरात पधारे हे। तब यह कुनबी सरनि आयो हो। सो याकौ बोहोत सरल भाव हतो। तादृसी वैष्णव और स्वमार्गीय वैष्णव पर याकौ बोहोत स्नेह हतो। सो एक बार गुजरात सों चाचा हरिवंसजी के संग यह कुनबी वैष्णव श्रीगुसांईजी के दरसन कों श्रीगोकुल जात हतो। सो मार्ग में एक गाम में डेरा कर्‍यो हतो। सो तहां नदी पैं न्हात हतो। तब तहां थोरी सी दूरि पर एक ब्राह्मन की स्त्री कों गलित कोढ़ निकस्यो हतो। सो वाके कीड़ा परि गए हुते। सो दुःख पावती। सो वाके एक पुत्र हतो। सो नदी पर आई कै वाकों धोई कै कीड़ा काढ़तो। वाके सरीर मे कहूँ सुद्ध अंग रह्यो नाहीं। सो वह

कुनबी वैष्णव न्हाई कै धोवती पछांटतो हतो। वाकी धोवती कौ छींटा वास्त्री कों लग्यो। सो पाँव में जा ठौर छींटा लग्यो हतो सो वा ठौर छूवत ही सुद्ध भयो। वा छींटा के आसपास एक एक अंगुरिया अंग सुद्ध भयो। तब बाई नें अपने बेटा सों कह्यो, जो–ए कौन हो ? जो धोवती धोवत हतो ? जो–मोकों याकी धोवती के छींटा लगे ? ऐसें कहत मात्र ही देखें तो वा ठौर चारि अंगुरिया सुद्ध भई है। तब फिरि कै अपने बेटा सों कह्यो, जो–बेटा ! तू देखि, जो–जा ठौर याकी धोवती कौ छींटा लग्यो है, ताके आसपास सरीर नीकौ भयो। तातें तू देखि ये कोन हैं ? तब वा छोरा ने कह्यो, जो–ये तो कोऊ महापुरुष दीसत हैं। जाके धोवती के छींटा मात्र तें सरीर नीकौ भयो। तब वा बाई ने कह्यो, जो–याकों कहा कहनो ? ये तो बड़े महापुरुष हैं। तातें तू मोकों इन के पास लै जा। सो वा स्त्री कों ऐसें छींटा लगत मात्र ही वैष्णव के स्वरूप कौ ज्ञान भयो। ता पाछें वह स्त्री और वाकौ पुत्र दोऊ जनें वा वैष्णव के पास आय कै वाके पाँवन परे। और वा वैष्णव कों हाथ जोरि कै कह्यो, जो–तुम्हारी धोवती के छींटा मात्र सों देखो मेरे सरीर इतनो नीकौ भयो। ऐसें कहि कै सरीर दिखायो।

भावप्रकाश–या वार्ता में यह संदेह होंइ, जो–वैष्णव की धोवती के छींटा लगत मात्र तें कोढ़ आछौ भयो ताकौ कहा कारन ? तहां कहत हैं, जो–वैष्णव की धोवती धोये तें हृदय सुद्ध होत है। त्रिविध ताप नास होत हैं। सो रानाव्यास की वार्ता में आगें कहि आए हैं। तो कोढ़ जाँई तामें कहा कहनो ? और धोवती के छींटा कौ तो मिष है। परि ये दोऊ मा–बेटा दैवी जीव हैं। लीला में मा कौ नाम 'चंदन' है और बेटा कौ नाम 'चनौठी' हैं। सो ये दोऊ 'उजियारी' की सखी हैं। सो एक समैं चंदन ने उजियारी के आगें रूप कौ गर्व कियो। ता अपराध सों ये भूतल पर आई। कोढ़ भयो। और चनौठी हू वा समै बरजी नाहीं। तातें ये हू भूतल पर आई।

अनेक जन्म पाए। पाछें भागिजोग तें या प्रकार कुनबी वैष्णव कौ मिलाप भयो। तब धोवती के छींटा के मिष वाकों वैष्णव के स्वरूप कौ ज्ञान भयो। तब दीनता भई। ता करि अपराध की निवृत्ति भई।

ता पाछें वा स्त्री ने वैष्णव सों कह्यो, जो–हों पीड़ा घनी घनी भोगत हों। तातें तुम महापुरुष हो। सो तुम कछू ऐसो उपाय करो, जो–यह पीड़ा निवृत्त होंई। ऐसें कहि बोहोत बिलबिलाय कै रोई। तब वा वैष्णव कों दया आई। तब चाचा हरिवंसजी कों यह बात बाई के दुःख की कही। और कह्यो, जो–याकों कछू कृपा कीजें। ता पाछें चाचा हरिवंसजी सों कहि कै वा स्त्री कों, वाके बेटा कों, नाम दिवायो और श्रीगुसांईजी कौ चरनोदक दियो। और वा बाई सों कह्यो, जो–या चरनोदक में और रज मिलाय कै तेरे सरीर कों लगाउ। सो वा बाई कों चरनोदक कौ जल लगत मात्र ही पीड़ा सब निवृत्त भई। और कीड़ा परे हते सो सब मरि गए। वाकों चैंन भयो। तब वा बाई ने कह्यो, जो–अब मैं कहा करों ? तब वा वैष्णव ने कह्यो, जो–तुम मा–बेटा दोऊ जनें हमारे संग श्रीगुसांईजी के दरसन कों श्रीगोकुल चलो। तब उन मा–बेटा ने कह्यो, जो–भले। ता पाछें उन मा–बेटा ने कछूक गहनो पास हो सो सब बैचि कै खरची करि कै अपनो घर काहू भले मानस कों सोंपि कै ता पाछें मा–बेटा दोऊ जनें उन वैष्णवन के संग श्रीगोकुल कों चले। सो थोरेसेक दिन में जाँइ पहोंचे। तब श्रीगुसांईजी के दरसन करे, दंडवत् कियो। पाछें श्रीगुसांईजी सों सब समाचार कहे। तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो–श्रीआचार्यजी कौ बल–प्रताप ऐसोई है। परि वैष्णव के स्वरूप कों जान्यो चाहिए। ता पाछें

श्रीगुसांईजी दोऊन कों नाम निवेदन करायो। पाछें महाप्रसाद की पातरि धरी। पाछें वा वैष्णव ने स्त्री सों कह्यो, जो–श्रीगुसांईजी स्नान करत हैं ता ठौर कौ कीच तेरे सरीर कों लेपन करि। पाछें स्नान करियो। ऐसें नित्य करियो। सो वा स्त्री ने ऐसें ही नित्य किरयो। ऐसें करत दिन पांच सात में सरीर नीकौ भयो, सुंदर। ता पाछें वह मा–बेटा कितनेक दिन तांई श्रीगोकुल में रहि श्रीगुसांईजी के श्रीमुख की कथा सुनी। मार्ग की रीति सब सीखी। पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों आए। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि मा–बेटा ब्रज की परिक्रमा करी। ता पाछें श्रीगुसांईजी सों बिदा होंइ कै वा वैष्णव के संग अपने देस कों आए। सो वह मा–बेटा ब्राह्मन भले वैष्णव कृपापात्र भगवदीय भए। सो वा वैष्णव कुनबी की छींट और संग तासो भए। वाकौ कोढ़ गये। तातें ताद्दसी वैष्णव की संगति ऐसी है। सो वह कुनबी वैष्णव और वह मा–बेटा ब्राह्मन श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ ६४ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक गंगाबाई क्षत्रानी, वह महावन में रहती तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये तामस भक्त हैं। लीला में 'भृंगिनी' इन कौ नाम है। ये 'माधवी' तें प्रगटी हैं, तातें उन के भाव–रूप हैं। भृंगिनी श्रीठाकुरजी के पाछें पाछें डोलति हैं। ऐसी इन की व्यसन अवस्था है। तातें श्रीठाकुरजी इन पर सदा प्रसन्न रहत हैं।

वार्ता प्रसंग–१

सो वह गंगाबाई की माता रूपवंती बोहोत ही सुंदर जाकी

छाँया धरती में परे ऐसी हती । और वाके पास द्रव्य हू बोहोत हतो । सो एक समै श्रीगुसांईजी महावन में पधारे हते । तब एक वैष्णव के घर उतरे । सो वाके निकट वह क्षत्रानी रहति हती । सो वानें श्रीगुसांईजी कों देखे । तब वाकों काम भयो । बोहोत ही आसक्त भई । सो इन श्रीगुसांईजी सों नाम पायो । पाछें नित्य श्रीगुसांईजी कों देखे बिनु चैंन न परें । पति सों छिप कै जाँई । दरसन करे ।

भावप्रकाश–सो वह क्षत्रानी लीला में 'अंतर्गृहगता' हैं । सो वह श्रीठाकुरजी में कामबुद्धि राखति ही । सो यहां हू श्रीगुसांईजी में कामबुद्धि करी ।

सो नित्य श्रीगोकुल आवती । श्रीगुसांईजी कों देखि कै निरखि कै अपने घर कों जाती । परि मन में वाके विषयभाव भयो । तातें नित्य बिचारे, जो–एकांत कदाचित् पाऊं तो मेरो मनोरथ पूरन होंइ । परि दाँव पावे नाहीं । ऐसें केतेक दिन बीते, दाँव पावे नाहीं । ता पाछें एक दिना वानें समयो बिचारि कै श्रीगुसांईजी के छीवे पधारिवे के पहिले ही आप उहां जाँइ कै छिपि रही । ता पाछें श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो–मेरो मनोरथ पूरन करो । तब श्रीगुसांईजी ने नाहीं करी । और कह्यो, जो–या बात में हम नाहीं हैं । ता पाछें वा क्षत्रानी ने घनो आग्रह कियो । तोऊ श्रीगुसांईजी ने नाहीं करी । और कह्यो, जो–या बात में हठ मति करि । नहीं तो तेरो बुरो होइगो ।।

भावप्रकाश–काहेतें, जद्यपि श्रीगुसांईजी आप पूरन पुरुषोत्तम हैं । परि आप आचार्यरू धारन कियो है । तातें आप सास्त्रन की मर्यादा कौ पालन करत हैं । सो सास्त्रन परस्त्री–गमन निषिद्ध है । और दूसरो अभिप्राय यह है, जो–भक्तिमार्ग में काम बाधक है काहेतें, जो–विषय सों आक्रांत जीवन के हृदय में प्रभुन कौ आवेस सर्वथा होत नाहीं । ता

श्रीआचार्यजी 'सन्यासनिर्णय' ग्रंथ में कहत हैं। सो श्लोक–

"बिषयाक्रांतदेहानां नावेशः सर्वदा हरेः।"

सो या प्रकार भक्तिमार्ग में काम कों बाधक कह्यो है। सो आप तो भक्तिमार्ग की मर्यादा के रक्षक हैं। तातें मर्यादा विरुद्ध कार्य कैसें करे ? तासों या प्रकार कह्यो।

और लीला के भाव में हू देखें तो प्रभु की ईच्छा होंइ तब अंतर्गृहगतान के साथ प्रभु रमन करत हैं। सो अंतर्गृहगता स्वतंत्र भक्त नाहीं है। जासों उन की ईच्छान के अनुसार प्रभु उन कों सुख देत नाहीं। काहेतें, उन जार–भाव करि प्रभुन कौ भजन कियो। तातें सायुज्य प्राप्त भई। तब उनकी स्थिति प्रभुन के हृदय में भई। तातें जब प्रभु बिचारें, जो–अब या सम इन भक्तन कों स्वरूपानंद कौ अनुभव बाह्य रीति सों करावनो है, तब उन कों प्रभु आप हृदय में तें बाहिर काढत हैं। और तिनसों प्रभु आप अपनी ईच्छा सों रमन करत हैं। सो इहां वा क्षत्रानी ने अपनो मनोरथ कियो। सो प्रभुन ने नाहीं करी। काहेतें, यह कार्य सायुज्य मुक्ति वारे भक्तन की मर्यादा सों विरुद्ध है। या प्रकार श्रीगुसांईजी नाहीं किये।

तब वानें श्रीगुसांईजी सो दीनता करि कह्यो, जो–महाराज ! आप प्रभु हो बड़े हो। मेरो मनोरथ पूरन न करो तो और कौन करेगो ? ईश्वर कों तो दास कौ मनोरथ पूरन कर्‌यो चहिए। ऐसें बोहोत ही दीन अस्तुति–बचन कहे। चरनारविंद पर माथो मेलि कै रही। और कह्यो, मेरो मनोरथ आप सों निरूपन कर्‌यो है। ता पाछें आप प्रभु हो अपनी ओर देखि कै भावें सो करो। हों तो आप की सरनि आई हों। तब ऐसी दीनता सुनि कै श्रीगुसांईजी आप कहे, जो–तू अब तो घर जा। तेरो मनोरथ तेरे घर बैठे ही पूरन होइगो, ऐसो मेरो बचन है। तातें तू अब तो अपने घर कों जा।

भावप्रकाश–यामें यह जतायो, जो–अब क्षत्रानी ने श्रीगुसांईजी कों प्रभु जानें। काहेतें, दीन बचन कहि सरनि मार्ग कौ ग्रहन कियो। जार–भाव काम–बुद्धि गौन भई। तब श्रीगुसांईजी आप भक्तिमार्ग की,सरनमार्ग की मर्यादा राखन कों ऐसें बचन कहे, जामें सास्त्रन की मर्यादा, लीलान की मर्यादा दोऊ रहे। तातें भक्त कौ मनोरथ पूरन करिवे कौ बचन दिये। सो प्रभु गीताजी में कहे हैं, सो श्लोक–

"ये यथा मां प्रपद्यन्ते तां स्तथैव भजाम्यहम्"

यामें यह जतायो, जो कोऊ मोकों जा भाव करि भजत है, ताकों मैं हू ता भाव करि भजत हूं। सो यह भक्तिमार्ग की रीति है। तातें श्रीगुसांईजी आप वा बचन कौ प्रतिपालन करत है। सो नंददासजी गाए हैं। सो पद–

सारंग

जयति रूक्मिनिनाथ पद्मावती–प्रानपति विप्रकुल–छत्र आनंदकारी।
दीप बल्लभवंस जगत निस्तम करन कोटि उडुराज सम तापहारी॥
जयति भक्तजन–पति पतित पावन करन कामीजन कामना पूरनचारी।
मुक्ति–कांक्षीय जन भक्तिदायक प्रभु सकल सामर्थ्य गुन गनन भारी॥
जयति सकल तीरथ फलित नाम स्मरन मात्र बास ब्रज नित्य गोकुल बिहारी।
'नंददासनि' नाथ पिता गिरिधर आदि प्रकट अवतार गिरिराजधारी॥

सो या पद में नंददासजी कहे हैं, जो 'कामीजन कामना पूरनचारी'। तातें जो जैसी कामना करत है ताकों प्रभु आप ता रीति सों पूरन करत हैं। याहीतें श्रीगुसांईजी आप वा क्षत्रानी कों कहे, जो–'तेरो मनोरथ तेरे घर बैठे ही पूरन होइगो'। काहेतें ? आप पूरन पुरुषोत्तम हैं, सर्व सामर्थ्ययुक्त हैं।

पाछें वह क्षत्रानी अपने घर कों आज्ञा मांगि कै जात भई। ता पाछें वह क्षत्रानी एक दिन सोवत हुती। तब रात्रि सोवत तें स्वप्न में उन जान्यो, जो–श्रीगुसांईजी सों मेरो संग भयो। ता पाछें वाकों ताही दिन सों गर्भ स्थिति भई। पाछें गर्भ के दिन पूरन भए तब वा क्षत्रानी कों बेटी जन्मी। सो महारूप की रासि भई। ता पाछें वाकौं नाम गंगाबाई धर्‌यो।

भावप्रकाश–इहां यह संदेह होंइ, जो–स्वप्न में संग होंइ तातें गर्भ कैसें रहे ? तहां कहत हैं, जो–सास्त्रन में सृष्टि चार प्रकार की कही हैं। स्वेदज, अंडज, वीर्यज और स्वप्नसृष्टि। तातें स्वप्न हू के संग तें सृष्टि होत है। तामें आश्चर्य नाहीं। और श्रीगुसांईजी आप पूरन पुरुषोत्तम हैं। सर्व सामर्थ्ययुक्त हैं। तातें या प्रकार स्वप्न द्वारा वाकौ मनोरथ पूरन कियो। जामें आचार्य–मर्यादा भक्ति–मर्यादा दोऊ रही।

पाछें वह कन्या कछूक बड़ी भई। तब श्रीगुसांईजी पास नाम निवेदन करवायो। पाछें इन श्रीठाकुरजी की सेवा पधराई। सो भली वैष्णव कृपापात्र भगवदीय भई। ता पाछें केतेक दिन में

गंगाबाई के माता–पिता मरि गए। तब वह घर में इकली रही। सो नित्य श्रीठाकुरजी की सेवा सों पहोंचि कै पाछें संध्या समै वहां तें चले। सो श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुल आवें। सो रात्रि कों श्रीगुसांईजी याकों श्रीसुबोधिनीजी श्रीभागवत कहते। सो वह सुनती। ता पाछें तत्काल गंगाबाई वाही भाव के कीर्तन करि श्रीगुसांईजी कों सुनावती। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी गंगाबाई की ऊपर बोहोत ही प्रसन्न रहतें। ता पाछें गंगाबाई रात्रि कों वहांई सोवती। पाछें सवारे उठि कै श्रीयमुनाजी में स्नान करि कै श्रीगुसांईजी कों दरसन दंडवत् करि कै, श्रीगुसांईजी की सेवा करि कै, श्रीठाकुरजी के दरसन करि कै सब वैष्णवन कों भगवत्स्मरन करें, पाछें महावन जाँई। पाछें श्रीठाकुरजी कों जगाय भोग धरे, सिंगार करें, रसोई करें। ता पाछें श्रीठाकुरजी कों राजभोग धरे। समै भए भोग सराय, आर्ति करि अनोसर करे। पाछें वैष्णवन कों बुलाय कै महाप्रसाद लिवावें। ऐसें नित्य करें। और कोऊ वैष्णव काहू दिना न मिले तो वा दिना आपु उपवास करें।

वार्ता प्रसंग–२

और गंगाबाई ने 'श्रीविट्ठल गिरिधरन' की छाप के कीर्तन छंद बोहोत ही किये हैं। और अपने श्रीठाकुरजी तथा श्रीगो–वर्द्धननाथजी आप उन तें सानुभाव हते। प्रत्यच्छ बातें करते, बोलते, मांगि लेते, अरोगते, ऐसी कितेक वार्ता हैं। सो श्रीगुसांईजी, तथा और बालक बहू–बेटी, गंगाबाई की घनी कानि राखते।

भावप्रकाश– सो गंगाबाई सौ बरस ऊपर पांच च्यारि अधिक लों भूतल पें रही। सो एक दिन पात्साह कौ उपद्रव घनो भयो। श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगिरिराज पर्वत सों उठे। और श्रीठाकुरजी हू श्रीगोकुलतें उठे। सो मेवाड़ में आए। ता समैं गंगाबाई साथ हुती। सो मारवाड़ में 'रूपनगर' कृष्णगढ़ आए। तब उहां तें आगें चले। तब थोरीसी दूरि मार्ग में श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ रथ अटक्यो। सो आगें चले नाहीं। सो श्रीगुसांईजी के बालक तथा वैष्णव घने ही पचिहारे। परि रथ सरके नाहीं। तब गंगाबाई की गाड़ी पाछें हुती। तब काहू बालक कह्यो, जो–गंगाबाई कों बुलाउ, जो–लरिका कों समुझावें। ता पाछें गंगाबाई आई। तब रथ के टेरा दूरि करि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के कान में कह्यो, जो–तेरे मन में कहा है? यहां सगरे कौ मूड कटावनो है? पृथ्वीपति असुरन की फोजें पाछें चली आवत हैं। और तुम तो हठ लै कै बैठे हो। सो आगें चलत क्यों नाहीं? ऐसें समुझाय कै कह्यो। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कह्यो, जो–मोकों कमल मँगाइ देऊ, तो रथ चले। तब गंगाबाई कह्यो, जो–इहां कमल कहां है? तब श्रीनाथजी ने कह्यो, जो–या पर्वत के पीछे तलाव है। तहां कमल बोहोत हैं। सो मोकों मँगाय देहु। तब गंगाबाई नें सब बालकन सों कह्यो, जो–लरिका नें कमल के लिये हठ कर्‌यो है। ताके लिये रथ अटक्यो है। तातें या पर्वत के नीचे एक तलाव है। सो ब्रजबासी दोइ पठवाय कै उहां तें कमल मँगावो। ता पाछें पौहोंकरजी (पुष्करजी)के तलाव में तें ब्रजबासी पठवाई कै कमल मँगाय कै गंगाबाई कों दिये। सो गंगाबाई नें कमल लै कै श्रीगोवर्द्धननाथजी कों दीने। और कह्यो, जो–बावा! अब इहां तें बेगि ही चलिए। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ रथ चल्यो। सो जोधपुर आइ कै बसे। ता पाछें जोधपुरवारे राजा ने घनो आदर सन्मान कर्‌यो। राखिवे कौ आग्रह बोहोत कियो। परि श्रीगोवर्द्धननाथजी नाहीं रहे। ता पाछें उहां तें चले सो थोरेसेक दिन में मेवाड़ पधारे। ता पाछें राना उदेपुरवारे साम्हें आइ कै पधराइ लै गए। पाछें बोहोत आग्रह करि राखे।

सो गंगाबाई श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही। तातें इनकी वार्ता बोहोत हैं। सो कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ ६५॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक राजा जोतसिंघ, सो वह दक्षिन में पंढरपुर के उरें कोस बीस ऊपर रहतो, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'कालिंदी' है। ये 'माधवी' तें प्रगटी हैं, तातें इन के भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग–१

सो वह राजा प्रथम तो एक 'रासाई' देवी कौ उपासक हतो। सो वह देवी की पूजा करतो। सो बोहोत वैभव संयुक्त करतो। ऐसें बोहोत दिन बीते। सो वह राजा कौ एक प्रोहित हतो। सो वह कोस पचीस पर एक गाम हतो तहां रहतो। वा प्रोहित के एक बेटा हुतो। सो वह श्रीगुसांईजी कौ सेवक हुतो। परम कृपापात्र वैष्णव हुतो। सो केतेक दिन को भगवत् इच्छा तें वाकौ पिता मर्‌यो। ता पाछें केतेक दिन में भगवत् इच्छा तें वह पुत्र राजा पैं आयो। वाकी माता ने पठवायो। सो राजा के गाम आय पहोंच्यो। ता पाछें राजा के द्वार गयो। तब राजा देवी के देवालय में हुतो। सो इन ने द्वार पै पूछ्यो। जो–राजा कहा करत हैं ? तब द्वारपाल ने कह्यो, जो–राजा तो देवी के देवालय में है। वहां तें बोहोत अवेरो आवेगो। और तुम तो ब्राह्मन हो, प्रोहित हो। तुम कों जरूर होंइ तो देवालय में जाहु। तब वानें मन में बिचारी, जो–भलें ! देवालय में देखों तो खरो, जो–कहा दैवत है ? वैभव कहा है ? ऐसें बिचारि कै प्रोहित कौ पुत्र देवालय में गयो। ता समैं राजा देवी की पूजा करि कै कंचन थार में कपूर धरि कै आर्ति करत हुतो। ता समै अनेक बाजे बाजत हुते। और गंधर्व गान करत हुते। और सब लोग आर्ति गावत हुते। और देवी कों भूषन वस्त्र उंचे बहु मोल के पहराए हुते। और जड़ाऊ सिंघासन धर्‌यो है। और कंचन मनि मुक्ता सों देहरो जगमग होंइ रह्यो है। और अनेक वैभव कौ पार नाहीं, कहां तांई कहिए ? सो वह प्रोहित के बेटा कों सब राजा कौ प्रोहित जानि कै आगें आनि

ठाढ़ो कियो। सो देहरी के निकट भीतर आप राजा आर्ति बड़ी बेर लों करत हैं। इतने ही प्रोहित के बेटा ने देवी कों देखी। ता समै राजा ने आर्ति तो और मनुष्यन कों दीनी। और आपु अनेक बिनती स्तुति करन लाग्यो। और कह्यो, जो–हे देवी ! तो समान और दैवत त्रिभुवन में नाहीं। ऐसें बात–बचन प्रोहित के बेटा ने सुनि कै मूड हलायो। तब मूड हलावत राजा ने देख्यो। ता पाछें राजा सेवा–पूजा तें पहोंचि कै देहरा के द्वार कों तारौ मारि कै अपने घर कों गयो। तब उंचे आसन बैठ्यो। इतने ही प्रोहित–पुत्र आयो। तब राजा प्रोहित जानि कै उठि ठाढ़ो भयो। और आसन दैकै बैठार्‍यो और पूजा कीनी। आदर बोहोत ही कीनो। ता पाछें वा राजाने वा प्रोहित सों पूछ्यो, जो–मेरी बिनती सुनि कै देखि कै तुम मूड काहेकों कहा समुझि कै हलायो ? तब वा प्रोहित ने कह्यो, जो–यह बात तो न कहोंगो। और कहों तो तुम बुरो मानो। तब राजा ने कह्यो, जो–यह बात तो सर्वथा कही चहिए। और हों बुरो नाहीं मानोंगो। प्रसन्न होऊंगो। मेरो बचन है। तब बोहोत ही आग्रह कीनो। तब वा प्रोहितनें सब कौ दूरि करवाइ कै ता पाछें राजा तें कह्यो, जो–तुम बिनती में कह्यो, जो–हे रासई देवी ! तो समान और देवी त्रिभुवन में नाहीं। तातें मैं मूड हलायो है। ऐसो बचन सुनि कै। काहेतें ? दैवत तो एक त्रिभुवन में श्रीविट्ठलनाथजी में हैं, जिनके सेवक के रासाई सारिखी दासी अनेक परी हैं। तब राजानें कह्यो, जो–ये कैसें मानों ? तब प्रोहित नें कह्यो, जो–तुम पंढरपुर चलो, तो हों दिखाऊं। ता पाछें राजा असवारी दल सब साजि कै वा प्रोहित

कों सब साथ लै कै पंढरपुर कों चल्यो ! सो पंढरपुर पहोंचे । तब श्रीविट्ठलनाथजी कौ दरसन कर्‌यो । तब राजाने मूड हलायो, जो–तुम ऐसी ही बड़ाई करत हो ? कहां मेरी रासाई कौ वैभव और इहां तो उत्तम वस्त्र हू नाहीं । तब वह प्रोहित सुनि कै चुप करि रह्यो । ता पाछें राजा तो मंदिर बाहिर निकर्‌यो । तब वा प्रोहित तो पाछें रहि कै श्रीविट्ठलनाथजी सों कर जोरि कै बिनती करी । जो–महाराजाधिराज ! राजा कों वैभव संयुक्त दरसन दीजें । और याकौ संदेह दूरि करि अंगीकार कीजें । ऐसें कहि कै प्रोहित हू राजा के डेरा आयो । सो राजा कौ दल बोहोत हुतो । तातें बाहिर डेरा कीने हुते । तब इतने ही तुरत श्रीविट्ठलनाथजी ने इहां बन में थोरीसी दूरि एक बड़ो नगर बसायो, अद्‌भुत सिद्ध कर्‌यो । और एक गृहस्थ साहूकार कौ भेख करि कै एक सुंदर सुखपाल में बैठि कै राजा पास मिलिवे कों आए । तब बड़ो प्रताप तेजस्वी पुरुष अलौकिक रूप गुन सील गुनातीत सील सर्वोपरि आभरन भुषित सूंदर अमूल्य वस्त्र भूषित श्रीमुखकी कांति रवि की समान ऐसो स्वरूप प्रताप देखि कै राजा उठि कै ठाढ़ो भया । उंचे आसन बैठारे । राजा हाथ जोरि कै सन्मुख बैठ्यो । और प्रोहित हू स्वरूप तेज पहिचानि दंडवत् करि कै बैठ्यो । पाछें राजा ने पूछ्यो, जो–आप कहां ? कौन ? कृपा करि कहिये ? तब साहूकार ने कह्यो, जो–तुम सब हमारे घर पधारो । हमारो मनोरथ है, जो–तुम्हारी पहुनाई करें । यों कहि सबन कों नोंते । तब प्रोहित ने कह्यो, जो–राजा ! सर्वथा इनके घर चलो । उहां तुम को एक

कौतिक दिखाउंगो। ता पाछें राजा सादी असवारी सों उन के साथ चल्यो। सो वा नगर में सब आए। तब नगर की सोभा देखि कै घनो प्रसन्न भयो। ता पाछें उन साहूकार ने अपने मंदिर के निकट एक वाड़ो मंदिर घनो सुंदर हतो तहां राजा कों बैठारे। सो स्थल और वैभव आसन देखि कै राजा चकित भयो। सो ऐसो अद्‌भुत कहूं देख्यो नाहीं और सुन्यो नाहीं। ऐसो जो–बस्तू और लोक और स्त्री और स्थल सब विचित्र ही हैं। ता पाछें राजा और प्रोहित एक झरोखा में बैठे हैं। सो अनेक सहस्त्र स्त्री घनी सुंदर सर्व सिंगार आभरन वस्त्र भूषित दिव्य सो हाथन कंचन घट लिये जल भरत ही। तब उन में रासाई हू जल भरि कै आई। सो राजा उन कौ रूप देखि कै चकित होंइ रह्यो। तब वह प्रोहित बोल्यो, जो–वह हरी चुनरी वाली स्त्री कौन हैं, तुमने पहिचानी ? तब राजा ने कह्यो, जो–मैं तो नाहीं पहिचानी। तब प्रोहित ने कह्यो, जो–तुम चलो, नीचे उतरि कै मार्ग में ठाढ़े रहें ! वे जल भरि कै फिरि आवेगी सो तुम कों दिखाउंगो। तब मार्ग में आइ कै राजा और प्रोहित दोऊ ठाढ़े रहे। इतने ही वह स्त्री सब पाछी जल भरि कै आई। तब सबन कों देखी। पाछें रासाई आई। तब वाकौ पल्ला गहि प्रोहित नें पकरि कै ठाढ़ी करि कै वासों पूछ्यो, जो–तुम कौन हो ? और राजा कों दिखाइ कै कह्यो, जो याकौ मुख देखि और पहिचानो। तब वह स्त्री हू राजा कों पहिचानि कै लज्जित भई। तब राजाने कह्यो, जो–तुम तो रासाई हो, तुम आई कहांतें ? और ये जल कौन कौ भरत हो ? तब रासाई बोली, जो साँची कहूं जो मानो

तो। और ये प्रोहित सब जानत हैं। तातें मिथ्या चले हू नाहीं। ता पाछें रासाई कह्यो, जो–यह साह हमारो धनी हैं। हम सब देवी इन के दासन की दासी हैं। सो आज इनके संभ्रम है। सो हम सब जनी जल भरति हैं। और सदैव हम इनकी तथा इन के दासन की सेवा में रहति हैं। ता पाछें वा प्रोहित नें वाकों छोरि दीनी। पाछें वह जल लै कै गई। इतने ही राजा कों बुलावो आयो। तब राजा तथा प्रोहित और राजा के लोग सबन कों कंचनथार बेला में अनेक साग पाक मनोहर परम सुंदर भोग बिलास सों प्रसाद लिवायो। ऐसें लै कै सब दल मनुष्य और अश्व, गज आदि सब असवारी मात्र, सबन कों एक ही सारिखो प्रसाद लिवायो। घास दानो नाहीं। दाना की ठौर सबन कों मिष्टान्न पकवान खवायो। यथेष्ठ यथारुचि सों। ता पाछें सबन कों सुगंध बीरा दिये। ता पाछें राजा बिदा होंई कै अपने डेरा गयो। तब रात्रि भई तब राजा सोई रह्यो। ता पाछें प्रातःकाल उठि कै देखे तो वह नगर हू नाहीं और वहां कछू नाहीं। तब राजा ने प्रोहित सों पूछ्यो, यह कहा प्रकार है ? तब प्रोहित ने कह्यो, जो–हों तुम सों कहत हुतो रासाई देवी की बात और श्रीविट्ठलनाथजी की महिमा। सो तुम प्रत्यच्छ देखी। सो मैं श्रीविट्ठलनाथजी सों बिनती करी, तातें तुम कों ऐसौ कौतिक दिखायो।

ता समै राजा कौ विरह–ताप भयो और प्रोहित के पाँवन परि रह्यो। और कह्यो, जो–मोकों वेसें ही स्वरूप के दरसन करावो। तब प्रोहित ने कह्यो, जो वह स्वरूप तो अड़ेल जाऊ तब उहां

देखो। उहां विट्ठलनाथजी अवतार प्रगट भयो है। तातें उहां दीसे। तब राजा कों आतुरता बाढ़ीं। तब उहां तें मजलि चले। सो रात्रि–दिन करि कै थोरेसेक दिना में अड़ेल जाँइ पहोंचे। ता पाछें श्रीगुसांईजी कौ दरसन कर्‍यो। सो पहिले जैसें वा घर में देखे वेसें ही स्वरूप कौ दरसन भयो। ता पाछें श्रीगुसांईजी सों प्रोहित ने बिनती करी, जो–महाराज! कृपा करि कै राजा कों नाम निवेदन कराईए। ता पाछें श्रीगुसांईजी ने राजा कौ नाम निवेदन करायो। पाछें राजा ने उहां रहि कै मार्ग की रीति सब सीखी। पाछें श्रीगुसांईजी पास बिदा होत समै राजा नें भेंट बोहोत करी। और सेवा कों एक स्वरूप पधरायो। ता पाछें श्रीनाथजीद्वार आय कै श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ दरसन कर्‍यो। पाछें ब्रज परिक्रमा करि कै एक दिन और रहि अपने देस कों चले। ता पाछें जैसें वा प्रोहित नें कह्यो, ताही रीति सब करन लाग्यो। वे रासाई देवी एक ब्राह्मन कों दीनी और श्रीठाकुरजी कौ स्वरूप श्रीगुसांईजी के पास तें ल्यायो हतो सो मार्ग की रीति सों उन की सेवा करन लाग्यो। और प्रोहित मिलि कै सेवा करें। रात्रि में बैठे दोऊ जनें भगवद् वार्ता करें। ऐसें करत श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावन लागे, प्रत्यच्छ बोलें, बात करें,। ऐसी घनीक बातें हैं। सो सब वह, प्रोहित वैष्णव की संगति सों भयो। तातें वह प्रोहित की हू राजा बोहोत सी मर्यादा राखतो।

भावप्रकाश–या वार्ता में यह जतायो, जो–वैष्णवन की संगति ही तें मोक्ष पदार्थ हैं। सो सर्वथा तादृसी वैष्णवन कौ संग करनो, जातें सब बात स्फुरे। और सब सुख होंई। तादृसी वैष्णवन के प्रभु सर्वथा आधीन रहत हैं। उन कों अनुसरत हैं। तातें उन की कृपा तें याही देह सों भगवल्लीला कौ हू अनुभव होत है। और तो कहा कहैं? नूतन देह हू प्राप्त होत है। तातें

सर्वथा ऐसें वैष्णव कौ संग करनो। सेवा करनी।

सो वे जोतसिंघ राजा श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हो। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ॥ ६६ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक ब्राह्मन प्रोहित, जोतसिंघ राजा कौ, सो पंढरपुर तें कोस पच्चीस पर एक गाम है, तहां रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'सौभाग्य–सुंदरी' हैं। ये श्रीयमुनाजी के यूथ की हैं। श्रीयमुनाथी की आज्ञा पाई, भक्तन के भाग्य–सौभाग्य कों सिद्ध करति हैं। तातें सबकों प्रिय हैं। सो 'सौभाग्य–सुंदरी' 'हरनी' तें प्रगटी हैं तातें इन के भाव–रूप हैं।

ये दक्षिन में पंढरपुर तें कोस पच्चीस पर एक गाम है तहां एक ब्राह्मन प्रोहित के उहां जन्म्यो। सो वह ब्राह्मन राजा जोतसिंघ कौ प्रोहित हतो। सो यह बेटा बरस बाईस कौ भयो तब एक रात्रि इन कों स्वप्न आयो। तामें श्रीविट्ठलनाथजी के दरसन भए। सो श्रीविट्ठलनाथजी ने वाकों दिव्य ऐश्वर्य सहित दरसन दिये। पाछें नींद खुली, तब वाकों चटपटी लगी, श्रीविट्ठलनाथजी के दरसन की। सो सवेरो होत ही ये पंढरपुर कों चल्यो। सो घरी छह में पंढरपुर आइ पहोंच्यो। तब इन श्रीविट्ठलनाथजी के दरसन किये। सो स्वप्न कौ वह ऐश्वर्य याकों न दीस्यो। तब तौ ये उदास व्है उहांई बैठि रह्यो। सो यानें दिनभर कछू खायो नाहीं। पानि हू न पियो। बोहोत विरह–ताप कियो। ऐसें करत दिन तीन बीते। तब श्रीविट्ठलनाथजी या ब्राह्मन कों स्वप्न में कहे, जो–कान्हि अड़ेल तें श्रीगुसांईजी इहां पधारत हैं। उन की तू सरनि जइयो। तब तोकों में मेरे अलौकिक ऐश्वर्य कौ दरसन कराऊंगो। तातें तू अब कछू खाँइ पी लै। तब या ब्राह्मन ने श्रीविट्ठलनाथजी की आज्ञा मानि जलपान कियो। पाछें दूसरे दिन श्रीगुसांईजी पंढरपुर पधारे। तब आप विट्ठलनाथजी के दरसन कों पधारे। सो या ब्राह्मन कों श्रीगुसांईजी आप श्रीविट्ठलनाथजी के रूप सों दरसन दिये। तब तो यह ब्राह्मन प्रसन्न व्है बिनती कियो, जो–महाराज! मोकों सरनि लीजिए। तब श्रीगुसांईजी मुसिकाइ कै आज्ञा किये, जो–ब्राह्मन हम तोकों जानत हैं। श्रीविट्ठलनाथजी की तो पर कृपा भई है। तातें तू बेगि स्नान करि अपरस ही में आऊ। हम तोकों यहांई सरनि लेइंगे। पाछें डेरा जाइंगे। तब तो ब्राह्मन स्नान करि अपरस ही में आय ठाढ़ौ रह्यो। तब श्रीगुसांईजी आप उनकों नाम–निवेदन करवाए। सो नाम–निवेदन हौत मात्र या ब्राह्मन कों दिव्य दृष्टि प्राप्त भई। सो यांकों विट्ठलनाथजी के अलौकिक ऐश्वर्य कौ दरसन भयो। पाछें ब्रजलीला कौ अनुभव

होन लाग्यो। तब यह रसमग्न होंइ गयो। तब श्रीगुसांईजी आप या ब्राह्मन कों अपनो चरनोदक दें स्वस्थ कियो। पाछें आप आज्ञा करें, जो-ब्राह्मन अब तुम अपने घर जाऊ, वहां तुम कों ऐसोई दरसन नित्य होइगो। सो मानसी में मगन रहियो। ज्यादा काहू सों बोलियो मति। दैवीजीव जो कोऊ दीसे ताकों उपदेश करियो। और काहू सों कछू व्यवहार राखियो मति। ता पाछें वह ब्राह्मन श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् करि बिनती कियो, जो-महाराज की कृपा सों यह सुख प्राप्त भयो। नाँतरु मैं कछू लाइक नाहीं हतो। सो आप प्रभु हों जैसें आज्ञा करो तैसें करों। पाछें श्रीगुसांईजी की आज्ञा पाइ यह ब्राह्मन अपने घर गयो। ता पाछें श्रीगुसांईजी उहां ते विजय किये। सो दक्षिन पधारे। पाछें या ब्राह्मन ने राजा जोतसिंघ कों उपदेस कियो। श्रीविट्ठलनाथजी के ऐश्वर्य के दरसन करवाई वैष्णव कियो। सो बात ऊपर कहि आये हैं।

वार्ता प्रसंग-१

सो वा राजा जोतसिंघ के एक पुत्र भयो। तब छटे दिना छटी, वाके अदृष्ट में लिखि कै निकसी। तब प्रोहित ने छटी कौ पल्लो पकरि कै ठाढ़ी राखी। तब पूछ्यो, जो-तैं या राजा के पुत्र के अदृष्ट में कहां लिख्यो है? तब छटी नें कह्यो, जो याके राज तो नहीं लिख्यो है। और सिकार करि कै नित्य एक पसु मार लावेगो। ताकों बेचि कै निर्वाह करेगो। ऐसें कहि कै वह छटी गई। ता पाछें वा प्रोहित ने सब लिखि राख्यो। पाछें केतेक दिन कों भगवद् इच्छा तें वा राजा कों दूसरो पुत्र भयो। ताके छटी के दिना फेरि उहां जाँइ कै प्रोहित बैठ्यो, जो-फिरि कै छटी आई। सो अदृष्ट में लिखि कै निकसी। तब वा प्रोहित ने वाकौ पल्लो पकर्यो। तब फिरि के कह्यो, जो-याके अदृष्ट में कहा लिख्यो है? तब वा समै छटी ने कह्यो, जो-याके हू राज नाहीं। और कछू उद्यम कर सके नाहीं। यातें एक बाँडीया बलद याके द्वारे सदा रहेगो। सो बलद पर लकरी के भारा लावेगो। सो बेचि कै

निर्वाह करेगो। ता पाछें बिधिना तो गई। तब वा प्रोहित ने वेहू लिखि राख्यो। ता पाछें केतेक दिन कों राजा के एक बेटी भई। तब फिरि कै बिधिना सों वा प्रोहित ने पूछ्यो, जो-उहां कहा लिख्यो है? तब बिधिना ने कह्यो, जो- यह वेस्यावृत्ति करेगी। सो एक बिसनी याके आय कै रहे। तामें निर्वाह करेगी। ता पाछें प्रोहित ने वेहू दिन लिखि राखे। ऐसें सब बात लिखि राखी।

पाछें भगवद् इच्छा तें वह राजा तो मर्‌यो। ता पाछें और राजा नें वाकौ गाम लूट्‌यो मार्‌यो। सो लोग तो भागे। तब राजा के बेटा बेटी हू भागे। मन में डरपे, जो-मति कोऊ हम कों बंदीखाने में रोके। तातें भागे। सो मिलि कै एक संग हू न भागे। सो कोऊ कित, कोऊ कित ऐसें भागे। सो ये तीन भाई-बहनि हू न्यारे न्यारे गाम में रहे। सो केतेक दिन पाछें वा प्रोहित के मन में उन की आई। जो-वे तीन जीव तो दैवी हैं। और वह दुःख पावत होइगें। तातें उन की खबरि लैते तो भली।

भावप्रकाश- काहेतें, वे तीनों लीला में 'सौभाग्य-सुंदरी' की सखी हैं। उन कौ नाम 'लीला', 'वीना' 'प्रवीना' हैं। ये तीनों श्रीयमुनाजी के यूथ की हैं। सो वा प्रोहित कों इन के स्वरूप कौ ज्ञान हैं, तातें दया आई।

ता पाछें वह प्रोहित उहां तें चल्यो। सो जहां वह बड़ो पुत्र रहतो ता गाममें आयो ता पाछें वाके स्थल कों ढूंढ़ि कै वाके घर गयो। ता समै वह राजा कौ बेटा सिकार खेलि कै आवत हुतो। सो प्रोहित कों देखि कै मन में बोहोत ही दुःख करि कै रोयो, और कह्यो, जो-मेरी यह अवस्था है। ता पाछें प्रोहित कों आसन पर बैठारि कै आज्ञा मांगि कै सिकार बेचन कों गयो। तब वहां बेचि

के पैसा चारि ल्यायो। सो पैसा प्रोहित आगें धरे और कह्यो, जो-हों पैसा ल्यायो हूँ। सो सीधो सामग्री ल्याइ कै रसोई करि कै भोजन करो। तब प्रोहित ने कह्यो, जो-यह पैसा तो तुम लै कै निर्वाह तुम्हारो करो। और मोकों तो काहू बातकी न्यूनता नाहीं। ता पाछें प्रोहित ने समाचार सब पूछे। तब वाने समाचार सब कहे, जो-नित्य एक सिकार ल्यावत हों। सो बेचि कै तीन चारि आवत हैं, कबहूं दोऊ आवत हैं। ऐसें निर्वाह करत हों। तब प्रोहितने कह्यो, जो-सवारें तू सिकार कों जाँइ तब मोसों कह्यो। हों तेरे संग चलूंगो। और हों कहों ता पर तू चोट करियो। ता पाछें रात्रि कों सोय रहे। तब प्रातःकाल उठि कै प्रोहित हू वाके संग चल्यो। सो मार्ग में पसु घने घने मिले। तब प्रोहित कों पूछ्यो, जो-इन कों हों मारों? प्रोहित ने नाहीं करी। जो-कहे, मति मारे। ऐसें करत एक जल कौ बड़ो स्थल हुतो। उहां एक वृक्ष नीचें छाँया में बैठें दोऊ। तब वाके मोहोंड़े आगें और पसु आवें। तब वह प्रोहित सों कहे, जो-सुनो, याकौ अरध रुपया आवेगो। तब प्रोहित नें नाहीं करी। पाछें घनें घनें आवें तोऊ प्रोहित नाहीं करे। ऐसें करत हस्ती आइवे की बेर भई। तब दोऊ जनें वा रूख पर चढ़ि कै बैठें। तब बोहोत हस्ती आए। तब वा प्रोहितनें तामें कौ एक हस्ती दिखाय कै कह्यो, जो-या हस्ती कों मारि। तब वा रजपूत राजा के पुत्र नें बान चलायो, सो वा हस्ती कों लाग्यो। तब वह हस्ती गिर्यो। ता पाछें और हस्ती तो निकरि गए। पाछें वा रूख पर तें उतरि कै वा प्रोहित ने कह्यो, जो याकौ मस्तक चीरि कै याकै मोती लेहु।

सो वाने मोति काढ़ि लीने। पाछें मोती लै कै दोऊ जनें घर आए। तब प्रोहित ने कह्यो, जो-अब या मोतिन कों तुम बेचि आओ। रुपैया दस हजार आवे तो दीजो। ता पाछें मोती बेचे। ताके दस हजार रुपैया आए। तब आनि कै प्रोहित के आगें राखे। तब प्रोहित ने कह्यो, जो-सुनि, यह द्रव्य सुख तें खाँइ कै आनंद करो। हमारे तो कछू चहिए नाहीं। तुम तुम्हारे खरचो, खाओ। और ऐसी रीति कौ हस्ती आवे तब तुम वाकों मारियो। और काहू पसु कों मति मारो। तेरे हाथ मोती आवेगो नाहीं। तातें वाही कों मारियो। ऐसें कहि के सिखि दीनी। सो वह राजा कौ पुत्र वैसें ही करे। पाछें प्रोहित दिन चारि उहां रह्यो। ता पाछें प्रोहित नें वासों पूछ्यो, जो-तेरो छोटो भाई कहां है? तब वाने ठिकानो बतायो। तब प्रोहित उहां तें बिदा होइ कै चल्यो। सो जहां वह राजा कौ पुत्र रहत हतो ता गाम में आय कै वाके स्थल जाँइ कै, उन कों पूछ्यो। सो वह कहूं गयो हतो, सो वाके द्वारें बैठि रह्यो। ता पाछें केतेक बेरि कों वह लकड़ा बलद पर लादि कै आयो। तब प्रोहित कों देखि कै मन में खिस्याई कै दुःख पायो। ता पाछें मिल्यो, भेट्यो। कुसल समाचार आपुस में पूछे। तब वह राजा के पुत्र ने समाचार सब कहे, जो-एक बाँडीया बलद है सो याके ऊपर काष्ट ल्याय कै बेचि कै निर्वाह करत हों। तब प्रोहित ने कह्यो, जो-आज तू काष्ट हू बेचियो और बलद हू बेचियो। बलद पाछौ घर कौं मति ल्यायो। तब ऐसो सुनि कै वाकों दुःख लाग्यो। तब मन में बिचार्यो, जो-देखो, मेरे अदृष्ट की बात है। अब बलद बेचोंगो तो काल

काष्ट काहे पैं लाउंगो? सो सिर पर लावनो परेगो। बलद के रुपैया कितेक दिन पहोंचेगे? और जो-कदाचित प्रोहित कौ कह्यो न मानोंगो तो ये सराप देइगो। तातें सर्वथा बेचनो तो खरो ही। ऐसें बिचारि कै काष्ट और बलद दोऊ बेचे। सो बलद के रुपैया बीस आए। और काष्ट कौ आधो रुपैया आयो। सो ल्याय कै प्रोहित के आगें राखे। तब प्रोहित कह्यो, जो-याकों तुम खरचो, खाओ। हमारे तो काहू बात की न्यूनता नाहीं। ता पाछें वह रुपैया उन के घर धरे और सीधो सामग्री ल्याय कै रसोई चलती करी। पाछें प्रोहित कों सीधो दैन लागे। तब प्रोहित ने नाहीं करी। जो-जब तुम राज ऊपर बैठोगे तब लेहिंगे। अब तो कछू हमारे चहिये नाहीं। काहू की अपेक्षा नाहीं। तब वाने कह्यो, जो-सो बात तो या जन्म में दीसत नाहीं। तब प्रोहित ने कह्यो, जो-प्रभुजी सब करन समर्थ हैं। प्रभु कों काहू बात की न्यूनता नाहीं। तातें काल्हि राज करोगे मन में विस्वास राखो। ऐसें कह्यो। पाछें सीधो सामग्री ल्याय कै रसोई करि कै ता पाछें सोय रहे। पाछें प्रातःकाल उठि कै मन में बिचार्यो, जो-आज माथें काष्ट लावनें परेंगे। बलद तो गयो। ऐसें बिचारि के द्वार खोलि कै जहां नित्य वह बलद बांधतो ताई ठौर पर देखे तो वेसोई बाँड़ौ बलद बंध्यो है। तब प्रोहित सों पूछ्यो, यह कहा है? तब प्रोहित ने कह्यो, जो-तुम कछू चिंता मति करो। तेरे द्वारे तें बाँडो बलद हटेगो नाहीं। तातें सुखेन काष्ट बलद साथे बैचि। ता पाछें वह काष्ट लेवे कों बलद लै कै चल्यो। सो काष्ट ल्याय कै सुधो बलद हु बेच्यो। पाछें घर आय रुपैया

प्रोहित के आगें धरे। तब प्रोहित नें कह्यो जो-घर में धरि। ऐसें प्रोहित दिन चार उहां रहि कै पाछें वाकों पूछ्यो, जो-तुम्हारी बहनि की कहा गति है? कहां है? तब वानें कह्यो, जो-वे तो अमूक गाम में है, वेस्यावृत्ति करत है। तब वह उहां तें बिदा होंई कै चल्यो सो वह राजकन्या के गाम में आयो। ता पाछें वह प्रोहित वेस्या के घर गयो। तब वह प्रोहित कों देखि कै घनी लजानी। तब प्रोहित ने समाधान कियो। जो-तुम काहेकों दुःख करत हो? ये तो भाग्य की बात है। तुम कहा करो? कहा चारो है? पाछें वह प्रोहित कों सीधो देन लागी। सो प्रोहित नें नाहीं लीनो। और कह्यो, जो-मेरे तो न्यूनता नाहीं। ता पाछें आप अपनी गांठि कौ सीधो ल्याय कै तलाव पर जाँइ के स्नान करि कै रसोई करि कै श्रीठाकुरजी कों भोग धरि कै ता पाछें महाप्रसाद लियो। पाछें वा वेस्या के घर आयो। तब पूछ्यो जो-तेरो निर्वाह कैसें होत है? तब वह रोवन लागी। तब रोवत तें प्रोहित ने राखी, सावधान किये। पाछें वेस्या ने कह्यो, जो-कोईक दिन टका, कबहुक दोइ टका, कबहुक चारि टका आवत हैं। तासों देह-निर्वाह करत हों। तब प्रोहित ने कह्यो, जो-आज कोई तेरे आवे तो मोसों पूछि कै वासों संयोग करियो। पहिलें पूछि कै पाछें हामी भरियो। तब संझा कों एक बिसनी आयो। सो टका देन लाग्यो। तब वाने प्रोहित सों पूछ्यो, तब प्रोहित नें नाहीं करी। तब दोइ टका दैन लाग्यो तब फिरि कै प्रोहित सो पूछ्यो। तब हू नाहीं करी। ता पाछें फिरि गयो। पाछें घरी एक पाछें और कोऊ दूसरो बिसनी आयो। सो

पावला दैन लाग्यो। तब प्रोहित सों पूछ्यो। तब हू नाहीं करी। पाछें आधौ देंन लाग्यो। तब हू नाहीं करी। ता पाछें फिरि गयो। ता पाछें घरी एक पाछें और कोउ तीसरो बिसनी आयो। तब पांच रुपैया लों चढ्यो। तब प्रोहित सों पूछ्यो, तब हू नाहीं करी। ता पाछें रुपैया दस दैन लाग्यो। तब वानें प्रोहित सों समझाय कै पाँवन परि कै कह्यो, जो-दस रुपैया आवत हैं। सो तो मैं कबहू देखे हु नाहीं। आज तुम्हारे प्रताप सों आवत हैं। मेरे दोइ चारि महिना की खरची आवत है, तातें तुम आज्ञा देऊ। तब प्रोहित नें कह्यो, काहे कों उतावलि करति हैं? आज तेरे लक्ष रुपैया आवेंगे। और तोकों कोऊ कछू कहैं परि माने मति। जब कोऊ लक्ष रुपैया देहि तब वासों संयोग करियो। ता पाछें वह मन में खेद करन लागी। जो-लक्ष्य रुपैया मोकों कौन देवेगो? और यह कहांते आयो है? ऐसें बिचारे। इतनें ही और एक, एक सौ रुपैया दैन लाग्यो। तब हू प्रोहित नें नाहीं करी। ता पाछें और कोऊ आयो वह सहस्त्र पर्यंत दैन लाग्यो। परि वह प्रोहित नें नाहीं करी। ता पाछें मध्य रात्रि कों एक जनो आयो। सो दस सहस्त्र दैन लाग्यो। तब हू प्रोहित नें नाहीं करी, ता पाछें वीस पचीस सहस्त्र पर्यंत चढ्यो, परि नाहीं करी। ऐसें करत रात्रि प्रहर एक रही ता समैं एक बिसनी बड़ो राजा आई कै अर्ध लाख दैन लाग्यो। तबहू नाहीं करी। पाछें चढत चढत लक्ष रूपैया आनि कै दीनें। तब प्रोहित सों पूछ्यो, जो-आज्ञा होइ तो संयोग करों, लक्ष देत है। तब प्रोहित ने कह्यो, जो-तू कैसें अविश्वास करत ही? जो-इतने रुपैया कौन देगो? सो अब दीने कै नाहीं? तातें

धीरज राखें तो सब कछू होंइ, परि विश्वास चहिये। भलें, अब तो तेरे घर में तो काहू बात कौ संकोच नाहीं। परि रुपैया लक्ष में एक हू न्यून मति लेई। कोऊ कछू समुझावें तो मानें मति। रुपैया लक्ष दै वाकौ संग करि। ता पाछें वह नित्य ही ऐसें करन लागी। जो-कोऊ लक्ष दै ताकौ संग करे। सो नित्य पीछली रात्रि ताही कों उन कोउ आइ कै रहे। ता पाछें प्रोहित दिन आठ दस लगि उहां रहि कै ता पाछें गाड़ी एक मोल लीनी। मनुष्य दोइ चारि चाकर राखे। ता पाछें वा स्त्री कों गाड़ी मैं बैठारि कै पाछें उहां तें चले। सो या बाँडीया बलदवारे राजा कौ पुत्र हतो ता गाम में आये। ता पाछें वह भाई-बहनि प्रोहित मिले। तब वाहू की गांठि द्रव्य थोरो सो भयो हो। सो उहां तें वा पास हू एक गाड़ी मोल तीन बलद लीने। ता पाछें उहां तें चले। सो इन कौ बड़ौ भाई रहतो ता गाम में आये। ता पाछें वाके हू पास द्रव्य घनो भयो। तब अश्वगज, मोल लीने। पाछें असवार द्रव्य घनो भयो। तब अश्वगज, मोल लीने। पाछें असवार मनुष्य बोहोत चाकर मोल राखे। और अपने देस कों चले। तब बड़ो भाई और प्रोहित दोऊ जनें हाथी ऊपर अंबारी में बैठे। और छोटा भाई घोडा पैं असवार भयो। और वह उन की बहनि, सो सुखपाल में बैठी। ऐसें राजनीति सों चले। तब मार्ग में बिधिना देवी एक डोकरी कौ स्वरूप धरि कै पांवन सूंड में होंई कै इत कों निकसी। सो महावत बरजे। जो-अरी डोकरी ! तू मरेगी, कौन है? इत की उत पांवन सूंड में काहेकों फिर्यो करति है? डरपत नाहीं? इत की उत फिर्यो करे है? पाछें महावत ने

प्रोहित सों कह्यो, जो-सुनोजी साहिब! यह डोकरी न जानें कौन है? सो मरिवे तें डरपत नाहीं। यह मरिवे कों ही कहा आई है? जो-हाथी के पांव सूंड में होंइ कै इतकी उत निकसति है। हों तो घनो बरज्यो परि ये तो सुने नाहीं, उत्तर नाहीं देत, न जाने कहा है? तब प्रोहित ने पहिचानी। तब हाथी ठाड़ो रखाय कै वा डोकरी कौ हाथ पकरि कै एक स्थल में लै जाँइ कै वासों पूछ्यो, जो-ऐसें तू काहे कों करति हैं? मरिवे कों काहेकों बिचारित हैं? डरपत नाहीं? तब छटी नें कह्यो, जो-हों मरों तो भलो, परि यह आपदा ऐसी हैं। नित्य कहां तांई भुक्तों? घने घने कुटिल सों काम परत हैं, परि हों सबन कों सूधे करति हों। परि तुम मोकों सूधि क़री। तासों तुम सो और त्रिभुवन में नाहीं मिल्यो। तब प्रोहित ने कह्यो, जो-ऐसी कहा है? तब बिधिना बोली, जो-हों नित्य मोतिन कौ हस्ती कहां तें ल्याऊं? और जो-नाहीं ल्याउं तो मेरो लेख मिथ्या होत है। सो त्रिभुवन में मेरो लिख्यो नाहीं फिरे। मैं लिख्यो, जो-एक सिकार याकों नित्य मिलें और पहिलो निसानों बांन वृथा नाहीं जाँई। और तुम तो याकों बरज्यो, जो-मोती के हस्ती बिना काहू कों मारे मति। सो नित्य हों कहां तें ल्याऊं? और दूसरे के लिये नित्य बाँडौ बलद कहां तें ल्याऊं? और वा स्त्री के लिये लक्ष रुपैयावारो बिसनी कहां तें ल्याऊं? सो मैं बोहोत हेरान भई हों। तातें तुम हरिजन हों। सो हों तुम्हारे पांवन परति हों। जो-तुम मोकों जीवावो। मो पर कृपा करो। और कोउ होतो तौ मैं और हू उपाय करती। वाकों दुःख देती। परि तुम हरिजन हो, तातें मेरी कछू चले नाहीं। सो

ऐसी निठुराई मति करो। तातें तुम इन कौ ऐसो नेम छुराई देउ। तब प्रोहित ने कह्यो, जो- तू बचन मोसों दै, जो-मैं इन कों राज-सिंहासन पर बैठाउं तब तू मेरी आज्ञा तें इन कों राजकाज में बिघन मति करे, सहायता करि। इतनो बचन मेरो माने तो तेरी ये बात हों मानों। वाकौ नेम छुराइ देऊ। और तेरो बचन हू सत्य रहे। तब बिधिना ने कह्यो, जो-मेरो बचन है। अब इन कों हों राजकाज में बिघन न करोंगी। और चाहना करि कै राजकाज करोंगी। तब प्रोहित ने कह्यो, जो-काज करनहारे तो हमारे श्रीगुसांईजी हैं। उन के प्रताप तें सब भलो ही होंइ। ता पाछें बिधिना कों बिदाय कीनी।

भावप्रकाश– या वार्ता में यह संदेह है, जो-या प्रोहित में अलौकिक सामर्थ्य हती। सो आगें हू राजा की वार्ता में कहि आए हैं। तातें इन नें यो तीनोंन के लेख कों पहिले ही तें क्यों नाहीं मिटाये? इतनो कष्ट काहे कों पायो? तहां कहत हैं, जो-यह प्रोहित कों प्रभुन की दीनी सामर्थ्य है। सो चाहे विधाता के लेख कों हू मिटाय सकत हैं। परि भगवद् ईच्छा बिना यह मर्यादा कैसें मिटाई जाँइ? काहेतें? यह प्रभुन की बांधी मर्यादा है। सो वैष्णव वाकौ लोप कैसें करे? सो या प्रोहित ने मर्यादा हू राखी और अपनी सामर्थ्य हू जताई। सो हरिजन में यह सामर्थ्य हैं, जो-विधाता हू उन के पांय परति हैं। उन तें डरपति हैं। और आज्ञा पाइ कार्य करति है। यहू जतायो। सो सूरदासजी गाए हैं। सो पद-

धनाश्री

जाकों नेक स्याम कौ बानों।
ताके निकट न जाँइ जन कोऊ कहा रंक कहा रानौ।
माला कंठ तिलक बिराजत अरु चंदन लपटानौ।
संख चक्र गदा पद्म बिराजत सो कहा रहेगो छानौ।
रविसुत कहत पुकार पुकारी सुनि कै दूत अकुलानो।
'सूरदास' कहत यह हित की समज सोच जिय जानो।

सो प्रभुन के जन तें यम हू डरपत हैं। सो यह ऐसी बात हैं। तातें वैष्णव तें सर्वोपरि कोऊ नाहीं। वैष्णव चाहे सोई करें। तामें आश्चर्य नाहीं। तातें विधाता ने हू या प्रोहित के बचन मानें।

पाछें वा प्रोहित राजा के पुत्र सों कह्यो, जो–अब कछू पसु–पक्षी मारियो मति। मृतिका कौ तथा चित्र कौ बनाय कै ताकों दूरि धरि कै निसान मारनो। और जीव मति मारनो। पाछें दूसरे पुत्र सों कह्यो, जो–आज पाछें बलद मति बेचे, रहन दीजौ। और वा बेटी सों कह्यो, जो–आज पाछें लक्ष रुपैया कौ अटकाव मति करे। जैसें पहिले करती वैसे ही थोरो घनो लै कै संग करि। परि कोऊ उत्तम बरन उत्तम पुरुष सों संग करियो। नीच सों मति करे। ऐसें तीनोंन कों समुझाय कै कह्यो। पाछें उन दोऊन ने अपनो देस छुराई, सर करि, राज करन लागे। और जो कछू प्रोहित कहें सोई करे। आज्ञा प्रमान रहे। ता पाछें श्रीगुसांईजी कों प्रोहित ने वा गाम में पधराये। तहां ये तीनों जनें श्रीगुसांईजी के सरनि आय वैष्णव भए। ता पाछें श्रीठाकुरजी पधराय सेवा करन लागे। नीकी भांति सों सेवामार्ग की रीति सों सेवा करते। जैसें वह प्रोहित आज्ञा करें ताही रीति सेवा करन लागे। ता पाछें रात्रि कों प्रोहित कथा–वार्ता करें, कीर्तन करें। ऐसें करत कछूक दिन में श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे। ऐसी केतिक बात हैं, सो कहां तांई कहिए? सो प्रोहित के संग सों इन तीनोंन पर श्रीठाकुरजी अनुग्रह किये। तातें वैष्णव तादृसी कौ संग करनो। सो वह प्रोहित श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र वैष्णव हो। उन की वार्ता कहां तांई कहिए?

वार्ता ॥ ६७ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक दोऊ विरक्त, तामें एक तादृसी हतौ, और एक साधारन हतो, सो दोऊ संग रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश – ये ताद्दसी विरक्त सात्त्विक भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'कुंजादेवी' है। ये 'हरनी' तें प्रगटी हैं, तातें उन के भावरूप हैं। और कुंजादेवी की एक सहचरी हैं ताकौ नाम 'गुंजादेवी' है। सो इन कौ वर्ण गुंजा फल के समान आरक्त है। ये श्रीचंद्रावलीजी की आज्ञाकारिनी हैं।

ये ताद्दसी गुजरात में, एक गाम में एक ब्राह्मन के जन्म्यो। सो बालपने सों ही ये साधु–सन्यासीन के संग में रहे। तातें यह विरक्त–वैरागी की नाँई फिरवो करे। सो इन के मा–बाप इन कों बोहोत बरजे। कहें, जो–बेटा अब ही तें तू या प्रकार रहत हैं। सो आगें तेरो ब्याह कैसें होइगो ? जाति के कहा कहेंगे ? तातें तू आछो पहरि ओढि। आछें मनुष्य के साथ बैठ्यो करि। तब बेटा कह्यो, जो–हों तो पूरव जन्म कौ वैरागी हूं। तातें मोतें कोऊ प्रीति करियो मति। हों ब्याह करूंगो नाहीं। और ता पर जो–कोऊ मोमें सनेह करेगो वह निश्चय मरेगो। ये मेरो बचन है। सो या प्रकार वह सबन सों कहे। तब तो मा–बाप इन सों बोले नाहीं। जानें, जो–ऐसोई लिख्यो होइगो। या प्रकार यह लरिका बरस सोलह कौ भयो। तब एक दिन एक मर्यादामार्गीय वैष्णव वा गाम में आयो। तब यह लरिका वाके पास जाँइ कहे, जो–मेरे तीर्थ–यात्रा करनी है। तातें जो तुम कृपा करि मोकों अपने संग लै चलो तो हों आऊं। तब वा वैष्णव ने कह्यो, जो–मैं हू तीर्थ–यात्रा कों निकस्यो हूं। चारों धाम की यात्रा करूंगो। तेरे चलनो होंइ तो चलि। तब तो यह बोहोत प्रसन्न भयो। पाछें यह वा वैष्णव के साथ घर तें चल्यो। सो मा–बाप जाने नाहीं ता प्रकार चल्यो। पाछें दूसरे दिन मा–बाप जान्यो। तब वाकौ बोहोत ढूंढे। परि पायो नाहीं। सो दुःख पाइ कै चुप व्है रहे। और यह लरिका वा वैष्णव के संग द्वारिकाजी आयो। सो श्रीरनछोरजी के दरसन किये। सो कछूक दिन उहां रहि ता पाछें ये दोऊ बदरीकाश्रम कों चले। सो मथुराजी आये। तहां ये दोऊ श्रीयमुनाजी में स्नान किये। पाछें मथुराजी की सोभा देखि यह लरिका आश्चर्यवंत व्है रह्यो। तब इन बिचार कियो, जो–कछूक दिन मथुराजी रहनो। पाछें गोकुल–बृंदाबन व्है बदरीकाश्रम कों जानो। तब मर्यादामार्गीय वैष्णव ने यासों कह्यो, जो–हों तो बदरीकाश्रम जाऊंगो। तेरे चलनो होंइ तो चलि। तब याने कह्यो, जो–हों तो अब ही मथुराजी में रहोंगो। तुम्हारे जानो होंइ तो भलेई जाउ। तब वह वैष्णव बदरीकाश्रम कों गयो। पाछें यह लरिका कछूक दिन मथुराजी में केसौरायजी के दरसन कियो। पाछें सब स्थलन के दरसन किए। ता पाछें यह श्रीगोकुल कों चल्यो। सो प्रथम रावल में आयो। सो भागजोगि तें ता दिन श्रीगुसांईजी रावल में बिराजत हुते। सो श्रीगुसांईजी श्रीयमुनाजी पै संध्यावंदन करन पधारे हे। तहां इन श्रीगुसांईजी के दरसन पाये। सो श्रीगुसांईजी कों पल हू पलक मारे बिनु देख्योई करे। काहू सों कछू बोले बतरावे नाहीं। ऐसे घरी एक लों देख्यो कर्‌यो। सो श्रीगुसांईजी के स्वरूप कौ याकौ ज्ञान

भयो। तब श्रीगुसांईजी आप वासों कहे, जो-अमूके ! तू कब कौ आयो है? तब यानें कह्यो, जो-महाराजाधिराज ! मोकों तो आये बोहोत दिन भये। परि राज के चरनारविंद आज पाये हैं। तातें आज हों कृतार्थ भयो। अब कृपा करि बेगि अंगीकार कीजिए। नाँतरू कहा जानिए, जो-कहा होंई? यह सरीर कौ कछू भरोसों नाहीं। या मन कौ हू ठिकानो नाहीं। कहा जानिए घरी पाछें कहा होंई। तातें कृपा करि बेगि सरनि लीजिए। सो या प्रकार श्रीगुसांईजी याकी आर्ति जानि कहें, जो-श्रीयमुनाजी में न्हाइ लेऊ। हम तोकों सरनि लै अंगीकार करेंगे। पाछें यह श्रीयमुनाजी में न्हाइ श्रीगुसांईजी के सन्मुख आई ठाड़ो रह्यो। तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करि वाकों नाम-निवेदन दै सरनि लिये। पाछें इन श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज ! अब कहा आज्ञा है? तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करि वासों आज्ञा किये, जो-तू 'सन्यासनिर्णय' ग्रंथ कौ पाठ करिवो करि। तातें तोकों यह मार्ग स्फुर्द होइगो। और काहू कौ संग करे मति। एक ठौर रहे मति। मानसी सेवा कर्‌यो करि। तातें तोकों सब लीला स्फुरायमान होइगी। ता पाछें श्रीगुसांईजी या वैष्णव कों साथ लै श्रीगोकुलजी पधारे। सो यह वैष्णव श्रीगोकुल आयो। सात स्वरूप सात मंदिर के दरसन किये। ता पाछें श्रीगुसांईजी की आज्ञा मांगि यह वैष्णव श्रीगोवर्द्धन कों चल्यो। सो श्रीगोवर्द्धन आय, श्रीगोपालपुर जाँइ श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। सो बोहोत सुख पायो। पाछें ब्रज-परिक्रमा करत ब्रज में फिरन लाग्यो। एक ठौर रहे नाहीं। सो 'सन्यासनिर्णय' कौ पाठ करिवो करे। और सदा मानसी में मगन रहे। सो यह तादृसी भयो।

पाछें कछूक दिन में यह श्रीगोकुल आयो। तब एक और विरक्त श्रीगुसांईजी कौ सेवक इन पास आयो। वह साधारण वैष्णव हतो। परि याकों सत्संग की आर्ति बोहोत रहे। तासों ये या तादृसी विरक्त पास आई बिनती कियो, जो-मोकों कृपा करि तुम अपनी टहल में राखो तो हों तुम्हारी टहल करों। और तुम्हारे सारिखेन कौं संग हू मिले। तब यह तादृसी वैष्णव कहे, जो-श्रीगुसांईजी की आज्ञा काहू कौ संग करिवे की नाहीं है। तातें हों काहू कों अपने संग राखत नाहीं। तब यह साधारन विरक्त श्रीगुसांईजी पास आयो। और इन श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज ! मार्ग कौ स्वरूप स्फुरे ऐसी कृपा कीजिए। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो-अमूके तादृसी वैष्णव कौ संग करि। तब इन वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-राज ! वह को काहू कों अपनी पास राखत नाहीं। और कहत हैं, जो-मोकों श्रीगुसांईजी की आज्ञा नाहीं। तातें आप वाकों आज्ञा करो तो वह संग राखे। तब वाकौ संग मिले। तब श्रीगुसांईजी वा तादृसी वैष्णव को बुलवाई कै आज्ञा किये, जो-या वैष्णव कों तुम संग राखो। तब श्रीगुसांईजी की आज्ञा प्रमान वा तादृसी वैष्णव ने या वैष्णव कों अपनी पास राख्यो। ता दिन तें यो दोऊ संग रहते।

वार्ता प्रसंग – १

सो उन के संग एक और हू वैष्णव रहतो। ये हू विरक्त साधारन हतो। उन कों श्रीगुसांईजी की आज्ञा हुती, जो-तू याके संग रहे। और वा तादृसी विरक्त कों आज्ञा हुती, जो-तुम याकों आवन देहु। सो दोऊ जनें साथ फिरें।

ऐसें करत एक दिन वे दोऊ द्वारिकाजी जात हुते। सो भगवद् इच्छा तें एक ठौर रसोई करि कै श्रीठाकुरजी कों भोग धर्‍यो। ता पाछें महाप्रसाद लीनो। पाछें वा साथ के वैष्णव सों कह्यो, जो-तुम चलो हों आवत हों। सो वह आगें चल्यो। सो दो गेल आई। तहां वह दूसरी गेल गयो। तब तादृसी तो दूसरे गाम जाँइ कै सोय रह्यो और वह दूसरो वैष्णव सो एक गाम में जाँइ कै बैठ्यो। सो पहिले तो वा वैष्णव के वियोग कौ विरहताप घनो हुतो।

पाछें वा गाम में एक वेस्या नृत्य करत हती। सो वह वैष्णव वहां नृत्य में जाँइ कै बैठ्यो। सो उहां तल्लीन होंइ गयो। सो कछू सुध नाहीं रही। सो ऐसें दिन तीनलों उहांई बैठ्यो रह्यो। सो रात्रि सब नृत्य देखें। दिन में एसें ही विवसता सों उहां बैठ्यो रहे। तब वह तादृसी वैष्णव विरक्त वाकों ढूंढत फिरे। और कह्यो, जो-श्रीगुसांईजी ने वह वैष्णव मोकों सोंप्यो है तातें याकी सर्वथा ठीक करी चाहिए। ता पाछें चौथे दिन उहां आय कै देखे तो यहां रात्रि के समै वेस्या के ख्याल में विवस भयो है। सो पुकार्‍यो। परि उत्तर देवे नाहीं। तब हाथ सों पकरि कै खेंच्यो। तो हू कछू सुधि नाहीं। ता पाछें वह बुलावे तो उत्तर देत नाहीं।

बावरो सो डगमग होंइ रह्यो। कछू बोले नाहीं, कछू कहे नाहीं। तब वा तादृसी कों बोहोत चिंता भई। जो-हों श्रीगुसांईजी कों कहा उत्तर देउंगो ! पाछें वाकों महाप्रसाद लेवे कों पूछ्यो, तो हू न बोले। इतने में भगवद् इच्छा सों ब्यार चली। सो वा तादृसी के चरनन की रज वाके मुख में गई। पाछें वा वैष्णव नें वाके मुख में जल कर्‌यो। तब वह रज पेट में गई। तब तुरत ही उछांट भयो। तब नीलो, पीरो, कारो जल हो, सो ब्यथा सब पेट में तें निकसी। भीतर अंतःकरन सुद्ध भयो। ता पाछें बोल्यो सब समाचार कहे। ता पाछें उहां तें दोऊ जन चले। परि बात में कछू समुझ नाहीं परी। ता पाछें केतेक दिन कों फिरत फिरत श्रीगोकुल आये। श्रीगुसांईजी कौ दरसन कर्‌यो। पाछें श्रीगुसांईजी सों वा तादृसी विरक्त ने कह्यो, जो-महाराज! एक दिना यह वैष्णव मोसों बिछुर्‌यो, भूल पर्‌यो। सो एक गाम में वेस्या कौ नृत्य देख्यो। तहां लीन भयो, बिवस भयो। सो कछू देह की सुधि रही नाहीं। सो मैं बोहोत ढूंढ्यो। सो चौथे दिना पायो। सो नृत्य में बैठ्यो हो सो पुकार्‌यो। परि सुने नाहीं। उत्तर देवे नाहीं। ता पाछें हाथ सों पकरि कै घसीटि के बाहिर ल्यायो। परि सुधि नाहीं। तब मोकों चिंता भई। कलेस भयो। ऐसें करत ब्यारि चली। ता पाछें याकों मैं थोरो सो जल पिवायो। तब ही याकों उछांटि भई। सो नीलो पीरो कालो जल गिर्‌यो। सो मोकों दुरगंध कौ सो लग्यो। ता पाछें मैंने आचमन कुल्ला करवायो। इतने ही पाछें सावधानता भई। ता पाछें यानें सब समाचार कहे, (सो) सब सुने। परि कछू समझ्यो नाहीं। सो बात आप कृपा

करि कै कहो। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-यह तोसों बिछुर्‌यो। सो वाके मन में आई, जो-अब तो हों सब बात समुझ्यो। सो अब मेरे संग कौ काम कहा? तातें संग कौ अभाव भयो। यातें श्रीठाकुरजी ने वियोग करायो।

भावप्रकाश- यामें यह जतायो, जो-मन में रंच हू योग्यता आवे तो वैष्णव कौ संग दुर्लभ होंई। काहेतें, जो-तब प्रभु अप्रसन्न होत हैं। तातें संग हूँ छूटि जात हैं। तासौं वैष्णव कौ संग दास भाव तें करनों, तो फलित होंई। दीनता आवे। तब अपन कों सदा सर्वदा न्यून समझे। वैष्णव के स्वरूप कौ हू ज्ञान होंई। यह सिद्धांत भयो।

ता पाछें लौकिक जो आसुरी तिनकौ संग भयो। उन के पास बैठ्यो तब उन कौ परस भयो। पाछें वा वेस्या के पांवन की रज उड़ि कै याके मुख में गई। पाछें थुंक निगल्यो। तब वह भीतर प्रवेस कर्‌यो। तब अविद्या बढ़ी। आसुरी माया तें मोह भयो। ता पाछें मेरी कानि तें, मेरो संबंध बिचारि तुमने याकी सुधि करी, याकों ढूंढ्‌यो। पाछें हाथ पकरि पास बैठार्‌यो। ता समैं चरन संबंधी जो रज की कनिका याके मुख में गई। पाछें तुमने जल पिवायो। तब वह रज पेट में उतरी। तब वा रज कौ पल-प्रताप भयो। और प्रबल बल कर्‌यो। तब वा पहली रज के संग-विधि कौ जो आवेस सो सब उछांटि कै बाहिर काढ्‌यो। तब याकों सुधि आई।

भावप्रकाश- या वार्ता कौ यह अभिप्राय है, जो-लौकिकवारेन कौ संग सर्वथा न करनो। काहेतें? उन के संग तें, परस तें लौकिक आवेस होत हैं। और जो कदाचित् वाके पांवन की धूरि मुख में जाँइ तो स्वरूप हू की विस्मृति होत हैं। अविद्या बढत हैं। आसुरावेस होत हैं। तातें तादृसी वैष्णव कौ संग करनो। उनके परस तें, उनकी चरनरज लिये तें बुद्धि निरमल होत हैं। काहेतें? जो-तादृसी वैष्णव के हृदय में श्रीआचार्यजी आपु सदा सर्वदा बिराजत हैं। सो आचार्यजी कैसे हैं? जो-'हूताश' रूप हैं। उनके छिनक संबंध परस तें अनेक

जन्मन कौ आसुरावेस पाप, ताप, सब जरि जात हैं। बुद्धि निरमल होत हैं। तब भगवल्लीला हृदय में प्रवेस होत हैं। तातें तादृसी वैष्णव कौ नितप्रति दासत्व भाव करि संग अवस्य करनो। और उन में श्रीआचार्यजी बिराजत हैं। तातें उन की सर्वदा भावना करनी । सदा ही उन में प्रेम रखनो। यह ऐसी बात है।

सो वह वैष्णव विरक्त दोऊ जनें श्रीगुसांईजी के श्रीमुख के बचन सुनि कै पाछें सदा दोऊ संग ही फेर पास रहे। और सदा समप्रीति राखें। अभाव कबहू नाहीं करे। वे दोऊ वैष्णव विरक्त श्रीगुसांईजी के सेवक ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे। तातें उन की वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता॥६८॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी एक कुंजरी, मथुरा की बासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं-

भावप्रकाश- सो यह कुंजरी 'तामस' भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'सोहिनी' है। ये पुलिंदिनी के यूथ में है। सो नित्य प्रति नए मेवा सिद्ध करि कै उत्थापन के समै श्रीठाकुरजी कों कंदरान में आरोगावति हैं। तातें श्रीठाकुरजी इन पर बोहोत प्रसन्न रहत है। सो एक दिन यह सुंदर मेवा नई नई भांति के सिद्ध करि कै श्रीठाकुरजी कों आरोगावति ही। ता समैं श्रीस्यामालाजू वहां पधारी। तब इन तनक उंचे स्वर सों कह्यो, जो-अबही श्रीठाकुरजी उत्थापन-भोग आरोगत हैं, तातें आप निकट मति पधारो। सो यह कहत समै सोहिनी के मुख तें एक छींटा उड़ि कै मेवान में पर्यो। तब श्रीस्यामालाजू ने कह्यो, जो-तोकों ऐसो अभिमान आयो, जो-मोकों बरजे? और तू प्रभुन कों अपनो जूठो अरोगावति हैं? तातें जा भूतल पर गिरि, म्लेच्छ-योनि कों प्राप्त होउ। सो ता अपराध तें याने मथुरा में एक कुंजरी के यहां जनम पायो। सो ये 'हरनी' ते प्रगटी हैं। तातें इन के भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समै वह कुंजरी अपने घर तें अदरख और ताती रोटी खाँइ कै चली। सो आगरे जात हती। सो उष्णकाल के दिन हते। सो घाम तें ब्याकुल भई। सो 'औरंगाबाद' ते उरे कोस एक ऊपर एक रूख उहां बन में हतो सो ताके नीचें परि रही। सो उहां

तृषा करि कै ब्याकुल ही। इतने ही श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी द्वार पधारे। तब श्रीगुसांईजी खवास सों पूछे, जो-यह कहा है? तब खवास ने श्रीगुसांईजी सो कह्यो, जो महाराज ! एक म्लेच्छानी है। तब श्रीगुसांईजी ने वाकी ओर देख्यो। सो म्लेच्छानी नें श्रीगुसांईजी की ओर हाथ सों बतायो, जो मैं प्यासी हों। तब श्रीगुसांईजी ने खवास सों कह्यो, जो-याकों बेग ही जल प्यावो। तब खवास ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो-महाराज ! इहां तो काहू के पास जल नाहीं, और तलाव कूआँ हू निकट नाहीं। तब श्रीगुसांईजी ने खवास सों कह्यो, जो-हमारी झारी में जल होइगो। तब खवास ने कही, जो-महाराज ! झारी छुई जाइगी। तब श्रीगुसांईजी ने खवास सों कह्यो, जो-झारी तो और आवेगी परि फेरि या म्लेच्छानी के प्रान कहाँ तें आवेंगे? तातें बेगि जल प्यावो।

भावप्रकाश – यह कहि यह जतायो, जो-वैष्णव कों जीव मात्र पर दया करनी।

पाछें खवास ने वा झारी में तें श्रीनवनीतप्रियजी कौ महाप्रसादी जल वा कुंजरी के मुख में प्यायो। तब वह कुंजरी सावधान भई। वाकी बुद्धि फिरी। ता पाछें श्रीगुसांईजी कौ दरसन कियो। सो साक्षात पूरन पुरुषोत्तम श्रीनंदनंदन देखें। तब वा म्लेच्छानी ने उठि कै श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो-महाराज! मैंने कन्हैयाजी सुने हते। सो आज मैंने नैनन सों देखे। तातें तुम 'गुसांईयां' साँचे हो। सो मोकों जिवाई।

ता पाछें वह आगरा जानो भूलि गई। और श्रीगोकुल कों आई। तहां बैठक के द्वारे बैठि रहे। सो वैष्णव महाप्रसाद लेहि

तब जूठन उबरें सो मांगि लेही। आदरपूर्वक लै। ऐसें करत कछूक दिन में श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार तें पाछें श्रीगोकुल पधारे। सो श्रीगुसांईजी के दरसन या कुंजरी कों भए। ऐसें नित्य श्रीगुसांईजी के बाहिर भीतर पधारत दरसन करें। और उहां बैठि रहे। नित्य जूठन महाप्रसाद लेई। पाछें उहां ही बैठक के सन्मुख हाट मांडि के बैठि। ता पाछें देह संबंधी सों कह्यो, जो-हों तो श्रीगोकुल में रहुंगी। इहां लाभ घनो है। और इहां कोऊ कुंजरी नाहीं, सो बस्तू कोऊ चहिए। तातें हों तो इहां रहोंगी।

पाछें वह कुंजरी श्रीगोकुल में हाट मांडि कै रही। सो वह कुंजरी सुंदर मेवा ल्याय कै द्वार पें बैठि रहे। पाछें वह श्रीगुसांईजी के मनुष्यन तें कहे, जो-ए मेवा तुम राखो। तब वे मनुष्य कहें, जो-तू मोल कहे तो लेंइ, तो यह हमारे काम आवें। नाँतरु श्रीगुसांईजी के सेवक बिना काहू की सत्ता प्रभु अंगीकार करत नाहीं। तब वह कुंजरी कों आतुरता भइ, जो-हों इन की सेवक होंउ तो भली बात है। और मेरो धन हू भगवद् अर्थ आवें। यातें कछू उपाय कीजे। ऐसें बिचारि कै एक दिना वा कुंजरी ने वैष्णव खवास कौं देख्यो। तब वा कुंजरी ने वाकों पुकारि कै एकांत बैठि कै वासों पूछ्यो। जो-सुनो, तुम बड़े भगवदीय, हो, कृपापात्र हो। और हों तो महामूढ अज्ञान हूं, और असुर हूं। तुम्हारी कृपा तें तुम्हारी जूठन के प्रताप तें मोकों ज्ञान भयो। श्रीगुसांईजी को साक्षात पूरन पुरुषोत्तम कौ दरसन भयो। तातें मैं जानों, जो-इन समान और कोई नाहीं। और तुम हू इन के सेवक हरिजन कृपापात्र हो। तातें हों तुम्हारी सरनि हूं, और

आश्रय नाहीं। ऐसें कहि कै वा वैष्णव कों हाथ जोरि पाँवन परि रही। और कह्यो, जो-मेरी लज्जा अब तुम्हारे हाथ है। तातें हों तुमकों एक बात पूछत हूँ। जो-मेरी गांठि में द्रव्य हजार रुपैया है। सो मेरो द्रव्य और देह भगवत् काज कैसें आवें सो बात आप कहिए? और मेरो अंगीकार श्रीगुसांईजी आप कैसें करे? सो उपाय कहिए? तब वा वैष्णव खवास ने कह्यो, जो-सुनि, तेरो देह-संबंध खोटो है, आसुरी है, तातें तेरे बिचार कठिन है। परि भगवद् ईच्छा तें जो मोकों सूझे सो हों कहूं? सो तू माने तो श्रीठाकुरजी अंगीकार करेंगे। तब वाने कही, जो-आप बेगि कृपा करि कहिए। हों त्योंही करूंगी। तब वा वैष्णव ने कह्यो, जो-तू इहांई हाट मांडि और नौतन बस्तू घनी उत्तम तें उत्तम मेवा तरमेवा और साग बिनु रितु कौ सोहू बड़े बड़े सहर नगर तें ढूंढि कै ल्याऊ। नांतरु कोई मनुष्य राखि कै वा पास मँगाऊ। और वा वस्तू कों जतन तें राखि। जो-भगवत् अंगीकार की बस्तू हैं ऐसे बिचारि कै मति कहुं अपवित्र जल तथा और बस्तू कौ परस होंइ, मति पाँव लगे, मति मुख तें छींटे उडे। उत्तम जल सों हाथ धोई, उत्तम जल छांटि कै बोहोत जतन सों राखि। और कोऊ गाहक आवें तो हलकी बस्तू दिखावनी और मोल दूनो कहनो। सो वह गाहक लै नाहीं। और श्रीगुसांईजी के वैष्णव आवें तो ताकों उत्तम बस्तू होंइ सो दिखावनी और वह मोल पूछे तब आधो मोल कहनो। तब वह सामग्री सुंदर जानि कै और सस्ती जानि कै लै लेंगे। तब तेरो देह और द्रव्य दोऊ अंगीकार होइगो। सो ऐसें नित्य तेरे इहां तें लेइंगे। सो सुंदर

बस्तू देखि कै श्रीगुसांईजी वासों पूछेंगे, जो-ये बस्तू कहां तें ल्याये? तब वे तेरो नाम लेइंगे। जो-महाराज ! इहां अपने द्वारे अमूकी कुंजरी है ताकै इहां तें ल्यायो हूं। सो मोल थोरो लेत है और सांच बोलत है। ऐसो सुनि कै श्रीगुसांईजी हू तो पर प्रसन्न रहेंगे। या प्रकार नित्य करियो। सो तेरो द्रव्य थोरेसेक दिन में भगवद् अंगीकार होइगो और देह हू अंगीकार होइगी। पाछें तू ताप करियो। जो-मोतें कछू नाहीं बनि आवत हैं। सो यह देह कौन काम आवेगी? तब तेरो ताप श्रीठाकुरजी निवारेंगे। श्रीप्रभु सर्व सामर्थ्य सहित हैं। ऐसें वा वैष्णव ने कह्यो। सो वा कुंजरी ने वैसें ही कियो। जो-आछी बस्तू नौतन आवे सो कहूं तें ढूंढ़ि कै मंगवावे। सो वैष्णव देखे तब श्रीगुसांईजी सों कहे, जो-अमूकी बस्तू मेवा साग आयो है। तब श्रीगुसांईजी मँगावे। तब वैष्णव लेवे। तब आधो द्रव्य लेहि। तब श्रीगुसांईजी और वैष्णव बस्तु देखि कै बोहोत प्रसन्न होंई। जो ऐसी और कहूँ नाहीं मिले। ता पाछें चहिए सो वा पास मंगवावें। ऐसें करत थोरेसेक दिन में द्रव्य निघट्यो। सब भगवद् अंगीकार भयो। ता पाछें वह कुंजरी ताप-कलेस करन लागी। जो-अब तो मोतें कछू बनि आवत नाहीं। तातें यह देह छूटे तो भलो है। ऐसें मन में ताप-कलेस बोहोत ही करें। और कोऊ वैष्णव बस्तू लेवे कों आवे और पूछे तो कहे, जो-मेरे तो नाहीं। ता पाछें वह फिरि जाहि। तब वह मन में बोहोत दुःख करे। ऐसें करत नित्य ताप करत ओर हू खानपान थोरो करे। यों करत थोरेसेक दिन में वा कुंजरी की देह असक्त भई। तब अन्न जल हू छोर्‌यो। पाछें

बोहोत दुःख पावे, परी रहें। और वाके कोऊ खबरि लेवे नाहीं। तब काहू दिना श्रीगुसांईजी सुधि करें, जो-पहिलें मेवा साग घनो सुंदर आवतो सो तो अब आवत नाहीं। तब वैष्णव कहे, जो-महाराज! कुंजरी घनी भली ही, परि अब तो वह मरिवे कों परी है। सो दिना द्वे चारि में मरेगी। परि घनी भली मनुष्य हती, आप के नाम सों बोहोत प्रसन्न रहती।

ता पाछें श्रीगुसांईजी एक दिना राजभोग धरि कै श्रीयमुनाजी पधारत हे। सो ता समै वा कुंजरी कों घनो कष्ट दुःख हो, बोले नाहीं। और लोग तथा छोरा देखिवे कों ठाढ़े हे। सो श्रीगुसांईजी ने पूछ्यो, जो-यह भीर कहा है? तब वा वैष्णव ने कह्यो, जो-महाराज! वह कुंजरी की हाट है। जो-अपने मेवा और साग आवतो और आप सराहते। सो वह मरेगी, घनी दुःखी है। बोलत हू नाहीं। सो वाकों देखिवे कों भीर खड़ी हैं। ऐसें श्रीगुसांईजी सुनि कै असरन-सरनगति दया-समुद्र सो पांव धारे। तब सब कोऊ दूरि किये। तब वह कुंजरी श्रीगुसांईजी के दरसन करि चरन पर सीस धरि रही। और कह्यो, जो-महाराज! मेरे इन चरनन बिनु और आश्रय नाहीं; और ठौर नाहीं। आप ईश्वर हो, बड़े हो, सब जानत हो। जो-याके साँच है कै नाहीं? अंतरजामी हो। सो मन की सब जानत हो मुख करि कहा कहूं! मेरी लाज आप के हाथ है। ता पाछें भली बिचारो सो करो। और बोहोत कहिवे की नाहीं काहेतें? मेरो देह संबंध घनो नीच है। तातें हों घनो कहा कहूं? ऐसें कहि कै रोवन लागी। तब श्रीगुसांईजी ने वाकौ समाधान कियो। जो-तेरो मनोरथ सब जानत

हों। तू काहू बात की चिंता मति करे। प्रभु सर्व करन समर्थ हैं। ऐसें कहि कै वाके कान में अष्टाक्षर मंत्र सुनायो। और श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ चरनोदक और महाप्रसाद और अपनो चरनोदक और माला वैष्णव पास मंगवाय कै वाकों दीनी। ता पाछें वाकौ समाधान करि कै श्रीयमुनाजी पैं पधारे। सो ताही समै वा कुंजरी कों श्रीगुसांईजी कौ साक्षात् श्रीगोवर्द्धननाथजी संयुक्त श्रीस्वामिनीजी कौ दरसन भयो। ता पाछें श्रीगुसांईजी स्नान-संध्या करि कै मंदिर में पांव धारे। इतने ही वाकों विरह-ताप भयो। सो अत्यंत भयो। ता पाछें थोरीसी देरि में देह छूटी। सो समाचार श्रीगुसांईजी ने सुने। तब वाकौ संस्कार करवायो। ता पाछें श्रीगुसांईजी ने श्रीमुख तें कह्यो, जो-अब याकों कछु और बाधक नाहीं। सो वह कुंजरी महावन में एक ब्राह्मन के घर जन्म लै कै अलौकिक में प्राप्त होइगी।

भावप्रकाश– या वार्ता में यह जतायो, जो-प्रभु परम दयाल हैं। जो-कोऊ दृढ़ आश्रय करि द्वार पें रहत है ताकी सुधि प्रभु आप लैत हैं। और वाकी थोरी सी सेवा कों हू आप बोहोत करि मानत हैं। ऐसें श्रीगुसांईजी परम दयाल हैं। उन कौ आश्रय वैष्णव कों सर्वथा करनो। और उत्तम भगवदीय कौ संग करनो।

सो वह कुंजरी श्रीगुसांईजी की सेवक ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती। तातें उन की वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥६९॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक हतित पतित राक्षस, महीकांठा के, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं-

सो वे हतित पतित गुजरात की धरती में मही के कांठे एक

अश्वस्थ कौ पेड़ हतो तहां एक खोरि में रहते। सो एक समै चाचा हरिवंसजी और वैष्णव गुजरात के श्रीनाथजीद्वार कों जात हुते। सो मार्ग में भूले परे। सो वा खोरि में जाँइ कै निकसे। तब वा रूख ऊपर तें दोऊ भाई राक्षस हतित पतित आइ कै इन वैष्णवन के सन्मुख ठाढ़े भए। तब बड़े पर्वत से विकराल देखे। तब वैष्णव अपने मन में डरपें। और कह्यो, जो-भाई! यह इहां कहां तें आए? ये कौन हैं? पाछें उन वैष्णवन ने चाचा हरिवंसजी सों कह्यो, जो-यह कौन आनि कै गेल रोकि कै आगे ठाढ़े हैं? तब चाचा हरिवंसजी नें आगे आइ कै उन सों पूछ्यो, जो-तुम कौन हो? कहा कारन इहां आई कै ठाढ़े हो? तब उन हतित पतित नें कह्यो, जो-हम तो राक्षस हैं। तुम सबन कों हम खाँइगे। तुम कों खाँइवे (के) निमित्त इहां आए हैं। तब चाचा हरिवंसजी ने हतित पतित सों पूछ्यो, जो-तुम ठाढ़े काहे कों हो? खांत क्यों नाहीं? तब उन राक्षसन नें कह्यो, जो-हम कों तुम्हारे निकट आवत ताप लागत हैं, तातें ठाढ़े हैं। तुम्हारे नजीक आय सकत नाहीं। ता पाछें चाचा हरिवंसजी ने फिरि कह्यो, जो-तुम काहे कों गैल रोकें ठाढ़े हो? तुम हम कों खाँइ सकोगे नाहीं। हमारे देहमें तो चौद लोक कौ नाथ बिराजत हैं। तातें तुम गेला छोरि देहु। तब वह दोऊ भाई राक्षस बोले, जो-तुम बड़े वैष्णव भगवद् भक्त हो। तुम महारुपुरुष हो। हम तुम्हारे दरसन कों आए हैं। सो हम कों दरसन भए। तातें हम कों ज्ञान भयो। सो तुम हमारो उद्धार करि कै जाऊ। हम कों प्रेतयोनी की पीड़ा तें छुडाऊ। तब चाचा हरिवंसजी ने कह्यो, जो-तुम या नदी में

न्हाइ आऊ। ता पाछें वे दोऊ भाई नदी में न्हाइ कै ठाढ़े भए। तब चाचा हरिवंसजी ने उन कों नाम-अष्टाक्षर मंत्र कान में कह्यो। और माला दोऊन कों कंठ में पहिराई। और चरनोदक तथा महाप्रसाद उनके मुख में मेल्यो। इतने ही उनकी प्रेत-देह छूटी। अलौकिक दिव्य देह भई। ता पाछें वे दोऊ चाचा हरिवंसजी के पांवन परि रहे, हाथ जोरि रहे। पाछें दोऊ भाईन बिनती करि कै कह्यो, जो-तुम बड़े भगवदीय हो। हमारी प्रेत-पीड़ा तुम बिनु कौन दूरि करें। ऐसें तुमसे त्रिभुवन में नाहीं। तातें हम तुम्हारो कहा उपकार करें? ऐसो हम पैं पदारथ नाहीं। ऐसें बिनती दोऊ भाई घनी घनी करी। पाछें श्रीगुसांईजी की कृपा बल-प्रताप तें श्रीठाकोरजी के दूत इन दोऊन कों लीला में पहोंचाए।

भावप्रकाश- सो या वार्ता में चाचा हरिवंसजी वैष्णव कौ स्वरूप जताए। जो-वैष्णव काहू तें डरपत नाहीं। काहेतें, जो-उन के हृदय में काल हू के काल ऐसें श्रीठाकुरजी आप बिराजत हैं। तातें काल कर्म सब उन तें डरपत हैं। सो परमानंददासजी गाए हैं-

सारंग

हरि कौ भक्त माने डर काके।
जाके करजोरें ब्रह्मादिक देत सबै दंडौती जाके॥
सिंघ सखा करि ग्राम बसावे यह विपरीत सुनी नहीं देखी।
हाथी चढ़े कुकर की संका यहधों कौन पुरानन लेखी॥
सुगम लोग अरु विगम मूढमति कृपासिंधु समरथ सब लायक।
'परमानंददास' कौ ठाकुर दीनानाथ अभयपद दायक॥

और वैष्णव बड़े दयाल होत हैं। जो-कोऊ उन कौ अपकार करें ताहू कौ ये उपकार करत हैं। वाकों जनम मरन तांई कौ कष्ट छुरावत हैं। सो सूरदासजी गाए हैं।

धनाश्री

ऐसो भक्त तरे और तारे।
परम कृपाल परम दीनबंधु सरन गहे वाकौ दुःख निवारे॥
सब सों मैत्री सत्रु नहीं कोई वाद विवाद सबन सों हारे।
हरि कौ नाम जपे निस बासर संसय सोक ताप निवारे॥
काम क्रोध ममता मद मत्सर माया मान मोह भ्रम हारे।
निरलोभी निरवैर निरंतर कृष्ण रूप जब हृदय बिचारे॥
हरि कौ नाम सुने अरु गावे कृष्ण भजन करि दुःख ही दुरावे।
'सूरदास' हरि रूप मगन भये गुन औगुन का पर नहीं आवे॥

सो चाचाजी ऐसें भगवद् भक्त हैं। तातें ये राक्षस उन के सरन आए तब इन श्रीगुसांईजी कौ सुमिरन करि उन कों नाम सुनायो। सो उन दोऊन कों गुरु कौ संबंध भयो। तातें उन दोऊन कौ उद्धार भयो, लीला में प्राप्ति भई। सो जैसें वा रजपूत की बेटी कों लीला की प्राप्ति भई तैसे इहां हू जाननो।

ता पाछें सब वैष्णव तथा चाचा हरिवंसजी श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुल आए। श्रीगुसांईजी के दरसन किये। पाछें साष्टांग दंडवत् करि कै समै देखि कै श्रीगुसांईजी सों दोऊ भाई राक्षस के समाचार सब चाचा हरिवंसजीनें कहे। और श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराजाधिराज ! ये दोऊ भाई पूरव जनम में कौन हते? और कौन पून्यतें इनकों ये समागम भयो, उद्धार भयो? सो सब बात आप हमसों कृपा करि कै कहिये। तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो-ये दोइ भाई पूरव जनम के वैष्णव हते। सो ये श्रीमाली ब्राह्मन गुजरात कें बासी हुते। सो भगवत् सेवा भली भांति सों करते। परि अकिंचन हुते, सो एक समै ब्रजकों तीर्थयात्रा कों गये हुते। सो तीर्थयात्रा करी घरि कों आवत हुते तब मार्ग में एक हरिवंसजन वैष्णव रहत हुतो। सो

वाके घर ये दोऊ भाई गए। तब वह वैष्णव तो घर नाहीं हतो। कहूं गाम कामकाज कों गयो हतो। वाकी स्त्री घर हुती। तब वा स्त्रीनें वैष्णव जानि कै घर में उतारे। ता पाछें सीधो सामग्री सब दीनी। पाछें उन दोऊ भाईन ने उहां तें कूप में तें जल काढ़ि कै और न्हाइ कै भोग धर्‍यो। पाछें महाप्रसाद लै कै रात्रिकों कीर्तन करे। ता पाछें वा स्त्री ने ये दोऊकों वाके घर भीतर ही सुवाये। सुंदर आसन सिज्या बिछाय दीनी। तब ता पर सोई रहे। ता पाछें वा स्त्री के सरीर पैं गहनो बोहोत हतो। घर में बोहोत संपन्न हती। तब मध्यरात्रिकों दोऊ भाई जागें। तब छोटे भाई ने बड़े भाई सों कह्यो, जो-या स्त्री पास गहनो बोहोत हैं और याके घर में और कोऊ नाहीं। तातें आपुन याकों मारि कै मुख मूंदि कै सब गहनो उतारि लै जाइए। ऐसे दोऊ भाई विपरीत बुद्धि बिचारी कै उठि कै इत उत देखन लागें। तब एक छुरि देखि कै, लै कै, एक भाई ने वा स्त्री कौ मुख वस्त्र सों मूंद्‌यो। एक भाई ने वाकी छाती पर चढि कै वाकों दो एक ठौर छूरी की मारी कै वाकौ गहनों सब उतारि लियो। पाछें उहां तें दोऊ भाई भाजे। सो रात्रि कों कोस दस बीस निकसि गए। पाछें वा स्त्रीनें सावधान होंइ कै मुख में ते डूचा काढ्‌यो, पाछें पुकारी। तब लोग सब आइ जुरे। सवारो भयो। पाछें हाकिम के मनुष्य आगें सब समाचार कहे। सो हाकिम ने मनुष्य दस उन के खोजकों पठाए, दोराए, परि पाये नाहीं। ता पाछें वाकौ पति घरकों आयो। तब तानें सब समाचार सुने। तब वा स्त्री सों कह्यो, जो-बात सब बिस्तारि कै कहो। ता पाछें वह अपनी स्त्री सों

खीझ्यो। बोहोत कह्यो, जो-तें उनकों घर में काहेकों उतारे? आज पाछें ऐसो काम नहीं करिए। तब उन स्त्री ने कह्यो, जो-मैं वैष्णव जानि कै उतारे। ता पाछें वा स्त्रीकों मलमपट्टी करी। सो थोरेसेक दिन में वह स्त्री आछी भई।

पाछें वह दोउ भाई मार्ग में जात हुते, घरकों। सो मार्ग में चोर ठगन भाल राखी। सो वह चोर ठग इन के पाछें लागे। सो नदी के कांठे वा खोरि में उन कों भूलाय कै लै गए। वहां उन दोनोंन कों ठौर मारे। ता पाछें गहनों वित्त सब चोरि ले गए हते सो सब लिये। सो वा दिन तें दोऊ भाई ब्राह्मन राक्षस भए हैं। प्रेतयोनि उन पाई। सो बात कों पांचसौ बरस भए। ए विष्णुस्वामि सम्प्रदाय के वैष्णव हे। सो श्रीठाकुरजी ने सुधि करि कृपा करि। तब तुम्हारे वैष्णवन के दरसन भए। तब इन कौ दोष निवृत भयो। तब इनकों ज्ञान भयो। अब हमारो संबंध पाय इन की गति भई। लीला में पहोंचे।

भावप्रकाश- काहेतें, ये लीला में 'नेरो' 'वरो' दोऊ सखी है। 'चित्रलेखा' तें प्रगटी हैं, तातें उन के तामस भावरूप हैं। ये 'चंद्रकला' के यूथ की हैं। सो इहां चाचा हरिवंसजी द्वारा श्रीगुसांईजी कौ संबंध पाय लीला में प्राप्त भए। यहां यह संदेह होंइ, जो-इन दोऊन कों ब्रह्मसंबंध तो भयो नाहीं है। सो लीला में कैसे प्राप्त भए? तहां कहत है, जो-जैंसे कृष्णदास द्वारा वा वेस्या की छोरी कों लीला में प्राप्ति भई। पाछें लीला में ललिताजी नें श्रीस्वामिनीजी द्वारा ब्रह्मसंबंध करवायो। तैसे इन दोऊन कों चंद्रकला ने श्रीचंद्रावलीजी द्वारा ब्रह्मसंबंध करवायो, यह जाननो।

तातें वैष्णव कों बिचारि के चलनो। महद अपराध तें ऐसी गति होत हैं। परि वैष्णव के संगतें, दरसन तें, भगवद् प्राप्ति भई। तातें तादृसी वैष्णव की संगति ऐसी है। ऐसें श्रीगुसांईजी

श्रीमुख तें कहे । सो चाचा हरिवंसजी और वैष्णव सुनि कै बोहोत ही प्रसन्न भए ।

सो वे हतित पतित श्रीगुसांईजी के दोऊ ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे । तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए । वार्ता ।।७०।।

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक दोऊ वैष्णव विरक्त, सो दोऊ साथ रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश–ये दोऊ राजनगर तें कोस पांच उरे में एक गाम है, तहां दोऊ ब्राह्मन के जन्मे । सो ये दोऊ ब्राह्मन के घर एक ही बाखरि में हे । तातें ये दोऊ लरिका संग खेले, संग खाँय पीये । या प्रकार दोऊन में प्रीति बोहोत बढ़ी । पाछें दोऊ बरस पांच–सात के भए तब इन दोऊन के माता–पिता इन कों एक पण्ड्या के उहां पढिवे कों बैठाये । सो एक तो कछूक पढ्यो । और दूसरो सूधो हतो, सो कछू पढ्यो नाहीं । ता पाछें दोऊन के माता–पिता ने दोऊन कै ब्याह किये । तब दोऊन की स्त्री आई । सो वे दोऊ महाकुपात्र आई । आसुरी सबन कों गारी देय कलेस करें । जो–बस्तू पावे सो चुराय कै मा–बाप कों दै आवें । सो घर के सब महादुःख पावें । ऐसें करत कछूक दिन में दोऊन के मा–बाप ने देह छोरी । तब ये दोऊ आपुस में बिचार किये, जो–भाई ! अब घर में रहनो उचित नाहीं । काहेतें, जो–घर में नित्य कलेस होत हैं, तातें कहूं और ठौर जाँइ तो आछौ । ऐसें दोऊ बिचारि किये । पाछें घर में काहू सों कहे बिना रात्रि कों चले । सो राजनगर आइ रहे । तहां भिक्षा माँगि कै देह–निर्वाह करन लागे । वैराग्य दसा में रहे । काहू सों ज्यादा बोले नाहीं, काहू के पास बिना काम बैठे नाहीं । या प्रकार रहे ।

सो एक समै ये दोऊ भिक्षा कों असारुवा आए । तहां भाईला कोठारी के घर आए । ता समै श्रीगुसांईजी आप भाईला कोठारी के घर बिराजत हे । सो कोठ के वृक्ष नीचे चरन पखारत हे । तहां इन दोऊन श्रीगुसांईजी के दरसन पाए । तब श्रीगुसांईजी कौ तेज–प्रताप देखि चक्रत व्है रहे । दोऊ हाथ जोरि ठाढ़ें रहे । तब श्रीगुसांईजी आप दोऊन की ओर देखि मुसिकाई कै आज्ञा किये, जो–तुम दोऊ ऐसें जगह–जगह क्यों भटकत हो ? कछू भगवद्भजन करो तो कृतार्थ होऊ । सो श्रीगुसांईजी के बचन सुनि दोऊन कों बोध भयो । जानें, जो–ये कोई महापुरुष हैं । नाँतरु बिनु जाने बिनु पहिचाने ऐसें कौन कहे ?

पाछें ये दोऊ हाथ जोरि कै बिनती किये, जो–महाराजाधिराज ! हम तो भगवद् भजन में

कछू समुझत नाहीं। कलेस के मारे घर छोरि या प्रकार जगह जगह भटकत हैं। आज आप के दरसन तें परम आनंद पायो। अब हम आप की सरनि आए हैं। तातें कृपा करि सरनि लै भगवद्‌भजन कौ प्रकार समुझाइए। सो या प्रकार दोऊन की दीनता देखि श्रीगुसांईजी आप बोहोत प्रसन्न भए। ता समै भाईला कोठारी पास ठाढ़े हे। तिनसों प्रभु आप आज्ञा किये, जो–भाईला! इन दोऊन कों स्नान कराइ अपरस में हमारे पास ल्याऊ। तब भाईला कोठारी दोऊन कों अपने घर के भीतर लै जाँइ कै स्नान कराए। पाछें नई धोवती–उपरेना पहिरवे कों दिये। सो दोऊन पहरि, कंठि पहरि, तिलक–चरनामृत लै अपरस ही में श्रीगुसांईजी पास आय ठाढ़े रहे। तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करि दोऊन कौ नाम–निवेदन कराए। पाछें दोऊन कों आज्ञा किये, जो–तुम कछूक दिन इहां रहि भाईला कोठारी कौ संग करो। श्रीआचार्यजी के ग्रंथन कौ पाठ करो। तातें तुम कों मार्ग कों सब स्फुरायमान होइगो। तब ये दोऊ भाईला कोठारी के उहां रहे। सो जहां लों श्रीगुसांईजी बिराजे तहां लों प्रभुन की टहल, आए गए वैष्णवन की टहल, जो होंई सो सब करे। नित्यप्रति श्रीगुसांईजी के बचनामृत सुने। और श्रीआचार्यजी के ग्रंथन कौ पाठ करें। सो ऊन में एक चोकस हतो। सो वह नित्य श्रीगुसांईजी आप पोढें तब चरन दाबे, रहस्य वार्ता पूछे। या प्रकार रहे। ता पाछें भाईला कोठारी सों जो बात समुझ में न आवें सो पूछे। सो वह श्रीगुसांईजी कौ कृपापात्र भयो। और दूसरो साधारन हतो। सो वाकों श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–तू इन के साथ रहे। ये जो कहे सो करियो। पाछें श्रीगुसांईजी आप तो श्रीगोकुल पधारे। ता पाछें ये दोऊ विरक्त दसा में रहते। दोऊ साथ फिरते।

वार्ता प्रसंग–१

सो उन कों श्रीगुसांईजी की आज्ञा हुती, जो–तुम दोऊ साथ फिरो। तामें एक कृपापात्र हतो और एक साधारन हुतो। सो वा साधारन विरक्त सों श्रीगुसांईजी की आज्ञा हुती, जो–यह वैष्णव कहे सो करियो।

भावप्रकाश–काहेतें, ए दोऊ लीला संबंधी हैं। सात्विक भक्त हैं। लीला में एक कौ नाम 'मंगला' है। सो तो यहां कृपापात्र भयो। और दूसरे कौ नाम 'वामा' है। सो यहां साधारन विरक्त भयो। सो 'मंगला' की सहचरी हैं। तातें श्रीगुसांईजी ने इन दोऊन कों साथ फिरिवे की, रहिवे की आज्ञा करी। सो वा कृपापात्र के संग ते या सहचरी कौ कारज होंई।

सो केतेक दिन पाछें एक बड़ो गाम नगर हतो। सो तहां गए।

सो वा गाम में एक बाई डोकरी के घर उतरे। सो ता गाम में और हू एक वैष्णव हुतो। ताके घर राजस बोहोत हुतो। सो ताके घर वैष्णव न्योते हते। सो वा बाई कों वैष्णव बुलावन कों आए। तब उहां ओर हू दोऊ वैष्णव विरक्त देखें। तब वा वैष्णव ने इन कों बुलाए न्योते। और अपने घर बुलाय कै ले गए। ता पाछें श्रीठाकुरजी कौ राजभोग सरायो। पाछें श्रीठाकुरजी की आर्ति करी। पाछें श्रीठाकुरजी कौ दरसन कर्‌यो। सो उन श्रीठाकुरजी कौ वैभव देख्यो। तब वह कृपापात्र मन में कह्यो, जो–सब आछौ है। परि श्रीठाकुरजी तो महा क्रोध में हैं, अनमने हैं। तब मन में कह्यो, जो–भाई! श्रीठाकुरजी ऐसें क्यों है? ऐसें आश्चर्य भयो। ता पाछें सब वैष्णव की पातरि धरी। तब वाकी पातरि परोसत वा तादृसी वैष्णव की दृष्टि परी। तब देखें तो सामग्री में सब कीड़ा बिलबिलात हैं। और विपरीत सो देख्यो। तब उन साथ के वैष्णव सों कह्यो, जो–तुम इहां तें चलो। इहां तो विपरीत है। ऐसें समस्या में कह्यो। परि तोऊ वह न मानें। वानें अपने में कह्यो, जो–ऐसो सुंदर महाप्रसाद छोड़ि कै क्यों जाइए? वाकौ मन तों मिष्ठान्न घने प्रकार के देखि कै ललचानो। ता पाछें वे तादृसी तो इतनो कहि कै उहां ते दृष्टि चुकाइ कै निकसि भाज्यो। सो वा बाई के घर तें अपनो खड़ीया लै कै चल्यो। वा गाम में नाहीं रह्यो। जो–मति कोऊ बुलाय कै आग्रह करे। सो तीन कोस पर एक गाम हतो। तहां जाँइ कै रसोई करि कै श्रीठाकुरजी कों दारि–अंगाकरी कौ भोग धर्‌यो। ता पाछें महाप्रसाद लियो। पाछें रात्रि कों ता गाम में रहे।

ता पाछें साथ के वैष्णव सों और वैष्णव ने कह्यो, जो–तुम्हारे साथ कौ वैष्णव कहां गयो ? तब उन ने कह्यो, जो–कहा जानें ? ता पाछें उन बाई के घर ढूंढि आए। तब वा बाई ने कह्यो, जो–वह तो इहां तें खड़िया लै कै गयो। और अमूके गाम गयो। ता पाछें सब वैष्णव ने महाप्रसाद लियो। ता पाछें साथ कौ वैष्णव वा बाई के घर आयो। तब वा बाई सों पूछ्यो, जो–वह वैष्णव कहां गयो ? तब वा बाई नें कह्यो, जो–वे तो अमूके गाम इहां ते तीन कोस हैं उहां गयो। और मोसों कह्यो, जो–तुम वा वैष्णव सों कहियो, जो–काल्हि पहर दिन चढेगो तब लों हों तेरी गेल देखोंगो। तुम बेगि आवोगे। ऐसें मोसों कहि कै गयो है। ता पाछें वह वैष्णव सोयो। तब रात्रि में स्वप्न में जाने, जो–रुधिर मांस हों भक्षन करत हों। ऐसें और हू कितनेक विपरीत देखे। ता पाछें सवारे बेगि ही उठी कै चल्यो। सो वा वैष्णव सों जाँइ मिल्यो। सो वह वैष्णव याकी गेल में आय कै बैठ्यो हतो। पाछें वासों कही, जो–तें रात्रि कछू देख्यो ? तब वैष्णव ने कही, जो–मैं स्वप्न में ऐसें देख्यो। ता पाछें वा वैष्णव ने वासों कह्यो, जो–तू मोकों छुवे मति। मैं तो उहां वैष्णव के घर महाप्रसाद में कीड़ा बिलबिलात देखे। और श्रीठाकुरजी हू अप्रसन्न देखे। तब तोसों कहि कै वहांतें भाज्यो। तो मेरो धर्म रह्यो। और तें नाहीं मान्यो, इंद्रिय कौ स्वाद कर्‌यो। तातें अपनो धर्म खोयो। परि भले, अब तो तू मेरे पाछें पाछें चल्यो आऊ। और मोकों छूवे मति। सो काहेतें, जो–श्रीगुसांईजी ने मोतें कह्यो है, जो–याकों तेरे साथ राखियो। कहू छोरियो मति। तातें आज्ञा

माननो। पाछें श्रीगुसांईजी पास जांइ कै यह सब समाचार कहेंगे। सो श्रीगुसांईजी श्रीमुखतें कहें सो खरी। पाछें मार्ग में चले। मजलि उतरे। सो वह तादृसी भिक्षा मांगि लावें। ता पाछें उपरा बीनी लावें। पाछें जल के समीप जाँइ कै रसोई करे। श्रीठाकुरजी कों भोग धरे। पाछें पातरि दोइ परोसे। साथ के वैष्णव की पातरि दूरि धरें। पाछें महाप्रसाद दोऊ जनें लेई। परि कछू बस्तू सामग्री वाकों छुवन न देही। ऐसें करत केतेक दिन में श्रीगोकुल जाँई पहोंचे। ता पाछें श्रीगुसांईजी कौ दरसन कर्‍यो, दंडवत् करी। पाछें तादृसी वैष्णव नें जो-कछू प्रकार भयो और कीनो, सो सब बिस्तारि कै श्रीगुसांईजी सो समाचार कहे। और पूछ्यो, जो-राज! ऐसो विपरीत काहेतें देख्यो? वाके कहा विपरीत हैं? सो आप हमसों कृपा करि कै कह्यो चाहिए। तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो-वाके एक बेटी हती। सो एक गृहस्थ कों दीनी। सो वाके पास एक सहस्त्र रुपैया हते। सो वह याके पास धरि कै कहूं देसांतर कौ गयो हतो। सो भगवद् ईच्छा तें वह मर्‍यो। सो बेटी कौ विवाह तो भयो नाहीं हतो। सगाई करी हती, मांगी हती। सो वाके मरे के समाचार सुनि कै पाछें यानें और ठौर रुपैया के लालच काहू वृद्ध गृहस्थ सों बेटी कौ विवाह करि दीनो। ता पाछें भगवद् ईच्छा तें केतेक दिन में वह मर्‍यो। तब वाकौ द्रव्य और बेटी घर में ल्याय कै राखी। और वाके सब कुटुंब हतो तासों लरि कै हाकिम कों कछू द्रव्य दै कै और के भाग, लागे, कछु काहू कों नाहीं दीनो। सब राख्यो। सो वा बेटी के द्रव्य सों सब सामग्री करी है। और

अपुनो नाम कियो है। सो श्रीठाकुरजी अरोगत नाहीं। और यह मेरी कानि देत है, तासों श्रीठाकुरजी कों क्रोध चढ़त है। सो एक तो बेटी के संबंधी ते बेटा कौ द्रव्य लीनो। सो वाकौ हृदय कल्प्यो। सो काहू कौ अंतःकरन दुःखाय कै ल्यावे सो वाकों ताप होंई, दुःख पावें। ताकों कलेस संताप होत है। तब वाकौ रुधिर सूकत है। सो वाकौ रुधिर वा द्रव्य में आवत है। ऐसो द्रव्य श्रीठाकुरजी अंगीकार करत नाहीं। और जो कोऊ कलेस कौ द्रव्य लेत हैं। ताकौ मन प्रसन्न होत है। तातें वाकौ रुधिर मांस बढ़त हैं। और वाकौ रुधिर सूक्यो। सो जानें द्रव्य खायो ताके उदर में आयो। सो मनुष्य राक्षस तुल्य है। और बेटी कौ द्रव्य महानिषिद्ध है। श्रीठाकुरजी के काम कौ नाहीं। और वेऊ असुच भयो। सो कीड़ा मांस तुल्य बेटी कौ द्रव्य है। सो बेटी के घर कौ जो कछू वस्तु ज़ल पर्यंत असुच हैं। वाके संबंधी कोऊ कछू बस्तू कों हाथ छुवनो उचित नाहीं। बस्तू तथा द्रव्य पर मन करे सो श्री ठाकुरजी के काम न आवे। यातें तोकों दोइ अपराध परे। एक तो तेंने वैष्णव तादृसी की आज्ञा न मानी। और वह द्रव्य की सामग्री भई सो तेंनें खाई। तातें तोकों ऐसो भयो। ऐसें श्रीगुसांईजी ने वा साथ के वैष्णव कों जतायो। वह अन्न लीनो ताकों कहि सुनायो।

भावप्रकाश – या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णव को सुद्ध बस्तू सुद्ध सत्ता श्रीठाकुरजी कों अंगीकार करावनी। काहू कों अप्रसन्न करि कै (और) काहू तें छलकपट करि कै कोऊ बस्तू-द्रव्य आदि लेनो नाहीं। ऐसी बस्तू-द्रव्य श्रीठाकुरजी अंगीकार करत नाहीं। तातें सुद्ध बस्तू श्रीगुसांईजी की कानि तें श्रीठाकुरजी रुचि सों अपने श्रीमुख में अंगीकार करत हैं।

तातें मारग की मर्यादा प्रमान सेवा करनी तो श्रीठाकुरजी प्रसन्न होंइ। श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजी की कानी याहि प्रकार प्रभु माने। जो-श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजी की मर्यादा अनुसार सेवा होंइ। नाँतरु प्रभु पुष्टि-प्रकार सों अंगीकार करत नाहीं। यह सिद्धांत भयो।

ता पाछें वा वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों पूछ्यो, जो-महाराज! अब तो भयो सो तो भयो। परि यह अपराध अब कैसें छूटे? तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो-अब एक संवत्सर पर्यंत नित्य विरह ताप-कलेस करे, जो-हों वैष्णव तें बाहिर पर्‌यो। और मन में तो आचार-धर्म ठीक राखि कै करें। परि ऊपर लौकिक में वैष्णवन में विरक्तता दिखावें। तब सब कोऊ तेरी निंदा करे। ता पाछें तू मेरी पास आइयो। सो वाने एक संवत्सर श्रीगुसांईजी ने कह्यो ऐसें कियो। तब वाकी निंदा हू बोहोत ही भई। ता पाछें श्रीगुसांईजी ने वाकों अष्टाक्षर उपदेस फिरि कै दीनो। पाछें वैष्णव सों कह्यो, जो-अब तुम याकौ परस करो। सो यह ऐसी बात हैं।

भावप्रकाश- यामें यह जतायो, जो-पुष्टिमार्ग में विरह-ताप ही मुख्य हैं। तातें सगरे दोष छिन में निवृत्त होत हैं। जीव सुद्ध होत है। और निंदा तें अप्रसन्न होनो नाहीं। काहेतें, निंदा दोष की निवृत्ति करनहारी है।

सो वे दोऊ विरक्त वैष्णव श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र सेवक हे। तातें इनकी वार्ता कहां ताई कहिए। वार्ता ॥७१॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक नागर साठोदरा ब्राह्मण, गुजरात कौ, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं-

भावप्रकाश- ये गोधरा तें कोस दस परे में एक गाम है, तहां एक द्रव्य पात्र नागर ब्राह्मन के जन्म्यो। सो यह लरिका बरस पांच कौ भयो तब इन के माता-पिता दोऊ मरे। तब उन कौ एक काका हतो। सो वह यह लरिका कों अपने पास राख्यो। पाछें यह बरस अठारह कौ भयो तब वह काका हू मर्‌यो। तब वह सब द्रव्य लै गोधरा आइ रह्यो। तहां इन कों राग-रंग कौ

इस्क लाग्यो। सो वेस्या- भवैयान में जान लाग्यो। नृत्य-गान हू करन लाग्यो। या प्रकार रहे। पाछें एक दिन या ब्राह्मन सों एक वैष्णव कौ मिलाप भयो। सो बात करत में वैष्णव ने याकों दैवी जीव जानि कह्यो, जैसो मन राग-रंग में है तैसो ठाकुर में लागे तो कारज होंई। तब या नागर ब्राह्मन पूछ्यो, जो-ठाकुर कौन कों कहियत हैं? तब वाने कह्यो, जो-ठाकुर श्रीकृष्ण हैं। जिननें ब्रज में प्रगट होंइ के ब्रज-गोपिन तें रास कियो हैं। ऐसें वे रसिक-सिरोमनी हैं। सो उन में मन लगे तो कारज होंई। नाँतरु सब वृथा हैं। ता पाछें फेरि या नागर पूछ्यो, जो-उन में मन कैसें लगावें? तब वा वैष्णव ने कह्यो, जो-वे सब रस के भोक्ता हैं। तातें या जगत में जो कछू उत्तम पदार्थ हैं, ताकौ वेही भोग करत हैं। यासों तुम उन कों उत्तम उत्तम सामग्री सुंदर, उत्तम वस्त्र, बीरा, सुगंध, आभूषन आदि समर्पो। और उनके आगें नृत्य-गान हू करो। या प्रकार मन लगाऊ। ये सब राग-रंग उन के लिये करोगे तो फल-रूप होईगो। नाँतरु ये सब बंधन करनहारे हैं संसार कौ उत्पन्न करत हैं। पाछें नरक में लै जात हैं। ता पाछें या नागर ने फेरि पूछ्यो, जो-ये सब प्रभु अंगीकार कैसें करें? तब वा वैष्णव ने कह्यो, जो-आज काल्हि श्रीठाकुरजी श्रीगुसांईजी के बस में हैं। तातें श्रीगुसांईजी की सरनि जाइवे तें उन की कानि तें ये सब अंगीकार करत हैं।

तब या नागर ने वासों पूछ्यो, जो-श्रीगुसांईजी कौन हैं, कहां रहत हैं? सो कृपा करि मोकों कहिए। तब वा वैष्णव ने कह्यो, जो-श्रीगुसांईजी श्रीवल्लभाचार्य के पुत्र हैं। उन कौ नाम श्रीविट्ठलनाथजी हैं। ये ईस्वर हैं। सो श्रीगोकुल में रहत हैं। तब या नागर ने अपने मन में निश्चय कियो, जो-अब तो इन के सरनि अवस्य जानो। पाछें वा वैष्णव सों कहे, जो-तुम हम कों श्रीगुसांईजी के सरनि जाँइवे कौ प्रकार कहो। हम श्रीगोकुल जाईं के उन के सरनि होंई तब वा वैष्णवने कह्यो, जो-सरनि कौ प्रकार तो श्रीप्रभु आप तुम कों समुझावेंगे। परि एक बात हों कहत हों, जो-श्रीगुसांईजी कछूक दिन में यहां पधारेंगे। ऐसी खबरि आई है। सो उन कौ बधैया गाम में आयो है। और विसेस समाचार तो नागजी भट जानत हैं। तातें तुम नागजी भट कों मिलो। उन कौ संग करो। वे श्रीगुसांईजी के बड़े कृपापात्र भगवदीय हैं। तातें उन के संग तें तुम्हारो कारज हू होइगो। ता पाछें यह नागर ब्राह्मन नागजी भट के घर गयो। सो नागजी भट सों सब समाचार कहे। तब नागजी भट कहे, जो-तुम कछू चिंता मति करो। प्रभु तो परम दयाल हैं। अपने जीव कौ अंगीकार आप करत हैं। आज काल्हि में वे यहां पधारेंगे। तब तुम उन के सेवक हूजियो। या प्रकार नागजी वाकौ समाधान किये। पाछें वह नागर ब्राह्मन अपने घर आयो । परि वाकों चित्त में चैन परे नाहीं। नित्य प्रति सांझ-सवार नागजी भट के घर आवे। श्रीगुसांईजी के समाचार पूछे। ऐसें करत कछूक दिन में श्रीगुंसाईजी गोधरा पधारे। तब नागजी भट ने याके सब समाचार श्रीगुसांईजी सों कहे। तब श्रीगुसांईजी याकी

ओर देखि कहे, जो-जीव तो उत्तम है। पाछें याकों न्हवाई नाम-निवेदन कराए। तब यह नागर ब्राह्मन श्रीगुसांईजी सों बिनती कियो, जो-महाराज! भगवत्सेवा पधराय दीजिये। तब श्रीगुसांईजी कृपा करि वाकों श्रीमदनमोहनजी कौ स्वरूप पधराइ दियें। पाछें सब सेवा की रीति बताए। ता पाछें आज्ञा किये, जो-राग-रंग पूर्वक इन की सेवा करियो। श्रीठाकुरजी आप तो पर प्रसन्न होंइगे। सो या प्रकार प्रभु आप आसीर्वाद दिये। पाछें वह नागर श्रीगुसांईजी कों भेंट धरि श्रीठाकुरजी कों पधाराई अपने घर आयो। सो भली भांति सों सेवा करन लाग्यो। और वा वैष्णव कौ नित्य संग करन लाग्यो।

वार्ता प्रसंग – १

सो वा गाम में एक वैष्णव हतो। थोरीसी दूरि रहतो। सो वाके और याके दोऊन कौ परस्पर मेल हतो। सो रात्रि कों मिलि बैठें, वार्ता करें। और जल दोऊ जनें परस्पर रहि कै साथ ही भरें। तब वह वैष्णव वाके घर के आगें होंइ कै निकसे। तब वाकों पुकारे। सो एक दिना दोउ आपस में मिलि कै जल भरन कों जाते। सो मार्ग में एक वेस्या कौ घर हतो। सो वाकें एक छोरी परम सुंदर हती। बरस बारह-तेरह की हुती। सो वाकों नृत्य सिखावते, गान सिखावते। सो घूघरू पांवन में बांधि कै वे घर में नृत्य करत हती। पखावज बाजें। सो इन वैष्णव नें देख्यो। तब वहां ठाढ़ो व्है कै वा वेस्या की छोरी कों देखें। सो देखें तो दैवी जीव है। वाके मुख पर भगवत तेज बिराजत है। तब ए वैष्णव उहां गागरि लिये ही उहां वाकों देखन कों ठाढ़ो भयो। सो वाकों निरखि कै देखें। तब वा साथ के वैष्णव नें यासों कह्यो, जो-इहां ठाढ़ौ रहनो उचित नाहीं, तातें चलिये। तब वा वैष्णव नें कह्यो, जो-नेक तो ठाढ़ो रहि, यहां कछूक कौतिक है। ता पाछें वा वैष्णव ने कह्यो, जो-हों तो जात हूँ तुम पाछें तें आइयो। वेसें कहि कै ये तो चल्यो। सो जल भरि कै अपने घर

आयो। ता पाछें अपनी स्त्री सों सब समाचार कहे, जो-सुनि, अमूको वैष्णव तो विषयी दीसत है। अब ही याकौ विषय गयो नाहीं। मार्ग में वेस्या के द्वार ठाढ़ो है। विषय में लुब्ध भयो है। तातें अब याकी संगति उचित नाहीं। तातें वह अपुने द्वारें पुकारें, तब तू नाहीं करियो। वे दो घर नाहीं ऐसें कहियो।

ता पाछें वह वैष्णव नागर ब्राह्मन नें वह छोरी कों दैवी जीव देखि कै वाकी माता सों कह्यो, जो-तेरी छोरी कों आज रात्रि मेरे घर पठावेगी? चारि पहर रहन देई। तब वानें कह्यो, जो-सुखेन राखि। परि एक मोहौर सोने की लेहुंगी। तब वानें कह्यो, जो-भले, बुलावन कों आउंगो। ता पाछें श्रीठाकुरजी कों उत्थापन-भोग धरि पाछें संध्या-आर्ति करि कै पाछें वा वेस्या के घर गयो। वाकी छोरी कों अपने घर बुलाई ल्यायो। ता पाछें वाकों सरीर कौ उबटना करि कै न्हवाई। ता पाछें सरीर माथो पोंछि कै आभूषन सब पहिराय कै नवीन वस्त्र सारी चोली पहिराइ कै ता पाछें मंदिर के द्वार सानिध्य बैठारि कै कान में अष्टाक्षर मंत्र कह्यो। पाछें माला पहिराय कै श्रीआचार्यजी तथा श्रीगुसांईजी तथा श्रीगोवर्धननाथजी तथा अपने सेव्य स्वरूप कौ चरनामृत दीनो। ता पाछें महाप्रसाद दीनो। तब वह वेस्या की छोरी संस्कृत बोलन लागी। ता पाछें आप न्हाय कै श्रीठाकुरजी पास तें खिलौना चोपड़ उठाय कै जल की झारी भरी। पाछें भोग, बीरा, सिंघासन के ऊपर धरि कै दीया दौई श्रीठाकुरजी पास मंदिर में चौमुखा राखे। दीया मंदिर के बाहिर द्वार पर हू राखे। ता पाछें वेस्या की छोरी सों कह्यो, जो-अब तू

श्रीआचार्यजी कौ चिंतन करि, श्रीगुसांईजी कौ चिंतन करि, दंडवत् करि कै मन ठिकाने राखि कै, जैसी तो में सामर्थ्य-पराक्रम होंइ, तोकों आवत होंइ, सो राखे मति। श्रीठाकुरजी के आगें कछू प्रपंच मति राखे। पाछें वह दंडवत् करि कै नृत्य कौ प्रारंभ कियो। पाछें वह दंडवत् करि कै रास के कीर्तन गावन लाग्यो। सरद रितु हती। सो वेस्या ने अलापचारी करी। श्रीआचार्यजी कौ तथा श्रीगुसांईजी कौ नाम लेत ही वाके सरीर में भगवत् आवेस भयो। और संस्कृत 'रास पंचाध्याई' के श्लोक बोलन लागी। सो देह-भाव भूली। सो चारि प्रहर नृत्य भयो। सो वह वैष्णव और वह वेस्या और श्रीठाकुरजी रसाविष्ट भए। सो ये दोऊ देहाभ्यास भूले। सो प्रातःकाल भयो। तऊ सुधि ना रही। और वा वेस्या की छोरी कों बुलावन आए। सो वाकों पुकारि किवाड़ ठोक कै गए। ता पाछें थोरीसी बेर कों एक वैरागी ताके झालर बाजी, तब सुधि भई। जो इतनो दिन चढ्यो है। ता पाछें स्नान करि कै मंदिर में गयो। रसोई सिंगार करि कै श्रीठाकुरजी कों राजभोग धर्‍यो । ता पाछें महाप्रसाद लै कै पाछें अपरस ही में जल भरन गयो । सो वा वैष्णव कों पुकारें। परि काहू ने उत्तर नाहीं दियो। तब किवाड़ झंझोर्‍यो। तब वाकी स्त्री बोली, जो-वे तो घर नाहीं। ता पाछें रात्रि कों उह वैष्णव आयो नाहीं। तब यानें मन में बिचार्‍यो, जो-भाई ! वानें मेरो दोष बिचार्‍यो। तब मन में ताप भयो। जो वैष्णवन कौ संग छूट्यो। सो भली नाहीं भई। ता पाछें वा वैष्णव की स्त्री सों श्रीठाकुरजी ने कह्यो, जो-हम तो श्रीगोकुल

कों जात हैं। तब वा स्त्री नें कह्यो, जो-काहेकों जात हो? तब श्रीठाकुरजी ने कह्यो, जो-तेरे धनी नें वा वैष्णव सों काहे कों बिगारी? वे तो अलौकिक वैष्णव है। वानें श्रीठाकुरजी आगें नृत्य करवायो। सो वह वेस्या की छोरी हू अलौकिक है। सो दोष मन में ल्याय कै बिगारी, तातें हम जात हैं।

भावप्रकाश- काहेतें, यह ब्राह्मन लीला में 'ब्रजनागरी' है। श्रीचंद्रावलीजू की अंतरंग सखी हैं। श्रीचंद्रावलीजी के साथ रास में गान करति हैं। ये 'चित्रलेखा' तें प्रगटी है। उनके राजस भाव कौ स्वरूप हैं। और यह वेस्या की छोरी 'ब्रजनागरी' की सहचरी 'नृत्यनिपुना' हैं। सो ये नृत्य में बोहोत निपुन हैं। सो जा समै 'ब्रजनागरी' गान करति हैं ता समै ये नृत्य करति हैं। सो एक समै श्रीठाकुरजी इन कों नृत्य करन कों कहे। तब इन कही, जो-में अब ही तो नृत्य करूंगी नाहीं। मेरे काम है। तातें श्रीठाकुरजी अप्रसन्न भए। ता अपराध तें यह वेस्या के इहां जन्मी। परि यह ब्राह्मन नें याकों पहिचानी। सो इन कों या प्रकार उद्धार कियो। सो बात तो यह वैष्णव जानत नाहीं। तातें ऊपर की चेष्टा देखि अभाव कियो। सो श्रीठाकुरजी वाकों न जताये। परि श्रीगुसांईजी कौ अंगीकृत है तातें इनकी स्त्री कों जताये। सो या प्रकार वा पर अनुग्रह कियो।

तब वा स्त्री ने श्रीठाकुरजी सों कह्यो, जो-महाराज ! आप तो पांव मति धारो। हों मेरे धनी सों कहि कै वा वैष्णव के इहां पठावत हों। ता पाछें वा स्त्री नें अपने धनी सों सब समाचार कहे, श्रीठाकुरजी नें कह्यो सो सब बात कही। ता पाछें वह तुरत ही उठि कै वा वैष्णव के घर आय कै पुकार्‌यो।

भावप्रकाश- काहेतें, ये दोऊ स्त्री-पुरुष दैवी जीव हैं। लीला में ये दोऊ 'ब्रजनागरी' की सहचरी हैं। स्त्री कौ नाम 'भामिनी' है। और पुरुष कौ नाम 'ब्रजदेवी' है। तातें इन कों अपनो दोष स्फुर्‌यो। तब स्वरूप कौ ज्ञान भयो। सो तुरत वा वैष्णव के घर आय पुकार्‌यो।

तब वा वैष्णव ने किवाड़ खोले तब याके पांवन परि रह्यो। और कह्यो, जो-मेरो अपराध क्षमा करो। हों चुक्यो हों तुम्हारो अपराध बिचार्‌यो। ता पाछें दोऊ जन मिलि, भगवद् वार्ता करि आनंद भयो।

भावप्रकाश- सो या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-तादृसी वैष्णव की कृति नाहीं देखनी।

सो वह वैष्णव नागर ब्राह्मन श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हुतो। सो उन की वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥७२॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी वेस्या की छोरी, जानें श्रीठाकुरजी आगे नृत्य कियो, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं-

भावप्रकाश- ये 'तामस' भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'नृत्य-निपुना' है। सो साठोदरा ब्राह्मन की वार्ता में उपर कहि आए हैं। ये श्रीनंदरायजी के गाँइन में 'मदोन्मत्त' बिजार हैं ताके भाव-रूप हैं। सो बिजार श्रीठाकुरजी कौ स्वरूप हैं। काहेतें, ये गाँइन में स्वच्छन्द बिहार करत हैं। सो कैसें, जैसें श्रीठाकुरजी ब्रजभक्तन में बिहार करत हैं ता भांति। और गाँइ है सो ब्रजभक्तन कौ स्वरूप हैं। ब्रजभक्त के जैसें नेत्र हैं ऐसें इन हू के नेत्र हैं कजरौटे। ब्रजभक्तन कौ जैसो मुग्ध भाव है ऐसो इन हू कौ है। जब श्रीठाकुरजी बेनु बजावत हैं तब ब्रजभक्त सब कारज छोरि वा बेनु कै नाद कौ एक ध्यान व्है श्रवन करत हैं, सब सुधि बुधि बिसर जाति हैं। ताही भांति ये गाँइ हू तृन आदि छोरि कै उंचे कान करि एक चित्त सों बेनु के नाद कों सुनत है। नादामृत कौ कान रूपी दोनन तें पान करत हैं। तातें ये ब्रजभक्त के भावरूप हैं। याही तें श्रीठाकुरजी कौ गाँइ बोहोत प्रिय हैं। सो छीतस्वामी गाए हैं-

पूर्वी

आगें गाँइ पाछें गाँइ इत गाँइ उत गाँइ,
गोविंदा कों गाँइन में बसिवोई भावें॥
गाँइन के संग धावें गाँइन में सचुपावें,
गाँइन की खुर-रेनु अंग सों लगावें॥
गाँइन सों ब्रज छायो वैकुंठ विसरायो,
गाँइन के हेत गिरि कर लै उठावें॥
'छीतस्वामी' गिरिधारी विट्ठलेस वपु धारी,
ग्वारिया कौ भेख किये गाँइन में आवें॥

सो ये 'नृत्यनिपुना' श्रीठाकुरजी की अंतरंग सखी हैं। तातें श्रीठाकुरजी इन पर सदा प्रसन्न रहत हैं। इन अपने नृत्य करि श्रीठाकुरजी कों बस किये हैं।

वार्ता प्रसंग - १

सो या वेस्या की छोरी ने वा वैष्णव तें नाम पायो। सो बात तो ऊपर कहि आए। पाछें सवारो भयो तब वाके घर के मनुष्य बुलावन आए तब वाकों पुकारें। परि वह वेस्या की छोरी कछू उत्तर देवे नाहीं, बोले नाहीं। ता पाछें वाकों घर ले गए। पाछें याकी माता तथा लोग कछू पूछे, पुकारें, परि उत्तर कछू नाहीं देई। बावरी सी नेत्र फेरि कै देखें। तब सब कोउ कहें, जो-ए तो बावरी भई है। याकों कछू भयो है। ता पाछें वेस्या ने बुलाई के घने घने उपाय किये। परि कछू होवे नाहीं। पाछें सगरेन सों नजर चुकाय कै वा वैष्णव के घर कों गई। ता पाछें वहां आछें बोलि बात करि, उहां महाप्रसाद लियो। पाछें वाके घर के लोग सगरे ढूंढि हारे। तब काहु नें उहां बताई। सो उहां तें घर के मनुष्य आइ कै ले गए। फिरि पाछें और हू दृष्टि चुकाइ कै वैष्णव कै घर आई। तब वाकी माता और घर के लोग सब वा वैष्णव सों लरे। राजद्वार वा वैष्णव कों ले गए। राजद्वार पुकारें, कहें, जो-याने ना जानें कहा कियो, सो हमारी छोरी रात्रि याके घर रही और बावरी भई है। तब वा हाकिम ने वा वैष्णव सों पूछ्यो। तब वा वैष्णव नें कह्यो, जो-मैं तो कछू कर्‌यो नाहीं। हों याकों बावरी काहेकों करों? ये तो मेरे घर आये पहिले ही ऐसी है। और बावरी को हो कहा करों? मेरे बावरी करि कै कहा करनो है? ये तो मेरे घर ऐसें ही आई कै बैठे है। तब हों याकों भूखी कैसें राखों? सो हों दोइ रोटी देत हूं। मेरे कछू यासों प्रयोजन नाहीं। पाछें राजद्वार के लोगन हू कह्यो, जो-याकों कहा

परी है, जो-तेरी छोरी कों बावरी करे। और यह बावरी करि कै कहा करेगो? ता पाछें वह घर गई। तब बावरी सी दीसें कछू बोले नाहीं। तब सब कोऊ घर के मनुष्य वासों दिक भए। और कह्यो, जो-ये तो हमारे काम सों गई। अब याकों खवावनो वृथा है। ता पाछें वा वैष्णव के घर जाँई तो वाकों कोउ बुलावे नाहीं और कदाचित् घर के लोग तथा और कोई अन्यमार्गीय बुलावें, बतरावें, तो वासों बावरी बात करें, कछू कौ कछू उत्तर देहि। नाँतरु बोले नाहीं। तातें सब कोऊ लौकिक में तो जानें, जो-बावरी है। और अलौकिक में तथा वा वैष्णव के साथ भगवद् वार्ता में सेवा में तथा श्रीठाकुरजी के सानिध्य में तो घनी चतुर घनी हुंसियार रहे। ता पाछें केतेक दिन कों श्रीगुसांईजी उहां पांव धारे। तब वह उन के साथ कौ वैष्णव हतो तहां उतरे। तब वह वैष्णव और वह वेस्या श्रीगुसांईजी के दरसन किये। ता पाछें दरसन करि कै श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज! याकों नाम-निवेदन कृपा करि कै दीजें। और सब समाचार वा वेस्या के श्रीगुसांईजी आगें कहे। तब श्रीगुसांईजी नें कह्यो, जो-अब तैनें नाम तो दीनो है। तब वा वैष्णवने कही जो-महाराज! मैंने नाम दीनो है सो आप कौ सुमिरन करि कै और भगवदर्थ कार्य जानि कै दीनो है। कार्य तो कर्‍यो चाहिए। तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै वा वेस्या कों नाम निवेदन करवायो। ता पाछें वह भली वैष्णव अलौकिक कृपापात्र भगवदीय भई। सो वा वैष्णव के, अहर्निस सब सेवा संबंधी कार्य परचारगी करे। रात्रि कों दोऊ जनें भगवद् वार्ता

कीर्तन करें। ता पाछें वा वैष्णव कौ द्रव्य निघट्यो। सो उदरार्थ व्यावृत्ति कों जाँई। तब श्रीठाकुरजी मंदिर में तें याकों पुकारे। और कहे, जो-अमूकी! तू इहां आउ। तब यह मंदिर खोली कै जाँइ। तब उहां श्रीठाकुरजी वासों बात करे, हँसें, बोले, हास्यादिक करे। और हू अनिर्वचनीय सुख दें। सो कह्यो न जाँइ। और कदाचित् यह सेवा में होंइ और जाँइ नाहीं सके तो श्रीठाकुरजी मंदिर तें याके पास आई बैठें। ऐसें नित्य करें।

सो एक दिना वह श्रीठाकुरजी के मंदिर में बैठि कै हांसी करत हती। इतने में वह वैष्णव आयो। तब वानें वेस्या कों कह्यो, जो-तें साम्हे मंदिर के किवाड़ क्यों खोले? और तू बिनु अपरस कैसें मंदिर में गई। सो गारी दीनी। खीझ्यो बोहोत ही। तब श्रीठाकुरजी बोले, जो-तू याकों काहेकों खीजत है? याकों तौ मैं कह्यो तब यानें किवाड़ मंदिर के खोले। और मैं बुलाई तब मंदिर में आई है। ता पाछें वा वैष्णव ने श्रीठाकुरजी कों साष्टांग दंडवत् करि कै बिनंती करी, जो-महाराज ! मैं चुक्यो सो मैं यासों कह्यो। अब कछू कहों नाहीं। ता पाछें श्रीठाकुरजी कह्यो, जो-याकों मेरो सिंगार-सेवा करन देऊ। मेरी आज्ञा है। इतनी लौकिक कहा परी है? ता पाछें वेस्या माथें तें न्हाइ कै अपरस वस्त्र पहरि कै तिलक करि कै सिंगारादि सब करि कै पाछें मंदिर संबंधी सेवा करन लागी। वह वैष्णव रसोई करें। और श्रीठाकुरजी कों भोग धरें। और परोसें। और सब काज या बाई करें। सो परम सनेह संयुक्त कारज करें। तातें श्रीठाकुरजी या बाई पर बोहोत प्रसन्न रहते। और वैष्णव पहोंचि कै उदर

निर्वाहार्थ जाँइ तब यह बाई किवाड़ मारि कै सेवा करें। तब श्रीठाकुरजी याके पाछें पाछें फिरे। और ये जहां बैठे तहां श्रीठाकुरजी हु बैठें। सो यानें अपने पास एक माँची करि के राखी ही। ता पर श्रीठाकुरजी आय बैठें, बात करें, और हु सुख देहि। ऐसें नित्य करें। सो जो-बात होंइ सो रात्रि सब वा वैष्णव सों कहें। पाछें वह वैष्णव या बाई पर सदा प्रसन्न रहे। रसोई सामग्री जो करें सो या बाई सों पूछि कै करें। वह बाई कहें सो श्रीठाकुरजी को घनि रुचि सों श्रीठाकुरजी को रुचे वेसो करें। श्रीठाकुरजी के मन की बात यह बाई जानें। ऐसी केतिक बातें हैं सो अनिर्वचनीय हैं। सो वह बाई श्रीगुसांईजी की सेवकिनी ऐसी कृपापात्र भगवदीय भई। इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता॥७३॥

भावप्रकाश- या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-पुष्टिमार्ग में कछू नियामक नाहीं। प्रभुन कौ अनुग्रह ही नियामक है। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु 'सिद्धांतमुक्तावली' ग्रंथ में आज्ञा किये हैं, सो श्लोक-

"अनुग्रहः पुष्टिमार्गे नियामक इति स्थितिः।"

तातें इहां छोटो बड़ो कोऊ नाहीं। जा पर कृपा होंइ जाँइ सोई बड़ो। सो या वैष्णव के संग तें वा वेस्या की छोरी पर श्रीठाकुरजी की कृपा भई। सो ऐसी भई, जो-या वैष्णव हू तें ज्यादा भई। तातें या मार्ग में प्रभु कुल, जाति, कृति कछू देखत नाहीं। जो-कोऊ श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी के सरनि में आवत हैं ताकौ प्रभु अपने प्रमेय बल तें उद्धार करत हैं, याही देह सों स्वरूपानंद कौ दान करत हैं। ब्रजभक्तन की गति कों प्राप्त करावत हैं। सो यह पुष्टिमार्ग ऐसो है।

❀❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक वाघाजी, राजपूत, गुजरात कौ बासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं-

भावप्रकाश- सो ये वाघाजी राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'चारुमति' है। सो 'मदोन्मत्ता' के भावरूप हैं। ताकी एक सखी हैं। वाकौ नाम 'चारुमुखी' हैं। सो यहां वाघाजी

की स्त्री भई। सो दोऊन में अत्यंत स्नेह है। ये दोऊ श्रीठाकुरजी की अंतरंग सखी हैं।

सो गुजरात के एक गाम में ये दोऊ रजपूत के इहां जन्मे। सो बरस आठ-दस के भए तब दोऊन के माता-पिता ने दोऊन कौ ब्याह कियो। पाछें कछूक दिन में स्त्री बड़ी भई तब अपने घर कों आई। सो वाघाजी की स्त्री बड़ी सुपात्र पतिव्रता हती। सो वाघाजी की आज्ञा में रहे। पाछें वाघाजी बरस बीस के भये तब राज में चाकर रहे। सो एक दिन श्रीगुसांईजी द्वारकाजी कों पधारत हे। सो मार्ग में वाघाजी कौ गाम आयो। तहां श्रीगुसांईजी आप डेरा किये। सो वाघाजी ने श्रीगुसांईजी के-साथ रथ, घोड़ा मनुष्य बोहोत देखे। तब वाघाजी श्रीगुसांईजी के मनुष्यन तें पूछे, जो-ये कौन राजा की फौज आई है? आज कहा है? तब एक ब्रजवासी ने कह्यो, जो-ये राजा नाहीं। ये राजान के हू राजा महाराजाधिराज हैं। आचार्य हैं, जगतगुरु हैं। बड़े बड़े राजा इन के सेवक हैं। तब वाघाजी ने पूछ्यो, जो-इन कौ नाम कहा हैं? कहां रहत हैं? तब ब्रजबासी ने कह्यो, जो-ये श्रीविट्ठलनाथजी श्रीगुसांईजी हैं। ये श्रीगोकुलाधिपति हैं। तब तो वाघाजी कों श्रीगुसांईजी के दरसन की उत्कंठा भई। पाछें वा ब्रजवासी सों कही, जो-तू मोकों इन के दरसन करावेगो? तब उन कह्यो, जो-देखि वे ठाढ़े हैं। तब वाघाजी देखे तो साक्षात् श्रीगोवर्द्धनधर ठाढ़े हैं। ऐसो स्वरूप तेज-प्रताप देख्यो। तब तो वाघाजी आय श्रीगुसांईजी कों बिनती कियो, जो-महाराज ! मोकों कृपा करि अपनो सेवक कीजिए। आज मेरे भाग्य उदय भए जो साक्षात कोटि कंदर्पलावन्य पूरन पुरुषोत्तम के दरसन भए। तब श्रीगुसांईजी वाघाजी कों दैवी-जीव जानि सरनि लिये। पाछें वाघाजी नें बिनती करी, जो-महाराज ! मेरे घर पधारि कै मेरी स्त्री कों हू सरनि लीजिए। पाछें श्रीगुसांईजी वाघाजी कौ बोहोत आग्रह देखि कृपा करि उनके घर पधारे। पाछें स्त्री को नाम सुनायो। पाछें दोउन को उपवास कराय दूसरे दिन निवेदन करवाए। ता पाछें वाघाजी ने बिनती करी, जो महाराज ! कृपा करि भगवत्सेवा पधराय दीजिए। तो हम सेवा करें। तब श्रीगुसांईजी उनकों भगवत्स्वरूप पधराय दियो। और वाघाजी के घर के पास एक वैष्णव रहत हुतो। सो श्रीगुसांईजी कौ सेवक हुतो। सो श्रीगुसांईजी वाघाजी सों आज्ञा किये, जो-या वैष्णव सों सब सेवा की रीति पूछि लीजो। ता पाछें श्रीगुसांईजी तो ऊहां तें बिजय किये। सो वाघाजी रजपूत वा वैष्णव के पास तें सब सेवा की रीति सीखे।

वार्ता प्रसंग - १

सो वह वाघाजी रजपूत और उन की स्त्री दोऊ जनें श्रीठाकुरजी की सेवा नीकी भांति सों करते। सामग्री घनी सुंदर नवीन करि कै श्रीठाकुरजी कों समर्पते। सो नित्य वैष्णव कों

लिवावते। नित्य एक दो वैष्णव महाप्रसाद कों आवते। उन के नेम हुतो। जो-कोऊ वैष्णव महाप्रसाद कों कदाचित् न आवें ता दिन उपवास करें, महाप्रसाद सब गाँइ कों देही। और स्त्री भूखे सोई रहें। ऐसें उन कौ नेम हुतो।

और वाघाजी राजद्वार में चाकर हुते। सो एक दिना श्रीठाकुरजी कों तवापूरी चना की दार की सखड़ी में करी। और सवारें उठि कै एक वैष्णव कों न्यौत्यौ। सो श्रीठाकुरजी कों सिंगार करि कै सिंगार-भोग धरि कै बाहिर आए। इतने ही राजद्वार कौ मनुष्य आइ कै कह्यो, जो-राजा की असवारी सीघ्र सिकार कों जात है। सो तुम कों बेगि बुलाये हैं। तब वाघाजी ने अपनी स्त्री सों कह्यो, जो-हों तो राजा की असवारी में जात हों सो अबेरि-सुदोसो आउंगो। तातें तुम राजभोग श्रीठाकुरजी कों धरि भोग सराय कै आर्ति अनोसर करि कै वा अमूक वैष्णव कों मैं न्यौत्यो है सो हों वाकों कहत जात हों, सो तुम बेगि ही जइयो। सो वह आवेगो। सो वाकों महाप्रसाद लिवाय कै ता पाछें महाप्रसाद ढांकि राखियो। जब हों आउंगो तब आपुन महाप्रसाद लेइंगे। ऐसें कहि कै वस्त्र पहरि कै हथियार बांधि कै घोड़ा ऊपर जीन करि कै असवार होंइ कैं चले। तब मार्ग में वैष्णव कौ घर हुतो। सो वाकों पुकारि कै कह्यो, जो-तुम बेगि घर जाँइ कै महाप्रसाद लीजियो। हों सो श्रीठाकुरजी को समर्प्यो। तो राजा की असवारी में जात हों। ता पाछें स्त्रीनें श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो। सो घ्यो हो थोरोसोक वाके पास। ता पाछें वह वैष्णव बेगि ही आय कै बेठि रह्यो। ता पाछें श्रीठाकुरजी ने वाघाजी

कों राजा की असवारी में जनायो, जो तवापूरी में घ्यो थोरोसोक़ है सो मेरे गरे में खूंचत है। सो मैं कैसें अरोगों? तब वाघाजी रजपूत नें घोड़ा तुरत ही घर की ओर कों फेर्यो। और घोड़ा को ऐंड़ दीनी। और चाबुक द्वे चारि खेंचि के मारे। तब घोड़ा भाज्यो । सो तुरत ही वायुवेग सों घर आयो। ता पाछें तुरत ही घोड़ा सों उतरि घर में आय कै घृत कौ पात्र लीनों। सो बजार सों घृत ल्याय कै घर में आय कै टेरा सरकाय कै नेत्र मूंदि कै बटेरा में घ्यो भोग धर्यो। ता पाछें आप तुरत ही घोड़ा पें असवार होंइ कै घोड़ा के ऐंड़ करि कै राजा की असवारी में जाँइ मिले। सो उतावलि में पनही की हू सुधि न रही। सो ता पाछें सुधि आई, जो-देखो ! हों पनही पहिरे ही मंदिर में गयो। सो उचित नाहीं कीनो। ता पाछें वह वैष्णव बैठ्यो हतो सो वानें देख्यो, जो-पनही पहिरे ही मंदिर में गयो। सो याकों कछू आचार कौ ठीक नाहीं। तातें इन के बिनु जाने महाप्रसाद लियो, सो तो लियो। परि अब लेनो उचित नाहीं। ऐसें बिचारी कै उहां तें अनबोले ही उठि कै अपने घर आयो।

ता पाछें अपनी स्त्री सों सब समाचार बात कहे। और कह्यो, वाघाजी रजपूत तथा वाकी स्त्री बुलाववें कों आवें तो सुखेन नाहीं करि कहियो, जो-वे तो महाप्रसाद लै कै कहूँ गाम गए हैं। कछू लौकिक व्यवहार कार्यार्थ गए हैं। ता पाछें वाघाजी रजपूत की स्त्री तो कछू यह बात जानें नाहीं। वे तो भीतर रसोई पोतती हती। सो पहोंचि कै भोग सरावन कों गई। तब देखे तो मंदिर में घृत कौ बटेरा भर्यो। है। तब मन में आश्चर्य

होंइ रही, जो-यह कहा है? मति श्रीठाकुरजी ल्याये होंइ। ता पाछें राजभोग सरायो। आर्ति अनोसर करि कै ता पाछें बाहिर आइ देखें तो वैष्णव नाहीं। तब द्वारें आई कै पुकारी। तब कोऊ बोले नाहीं। ता पाछें वह स्त्री कपड़ा पहरि कै वा वैष्णव के घर बुलावन कों गई । तब द्वारि पै द्वे-चारि बेर पुकारी। तब वा स्त्रीनें कह्यो, जो-वे तो कछूक तुरत उतावलो कार्य हो सो घर महाप्रसाद ले कै गामकों गए हैं। तब वह आय महाप्रसाद ढांपि आप और सेवा में लागी । ता पाछें उत्थापन कों वाघाजी रजपूत घर आए। तब स्त्री सों पूछ्यो, जो-वह वैष्णव महाप्रसाद लै गयो? तब स्त्रीनें नाहीं करी। और कह्यो, जो-वे तो इहां आय कै बैठ्यो हो, सो मैं राजभोग धरि कै बाहिर आई तब बैठ्यो देख्यो। और राजभोग सरावन गई तब देखों तो इहां तो कोई नाहीं। ता पाछें आर्ति अनोसर करि कै वा वैष्णव के घर गई। तब वा वैष्णव की स्त्री नें कह्यो, जो-वे तो महाप्रसाद लै कै गाम गए। ता पाछें घर आय कै महाप्रसाद धर्‍यो है ढांपि कै। और स्त्रीनें पूछ्यो, जो-न जानें मंदिर में घृत कौ कटौरा भरि कै कौन धर्‍यो है? तब वाघाजी रजपूत ने कह्यो, जो-मोकों श्रीठाकुरजी नें जनायो, जो रूखी तवापूरी मेरे गरे में खूंचत हैं। घ्यो थोरो है। तब तुरत ही आय कै घ्यो धरि कै ता पाछें हों असवारी में गयो। तब वह वैष्णव बैठ्यो देखि गयो है। परि मोकों उतावलि में कछू पनही की सुधि न रही आई। सो पनही पहिरे ही मंदिर में घ्यो धर्‍यो। सो मोकों पाछें उहां गयो। तब सुधि आई। तब ही हों मन में बिचार्‍यो, जो-मति वा वैष्णव के मन में आवें।

सोई भयो। सो उह आचार कौ बिचारी करि पाछो गयो।

पाछें वाघाजी रजपूत वा वैष्णव के फेरि कै घर आय बुलावन गए। परि वह वैष्णव घर में मिल्यो नाहीं। वाकी स्त्री नें कह्यो, जो-वे तो आये नाहीं, न जाने कौन गाम गए? और कब आवेंगे सो तो कह्यो नाहीं। ऐसें वा वैष्णव की स्त्री नें कह्यो। तब वाघाजी रजपूत अपने घर फिरि कै आए। ता पाछें श्रीठाकुरजी पोढें। ता पाछें पहोंचि कै स्त्री नें कह्यो, जो-यह महाप्रसाद तो गाँइ कों दीजो। सो महाप्रसाद गाँइ कों दीनो। और आप भूखे दोऊ सोय रहे। और वाघाजी स्त्री सों खीझ्यो, जो-तैं घ्यो थोरोसो काहेकों धर्‍यो? तातें श्रीठाकुरजी कों उहां लों पधारनो पर्‍यो और एती उपाधी भई। तब स्त्री ने कह्यो, जो-हों तो नित्य धरती हती सो धर्‍यो। मैं तो ऐसी जानी नाहीं, समुझी नाहीं।

भावप्रकाश- सो या वार्ता में यह जतायो, जो-सेवा मनोरथ बोहोत सावधानी सों करनो। सामग्री-बस्तूभाव सब सोच समझि कै राखनी। काहू बात की न्यूनता रहे नाहीं। नाँतरु प्रभुन कों श्रम होत हैं।

ता पाछें सवारें उठि कै फिरि कै रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग धर्‍यो। पाछें फिरि कै वाघाजी रजपूत वा वैष्णव कों बुलावन कों गए। परि मिल्यों नाहीं। ऐसें संध्या पर्यंत दोइ तीन बार वा वैष्णव कों बुलायवे कों गए। परि वह वैष्णव मिल्यो नाहीं। तब दूसरे दिना हू महाप्रसाद गाँइन कों दीनो । और स्त्री आप दोऊ भूखे सोई रहे।

भावप्रकाश- काहेतें, यह मारग की रीति हैं, जो न्यौत्यौ वैष्णव जब तांई महाप्रसाद अपने घर न लेई तहां तांई आपु प्रसाद न ले। तब दास भाव सिद्ध होंइ। ताप होंइ, दीनता आवें। अपने दोष कौ स्फुरन होंइ। तब प्रभु प्रसन्न होंइ।

ता पाछें वा वैष्णव के सेव्य श्रीठाकुरजी ने वा स्त्री सों कह्यो, जो–हम तो जात हैं । तब वा स्त्री नें श्रीठाकुरजी सों कह्यो, जो–आप काहेकों जात हो ? तब श्रीठाकुरजी ने कह्यो, जो–तेरो धनी वाघाजी रजपूत के घर सों काहेकों भूख्यो आयो ? वा पास तो वाके श्रीठाकुरजी ने घ्यो मांग्यो हतो । सो उतावलि सों आय कै घ्यो धर्‌यो । सो उतावलि सों पनही की और कपड़ान की सुधि रही नाहीं तो कहा भयो ? यह तो प्रेम की रीति है ।

भावप्रकाश–यहां यह संदेह है, जो–श्रीठाकुरजी ने ऐसें क्यों कह्यो ? श्रीआचार्यजी के मारग की रीति तो यह है, जो–अपरस ही में भोग धरें । और जो–कदाचित् प्रेम में विह्वल व्है अपरस भूलि जाँइ तोहू सुधि आइवे पें अपरस निकासे । सोहू वाघाजी ने नाहीं निकासी है ? तहां कहत हैं, जो–वाघाजी ने घृत कौ कटोरा नेत्र मूंदि कै टेरा सरकाइ कै अलग धर्‌यो है । सो घृत है सो तो रस है । तातें रस छूवे नाहीं । और अपरस छूई नाहीं है । जो–अपरस के पात्र आदि छूवते तो अपरस निकासिते । प्रेम में पनही, कपड़ा की सुधि रही नाहीं । सो प्रेम तो भगवत्स्वरूप हैं । वातें मर्यादा कैसें छूवे ? सब मर्यादा प्रेम कौ प्रगट करन के तांई है । सो तो वाघाजी में सिद्ध भयो । तातें श्रीठाकुरजी ने या प्रकार कह्यो । तहां कोऊ कहे, जो–आचार्यजी तथा श्रीगुसांईजी के सेवकन कों तो पहिले ही सों प्रेम सिद्ध है । तातें सेवा में अपरस–मर्यादा काहेकों राखत हैं ? तहां कहत हैं, जो–साधारन अवस्था में मर्यादा कौ पालन अवस्य करनो । काहेतें, ये श्रीआचार्यजी की प्रगट कीनी मर्यादा है । सो श्रीआचार्यजी पुष्टिमार्ग के प्रगट करनहार हैं । तातें उनकी आज्ञा प्रमान सेवा की कृति करनी । तब प्रभु प्रसन्न होंइ । तातें कल्पित प्रकार सों सेवा नाहीं करनी । सो श्रीआचार्यजी 'नवरत्न' ग्रंथ में कहत हैं । सो श्लोक

"सेवाकृतिर्गुरोराज्ञा बाधनं वा हरीच्छया ।"

तातें सेवा की कृति गुरु की आज्ञानुसार करनी चाहिए । हरिईच्छा सों बाध आवे तामें दोष नाहीं । यों समझि कै श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजी के सेवक साधारन अवस्था में वा मर्यादा कों अनुसरत हैं । सो यह मर्यादा के अनुसरन तें श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी प्रसन्न होंइ । तातें उन कौ आश्रय सिद्ध होंइ । या भाव तें श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजी के सेवक मर्यादा कौ पालन करत हैं । परि जब प्रभुन की विसेस आज्ञा होंइ तब प्रेम कौ भर होंइ । तब प्रेम में विह्वल होंइ कै मर्यादा स्वतः छूटि जात हैं । सो बाधक नाहीं । काहेतें ? श्रीआचार्यजी 'विवेकधैर्याश्रय' ग्रंथ में कहत हैं । सो श्लोक –

"विशेषतश्चेदाज्ञा स्यादंतःकरणगोचरः ।
तदा विशेष गत्यादि भाव्यं भिन्नं तु दैहिकात् ।"

तातें प्रभुन की विसेस आज्ञा होंइ तो ता प्रकार वैष्णव कों अनुसरनो । सो वह बाधक नाहीं । तातें इहां वाघाजी कों आज्ञा भई तब उननें भोग कौ टेरा सरकाय घ्यो धर्‍यो । सो उचित ही कियो है । ता समै वाघाजी ने नेत्र मूंदे । सो हू श्रीआचार्यजी की मर्यादा कौ पालन कियो । काहेतें, भोग समै ब्रजभक्त प्रभुन कों सामग्री अरोगावत हैं । सो ता समै दृष्टि करनो जीव कौ अधिकार नाहीं है । तातें श्रीआचार्यजी ने टेरा की रीति राखी है । तातें वाघाजी ने नेत्र मूंदि कै घ्यो कौ कटोरा धर्‍यो । सो मारग की रीति करी ।

परि तेरे धनीनें तो घर आय कै महाप्रसाद लियो । और वे तो स्त्री–पुरुष दोऊ जनें दोइ दिना भये भूखे हैं । तातें ऐसें निठुराई करी, जो–वे वैष्णव तुम्हारे लिये भूखे रहे । और तुम महाप्रसाद आनंद में लो । तातें हम तें यहां रह्यो जात नाहीं । ऐसें स्वप्न में कह्यो ।

भावप्रकाश–सो ये स्त्री–पुरुष दोऊ लीला में चारु मति की सहचरी हैं । स्त्री तो 'भक्तिनी' है और पुरुष कौ नाम 'आनंदिनी है । तातें उन पर कृपा करि यह बात जताई । नाँतरु स्वामिनी–द्रोह होतो । तो दोऊन कौ बिगार होतो । तातें प्रभु परम दयाल हैं ।

तब वह स्त्री चोंकि कै उठी । यह सब समाचार अपने पति सों कहे । तब वह वैष्णव तुरत ही वस्त्र पहरि कै वाघाजी रजपूत कै द्वारें आइ कै पुकार्‍यो । तब वाघाजी नें किवाड़ खोले । तब हाथ जोरि कै पाँवन परि रह्यो । और कह्यो, जो–मेरो अपराध क्षमा करो, जो–मैं महाप्रसाद अपने घर लियो । और तुम कों दोऊ दिना भूखे राखे । ऐसो करम कियो । ता पाछें श्रीठाकुरजी ने स्वप्न में स्त्रीसों कही सो सब बात वाघाजी रजपूत सों कही । और आप आचार कों विचारे सो सब सांची बात अपनो दोष कह्यो । ता पाछें वा वैष्णव ने वाघाजी रजपूत सों कह्यो,

जो-अब तुम स्त्री-पुरुष महाप्रसाद लेहु। और मेरो अटक राखो तो मोकों हू तुम देहु। सो हों लेहु। तब वाघाजी रजपूत ने कह्यो, जो-महाप्रसाद तो हम गाँइन कों दीनो। रंचक हू राख्यो नाहीं। तब वा वैष्णव ने घनो आग्रह हठ कियो। और कह्यो, जो-तुम आज्ञा करो तो हों बालभोग कौ प्रसाद मेरे घर तें ल्याऊं। तब वाघाजी रजपूत नें अपनी स्त्री सों कह्यो, जो-कछू बालभोग कौ महाप्रसाद अपने है? तब स्त्रीनें कह्यो, जो-थोरो सो तो है। ता पाछें वह महाप्रसाद वा वैष्णव कों दीनो। और स्त्री-पुरुष ने हू थोरोसो लियो। ता पाछें वह समाधान करि कै अपने घर कों गयो। ता पाछें वह दूसरे दिना सवारे ही उठि कै श्रीठाकुरजी कों जगाय बालभोग धरि कै बेगे बिनु बुलाये वाघाजी रजपूत के घर आय कै बैठि रह्यो। ता पाछें वाघाजी रजपूत श्रीठाकुरजी की सेवा सिंगार तें पहोंचि कै स्त्रीने रसोई करि कै ता पाछें राजभोग समर्प्यो। ता पाछें समयो भयो। ता पाछें श्रीठाकुरजी कों भोग सराय कै आर्ति अनोसर करि कै ता पाछें वह वैष्णव आप स्त्री तीनों जनें महाप्रसाद लियो। ता पाछें आनंद भयो।

भावप्रकाश- तातें वैष्णव की आर्ति श्रीठाकुरजी सहि सके नाहीं। सांचे मन तें आर्ति होंइ ताके सकल मनोरथ श्रीठाकुरजी पूरे करें।

वह वाघाजी रजपूत श्रीगुसांईजी के सेवक ऐसें टेक के कृपापात्र भगवदीय हते। तातें उनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिए? वार्ता ॥७४॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी बीरबल की बेटी, आग्रा में रहती तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं।

भावप्रकाश- ये सात्त्विक भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'रसिकप्रिया' है। ये 'मदोन्मत्ता' के भावरूप हैं। श्रीठाकुरजी की अंतरंग सखी हैं। तातें श्रीठाकुरजी कों अत्यंत प्रिय हैं।

वार्ता प्रसंग – १

सो एक समै श्रीगुसांईजी आगरे पाँव धारे। तब एक वैष्णव के घर उतरे। ताके पास बीरबल कौ घर हुतो। सो उष्णकाल के दिन हते। श्रीगुसांईजी छजा, झरोखा में बैठे हते। तब झरोखा में तें बीरबल की छोरी नें देखे। सो अद्‌भुत स्वरूप देख्यो। तब याके मन में आई जो-इन के सेवक हुजिए तो भलो है। ता पाछें अपने पिता सों पूछी, जो-तुम कहो तो हों श्रीगुसांईजी के सरनि जाऊं। सेवक होऊं। तब बीरबल ने कह्यो, जो-सुखेन होऊ। पाछें वह राय पुरुषोत्तमदास के घर की स्त्रीन सों जाँइ कै मिली। वे श्रीगुसांईजी की सेवकिनी ही। उन सों कह्यो, जो-तुम मेरी बिनती श्रीगुसांईजी सों जाँइ कहो, जो-मोकों सेवक करें। तब उन स्त्रीन नें श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! बीरबल की बेटी बिनती करति हैं, जो-मोकों नाम निवेदन करवावो। तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो-भले। पाछें नाम दीनो। तब श्रीगुसांईजी सों बीरबल की बेटी नें आत्मनिवेदन की बिनती करी। तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो काल्हि ब्रत करि। तब आत्मनिवेदन करवावेंगे। पाछें ब्रत कर्‌यो। ताके दूसरे दिन आत्मनिवेदन करवायो। ता पाछें श्रीगुसांईजी एक मास उहां रहे। सो नित्य कथा कहते। सो बीरबल की बेटी वैष्णवन की स्त्रीन में बैठि कथा सुनती। सो जितनी बात श्रीगुसांईजी कहें उतनी बात सब हृदै में लिखि राखे। ऐसी

कृपापात्र भगवदीय हती। ता पाछें श्रीगुसांईजी तो श्रीगोकुल पाँव धारे। पाछें यह उन के घर रात्रि कों वैष्णव और आवे, सो भगवद्वार्ता करे। तब उन स्त्रीन में बैठि कै यह सुने। उन वैष्णवन की स्त्रीन सों घनो मिलाप राखे । मिलि कै चले।

सो एक समै पृथ्वीपति नें बीरबल सों पूछ्यो, जो-बीरबल! साहिब कौन रीति सों मिलत हैं? तब वाने घने घने उत्तर दीने परि ठीक नाहीं परी। नाहीं मानें। ता पाछें बीरबल ने घने घने स्वामीन सों पूछी, वृंदावनीन सों पूछ्यो। सो सब पृथ्वीपति सों कह्यो, परि ठीक नाहीं परी। पृथ्वीपति नें कह्यो, जो-ऐसी बात तो हों नाहीं मानों। और या बात उत्तर कौ बेगि देहु। नाँतरु तेरो वित्त घर सब लूटि लेऊंगो। तब बीरबल महा चिंताग्रस्त होंइ कै बैठे। तब बेटी नें पूछ्यो, जो-बावा! तुम ऐसें अनमने काहेतें हो? तब बीरबल ने कह्यो, जो-तुम या बात में कहा जानों? राजकाज के उत्तर की कठिन है। तब बेटी नें कह्यो, जो-यह बात तो मोकों सर्वथा कही चहिए। ता पाछें हों समझोंगी तो उत्तर देउंगी, नाँतर नाहीं। पर्ा कही तो चहिए। तब बीरबल नें अपनी बेटी सों सब समाचार कहे। जो-पृथ्वीपति ऐसें पूछत हैं, जो-साहिब कौन रीति सों मिलत हैं? ताकौ उत्तर देत हों परि मानत नाहीं। और जितने पंडित और स्वामी और वृंदावनी सबन सों पूछ्यो। परि उत्तर ठीक नाहीं पर्यो। तब पृथ्वीपति नें कह्यो, जो-या बात कौ उत्तर और प्रमान देहु, नाँतरु घर और बार सब छीन लेउंगो। ऐसें कह्यो, तातें हों चिंतातुर हों। और अब कहा उपाइ कीजें? तब वा बीरबल की

बेटी ने कह्यो, जो-तुम श्रीगोकुल श्रीगुसांईजी पास गए हुते? उन सों पूछ्यो हतो? तब बीरबल नें कह्यो, जो-उन सों तो हों नाहीं पूछ्यो। तब बेटीनें कह्यो, जो-तुम श्रीगुसांईजी सों श्रीगोकुल जाँइ पूछो। जो-याकौ कहा उत्तर देत हैं? यह उत्तर उन बिना नाहीं मिलेगो। ईश्वर की बात में ईश्वर ही जानें। तातें तुम सर्वथा श्रीगोकुल ही जाऊ। तहां तुरत ही उत्तर मिलेगो। या बात में संदेह मति करो। ता पाछें तुरत ही बीरबल श्रीगोकुल कों चले। सो उत्थापन के समै आइ पहोंचे। सो श्रीगुसांईजी की खबरि वैष्णव सों पूछी। तब वैष्णवन कह्यो, जो-गुसांईजी सेवा में हैं। तब बैठक में बैठि रहे। ता पाछें श्रीगुसांईजी सेवा सों पहोंचि कै बाहिर पाँव धारे। तब बीरबल ने श्रीगुसांईजी सों दंडवत् करि कै बिनती करी, जो-महाराजाधिराज! राज सों एक बात पूछनी है। सो आप एकांत बैठि कै सुनो। हों कहों। ता पाछें श्रीगुसांईजी ने सब कों दूर कीनें। पाछें सब समाचार कहे। जो-पृथ्वीपति ने कह्यो, जो-याकौ उत्तर कहा है? तब श्रीगुसांईजी नें कह्यो, जो-याकौ उत्तर तो हम और पृथ्वीपति मिलें जब संदेह निवृत्त होंइ। यातें उन की या बात की सुनिवे की आतुरता होंइ तो वे मेरे पास आवेंगे। तब हों याकौ संदेह निवृत्त करि देउंगो। ताते तुम पृथ्वीपति सों कहो, जो- ऐसें कह्यो है। जो-तुम्हारो प्रयोजन होंइ तो तुम उहां जाऊ। ऐसें कहि कै इहां आवे तो इहां पठवाइयो, हम उत्तर देइंगे। तब बीरबल पाछें आगरे गयो। ता पाछें पृथ्वीपति सों समाचार कहे। पाछें बीरबल तो घर गयो। ता पाछें पृथ्वीपति बिचार्‍यो- यह काम

चौडे कौ नाहीं। एकांत कौ है। ऐसें बिचारि कै आप इकलो कोऊ पहिचाने नाहीं, ऐसें इकलोई घोड़ा पर आप ही जीन करि कै पाछली रात्रि में उठि कै सहजही में असवारी कौ बहानों करि कै हथियार बांधि कै चल्यो। सो श्रीगोकुल आयो। ता समै श्रीगुसांईजी राजभोग धरि कै स्नान-संध्या करिवे कों पधारे हते, श्रीयमुनाजी पैं तब पृथ्वीपति ने श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करी। तब श्रीगुसांईजी ने पहिचान्यो, जो-पृथ्वीपति आयो है । तब श्रीगुसांईजी नें सबन कों दूरि करि कै ता पाछें पृथ्वीपति सों पूछ्यो, जो-तुम कैसें करि कै आए हों? कहा पूछत हो? सो पूछिये। तब पृथ्वीपति कह्यो, जो-साहिब कौन रीति सों मिलत हैं? तब श्रीगुसांईजी नें कही, जैसें हम तुम मिले।

भावप्रकाश- यामें यह कह्यो, जो-जैसें लौकिक में तुम पृथ्वीपति सबन सों बड़े हो। सो और मनुष्य तुम सों मिलिवे की करें तब घने घनेन कों प्रसन्न करिवे कौ उपाइ करे। परि तुम्हारी इच्छा बिनु तो मिलनो दुर्ल्लभ है। और कदाचित् तुम मिलनो बिचारो ताकों तुम तुरत ही मिलो। और वाकी आर्ति भाजे। और ऐसें हम तुम कों मिलनो बिचारे, तो उपाइ करें। परि मिलनो कठिन है। और तुम मिलनो बिचारे, तो तुरत ही मिले। ऐसें जीव बिचारत ही बिचारत और उपाय करत घने-घने दिन बीते, परि मिलनो कठिन है। और प्रभुजी बिचारें, जो-जीव कों हों मिलों तो यामें कछू विलंब नाहीं।

यह श्रीगुसांईजी ने श्रीमुखतें कह्यो। तब पृथ्वीपति ऐसें बचन सुनि कै अत्यंत प्रसन्न भयो। और कह्यो, जो-तुम्हारे सेवक लोग तुमसें कन्हैया कहत हैं सो तुम सांचे ही कन्हैया हो। या बात में संदेह नाहीं। ता पाछें कह्यो, जो-तुम कछू मो पास मांगो। मैं तुम पर बोहोत ही प्रसन्न हों। तब श्रीगुसांईजी नें कह्यो, जो-हमारे तो काहू बात की ईच्छा नाहीं। तब और हु

कह्यो, जो-भले, परि मो जैसी सेवा कछू तो कृपा करि कै कहियो। ऐसो घनो आग्रह हठ करि कै कह्यो। तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो-भले, ऐसो तुम बोहोत हठ करत हो, तो एक घोड़ा ऐसो होंइ, जो घरी में पांच कोस चले। और बोहोत सुधो होंइ। चाल बोहोत सुंदर होंइ। जो-असवारी में चैन पावें। और तुम्हारी ओरतें 'औरंगाबाद में एक मनुष्य रहे। सो पार ही रहे। श्रीनाथजीद्वार जाँहि जब संग चले । पाछें औरंगाबाद में घोरा राखे। पाछें अपने घर जाँइ के पृथ्वीपतिं ने राजा टोडरमल कों बुलाई कै कह्यो, जो-अमूको घोड़ा ऐसी रीति सों औरंगाबाद में राखो। और उहां के हाकिम कों लिखो, जो-याकौ खरच और मनुष्य कौ खरच और रोजगार सब अपने राजद्वार तें पावे। और घोड़ा कौ जतन। वा पर मनुष्य ऐसो रहे सो घोड़ा के साथ चले। और जा समै श्रीगुसांईजी आज्ञा करें ता समै सिद्ध करि कै राखें, श्रीगुसांईजी की आज्ञा में रहे। ऐसी कहि कै बोहोत रीति सों भय बताय कै कही, जो-या बात में रंचक हू चुको मति। और या बात में चूक परेगी तो मोतें बुरो कोई नाहीं। ऐसें कही। ता पाछें जैसें पृथ्वीपति ने कह्यो तैसें ही राजा टोडरमल नें कर्यो। सो दिन घरी चारि चढे ता समै घोड़ा सिद्ध करि कै सिंगार करि कै पार श्रीयमुनाजी के तीर आनि ठाढ़ो राखे। सो श्रीगुसांईजी घर श्रीनवनीतप्रियजी कौ सिंगार करि कै गोपीवल्लभ भोग धरि कै ता पाछें वस्त्र पहरि कै नाव में बैठि कै पार उतरि तुरत ही घोड़ा पर असवार होंई कै श्रीनाथजीद्वार पाँउ धारे। तब तुरत ही गोविंदकुंड में स्नान करि कै श्रीगिरिराज ऊपर पाँउ धारे। सो

श्रीगोवर्द्धननाथजी आदि स्वरूपन कौ सिंगार करि कै गोपीवल्लभ भोग धरि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी सों बिदा होइ कै श्रीगोकुल को पाँव धारे। सो घोड़ा तें उतरि कौ नाव में बैठि कै पार उतरे। तब घोड़ा 'मोहनपुर' में जाँई कै बांधे। सो चारा घास दाना सब राजद्वार तें पावें। और श्रीगुसांईजी बैठक में वस्त्र सब उतरि कै खवास कों दे, ता पाछें आपु श्रीगुसांईजी श्रीयमुनाजी में स्नान करि कै अपरस ही में पांव धारे। सो श्रीनवनीतप्रियजी की आर्ति करे। ता पाछें अनोसर कराइ आप भोजन करें। ऐसी प्रकार आप नित्य करें।

सो बीरबल की बेटी कों श्रीगुसांईजी के स्वरूप कौ ऐसो ज्ञान हतो। यह बात इन बिना कोऊ जानें नाहीं। सो वह श्रीगुसांईजी कों साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम करि कै जानती। उह बीरबल की बेटी श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र सेवकिनी हती। भगवदीय हती। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥७५॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक कुनबी, गुजरात कौ बासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं-

भावप्रकाश- ये 'तामस' भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'बादामी' है। ये श्रीठाकुरजी कौ 'सुवा' है, ताके भावरूप हैं। ये 'सुवा' कों देखि कै श्रीठाकुरजी कों श्रीस्वामिनीजी की नासिका की सुधि आवत हैं। तातें वाकों अहर्निस अपनी कुंज में राखत हैं। वाकों नादामृत कौ पान करावत हैं। ताके पान किये तें वा सुवा कों अनेक प्रकार के भाव प्रकट होत हैं। सो सब साक्षात् होत हैं। सो उन भावन कौ एक यूथ है। ता यूथ की 'बादामी' सखी हैं।

ये गुजरात में एक कुनबी कै इहां जन्म्यो। सो बरस पंद्रह बीस कौ भयो। पाछें श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी के दरसन कों दूसरी बार जब गुजरात पधारे तब याके गाम में मुकाम भयो हतो। तब ये हू और वैष्णवन के संग सेवक भयो हतो।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक साथ गुजरात तें श्रीनाथजी के दरसन कों श्रीनाथजीद्वार आवत हुतो। सो ता साथ में वह कुनबी हू आवत हुतो। परंतु वाके पास कछू खरच कों नाहीं। सो साथ में सब वैष्णवन को टहल करत आवे। और वैष्णवन के उहां फिरतो प्रसाद लेत आवे। सो कबहू काहू के कबहू काहू के प्रसाद लेई। ऐसें करत साथ जब श्रीगोकुल के निकट आयो। तब सब वैष्णवन के तो आनंद भयो। सो अपनी भेंट संजोवन लागे। और वह कुनबी वैष्णव कों महा चिंता उपजी। जो-मेरे पास तो कछू है नाहीं मैं खाली हाथन सों श्रीगुसांईजी कों दंडवत् कैसें करोंगो? तब कुनबी वैष्णव नें अपने मन में बिचारि कै उहां भूमि पर घास में संखाहुली के फूल बोहोत आछें देखे, ताकों बीनि कै, एक फूलन की माला कीनी। सो वह माला हाथ में लै भींजे कपरा सों लपेटि कै लिये चल्यो आवत हतो। तब वा कुनबी के मन में सोच बोहोत होंन लाग्यो। जो-ये फूल कुम्हलाइ जांइगे तब मैं कहा करोंगो? तब श्रीगुसांईजी तो अंतरजामी दीनबंधु (है) सो आपु भोजन करि कै, घोड़ा के ऊपर असवार होइ कै श्रीयमुनाजी के पार कों चले। ता समै श्रीगुसांईजी मन में बिचारे, जो-संखाहुली के पुष्प तो अत्यंत कोमल होंई। सो वह मेरे वैष्णव ने माला करी है सो माला कुम्हलाई जाइगी तो वाकों दुःख बोहोत ही होइगो। तब वह वैष्णव पर कृपा करि कै श्रीगुसांईजी वाके सन्मुख पधारे। सो वह वैष्णव नें श्रीगुसांईजी कों देखे। तब वैष्णव के मन में बड़ो

आनंद भयो। तब श्रीगुंसाईजी वह वैष्णव सों कही, जो-वह संखाहुली के पुष्प की माला लाऊ। तब कुनबी वैष्णव ने माला पहिराई कै श्रीगुसांईजी कौ दंडवत् कियो। तब श्रीगुसांईजी तत्काल उहां तें फिरे। तब वह वैष्णव श्रीगुसांईजी के साथ श्रीगोकुल आयो।

उह कुनबी श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें उनकी वार्ता कहां तांई कहिए? वार्ता ॥७६॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक और कुनबी, गुजरात कौ वासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं।

भावप्रकाश- ये 'सात्विक' भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'चारूगोप' है। सो वह 'सुवा' के भावरूप हैं। श्रीठाकुरजी कौ सखा है। परम मुग्ध हैं। नंदालय की गाँइन में रहत हैं। तातें श्रीठाकुरजी इन पर सदा प्रसन्न रहत हैं। सो गुजरात में एक कुनबी के जन्म्यो।

वार्ता प्रसंग-१

सो एक समै गुजरात कै वैष्णवन कौ साथ श्रीगोकुल कों श्रीगुसांईजी के दरसन निमित्त श्रीव्रज के निमित्त आवत हतो। सो वा साथ में वह कुनबी हू आवत हूतो। सो ताकी गांठि में कछू खरच नाहीं हतो। सो मार्ग में उपरा बीनत चले। सो मजलि जाँइ कै उतरे। तब वे उपरा वैष्णवन कों बांट देतो। सो वे वैष्णवन रसोई करे। ताकी टहल करत आवें। वैष्णव वाकों महाप्रसाद लिवावे। सो फिरतो फिरतो सब के महाप्रसाद लेतो आवे। ऐसें करि कै श्रीगोकुल आइ पहोच्यो। तब श्रीगुसांईजी के दरसन करे। ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारे। तब वह कुनबी हू साथ गयो। तहां श्रीगुसांईजी पास नाम पायो।

पाछें श्रीगुसांईजी वा ऊपर परम कृपा करि कै आप ही तें वाकों आत्म-निवेदन करवायो। पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ दरसन कियो। तब वह कुनबी बोहोत ही प्रसन्न भयो। तब वा कुनबी सों श्रीगुसांईजी पूछ्यो, जो-तू अपने उहां कहा काम करत हुतो? तब कुनबी ने कह्यो, जो-महाराजाधिराज! मैं तो उहां गाँइ चरावत हतो। तब श्रीगुसांईजी नें श्रीगोवर्द्धननाथजी की गाँइ चराइवे की आज्ञा दीनी। जो-तू प्रसन्न होंइ कै श्रीगोवर्द्धननाथजी की गाँइ चराइयो। तब श्रीगुसांईजी ने ग्वालन सों कह्यो, जो-याकों तुम नित्य गाँइन में ले जाऊ। और महाप्रसादी रसोई में प्रसाद लेवे कों कह्यो, जो-याकों महाप्रसाद नित्य लिवायो करो। सो वह तो वा दिन तें नित्य श्रीगोवर्द्धननाथजी की गाँइ चरायो करे। और महाप्रसाद रसोई में लेई। सो गाँईन की सेवा मन लगाय कै करे। सो वाने गाँइन की सेवा या भांति सों कीनी जैसें श्रीठाकुरजी की सेवा करें। गाँइन कों अपनी चादर सों पोंछें। गाँइन कों कछू जीव जंतु लगन न पावे। ठौर स्वच्छ राखें। सो गाँइन की सेवा देखि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी बोहोत प्रसन्न भए। तब वाकों गाँइन में श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ दरसन भयो। तब वहां बन में श्रीगोवर्द्धनाथजी छाक बांटते। तब वाहू कों श्रीगोवर्द्धननाथजी लडुवा चारि देते। तब यह वैष्णव तामें तें दोइ लडुवा तो राखि छोरतो, सो रात्रि कों खातो। तब तें वह कुनबी श्रीगोवर्द्धननाथजी की महाप्रसादी रसोई में कबहू जेंवन

जातो नाहीं। तब वासों रसोईया ने पूछी, जो–तू रसोई में महाप्रसाद लेवे क्यों नाहीं आवत ? तब वा कुनबी ने कह्यो, जो–मेरो पेट तो उहांई वन में लडुवान सों भरि जात है। तातें मैं रसोई में जेंवन काहे कों आऊं ? तब रसोईया ने पूछी, जो–उहां तोकों बन में लडुवा कहांतें मिले हैं ? तब या कुनबी–वैष्णव कह्यो जो–लडुवा तो मोकों श्रीगोवर्द्धननाथजी वन में जब छाक बांटत हैं तब उहांई मोहू कों चार लडुवा देत हैं। तब वा रसोइया नें यह बात श्रीगुसांईजी के आगें कही, जो–महाराज ! या कुनबी कों तो श्रीगोवर्द्धननाथजी बन में लडुवा देत हैं। तब श्रीगुसांईजी कहें, जो–सेवा ऐसोई पदार्थ है। जो गाँइन की सेवा अंतःकरनपूर्वक आछी रीति सों करे, ताकों श्रीगोवर्द्धननाथजी इहांई दरसन देत हैं।

भावप्रकाश–सो काहेतें, जो–श्रीगोवर्द्धननाथजी तो भक्तन के आधीन हैं। सो भक्तन मैं ब्रजभक्त सब तें श्रेष्ठ हैं। तातें श्रीगोवर्द्धननाथजी ब्रजभक्तन के परवस हैं। सो ब्रजभक्त उनकों जा भांति नचावत हैं, ताही भांति ये नाचत हैं। जा भांति बैठारे ता भांति बैठे हैं। उठावें तब उठे हैं। ऐसें आधीन रहत हैं। सो ब्रजभक्तन कों स्वरूप ये गाँइ हैं। तातें गाँइन की सेवा कों श्रीगोवर्द्धननाथजी ब्रजभक्तन की सेवा मानत हैं। यातें बेगि प्रसन्न होत हैं। सो गाँइन की सेवा ऐसो पदार्थ है। सो वैष्णव को गाँइन की सेवा भावपूर्वक नित्य करनी, जाते श्रीगोवर्द्धननाथजी बेगि प्रसन्न होंइ।

वार्ता प्रसंग–२

बहुरि एक समै अरिंग में रास भयो। सो सब वैष्णव देखन कों गए। तब वह कुनबी वैष्णव हू रास देखन कों साथ गयो। सो उहां रासधारी ने यह कीर्तन गायो –

मालव–

नाचत रास में गोपाल संग मुदित घोषनारी।

तरुतमाल स्यामलाल कनकबेलि प्यारी।
चलनितंब किंकिनी कटि लोल बंक ग्रीवा।
राग तान मान सहित बेनुगान सींवा।
स्रमजलकन सुभर भरे रंग रेन सोहें।
'कृष्णदास' प्रभु गिरिधर व्रजजन मन मोहें।

सो यह पद में 'नाचत रास में गोपाल' कह्यो। तब ही यह सुनि कै वह कुनबी वैष्णव कह्यो, जो–'नाचत घास में गोपाल।' सो ऐसो सुनि कै सब वैष्णवन कों बड़ो आश्चर्य भयो। तब सब वैष्णव यह बात श्रीगुसांईजी सों पूछी, जो–महाराज! यह वैष्णव कहा कहत हैं? तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो–ए दोउ सत्य वचन कहत हैं। काहेतें, जो–रासधारी गावत हैं, जो–'नाचत रास में गोपाल।' सो तो श्रीभागवत में कह्यो है सो कहत हैं। और यह वैष्णव, जो कहत है, जो–'नाचत घास में गोपाल' सो यों सत्य कहत हैं, जो–गाँइन के साथ घासन के बीच में खिरक में श्रीगोवर्द्धननाथजी नित्य ही नृत्य करत हैं। तातें यह तो अपनी देखी बात कहत हैं। सो सेवा ऐसोई पदार्थ है। जासों श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रसन्न होत है। श्रीगोवर्द्धननाथजी कों तो गाय बोहोत प्यारी हैं। सो वह कुनबी वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो, जासों श्रीगोवर्द्धननाथजी ऐसें अनुभव जनावते। तातें उन की वार्ता कहां ताई कहिए।

वार्ता ॥ ७७ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक ब्राह्मन, वह श्रीगंगाजी के तीर ऊपर रहती, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं –

भावप्रकाश – ये राजस भक्त हैं। लीला में इन को नाम 'बिछिया' है। वे 'सुवा' के भावरूप हैं। और बिछिया की एक सखी और हैं। ताकौ नाम 'रामकटोरी' है। सो या ब्राह्मन की स्त्री भई। सो ये पूरव में दोऊ ब्राह्मन के घर जन्मे। सो बरस दस–बारह के भए तब दोउन के मातापिताने इन कौ ब्याह कियो। पाछें ये बड़े भए। तब दोऊन में प्रीति बोहोत हती। सो एक दिना यह ब्राह्मन अपनी स्त्रीकों लै श्रीजगन्नाथराइजी गयो। तहां इन दोऊ श्रीगुसांईजी के दरसन पाए। ता समै श्रीगुसांईजी श्रीजगन्नाथराइजी के मंदिर के निकट श्रीभागवत की कथा कहत हुते। सो बोहोत लोग कथा सुनत हते। सो येहू कथा सुनिवे कों बैठे। सो कथा सुनत ही दोऊन कौ मन फिर्‌यो। तब दोऊन कह्यो, जो–ये तो कोई बड़े महापुरुष हैं। ताते इनकी सरनि जइए तो आछौ। सो कथा पुरी होत ही दोऊ स्त्री–पुरुष श्रीगुसांईजी सों बिनती कियो, जो महाराज ! हम कों सरनि लीजिए। और या संसार तें उद्धार होंइ ऐसी कृपा कीजिए। तब श्रीगुसांईजी दोऊन कों दैवी जीव जानि आप सरनि लिये। नाम सुनायो। पाछें दूसरे दिन निवेदन करायो। ता पाछें दोऊन बिनती किये, जो–महाराज ! अब कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी कहे तुम भगवत्सेवा करो। तब दोऊन बिनती किये, जो महाराज ! कृपा करि स्वरूप–सेवा पधराई दीजिए। ताकी हम सेवा करें। तब श्रीगुसांईजी उनकों एक लालजी पधराइ दिये। पाछें आज्ञा किये, जो–तुम इनकी सेवा करियो। इन तें तुम कों बोहोत सुख होइगो। पाछें ये दोऊ कछूक दिन ऊहां रहि कै श्रीगुसांईजी की टहल किये। मारग की रीति सब सीखे। ता पाछें श्रीगुसांईजी सों बिदा होंइ अपने घर आए। पाछें दोऊनने बिचार कियो, जो–गाम में रहनो उचित नाहीं। तातें कहूं गंगाजी के तीर एक एकांत में रहिये तो भलो हैं।

वार्ता प्रसंग–१

सो वह ब्राह्मन वैष्णव स्त्री–पुरुष गाम छोरि कै गंगाजी के तीर पैं आए। तहां अपने रहिवे कौ घर गंगाजी के तीर पर करि एकांत में रहन लागे। सो उहां तें एक गाम थोरीसी दूरि हतो। सो उहां वे स्त्री–भरतार दोऊ जनें रहते। परि वह ब्राह्मन गाम में न रहे। सब तें न्यारो रहे। सो वा ब्राह्मन के घर में एक गाँइ हुती। और वह ब्राह्मन एक दिन कौ सीधो अपने घर में राखतो। तब सवारे ही उठि कै देहकृत्य दंतधावन करि कै स्त्री–भरतार दोऊ जनें स्नान करि कै श्रीठाकुरजी की सेवा करते। वाकी स्त्री तो

श्रीठाकुरजी की रसोई करती । और उन कौ पुरुष श्रीठाकुरजी की सेवा–सिंगार करि कै और सब टहल करतो । सो वह राजभोग श्रीठाकुरजी कों समर्पि कै श्रीगंगाजी–स्नान कों जातो । तब वह स्त्री रसोई पोति कै बासन मांजि धरे । इतने भरतार श्रीगंगाजी तें स्नान करि आवें । इतने राजभोग सराइवे कौ समै होंइ । तब भोग सराइ कै श्रीठाकुरजी कौ अनोसर करि कै गाँइ कों पातर धरें । ता पाछें वह ब्राह्मन वैष्णव तो भिक्षा मांगन कों जाँई । और वह ब्राह्मन की स्त्री गाँइ चरावन कों जाँइ । और उहां श्रीगंगाजी के तीर तें दूब हू खोदि कै श्रीगंगाजी में धोइ कै गांठि बांधि कै अपने घर कों ले आवे । सो एक टोकरा में धोई कै गाँइ कों खवावे ।

भावप्रकाश – ताकौ भाव यह है, जो–मति कहूं गाँइ के पेट में रज जाँइ तो दूध में रज आवे । सो वह दूध श्रीठाकुरजी आरोगत हैं । तातें या भांति सों गाँइ कौ जतन कर ।

और वह ब्राह्मन गाम दोइ तीन आसपास के जाँइ कै कोरी भिक्षा मांगि कै जितनो खरच होंइ तितनो जुरे तब अपने घर आवे । तब वह अन्न ल्याइ कै अपनी स्त्री कों सोंपे । सो वह स्त्री बीनि फटकि कै जाकौ जैसो प्रकार करनो होंइ तैसे ही सब सामग्री सिद्ध करि कै राखें । सवारे नित्य कौ नेग जा भांति करनो होंई सोई करें । बालभोग तथा राजभोग सराय कै ता पाछें तीन पातरि परोसि कै वाही नित्य की रीति करें । ऐसें सर्वदा चलो जाँइ । या भांति सों नित्य निर्वाह करि कै उहां रहे ।

वार्ता प्रसंग–२

बहोरि एक और ब्राह्मन पंडित हतो । सो देस विदेस के

पंडितन सों वाद करि जीते ऐसो पंडित हतो। सो वा ब्राह्मन पंडित के साथ डेढसें विद्यार्थी रहते। सो देस देस के पंडितन कों जीति कै अपने घर कों जात हुतो। तब मार्ग में एक बडो नगर आयो। सो वा समै वा नगर कौ राजा क्रीडा करन बाहिर निकस्यो हतो। सो राजा के साथ वाके राजलोगन के महाल हते। सो वह अपने वैभव सों निकस्यो हतो। सो कोऊ तो सुखपाल में, कोऊ रथ के ऊपर, यो भांति सों वह क्रीडा करन निकस्यो हतो। सो ता समैं वह पंडित ब्राह्मन ने अपने मन में कह्यो, जो–धिक्कार मेरे जन्म कों, जो–मैं पंडिताई कौ सुख तो लीनो है। परि मोकों या सुख कौ परस तो कबहू न भयो। तब वह ऐसो बिचारि कै हाइ हाइ करन लाग्यो, जो–ऐसो सुख मैं कैसे भुक्तों ? तब वा पंडित ब्राह्मन नें अपने साथ के विद्यार्थी हते और पुस्तक हते सो सब अपने घर कों पठाइ दिये। तब उहां वह पंडित इकलोई रह्यो। तहां श्रीगंगाजी के तट विषे एक महादेवजी कौ स्थल हुतो। तब वह पंडित ब्राह्मन जाँइ कै उहां महादेवजी के धरने पर्यो। सो वानें उहां दिवस तीन चार पांच तांई लंघन किये। तब महादेवजी ने वा पंडित ब्राह्मन सों पूछ्यो, जो–तू ह्यां क्यों लंघन करत है ? तब वा पंडित ब्राह्मन नें कही, जो–मैं तो वा राजा के सुख कों मांगत हों। वह सुख मैंनें बोहोत आछौ देख्यो है। सो सुख मोकों देऊ। तातें मैं इहां लंघत हों। तब महादेवजी ने कह्यो, जो–वह राज्य तो तेरे भाग्य में नाहीं। तातें राज्य तो मैं तोकों न देऊंगो। तू तो बहोतेरो पढ्यो है, तातें तू अपने मन में बिचारि देखि, जो–तेरे भाग्य में राज्य है कै नाहीं ?

तातें राज्य तो भाग्य बिना पावे ही नाहीं। और हों तोंकों एक मनि देत हों। सो तू मनि ही लेउ। या मनि तें द्रव्य हू तेरे होइगो। तब वा द्रव्य करि कै तोकों सब सुख होइगो। तब वह पंडित ब्राह्मन मनि महादेवजी पास तें लै कै चल्यो, उहां तें। तब वह पंडित ब्राह्मन अपने मन में बिचार करन लाग्यो, जो–यह द्रव्य तो भयो, परि जौबन बिनु स्त्रीकौ भोग तो होइगो नाहीं। तब यह पंडित ब्राह्मन नें अपने मन में बिचार कियो, जो–अब मैं तप करों। तप करि कै जौबन मांगों। तब जौबन अवस्था मांगि कै मैं अपने घर कों जाऊं। तब मैं उहां जाँइ कै ऐसौ सुख भुक्तों। ऐसें बिचारि कै वह पंडित ब्राह्मन तप करिवे कों चल्यो। सो श्रीगंगाजी के तीर के विषे जहां वह वैष्णव ब्राह्मन कौ घर हतो ता ठौर आइ कै देखें तो वह वैष्णव ब्राह्मन बैठ्यो है। और वह स्थल अति अद्भुत सुंदर है। तुलसी कौ पुष्पन कौ बन फूल रह्यो है। ऐसो उत्तम स्थल देख्यो। पाछें वह ब्राह्मन पंडित बैठ्यो। तब घरी दोइ पाछें वह वैष्णव ब्राह्मन सेवा तें पहोंचि बाहिर आयो। तब देखे तो एक ब्राह्मन बैठ्यो है। तब वा पंडित ब्राह्मन नें वा वैष्णव ब्राह्मन कों नमस्कार कियो। तब वा वैष्णव ब्राह्मन हू ने नमस्कार करि कै वा पंडित ब्राह्मन कों पूछ्यो, जो तुम कहां तें आवत हो ? तब वा पंडित ब्राह्मन ने कह्यो, जो–हों तो देस–देस फिरत इहां आइ निकस्यो हूं। इतने में तो घर भीतर राजभोग समर्पिवे की बिरियां भई। तब भीतर जाँइ कै श्रीठाकुरजी कों राजभोग समर्पि कै वह वैष्णव फिरि बाहिर बैठ्यो। तब वा वैष्णव ब्राह्मन नें वा पंडित ब्राह्मन सों

कही, जो–आज तुम महाप्रसाद श्रीठाकुरजी कौ इहांई लीजियो। तातें तुम अब बैठो। सो श्रीगंगाजी में स्नान, ध्यान, संध्या, नित्यकर्म करि आवो। ता पाछें वह पंडित ब्राह्मन श्रीगंगाजी जाँइ कै स्नान करि नित्यकर्म करि जप करि कै आयो। इतने ही इहां श्रीठाकुरजी कौ राजभोग सरायो। सो वे वैष्णव ब्राह्मन नित्य तो तीन पातरि परोसत हते। तब ता दिन वा वैष्णवने चारि पातर परोसी। तब एक पातरि तो प्रथम ही गाँइ कै आगें धरी। और एक पातरि वा पंडित ब्राह्मन के आगें धरी। तब वा पंडित ब्राह्मननें महाप्रसाद लियो। और दोइ पातरि आप दोऊ स्त्री–पुरुष ने प्रसाद लियो। ता पाछें वह पंडित ब्राह्मन रात्रि कों उहां ही सोय रह्यो। पाछें जब प्रातःकाल भयो तब तो चातुर्मास लाग्यो। सो चातुर्मास में गमन तो निसिद्ध है। तब वा पंडित ब्राह्मन नें वा वैष्णव ब्राह्मन सों कह्यो, जो–वैष्णवजी! अब तो चातुर्मास लाग्यो है। तातें मैं तो महिना दोइ तीन तो इहां ही रहूंगो। तब वा वैष्णव ब्राह्मन ने कह्यो, जो–भले, सुखेन रहो। तुम्हारी इच्छा। तब वा दिन तें वह वैष्णव ब्राह्मन नें भिक्षा अधिक मांगी। जब जान्यों, जो–नित्य तें सवायो भयो तब वह वैष्णव ब्राह्मन अपने घर कों आयो। पाछें वानें स्नान करि कै अपने नित्य कौ काम कियो। ऐसें करत जब थोरेसे दिन भए तब वा पंडित ब्राह्मन नें या वैष्णव ब्राह्मन के चिन्ह देखे। तब वा पंडित ब्राह्मन नें मन में बिचारी, जो–या वैष्णव ब्राह्मन कों तो महा कष्ट भोग आयो है। तब वह पंडित ब्राह्मन अपने मन में बोहोत खेद करन लाग्यो। सो वह पंडित ब्राह्मन सामुद्रक पढ्यो

हतो। तातें वा पंडित ब्राह्मन कों सब ज्ञान हतो। जो–या वैष्णव ब्राह्मन कों तो महाकष्ट भोग आयो है। सो काल्हि दस घरी दिन चढे भीतर राजा के मनुष्य आवेंगे। सो याके माथें चोरी कौ कलंक दै कै याकों पकरि लै जाइंगे। तब वह राजा या वैष्णव ब्राह्मन कों सूरी पें चढाई कै मरवाय डारेगो। सो ऐसो भोग या वैष्णव ब्राह्मन कों वा पंडित ब्राह्मन की दृष्टि में आयो। तातें वह पंडित ब्राह्मन आप महा चिंता में ग्रस्त भयो। सो वह पंडित ब्राह्मन मन में बिचार करन लाग्यो, जो–मैं तो सर्वथा या वैष्णव ब्राह्मन के साथ जाऊंगो। सो उहां जाँइ कै वा राजा सों मैं लरूंगो। मैं वा राजा सों ऐसें कहूंगो, जो–या वैष्णव ब्राह्मन के बदले तुम मोकों मारो। परि मैं तो या वैष्णव ब्राह्मन कों मारन न देउंगो। ऐसें वह पंडित ब्राह्मन अपने मन में संकल्प–विकल्प करिवो कर्‌यो। परि वह वैष्णव ब्राह्मन तो कछू जानें नाहीं।

सो यह वैष्णव ब्राह्मन तो श्रीठाकुरजी के सेवा–सिंगार सों जब पहोंच्यो, तब वह भीतर श्रीठाकुरजी कौ राजभोग सराय कै सुमरन करन लाग्यो। तब वैष्णव ब्राह्मन की आंखि लागि गई। सो वाकों निद्रा आइ गई। सो वा ब्राह्मन कों महाघोर स्वप्न भयो। सो वा स्वप्न में ऐसो देख्यो, जो–जानों वा राजा के मनुष्य मोकों लैन कों आए हैं। सो मेरे माथे चोरी कौ कलंक लगाइ कै मोकों पकरि कै वा राजा के आगें जाँइ कै मोकों ठाढ़ो कीनो है। तब वा राजानें अपने मनुष्यन कों आज्ञा दीनी, जो–याकों सूरी देउ। सो वे मनुष्य लै जाँइ कै सूरी पें बैठाय कै खेंच्यो। या वैष्णव ब्राह्मन कौ मारि डार्‌यो। ऐसो स्वप्न ता समै

वा वैष्णव कों भयो। तब इतने ही वह निद्रा में तें चौंकि उठ्यो। सो सब समाचार वह वैष्णव ब्राह्मन ने अपनी स्त्री के आगें कहे। स्वप्न की सब बात कही। तब वैष्णव ब्राह्मन सों वह स्त्री बोली, जो–तुम्हारो प्रारब्ध–भोग हतो सो निवृत्त भयो। तातें तुम अब उठो। तब वह वैष्णन ब्राह्मन उठि कै श्रीगंगाजी में स्नान करन कों चल्यो।

भावप्रकाश – काहेतें, स्वप्न में चांडाल कौ परस भयो और मृत्यु दोष हू भयो है। तातें छुई गयो। सो या मारग में भावना मुख्य है। सो भावना मात्र तें वैष्णव छुई जात हैं। सो धर्म की ऐसी सूक्ष्म गति है। तातें सेवा–सुमरन के समै वैष्णव कों ब्रजभक्तन की अनेक लीला हैं तिनकी भावना करनी। तातें हृदय सुद्ध होंइ और भाव हू की सिद्धि होंइ। सो भावना ऐसो पदार्थ है।

सो वह वैष्णव ब्राह्मन अपने घर में तें बाहिर आयो, तब देखें तो द्वार पर पंडित ब्राह्मन बैठ्यो है। तब वा वैष्णव ब्राह्मन नें पंडित ब्राह्मन सों पूछी, जो–पंडित ब्राह्मनजी ! आज तुम न्हाए नाहीं सो कहा ? तब वह पंडित ब्राह्मन नें कही, जो–मोकों तो एक बड़ो ही संदेह उपज्यो है तातें आजु तो मैं न्हाउंगो नाहीं और महाप्रसाद हू न लेहुंगो। तातें तुम सुखेन महाप्रसाद लेऊ। तब वा वैष्णव ब्राह्मन नें कह्यो, जो–पंडितजी ! आजु मैं तुम्हारो सब संदेह दूरि करोंगो। तातें तुम सुखेन उठि कै न्हाओ। यह संदेह कितनीक बात है। तब वह पंडित ब्राह्मन और वैष्णव ब्राह्मन दोऊ जनें मिलि कै श्रीगंगाजी न्हाइवे कों गए। तब वा वैष्णव नें वा पंडित ब्राह्मन सों पूछी, जो–कहो पंडितजी ! आज तुमकों कहा संदेह उपज्यो है ? सो तुम हमारे आगें कहो। तब वा पंडित ब्राह्मननें कही, जो–वैष्णवजी ! आज तुम कों या प्रकार कौ

काल साक्षात् आयो हतो । तातें वह भोग कौ समय तो टरि गयो । तातें अब मैं अपने मन में बिचार करत हूं, जो–कहा मेरो पढ्यो वृथा भयो ? मैं तो बोहोत पंडित हूं और मैंनें देस देस के पंडित वाद करि कै हराए हैं । सो सब कहा वृथा भयो ? तातें मोकों यह संदेह भयो है । तब वा वैष्णव ब्राह्मन नें कह्यो, जो–पंडितजी ! यह सब मेरो भोग तो मोकों भयो । मैं श्रीठाकुरजी की सेवा करि कै ता पाछें भगवद् स्मरन करत हतो । सो ता समै मोकों महाघोर निद्रा आई । ता निद्रा में मोकों यह सब अवस्था भई । सो मैं जाग्यो तब मैंने अपनी स्त्री के आगें सब ये समाचार कहे । तब मेरी स्त्री नें कही, जो–तुम्हारो प्रारब्ध–भोग हतो सो सब श्रीठाकुरजी ने निवृत्त कियो । ताहीतें अब मैं न्हाइवे कों आयो हूं । ता पाछें दोऊ जनें श्रीगंगाजी में न्हाइ कै महाप्रसाद लियो । तब वह पंडित ब्राह्मन अपने मन में बिचार करन लाग्यो, जो–याकौ साक्षात् भोग हतो सो सहजही में निवृत्त कैसे भयो ? तातें जानियत हैं, जो–याकौ स्वामी बलवान है । तातें ऐसें जानि परत हैं, जो–या वैष्णव धर्म समान और कोई धर्म नाहीं । तब दूसरे दिन वह पंडित ब्राह्मन नें वा वैष्णव ब्राह्मन सों कह्यो, जो–तुम मोकों अब नाम देहु । और तुम्हारे धर्म की प्रनालिका परिपाटी सब तुम हमारे आगें कहो । तब वह वैष्णव ब्राह्मन बोल्यो, जो–हमारे गुरु तो श्रीगुसांईजी हैं । सो वे द्वारिका पधारे हैं । सो महिना पांच में श्रीगोकुलजी पधारेंगे । तब तुम उन के पास जाँई के सेवक हूजियो । तब वा पंडित ब्राह्मन नें कही, जो–वा बात कों तो दिन बोहोत चाहिए ।

और तब तांई मेरो सरीर छूटे तो मैं ऐसें कौ ऐसो रहों। तातें तुम मोकों नाम देहु। तब वा पंडित ब्राह्मन सों वा वैष्णव ब्राह्मन ने कह्यो, जो–तुम तो बड़े हो। और बड़े पंडित ब्राह्मन हो। तातें मोतें तो नाम दियो न जाँई। सो ऐसी बात तो कबहू न होइगी। तब वा पंडित ब्राह्मन नें कही, जो–तुम मोकों नाम देउगे नाहीं तो मैं तुम्हारे माथें मरूंगो। तब तुम कों हत्या चढेगी। नाहीं तो तुम मोकों नाम सुनावो। ता पाछें वा वैष्णव ब्राह्मननें नाम सुनायो। और वा पंडित ब्राह्मन सों कह्यो, जो–अब तुम या नाम कौ सुमरन करो। तब वह पंडित ब्राह्मननें दूसरे दिन न्हाइ कै नाम कौ सुमरन कियो। पाछें वा पंडित ब्राह्मननें वा वैष्णवजी सों कह्यो, जो–अब कछू तुम्हारे घरकी टहल हम कों देऊ। तब वा ब्राह्मन ने वा पंडित ब्राह्मन सों कह्यो, जो–भले। जो–आज तें या गाँइ के लिये दूब खोदि कै तुम ही लायो करो। तब वह पंडित ब्राह्मन तो दूब खोदिवे कों गयो। और वह वैष्णव ब्राह्मन भिक्षा मांगन कों गयो। सो जब भिक्षा मांगि कै वह अपने घर आयो तब वा वैष्णव ब्राह्मन नें वा पंडित ब्राह्मन तें कही, जो–मेरे पास एक बस्तू है सो मैं तुम कों देत हूं सो तुम लेहु। तब वा वैष्णव ब्राह्मननें कही, जो–पंडित ब्राह्मन! तुम्हारे पास ऐसी कहा बस्तू है? तब वा पंडित ब्राह्मन नें वह मनि हती सो वा वैष्णव ब्राह्मन कों दीनी। तब उन पंडित ब्राह्मन तें कही, जो–या मनि ते कहा होंई? तब वा पंडित ब्राह्मन ने कही, जो–यासों सुवर्न जितनो चहिए तितनो होंइ। तब वा वैष्णव ब्राह्मन सों पूछी, जो–यह मनि तुमने मोकों दीनी? या भांति

वासों वा वैष्णव ब्राह्मन नें तीन बार पूछी। तब तीनों बार या पंडित ब्राह्मननें यह कही, जो–यह मनि मैंने तुम कों दीनी। तब वा वैष्णव ब्राह्मन नें वह मनि लै कै श्रीगंगाजी में डारि दीनी। तब वह पंडित ब्राह्मन तो वा ब्राह्मन सों लरन लाग्यो। जो–तुम मेरी मनि देऊ। मैंनें तो मनि बोहोत ही कष्ट तें लीनी हती। और तुमने तो एक छिनही में गंगाजी में डारि दीनी। तातें कै तो तुम मेरी मनि देऊ नाँतरु तुम्हारे माथें अब ही मरूंगो। तब वा वैष्णव ब्राह्मन नें वा पंडित ब्राह्मन तें पूछी, जो–तुम्हारे यह मनि कौन काम आवत है ? तुम्हारी मनि तें कहा होत हैं ? तब वा पंडित ब्राह्मन नें कही, जो–यह मेरी मनि तें तो सोना होत है। तब वा वैष्णव ब्राह्मन के द्वारें एक न्हाइवे की पत्थर की सिला परी हती। सो वा पंडित ब्राह्मन कों दिखाई। और पंडित ब्राह्मन सों कह्यो, जो–या पत्थर सों तुम लोहा घिसि देखो तो, याहू तें सोना बोहोत होत हैं। जो–यासों सोना होंइ तो यह पत्थर तुमही लीजियो। तब वा पंडित ब्राह्मन के पास वाके पानी पीवन कौ कमंडल हतो। सो वा कमंडल की पेंदी सों लोहा लग्यो हतो। तब वा पंडित ब्राह्मन नें वा पत्थर सों वह कमंडल लगायो। तब वह लोहा हतो सो सुवर्न होंइ गयो। तब वा वैष्णव ब्राह्मननें वा पंडित ब्राह्मन सों कह्यो, जो–तुम सुनो ! या गंगाजी के तीर ये जितने कंकर परे हैं, सो ए कांकर नहीं हैं, ए तो सर्व मनि हैं, तातें तुम्हारी इच्छा में आवे सो मनि लेओ। तब वह पंडित ब्राह्मन अपने मन में कहन लाग्यो, जो–इन कौ धर्म तो असाधारन हैं। तब वह पंडित ब्राह्मन वा वैष्णव ब्राह्मन के पाँवन पर्यो। तब

वह पंडित ब्राह्मन कहन लाग्यो, जो–वैष्णव ! मैं तो अपराधी हूं। तातें तुम मेरो अपराध अब छिमा करो। ता पाछें वह पंडित ब्राह्मन बाहिर आयो। पाछें पंडित ब्राह्मन कौ तो ज्ञान भयो, जो–यह वैष्णव ब्राह्मन तो कोई बड़ो महापुरुष हैं। और इन कौ धर्म हू सबन तें बड़ो है। और इन के स्वामी बराबर कोई नाहीं। पाछें वैष्णव ब्राह्मन तो उहांई रह्यो। और वह तो श्रीगोकुल आयो। सो श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् करि कै ता पाछें दरसन करे। पाछें निवेदन कियो। सो पंडित ब्राह्मन श्रीगुसांईजी कौ कृपापात्र भगवदीय भयो।

भावप्रकाश–या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो–लौकिक व्यवहार सब तुच्छ करि जाननें। एक श्रीठाकुरजी कों ही सर्वस्व करि कै जानने। तो प्रभु अपने जन कौ कष्ट प्रारब्ध सहज में भुगतवाई लेत हैं। ऐसो अनुग्रह करत हैं। और वैष्णव के संग कौ ऐसो प्रताप है, जो–वह पंडित ब्राह्मन हू श्रीगुसांईजी कौ कृपापात्र सेवक भयो।

सो यह वैष्णव ब्राह्मन श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥७८॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक गोपीनाथदास सो श्रीगोवर्द्धननाथजी की गाँइन के ग्वाल हे, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश – ये तामस भक्त हैं। सो नंदरायजी की गाँईन के ग्वाल हैं, तिन के ये मुखिया हैं। लीला में इनकौ नाम 'गोवर्द्धन' ग्वाल है। ये श्रीठाकुरजी कौ अंतरंग सखा हैं। तातें श्रीठाकुरजी कों अति प्रिय है। ये 'रत्ना' तें प्रगटे हैं, तातें इनके भावरूप हैं।

ये गोपालपुर में एक सनाढ्य के जन्मे। सो बालपने तें श्रीगुसांईजी के सेवक भए हैं। पाछें श्रीनाथजी की गाँइन की सेवा में रहे। ता पाछें ब्याह भयो लरिका हू भए। तब सब घरकेन कों श्रीगुसांईजी के सेवक कराए। ता पाछें ये बड़े भए। तब श्रीगुसांईजी उन कों सब ग्वालन के मुखिया किये। सो गाँइन की रखवाली नीकी भांति सों करते। तातें इन पर श्रीगोवर्द्धननाथजी

आप बोहोत प्रसन्न रहते । साक्षात् बातें करते, इन सों खेलते कूदते । सो ये निसंक सब सों बोलते । सुद्ध भाव हतो । तातें श्रीगुसांईजी हू इन पर सदा प्रसन्न रहते ।

वार्ता प्रसंग – १

सो एक समै श्रीनाथजी की भैंसि खोइ गई । तब गोपीनाथदास ग्वाल श्रीगुसांईजी के अति कृपापात्र भगवदीय हते । सो गोपीनाथदास ग्वाल भैंसि खोजिवे कों गए । सो श्रीनाथजी तहां खेलत हते । तब गोपीनाथदास ग्वाल नें श्रीनाथजी कों बिनती करि कै पूछ्यो, जो–महाराज ! एक भैंसि खोइ गई है सो बताय देहु । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी नें गोवर्द्धन की पूंछरी ओर श्रीगिरिराज की कंदरा के आगें बताई दीनी । तब तहां तें गोपीनाथदास ग्वाल खोज लै आए ।

वार्ता प्रसंग–२

बोहोरि एक समै श्रीनाथजी के उत्थापन समै भोग में तें आठ लडुवा बूंदी के गए । तब सोर भयो । सो भीतरिया सब सोर करन लागे, जो–भोग में तें लडुवा क्यों घटे ? परि कछू जानि न परें, जो–लडुवा कहां गए ? सो लडुवा बन विषे लै जाँइ कै श्रीनाथजी नें गोपीनाथदास ग्वाल कों दिये हते । सो गोपीनाथदास ग्वाल संध्या के समै घर आए । तब लरिकान कही, जो बावा ! आज श्रीनाथजी के भोग में तें आठ लडुवा गए हैं । तब गोपीनाथदास कछु बोले नाहीं । ता पाछें सेनआर्ति भई । श्रीनाथजी पोढें । पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगिरिराज ऊपर तें नीचे पधारे । तब अपनी बैठक में आय कै बैठें । तब गोपीनाथदास ग्वाल नें आय कै श्रीगुसांईजी सों पूछी, जो–महाराज ! आज ऊपर मंदिर में सोर कहा होत हतो ? तब श्रीगुसांईजी नें कह्यौ,

जो–आज आठ लड़ुवा श्रीनाथजी के भोग में तें गए। तब वे लड़ुवा गोपीनाथदास ग्वाल पास हते। सो काढि कै दिखाइ दिये। और कही, जो–महाराज ! ये लड़ुवा हैं। तामें तें द्वै मोकों दिये हैं। और सबन कों बांटि दिये हैं। सो वे गोपीनाथदास ग्वाल श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र सेवक हते। जिन तें श्रीनाथजी सदा सानुभाव रहतें।

भावप्रकाश–या वार्ता में यह संदेह है, जो–जा सामग्री कों श्रीठाकुरजी के श्रीहस्त कौ परस होंई सो तो सर्वथा घटे नाहीं। काहेतें, जो–श्रीठाकुरजी के श्रीहस्त में पद्म रहत हैं। यातें जितनी सामग्री लेत हैं उतनी ही वामें और होंइ जात हैं। तातें यामें तें आठ लड़ुवा क्यों घटे ? तहां कहत हैं, जो –प्रभु सर्व करन समर्थ हैं। जब जैसी इच्छा होंइ तैसो खेल होंइ यामें कछू नियामक नाहीं। श्रीठाकुरजी की इच्छा ही नियामक है। सो मंदिर के सेवकन कौ नेग बांधिवे के तांई श्रीनाथजी कौ यह कौतुक है। सो या समै ग्वालन कौ नेग बांधिवे के तांई यह कार्य कियो है, ऐसें जाननो। और ग्वालबाल सब भूखे हे, सो प्रभु अपने अंतरंग सखान कौ कष्ट कैसें सहे ? तातें ये लड़ुवा उन कों दिये। या प्रकार भक्तवत्सलता प्रकट करन के तांई यह कौतुक कियो ऐसें जाननो।

वार्ता प्रसंग –३

और एक समै श्रीगुसांईजी उष्णकाल के दिनन में श्रीनाथजीद्वार पधारे हते। तब श्रीगुसांईजी नें श्रीनाथजी कौ सिंगार करि कै राजभोग समर्प्यो हतो। पाछें समै भए तब भोग सराय कै अनोसर करि कै आप नीचे पधारे। तब भोजन करि कै बीड़ा अरोगि कै ता पाछें आप पोढें हते। ता समै गोपालदास भीतरिया अपनी धोवती धोइ कै खरे मध्याह्न के समै पूछरी तें आवत हते। तब ता समै गोपालदास सों श्रीनाथजी ने कही, जो–गोपालदास ! तुम जाँइ कै श्रीगुसांईजी सों कहियो, जो–हम कों भूख बोहोत लागी हैं। तब वे गोपालदास अपनी धोवती

सूकाइ बैठक में श्रीगुसांईजी पोढे हे तहां आए। सो गोपालदास देखे तो श्रीगुसांईजी भरि निद्रा में पोढे हैं। तब गोपालदास ने श्रीगुसांईजी सों चरन दाबि कै यह कह्यो, जो–महाराज ! श्रीनाथजी नें कही है, जो–हमें भूख बोहोत लागी है। यह कहि मोसों आप पूंछरी की ओर कों गए हैं। तब यह बात सुनत ही श्रीगुसांईजी तत्काल सीघ्र उठि कै तुरत ही स्नान करि कै ऊपर मंदिर में आप पधारे। तब सिखरन–भात और पना तथा दूसरी सीतल सामग्री तुरतही सिद्ध करि कै एक परात में धरि कै गांठि बांधि कै माथें पर चढाइ कै श्रीगुसांईजी पूंछरी की ओर कों चले। ता समै पैंडे में घाम बोहोत हती। ता समै श्रीगुसांईजी के पाँवन में फलका परत हते। सो आप उराहने पाँवन चले जात हते। और सेवक हू कोई साथ लियो नाहीं। ता समै आप अकेले ही जात हते। सो ता समै गोपीनाथदास ग्वाल पूंछरी की ओर तें आवत हते। सो गोपीनाथदास के साथ एक लरिका हतो। तब ता समै वा लरिका सों गोपीनाथदास ने पूछी, जो–या समै या ठौर अकेलो नांगे पाँवन कौन चल्यो आवत हैं ? तातें क्योंरे लरिका ! कैधों विट्‌ठलनाथजी श्रीगुसांईजी तो न होंइ ? तब वा लरिका नें कही, जो–हां हां विट्‌ठलनाथजी हैं तो सही। तब देखि कै श्रीगुसांईजी सों गोपीनाथ ने बिनती कीनी और कह्यो, जो–महाराजाधिराज ! ऐसी घाम में नांगे पाँवन कहां जात हो ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–श्रीनाथजी कहां बिराजत है, सो मोकों बताऊ। उन कों भूख लागी है। तातें मैं छाक ल्यायो हूं। तब गोपीनाथदास ने बिनती कीनी, जो–महाराजाधिराज ! तुम कों

किन बहकाए हैं ? जो–या बिरिया तुम चले जात हो ? और तुम्हारे पाँवन में फलका परत हैं। और तुम जाके लिये चले जात हो, सो वाकों कहा ऐसी जरूर परी है ? जो–ऐसी घाम में तुम बाहिर निकसे हो ? और तुम सों जिन ने ऐसी बात कही है, सो ताकौ नाम तुम मेरे आगें कहत क्यों नाहीं हो ? ताकों मैं ठौर ही मारों। जो–दूसरी बेर फेरि कै ऐसो झूंठ न बोले। तातें तुम इहां तें पाछें फिरो। ऐसी बात श्रीगुसांईजी सों गोपीनाथदास ग्वाल ने बोहोत कही। परि श्रीगुसांईजी तो ठाढ़े ठाढ़े सुनत ही रहे। सो गोपीनाथदास ग्वाल कों कछू उत्तर दीनो नाहीं। परि आप घाम में बोहोत ब्याकुल भए। तब फेरि कै गोपीनाथदास नें श्रीगुसांईजी सों कही, जो भलें, अब तो इहां लों आए हो तो आगें हू होंइ आओ। पाछें श्रीगुसांईजी के साथ गोपीनाथदास ने वह लरिका करि दीनो। और वा लरिका सों गोपीनाथदास नें कही, जो–इन के साथ जा। सो वह बड़ो ढाक देखियत है। सो उहां तांई उन के साथ चल्यो जइयो। और उहां तें बड़ो बोहोत दूर एक श्यामढाक है। सो जब वह तेरी द्दष्टि परे तब तू इन कों दूर ही तें दिखाय कै पाछें फिरि अइयो। और जो–तू आगें जाइगो तो हों तोकों मारोंगो। सो गोपीनाथदास तो उहांई ठाढ़े रहे। तब वह लरिका श्रीगुसांईजी के साथ गयो। तब दूरि ही तें स्यामढाक इन की द्दष्टि पर्‌यो। तब वह लरिका तो पाछें फिरि आयो। और श्रीगुसांईजी तो आगें पधारें। तब आप आगें जाँइ देखें तो स्यामढाक के नीचे श्रीनाथजी बैठें हैं। और सब गाँइ दूरि चरत हैं। और आगें सब ग्वाल ठाढ़े हैं। सो वा ढाक की

छांह बोहोत सीतल है। तब श्रीगुसांईजी कों दूरि तें आवत देखि कै श्रीनाथजी बोहोत प्रसन्न भए। तब श्रीनाथजी ने श्रीगुसांईजी सों कही, जो –बोहोत ही भली भई, जो–तुम आए। हम कों भूख बोहोत ही लागी हती। तब श्रीनाथजी ने श्रीगुसांईजी कों बैठिवे की आज्ञा दीनी, जो–तुम बैठो। तब श्रीगुसांईजी उहां ही बैठें। तब श्रीनाथजी नें श्रीबलदेवजी कों आज्ञा दीनी, जो–तुम यह सामग्री सब छोरि कै ल्याऊ। तब श्रीबलदेवजी सब सामग्री छोरि कै ल्याए। तब श्रीनाथजी सब सामग्री अरोगे। और बाकी रही हती सो सब ग्वालन कों बांटि दीनी। ता पाछें श्रीनाथजी ने श्री बलदेवजी सों कही, जो–अब तुम बैठो।

पाछें श्रीनाथजी ने श्रीगुसांईजी सों कही, जो–तुम आए सो बोहोत भली करी। आज हम बड़े भूखे हे। पाछें श्रीनाथजी तो वा स्थल तें उठे। तब श्रीनाथजी ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो–अब तुम निज मंदिर में जाओ। तब श्रीगुसांईजी तो 'अप्सराकुंड' पधारे। तब आइ कै सब वस्त्र भिंजोय कै आप उहां ही स्नान करि कै अपरसता सों श्रीगिरिराज पर्वत ऊपर पधारे। तब ता समै संखनाद कौ समय हतो। सो उहां जाँइ कै संखनाद कियो।

भावप्रकाश – या वार्ता में यह बड़ो संदेह है, जो–श्रीनाथजी आप भूखे भए तो अनोसर कौ बंटा क्यों नाहीं लियो ? और श्रीगुसांईजी कों हू क्यों नाहीं जतायो ? श्रीगुसांईजी कों ऐसो परिश्रम क्यों दियो ? काहेतें, आप दोऊ एक स्वरूप हैं। तासों श्रीगुसांईजी कों परिश्रम पर्‌यो सो तो आप ही कौ भयो। तहां कहत हैं, जो–श्रीनाथजी कों स्यामढाक में सीतल सामग्री आरोगिवे की ईच्छा भई। सो तो अनोसर के बंटान में हती नाहीं। और गोपालदास द्वारा कहवाई सो तो विसेस अनुग्रह प्रगट करनार्थ। सो समै समै पर रामदासजी आदि सेवकन

द्वारा ऐसी आज्ञा श्रीनाथजी आप करत हैं। सो श्रीगुसांईजी विसेस अनुग्रह जानि ता आज्ञा कौ यथार्थ पालन करत हैं। काहेतें, आप जद्यपि ईस्वर हैं, तोऊ दास भाव प्रगट करत हैं। सो स्वकीयन कों ज्ञापनार्थ। यामें श्रीगुसांईजी आप अपनी अकिंचनता हू प्रगट करत हैं। सो यह पुष्टिमार्ग की रीति है, जो-काहू के द्वारा विसेस आज्ञा होंइ तो परम अनुग्रह जाननो। यातें श्रीगुसांईजी कों नाहीं जलायो।

सो वे गोपीनाथदास ग्वाल श्रीनाथजी के तथा श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता कहा तांई कहिए।

वार्ता ॥७९॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक दोइ कुनबी, गुजरात के बासी, तिनकी वार्ता कै भाव कहत हैं।

भावप्रकाश – ये दोऊ सात्विक भक्त हैं। लीला में एक कौ नाम 'प्रतिमा' है और दूसरे कौ नाम 'मनोहारिनी' है। ये दोऊ 'रत्ना' तें प्रगटी हैं। तातें उन के भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग-१

ये दोऊ कुनबी गुजरात तें श्रीगोकुल आई श्रीगुसांईजी के सेवक भए। पाछें श्रीगुसांईजी की आज्ञा पाइ श्रीनाथजी की सेवा करन लागे। तब एक दिन उन दोऊ भाईन के मन में ऐसी आई, जो-हम श्रीनाथजी की सेवा तो करत हैं, परि कछू मनोरथ तो करि सकत नाहीं। तब एक दिन दोऊ जनें अपने मन में ऐसो बिचारि करि कै उहां तें श्रीनाथजी की सेवा छोरि कै दोऊ भाई चले। सो उहां तें कितनीक दूरि एक जनो तलाव खुदावत हतो। सो उहां उन कुनबी ने देख्यो। तब उन दोऊ भाइन जाँइ के उन सों पूछ्यो, जो-तुम हम कों इहां मजूरी करन कों राखोगे ? तब उन कही, जो-तुम सुखेन रहो। तुम हू मजूरी करो। तब दोऊ भाई मजूरी करन कों रहे। तब उन अपने गरे में तें माला उतारि कै अपनी पाग में बांधी। सो पाग माथे पें रहि आवे। पाछें

तिलक धोइ कै उहां कौ काम करन लागे।

भावप्रकाश – सो या वार्ता में यह जतायो, जो–वैष्णवता छिपाइ कै मजूरी करते।

तब उहां के कारीगर तथा मौसल जे हते और उहां के तलाव खुदावनहारे जे हते सो वह सब कोई उन दोऊ जनेंन पर प्रसन्न रहें। और येहू दोऊ जनें सबन तें चोगुनो काम करें। पाछें मोसल सबन कों चवेनी बांटे तब दोऊ जनें तो वा चवेनी के पलटें कोरो ही नाज लेंहि। तब वह चवेनी कौ बांटनवारो और सबन के बांटते जासों इन कों दूनो बांट देई। तब वे रात्रिकों जब अपने ठिकाने आवे तब वे सीधो एक ठौर धरि कै एक कोरो घड़ा उतारि कै न्यारो धरें। तब परदनी पहरि कै माला पहरि स्नान करि कै अपरसता सों एक जनों रसोई करें। और एक जनों ऊपर की टहल करें। तब वे न्हाय कै तिलक मुद्रा धरि कै प्रथम तो जप करें। ता पाछें सब काज करें। सो रसोई करि कै श्रीठाकुरजी कौ भोग सराइ कै दोऊ भाई महाप्रसाद लेई। पाछें पहोंचि कै सोय रहें। या भांति सों नित्य करें।

सो एक दिना वह इन की मजूरी चुकावत हतो। सो वेहू वैष्णव हुतो। तब वानें इन दोऊ जनेंन कों माला तिलक सुद्ध देखें। काहेतें, वा दिना ए माला–तिलक उतारिवो भूल गये हते। सो वानें जानी, जो–ये तो दोऊ भाई वैष्णव है। तब वानें अपने मन में बिचारी, जो–ये दोऊ जनें इहां मसकत बोहोत करत हैं। और ये रोजगार तो थोरो ही पावत हैं। तातें ये मजूरी बोहोत पावे तो आछौ। पाछें सवारो भए उन दोउ जनेंन सों वानें कही, जो–भलेजू भले, तुम कों तो हमने पहचाने हैं। तातें तुम तो

दोऊ वैष्णव हो। और श्रीगुसांईजी के सेवक हो। और तुमने तो हमकों अपनी वैष्णवता जनाई नाहीं। तब दोऊ जनें सुनि कै कछु बोले नाहीं। तब इन दोऊ जनेंन अपने मन में बिचारी, जो–अब तो आपुन वैष्णव जानि परे। तातें अब तो इहां तें चलिए। अब तो इहां रहिवे कौ काम है नाहीं। तब इन दोऊ जनेंन ऐसो बिचार कियो। और वा दरोगा ने ऐसो बिचारि कियो, जो–आज मैं इन दोऊ जनेंन कों काम और ही ठौर सोंपों। सो वाकौ सिरदार पैसा बांटत हुतो। तासों वा मोसल ने कही, जो–ये दोऊ जनें आए हैं। सो उनकों जो–कहूँ भली ठौर काम सोंपिए तो भलो है। तब उहां और हू कहन लागे, जो–ये तो भले मनुष्य हैं। तातें ऐसो बिचार तो निश्चय कीजिए। और वे तो दोऊ जनें वैष्णव हते। सो अपनी मजूरी के पैसा लै कै अपने डेरा आय कै, तब रसोई करि कै श्रीठाकुरजी कौ भोग समर्पि कै पाछें महाप्रसाद लै कै तब मजूरी के जो पैसा आए हते सो दोऊ जनेंन आधे आधे बांटि लीनें। सो जब रात्रि प्रहर एक गई तब उहांतें दोऊ जनें चले। सो कोस पंद्रह आए। तब उहां इनकों प्रातःकाल भयो। तब उहां दांतिन पानी कियो। पाछें फेरि चले सो कोस बीस चले। तब उहां रात्रि कौ एक ठिकाने रसोई करि कै श्रीठाकुरजी कौ भोग समर्पि कै भोग सराय दोऊ जन महाप्रसाद लिये। पाछें रात्रि कों सोय रहे। तब दूसरे दिन सवारे उहांतें फेरि चले। सो श्रीनाथजी कौ दरसन कियो। ता पाछें उन श्रीगुसांईजी कौ दरसन कियो। फेरि साष्टांग दंडवत् कीनी। तब श्रीगुसांईजी नें पूछि, जो–तुम दोऊ जनें कहां गए हते ? तब

इन कही, महाराजाधिराज ! एक दिन श्रीनाथजी की सेवा करत हमारे मन में एसीही आई हती, जो–श्रीनाथजी की हम सेवा तो करत हैं, परि श्रीनाथजी कों हमने कोई सामग्री करवाई नाहीं । तातें महाराज ! हम दोऊ जनें उहां मजूरी कों गए हते । सो मजूरी करि कै राज हम पैसा ले आए हैं । तब वे पैसा हते सो सब श्रीगुसांईजी के आगें राखे । और अपने मन में जो–जो मनोरथ हतो सो सब मनोरथ कहि सुनायो । तब वे पैसा हते सो सब श्रीगुसांईजी ने श्रीनाथजी के भंडार में दिये । तब जो–जो सामग्री उन दोऊ भाईन कही, सो सामग्री सिद्ध करवाइवे कौ श्रीगुसांईजी आज्ञा दिये । तब उन दोऊ जनेंन नें उहां की सब बात श्रीगुसांईजी के आगें कही । जो–महाराज ! हम कों रोजगार तो बोहोत ही भलो बन्यो हो । परि महाराज ! उननें हम कों पहिचानें । जो–ये तो भले वैष्णव हैं । तातें महाराज ! हम उहां तें भाजे । सो–महाराज ! इहां हमने आय कै राज के चरनारविंद देखे । तब श्रीगुसांईजी नें अपने श्रीमुख तें कही, जो–स्याबास ! तुम्हारो धर्म रह्यो । तातें वैष्णव कौ तो यही धर्म है । पाछें श्रीगुसांईजी नें आज्ञा दीनी, जो–अब तुम जो पहिलें श्रीनाथजी की सेवा करत हते, सोई तुम करो । सो प्रसन्न होंइ कै और श्रीठाकुरजी की सेवा जानि कै तुम सेवा करियो ।

भावप्रकाश – सो या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो– वैष्णव कों अपनी धर्म गोप्य राखनो । काहू के आगें प्रगट करनो नाहीं । और जो–अपनो धर्म दिखाइ कै द्रव्यादि लेत हैं वह वैष्णव नाहीं । ताकों धर्म सर्वथा सिद्ध न होंइ । ऐसी धर्म की सूक्ष्म गति है ।

सो वे दोऊ भाई श्रीगुसांईजी के ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय भए । तातें उन की वार्ता कहां तांई कहिए । वार्ता ॥८०॥

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक परम वैष्णव, गुजरात के वासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश – ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'भावोद्बोधिका' है। ये भावन कौ उद्बोधन करनहारी हैं। ये 'रत्ना' तें प्रगटी हैं, तातें उन के भावरुप हैं।

यह गुजरात में एक गाम में एक ब्राह्मन के जन्म्यो। सो एक बेर श्रीगुसांईजी द्वारकाजी श्रीरनछोरजी के दरसन कों पधारत हे। तब याके गाम बाहिर एक तलाव पर एक वृक्ष नीचे डेरा भये। तब इन श्रीगुसांईजी के दरसन पाए। सो कोटिकंदर्प लावन्य ऐसें दरसन पाए। तब यानें अपने मन में बिचार कियो, जो–ये ईश्वर हैं। तातें इन के सरनि जइए तो आछौ। पाछें यानें श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज ! कृपा करि मोकों सेवक कीजिए। तब श्रीगुसांईजी याकों दैवी जानि सरन लिये। नाम निवेदन कराए।.पाछें आप उहां तें द्वारिकाजी पधारे।

वार्ता प्रसंग – १

सो वा गाम में एक वही वैष्णव रहत हतो। सो वा गाम में और कोऊ दूसरे वैष्णव कौ घर न हुतो। सो वा वैष्णव कौ गाम मार्ग में हतो। सो श्रीगुसांईजी एक वार द्वारिकाजी पधारे हते। सो आप वही मार्ग आए हुते। ता समै खबरि भई, जो–श्रीगुसांईजी इहां पधारत हैं। तब वह वैष्णव सुनत ही आप आगें जाँइ कै वा मार्ग के बीच में आइ कै वह ठाढ़ो भयो। सो श्रीगुसांईजी कों अवलोकन करि कै, इन के चरनारविंद पर माथो धरि कै साष्टांग दंडवत् करि कै, तब फेरि बिनती करी। और अपने घर तांई श्रीगुसांईजी कों पधराय ल्यायो। परि वाकौ घर तो निपट छोटो हतो। तोऊ आप उहांही डेरा करवाए। तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णव के आग्रह सों उहां ही भोजन किये। पाछें पोढे। पाछें वा वैष्णव नें श्रीगुसांईजी के साथ के व्रजवासी टहलुवान कों भली भांति सों रसोई करवाई। सो उन व्रजवासीन ता दिना महाप्रसाद उहां ही लियो। पाछें उत्थापन के समै

श्रीगुसांईजी गादी तकियान ऊपर बैठे हते। तब ता समै वह वैष्णव श्रीगुसांईजी पास बैठि कै चरनारविंद की सेवा करत हतो। तब ताही समैं वा वैष्णव सों श्रीगुसांईजी नें पूछ्यो, जो–इहां तेरो निर्वाह कैसें करि कै कौन भांति सों चलत है ? ता वा वैष्णव नें श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! एक बार आप इहां पहिलें पधारे हते। तब इहां एक वृक्ष के नीचे महाराज नें डेरा कियो हतो। तहां महाराज नें मोकों सरनि लियो हतो। तब आप कोटि कंदर्पलावन्य रूप कौ वहां दरसन हू दियो। सो या वृक्षने हू नाम–निवेदन मंत्र सुन्यो हतो अरु आप के पूरन पुरुषोत्तम के दरसन पाए हते। तब तें मैंनें यह जानी, जो–यह वृक्ष तो कोई वैष्णव है। तातें महाराज ! मैं नित्य वाही वृक्ष के नीचे जाँइ बैठत हूं। और वा वृक्ष सों, राज ! मैं तुम्हारे ही नाम लै लै कै गुनानुवाद करत हों। ता पाछें अपने घर कों उठि आवत हों। तब श्रीगुसांईजी तो वा वैष्णव की बात सुनि कै बोहोत ही प्रसन्न भए। तब श्रीगुसांईजी नें श्रीमुख तें कही, जो–मैंने तो लौकिक बात पूछी हती और या वैष्णव नें तो अलौकिकता सों उत्तर दियो।

भावप्रकाश– यामें यह जतायो, जो–वैष्णव कों सदा सर्वकाल अलौकिक बुद्धि राखनी।

पाछें श्रीगुसांईजी नें वा वैष्णव सों पूछी, जो–कहो वैष्णव ! वह वृक्ष कहां है ? तब वा वैष्णवनें कही, जो–महाराज ! वह वृक्ष तो गाम के बाहिर है। तब श्रीगुसांईजी नें ताही समै अपनो घोड़ा मँगायो। पाछें श्रीगुसांईजी वा घोड़ा ऊपर असवार होंइ कै आप वा वृक्ष कों देखिवे कों पधारे। तब वह वैष्णव हू

श्रीगुसांईजी के साथ चल्यो। सो वा गाम के बाहिर वह वृक्ष हतो, सो तहां श्रीगुसांईजी पधारे। तब दूरि ही तें वा वैष्णव नें वह वृक्ष श्रीगुसांईजी कों बतायो। जो–महाराज! वह वृक्ष तो यह है। तब वा वृक्ष नें दूर ही तें श्रीगुसांईजी कों देखे। तब वह वृक्ष ऊपर की साखान सहित नीचे नम्यो। तब श्रीगुसांईजी तो वा वृक्ष के नीचे पधारे। तब वह वृक्ष अपनी साखान करि कै श्रीगुसांईजी के चरनारविंद कौ परस कियो। पाछें श्रीगुसांईजी के चरनारविंद कौ परस करत मात्र वह वृक्ष मूल तें उखरि पर्यो। तब वृक्ष कों श्रीगुसांईजी नें अंगीकार कियो।

तब वैष्णव नें श्रीगुसांईजी सों पूछी, जो–महाराजाधिराज! यह वृक्ष पूर्व जन्म में कौन हो? सो कृपा करि कै कहिए। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो–यह लीला कौ जीव है श्रीनंदरायजी के उहां कौ ग्वाल है। 'पेंचू' याकौ नाम है। सो कोई अपराध करि कै यह भूतल पर आयो। पाछें वैष्णव भयो। परि यह विषयी बोहोत हतो। तातें यानें वृक्ष कौ जन्म पायो। पाछें नाम–निवेदन मंत्र सुनि, यह पुष्टिमार्गीय भयो। सो अब तुम्हारे संग करि याकौ सर्वांग अंगीकार भयो और लीला में प्राप्त भयो।

भावप्रकाश– यामें यह जतायो, जो–तादृसी वैष्णव कौ संग सर्वोपरि है। उन के संबंध मात्र तें जड़न की हू या प्रकार गति होत हैं।

पाछें श्रीगुसांईजी सों वा वैष्णव नें बिनती करी, जो–महाराज! अब मोकों कितनो विलंब है? तब वा वैष्णव के ऊपर श्रीगुसांईजी नें कृपा करि कै कही, जो–तोपें इतने दिना तांई मैं

या देह सों सेवा करवाऊंगो। सो ताकौ प्रमान कह्यो। और ता पाछें तेरी यह लौकिक देह छूटेगी और लीला में प्राप्त होइगो। तब श्रीगुसांईजी के श्रीमुख के बचन सुनि कै वह वैष्णव बोहोत ही प्रसन्न भयो।

पाछें श्रीगुसांईजी वा वृक्ष के उहां तें अपने डेरा पधारे। तब रात्रि कों श्रीगुसांईजी उहांई रहे। पाछें प्रातःकाल भयो। तब उहां तें श्रीगुसांईजी नें विजय कियो। तब वा वैष्णवनें अपने घर में जो–कछू हतो, सो ताही समैं श्रीगुसांईजी कों सब समर्प्यो। पाछें श्रीगुसांईजी तो द्वारिका पधारे। तब थोरेसे दिनन में वा वैष्णव ने विप्रयोग करि देह छोरी। तब वह वैष्णव अलौकिक लीला में प्राप्त भयो। सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो भगवदीय कृपापात्र हतो। तातें उन की वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥८१॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक गोडिया ब्राह्मन, ब्रज में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं –

भावप्रकाश – ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'मोरसिरी' हैं। ये 'रस–प्रकासिका' तें प्रगटी हैं। तातें उन के भावरूप है।

ये गौड देस में एक ब्राह्मन के जन्म्यो। पाछें बड़ो भयो तब ब्रजयात्रा करन कों आयो। सो वानें श्रीबृंदावन के दरसन किये। सो श्रीबृंदावन के दरसन करत ही वाकौ मन उहां आकर्षित भयो। सो ता पाछें वह श्रीबृदावन छोरि कै कहूँ गयो नाहीं। सो बृंदावन में गोड़िया बोहोत हुते। सो वह गोड़िया सब ब्रजबासीन की टहल करत हुते। तामें येहू रह्यो। सो ब्रजबासीन की टहल करि अपनो निर्वाह करतो।

वार्ता प्रसंग–१

सो एक समै श्रीगुसांईजी श्रीबृंदावन पधारे हते। सो इह गोडिया कौ ऐसो मनोरथ भयो, जो–मैं श्रीगुसांईजी के पास जाँइ कै नाम पाऊं तो बोहोत भलो है। सो इह गोड़िया ऐसो बिचार

करि कै श्रीगुसांईजी के पास आयो । तब समै पाय कै वानें श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! मो पर कृपा करि कै मोकों नाम दीजिये । तब वा गोड़िया सों श्रीगुसांईजीनें पूछी, जो–तुम कौन हो ? तब गोड़िया ने कही, जो–महाराज ! हम गौड़ देस के हैं, ब्राह्मन हैं । गोड़िया कहावत हैं । सो महाराज ! मो पर कृपा करि कै जो तुम हमकों नाम देऊ तो हमारो भलो होंइ । तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो–तुम्हारो भलो तो योंही होइगो । तब श्रीगुसांईजी सों वा गोड़िया ने कही, जो–महाराज ! हमकों नाम देऊ तो हमारो भलो होंइ । तब श्रीगुसांईजी उन सों कही, जो–तुम माला–तिलक करि कै मजूरी करोगे तब तुमकों वैष्णव जानि कै तुम्हारी बस्तू सब कोई लेइगो । तुमकों वैष्णव जानि कै भिक्षा हू देइंगे । और तुम घास तथा लकड़ी हू बेचोगे तो तुमकों वैष्णव जानि कै लेइंगे । तब तुम्हारी वैष्णवता बिकाइगी । तातें तुम जो ऐसें ही रहो तो भले हैं । तब वा गोड़िया नें दोऊ हाथ जोरि कै फेरि श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! माला तो मैं गोप्य राखोंगो । तिलक हू मैं जल कौ करूंगो । सो महाराज ! मैं औरन कों माला तिलक न दिखाउंगो । तब यह सुनि कै श्रीगुसांईजी वा ऊपर प्रसन्न होंइ कै वाकों नाम दियो । तब फेरि कै आप दयाल वा पर अनुग्रह कियो । सो आप ही तें वाकों समर्पन करवायो । पाछें श्रीनवनीतप्रियजी के वस्त्र सेवा करनकों पधराय दिये । तब वा गोड़िया कौ सकल मनोरथ सिद्ध भयो । तब वह गोड़िया बोहोत ही भलो वैष्णव भयो । पाछें वह अंतःकरन सों श्रीठाकुरजी की सेवा करन लाग्यो । सो

वानें ऐसी प्रीति सों सेवा करी, जो–थोरे दिन में श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे।

भावप्रकाश – सो या वार्ता में यह जतायो, जो–वैष्णव धर्म दिखाय कै भिक्षा आदि देह निर्वाह कौ कछू कार्य न करनो। करे तो बाधक होंइ।

सो वह गोड़िया श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय भयो। सो वा गोड़िया ऊपर श्रीठाकुरजी की ऐसी कृपा भई, जो–वासों श्रीठाकुरजी प्रत्यक्ष बातें करते। सो उन की वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥८२॥

❀ ❀ ❀ ❀

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी एक स्त्री, क्षत्रानी, पूरब में रहती, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं।

भावप्रकाश – ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'अंगना' है। ये श्रीयसोदाजी की सखी हैं। श्रीठाकुरजी पै इन कौ वात्सल्य भाव बोहोत हैं। तातें श्रीयसोदाजी इन पर सदा प्रसन्न रहति हैं। ये 'रसप्रकासिका' तें प्रगटी हैं। तातें इनके भावरूप हैं।

ये कासी तें उरे कोस पांच पर एक गांव है तहां एक क्षत्री के जन्मी। सो बरस आठ की भई तब इन कौ ब्याह जाति के एक लरिका सों भयो। पाछें कछूक दिन में महामारी आई। तामें माता–पिता सास–ससुर और लरिका ये पांचो मरे। तब यह क्षत्रानी घर में अकेली रही। सो रोवे ही रोवे। कछू खावे पीवे नाहीं। सो वाके घर के पास एक वैष्णव रहे। वासों या क्षत्रानी कौ दुःख देख्यो न गयो। तब वाने या क्षत्रानी सों कह्यो, जो–बाई! रोइवे तें कहा होइ ? प्रभुन की ऐसी ईच्छा ही। तातें अब तू श्रीठाकुरजी की सेवा करि। तासों तोकों आनंद होइगो। तब वा क्षत्रानि ने कही, जो–मैं तो कछू सेवा करिवो जानति नाहीं। तब वा क्षत्रानी सों वा वैष्णव ने कह्यो, जो–तू अड़ेल जाँइ श्रीगुसांईजी की सेवक होंऊ। श्रीगुसांईजी तांकों सेवा कौ प्रकार समझाय कै कहेंगे। श्रीठाकुरजी पधराय देंगे। सो तू उन की सेवा करियो। तातें तेरो सब दुःख निवृत्त होइगो। बोहोत आनंद होइगो। श्रीठाकुरजी परम दयाल हैं। वे सब भली करेंगे। पाछें वह क्षत्रानी अड़ेल आई। पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती करि सेवकिनी भई। ता पाछें याने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–राज! कछू सेवा पधराइ दीजिए। तो हों सेवा करों। मैं घर में अकेली हों। तातें मेरे दिन जात नाहीं। तब श्रीगुसांईजी याकों सेवा पधराय दिये। एक लालजी कौ स्वरूप पधराय दियो। और सेवा प्रकार सब समझायो। पाछें श्रीगुसांईजी आज्ञा

किये जो–तू इन की सेवा बालभाव सों सावधान व्है करियो । श्रीठाकुरजी तोकों सब सुख देइंगे । पाछें वह क्षत्रानी श्रीठाकुरजी कों पधराय अड़ेल तें अपने देस गाम कों आई । सो वह क्षत्रानी बड़ी भगवदीय भई ।

वार्ता प्रसंग – १

परि वा बाई के कोई सगो–सोंदरौ बेटी–बेटा कोई न हतो । आप अकेली हती । सो अपने घर में श्रीठाकुरजी की सेवा बोहोत भली भांति सों करती । जैसें कोई लौकिक में बालक सों करें तैसें ही वह बाई श्रीठाकुरजी सों बातें करें । सो वह बाई आप कछू विकल सी रहती । परि श्रीठाकुरजी की सेवा बोहोत ही प्रीति सों स्नेह सों करती । जैसें वह बाई श्रीठाकुरजी कों अपने बालक की नांई बुलावे तैसें ही श्रीठाकुरजी वा बाई सों बोलें । तैसें ही वह लरिका की नांई करें । और जो वह बाई कबहू अपने घर तें बाहिर जाँइ तब वह अपने घरतें ऐसें कहि कै जाँइ, जो–महाराज लालजी ! मैं तो बाहिर कछू काम कों जाति हों । तातें तुम यह सामग्री अपने घर में है सो अरोगियो । और या कुंजा झारी में तें पानी पीजियो । और यह सामग्री ढांकि जाति हों । सो तुमकों भूख लागें तब खाइयो । और जो कछू मोकों अवार लागें तो तुम यामें तें पानि पीजियो । सो वह बाई अपने श्रीठाकुरजी कों या भांति सों सब बात कहती । सो जब वह बाई बाहिर जाँइ तब वे श्रीठाकुरजी वैसें ही करें । जैसें जैसें वह बाई कहि जाँई तैसें तैसें ही श्रीठाकुरजी करें । जो–श्रीठाकुरजी कों भूख लागे तो आपही अपने श्रीहस्त सों काढि कै आरोगें । और प्यास लागें तो आप ही अपने श्रीहस्त सों पानी पीवें । तब वह बाई आवें सो कुंजा झारी कों देखत ही आवें । जो–मेरे लालजी

ने पानी पियो तो सही, प्यासे तो नाहीं रहे ? और भूखे हू रहे नाहीं ? तब वह बाई कौ मन प्रसन्न संतोष होंइ । और जब वह बाई सोवें तब अपनी ही खाट ऊपर अपने ही पास अपने श्रीलालजी कों लै सोवें । जैसें लौकिक में अपने लरिका कों लै कै सोवत है तैसें ही वह बाई अपने श्रीठाकुरजी कों अपने साथ लै सोवें । तब एक दिन रात्रि प्रहर डेढ़ गई हती तब ता दिना बिलाई दोइ वाके पलिंग के नीचे रह गई हती । सो दोऊ बिलाई आपुस में लरन लागी । तब श्रीठाकुरजी डरपन लागे । तब वह बाई वा बिलाई कों गारी देन लागी । पाछें श्रीठाकुरजी डरपन लागे तब वह बाई अपने श्रीलालजी सों कहे, जो–तुम डरपो मति । और वा बिलाई सों कहे, जो–मेरे लालजी डरपत हैं । और वह बिलाई कों बाई गारी देई, परि वह बिलाई तो लरत तें रहे नाहीं । त्यौं त्यौं वह बाई श्रीठाकुरजी कों लपटावत जाँइ । और श्रीठाकुरजी उन बिलैयान सों डरपे सो वा बाई सों आप हू लपटात जाँइ । और श्रीठाकुरजी कहत जांहि, जो–अरी बाई ! मैं तो इन निगोड़ी बिलैयान तें डरपत हों । तब वह बाई अपने श्रीठाकुरजी कों अपने हृदय सों लगाइ कै उन बिलैयान कों गारी देन लागी, जो–छिनरीं रांड ! आजु तुम मेरे घर मैं कहां तें रहि गई हो ? और तुम देखो तो सही सवारे मैं तुम कों लकरीन सों मारों । आजु तुम मेरे श्रीलालजी कों डरपावत हो ? तातें काल्हि मैं तुम कों समझोंगी । ऐसें वह बाई बिलैयन कों गारी देति जाँई और अपने श्रीलालजी कों समुझाय कै लपटावत जाँइ परि अपनी खाट तें उठि तो सके नाहीं । अपने मन में बिचार्‌यो

करें, जो–मेरे लालजी कों अकेले कैसें छोरि कै जाऊं ? मेरे लालजी डरपेंगे। और ए बिलैया तो लरत तें रहें नाहीं। तब श्रीठाकुरजी फेरि फेरि बोले, जो–अरी बाई ! जो–मैं तो इन निगोड़ीन बिलैयान तें डरपत हों। यों कहि कै या बाई सों लपटात जाँइ। तब वह बोली, जो–अहो श्रीलालजी महाराज ! तुमने तो पूतना मारी है। और बड़े बड़े दैत्य हू मारे हैं। तब तो तुम डरपे नाहीं। और अब इन निगोड़ी बिलैयान तें क्यों डरपत हो ? जब वा बाई ने ऐसें कही तब बाई कों छोरि कै श्रीठाकुरजी कहन लागे, जो–अरी बाई ! आज तक तो तेरो हमारो यह संबंध हतो। परि अब तो यह संबंध रह्यो नाहीं। तब ता दिन सों श्रीठाकुरजी वा बाई सों कछू कहे न बोलें।

भावप्रकाश–सो काहेतें, जो जहां तांई बालक जानें तहां तांई तो लालजी व्है रहे। और जब बड़े जानें महात्म्य करि कै तब तो प्रभुजी भए। तातें जहां महात्म्य आयो तब तहां स्नेह तो गयो। जब तांई स्नेह तब तांई तो लरिका रहे। सो जा भांति सों लाड लडावे ता भांति सों लाड करे। ज्यों ज्यों अपनो भक्त कहे, त्यों त्यों श्रीठाकुरजी करे। सो प्रभु तो भाव के आधीन हैं। भक्त जा भाव करि प्रभुनकों भजत है ताही भाव सों प्रभु हू भक्तकों भजत हैं। सो जब महात्म्य भाव आयो तब तो ईश्वर भए। तब न बोले न काहू सों संभाषण करें। तातें वासों न बोले।

ता पाछें वह बाई श्रीठाकुरजी सों बोहोत बिनती करी तब कितनेक दिन पाछें वा बाई सों श्रीठाकुरजी बोलन लागे।

भावप्रकाश – यामें यह जतायो जो–प्रभु दैन्य सों प्रसन्न होत हैं। और दैन्य तें सब अपराधन की हू निवृत्ति होत हैं। सो दैन्य ऐसो पदार्थ हैं। तातें वैष्णवन कों दीनता राखि प्रभुन की सेवा करनी।

सो वह बाई श्रीठाकुरजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती, जिन सों श्रीठाकुरजी सानुभाव रहेते। वार्ता करते। सो वाकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥८३॥

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक वैष्णव विरक्त, ब्रज में रहतो, तिनको वार्ता कौ भाव कहत हैं–

भावप्रकाश – ये तामस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'रमनी' है। ये 'रसप्रकासिका' तें प्रगटी हैं। तातें इन के भावरूप हैं।

ये मथुरा में एक वैष्णव ब्राह्मन के इहां जन्म्यो। सो बालपने सों वैराग्य दसा में रहे। मातापितानें इन कों श्रीगुसांईजी सों नाम निवेदन करवायो। ता पाछें ये ब्रज में श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों आयो। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी की अपार सुंदरता देखि इन कौ मन लागि गयो। सो उहांई रह्यो, विरक्त दसा में सो समै समै कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करिवो करे। और समै श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजी के ग्रंथन कों अहर्निस देख्यो करे।

वार्ता प्रसंग–१

सो वा विरक्त वैष्णव के मन में यह अभिलाषा भई, जो–हों श्रीरघुनाथजी कों देखों। सो ब्रज संपूरन देखि कै श्रीनाथजी कों देखि कै दरसन करि कै श्रीगुसांईजी के पास आयो। पाछें दंडवत् करि कै बिनती करी, जो–महाराज ! आज्ञा होंई तो अयोध्या तांई होइ आउं। तब श्रीगुसांईजी नें कह्यो, जो–अवस्य। तब दंडवत् करि कै अयोध्या कों चल्यो। तब श्रीगुसांईजी सों वैष्णवन पूछी, जो–महाराज ! यह ऐसो भगवदीय सो ब्रज छोरि कै श्रीनाथजी के दरसन छोरि कै गयो ? तब श्रीगुसांईजी नें कही, जो–श्रीनाथजी तो भक्त मनोरथ पूरन करता है। सो याके मन में एक दिन ऐसी आई, जो–श्रीरघुनाथजी कैसे होइंगे ? जो–हों देखों। सो याकौ मनोरथ ऐसो भयो। तातें श्रीनाथजी याके मन कों प्रेरना करि के पठायो है। सो उहां जाइगो। सो उहां जाँइ कै याकों अश्रद्धा होइगी। सो बेगि ही फिरि कै आवेगो।

ता पाछें वह वैष्णव चल्यो। सो अयोध्या जाँई कै पहोंच्यो। सो उहां जाँई कै द्वारपालन सों कह्यो, जो–हों ब्रज तें आयो हों सो

श्रीरघुनाथजी सों मेरी खबरि करो । तब उन द्वारपालन नें श्रीरघुनाथजी सों हाथ जोरि कै बिनती करी, जो – महाराजाधिराज ! एक कोउ ब्रज तें आयों है । सो कहत हैं, जो–मेरी खबरि करों, हों श्रीरघुनाथजी के दरसन कों आयो हों। तब श्रीरघुनाथजी नें कही, जो–बोलि लावो । तब वह द्वारपाल बाहिर आय कै वाकों बोलि ले गए ।

भावप्रकाश – यहां यह संदेह होंई, जो–या काल में तो श्रीरघुनाथजी (काहू सों) बोलत नाहीं हैं । सो द्वारपालन सों (योंही) कैसें बोले ? तहां कहत हैं, जो–जब भूतल पै पूरन पुरुषोत्तम कौ आविर्भाव होत हैं तब देवी–देवता आदि सर्व में उन के आधिदैविक स्वरूप कौ प्रवेस होत हैं । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु और श्रीगुसांईजी आप पूरन पुरुषोत्तम हैं । तातें ता समै (प्रागट्य अवस्था में) सब देवी देवतान में उन के आधिदैविक रूपकौ प्रवेस हूतो । सो अपने अपनें अनन्य भक्तन सों सहज बोलत हे । आज तो कठिनता सों जाननो ।

सो जब ही श्रीरघुनाथजी के दरसन कियो तब ही ये श्रीरघुनाथजी की ओर फिरि कै ठाढ़ो भयो । और कह्यो, जो–धिक हैं मोकों, जो–मैं ब्रज तें निकस्यो । और इहां आयो । जो–श्रीनाथजी देखि कै मेरो मन और ठौर चल्यो ? तातें मोकों धिक हैं । ऐसी जब वानें कही तब वह वैष्णव के सद्य सर्वांग में कोढ़ भयो । और वह तो श्रीरघुनाथजी कों पीठ दे ठाढ़ो है । तब श्रीरघुनाथजी वाके सन्मुख आइ कै कही, जो–तू अवज्ञा क्यों करी ? तासों तोकों यह प्रकार भयो । तब वा वैष्णव नें कही, जो–मोकों तो कछू नाहीं भयो । मैंनें तो ऐसो काम कियो है, जो–मेरे रोम रोम विषे जंतु परे चहिए । जो–मैंनें श्रीनाथजी निरखें और अब यह दृष्टि अन्य विनियोग में आई ? सो या प्रकार एकांगी भक्ति के बचन सुनि कै श्रीरघुनाथजी बोहोत

प्रसन्न भए। सो फेरि देह दिव्य भई। वह वैष्णव ऐसो टेक कौ हतो, जो–श्रीरघुनाथजी प्रसन्न करि दिये। ता पाछें फिरि कै उहां ते चल्यो। सो श्रीगोकुल आयो। सो आइ कै श्रीगुसांईजी कों दंडवत् कियो। तब श्रीगुसांईजी नें पूछ्यो, जो–अरे अमुके ? तू अयोध्या होंइ आयो ? तब वा वैष्णव नें हाथ जोरि कै कह्यो, जो–महाराज ! होंइ आयो। ता पाछें उहां के सब समाचार श्रीगुसांईजी के आगें कहे। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी मुसिक्यानें। ता पाछें वह वैष्णव श्रीनाथजी द्वार जाँइ श्रीनाथजी के दरसन किये। ता पाछें ब्रज छोरि कहूं गयो नाही।

भावप्रकाश – या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णव कों अनन्यता राखनी। काहू इंद्रि कौ अन्य विनियोग नहीं होंइ ऐसो मन दृढ राखनो। काहेतें, उत्तम बस्तू पाइ पाछें नीचेकों नहीं देखनो।

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो, तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥८४॥

❀ ❀ ❀ ❀

❋ प्रथम खंड समाप्त ❋